हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर सीरीज़

मौलाना दाऊद दलमई

कृत

चन्दायन

(मूल पाठ, पाठान्तर, टिप्पणी, एवं खोजपूर्ण सामग्री सहित)

सम्पादक

परमेश्वरी लाल गुप्त,

एम० ए०, पी० एच० डी०, एफ० आर० एन० एस०

अध्यक्ष, पटना संग्रहालय

प्रकाशक

हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर (प्राइवेट) लिमिटेड,

हीराबाग सी० पी० टैंक बम्बई-४

शाखा : दिल्ली

अपनी 'भामती'

अन्नपूर्णा

को

अनुक्रम

डॉ. परमेश्वरीलाल गुप्त

अनुशीलन

हिन्दी साहित्य का इतिहास प्रस्तुत करनेका कार्य फ्रेंच विद्वान **गार्सां द तासी** और अँगरेज विद्वान **ग्रियर्सनने** आरम्भ किया और उसका स्वरूप **रामचन्द्र शुक्ल** ने अपने **हिन्दी साहित्यका इतिहास** द्वारा स्थिर किया। किन्तु इन तीनों ही विद्वानों की पुस्तकों में **मौलाना दाऊद** अथवा उनकी कृति **चन्दायनका** कोई उल्लेख नहीं है। स्पष्ट है **रामचन्द्र शुक्लके** समयतक उनके सम्बन्धमें कोई जानकारी उपलब्ध न थी।

मौलाना दाऊदका परिचय सर्व प्रथम १९२८ ई० (वि० सं० १९७०) में **मिश्रबन्धुने** अपने **मिश्रबन्धु-विनोद** द्वारा दिया। उन्होंने अपने ग्रन्थके आदि प्रकरणमें बताया कि *मुल्ला दाऊद अमीर खुसरोका समकालीन था। उसका कविता काल संवत् १३८५ के लगभग था। इसने नूरक और चन्दाकी प्रेम कथा हिन्दीमें रची। यह ग्रन्थ हमारे देखनेमें नहीं आया।*[1] मिश्रबन्धुकी इस सूचनाका आधार क्या था, यह उन्होंने नहीं बताया।

सात वर्ष पश्चात् **हरिऔधका हिन्दी भाषा और उसके साहित्यका विकास** प्रकाशित हुआ। उसमें दाऊदके सम्बन्धमें ये पंक्तियाँ हैं—**अमीर खुसरोका समकालीन एक और मुल्ला दाऊद नामक ब्रजभाषाका कवि हुआ। कहा जाता है कि इसने नूरक एवं चन्दाकी प्रेमकथा नामक दो हिन्दी पद्य ग्रन्थोंकी रचना की। किन्तु ये दोनों ग्रन्थ अप्राप्यसे हैं। इसलिए इसकी रचनाकी भाषाके विषयमें कुछ लिखना असम्भव है।**[2] मिश्रबन्धुकी तरह ही हरिऔधने भी अपनी सूचनाका आधार नहीं दिया है। उस समय जान पड़ता है हिन्दीमें सन्दर्भ देनेकी परिपाटी नहीं थी। जो भी हो, उनके शब्दोंसे यह स्पष्ट झलकता है कि मिश्रबन्धु-के अतिरिक्त उनकी जानकारीका कोई अन्य साधन नहीं था। उन्होंने मिश्रबन्धुसे भिन्न दो नयी बातें अवश्य कहीं—(१) दाऊदने नूरक और चन्दा नामक दो ग्रन्थोंकी रचना की। (२) वे ब्रजभाषाके कवि थे। किन्तु ये दोनों ही बातें उनकी कल्पना-प्रसूत हैं, यह तनिक ध्यान देनेसे ही स्पष्ट हो जाता है। दाऊदके ब्रजभाषा के कवि होनेकी बातका खण्डन उनकी अपनी ही पंक्तियोंसे हो जाता है। वे उन्हें **'ब्रज भाषाका कवि'** कहते हैं; फिर उनके **हिन्दी पद्य ग्रन्थोंकी** बात करते हैं और अन्तमें

---

१. मिश्रबन्धु विनोद, प्रथम भाग, सं० १९७१, पृ० २४९।

२. हिन्दी भाषा और उसके साहित्यका विकास, पटना, द्वितीय संस्करण, सं० १९९७, पृ० १४७।

यह भी कहते हैं कि उसकी भाषाके विषयमें कुछ लिखना असम्भव है। सारांश यह कि उन्हें दाऊदकी भाषाके सम्बन्धमें कोई जानकारी न थी। दो ग्रन्थोंकी कल्पनाका आधार तो स्पष्ट ही है। उसके सम्बन्धमें कुछ कहना अपेक्षित नहीं।

१९३६ ई० में हिन्दीका पहला शोध निबन्ध पीताम्बरदत्त बर्थवालकृत द निर्गुण स्कूल ऑफ हिन्दी पोयट्री प्रकाशित हुआ। उन्होंने दाऊदकी चर्चा इन शब्दोंमें की — सबसे पुराना ज्ञात प्रेमाख्यानक कवि मुल्ला दाऊद मालूम होता है। जो अलाउद्दीनके राजत्वकाल वि० सं० १४९७ (१४३९ ई०) के आसपास विद्यमान था। परन्तु मुल्ला दाऊद भी आदि प्रेमाख्यानक कवि था या नहीं कह नहीं सकते। उसकी नूरक-चन्दाकी कहानीका हमें नाम ही मालूम है।[१] आधुनिक पद्धतिसे शोध निबन्ध प्रस्तुत करते हुए भी बर्थवाल ने पुरानी परिपाटीका ही अनुसरण किया और कोई सन्दर्भ नहीं दिया, जिससे उनके कथनका सूत्र जाना जा सके। उनके कथनमें मिश्रबन्धु से इतनी ही भिन्नता है कि उन्होंने दाऊदका अस्तित्व अलाउद्दीन खिलजीके समयमें बताया और उनका समय वि० स० १४९७ दिया। देखनेमें यह बात नयी और महत्त्वपूर्ण जान पड़ती है, क्योंकि इसके अनुसार दाऊदका समय मिश्रबन्धुके बताये समयसे सौ बरससे अधिक पीछे ठहरता है। किन्तु ध्यानसे देखनेपर बर्थवालके इस कथनका ऐतिहासिक विरोध स्पष्ट झलक उठता है। वि० स० १४९७ (१४१९ ई०)में अलाउद्दीन खिलजी दिल्ली के तख्तपर न विराज कर स्वर्गके दरबारमें हाजिरी दे रहा था। उस समय दिल्लीमें सैयदवंशीय सुल्तान मुबारिकशाह (द्वितीय)का शासन था। इस तिथिके अनुसार दाऊद आदि प्रेमाख्यानक कवि नहीं ठहरते। कुतबनकी मिरगावति इस तिथिसे पहलेकी रचना है। यह जानकारी रामचन्द्र शुक्ल बहुत पहले दे चुके थे। यह बात बर्थवालको ज्ञात न रही हो, यह बुद्धिग्राह्य नहीं है। अत अधिक सम्भावना इस बातकी है कि बर्थवाल ने अपने मूल निबन्ध म दाऊदके लिए अलाउद्दीनकी समसामयिक ही कोई तिथि (वि० स० १३५४–१३७४ अर्थात् १२९६ १३१६ई० के बीच) दी होगी। हो सकता है कि किसीके प्रमादसे प्रकाशित ग्रन्थ म १२९७ ई० ने वि० स० १४९७ का रूप ले लिया हो। तथ्य जो हो, तिथिका किसी प्रकार समाधान कर लेने पर *भी प्रश्न उठता है कि बर्थवालको दाऊद और अलाउद्दीनकी समसामयिकताका* ज्ञान कहाँसे हुआ। इसका भी उत्तर कठिन नहीं है। अलाउद्दीन और अमीर खुसरोकी समसामयिकता प्रसिद्ध ही है। अत बर्थवालने मिश्रबन्धुसे तथ्य ग्रहण कर अपनी शोध बुद्धिका उपयोग किया और खुसरोकी जगह अलाउद्दीनका नाम लेकर मिश्रबन्धुकी बातको नये ढंगसे कह दिया।

बर्थवालके शोध निबन्धके पश्चात् १९३८ ई० में रामकुमार वर्माका शोध निबन्ध हिन्दी साहित्यका आलोचनात्मक इतिहास प्रकाशमें आया। राम

---

१ हिन्दी काव्यमें निर्गुण सम्प्रदाय, सं० २००७, लखनऊ, पृ० २० २१।

कुमार वर्माने अपने मूल निबन्धमें दाऊदके सम्बन्धमें क्या लिखा था, यह तो हमारे सामने नहीं है, किन्तु उसके प्रकाशित रूपका जो दूसरा संस्करण उपलब्ध है, उसमें कहा गया है कि खुसरोका नाम जब समस्त उत्तरी भारतमें एक महान कविके रूपमें फैल रहा था, उसी समय मुल्ला दाऊदका नाम भी हिन्दी साहित्यके इतिहासमें आता है। मुल्ला दाऊदकी एक प्रेम कहानी प्रसिद्ध है, उसका नाम है चन्दावन या चन्दावत। यह ग्रन्थ अभीतक अप्राप्य है और इसके सम्बन्धमें कुछ भी प्रमाणित रूपसे ज्ञात नहीं है।[१] साथ ही उन्होंने दाऊदको अलाउद्दीन खिलजीका समकालीन मानते हुए उनका कविता-काल वि० सं० १३७५ (१३१७ ई०) ठहराया। अपने पूर्ववर्तियोंके समान ही रामकुमार वर्माने भी अपनी सूचनाका सूत्र बतानेकी आवश्यकता नहीं समझी। पर देखनेसे लगता है कि उन्होंने मिश्रबन्धु और बर्थवालके कथनको ही जोड़कर अपने शब्दोंमें रख दिया है। उनकी यह सूचना अवश्य नयी है कि दाऊदकी पुस्तकका नाम चन्दावन या चन्दावत था। किन्तु प्रमाणाभावमें यह निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता कि उनके पास मिश्रबन्धु और बर्थवालके कथनके अतिरिक्त अपना कोई निजी सूत्र भी था। हो सकता है, यह बात पीछे ज्ञात तथ्योंके आधारपर प्रस्तुत संस्करणमें जोड़ दी गयी हो। मूल सूत्रोंके अभावमें इन विद्वानोंके कथनका शोधकी दृष्टिसे कोई महत्त्व नहीं है।

दाऊदके सम्बन्ध में साधार कुछ कहनेका प्रयत्न पहली बार ब्रजरत्नदासने १९४० ई० (वि० सं० १९९८)में किया। उन्होंने अपनी पुस्तक खड़ी बोली हिन्दी साहित्यका इतिहासमें मुगलकालके सुप्रसिद्ध इतिहासकार अब्दुलक़ादिर बदायूनी कृत मुन्तख़ब-उत-तवारीख़में उल्लिखित इस तथ्यकी ओर ध्यान आकृष्ट किया कि दाऊदके चन्दायन की रचना फ़ीरोज़ शाह तुग़लक (१३५१-१३८८ ई०)के शासन कालमें हुई थी।[२] बदायूनीका कथन इस प्रकार है —सन् ७७२ (हिजरी) (१९७० ई०)में वज़ीर ख़ानजहाँकी मृत्यु हुई और उनका जौनाशाह नामक पुत्र उसी पद पर प्रसिद्ध हुआ और उसी के नाम से मौलाना दाऊदने चन्दायन (चन्दावन)को, जो हिन्दवी भाषाका एक मसनवी है, जिसमें लोरक (नूरक) और चन्दा नामक प्रेमी-प्रेमिकाका वर्णन है और वास्तविक अनुभवसे परिपूर्ण है, पद्यबद्ध किया। इस देशमें अत्यत प्रसिद्ध होनेके कारण उसकी (चन्दायन) प्रशंसा अपेक्षित नहीं है। दिल्लीमें मखदूम शेख तक़ीउद्दीन वाअज रब्बानी इसके कुछ सार्थक पद मेंबर (व्यास पीठ)से पढ़ा करते थे और उनके सुननेका लोगोंपर विशेष प्रभाव पड़ता था। उस समयके कुछ विद्वानोंने शेखसे पूछा कि इस हिन्दवी मसनवी के अपनाने का कारण क्या है तो उन्होंने उत्तर दिया कि यह चूँकि (कवि)के समस्त तत्त्वों तथा अर्थोंसे युक्त है तथा प्रेम और भक्ति के जिज्ञासु लोगोंके उपयुक्त है। (उसमें) कुरानके

१ हिन्दी साहित्यका आलोचनात्मक इतिहास, प्रयाग, द्वितीय संस्करण, १९५४ ई०, पृ० १३१।

२ खड़ी बोली हिन्दी साहित्यका इतिहास, काशी, सं० १९९८, पृ० ४४५।

यह भी कहते हैं कि उसकी भाषाके विषयमें कुछ लिखना असम्भव है। सारांश यह कि उन्हें दाऊदकी भाषाके सम्बन्धमें कोई जानकारी न थी। दो ग्रन्थोंकी कल्पनाका आधार तो स्पष्ट ही है। उसके सम्बन्धमें कुछ कहना अपेक्षित नहीं।

१९३६ ई० में हिन्दीका पहला शोध निबन्ध पीताम्बरदत्त बर्थवालकृत द निर्गुण स्कूल ऑफ हिन्दी पोयट्री प्रकाशित हुआ। उन्होंने दाऊदकी चर्चा इन शब्दोंमें की — सबसे पुराना ज्ञात प्रेमाख्यानक कवि मुल्ला दाऊद मालूम होता है। जो अलाउद्दीनके राजत्वकाल वि० सं० १४९७ (१४३९ ई०) के आसपास विद्यमान था। परन्तु मुल्ला दाऊद भी आदि प्रेमाख्यानक कवि था या नहीं कह नहीं सकते। उसकी नूरक-चन्दाकी कहानीका हमें नाम ही मालूम है।[१] आधुनिक पद्धतिसे शोध-निबन्ध प्रस्तुत करते हुए भी बर्थवाल ने पुरानी परिपाटीका ही अनुसरण किया और कोई सन्दर्भ नहीं दिया, जिससे उनके कथनका सूत्र जाना जा सके। उनके कथनमें मिश्रबन्धु से इतनी ही भिन्नता है कि उन्होंने दाऊदका अस्तित्व अलाउद्दीन खिलजीके समयमें बताया और उनका समय वि० सं० १४९७ दिया। देखनेमें यह बात नयी और महत्त्वपूर्ण जान पड़ती है, क्योंकि इसके अनुसार दाऊदका समय मिश्रबन्धुके बताये समयसे सौ बरससे अधिक पीछे ठहरता है। किन्तु ध्यानसे देखनेपर बर्थवालके इस कथनका ऐतिहासिक विरोध स्पष्ट झलक उठता है। वि० स० १४९७ (१४१९ ई०)में अलाउद्दीन खिलजी दिल्ली-के तख्तपर न विराज कर स्वर्गके दरबारमें हाजिरी दे रहा था। उस समय दिल्लीमें सैयदवंशीय सुल्तान मुबारिकशाह (द्वितीय)का शासन था। इस तिथिके अनुसार दाऊद आदि प्रेमाख्यानक कवि नहीं ठहरते। कुतबनकी मिरगावति इस तिथिसे पहलेकी रचना है। यह जानकारी रामचन्द्र शुक्ल बहुत पहले दे चुके थे। यह बात बर्थवालको ज्ञात न रही हो, यह बुद्धिग्राह्य नहीं है। अतः अधिक सम्भावना इस बातकी है कि बर्थवाल ने अपने मूल निबन्ध में दाऊदके लिए अलाउद्दीनकी सम-सामयिक ही कोई तिथि (वि० स० १३५४–१३७४ अर्थात् १२९६-१३१६ई० के बीच) दी होगी। हो सकता है कि किसीके प्रमादसे प्रकाशित ग्रन्थ में १२९७ ई० ने वि० स० १४९७ का रूप ले लिया हो। तथ्य जो हो, तिथिका किसी प्रकार समाधान कर लेने-पर भी प्रश्न उठता है कि बर्थवालको दाऊद और अलाउद्दीनकी समसामयिकताका ज्ञान कहाँसे हुआ। इसका भी उत्तर कठिन नहीं है। अलाउद्दीन और अमीर खुसरोकी समसामयिकता प्रसिद्ध ही है। अतः बर्थवालने मिश्रबन्धुसे तथ्य ग्रहण कर अपनी शोध बुद्धिका उपयोग किया और खुसरोकी जगह अलाउद्दीनका नाम लेकर मिश्रबन्धुकी बातको नये ढगसे कह दिया।

बर्थवालके शोध निबन्धके पश्चात् १९३८ ई० में रामकुमार वर्माका शोध-निबन्ध हिन्दी साहित्यका आलोचनात्मक इतिहास प्रकाशमें आया। राम-

१. हिन्दी काव्यमें निर्गुण सम्प्रदाय, स० २००७, लखनऊ, पृ० २०-२१।

कुमार वर्माने अपने मूल निबन्धमें दाऊदके सम्बन्धमें क्या लिखा था, यह तो हमारे सामने नहीं है, किन्तु उसके प्रकाशित रूपका जो दूसरा संस्करण उपलब्ध है, उसमें कहा गया है कि खुसरोका नाम जब समस्त उत्तरी भारतमें एक महान कविके रूपमें फैल रहा था, उसी समय मुल्ला दाऊदका नाम भी हिन्दी साहित्यके इतिहासमें आता है। मुल्ला दाऊदकी एक प्रेम कहानी प्रसिद्ध है, उसका नाम है चन्दावन या चन्दावत। यह ग्रन्थ अभीतक अप्राप्य है और इसके सम्बन्धमें कुछ भी प्रमाणित रूपसे ज्ञात नहीं है।[१] साथ ही उन्होंने दाऊदको अलाउद्दीन खिलजीका समकालीन मानते हुए उनका कविता-काल वि० सं० १३७५ (१३१७ ई०) ठहराया। अपने पूर्ववर्तियोंके समान ही रामकुमार वर्माने भी अपनी सूचनाका सूत्र बतानेकी आवश्यकता नहीं समझी। पर देखनेसे लगता है कि उन्होंने मिश्रबन्धु और बर्थवालके कथनको ही जोडकर अपने शब्दोंमें रख दिया है। उनकी यह सूचना अवश्य नयी है कि दाऊदकी पुस्तकका नाम चन्दावन या चन्दावत था। किन्तु प्रमाणाभावमें यह निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता कि उनके पास मिश्रबन्धु और बर्थवालके कथनके अतिरिक्त अपना कोई निजी सूत्र भी था। हो सकता है, यह बात पीछे ज्ञात तथ्योंके आधारपर प्रस्तुत संस्करणमें जोड दी गयी हो। मूल सूत्रोंके अभावमें इन विद्वानोंके कथनका शोधकी दृष्टिसे कोई महत्त्व नहीं है।

दाऊदके सम्बन्ध में साधार कुछ कहनेका प्रयत्न पहली बार ब्रजरत्नदासने १९४० ई० (वि० सं० १९९८)में किया। उन्होंने अपनी पुस्तक *खडी बोली हिन्दी साहित्यका इतिहास*में मुगलकालके सुप्रसिद्ध इतिहासकार अब्दुर्कादिर बदायूनी कृत *मुन्तखब-उत-तवारीख*में उल्लिखित इस तथ्यकी ओर ध्यान आकृष्ट किया कि दाऊदके चन्दायन की रचना फीरोज शाह तुगलक (१३५१–१३८८ ई०)के शासन कालमें हुई थी।[२] बदायूनीका कथन इस प्रकार है '—सन् ७७२ (हिजरी) (१५७० ई०)में वजीर खानजहाँकी मृत्यु हुई और उनका जौनाशाह नामक पुत्र उसी पद पर प्रसिद्ध हुआ और उसी के नाम से मौलाना दाऊदने चन्दायन (चन्दावन)को, जो हिन्दवी भाषाका एक मसनवी है, जिसमें लौरक (नूरक) और चन्दा नामक प्रेमी-प्रेमिकाका वर्णन है और वास्तविक अनुभवसे परिपूर्ण हैं, पद्यबद्ध किया। इस देशमें अत्यंत प्रसिद्ध होनेके कारण उसकी (चन्दायन) प्रशंसा अपेक्षित नहीं है। दिल्लीमें मखदूम शेख तकीउद्दीन वायज रब्बानी इसके कुछ सार्थक पद मेंबर (व्यास पीठ)से पढ़ा करते थे और उनके सुननेका लोगोंपर विशेष प्रभाव पडता था। उस समयके कुछ विद्वानोंने शेखसे पूछा कि इस हिन्दवी मसनवी के अपनाने का कारण क्या है तो उन्होंने उत्तर दिया कि यह जौक (रुचि)के समस्त तत्त्वों तथा अर्थोंसे युक्त है तथा प्रेम और भक्ति के जिज्ञासु लोगोंके उपयुक्त है। (उसम) कुरानके

१ हिन्दी साहित्यका आलोचनात्मक इतिहास, प्रयाग, द्वितीय संस्करण, १९४८ ई०, पृ० १३१।

२ खडी बोली हिन्दी साहित्यका इतिहास, काशी, सं० १९९८, पृ० ९४-९५।

कतिपय आयतोंकी व्याख्या है और वह हिंदीके सज्जनों के अनुसार है। इसको पढ़कर लोग हृदय रूपी अहेरको आकृष्ट करते हैं।[१]

'मुन्तखब'के इस उद्धरणसे स्पष्ट है कि (१) दाऊद मुल्ला नहीं मौलाना कहे जाते थे, (२) उनकी रचनाका नाम चन्दायन है, जिसे लोगोंने नुक्तोंके हेर फेरसे चन्दावन या चन्दावत पढा है, (३) इस ग्रन्थमें लोरक (जिसे लोगोंने नूरक पढा है) और चन्दाकी प्रेम कहानी है, (४) नूरक व चन्दा किसी पुस्तकका नाम नहीं है। इससे भी अधिक महत्वकी बात जो ज्ञात हुई वह यह कि चन्दायन की रचना दिल्ली सुलतान फीरोजशाह तुगलकके समय (१३५१–१३८८ ई० के बीच) जौनाशाहके मंत्रित्वकालमें ७७२ हिजरी (१३७० ई०)के बाद किसी समय हुई थी। यह बात सामने आते ही मिश्रबन्धुके कथन की गुत्थी अनायास ही सुलझ जाती है। उन्होंने चन्दायनका रचना-काल १३८५ लगभग ठीक ही दिया था। उनका जो भी सूत्र रहा हो, वह तथ्यहीन न था। उनसे भूल केवल इतनी ही हुई कि

१ मूल शब्दावली इस प्रकार है —दर सन् असनई व सबई व सबअमाय (७७२) खॉजहाँ वजीर वफात याफ़्त् व पिसरस जौनशाह नाम बहमां खिताब मुखातिब गश्त। व किताब चन्दावन (एशियाटिक सोसाइटी बंगालके हस्तलिखित ग्रन्थ संख्या १५९२ में चदायन पाठ है) रा कि मसनवीस्त बजबान हिन्दवी दर बयान इश्क लोरक (नूरक) व चँदा नाम आशिक वा माशूक व अल्हक सेले हाश्त करदा अस्त मौलाना दाऊद बनाम ओ नज्मकर्द व अन निहायत शोहरत दरीं दयार एहतियाज बतारीफ नदारद। व मखदूम शेख तकीउद्दीन वायज रब्बानी दर देहली बाजे अबयात तशरीबी ओरा बर मेम्बर मीख्वाद व मदुम रा अज इस्तमाअ आँ हालए गरीब रूए मीदाद। चूँ बाजे अफाजिल आ अहद शेख रा पुरसीदंद कि सबब चीस्त कि ईं मसनवी हिन्दवी चीस्त जवाब दाद कि तमाम हकायक व मआनी वोजेस्त व मुताबिक बजदान अहल शौक व इश्क व मुताबिक व तफसीर बाजे अज आयात कुरआनी व खुश आवाजाने हिन्द हाला हम बमवाद रवानीए ओ सैर दिलहा मी नुमायन्द। (मुन्तखब अल्-तवारीख, सम्पादक मौल्वी अहमद अली, बिबलिओथिका इण्डिका सीरीज, १८६८ ई०, भाग १, पृ० २५०)

जार्ज एस० ए० रैकिंगने इसका अंग्रेजी अनुवाद इस प्रकार दिया है :—इन दि इयर ७७२ हि० (१३७० ए० डी०) खान-ए-जहाँ दि वजीर डाइड, एण्ड हिज सन जूनाशाह आबटेण्ड दैट टाइटिल, एण्ड दि बुक चन्दायन हिच इज ए मसनवी इन हिन्दी लैंगुएज रिलेटिंग दि लव ऑफ लूरक एण्ड चाँदा, ए लवर एण्ड हिज मिस्ट्रेस, अ वेरी ग्रेफिक वर्क, वाज पुट इण्टू वर्स इन हिज आनर बाई मौलाना दाऊद। देयर इज नो नीड फार मी टु प्रेज इट बिकाज आर इट्स ग्रेट फेम इन दैट कण्टरी, एण्ड मखदूम शेख तकीउद्दीन वायज रब्बानी यूज्ड टु रीड आन सम ओकेजन्स पोयम्स आफ हिज, फ्राम दि पुल्पिट, एण्ड दि पिपुल यूज्ड टु बी स्ट्रैंजली इनफ्लुयेन्स्ड बाई हियरिंग देम, एण्ड हेन सरटेन लरनेड मेन आव दैट टाइम आस्कड दि शेख सेइंग, ह्वाट इज द रीजन फार दिस हिन्दी मसनवी बीइंग सेलेक्टेड? ही आन्सर्ड दि होल आव इट इज डिवाइन ट्रुथ एण्ड प्लीजिंग इन सबजेक्ट, वर्दी आव दी एक्सटैटिक कण्टेम्प्लेशन आव डिवाउट लवर्स, एण्ड कन्फार्मेबुल टु दि इण्टरप्रेटेशन आव सम आव दि आयत्स आव द कुरान, एण्ड दि स्वीट सिंगर्स आव हिन्दुस्तान। मोर ओवर बाई इट्स पब्लिक रिसिटेशन ह्यूमन हार्ट्स आर टेकेन कैपटिव। (मुनतखबुत-तवारीख, अनुवाद, बिबलियोथिका इण्डिका सीरीज, १८९७ ई०, भाग १, पृ० ३३३)

उन्होंने अपने सूत्रसे ज्ञात ईस्वी सन् को विक्रमी सम्वत् मान लिया। इस विक्रम सवत्‌के साथ खुसरोकी कल्पना सहज ही है। रामकुमार वर्मा की तिथि १३७५ भी वस्तुतः विक्रमी सवत् न होकर ईस्वी सन् ही है। ईस्वी सन्‌के रूपमे मिश्रबन्धुकी तिथि १३८५ और रामकुमार वर्माकी तिथि १३७५, दोनों ही फीरोजशाह तुगलकके समय और जौनाशाहके मन्त्रित्वकालमें पडते हैं। फिर भी जैसा कि हम आगे देखगे, ये दोनों ही तिथियाँ वास्तविक रचना तिथिमे थोडी भिन्न है।

दाऊद फीरोजाह तुगलकके समय हुए थे, यह तथ्य मुनतखबके माध्यमसे अजरत्नदास द्वारा प्रकाशनमें लाये जानेके पूर्व भी कुछ लोगोंको ज्ञात था। उत्तर प्रदेशके प्रादेशिक गजेटियरोंके प्रणेताओंने इस बातका स्पष्ट उल्लेख किया है; किन्तु हमारे अनुसन्धित्सुओंका ध्यान उस ओर जा ही नही सका। रायबरेली जिलेके गजेटियरमें डलमऊनगरके इतिहासके प्रसगमें कहा गया है कि अल्तमशके शासन-कालमें इस नगर (डलमऊ)ने समृद्धि प्राप्त की। उसके समयमें यहाँ मखदूम बदरुद्दीन रहा करते थे। तत्पश्चात् फीरोजशाह तुगलकके समय तक उन्नति पर था। उसने जनतामें मुस्लिम सिद्धांतोंके प्रसारके नियमित यहाँ एक विद्यालय स्थापित किया था। इस विद्यालयकी उपयोगिताका अनुमान डलमऊ निवासी मुल्ला दाऊद द्वारा सम्पादित 'चन्द्रैनी' नामक भाषा पुस्तकको देखकर किया जा सकता है।[1] अवधके प्रादेशिक गजेटियरमें भी यही बात इन शब्दोंमे कही गयी है—फीरोजशाह तुगलकने यहाँ (डलमऊ) मुसलिम धर्म और विद्याके अध्ययनके लिए एक विद्यालयकी स्थापना की। इसकी उपयोगिता इस बातसे प्रकट है कि डलमऊके मुल्ला दाऊद नामक कवि ने ७७९ हिजरीमें भाषामें 'चन्द्रैनी' नामक ग्रन्थका सम्पादन किया।[2]

१९४४ ई० में श्यामसुन्दरदासके हिन्दी साहित्य का तृतीय परिवर्द्धित सस्करण प्रकाशित हुआ। उसमें उन्होंने दाऊद और चन्दायनकी चर्चा सक्षेपमें की है, पर उसमें कोई उल्लेखनीय सूचना नहीं है। स० २००७ (१९५१ ई०)में परशुराम चतुर्वेदीने सूफी प्रेम-काव्योंके अवतरणोंका सग्रह सूफी-काव्य-संग्रहके नामसे प्रस्तुत किया। इसमें दाऊदके सम्बन्धमें कुछ पक्तियाँ हैं जो अपने आपमें मनोरजक हैं। उन्होंने लिखा—इस रचनाका सर्वप्रथम उल्लेख हि० सन् ७७२ (सं० १४२७) में अर्थात् फिरोज शाह तुगलकके शासनकाल (संवत् १४०८-१४४५) में हुआ है। डाक्टर रामकुमार वर्माने दाऊदको अलाउद्दीन खिलजी (राज्यकाल सं० १३५२-१३७३) का समकालीन समझा है और उनकी कविता काल सं० १३७५ ठहराया है, जो अनुचित नहीं कहा जा सकता। जान पड़ता है कि मुल्ला दाऊद इस प्रकार अमीर खुसरोका भी समकालीन था। मुल्ला दाऊदके सम्बन्धमें यह पता नहीं चलता कि उसका हिन्दवी रूप क्या

---

१ डिस्ट्रिक्ट गजेटियर आव द युनाइटेड प्राविन्सेज, भाग ३९, रायबरेली, पृ० १६२।

२. गजेटियर आव द प्राविंस आफ अवध, भाग १, पृ० ३५५।

था और उसमें किन छन्दोंका प्रयोग हुआ था।[1] मुनतखब के प्रमाणके प्रकाश में आ जानेके बाद दाऊदके समयके सम्बन्धमें जो मिथ्या धारणाएँ फैली थीं, उनका निराकरण हो जाना चाहिए था। पर परशुराम चतुर्वेदीने उसका विचित्र अर्थ लगाकर एक नया भ्रम प्रस्तुत कर दिया। कदाचित् उन्होंने मिश्रबन्धु और रामकुमार वर्माके कथनके साथ मुनतखबके कथनका समन्वय करनेका प्रयत्न किया।

१९५३ ई० में कमल कुलश्रेष्ठका शोध निबन्ध हिन्दी प्रेमाख्यानक काव्य प्रकाशित हुआ। इस ग्रन्थमें उन्होंने पूर्व ज्ञात उपर्युक्त अधिकांश सूचनाओं को, जो उन्हें उपलब्ध हो सकीं, एकत्र कर बदायूनीके कथनपर बल देते हुए मत प्रकट किया कि चन्दायन का रचनाकाल वि० सं० १४२७ के निकट था। किन्तु इस ग्रन्थमें दी गयी महत्वकी सूचना यह है कि चन्दायन की कोई प्रामाणिक प्रति अभीतक नहीं मिल सकी। एक अप्रमाणित-सी प्रति डा० धीरेन्द्र वर्माने अवश्य देखी है। परन्तु उसे वे कुछ कारणोंसे विशेष ध्यानपूर्वक नहीं देख सके और इस काव्यके सम्बन्धमें कुछ निश्चयपूर्वक बतलानेमे असमर्थ हैं।[2] पाद टिप्पणीमें इस सम्बन्धमें कुछ अतिरिक्त सूचना भी है जो इसका प्रकार है—बीकानेरके श्री पुरुषोत्तम शर्माके पास इस ग्रन्थकी एक प्रति है। शर्माजीने यह पोथी एक सज्जन द्वारा प्रयाग भेजी थी, परन्तु उन्होंने पोथीकी परीक्षा अच्छी तरह धीरेन्द्र वर्माको नहीं करने दी।[3] कुलश्रेष्ठकी इस पादटिप्पणीके अतिरिक्त अन्य सूत्रसे भी इस प्रतिके सम्बन्धमें हमें जो जानकारी प्राप्त हुई है, उससे भी ज्ञात होता है कि धीरेन्द्र वर्माने उसकी प्रामाणिकतामें सन्देह प्रकट किया था। धीरेन्द्र वर्माने इस प्रतिको चाहे जिस भी दृष्टिसे देखा हो, चन्दायनकी किसी प्रकारकी प्रतिके अस्तित्वका ज्ञान भी अपने आपमें महत्वका था। परवर्ती अनुसन्धित्सुओंका ध्यान इस ओर जाना चाहिये था। खेद है किसीने इस ओर ध्यान नहीं दिया।

१९५५ ई० मे प्रेमाख्यानक काव्य और हिन्दी सूफी साहित्यसे सम्बन्ध रखनेवाले तीन ग्रन्थ प्राय एक साथ ही प्रकाशित हुए। ये तीनो ही ग्रन्थ, शोध निबन्ध हैं, जो विभिन्न विश्वविद्यालयोंके समक्ष पी०एच०डी० की उपाधिके निमित्त प्रस्तुत किये गये थे। ये हैं—हरीकान्त श्रीवास्तव कृत भारतीय प्रेमाख्यानक काव्य, विमलकुमार जैन कृत सूफी मत और हिन्दी साहित्य और सरला शुक्ला कृत जायसीके परवर्ती हिन्दी सूफी कवि। विषयकी दृष्टिसे श्रीवास्तवके ग्रन्थका विस्तार सबसे अधिक है। उसमें दाऊदके ग्रन्थके सम्बन्धमें विशेष रूपसे और विस्तृत जानकारी की अपेक्षा की जाती है, किन्तु श्रीवास्तवकी जानकारी इस बाततक ही सीमित है कि सर्व प्रथम मुल्ला दाऊदकी नूरक चन्दा कहानीके बाद कुतबनकी मृगावती मिली।[4]

१. सूफी काव्य संग्रह, प्रयाग, (द्वितीय संस्करण), सं० २०१३, पृ० ६२-६३।
२ हिन्दी प्रेमाख्यानक काव्य, प्रयाग, १९५३ ई०, पृ० ८।
३ वही, पृ० ८, पा० टि० २।
४ भारतीय प्रेमाख्यानक काव्य, काशी, १९५५ ई०, पृ० २९।

सरला शुक्लाके शोध निबन्धकी परिधिमें दाऊद नहीं आते। यदि उन्होंने उनके सम्बन्धमें एक शब्द भी न लिखा होता तो कोई आश्चर्यकी बात न होती, पर आश्चर्य तो यह देखकर होता है कि दाऊदके लिए उन्होंने एक लम्बा पैराग्राफ व्यय किया है।[1] फिर भी उसमें पूर्वके शोधोंसे ज्ञात तथ्योंकी कोई चर्चा नहीं है। उनकी दृष्टिमें रामकुमार वर्माका कथन बदायूनीके कथनसे अधिक महत्व रखता है। शुक्लाके कथनको उद्धृत करना उनको अनावश्यक महत्व देना होगा। विमल कुमार जैनने अपने निबन्धमें, सरला शुक्लाकी तरह विस्तारमें न जाकर, दाऊदके लिए दो-तीन पंक्तियाँ पर्याप्त माना है और उनमें उन्होंने रामकुमार वर्माके कथनको दुहरा भर दिया है।[2]

इन शोध निबंधोंके प्रकाशनसे अनेक वर्ष पूर्व वि० स० २००६ (१९५० ई०) मे अगरचंद नाहटाने नागरी प्रचारिणी पत्रिका में मिश्रबन्धु-विनोदकी भूलें शीर्षक एक लेख प्रकाशित किया था, जिसमें मिश्रबन्धु के दाऊद सम्बन्धी कथन की ओर ध्यान आकृष्ट करते हुए उन्होंने सूचना दी थी कि रावतमल सारस्वत को नूरक-चन्दाकी प्रेम कहानीकी एक प्रति मिली है और उस प्रतिके एक कड़वकके अनुसार चन्दायनकी रचना ७८१ हिजरीमें हुई थी।[3] इस प्रकार १९५५ ई० से बहुत पूर्व, जब कि ये सभी निबध शोधकी स्थितिमें भी न आये थे, बदायूनीका प्रामाणिक कथन एव चन्दायनकी एक प्रतिका अस्तित्व प्रकाशमें आ चुका था। पर खेदजनक आश्चर्य है कि इन अनुसन्धित्सुओंमेंसे किसीने भी उनपर ध्यान देनेकी आवश्यकताका अनुभव नहीं किया। १९५६ ई० में परशुराम चतुर्वेदीने जब अपनी दूसरी पुस्तक भारतीय प्रेमाख्यानकी परम्परा प्रकाशित की तब उन्होंने सन्दिग्ध भावसे कहा कि राजस्थानमें एक उपलब्ध अधूरी प्रतिके अनुसार चन्दायनका रचना-काल सं० १४३६ होना चाहिये।[4]

इस प्रकार १९२८ ई० से लेकर १९५६ ई० तक सूफी साहित्य और प्रेमाख्यानक काव्योंको लेकर शोधका ढिंढोरा तो खूब पिटा, पर हिन्दी साहित्यके विद्वानों और अनुसन्धित्सुओंकी जानकारी इस बाततक ही सीमित रही कि दाऊदने चन्दायन नामक कोई प्रेमाख्यानक काव्य लिखा था। उसकी एक प्रति उन्हें ज्ञात भी हुई तो उसकी ओर समुचित ध्यान ही नहीं दिया गया। लोग रामकुमार वर्माकी धुरी पर चक्कर काटते रहे।

चन्दायनकी प्रतियोंकी खोजका वास्तविक कार्य ऐसे लोगोंने आरम्भ किया, जिनका सम्बन्ध हिन्दी साहित्यसे कम पुरातत्व और इतिहास से अधिक है। यह कार्य उन्होंने १९५२-५३ ई० में ही आरम्भ कर दिया था। चन्दायनकी ओर सर्वप्रथम

---

१ जायसीके परवर्ती हिन्दी सूफी कवि और काव्य, लखनऊ, स० २०१३, पृ० १३८।

२. सूफीमत और हिन्दी साहित्य, दिल्ली, १९५५ ई०, पृ० ११२।

३ नागरी प्रचारिणी पत्रिका, वर्ष ५४, स० २००६, पृ० ४२।

४. भारतीय प्रेमाख्यान की परम्परा, प्रयाग, १९५६ ई०, पृ० ८८।

ध्यान वासुदेवशरण अग्रवाल का गया। उन दिनों वे मलिक मुहम्मद जायसीके पद्मावतकी सजीवनी व्याख्या प्रस्तुत करनेमें लगे थे। रामपुर के रजा पुस्तकालयमें फारसी लिपिमें अंकित पद्मावतकी जो प्रति है, उसके प्रथम पृष्ठ पर उन्हें चन्दायन शीर्षकके साथ उक्त ग्रन्थकी चार पंक्तियाँ अंकित मिलीं। इन पंक्तियोंको उन्होंने पहले एक लेखमें[1] फिर अपनी पद्मावतकी भूमिकामें उद्धृत किया।[2]

उन दिनों मैं वासुदेवशरण अग्रवालके निकट सम्पर्कमें था तथा काशी विश्वविद्यालयके भारत कला भवनमें सहायक संग्रहाध्यक्षके पद पर काम कर रहा था। अतः चन्दायनका इस प्रकार परिचय मिलने पर मेरा ध्यान तत्काल भारत कला भवनमें संग्रहीत अपभ्रंश शैलीके उन ६ चित्रोंकी ओर गया, जिनकी पीठ पर फारसी लिपिमें आलेख हैं। ये चित्र बीस पचीस वर्ष पूर्व राय कृष्णदासको काशीके गुदड़ी बाजारमें मिले थे। उनकी कलापारखी दृष्टिसे उसका महत्व छिपा न रह सका और वे उन्हें कदाचित दो-दो आनेमें खरीद लाये थे। कलाके इतिहासकी दृष्टिसे इन चित्रोंका अत्यधिक महत्व है। वे भारतीय कलासे सम्बन्ध रखनेवाले अनेक ग्रन्थोंमें प्रकाशित हो चुके हैं और उनकी अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति है। राय कृष्णदासने पृष्ठांकित आलेखोंको पढ़कर इतना तो अनुमान कर लिया था कि वे किसी अवधी काव्यके पृष्ठ हैं पर किस काव्यके पृष्ठ हैं, इसका उन्हें कोई अनुमान न हो सका था। फलतः कला पुस्तकोंमें सर्वत्र इन चित्रोंकी चर्चा अज्ञात अवधी काव्यके पृष्ठोंके रूपमें ही हुई है। मैंने इन चित्रोंके आलेखोंकी परीक्षा की और उन आलेखोंमें जहाँ-तहाँ लोरक (काव्यके नायक) और चन्दा (काव्यकी नायिका) का नाम पाकर मुझे इस बातमें तनिक भी सन्देह न रहा कि वे पृष्ठ चन्दायनके ही हैं। मेरे इस शोध के परिणाम स्वरूप कला क्षेत्रमें यह बात स्वीकार कर ली गयी कि वे चित्र लोरक-चन्दाकी कथाके हैं।[3]

कलाके क्षेत्रमें चन्दायनकी जानकारी इससे भी पहले थी। पंजाब संग्रहालयमें २४ चित्रोंकी एक माला थी, जो अब पाकिस्तान और भारतके बीच बँट गयी है। (१४ चित्र लाहौरके संग्रहालयमें रह गये और १० चित्र भारतको मिले, जो अब पटियाला स्थित पंजाबके राजकीय संग्रहालयमें हैं।) इन चित्रोंके पीछे भी फारसी लिपिमें आलेख हैं। उन आलेखोंसे उक्त संग्रहालयके संग्रहाध्यक्षने यह जान लिया था कि वे लोर और चन्दा नामक प्रेमी प्रेमिकासे सम्बन्ध रखनेवाले किसी काव्य ग्रन्थके पृष्ठ हैं। उन्होंने लाहौर संग्रहालयके चित्रोंकी जो सूची प्रकाशित की, उसमें इन चित्रोंका परिचय इसी रूपमें दिया है।[4] इन चित्रोंकी विस्तृत विवेचना कार्ल खण्डालावालाने बम्बईकी सुप्रसिद्ध कला पत्रिका मार्गमें की है। वहाँ उन्होंने इन चित्रोंको लोर-चन्दा

---

१ भारतीय साहित्य (आगरा), वर्ष १, अंक १, पृ० १६४।

२ पद्मावत, सजीवनी व्याख्या, चिरगाँव (झाँसी), १९५६ ई०, पृ० १२।

३ ललित कला, दिल्ली, अंक १-२, पृ० ७०, पा० टि० ३।

४ कैटलाग आव द पेंटिंग्स इन द सेण्ट्रल म्यूजियम लाहौर, चित्र के० ७-३०।

रौलैण्ड्स प्रति

कड़वक २६५

बम्बई प्रति

कड़वक १६०

काशी प्रति

पृष्ठक -५०

मनेरशरीफ प्रति

कड़वक ३१९

पंजाब प्रति
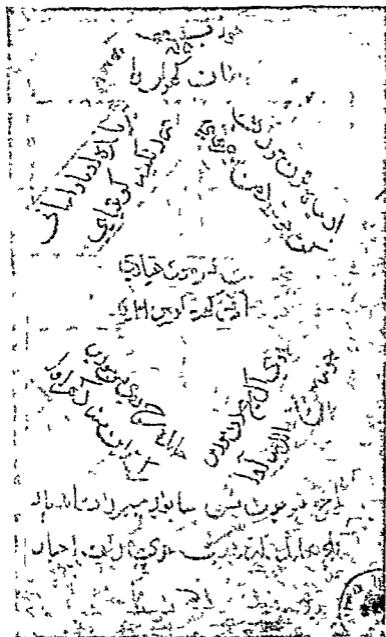
सीरीजका नाम दिया है।[१] फलतः कला मर्मज्ञवाले चित्र भी लौर-चन्दा सीरीजके दूसरे नमूनेके रूपमें स्वीकार किये गये।

रामपुर, काशी और पंजाबकी इन तीन प्रतियोंके अतिरिक्त एक चौथी प्रति की जानकारी १९५३-५४ ई० में हुई। पटना कालेजके इतिहासके प्राध्यापक सैयद हसन असकरी इतिहासके विद्वान होनेके अतिरिक्त उर्दू हिन्दी साहित्यके प्रति भी रुचि रखते हैं और प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थोंकी खोज उनका व्यसन है। अपने इस व्यसनके परिणाम स्वरूप उन्हें अनेक महत्वपूर्ण ग्रन्थोंको प्रकाशमें लानेका श्रेय प्राप्त है। उस वर्ष मनेरशरीफके खानकाहके सज्जादनशीन और उनके भाई मौलवी मुरादुल्लाके पुराने ग्रन्थोंके बस्तोंको टटोलते हुए उन्हें चन्दायनके ६४ पृष्ठोंकी एक खण्डित प्रति मिली। वे उस समय केवल इतना ही जान सके कि वह हिन्दीका कोई अज्ञात ग्रन्थ है। संयोगसे वासुदेवशरण अग्रवाल उन्हीं दिनों पटना गये। असकरीने उन्हें यह ग्रन्थ दिखाया। तब पुनःपरीक्षण करनेपर ज्ञात हुआ कि वे चन्दायनके ही पृष्ठ हैं। तदनन्तर असकरीने इस प्रतिके सम्बन्धमें अंग्रेजी और उर्दूके पत्रोंमें कई लेख प्रकाशित किये।[२]

इस प्रतिके ज्ञात होनेके कारण ही चन्दायनकी एक अन्य प्रतिका पता चला। यह प्रति भी खण्डित है। इसमें भी ६४ पृष्ठ हैं; किन्तु इस प्रतिकी विशेषता यह है कि उसके पृष्ठ चित्रित है। काशी और पंजाबवाली प्रतियोंकी तरह ही इनके एक ओर चित्र और दूसरी ओर फारसी लिपिमें आलेख हैं। यह प्रति भोपालके एक मुस्लिम परिवारमें थी। उसके स्वामी चित्रोंके कारण उसे मूल्यवान तो समझते थे, पर वे चित्र वस्तुतः क्या है, इसका उन्हें कुछ पता न था। १९५४ ई० में जब भारतीय पुरातत्व विभागके अरबी-फारसी अभिलेखोंके विशेषज्ञ जियाउद्दीन अहमद देसाई भोपाल गये तो उन्हें वह चित्राधार दिखाया गया। देसाई उन्हीं दिनों पटना होकर आये थे और असकरीने उन्हें अपनी चन्दायनकी प्रति दिखायी थी। अतः उन्हें भोपालवाली प्रतिको उलटते पुलटते हुए यह समझनेमें देर न लगी कि वह भी चन्दायनकी ही प्रति है। तब चन्दायनकी सचित्र प्रतिके रूपमें उसका महत्व बढ़ गया और उसे १९५७ ई० में बम्बईके प्रिन्स आव वेल्स म्यूजियमने क्रय कर लिया।

काशीवाले पृष्ठ मेरे शोधसे प्रकाशमें आये, यह ऊपर कहा जा चुका है। भोपालवाली प्रति उस संग्रहालयमें है, जहाँ मैं काम करता हूँ। अतः इन दोनों ही प्रतियोंपर काम करनेका अधिकार मेरा था ही। मनेरशरीफ वाली प्रतिका विवरण असकरी पहले ही प्रकाशित कर चुके थे। उनकी प्रतिके उपयोग करनेमें कोई बाधा थी ही नहीं। फलतः इन प्रतियोंके आधारपर चन्दायनको प्रस्तुत करनेका कार्य मैंने आरम्भ किया।

---

१. मार्ग, बम्बई, भाग ४, अंक ३, पृ० २४।
२. करेण्ट स्टडीज, पटना कालेज, १९५५ ई०, पृ० ६-१६; पटना युनिवर्सिटी जर्नल, १९६० ई०, पृ० १६७१, मआसिर, पटना, अप्रैल १९६० ई०, अंक १६, पृ० ५४-५४।

बम्बई (भोपाल) वाले चन्दायनके पृष्ठोंके पाठोद्धार (फारसी लिपिसे नागराक्षरों में रूपान्तरित करने) का काम समाप्त कर उसके पाठके स्वरूपका अन्तिम निश्चय कर ही रहा था कि **माताप्रसाद गुप्तने** प्रयाग विश्वविद्यालयके माध्यमसे और **विश्वनाथ प्रसादने** आगरा विश्वविद्यालयके हिन्दी विद्यापीठके माध्यमसे बम्बईवाली प्रतिके फोटो-प्रिंटकी माँग की। तब ज्ञात हुआ कि वे दोनों विद्वान भी संयुक्त रूपसे अन्य दो प्रतियोंके सहारे चन्दायनपर काम कर रहे हैं। चूँकि मैं बम्बईवाली प्रति पर काम कर रहा था, सिद्धान्ततः संग्रहालयसे उन्हें उसके फोटो प्रिंट आदि नहीं दिये जा सकते थे। किन्तु यह मानकर कि वे लोग हिन्दी साहित्यके माने-जाने विद्वान हैं, मेरी अपेक्षा वे इस ग्रन्थके साथ अधिक न्याय कर सकेंगे, मैंने आगे कार्य करना स्थगित कर दिया और उनकी माँगोंके अनुसार प्रयाग विश्वविद्यालयको चन्दायनके पृष्ठोंके फोटो-नेगेटिव और आगरा हिन्दी विद्यापीठको फोटो प्रिंट भिजवा दिये गये।

कुछ काल पश्चात् **माताप्रसाद गुप्तने** संग्रहालयके डाइरेक्टर **मोतीचन्द्रको** लिखा कि बम्बईवाली प्रतिका मेरा तैयार किया हुआ पाठ भी उन्हें भेज दिया जाय। मैंने उसका कार्य स्थगित कर दिया था, इस कारण उसके प्रति मेरा कोई मोह न था। मैंने अपने पाठकी एक टाइप की हुई प्रति उन्हें भेज दी। कुछ दिन पश्चात् **असकरीका** एक लेख देखने में आया, जिसमें उन्होंने बम्बईवाली प्रति (जिसकी चर्चा उन्होंने भोपाल प्रतिके रूपमें किया है) की एक टाइप की हुई कापी **उदयशंकर शास्त्री** (आगरा हिन्दी विद्यापीठके एक अधिकारी) द्वारा प्राप्त होनेकी बात कही थी और उसके कुछ उद्धरण भी दिये थे।[1]

असकरीने जिस टाइप की हुई प्रतिको देखा, वह प्रति मेरी वाली प्रति थी अथवा **विश्वनाथ प्रसाद** और **माताप्रसाद गुप्तकी** अपनी तैयार की हुई कोई स्वतन्त्र प्रति, इसके निर्णय और विवादमें जानेकी आवश्यकता नहीं। कहना केवल इतना ही है कि संग्रहालयसे किसीको जब किसी वस्तुकी प्रतिलिपि या फोटो आदि दी जाती है तो उस व्यक्ति से यह अपेक्षा की जाती है कि वह उसपर स्वयं काम करेगा और उस सामग्रीको अपनेतक ही सीमित रखेगा और प्रकाशनसे पूर्व संग्रहालयके अधिकारियोंसे समुचित अनुमति ले लेगा। पर यह सौजन्य वे लोग निभा न सके।

इसी बीच ग्वालियरके **हरिहर निवास द्विवेदी** बम्बई आये। वे उन दिनों चन्दायनकी कथासे सम्बन्ध रखनेवाले एक अन्य काव्य ग्रन्थ **मैनासतपर** काम कर रहे थे। दुराग्रह करके वे भी मेरे वाचनकी एक प्रति ले गये। ले जाते समय उन्होंने बार-बार आश्वासन दिया था कि वे मेरे वाचनको अपनेतक ही सीमित रखेंगे और उसे प्रकाशित न करेंगे और मेरी प्रति मुझे शीघ्र ही लौटा देंगे; किन्तु ग्वालियर जाते ही वे अपना वचन भूल गये। अपनी पुस्तकमें उन्होंने मेरे वाचनको अनुचित ढंगसे उद्धृत तो किया ही; बार-बार तकाजा करनेपर भी मेरी प्रति लौटाना तो दूर पत्रोत्तर देनेका सौजन्य भी उनसे न हो सका।

---

१. पटना युनिवर्सिटी जर्नल, १९६० ई०, पृ० ६२।

चन्दायनकी इन प्रतियोंके मिलनेकी बात ज्ञात होनेपर रावत सारस्वतका ध्यान अपनी उस प्रतिकी ओर गया जो उनके पास बीसों बरससे पड़ी थी और जिसे धीरेन्द्र वर्माने अप्रमाणित घोषित कर दिया था। उन्होंने तत्काल अपने उस ग्रन्थका परिचय वरदामें प्रकाशित कराया और उसका एक प्रति मुद्रण मुझे भेजा। चन्दायनके सम्पादनकी इच्छा प्रकट करते हुए उन्होंने यह भी सूचित किया कि बम्बईवाली प्रतिका मेरा पाठ उन्हें कहींसे प्राप्त हो गया है और वे मुझसे तत्सम्बन्धमें अन्य आवश्यक जानकारी चाहते हैं।

शालीनताकी इस प्रकार उपेक्षा देखकर मेरा चौंक उठना स्वाभाविक था। मैं क्षुब्ध हो गया। मोतीचंद्रको भी ये बातें अच्छी न लगीं। उन्होंने भी सलाह दी कि मैं अपना पाठ शीघ्रातिशीघ्र प्रकाशित कर दूँ। फलतः मैंने पुनः चन्दायनके सम्पादनमें हाथ लगाया। उसके लिए सामग्री जुटाते समय जब कमल कुलश्रेष्ठके शोध निबन्ध हिन्दी प्रेमाख्यानक काव्यको उलट रहा था, उस समय मेरा ध्यान उनके इस कथनकी ओर गया कि गार्सां द तासीने अपनी पुस्तक हिस्तोरे द ला लितरेत्योर हिन्दुई एत हिन्दुस्तानीमें लोरक चन्दाकी कुछ अप्राप्य प्रतियोंका उल्लेख किया है। यह कथन मुझे कुछ आश्चर्यजनक, साथ ही महत्त्वपूर्ण जान पड़ा। मैंने तत्काल उक्त ग्रन्थका लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय द्वारा प्रस्तुत अनुवाद हिन्दुई साहित्यका इतिहास देखा, पर उसमें ऐसी कोई बात मुझे न मिल सकी जिससे कमल कुलश्रेष्ठके कथनका समर्थन हो सके। यह बात नहीं कि कुलश्रेष्ठने गलत सूचना प्रस्तुत की है वरन् वार्ष्णेयने अनुवाद करनेमें स्वेच्छा नीति बरती है। जो अंश उन्हें अनावश्यक जान पड़े, उन्हें उन्होंने छोड़ दिया है। ऐसे आकर ग्रन्थोंके अनुवादमें, जो मूलमें दुष्प्राप्य हों, स्वेच्छाका प्रयोग किस प्रकार घातक सिद्ध हो सकता है, यह स्पष्ट सामने आया। मेरे लिए आवश्यक हो गया कि मूल ग्रन्थ देखूँ।

तासीके उक्त ग्रन्थके दो संस्करण प्रकाशित हुए थे। एक तो १८३७ और १८४७ ई० के बीच और दूसरा १८७०-७१ ई० में। दूसरे संस्करणमें लेखकने काफी परिवर्तन किया है। पहले संस्करणको उलटनेपर जो कुछ मिला उसका अंग्रेजी रूप इस प्रकार है —

> रोमान्स—(दि) आव जाँदक एण्ड हुरक आर द फेरी पैलेस आव द लेक—अ कार्टो साइज्ड मैनुस्क्रिप्ट विथ मेनी कलर्ड डेकोरेशन्स। दिस मैनुस्क्रिप्ट इस रिटेन इन पिक्युलियर पर्शियन कैरेक्टर्स। इट बिलाङ्ग्ड टु द रिच कलेक्शन आव द ड्यूक आव ससेक्स, अंकिल आफ हर मजेस्टी द क्वीन आव ग्रेट ब्रिटेन।[१]
>
> अर्थात्—जाँदक और हुरककी प्रेम कथा अथवा झील स्थित परीमहल—एक चौपर्ता हस्तलिखित ग्रन्थ, जिसमें अनेक रंगीन अलंकरण हैं। यह हस्तलिखित ग्रन्थ विचित्र ढंगके फारसी लिपिमें लिखा हुआ है। यह ब्रिटेनकी महारानीके चचा ड्यूक आव ससेक्सके मूल्यवान संग्रहमें है।

---

१ खण्ड १, पृ० ५९६

दूसरे संस्करणमे पाँचवीं अनुक्रमणिकाके रूपमें काव्य ग्रन्थोंकी एक विस्तृत सूची दी हुई है। उसमे भी उपयुक्त ग्रन्थकी चर्चा है, पर सर्वथा भिन्न रूपमें। उसका अंग्रेजी रूप इस प्रकार है :—

चन्दा ओ हुरक (द रोमान्स आव) आर द पैलेस आव द पेरी लेक— मैनुस्क्रिप्ट इन क्वार्टो, विथ कलर्ड ड्राइंग्स, ह्विच फारमरली बिलाग्ड टु द लाइब्रेरी आव द ड्यूक आफ ससेक्स एण्ड देन टु दैट आव एन० ब्लान्द। आई हैव रेड एण्ड ट्रान्सलेटेड द टाइटिल एज एबव विथ एफ० फाल्कनर, हू हैज केयरफुली एक्जामिण्ड दिस वर्क। इट इज हाउ एवर गिवन इन द 'जनरल केटलॉग' आव आगरा अण्डर द टाइटिल 'द रोमान्स आव जण्डाल ऑर द पेरी पैलेस आव द लेक।' अकार्डिंग टु द टाइटिल गिवन टु इट इन द मैन्युस्क्रिप्ट इन क्वेश्चन, आ रीडिंग आई हैव फालोड माईसेल्फ इन द फर्स्ट एडीशन आव दिस वर्क।[1]

अर्थात्—चन्दा और हुरककी प्रेम कथा अथवा परी झीलका महल। रंगीन चित्रोंसे युक्त चौपर्ता हस्तलिखित ग्रन्थ, जो पहले ड्यूक आव ससेक्स के पुस्तकालय-में था और पश्चात् एन० ब्लान्द के। मैंने उसके शीर्षकको एफ० फाल्कनरकी सहायतासे, जिन्होंने इस ग्रन्थका ध्यानपूर्वक परीक्षण किया है, उपर्युक्त रूपमें पढ़ा और अनुवाद किया है। किन्तु आगराकी 'सामान्य सूची'में उसका उल्लेख 'जण्डालकी प्रेम कथा अथवा झीलका परी महल'के रूपमें हुआ है। प्रस्तुत हस्त-लिखित ग्रन्थमें जो शीर्षक दिया है उसको मैंने इस ग्रन्थके प्रथम संस्करणमें अपनाया था।

उपर्युक्त दोनों ही अवतरणोंको सामान्य दृष्टिसे देखनेसे यह पता नहीं चलता कि तासीने चन्दायनकी किसी प्रतिका उल्लेख किया है। किन्तु दूसरे अवतरणमे पुस्तकके शीर्षक चन्दा और हुरककी प्रेम कथाका उल्लेख इसकी ओर स्पष्ट संकेत करता है। फारसीमें लिखित चांदावो जाँदक और लोरकका हुरक पढ लेना कठिन नहीं है। अस्तु, मुझे समझते देर न लगी कि पुस्तक लोरक और चन्दाकी प्रेम कहानीसे ही सम्बन्ध रखती है। इस प्रकार कमल कुलश्रेष्ठका उल्लेख मेरे लिए बहुमूल्य सिद्ध हुआ।

तासी द्वारा प्रस्तुत इस सूचनाके सामने आते ही मैं उनके द्वारा देखी गयी इस हस्तलिखित प्रतिका पता लगानेमें सचेष्ट हुआ। देखा जाता है कि यूरोपमें जब कोई कला अथवा पुस्तक प्रेमी मरता है तो उसके उत्तराधिकारी मृत्यु कर चुकानेके लिए प्रायः उसके कला अथवा पुस्तकसंग्रहको ही बेचा करते हैं। अतः मैंने अनुमान किया कि ड्यूक आव ससेक्सके पुस्तकालयकी भी यही गति हुई होगी। इस दृष्टिको सामने रखकर मैंने खोज प्रारम्भ की। ज्ञात हुआ कि ड्यूक आव ससेक्सका उक्त पुस्तकालय १८४४ ई० में बिका था और उसे लन्दनके सुप्रसिद्ध पुस्तक विक्रेता लिलीने

१ खण्ड ३, पृ० ४३१-४३२।

क्रय किया था। पश्चात् उस पुस्तक विक्रेताने उस संग्रहके हस्तलिखित ग्रन्थोंको फारसीके सुप्रसिद्ध विद्वान नथैनियल ब्लान्दके हाथ बेचा। आगे खोज करनेपर ज्ञात हुआ कि नथैनियल ब्लान्दने जो हस्तलिखित ग्रन्थ संग्रह किये थे, उन्हें १८६६ ई० में अर्ल आव क्राफर्डने क्रय किया था और वे उनके बिबलियोथेका लिण्डेसियाना नामक निजी पुस्तकालयमें रखे गये थे। आगे खोज करनेपर पता चला कि १९०१ ई० में क्राफर्ड संग्रहको मैनचेस्टरके जान रीलैण्ड्स पुस्तकालयने क्रय किया था।

जब मैंने रीलैण्ड्स पुस्तकालयसे पूछताछ की तो उन्होंने क्राफर्ड संग्रह क्रय करनेकी बात स्वीकार करते हुए सूचना दी कि उपर्युक्त ग्रन्थ उनके संग्रहमें मौजूद है। तत्काल मैंने उनसे उक्त ग्रन्थका माइक्रोफिल्म देनेका अनुरोध किया। माइक्रोफिल्म आनेपर ज्ञात हुआ कि मेरा अनुमान सर्वथा सत्य था। उक्त ग्रन्थ वस्तुत चन्दायन ही है। इस प्रकार मेरे हाथ चन्दायन की एक बहुत बड़ी प्रति आयी और मैं उस प्रतिके पाठोद्धारमें जुट गया।

इस नयी प्रतिका पाठोद्धार चल ही रहा था कि डब्ल्यू० जी० आर्चर द्वारा सम्पादित इण्डियन मिनियेचर नामक भारतीय चित्रोंका चित्राधार प्रकाशमें आया। उसमें उन्होंने मैसाचुसेट्स (अमेरिका) निवासी फैंसिस होफरके संग्रहसे एक चित्र प्रकाशित किया है।[1] उसे उन्होंने बम्बई प्रतिके चित्रोंकी सीरीजका बताया था। इस सूत्रसे चन्दायनके कुछ और पृष्ठ प्राप्त होनेकी सम्भावना सामने आयी और मैं उन्हें भी प्राप्त करनेकी ओर प्रयत्नशील हुआ फलत उक्त संग्रहसे इस काव्यके दो पृष्ठ हाथ आये।

इस प्रकार कुछ बरसों पूर्वतक जो चन्दायन हिन्दी साहित्यके इतिहासमें केवल नाम रूपमें जीवित था, उसके सम्बन्धकी पर्याप्त सामग्री एकत्र हो गयी। मैंने उसके सम्पादनका कार्य नये सिरेसे आरम्भ किया और परिणाम स्वरूप यह ग्रन्थ अब आपके सामने है। उपलब्ध सामग्रीके आधारपर चन्दायनको अपने पूर्णरूपमें प्रस्तुत करना,तो सम्भव नहीं हो सका, फिर भी उसका एक बहुत बड़ा अंश सामने आ गया। अभी उसके आदि और अन्तके कुछ अंश अनुपलब्ध है और बीचमें यत्रतत्र कुछ पृष्ठोंका अभाव है। यदि रावत सारस्वतवाली प्रतितक मेरी पहुँच हो सकती तो सम्भवत आदि और मध्यके अंशोंकी पूर्ति कर पाता, यद्यपि उसका पाठ अत्यन्त विकृत है। सुनता हूँ वे उसे प्रकाशित कर रहे हैं। यदि वह प्रति कभी प्रकाशमें आ सकी तो यह कमी पूरी हो जायगी, पर अन्तिम अंशकी पूर्ति तभी सम्भव है, जब कोई नयी प्रति उपलब्ध हो।

प्रस्तुत प्रयत्न ग्रन्थकी उपलब्ध सामग्रीको फारसी लिपिसे नागराक्षरोंमें प्रस्तुत कर उन्हें क्रमबद्ध कर देने तक ही सीमित है। किन्तु अकेला यह काम भी कितना कठिन है, इसका अनुभव वही कर सकते हैं जिन्हें इस कार्यका व्यावहारिक अनुभव है।

---

१ इण्डियन मिनियेचर्स, कनेक्टीकट, १९६०, फलक १३।

पदमावत, मधुमालती आदि ग्रन्थोंके सम्पादकोंको यह सुविधा रही है कि उनके सम्मुख फारसी लिपिमें अंकित प्रतियोंके साथ-साथ नागराक्षर अथवा कैथी लिपिमें अंकित प्रतियाँ भी रही हैं और इस प्रकार उनके सम्मुख ग्रन्थका एक ढाँचा खड़ा था। उन्हें केवल शब्दोंके पाठ रूपका निर्धारण करना था। मेरे सम्मुख न तो कोई नागराक्षर प्रति थी और न कथाका रूप ही ज्ञात था। कविकी वर्णन शैलीकी भी कोई जानकारी न थी। ऐसी स्थितिमें फारसी लिपिमें अंकित हिन्दी भाषाके इस ग्रन्थके पाठोद्धारका कार्य पत्थरसे सर टकराने जैसा था। कोई ग्रन्थ यदि नस्तालीक लिपि (आधुनिक फारसी लिपि)में हो और उसमें जेर, ज्बर, पेश और नुक्ते भी अपने स्थानपर लगे हों तो भी सरलतासे किसी हिन्दी शब्दके वास्तविक रूपका अनुमान नहीं किया जा सकता। यहाँ तो जो प्रतियाँ मेरे सामने हैं, वे सभी नस्ख (अरबी लिपि शैली) में हैं और उनमें जेर, जबर, पेश तो है ही नहीं, नुक्तोंका भी अभाव है; और यदि कहीं नुक्ते है भी तो यह निर्णय करना कठिन है कि वे अपने ठीक स्थानपर ही लगे हुए हैं। इस लिपिमें नुक्ते कहीं भी रखे जा सकते हैं। ऐसी स्थितिमें यह कहना कि मैंने पूर्णतः शुद्ध पाठोद्धार किया है, प्रवचना मात्र होगी। यही कह सकता हूँ कि मूल शब्द तक पहुँचनेकी यथासाध्य चेष्टा मैंने की है। फिर भी अनेक स्थल ऐसे हैं जहाँ पाठके शुद्ध होनेमें मुझे स्वयं सन्देह है।

उपलब्ध सामग्रीको क्रम-बद्ध रूप देनेका पूर्ण प्रयत्न किया गया है, फिर भी कुछ ऐसे अंश हैं जिनका पर्याप्त संकेतके अभावमें उचित स्थान निश्चित करना सम्भव नहीं हो सका है। ऐसे स्थलोंपर अनुमानका सहारा लिया गया है।

प्रस्तुत ग्रन्थका कार्य आरम्भ करते हुए मैंने शुद्ध पाठ (क्रिटिकल टेक्स्ट), वासुदेवशरण अग्रवालकृत पदमावतकी संजीवनी व्याख्याके अनुकरण पर व्याख्या और आवश्यक शब्दोंके अर्थ और उनके स्पष्टीकरण के लिए टिप्पणी देनेकी कल्पना की थी। पर पाठोद्धारका काम समाप्त होनेके पश्चात जब इस ओर अग्रसर हुआ तो ज्ञात हुआ कि उपलब्ध सामग्रीके आधारपर परिशुद्ध सम्पादन (क्रिटिकल एडिटिंग) सम्भव नहीं है। उपलब्ध प्रतियाँ अधिकांशतः काव्यके विभिन्न अंगोंके अंश मात्र हैं। ऐसे स्थल थोड़े ही हैं, जो एकसे अधिक प्रतिमें प्राप्त हैं। परिशुद्ध सम्पादनका कार्य तभी सम्भव है जब दो से अधिक प्रतियाँ, यदि पूर्णतः नहीं तो अधिकांश अंशोंमें उपलब्ध हों।

सशुद्ध पाठके अभावमें ग्रन्थकी व्याख्याका कार्य भी कुछ महत्त्व नहीं रखता। जब तक पाठके शुद्ध और स्पष्ट होनेका विश्वास न हो, समुचित व्याख्या उपस्थित नहीं की जा सकती। अतः यह कार्य भी हाथमें न लिया जा सका।

ग्रन्थमें आये महत्त्वपूर्ण शब्दोंका अर्थ और उनके स्पष्टीकरणका कार्य किया जा सकता था; पर यह कार्य मेरी अपनी दृष्टिमें उतना सरल नहीं है, जितना कि इस दिशामें काम करनेवाले अनेक विद्वान समझते हैं। खींचतान कर शब्दोंका मनमाना अर्थ प्रस्तुत करनेमें मेरा विश्वास नहीं। किसी शब्दके भावको समझनेके लिए उसके

मूलतक जाना आवश्यक है। इस ग्रन्थमें आये हुए शब्दोंके मूलमें एक ओर संस्कृत, प्राकृत और अपभ्रंश है तो दूसरी ओर अरबी और फारसी। अतः यह कार्य इन भाषाओंके कोषोंके बीच बैठकर ही किया जा सकता है। इस प्रकारके कार्यकी प्रगति सदैव मन्द ही होगी। दुर्भाग्यसे इन दिनों इस कार्यको हाथमें लेनेके निमित्त मेरे पास समयका अभाव है और मेरे मित्रों और हितैषियोंको इतना धैर्य नहीं है कि वे कुछ समय तक इसके लिए रुक सकें। उनका निरन्तर तकाजा है कि मूल ग्रन्थ शीघ्रसे शीघ्र प्रकाशमें आना ही चाहिये। अतः इस कार्यको भी अगले संस्करण तकके लिए स्थगित कर देना पड रहा है। जिन शब्दोंके टीप मैंने ले लिये हैं, उन्हें ही देकर सन्तोष मानता हूँ।

अन्तमें यह भी निस्संकोच कह देना चाहता हूँ कि हिन्दी साहित्य मेरा अपना विषय नहीं है। मध्यकालीन हिन्दी कवियों और उनके काव्योंसे मेरा परिचय नहींके बराबर है। साहित्यके क्षेत्र में प्रवेश करनेका दुस्साहस सदैव मैंने अपने पुरातत्त्व और इतिहास प्रेम के माध्यमसे ही किया है। पुरातत्त्वकी शोध-बुद्धि ही मुझे चन्दायनके निकट खींच लायी है और यह ग्रन्थ आपके सम्मुख उपस्थित करनेकी धृष्टता कर रहा हूँ। यदि इसमें कहीं कोई कमी और त्रुटि जान पड़े तो उसे मेरी अल्पज्ञता समझकर पाठकवृन्द क्षमा करें।

इस दुर्बलताके बावजूद, ग्रन्थको प्रस्तुत करते हुए मैं गौरवका अनुभव करता हूँ। हिन्दी साहित्यके इतिहासकी दृष्टिसे चन्दायनका अपना मूल्य और महत्व है, उसका प्रकाशमें आना हिन्दी साहित्यके इतिहासमें एक बहुत बड़ी घटना है।

प्रिंस आव वेल्स म्यूजियम, बम्बई। गणतन्त्र दिवस, १९६२। — परमेश्वरी लाल गुप्त

कृतज्ञता ज्ञापन

सर्वप्रथम मैं प्रिन्स आव वेल्स म्यूजियम, बम्बईके डाइरेक्टर डाक्टर मोतीचन्द्र, जान रीलैण्ड्स पुस्तकालय, मैनचेस्टर (इङ्गलैण्ड) के डाइरेक्टर डाक्टर इ० राबर्टसन तथा उसके हस्तलिखित ग्रन्थ विभागके अध्यक्ष डाक्टर एफ० टेलर, भारत कला भवन, काशीके सग्रहाध्यक्ष राय कृष्णदास, पजाब राजकीय सग्रहालयके अध्यक्ष श्री विद्यासागर सूरि, पटनाके सैयद हसन असकरी, मैसाचुसेट्स (अमेरिका) के श्री मैन्सिल होफर, रजा पुस्तकालय, रामपुरके पुस्तकाध्यक्ष श्री अर्शीका आभार मानता हूँ, जिन्होंने अपने सग्रहकी चन्दायन सम्बन्धी सामग्री प्रसन्नतापूर्वक मुझे सुलभ कर दी और उन्हें प्रकाशित करनेकी अनुमति प्रदान की।

जान रीलैण्ड्स पुस्तकालयके अधिकारियोंका इसलिए भी अत्यन्त अनुगृहीत हूँ कि उन्होंने न केवल मुझे अपनी प्रतिके उपयोग और प्रकाशित करनेकी अनुमति दी, वरन् उसे ढूँढ निकालने के कारण उन्होंने उसपर मेरा अधिकार स्वीकार किया और स्वेच्छया अपना यह कर्तव्य भी माना कि जबतक मेरा ग्रन्थ तैयार न हो जाय तबतक वे उस प्रतिके सम्बन्धमें किसी प्रकारकी सूचना किसी अन्य व्यक्तिको न देंगे और तत्सम्बन्धी जानकारी अपने तक ही सीमित रखेंगे। और इसका निर्वाह उन्होंने पूर्णत किया।

रीलैण्ड्सवाली प्रति ढूँढ निकालनेमें ब्रिटिश म्यूजियमके प्राच्य पुस्तक विभागके श्री जी० एम० मेरेडिथ ओवेन्स और इण्डिया आफिस पुस्तकालयकी सहायक कीपर मिस ई० एम० डाइसनने मेरी बहुत बड़ी सहायता की। भारतीय कलाके अमेरिकी कला मर्मज्ञ श्री कैरी वेल्सने होफर सग्रहके पृष्ठोंके ट्रान्सपेरेन्सी तैयार कर भेजनेकी कृपा की। लाहौर सग्रहालयकी प्रतिके फोटोकी प्राप्ति सुविख्यात चित्रकार श्री अब्दुर्रहमान चुगताई और ढाका सग्रहालयके अध्यक्ष डाक्टर अहमद हसन दानीकी सहायताके बिना सम्भव न था। इन सबके प्रति भी मैं अत्यन्त कृतज्ञ हूँ।

डाक्टर मोतीचन्द्रके प्रति किन शब्दोंमें अपनी कृतज्ञता प्रकट करूँ! उनका तो चिरऋणी रहूँगा। उन्होंने मेरे इस कार्यमें आरम्भसे रुचि ली और मुझे सतत प्रोत्साहित करते रहे। यही नहीं, पाठोद्धार कार्यमें भी मेरा निरन्तर निर्देशन करते रहे, कठिन स्थलोंके पाठोद्धारमें स्वय माथापच्ची की और उपयुक्त पाठ सुझाये। उनके सहयोगके बिना कदाचित मैं इस कार्यको शीघ्र और सुगमतासे न कर पाता। उर्दू रिसर्च इन्स्टीट्यूट, बम्बईके डाइरेक्टर श्री नजीब अशरफ नदवी और उनके सहायक

श्री अब्दुर्रज्जाक कुरैशीने काव्यके फारसी शीर्षकोंके पाठ और उनके अनुवाद प्रस्तुत करनेमें मेरी पूरी सहायता तो की ही, साथ ही उर्दू फारसी ग्रन्थोंके आवश्यक सन्दर्भों को प्राप्त करनेमें भी योग दिया। सैयद हसन असकरी भी, अपनी प्रति देनेके अतिरिक्त, मेरे इस काममें निरन्तर रुचि लेते रहे और जब कभी उन्हें मेरे कामकी कोई चीज नजर आयी, उन्होंने तत्काल उससे अवगत किया। उनकी इस कृपाके कारण मुझे बहुत-सी महत्वपूर्ण सामग्रीकी जानकारी हो सकी। इन सबका ऋण मेरे ऊपर कम नहीं है।

इन सज्जनोंके अतिरिक्त सर्व श्री ब्रजरत्न दास (काशी), किशोरी लाल गुप्त (आजमगढ), शान्ति स्वरूप (आजमगढ), गणेश चौबे (मोतिहारी), नर्मदेश्वर चतुर्वेदी (प्रयाग), त्रिलोकी नाथ दीक्षित (लखनऊ), कयूमुद्दीन अहमद (पटना), वेद प्रकाश गर्ग (सहारनपुर), प्रभाकर शेटे (बम्बई), शिवसहाय पाठक (बम्बई), जगदीश चन्द्र जैन (बम्बई), हरिवल्लभ भयाणी (बम्बई), नरेन्द्र शर्मा (बम्बई), ब्रजकिशोर (दरभंगा), जगन मेहता (बम्बई) आदि महानुभावोंने इस ग्रन्थकी सामग्री जुटानेमें तरह तरहकी सहायता दी है। इन सबके प्रति भी मैं अपनी कृतज्ञता प्रकट करता हूँ।

पुस्तक की पाण्डुलिपि तैयार हो जाने पर भाई श्रीकृष्णदत्त भट्ट ने उसे आद्योपान्त देखने की कृपा की और महत्वपूर्ण सुझाव दिये। इसके लिए मैं उनका अत्यन्त आभारी हूँ।

प्रकाशकके रूपमें श्री यशोधर जी मोदीने इसके प्रकाशित करनेमें जो रुचि प्रकट की और उसमें शीघ्रातिशीघ्र प्रकाशित करनेकी जो व्यवस्थाकी, उसे मैं भूल नहीं सकता। उसी तत्परतासे ज्ञानमण्डल मुद्रणालयके व्यवस्थापक श्री ओमप्रकाश कपूर ने भी इसके मुद्रणमें योग दिया। इन दोनोंके प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हुए प्रसन्नताका अनुभव करता हूँ।

परमेश्वरी लाल गुप्त

परिचय

कवि

दाऊदके जीवन-वृत्तपर प्रकाश डालने वाले तथ्योंकी जानकारीके साधन अभी उपलब्ध नहीं हैं। उन्होंने चन्दायनके आरम्भमें जो आत्म-परिचय दिया है, वह हमें उपलब्ध किसी प्रतिमें प्राप्त नहीं है। बीकानेरवाली प्रतिमें सम्भवत यह अश अक्षुण्ण है, किन्तु उस प्रतिकी जानकारी अभी तक रावतसारस्वत तक ही सीमित है। उन्होंने उसका जो सक्षिप्त विवरण परदा में प्रकाशित किया है उससे दाऊद के सम्बन्धमें कुछ ही बातोंकी जानकारी हो सकी है।

बीकानेरवाली प्रतिमें आदि शीर्षकमें दाऊदको डलमई कहा गया है। इससे ज्ञात होता है कि वे या तो डलमऊके निवासी थे अथवा डलमऊ उनका निवास-स्थान था। दाऊदने डलमऊका वर्णन अपने ग्रन्थमें किया है और उसे गगा-तटपर बसा बताया है। गगा-तटपर बसा हुआ डलमऊ आज भी उत्तर प्रदेशके रायबरेली जिलेका एक प्रसिद्ध कस्बा है, जो रायबरेलीसे ४४ मील और कानपुरसे ६१ मीलपर स्थित रेलवे जकशन है। अवधके प्रादेशिक तथा रायबरेलीके जिला गजेटियरमें कहा गया है कि दिल्लीके सुल्तान इल्तुत्मिश (अल्तमश)के शासन कालमें इस नगरने समृद्धि प्राप्त की थी। उसके समयमे वहाँ मखदूम बदरुद्दीन रहा करते थे। फीरोजशाह तुगलकके शासनकालमे वहाँ इस्लाम धर्म और विद्याके अध्ययनके लिए एक विद्यालयकी स्थापना हुई थी।

होफर सग्रहमे उपलब्ध एक पृष्ठसे अनुमान होता है कि दाऊदके पिताका नाम मलिक मुबारिक और पितामहका नाम मलिक बयाँ था। मलिक मुबारिक डलमऊके मीर (न्यायाधीश) थे और उनपर दिल्ली सुल्तान फीरोजशाह तुगलकके मन्त्री खान ए-जहाँकी कृपा थी।[१] मुगलकालीन सुप्रसिद्ध इतिहासकार अब्दुर्कादिर बदायूनीके कथनानुसार दाऊदको खान ए-जहाँके पुत्र जौना शाहका आश्रय प्राप्त था। जान पडता है अपने पिताके सम्पर्कसे दाऊद भी खान ए जहाँके और उसकी मृत्युके पश्चात् उसके पुत्र जौना शाहके कृपापात्र बन गये थे। दाऊदने अपने ग्रन्थमें खान-ए-जहाँकी भूरि भूरि प्रशसा की है।

यदि दाऊदके पिता और पितामहकी उपाधि मलिक थी तो यह अनुमान कर लेना सहज है कि वे स्वय भी मलिक दाऊद कहे जाते रहे होंगे। मिश्रबन्धुने उन्हें

१ ये मलिक मुबारिक, शेख मुबारिकसे सर्वथा भिन्न थे, जिन्हें तारीख ए मुबारिकशाहीमें खान ए-जहाँके निजी मौलानाका पुत्र (मौलानाजादा) कहा गया है।

मुल्ला दाऊद लिखा है[१] और गजेटियरोंमें भी उनका उल्लेख इसी रूपमें हुआ है।[२] पर मुनतखब-उत्-तवारीख में अब्दुर्कादिर बदायूनीने उन्हें मौलाना दाऊद कहा है।[३] बीकानेर प्रतिके आरम्भमें जो शीर्षक है उसमें भी वे मौलाना दाऊद डलमई कहे गये हैं। रीलैण्ड्स प्रतिमें भी उनका उल्लेख एक स्थानपर मौलाना दाऊदके रूपमें हुआ है।[४] इन प्राचीन उल्लेखोंसे जान पड़ता है कि दाऊद मौलाना कहे जाते थे। आधुनिक कथनका कि वे मुल्ला थे किसी प्राचीन सूत्रसे समर्थन नहीं होता। हो सकता है आधुनिक लेखकोंने फारसी लिपिमें लिखे मौलाना शब्दको किसी लेखन प्रमादके कारण मुल्ला पढ लिया हो। साथ ही इस सम्बन्धमें यह बात भी ध्यान देने की है चन्दायनकी परम्परामें लिखे गये प्रेमाख्यानक काव्योंके रचयिताओं, यथा—कुतबन, मंझन, जायसी आदि किसीके नामके आगे मुल्ला या मौलाना जैसी उपाधि नहीं पायी जाती। अतः यह सम्भावना भी कम नहीं है कि दाऊद भी मुल्ला और मौलाना, दोनोंमेंसे एक भी न न होकर, कोरे मलिक दाऊद ही रहे हो। मुल्ला और मौलाना दोनों ही मलिकके अपपाठ हो सकते है। ऐसा होना फारसी लिपिमें सहज है। पर जबतक इस बातके स्पष्ट प्रमाण न मिल जाँय, दाऊदको मौलाना दाऊद कहना ही उचित होगा। वे धर्माध्यक्ष (मुल्ला) की अपेक्षा विद्वान (मौलाना) ही अधिक जान पड़ते हैं।

स्वकथनानुसार दाऊद शेख जैनदी (जैनुद्दीन)के शिष्य थे। अकबर कालीन शेख अब्दुलहक्क कृत अखबार-उल-अखयारके अनुसार दाऊदके गुरु शेख जैनुद्दीन 'चिराग ए दिल्ली'के नामसे प्रसिद्ध चिश्ती सन्त हजरत नसीरुद्दीन अवधीकी बडी बहन के बेटे थे। बहनके बेटे होनेके साथ ही साथ वे हजरत नसीरुद्दीनके शिष्य भी थे और खैर-उल-मजालिशके अनुसार उनके 'खादिमे खास' थे। हजरत नसीरुद्दीन अवधीके सम्बन्धमें तो कहनेकी आवश्यकता नहीं कि वे दिल्लीके सुप्रसिद्ध सन्त हजरत निजामुद्दीन औलियाके प्रमुख शिष्य और उत्तराधिकारी थे। इस प्रकार दाऊद चिश्ती सत परम्पराकी दिल्लीवाली प्रधान शाखाके सम्बन्ध रखते थे।

काव्य

दाऊद रचित प्रेमाख्यानक काव्यके नामके सम्बन्धमें अभी हालतक काफी भ्रम रहा है। मिश्रबन्धुने ग्रन्थका नामोल्लेख न करके केवल इतना ही कहा था कि उन्होंने नूरक चन्दाकी कथा लिखी। हरिऔधने उन्हें नूरक और चन्दा नामक दो ग्रन्थोंका रचयिता बताया। गजेटियरों मे दाऊदकी रचनाका नाम चन्दैनी और चन्द्रानी दिया गया है। रामकुमार वर्माने इसका नाम चन्दावन या चन्दावत दिया है। मुनतखब-उत्-तवारीख की जो मुद्रित प्रति और अंग्रेजी अनुवाद प्राप्त हैं, उन दोनों

---

१. पीछे देखिये, अनुशीलन, पृ० २।
२. वही, पृ० ५।
३. वही, पृ० ४।
४. ढ़दवक ३६०।

में ही उसे चन्दावन कहा गया है। किन्तु एशियाटिक सोसाइटी आव बंगाल (कलकत्ता)में संग्रहीत उक्त ग्रन्थकी एक हस्तलिखित प्रति (ग्रन्थ संख्या ११११) में उनका नाम स्पष्ट रूपसे चंदायन या चन्दायन दिया हुआ है। चन्दायन नामसे ही रामपुरवाली पदमावतकी प्रतिमें इस ग्रन्थका एक कडवक उधृत हुआ है। सर्वोपरि बीकानेर प्रतिमें इसे नुस्खः चन्दायन (चन्दायनकी हस्तलिखित प्रति) कहा गया है। इन सबसे स्पष्ट है कि दाऊदके काव्यका नाम चन्दायन है और उसे इसी नामसे पुकारा जाना चाहिये।

रचना-काल

मुनतखब-उत्-तवारीखमें चन्दायनके सम्बन्धमें जो कुछ कहा गया है उससे केवल इतना ही पता लगता है कि उसकी रचना ७७२ हिजरी (१३७० ई०)के पश्चात् किसी समय हुई थी। अवधके गजेटियरमें डलमऊके प्रसग में कहा गया है कि फीरोजशाह तुगलकने वहाँ इस्लाम धर्म और विद्याके अध्ययनके लिए एक विद्यालयकी स्थापना की थी। उस विद्यालयकी उपयोगिता इस बातसे प्रकट है कि मुल्ला दाऊद नामक कविने ७१९ हिजरीमें भाषामें 'चन्दैनी' नामक ग्रन्थका सम्पादन किया। यह तिथि स्पष्ट किसीके प्रमादका परिणाम है, क्योंकि फीरोजशाहका शासन काल ७५२ और ७९० हिजरीके बीच था। लगता है, प्रेसके भूतोंने ७७९ का ७१९ कर दिया है।

परशुराम चतुर्वेदीने भारतीय हिन्दी परिषद (प्रयाग) से प्रकाशित हिन्दी साहित्य (द्वितीय खण्ड)में लखनऊ विश्वविद्यालयके प्राध्यापक त्रिलोकीनाथ दीक्षित से प्राप्त चन्दायनके चार यमक उद्धृत किये हैं। उनमेंसे एक यमकमें उसकी रचनाकी तिथि इस प्रकार कही गयी है —

बरस सात सौ हतै उन्यासी। तहिया यह कवि सरस अभासी॥[१]

हमारे पूछताछ करनेपर त्रिलोकीनाथ दीक्षितसे सूचित किया कि उपर्युक्त यमक किसी उपलब्ध प्रतिका अंश नहीं है, वरन् चन्दायनके कुछ अंश किसी सज्जनको कण्ठस्थ थे, उन्हींसे उन्होंने इसे नोट कर लिया था। इस प्रकार यह पाठ मौखिक परम्परासे प्राप्त है। इसके अनुसार चन्दायनकी रचना ७७९ हिजरी (१० मई १३७७ ३० अप्रैल १३७८ ई०) में हुई थी। सम्भवतः इसी प्रकारकी किसी मौखिक परम्पराके आधारपर गजेटियरकारोंने अपनी तिथि दी होगी।

किन्तु इस तिथिसे भिन्न तिथि बीकानेर प्रतिमें पायी जाती है। उसमें उपर्युक्त यमक इस प्रकार है —

बरस सात सै होए एक्यासी। तिहि जाह कवि सरसेउ भासी॥

इसके अनुसार चन्दायन की रचना ७७९ हिजरीमें नहीं, वरन् दो वर्ष पश्चात् ७८१ हिजरी (१९ अप्रैल १३७९ ७ अप्रैल १३८० ई०) में हुई थी।

---

१ पृ० २४०, पादटिप्पणी १।

एक ही कडवकको दो पृष्ठोंपर दो शीर्षकोंसे दिया है और कहीं दो कडवकोंकी पंक्तियोंको मिलाकर एक कडवकके रूपमें लिखा है। इस प्रतिकी विशेषता यह है कि प्रत्येक पृष्ठके हाशियेपर कुतुबनकृत मिरगावती के कडवक अंकित हैं। दूसरी बात यह है कि कुछ पत्रोंके बाय पृष्ठके बाय हाशियेमें ऊपर पृष्ठ सख्या अंकित हैं। ये पृष्ठ सख्या १४८ १४९, १५२ १५७, १५९ १६१, १६३, १७० हैं। शेष पृष्ठोंपर कोई पृष्ठ संख्या नहीं है। ऐसे पृष्ठोंपर असफरीने अपने अनुमानके आधारपर कहीं अंगरेजी और कहीं फारसी अंकोंमें पृष्ठ सख्या डाल दी है। यद्यपि उनकी दी हुई पृष्ठ सख्याएँ त्रुटिपूर्ण हैं तथापि पृष्ठ निर्देशनके निमित्त उन्हें इस ग्रन्थमें स्वीकार कर लिया गया है।

पंजाब प्रति—भारत पाकिस्तानके विभाजनसे पूर्व यह प्रति लाहौरके सेण्ट्रल सग्रहालयमें थी और उक्त सग्रहालयकी चित्र सूचीके अनुसार वहाँ इसमें २४ पृष्ठ थे। देशके विभाजनके साथ-साथ जब उक्त सग्रहालयकी वस्तुओंका भी बँटवारा हुआ तो ये पृष्ठ भी बँट गये। कहा जाता है कि भारतको १० और पाकिस्तानको १४ पृष्ठ मिले। भारतको प्राप्त दस पृष्ठ तो पजाब राजकीय सग्रहालय, पटियालामें सुरक्षित हैं, किन्तु पाकिस्तानको मिले चौदह पृष्ठोंमेंसे केवल दसके ही फोटो हम लाहौर सग्रहालयसे उपलब्ध हो सके। शेष चार पृष्ठोंके सम्बन्धमें कोई जानकारी प्राप्त न हो सकी। इस प्रतिके प्रत्येक पत्रपर एक ओर चित्र और दूसरी ओर काव्यका फारसी लिपिमें आलेखन है। ये सभी पृष्ठ अति जीर्ण अवस्थामें हैं। वे कटे-फटे तो हैं ही, साथ ही लाल स्याहीसे लिखे अश भी फीके पड़ गये हैं। इस कारण इन पृष्ठोंका पाठोद्धार सम्भव नहीं है। उनसे केवल इन पृष्ठोंका अनुमानमात्र हो सकता है। इस प्रतिमें प्रत्येक पृष्ठमें १० पंक्तियाँ हैं। आरम्भकी दो पंक्तियोंमें फारसी भाषामें शीर्षक और शेषमें एक कडवक है। तीसरा यमक दो पक्तियोंमें विभाजित करके लिखा गया है। इस प्रतिके पटियाला और लाहौर सग्रहालय स्थित पृष्ठोंका यहाँ क्रमश 'प' और 'ल' द्वारा निर्देशन किया गया है।

काशी प्रति—इस प्रतिके केवल ६ पृष्ठ उपलब्ध हैं, जो काशी विश्वविद्यालयके कला सग्रहालय भारत कला भवन मे हैं। ये पृष्ठ भी सचित्र हैं अर्थात् इनके एक ओर चित्र और दूसरी ओर काव्यका आलेखन है। प्रत्येक पृष्ठ पर फारसी लिपिमें दस पंक्तियाँ हैं, जिनमें ऊपर दो पंक्तियोंमे फारसी भाषामें शीर्षक है।

इन प्रतियोंमेंसे किसीमें भी लिपिकाल सम्बन्धी उल्लेख प्राप्त न होनेसे उनके काल निर्णयकी समस्या जटिल जान पड़ती है। किन्तु कतिपय बाह्य प्रमाणोंसे उनके लिपि कालके सम्बन्धमें बहुत कुछ अनुमान किया जा सकता है। ये सभी प्रतियाँ फारसी लिपिकी नस्ख शैलीमें लिखी गयी हैं। इस शैलीके लेखनका प्रचलन भारतमें मुगल सम्राट अकबरके शासनकालके आरम्भ होते-होते अर्थात् सोलहवीं शताब्दीके मध्यतक समाप्त हो गया था। इस कारण लिपिके आधारपर निस्सकोच कहा जा सकता है कि ये सभी प्रतियाँ किसी भी अवस्थामें सोलहवीं शताब्दीके तृतीय चरणके

बादकी नहीं है। जो प्रतियाँ सचित्र हैं, उनके चित्रोंकी कला-शैलीका अध्ययन कर उनका समय कुछ अधिक सूक्ष्मतासे निर्धारित किया जा सकता है। कलामर्मज्ञोंके अनुसार काशी प्रति १५२५-१५४० ई०, बम्बई प्रति १५६०-१५७० ई०; रीलैण्ड्स प्रति, बम्बई प्रतिसे कुछ आगे पीछे और पंजाब प्रति १५७० ई० के लगभग तैयार की गयी होगी।

बीकानेर प्रति—यह प्रति संवत् १६७३ (१६१५ ई०) में बीकानेरमें लिखी गयी थी और अब वह जयपुरके रावत सारस्वतके किसी मित्र (सम्भवत पुरुषोत्तम शर्मा) के पास है। यह प्रति तत्कालीन राजस्थानी कामदारी लिपिमें लिखी गयी है। इसमें ९॥×६ इञ्च आकारके १६२ पृष्ठ हैं और १३ खाली पृष्ठोंके पश्चात् पुष्पिका दी गयी है। यह प्रति आदिसे पूर्ण, किन्तु अन्तमें खण्डित है। बीचमें किसी प्रकारकी कमी है अथवा नहीं, यह परीक्षाके अभावमें कहना कठिन है। अपने वर्तमान रूपमें सम्भवतः इसमें ४३८ कडवक हैं। इस दृष्टिसे यह ज्ञात प्रतियोंमें सबसे बडी है। इस प्रतिको रावत सारस्वतने अभीतक अपनेतक ही सीमित रखा है, जिसके कारण इसका उपयोग इस ग्रन्थमें नहीं किया जा सका। इसके जो अंश उन्होंने वरदामें प्रकाशित किये हैं, उन्हें देखकर ज्ञात होता है कि इसका पाठ काफी अशुद्ध और भ्रष्ट है।

रामपुर पृष्ठ—रामपुर (मुरादाबाद, उत्तरप्रदेश) के रजा पुस्तकालयमें १०८५ हिजरी (१६७४ ई०) की फारसी लिपिमें लिखी मलिक मुहम्मद जायसी के पदमावतकी एक प्रति है। उसके आवरण पृष्ठपर चन्दायन शीर्षकसे इस ग्रन्थकी चार पंक्तियाँ दी हुई हैं जो किसी अन्य प्रतिमें उपलब्ध नहीं हैं। इस कारण इस पृष्ठका महत्त्व है।

विद्वानोंने इनके अतिरिक्त कुछ अन्य प्रतियोंके भी अस्तित्वकी बात कही है:—

परशुराम चतुर्वेदीने अपनी नयी पुस्तक हिन्दीके सूफी प्रेमाख्यानमें यह सूचना दी है कि डलमऊके शिवमंगलसिंहके पास चन्दायनकी एक प्रति है जो देखने-तकको सुलभ नहीं है। यह सूचना उन्हें त्रिलोकीनाथ दीक्षितसे मिली है।[1] दीक्षित-से ही प्राप्त चन्दायनका एक कडवक परशुराम चतुर्वेदीने अन्यत्र उद्धृत किया है।[2] इसे देखकर हमने दीक्षितको एक पत्र लिखा था, जिसके उत्तरमें उन्होंने हमें लिखा कि चन्दायनके किसी प्रतिकी जानकारी उन्हें नहीं है। उन्होंने उस कडवकको किसी सज्जनके मुखसे सुना था। ऐसी अवस्थामें वास्तविकता क्या है यह कहना कठिन है। यदि डलमऊमें चन्दायनकी कोई प्रति है तो उसे प्रकाशमें लानेकी चेष्टा की जानी चाहिये। यदि कोई लिखित प्रति नहीं है, वहाँके किसी सज्जनको कण्ठस्थ मात्र है तो भी यह महत्त्वकी बात है। उसे तत्काल लिपिबद्ध कर लेना चाहिये।

विश्वनाथ प्रसादने अपने एक लेखमें लिखा है कि चन्दायनकी एक पूरी

१. हिन्दीके सूफी प्रेमाख्यान, बम्बई, १९६२, पृ० ३०।
२. हिन्दी साहित्य, द्वितीय खण्ड, पृ० २५०।

रामपुर वाली पदमावत प्रति का मुख्य पृष्ठ
जिसपर चन्दायन (कड़वक ४१०) की चार पंक्तियाँ अंकित हैं।

प्रति जोधपुर राज्यके पुस्तकालयसे वासुदेवशरण अग्रवालको प्राप्त हुई है।[१] किन्तु यह सूचना निराधार और नितान्त भ्रामक है। इस प्रकारकी कोई प्रति न तो जोधपुर पुस्तकालयमें है और न कहीं अन्यत्रसे वासुदेवशरण अग्रवालको कोई पूरी प्रति प्राप्त हुई है। इसी प्रकार रावत सारस्वतने पूनाके डेकन कालेज पोस्ट ग्रेज्युएट रिसर्च इन्स्टीच्यूटमें चन्दायनके कुछ पृष्ठ होनेकी बात कही है। उसमें भी कोई तथ्य नहीं है।

राय कृष्णदासने लिखा है कि लाहौरके प्रोफेसर शीरानीने चन्दायनकी एक प्रति प्राप्त की थी, जिसके २४ सचित्र पृष्ठ तो लाहौर संग्रहालयने ले लिये और शेष पंजाब विश्वविद्यालयमें चले गये।[२] इस सूचनाका आधार क्या है, कहा नहीं जा सकता, किन्तु पंजाब विश्वविद्यालय (लाहौर) से पूछताछ करनेपर ज्ञात हुआ है कि उनके पुस्तकालयमें इस प्रकारका कोई ग्रन्थ नहीं है।

परशुराम चतुर्वेदीने असकरीके एक लेख[३]के आधारपर यह सूचना दी है कि एक पूर्ण प्रतिका पता हिन्दी विद्यापीठ आगराके उदयशंकर शास्त्रीको लगा है जो नागरी अक्षरोंमें लिखी गयी, किन्तु अधिक मूल्य माँगे जानेके कारण क्रय नहीं की जा सकी।[४] उदयशंकर शास्त्रीको जिस प्रतिके अस्तित्वकी जानकारी रही है, वह वस्तुतः बीकानेरवाली ही प्रति है जिसका उल्लेख अलग करके चतुर्वेदीने एक अन्य प्रति होनेका भ्रम प्रस्तुत कर दिया है।

ग्रन्थका आकार

पूर्ण प्रति उपलब्ध न होनेके कारण चन्दायनके आकारके सम्बन्धमें निश्चित रूपसे कुछ भी कहना कठिन है। हाँ, बीकानेर प्रतिके आधारपर यह अनुमान किया जा सकता है कि इस काव्यमें कमसे कम ४७२ कडवक होंगे। इस प्रतिमें आरम्भके ४३८ कडवक हैं और उसके बाद १३ पृष्ठ छोडकर पुष्पिका दी गयी है। यह बात इस ओर संकेत करती है कि ग्रन्थका कुछ अंश लिखनेसे रह गया है। उसे लिखनेके लिए ही लिपिकारने पृष्ठ खाली छोड दिये थे। अन्तका अंश खण्डित है, इसका समर्थन रीलैण्ड्स प्रतिसे भी होता है। रीलैण्ड्स प्रतिमें बीकानेर प्रतिके अन्तिम कडवकके आगेके पर्याप्त अंश उपलब्ध हैं। अस्तु, बीकानेर प्रतिकी पंक्तियोंकी गणनाके आधार पर कहा जा सकता है कि उसके १३ खाली पृष्ठोंपर ३९ कडवक लिखे जाते। इस प्रकार सम्पूर्ण ग्रन्थमें ४७२ कडवक होनेका अनुमान होता है।

हमें उपलब्ध प्रतियोंमें रीलैण्डस प्रति सबसे बडी है। उसमें ३४९ कडवक हैं। अन्य प्रतियोंमें अधिकांश कडवक ऐसे हैं जो रीलैण्डस प्रतिमें उपलब्ध हैं। इस कारण

---

१ भारतीय साहित्य, आगरा, वर्ष १, अंक १, पृ० १८९।

२ ललितकला, दिल्ली, अंक १२, पृ० ७१।

३ पटना यूनिवर्सिटी जर्नल, १९६०, पृ० ६२।

४ हिन्दीके सूफी प्रेमाख्यान, पृ० २९।

उन प्रतियोंसे केवल ४३ कडवक ऐसे प्राप्त हुए हैं जो रीलैण्ड्स प्रतिमें नहीं हैं। ये कडवक इस प्रकार हैः—मनेरशरीफ प्रतिमें २५, बम्बई प्रतिमें ९, पंजाब प्रतिमें ७, होफर पृष्ठमें १, रामपुर पृष्ठमें १। इस प्रकार हमें चन्दायनके कुल ३९२ कडवक उपलब्ध हैं। यदि आकारके सम्बन्धमें हमारा उपर्युक्त अनुमान ठीक है तो अभी ८१ कडवक अप्राप्त हैं। यदि बीकानेर प्रति प्रकाशमें आ जाय तो उससे अनुपलब्ध कडवकोंमेंसे ६०-६१ कडवक प्राप्त हो जानेकी सम्भावना है और तब केवल अन्तके २०-२१ कडवक मिलने शेष रह जायेंगे।

उपलब्ध प्रतियोंके खण्डित होनेके कारण काव्यको शृंखलाबद्ध रूप देनेमें पर्याप्त कठिनाई रही है। उसे शृंखलाबद्ध करनेमें रीलैण्ड्स प्रति अत्यधिक सहायक सिद्ध हुई। यद्यपि यह प्रति आदि अन्तसे खण्डित है और बीच में भी कुछ पृष्ठ गायब हैं, तथापि वह अपने आपमें क्रमबद्ध है। कुछ ही स्थल ऐसे हैं, जहाँ किसी प्रकारका व्यतिक्रम है। खण्डित होनेके पश्चात् किसी जानकारने उन्हें क्रमबद्ध कर पृष्ठांकित किया है। इन पृष्ठांकोंको आधार मानकर बीकानेर प्रतिके प्रकाशमें आये अशोंके सहारे हमने ग्रन्थको सूत्रबद्ध करनेका प्रयत्न किया है।

बीकानेर प्रतिकी प्रकाशित सामग्रीसे ज्ञात हुआ कि रीलैण्ड्स प्रतिका पाँचवाँ कडवक काव्यका चौबीसवाँ कडवक रहा होगा। अतः हमने उसे आरम्भके कडवकोंकी गणनाका आधार बनाया। इसी प्रकार बीकानेर प्रतिके अन्तिम कडवककी संख्या ४३८ मानकर हमने आगे पीछेके कडवकोंकी संख्या निर्धारित की है। ऐसा करनेपर हमें ज्ञात हुआ कि रीलैण्ड्स प्रतिमें ४३८ वें कडवकके आगेके १४ कडवक ऐसे हैं जो बीकानेर प्रतिमें नहीं हैं।

सूत्रबद्ध करनेमें मनेर शरीफ प्रति भी सहायक सिद्ध हुई है। उसमें लिपिकारने जो पृष्ठ-संख्या दी है, उससे हमने रीलैण्ड्स प्रतिके पृष्ठोंका तारतम्य स्थापित किया है; रीलैण्ड्स प्रतिके पृष्ठ २२६ और मनेर शरीफ प्रतिके पृष्ठ १४५अ पर अंकित कडवक एक है। अतः हमने उक्त कडवककी संख्या मनेरशरीफ प्रतिके अनुसार २८९ स्वीकार किया है।

इस प्रकार काव्यके आदि, अन्त और मध्यके कडवकोंकी संख्या निर्धारित कर प्रसंगके अनुसार विभिन्न प्रतियोंसे प्राप्त नये कडवकोंको यथास्थान रखनेकी चेष्टा की गयी है। काव्यका इस प्रकार ग्रथित जो रूप प्रस्तुत किया जा रहा है, वह मूल ग्रन्थके कितने निकट है यह तो भविष्य ही बतायेगा, जब काव्यकी कोई पूरी प्रति प्रकाशमें आयेगी। अभी तो हम यह आशा ही प्रकट कर सकते हैं कि वह मूलसे बहुत दूर नहीं है।

प्रस्तुत रूपके देखनेसे ज्ञात होता है कि इसमें निम्नलिखित कडवकोंका अभाव हैः—

१–१९ (इसमें दो कडवक होफर और बम्बई प्रतिसे उपलब्ध हैं, पर उनका निश्चित स्थान बताना कठिन है); २३; ३४; ५४ ६५ (इसमेंसे ३ कडवक पंजाब

प्रतिसे प्राप्त हैं, पर ये अधूरे हैं); १२२, १५३; १८०; १८२; २८२ २८६; २९८; २९९; ३०२; ३०३; ३१०; ३२०; ३३७ ३४२ (इनमेंसे दो कडवक बम्बई प्रतिमें प्राप्त हैं, पर अन्य कडवकोंके अभावमें उनका स्थान निश्चित नहीं किया जा सकता); ३४५; ३६२; ३६३, ३७८-३८८ (इनमेंसे चार कडवक पंजाब प्रतिमें प्राप्त हैं, पर वे अधूरे हैं। उनका स्थान निर्धारित नहीं किया जा सकता), ४१० और ४५४ ४७३।

लिपि

हिन्दीके विद्वानोंकी कुछ ऐसी धारणा बन गयी है कि मुसल्मान कवियों द्वारा रचे गये सभी हिन्दी प्रेमाख्यानक काव्योंकी आदि प्रति नागरी लिपिमें लिखी गयी थी। इस कथनके समर्थनमें वे इन काव्योंकी विभिन्न प्रतियोंमें पायी जानेवाली कतिपय ऐसी विकृतियोंकी सूची प्रस्तुत किया करते हैं जो उनकी दृष्टिमें नागरी लिपिसे फारसी लिपिमें परिवर्तनसे ही आ सकती है। इन लोगों द्वारा उपस्थितकी जानेवाली पाठ विकृतियोंके विवेचन का यह स्थान नहीं है। यहाँ यह कहना ही पर्याप्त होगा कि यदि उन्हें ध्यानपूर्वक देखा जाय तो यह समझते देर न लगेगी कि वे विकृतियाँ नागरी लिपिसे फारसी लिपिमें परिवर्तन करने से नहीं आयी हैं, वरन् तत्कालीन अरबी फारसी लिपि शैलीकी प्रवृत्तियोंसे अपरिचित लिपिकारों द्वारा लिपिबद्ध होनेके कारण आयी हैं।

यह सामान्य सूझ बूझकी बात है कि नागरी लिपिको मुसल्मानी शासनकालमें कभी प्रश्रय प्राप्त नहीं हुआ। परिणामतः अभी पचास वर्ष पूर्वतक, अधिकांश कायस्थ परिवारोंका नागरी लिपिके साथ नामका भी सम्बन्ध न था। उनके घरोंमें रामायण ही नहीं, दुर्गा-पाठ और भगवद्गीताका भी पाठ उर्दू फारसीमें लिखी पोथियोंसे होता था और वे शुद्ध उच्चारणके साथ उनका पाठ किया करते थे। इङ्गलैण्ड और फ्रांस के पुस्तकालयोंमें न केवल सूरसागर आदि धार्मिक ग्रन्थों की ही, वरन् हिन्दू कवियोंद्वारा रचित अनेक शृंगार काव्यों, यथा केशवदासकी रसिक प्रिया, बिहारी सतसई आदिकी भी फारसी लिपिमें लिखी काफी प्राचीन प्रतियाँ सुरक्षित हैं। उन्हें देखते हुए यह कल्पना करना कि प्रेमाख्यानक काव्योंके रचयिता मुसल्मानोंने अपने काव्यकी आदि प्रति नागराक्षरोंमें लिखी होगी, नितान्त हास्यास्पद है। ये कवि न केवल स्वय मुसल्मान थे, वरन् उनके गुरु भी मुसल्मान थे और उनके शिष्य भी मुसल्मान ही थे। सूफी मतका हिन्दुओंमें प्रचार हुआ हो, इसका कोई भी प्रमाण उपलब्ध नहीं है। अतः उनके ग्रन्थ अरबी फारसीके अतिरिक्त किसी अन्य लिपिमें कदापि नहीं लिखे गये होंगे।

ये काव्य मूलतः अरबी फारसी लिपिमें ही लिखे गये थे, यह उनकी उपलब्ध प्रतियोंसे भी सिद्ध होता है। वे अधिकांशतः अरबी-फारसी लिपिमें लिखी मिलती हैं और इन लिपियोंमें लिखी प्रतियाँ ही अधिक प्रमाणित हैं। यही नहीं, नागरी लिपिमें प्राप्त प्रतियोंके पूर्वज भी अरबी-फारसी प्रतियाँ ही रही हैं, यह भी उनके परीक्षणसे स्पष्ट प्रकट

होता है। एक भी ऐसी नागरी प्रति उपलब्ध नहीं है जो सतरहवीं शतीके पूर्वकी हो और किसी ग्रन्थकी प्राचीनतम प्रति कही जा सके।

चन्दायनके सम्बन्धमें तो हमें यह कहनेमें तनिक भी सकोच नहीं है कि वह मूलत नस्ख लिपिमें लिखा गया रहा होगा। उसकी सोलहवीं शती वाली प्रतियाँ इसी लिपिमें हैं। उसकी एक मात्र हिन्दी प्रतिके मूलमें कोई अरबी फारसी लिपिकी प्रति थी, यह तो उसके प्रथम वाक्य—नुस्खः चन्दायन गुफ्तार मौलाना दाऊद डलमई से ही सिद्ध है। सर्वोपरि हमारे सम्मुख नस्ख लिपि लिखित जो प्रतियाँ हैं, उनमेंसे किसी भी प्रतिमें ऐसी विकृति नहीं मिलती जिससे उसकी किसी पूर्वज प्रतिके नागरी लिपिमें लिखे होनेकी दूरस्थ कल्पना भी की जा सके।

पाठोद्धार और पाठ-निर्धारण

किसी भी भाषाको अरबी-फारसी लिपिमें लिखना उतना कठिन नहीं है, जितना कि बिना अभ्यासके उस लिपिमें लिखी भाषाका पढना। इस लिपिमें व्यजन मुख्यत नुक्तों (बिन्दुओं) पर आधृत हैं। अत जबतक कोई वस्तु सावधानीसे न लिखी गयी हो, उसे ठीकसे और शुद्ध पढना यदि सर्वथा असम्भव नहीं तो दुरूह अवश्य है। इसी प्रकार स्वर व्यक्त करनेके लिए इस लिपिमें केवल तीन अक्षर अलिफ, ये और वाव हैं। अलिफको अ और आ दोनों पढा जा सकता है। कहीं कहीं आको शुद्ध पढनेके निमित्त तशदीदका चिह्न दे दिया करते हैं। येके दो रूप हैं जो छोटी ये और बडी ये कहकर पुकारे जाते हैं। साधारणत छोटी ये इ और ईके लिए और बडी ये ए और ऐके लिए काम आता है। अन्तर व्यक्त करनेके लिए जेर और जबरके चिह्न लगा देते हैं। इसी प्रकार वावका प्रयोग उ, ऊ, और ओके लिए होता है। उ युक्त व्यजनमें वावका प्रयोग न कर ऊपर केवल पेशका चिह्न लगा देते हैं। किन्तु यह सब सिद्धान्तकी ही बातें हैं। व्यवहारमें लिखते समय जेर, जबर, पेश प्राय लोग नहीं लगाते। अभ्यासके आधारपर ही अन्दाजसे पाठ-स्वरूप समझ लिया जाता है।

चन्दायनकी जो प्रतियाँ हमें उपलब्ध हैं, वे सभी नस्ख (अरबी लेखन शैली का एक रूप) में हैं। इस लिपिके लेखक लिपि-सौन्दर्यपर विशेष बल दिया करते थे। इस कारण वे नुक्तोंको अपने स्थानपर न रखकर सौंदर्यकी दृष्टिसे आगे-पीछे, ऊपर नीचे जहाँ चाहे वहाँ रख दिया करते थे। बिन्दुका लोप भी कोई दोष नहीं माना जाता था। इस प्रकार नुक्तोंके अभाव अथवा मनमानाके कारण पाठोद्धारमें जो कठिनाई हो सकती है वह तो है ही, इसमें अनेक अक्षर ऐसे जिनके उच्चारण कई हैं। त और टके उच्चारणके लिए आज दो अक्षर ते और टे हैं। पर उस समय इसका काम केवल एक अक्षरसे ही लेते थे। इसी प्रकार क और ग भी एक ही अक्षर काफसे लिखा जाता था। इस ढगके कुछ अन्य अक्षर भी हैं। मात्रा-बोधक चिह्नोंका प्रयोग इन प्रतियोंमें नहींके बराबर है। ये के दोनों रूपोंका प्रयोग बिना किसी भेदके इ और ए के लिए किया गया है।

लिपि स्वरूपकी इन कठिनाइयोंके साथ साथ सबसे बड़ी कठिनाई जो हमारे सम्मुख रही है, वह थी चन्दायन की पृष्ठभूमिका अभाव। हमारे पास कोई ऐसी वस्तु नहीं थी, जिससे पाठके अनुमानके लिए कोई सहारा मिल सके। एक ही शब्द पुरुस, विरिख, वरख कुछ भी पढ़ा जा सकता है। यह तो प्रसंग से ही निश्चय किया जा सकता है कि वास्तविक पाठ क्या है। जब प्रसंग ही ज्ञात न हो तो किया क्या जाय! प्रसंग ज्ञात होनेपर भी कभी कभी यह कठिनाई बनी रहती है। शब्दके पठित दो या अधिक रूपमेंसे कोई भी सार्थक हो सकता है। यथा—नट गावहँ जहाँ और नित गावहँ जहाँ। ऐसे स्थलोंपर दोमेंसे कौन-सा पाठ ठीक है, निश्चित करना सहज नहीं होता।

चन्दायनके पाठोद्धार करनेमें ऐसी ही तथा अन्य अनेक प्रकारकी कठिनाइयाँ हमारे सामने रही हैं। एक एक शब्दको समझने और उसका रूप निर्धारण करनेमें घण्टों माथापच्ची करनी पड़ी है। कभी कभी तो एक पंक्तिके पढ़नेमें दो-दो तीन तीन दिन तक लगे हैं। हमारी कठिनाइयोंका अनुमान वे ही लोग कर सकते हैं जिन्होंने बिना किसी नागरी प्रतिकी सहायताके इस प्रकारका पाठ-सम्पादन किया होगा। अपने सारे श्रमके बावजूद हम दृढ़ता पूर्वक नहीं कह सकते कि हम ग्रन्थका पाठोद्धार करनेमें पूर्ण सफल हुए हैं। कितने ही ऐसे शब्द हैं जिनके शुद्ध पढ़ पानेके सम्बन्धमें स्वयं हमें सन्देह है। उनमेंसे कुछ तो विकृत पाठ हो सकते हैं; जिनका निराकरण तो कुछ और प्रतियोंके प्रकाशमें आनेपर ही सम्भव है। कुछ ऐसे भी हो सकते हैं, जिन्हें हमने पढ़ा तो ठीक हो, पर अर्थ-ज्ञानके अभावमें हम उन्हें सन्दिग्ध समझते हों। ऐसे शब्दोंकी भी कमी न होगी जिन्हें हम शुद्ध पढ़ ही न सके हों। इस प्रकारके अप-पाठके मूलमें बिन्दुओंका अभाव ही मुख्य होगा। उन्हें मूल शब्दकी कल्पनाके सहारे सुधारा सकता है।

प्रति-परम्परा, पाठ-सम्बन्ध और संशुद्ध पाठ

— प्राचीन ग्रन्थोंके सम्पादनकी आधुनिक प्रणालीके अनुसार विभिन्न प्रतियोंमें जो विभिन्न पाठ मिलते हैं, उनमेंसे कौन सा पाठ मूल अथवा मूलके निकट है, इसे जाननेके निमित्त प्रति परम्परा और पाठ-सम्बन्धका शोध किया जाता है और तदनन्तर संशुद्ध पाठ (क्रिटिकल टेक्स्ट) प्रस्तुत किया जाता है। प्रस्तुत काव्यका इस प्रकारका कोई संशुद्ध पाठ (क्रिटिकल टेक्स्ट) उपस्थित करनेका प्रयास हमने नहीं किया है। यह बात नहीं कि हम उसके महत्त्वसे परिचित न हों और उसकी आवश्यकता न समझते हों। इस दिशामें हमारी कठिनाई यह है कि काव्यके उपलब्ध ३९२ कडवकोंमें-से २९२ कडवक ऐसे हैं जो किसी एक ही प्रतिमें मुख्यतः रीलैण्ड्स प्रतिमें प्राप्त हैं। उनके प्रति पाठके अभावमें किसी प्रकारके संशुद्ध पाठ उपस्थित करनेका प्रश्न ही नहीं उठता। शेष १०० कडवकोंमेंसे निम्नलिखित ८८ कडवक ऐसे हैं जो रीलैण्ड्स प्रतिके अतिरिक्त अन्य किसी एक प्रतिमें हैं :—

बम्बई प्रति—८५, ८६, ११७, १२१, १२४, १२५, १६१, १६२, १६६, १७०, १८२, २५९, २६०, २६२, २६५, २७१, २९६, ३११, ३२६, ३४३, ३४६, ३९७, ३९९, ४०३, ४०५, ४०६, ४१६, ४१७, ४१८, ४२४, ४२५, ४२७, ४२८, ४३०, ४३१, ४४३, ४४६, ४४७, ४४८, ४५२। कुल ४०

मनेर शरीफ प्रति—२८९, २९०, २९१, २९४, २९५, २९७, ३०४, ३०५, ३०७, ३०८, ३०९, ३११, ३१२, ३१३, ३१४, ३१५, ३१६, ३२३, ३२४, ३२५, ३२६, ३३२, ३४८, ३५१, ३५२, ४५३, ३५४, २५५, ३५६, ३५७, ३५८, ३६०। कुल ३२

पंजाब प्रति—२१, ८८, ९१, ९४, १५८, २०५, २०९, २५७, २६९, २७०। कुल १०

काशी प्रति—१०९, १४६, २०२, २४०, १४१। कुल ५

होफर पृष्ठ—४४४। कुल १

इन कडवकोंके सम्बन्धमें भी हमारे सम्मुख कोई वैज्ञानिक माप-दण्ड (क्रिटिकल ऐपरेटस) नहीं है, जिससे हम शुद्ध-पाठका निश्चय करें। केवल एक ही बात निश्चित है कि उनके पाठ रीलैण्ड्स प्रतिके पाठसे भिन्न है। रीलैण्ड्स और दूसरी प्रतिके पाठो मेंसे कौन सा हम स्वीकार करें, यह हमारे विवेकका प्रश्न रहता है। अतः हमें अधिक उचित जान पड़ा कि जब २९२ कडवकोंके पाठ किसी एक प्रतिके हैं और अधिकांशतः रीलैण्ड्स प्रतिके ही है तो इन कडवकोंके लिए भी रीलैण्ड्स प्रति के ही पाठ स्वीकार किये जायँ और दूसरी प्रतियोंके पाठ विकल्प रूपमें दे दिए जाँय; मूल अथवा शुद्ध पाठका निर्णय पाठक पर छोड़ दिया जाय।

केवल १२ कडवक ऐसे है, जिनके पाठ तीन प्रतियोंमें अर्थात् रीलैण्ड्स और बम्बई प्रतियोंके अतिरिक्त किसी एक अन्य प्रतिमें हैं। ये कड़वक इस प्रकार हैः—

रीलैण्ड्स, बम्बई और पंजाब प्रतियाँ—१५९, १६०। कुल २

रीलैण्ड्स, बम्बई और मनेरशरीफ प्रतियाँ—२९६, ३२२, ३२८, ३२९, ३४७, ३४९, ३५०, ३५१, ३५३। कुल ९

रीलैण्ड्स, बम्बई और काशी प्रतियाँ—४०५। कुल १

इन कडवकोंके परीक्षणसे ज्ञात होता है कि (१) रीलैण्ड्स और पंजाब प्रतियोंमें (२) बम्बई और मनेरशरीफ प्रतियोंमें और (३) बम्बई और काशी प्रतियोंमें परस्पर पाठ-साम्यकी बहुलता है। ऐसा जान पड़ता है कि रीलैण्ड्स और पंजाब प्रतियाँ एक प्रति परम्पराकी दो शाखाएँ हैं और बम्बई, मनेर शरीफ और काशी प्रतियाँ दूसरी परम्पराकी तीन शाखाएँ हैं। इन दोनों परम्पराओंका सम्बन्ध इस प्रकार व्यक्त किया जा सकता है :—
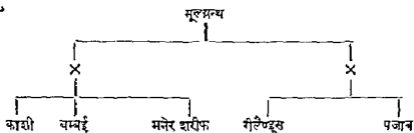
पर इस प्रकारकी प्रति-परम्परा और पाठ सम्बन्धको व्यक्त करनेवाली यह सामग्री अत्यल्प है। इनके आधारपर केवल १२ कड़वकोंका ही कोई सशुद्ध पाठ उपस्थित किया जा सकता है। वह अन्य असशुद्ध सामग्रीके बीच बेमेल जान पड़ेगा। अतः इनके लिए भी रीलैण्ड्सवाले पाठ मूल रूपमें और शेष पाठ विकल्प रूपमें दिये गये हैं। कहीं कहीं, जहाँ रीलैण्ड्स प्रतिका पाठ स्पष्ट रूपसे विकृत लगा, वहाँ विवेकके सहारे दूसरी प्रतिका पाठ मूलमें ग्रहण कर लिया गया है। पर ऐसे स्थल कम ही हैं।

भाषा

रामचन्द्र शुक्लने जायसी-ग्रन्थावलीकी भूमिकामें लिखा है —ध्यान देनेकी बात है कि ये सब प्रेम-कहानियाँ पूरबी हिन्दी अर्थात् अवधी भाषामें एक नियत क्रमके साथ केवल चौपाई-दोहेमें लिखी गयी हैं।[१] अभीतक जितने भी हिन्दी सूफी काव्योंके अध्ययन प्रस्तुत किये गये हैं, प्रायः उन सबमें यह तथ्य ज्योंका त्यों स्वीकार कर लिया गया है। फलस्वरूप चन्दायनकी भाषाके सम्बन्धमें भी यही समझा जाता है कि उसकी भाषा अवधी होगी। श्याममनोहर पाण्डेयने मध्ययुगीन प्रेमाख्यानमें अत्यन्त विश्वासके साथ लिखा है—डलमऊ क्षेत्रमें अवधी बोली जाती थी। अतः जनतामें अपने सन्देश प्रसारित करनेके लिए मुल्ला दाऊदने अवधीका ही चयन करना उपयुक्त समझा होगा। सूफी कवि जिस क्षेत्रमें रहे हैं, वहाँकी भाषामें काव्य लिखते रहे हैं। पंजाबके सूफी कवियोंने पंजाबी में 'ससिपुन्नो' 'हीर राँझा' आदि कथाओंको सूफियाने ढंगसे पंजाबीमें लिखा। इसी प्रकार दौलत काजी, अलाउल आदि कवियोंने जो बंगालके रहनेवाले थे, बँगलामें लिखा। अतः डलमऊका कवि अवधी क्षेत्रमें रहकर अवधीमें लिखता है तो आश्चर्य नहीं होना चाहिये।[२]

पर हमें आश्चर्य यह देखकर होता है कि हमारे विद्वान इस बातकी तो तर्कपूर्ण कल्पना कर सकते हैं कि दाऊद डलमऊके थे और डलमऊ अवधमें है, अवध की भाषा अवधी कहलायेगी, अतः दाऊदकी भाषा अवधी ही होगी पर इस वास्तविक

---

१ चतुर्थ संस्करण, सं० २०१७, पृष्ठ ४।
२ मध्ययुगीन प्रेमाख्यानक काव्य, प्रयाग, पृ० २५०

तथ्यको नहीं देख सकते कि चन्दायनकी रचना न तो अवधी वातावरणमें हुई थी और न उसका आरम्भिक प्रचार अवधी क्षेत्रके बीच था।

अब्दुर्कादिर बदायूनीने स्पष्ट शब्दोंमें कहा कि चन्दायन दिल्ली सल्तनतके प्रधान मन्त्री जौनाशाहके सम्मानमें रचा गया था और दिल्लीमें मखदूम शेख तकीउद्दीन रब्बानी जन समाजके बीच उसका पाठ किया करते थे। यह कथन इस बातकी ओर संकेत करता है कि चन्दायनकी भाषा वह भाषा है जिसे दिल्लीके प्रधान मन्त्री जौनशाहसे लेकर दिल्लीकी सामान्य जनतातक पढ और समझ सकती थी।

अब्दुर्कादिर बदायूनीने इस भाषाके सम्बन्धमें हमें अपनी कल्पनाका कोई अवसर नहीं दिया है। उन्होंने स्पष्ट शब्दोंमें बता दिया है कि इस मसनवी (चन्दायन) की भाषा हिन्दवी है। यह हिन्दवी निश्चय ही वही हिन्दवी होगी, जिसका प्रयोग चिश्ती सन्त शेख फरीदुद्दीन गजशकर और ख्वाजा निजामुद्दीन औलिया अपने मुरीदो-से बातचीतके करते समय किया करते थे। उसी हिन्दवी को जो दिल्लीके सूफी सम्प्रदाय के सन्तो द्वारा व्यवहृत होती थी और राजसभासे लेकर जन साधारणमे समझी जाती अथवा जा सकती थी, दाऊद ने अपने काव्य चन्दायनके लिए अपनाया होगा और उसीमें उसकी रचना की होगी। अतः चन्दायनकी भाषाको अवधके सीमित प्रदेशमें ही बोली और समझी जानेवाली भाषा अवधीका नाम नहीं दिया जा सकता।

चन्दायनमें प्रयुक्त भाषा निसन्देह ऐसी भाषाका स्वरूप है, जिसका देशमें काफी विस्तार और विकास रहा होगा। किन्तु खेद है कि हमारे सम्मुख तत्कालीन जनजीवनके व्यवहारमें आनेवाली भाषाका कोई स्पष्ट स्वरूप नहीं है, जिसके आधारपर अधिक विस्तार और विश्वासके साथ इस कथनकी समीक्षा की जा सके।

बारहवीं शताब्दीमें काशीमें रचा गया उक्ति-व्यक्ति-प्रकरण नामक एक व्याकरण ग्रन्थ प्रकाशमें आया है, जिसमें एक प्रादेशिक भाषाके स्वरूपको संस्कृतके माध्यमसे समझानेकी चेष्टा की गयी है। इस भाषाकी पहचान सुनीतिकुमार चाटुर्ज्याने आरम्भिक पूर्वी हिन्दी अर्थात् कोसली (अवधी)के रूपमें की है। यदि चन्दायनकी भाषा वस्तुतः अवधी है, जैसी कि विद्वानोंकी साधारणतया धारणा है, तो उसके शब्दोंकी उक्ति-व्यक्ति-प्रकरणके शब्द रूपोंके साथ नैकट्य और साम्य होना चाहिये।

इस प्रकारकी तुलनात्मक परीक्षाके लिए दोनों ग्रन्थोंके क्रिया रूपोंको देखना उचित होगा।

वर्तमानकालिक क्रियाओंमें सामान्य वर्तमानके निम्नलिखित कर्तृवाच्य रूप उक्ति-व्यक्ति-प्रकरणमें मिलते हैं।

	एकवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	करउ	करहु
मध्यम पुरुष	करसि	करहु
उत्तम पुरुष	करउ, करइ	करति

चन्दायनमें प्रथम और मध्यम पुरुषकी वर्तमानकालिक क्रियाओंका प्रयोग कम है। उत्तम पुरुषके रूप जो हैं, वे उपर्युक्त रूपोंसे सर्वथा भिन्न हैं। यथा—आवहिं, चढ़ावहिं, बहिरावहिं, खाये, कढहीं, करहीं, सुहावइ, आवइ, भावइ आदि।

उक्ति-व्यक्ति-प्रकरणके वर्तमानकालिक क्रियाके कर्मवाच्य रूप हैं—पढ़िय, जेविअ, खेडिअ, पाइअ आदि। चन्दायनमें इसका रूप लेतस, देतस आदि है।

उक्ति-व्यक्ति-प्रकरण की वर्तमानकालिक विधि क्रियाएँ उकारान्त हैं। यथा—करु, करउ। चन्दायनमें इस प्रकारकी वर्तमानकालिक विधि क्रियाओंका सर्वथा अभाव है।

भूतकालिक क्रियाएँ उक्ति-व्यक्ति-प्रकरणमें अत्यल्प हैं। जो हैं, उनके आधार पर सुनीतिकुमार चाटुर्ज्याने अकर्मक क्रियाओंके निम्नलिखित रूप स्थिर किये हैं:—

एकवचन	बहुवचन
गा	गये
भा, भई	भये, भई
बाढ़ा	बाढ़े
आ	आये

चन्दायनमें अकर्मक भूतकालिक क्रियाओंके अनन्त रूप मिलते हैं। यथा—

धरसि;
भा, आवा, बुलावा, पठावा, कढ़ा, चढ़ा;
छाड्यो, जान्यो, तज्यो, लीन्हो,
भई, प्रकटी, जानी, बखानी, पठाई,
दीन्ह, कीन्ह, लीन्ह,
भये, बैठे, दीठे, खनाये, उठाये, गये,
भयो।

उक्ति-व्यक्ति-प्रकरणमें भूतकालिक सकर्मक क्रियाओंके रूप हैं—कियेसि, देखेसि, पावेसि। चन्दायनमें इसके रूप हैं दिवावा, भरावा, हँकरावा। यथा—

लेइ दहि दूध दरब दिवावा
सीप सिंधोरा माँग भरावा
पाटनराव खोर हँकरावा

उक्ति-व्यक्ति-प्रकरणकी भविष्यत्कालिक अकर्मक क्रियाओंके रूप हैं:—करिहौं, करिहसि, करिह, करिहुति। चन्दायनमें हमें निम्नलिखित ढंगके प्रयोग मिलते हैं:—

जो खसि पड़े सो जमपंथी जायी (जायेगा)
परतहँ माँछ मँगर तिहँ खायी (खायेंगे)
औ जस जान कहसु सँवारीं (कहना)

भविष्यत् कालकी सकर्मक क्रियाका रूप उक्ति-व्यक्ति-प्रकरणमें एब अथवा 'अब' मिलता है। यथा—पढ़ब, देखब, करब, धरब। चन्दायनमें उन रूपका प्रयोग हुआ है। यथा—

जो तुम पर यह बनिज चलाउब
मैना कह मैं गोहन आउब
कउन बाट हम होब
पुन मैं पठउब

भविष्यत् कालकी विधि क्रियाका रूप उक्ति-व्यक्ति-प्रकरणमें करेसु, पढ़ेसु है। चन्दायनमें इस क्रियाका रूप है'—

पायँ लाग कै सिरजन माँ कँथ जायि सुनायहु
होय देव उठान धीर पूजा मिस घर आयहु
सिरजन भल दिन लायहु
पाटन देस तूँ लोर न जायसि।

उपर्युक्त उदाहरणोंसे स्पष्ट है कि चन्दायनकी भाषा उक्ति-व्यक्ति-प्रकरणकी भाषासे सर्वथा भिन्न है। यदि उक्ति-व्यक्ति-प्रकरणकी भाषा अवधी है तो चन्दायन की भाषा अवधी नहीं है।

चन्दायनकी भाषाके प्रसंगमें श्याम मनोहर पाण्डेयने एक अन्य काव्य रोड़ा कृत राउल वेलकी चर्चा की है। यह खण्डित काव्य एक शिलाफलकपर अंकित और प्रिंस आव वेल्स म्यूजियम, बम्बईमें सुरक्षित है। इसका एक पाठ माताप्रसाद गुप्तने हिन्दी अनुशीलनमें प्रकाशित किया है और उसे ग्यारहवीं शताब्दीकी रचना बताया है और उसकी भाषाको दक्षिण कोसली कहा है।[1] श्याममनोहर पाण्डेयने इस आधारपर यह मत प्रकट किया है कि 'अब हम सरलतापूर्वक कह सकते हैं कि दक्षिण कोसलीमें, जो अवधीका एक रूप है, ग्यारहवीं शताब्दीमें काव्य-रचना हो रही थी।'[2] हमें खेदके साथ कहना पड़ता है कि दोनों ही विद्वानोंके ये मत नितान्त निराधार है।

राउल वेलको ग्यारहवीं शताब्दीकी रचना माननेका कोई आधार नहीं है। वह तेरहवीं शताब्दीके आसपासकी रचना है। उसकी भाषा दक्षिण कोसली है, इसके लिए माताप्रसाद गुप्तने कोई प्रमाण उपस्थित नहीं किये हैं। इस काव्यमें विभिन्न प्रदेशकी स्त्रियोंका रूप वर्णन है और जिस प्रदेशकी स्त्रीका जिस अंशमें वर्णन है, उसमें

१ हिन्दी अनुशीलन, वर्ष १३, अंक १-२, १९६०, पृ० २३।
२. मध्ययुगीन प्रेमाख्यान, पृ० २६०।

उस प्रदेशकी भाषाके कुछ शब्द रूपों और क्रियाओंका प्रयोग कविने किया है। इस प्रकार इस काव्यमे किसी एक भाषाका स्वरूप नही है। यदि इसी तथ्यको स्वीकार कर कि काव्यकी भाषा किसी एक प्रदेशकी भाषा है तो भी यह नहीं कहा जा सकता कि उसकी भाषा दक्षिण कोसली है। यह शिलालेख मालव प्रदेश—धारसे प्राप्त हुआ है, दक्षिण कोसलसे उसका किसी प्रकार कोई सम्बन्ध नहा है।

श्यामसनोहर पाण्डेयकी यह धारणा कि दक्षिण कोसली अवधीका एक पूर्व रूप है, भाषा विज्ञान और इतिहास दोनो दृष्टिसे अज्ञताका परिचायक और हास्यास्पद है। प्राचीन इतिहासमे दक्षिण कोसल उस प्रदेशका नाम है, जो आजकल छत्तीसगढके नामसे अभिहित किया जाता है। छत्तीसगढ़ी भाषाका अवधीके साथ किसी प्रकारका नैकट्य है, यह कहना कठिन है। *चन्दायनकी भाषाको अवधी सिद्ध करनेके लिए राउल वेलकी भाषाको अवधीके पूर्व रूपका नमूना नहीं माना जा सकता।*

साथ ही यह तथ्य भी भुलाया नहीं जा सकता कि **राउल वेलकी** *भाषाका चन्दायनकी भाषाके साथ एक हल्का सादृश्य है।* **राउल वेलकी** वर्तमान कालिक *क्रियाएँ*—**भावइ, उदीजइ** *आदि चन्दायनकी वर्तमानकालिक क्रिया* **आवइ, भावइ, सुहावइके** अत्यन्त निकट हैं। यह इस बातका द्योतक है कि **राउल वेल और चन्दायनकी** भाषाका निकट सम्बन्ध है और उनकी भाषा प्रादेशिक न होकर देशके विस्तृत भागमे प्रसरित भाषाका रूप है।

चन्दायनकी भाषाके व्याकरणकी गहराईसे अध्ययन किये जानेकी आवश्यकता है। तभी भाषाके सम्बन्धमे कुछ निश्चयपूर्वक कहा जा सकता है। पर यह कार्य ग्रन्थके शुद्ध पाठ उपस्थित किये जानेपर ही सम्भव है। सामान्य रूपेण जो कुछ हम देख और समझ सके हैं, उसके आधारपर हमारी धारणा है कि दाऊदने अपने काव्यके लिए ऐसी भाषाको अपनाया था जो अपभ्रंश साहित्यकी शब्द-परम्परासे विकसित होकर व्यापक रूपसे देशके विस्तृत भू भागमे प्रचलित थी। यदि वह काफी विस्तृत क्षेत्रमे बोली नहीं तो समझी अवश्य जाती थी। **चन्दायनमे** संस्कृत शब्दोंका प्रयोग बहुत ही कम है, उसमें प्राकृत और अपभ्रंशके देशज रूपमें ढले शब्दोंका ही बाहुल्य है। **मुलक्खन**, विचक्खन आदि शब्दोंका प्रयोग इस काव्यमे अपभ्रंश परम्पराके अवशेषके रूपमे देखा जा सकता है।

चन्दायनके शब्दोंका हिन्दीके अनेक प्राचीन काव्योंके साथ तुलनात्मक *अध्ययनसे ऐसा ज्ञात होता है कि इस काव्यका उनके साथ निकटका सम्बन्ध है। इसका अर्थ यह नहीं कि कवि अरबी-फारसीके प्रभावसे अछूता है। उसने इन भाषाओं से भी शब्द लिये हैं, पर वे ऐसे हैं जो सम्भवत भारत भूमिकी बोलचालकी भाषामें पूर्णत खप गये थे। फिर भी कहा-कहीं इन शब्दोंका प्रयोग विचित्र अथवा बेमेल* प्रतीत होता है। यथा—

मैंना सबद जो पीर सुनाया ४२९।१ (ब्राह्मणके लिए पीरका प्रयोग)।

बिहफै **सोहम** राज करावइ ४२३।१ (तीसरेके लिए **सोहम** [सोयम])।

इन्दर गोयन्द चन्दरावल (कहाके लिये पारसी किया गोयन्द)

छन्द योजना

सूफी कवियोंके हिन्दी प्रेमाख्यानक काव्योंके सम्बन्धमें हिन्दीके विद्वानोंका एक मत है कि उनकी रचना दोहे और चौपाइयोंमें हुई है। यही मत वासुदेवशरण अग्रवालने पदमावतके सम्बन्धमें व्यक्त किया है; किन्तु उनका ध्यान इस तथ्यकी ओर भी गया है कि जहाँ पदमावतकी चौपाई-छन्द मात्रा और तुक दोनों दृष्टियोंसे नियमित है, वहीं दोहोंके विषयमें यह बात खरी नहीं उतरती। दोहा एक मात्रिक छन्द है, जिसकी गणना अर्ध-सम जातिके छन्दोंमें की जाती है। इसके पहले और तीसरे चरणोंमें तेरह-तेरह मात्राएँ और दूसरे और चौथे चरणमें ग्यारह-ग्यारह मात्राएँ होती हैं। पहले और तीसरे पादकी तुक नहीं मिलती। दूसरे और चौथे चरणोंकी तुक मिलती है। किन्तु जायसीके सैकड़ों ऐसे दोहे हैं, जिनके पहले और तीसरे चरणोंमें यह नियम खरा नहीं उतरता। उनमें तेरहकी जगह सोलह मात्राएँ पायी जाती हैं। इसका उन्होंने यह कहकर समाधान कर लिया है कि दोहेके अनेक भेदोंमेंसे यह भी एक मान्य भेद हिन्दी काव्यमें उस समय स्वीकृत था, जिसकी परम्परा मुल्ला दाऊदके समयसे जायसीके कालतक अवश्य विद्यमान थी।[१]

वस्तुतः यह बात नहीं है। हमारे साहित्यकारोंका ध्यान इस तथ्यकी ओर नहीं जा सका है कि सूफी कवियोंने अपनी रचना पद्धति अपभ्रंश काव्योंसे प्राप्त की है और उन्होंने अपने काव्योंका सयोजन कड़वकोंके रूपमें किया है।

स्वयंभूने अपने स्वयम्भू छन्दसमें कड़वककी जो परिभाषा दी है, उसके अनुसार प्रत्येक कड़वकके शरीरमें आठ यमक और अन्तमें एक घत्ता होता है जिसे ध्रुवा, ध्रुवक अथवा छड्डनिका कहते हैं। प्रत्येक यमकमें १६-१६ मात्राओंवाले दो पद होते हैं। हेमचन्द्रने अपने छन्दोनुशासनमें इसी तथ्यको तनिक भिन्न ढगसे कहा है। उनके मतानुसार कड़वकके शरीरमें ४-४ पंक्तियोंके चार छन्द अर्थात् पंक्तियाँ होती हैं।

सोलह मात्राओं वाले पदोंकी बात केवल सिद्धान्त रूप है; कवियोंने सोलह मात्राओं वाले पदोंके अतिरिक्त पन्द्रह मात्रा वाले पदोंका भी व्यवहार प्रचुर मात्रामें किया है। अतः कड़वकमें प्रयुक्त होने वाले पद साधारणतया तीन रूपमें पाये जाते हैं :—

१. पद्धडिका—सोलह मात्राओंका पद। इसमें अन्तिम चार मात्राओंका रूप लघु गुरु लघु (जगण) होता है।

२. वदनक—सोलह मात्राओंका पद। इसमें चार मात्राएँ गुरु, लघु, लघु (भगण) होती हैं। कहीं कहीं इसका दो गुरु रूप भी पाये जाते हैं।

१. पदमावत, झाँसी, सं० २०१२, प्राक्कथन, पृ० १२।

२ पारणक—पन्द्रह मात्राओंका पद । इसमें तीन मात्राएँ लघु होती हैं। कहीं कहीं लघु गुरु रूप भी मिलता है।

आठ यमकों वाली बात भी केवल सिद्धान्त रूप है। उपलब्ध अपभ्रंश काव्योंके कडवकोंमे ६ से लेकर २० २० यमक तक पाये जाते हैं। ये इस बातके द्योतक हैं कि कवियोंने आठ यमको वाला नियम कभी भी कठोरताके साथ पालन नहीं किया।

घत्ताके द्विपदी, चतुष्पदी अथवा षट्पदी होनेका विधान है पर अधिकाश घत्ता चतुष्पदी ही पाये जाते हैं। घत्ताके प्रत्येक पद सात मात्राओंसे लेकर सत्तरह मात्राओंके हुआ करते थे। पदोंकी व्यवस्थाके अनुसार घत्ताके तीन रूप कहे गये हैं—(१) सवसम (२) अधसम और (३) अन्तरसम।

सवसम घत्ताम चारों पदोंकी मात्राएँ समान होती है और मात्राओंकी सख्याके अनुसार सवसम घत्ताके नौ रूप कहे गये हैं। अधसम घत्तामें प्रथम दो पदोंकी मात्राएँ एक समान और अन्तिम दो पदोंकी मात्राएँ पहले दो पदोंसे भिन्न किन्तु परस्पर समान होती हैं। मात्राओंकी सख्या गणनाके अनुसार अधसम घत्ताके ११० रूप बताये गये हैं। अन्तरसम घत्तामें प्रथम और तृतीय पदोंकी और द्वितीय और चतुर्थ पदोंकी मात्राएँ समान होती थीं और वह प्रसादयद्ध होता था। अन्तरसम घत्ताके भी मात्रा भेदसे ११० रूप होते थे। इस प्रकार घत्ताके रूपमें २२९ छन्द रूपोंके प्रयोगका विधान अपभ्रंशके पिंगल शास्त्रोंम पाया जाता है।

इन तथ्योको यदि ध्यानमें रखकर चन्दायनके छन्दोंकी परखकी जाय तो स्पष्ट ज्ञात होगा कि दाऊदने कडवकका रूप अपनाया है और उसके शरीरमे पॉच यमक रखे है और अन्तम एक घत्ता दिया है। उनके सभी यमक सोलह मात्राओं वाले नहीं हैं कुछ पन्द्रह मात्राओ वाले भी हैं। चन्दायनमें प्राप्त दोनों प्रकारके यमकोंके कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं —

सोलह मात्राएँ (वदनक)

1—लक पार जस देह न आवइ।
चाँद चीर मँह भरम दिखावइ॥ —९०।३
× × ×
चौदह चान देखि पा लागहिं।
पाप केत बरसहिं कर भागहिं॥ —११।४
२—कुन्दर सोन जरे लै हीरा।
चहुँ दिसि बैठि बिहारय बीरा॥ —९५।१

पन्द्रह मात्राएँ (पारणक)

बरें लक[१] बिसेखी धनाँ।
और लक पातर कर गुनाँ॥ —९०।४

इसी प्रकार दाऊदने घत्ताके भी अनेक रूपोंका प्रयोग अपने काव्यमें किया है। उनके कुछ रूप इस प्रकार हैं —

१—११, ११ मात्राएँ—

देहु असीस रोचन, मार गाँठ घर आउँ ।
सोने वेदि गढ़ाइ, मोतिह माँग भराउँ ॥ १२३

(२) ११, १२ मात्राएँ—

जे कब आय समान, सरवस बरन के तेहि ।
और पाँखि जे मारै, ताकर नाँउँ को लेहि ॥ १५४

(३) १२, ११ मात्राएँ—

सिद्ध पुरुष गुन आगर, देखि लुभाने ठाउँ ।
कहत सुनत अस जानैं, दुनि चल देखैं जाउँ ॥ २०

(४) १३, ११ मात्राएँ—

अरथ दरब घोर औहट, गिनत न आवइ काउ ।
अन धन पाट पटोर भल, कौतुक भूला राउ ॥ ३२

(५) १६, ११ मात्राएँ—

खाँड चिरौंजी दाख खुरहुरी, बैठे लोग बिसाह ।
हीर पटोर सौं भल कापड, जित चाहे सब आह ॥ २८

(६) १६, १२ मात्राएँ—

गीत नाद सुर कवित कहानी, कथा कहु गावनहार ।
मोर मन रैन देवस सुख राख, मूँजसि गाँध गितहार ॥ ७२

(७) १७, ११ मात्राएँ—

तिल संजोग बाजिर सर कीन्हों, औहट भा परजाइ ।
राजा हिये आग घद जारे, तिल-तिल जरे बुझाइ ॥ ८५

इन व्यवस्थित मात्राओंवाले घत्ताके अतिरिक्त कुछ घत्ता ऐसे भी हैं जिनके चारों चरणोंकी मात्राओंमें भिन्नता है । यथा—

११, १२, १२, ११ मात्राएँ—

महम करौं सुरजकै, रहे चाँदा चित छाइ ।
सोरह कहाँ चाँद कै, भई अमावस जाइ ॥ १४७

इस प्रकार मात्रा-भेदसे युक्त घत्ताके अनेक रूप चन्दायनमें देखे जा सकते हैं जिनमें चरणोंकी मात्राओंमें परस्पर कोई साम्य नहीं है; पर उनका उल्लेख यहाँ जान-बूझकर नहीं किया जा रहा है । उनपर ग्रन्थकी एक-आध अन्य प्रतियोंके प्राप्त होने और उनके तुलनात्मक अध्ययन के पश्चात् ही विचार करना उचित होगा ।

जो सामग्री उपलब्ध है, उससे यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि चन्दायनमें

१३, ११ मात्रावाले घत्ताका, जिसे दोहा भी कहा जा सकता है, बहुत ही कम प्रयोग हुआ है। उसमें १२, ११ और १६, ११ मात्रावाले घत्ता प्रमुख है और अधिक मात्रामें मिलते हैं।

रचना-व्यवस्था

मुसल्मान कवियों द्वारा रचित हिन्दी प्रेम गाथा काव्योंके सम्बन्धमें रामचन्द्र शुक्लने इस बातकी ओर ध्यान आकृष्ट किया है कि इनकी रचना बिल्कुल भारतीय चरितकाव्योंकी सर्ग-बद्ध शैलीपर न होकर फारसी मसनवियोंके ढंगपर हुई है, जिनमें कथा सर्गों या अध्यायोंमें विस्तारके हिसाबसे विभक्त नहीं होती, बराबर चली चलती है, केवल स्थान-स्थानपर घटनाओं या प्रसंगोंका उल्लेख शीर्षक रूपमें रहता है। मसनवीके लिए साहित्यिक नियम तो केवल इतना ही समझा जाता है कि सारा काव्य एक ही मसनवी छन्दमें हो पर परम्परा-के अनुसार उसमें कथारम्भके पहले ईश्वर स्तुति, पैगम्बरकी वन्दना और उस समयके राजा (शाहेवक्त) की प्रशंसा होनी चाहिए। ये बातें पद्मावत, इन्द्रावत, मिरगावती इत्यादि सबमें पायी जाती हैं।

तुर्की मसनवियोंके सम्बन्धमें गिब्बका कथन है कि मसनवीका आरम्भ अल्लाहकी वन्दनासे होता है। तदनन्तर उसमें रसूलकी वन्दना होती है और उनके मेराजका उल्लेख रहता है। पश्चात् समसामयिक शासक अथवा किसी अन्य महान व्यक्तिकी स्तुति की जाती है। और फिर पुस्तकके लिखनेके कारणपर भी प्रकाश डाला जाता है। लगभग यही बातें फारसी मसनवियोंमें भी पायी जाती हैं। निजामीने अपने लैला मजनूँमें हम्द शीर्षकमें ईश्वरका गुणगान किया है और फिर नातके अन्तर्गत रसूलकी प्रशंसा है और उनके मेराजका उल्लेख है। तदनन्तर कविने पुस्तक लिखनेके कारणपर प्रकाश डाला है और अपने पीरकी चर्चा की है। अन्तमें अपने पुत्रको नसीहत दी है। खुशरो-शीरींमें भी निजामीने क्रमशः ईश्वरकी प्रशंसा, रसूलकी नात, शाहेवक्तको दुआ और पुस्तक लिखनेका कारण दिया है। इसी प्रकार अमीर खुसरोने भी खुदाकी तारीफ, रसूलकी नात, मेराजके बयान, शेख निजामुद्दीनके गुणगान, शाहेवक्त—अलाउद्दीन खिलजीकी प्रशंसा कर तथा पुस्तक लिखनेका कारण बताकर अपनी पुस्तक मजनूँ-लैलाका आरम्भ किया है। खुसरोके शीरीं फरहादमें भी यही बातें पायी जाती हैं। जामीने यूसुफ जुलेखा और फैजीने नल दमनका भी आरम्भ इसी प्रकार किया है। फिरदौसीने शाहनामेमें भी ये सभी बातें उपलब्ध हैं।

मुसल्मान कवियों द्वारा रचित हिन्दी प्रेमाख्यानक काव्योंका भी आरम्भ उपर्युक्त मसनवियोंके समान ही हुआ है। दाऊदने चन्दायनमें ईश्वर और पैगम्बर की वन्दनाकर चार यारोंका उल्लेख किया है, फिर शाहेवक्त—फीरोजशाह तुगलककी प्रशंसाकर अपने गुरुकी वन्दनाकी है और अपने आश्रयदाताका वर्णनकर ग्रन्थ रचनाके

सम्बन्धमें कहा है। कुतबनकी मिरगावतिमें जो अंश उपलब्ध हैं, उनसे ज्ञात होता है कि उसका भी प्रारम्भ ईश्वरकी वन्दनासे हुआ है। मंझनने भी मधुमालतीमें हम्द, नात, रसूलके चार यारों, शाहेवक्तकी स्तुति करते हुए काव्यका रचना काल तथा अपना संक्षिप्त परिचय दिया है। मलिक मुहम्मद जायसी आदि परवर्ती कवियोंने भी इसी परम्पराको ग्रहण किया है।

अरबी फारसीके मसनवियों और हिन्दी प्रेमाख्यानक काव्योंकी ये समानताएँ रामचन्द्र शुक्लके कथनको पुष्ट करती हुई यह कहनेको विवश करती हैं कि मुसलमान कवियोंने अपने काव्योंमें इस परम्पराको अरबी फारसी मसनवियोंको देखकर ही अपनाया होगा। पर साथ ही इस बातकी भी उपेक्षा नहीं की जा सकती कि ये बातें केवल अरबी फारसी मसनवियोंकी परम्परामें सीमित नहीं हैं। भारतीय काव्य-परम्परा भी इन बातोंसे भली प्रकार परिचित रहा है। अरबी फारसी मसनवियों और हिन्दी प्रेमाख्यानक काव्योंकी लगभग ये सभी बातें जैन अपभ्रंश-काव्योंमें पायी जाती हैं। प्रायः सभी जैन अपभ्रंश काव्योंका आरम्भ 'जिन'की वन्दनासे होता है। किन्हीं-किन्हींमें जिन-वन्दनाके बाद सरस्वतीकी भी वन्दना पायी जाती है। तदन्तर उनमें समकालिक शासकका उल्लेख, कविका आत्म परिचय और आश्रयदाताकी चर्चा है और रचनाका कारण बताया गया है। उदाहरण स्वरूप पुष्पदन्त कृत महापुराण, स्वयंभू कृत पउमचरित और श्रीधर कृत पासनाहचरिउ देखा जा सकता है।

हिन्दी प्रेमाख्यानक काव्योंके सम्बन्धमें फारसी मसनवियोंकी जिस दूसरी विशेषताकी ओर लोगोंका ध्यान गया है, वह है उनमें पायी जानेवाली प्रसंगोंकी सुर्खियाँ। निजामी, अमीर खुसरो, जामी, फैजी, सभीने अपनी मसनवियोंमें प्रसंगोंके अनुकूल शीर्षक दिये हैं। ठीक उसी ढंगके शीर्षक चन्दायनकी सभी फारसी प्रतियोंमें प्रत्येक कड़वकके ऊपर दिये गये हैं और अन्य काव्योंकी प्रतियोंमें भी पाये जाते हैं। अतः इसमें भी इन कवियोंका फारसी मसनवियोंका अनुकरण परिलक्षित होता है। पर इसी ढंगके शीर्षक अपभ्रंश काव्योंमें भी पाये जाते हैं।

संस्कृत साहित्य शास्त्रके अनुसार किसी महाकाव्यमें कमसे कम आठ सर्ग होने चाहिए जो न तो बहुत छोटे हो और न बहुत बड़े। इस प्रकारका सर्गबन्ध हिन्दी प्रेमाख्यानक काव्योंमें न होनेसे यह मान लिया गया है कि वे फारसी मसनवियोंके अनुकरणपर रचे गये हैं, जहाँ सर्ग जैसा कोई विभाजन नहीं मिलता। किन्तु इस धारणामें भी कोई विशेष बल नहीं है। यह बात न भूलनी चाहिए कि अपभ्रंशमें सर्गहीन काव्योंकी कमी नहीं है। हिन्दी प्रेमाख्यानक काव्योंका रूप उन काव्योंसे किसी भी रूपमें भिन्न नहीं है।

हिन्दी प्रेमाख्यानक काव्योंके कथा वस्तु सर्वथा भारतीय हैं और वे भारतीय कथानक रूढ़ियोंपर ही आधारित हैं। उनमें कहीं भी अरबी या फारसी प्रभाव नहीं मिलता। ऐसी स्थितिमें यह समझना कठिन है कि इन कवियोंने अपने काव्यके बाह्य रूपके लिए भारतीय काव्योंसे इतर कहींसे प्रेरणा प्राप्तकी।

कथा-वस्तु

चन्दायनमें कथाका आरम्भ १८वें कडवकसे होता है। उसकी कथा इस प्रकार है :—

१—गोवर महरका स्थान था। (यह सूचना देकर कविने गोवरके अमराइयों, सरोवर, मन्दिर, खाँई, दुर्ग, नगर निवासियो, सैनिकों, बाजार हाट, बाजीगरों, राज दरबार और महल आदिका वर्णन किया है।) (१८ ३१)

२—राय महर के चौरासी रानियाँ थी। उनमें फूलारानी पद्ममहादेवि (प्रधान रानी) थीं। (३२)

३—सहदेव (राय महर)के घर चाँदने जन्म लिया। धूमधामसे उसकी छठी मनायी गयी। बारहवें महीने महरकी बेटीकी प्रशंसा द्वार समुद्र, माबार, गुजरात, तिरहुत, अवध और बदायूँ तक फैल गयी और राजाके पास चादसे विवाह करनेके सदेश आने लगे। जब चाँद चार बरसकी हुई तो जीत (अथवा जेत) ने नाई ब्राह्मण बुलाकर अपने बेटे बावनसे चाँदका विवाह कर देनेका सन्देश सहदेवके पास भेजा। उन्होंने आकर सहदेवको यह सम्बन्ध स्वीकार करनेको समझाया और सहदेवने विवाह करना स्वीकार कर लिया। बारात आयी, बावनने साथ चाँदका विवाह हो गया और दान दहेज लेकर लोग चले गये। (३३-४४)

४—विवाहको हुए बारह वर्ष बीत गये। चाँद पूर्ण यौवना हो गयी, पर उसका पति छोटा होने कारण कभी उसकी शैय्यापर सोने नहीं आया। इससे वह शोकाकुल रहने लगी। उसकी काम व्यथाके विलापको उसकी ननदने सुना और जाकर अपनी माँसे कहा। यह सुनकर महरि (चाँदकी सास) दौडी हुई उसने पास आयी और उसे समझाने लगी। चाँदने सासकी बातोंका उत्तर दिया। सासने क्रुद्ध होकर तत्काल मैके भेज देनेकी बात कही। अब चाँदको उस घरमें रहना दूभर लगने लगा। उसने ब्राह्मण बुलाकर अपने पिताके पास कहलाया कि भाईको पालकी कहारके साथ भेजकर मुझे शीघ्र बुला लें। ब्राह्मणने जाकर चाँदको बात महरसे कही और महरने तत्काल आदमीको भेजकर उसे बुला लिया। (४५ ५१)

५—चाँद मैके लौट आयी। लोगोंने उसे नहला धुलाकर उसका श्रृङ्गार किया। सखी-सहेलियाँ उसे देखने आयीं। वे हँसती हुई चाँदको बाहर लिवा ले गयीं और धौरहरपर ले जाकर उससे पति-सहवासके सुख भोगकी बातें पूछने लगीं। चाँदने उन्हें अपनी काम-व्यथा कह सुनायी। (यह सम्भवतः बारहमासाके रूपमें व्यक्त किया गया है, पर वह केवल खण्डित रूपमें ही प्राप्त है।) (५२-६५)

६—कहींसे गोवरमें एक बाजिर (ब्रजयानी साधू) आया और वह गाता और भीख माँगता नगरमें घूमनेमें लगा। एक दिन चाँद अपने धौरहरपर खडी होकर झरोखे-से झाँक रही थी कि उस बाजिरने अपना सिर ऊपर उठाया और चाँदको झरोखेपर देखते ही वह मूर्छित हो गया। लोग उसके चारों ओर जमा हो गये और उसके मुँहपर

पानी छिडकने लगे। उन्होंने उससे इस प्रकार मूछित हो जानेका कारण पूछा। उसने उत्तरमें घुमा फिराकर चाँदके सौन्दर्य दर्शन और उसके प्रति अपनी आसक्तिकी बात बतायी। फिर राय महरके भयसे वह गोवर नगर छोडकर चला गया। (६६ ७०)

७—बाजिर एक मास तक इधर उधर घूमता रहा, फिर वह एक नगरमें पहुँचा। (हमारे पास उपलब्ध सामग्रीमें इस नगरका नाम नहीं है पर बीकानेर प्रतिमें कदाचित् उसका नाम राजापुर बताया गया है।) एक दिन रातको जब बाजिर चाँदके विरहके गीत गा रहा था, तब राजा रूपचन्दने उसे सुना और उसे बुलवाया। (७१-७२)

८—बाजिरने आकर राजा रूपचन्दसे कहा—'उज्जैन मेरा स्थान है, जहाँका राजा विक्राजित बडा धर्मनिष्ठ है। मैं चारों भुवन घूमता हुआ गोवरके सुन्दर नगरमें पहुँचा। वहाँ मैंने चाँद नामक एक स्त्री देखी, जो मेरे मनमें पत्थरकी लकीर बनकर समा गयी है। उसकी टीस मेरे मनमें दिन-दिन सवाई होती जा रही है।' यह सुनकर रूपचन्दके मनमें चाँदके सम्बन्धमें विस्तारके साथ जाननेकी जिज्ञासा जागी और उसने बाजिरका सम्मान कर उससे चाँदका हाल विस्तारके साथ कहनेका अनुरोध किया। तब बाजिरने चाँदकी माँग, केश, ललाट, भौंह, नेत्र, नासिका, ओष्ठ, दाँत, जिह्वा, कान, तिल, ग्रीवा, भुजा, कुच, पेट, पीठ, जानु, पग और गति, आकार, वस्त्र और आभूषण, सबका विस्तारके साथ वर्णन किया। (७३ ९५)

९—चाँदके रूप-वर्णनको सुनकर रूपचन्दने बाँठाको सेना तैयार करनेका आदेश दिया और सेनाने कूच किया। (कविने यहाँ रूपचन्दकी सेनाके हाथी, घोडों आदिका वर्णन किया है।) मार्गमें अपशकुन हुए, पर उसने उसकी तनिक भी परवाह न की और गोवर नगरको जाकर घेर लिया। (९६-१०२)

१०—रूपचन्दकी सेनाके आनेसे गोवर नगरमें आतंक फैल गया। तब महर सहदेवने राजा रूपचन्दके पास दूत भेजा कि वे पता लगायें कि उसने किस कारण घेरा डाला है और उसका आदेश क्या है। दूत जाकर रूपचन्दके पास उपस्थित हुए। राजाने दूतोंकी बात सुनकर कहा कि चाँदका मेरे साथ तत्काल विवाह कर दो। दूतोंने रूपचन्दको समझानेकी चेष्टा की, पर वह न माना और दूतोंपर क्रुद्ध हुआ और चले जानेको कहा। दूतोंने लौटकर रूपचन्दकी माँग कह सुनायी। तब महर सहदेवने अपने साथियोंसे परामर्श किया। कुछ लोगोंने तो कहा कि चाँदको दे दीजिए। कुछको चाँदकी माँगकी बात सुनकर क्रोध आ गया। अन्ततोगत्वा रूपचन्दसे लोहा लेनेका निश्चय हुआ और युद्धकी तैयारी होने लगी। (यहाँ कविने महरके अश्व, अश्वारोही, धनुर्धर, रथ, हाथी आदिका वर्णन किया है)। (१०३ ११६)

११—दूसरे दिन रूपचन्द दुर्गकी ओर बढा और महर भी युद्धके लिए बाहर निकलकर आया। युद्ध आरम्भ हुआ। महरके प्रमुख योद्धा मारे गये। यह देखकर भाटने महरसे कहा कि आपके पास ऐसे वीर नहीं हैं जो रूपचन्दके सैनिकोंको परास्त कर सकें। आप तत्काल लोरकको बुला भेजिये। (११७ १२०)

१२—तब महरने भाटसे कहा कि तुम्ही दौडकर लोरकके पास जाओ और उन्हे बुला लाओ। भाट तत्काल घोडेपर सवार होकर लोरकके पास पहुँचा और महरका सन्देश कह सुनाया। सुनते ही लोरक युद्धम जानेके लिए तैयार हो गया। यह देखकर उसकी पत्नी मैंना उसके सामने आकर खडी हो गयी और युद्धम जानेसे उसे रोकने लगी। लोरकने कहा—मुझे युद्धम जानेके लिए तिलक लगाकर आशीर्वाद दो कि मैं बाँठा (रूपचन्दका एक वीर) को मारकर घर आऊँ। मैं लौटकर तुम्ह सोनेके गहने बनवा दूँगा और मोतियोंसे तेरी मॉग भराऊँगा। तब पत्नीने बिदा दी और लोरक अजयीके घर गया। अजयीसे युद्ध कौशलकी दीक्षा लेकर वह महरके पास पहुँचा। महरने उसे पानके तीन बीड़े दिये और कहा कि तुम जीतकर आओगे तो तुम्हें सुसज्जित घोडा भेंट करूँगा। (१२१ १२७)

१३—लोरक अपनी सेना लेकर युद्ध-क्षेत्रकी ओर चला। उसकी सेना देखकर रूपचन्द भयभीत हो गया और दूत भेजकर कहलाया कि एक एक वीर आपसमे लड़ तो अच्छा हो। महरने उसकी बात मान ली तदनुसार दोनो ओरके वीर एक एक कर सामने आकर लडने लगे। अन्तम रूपचन्दकी ओरसे बाँठा आगे आया और महरने उसका सामना करनेके लिए लोरकको भेजा। युद्धमें बाँठा हार गया। फिर लोरक और रूपचन्दमे युद्ध हुआ और वह हारकर भाग खडा हुआ। लोरकने उसका पीछा किया और उसे भगा दिया। (१२८ १४३)

१४—युद्ध जीतकर महर गोवर पहुँचा और लोरक वीरको बुलाकर उसे पान का बीडा दिया और हाथीपर बैठाकर उसका जुलूस निकाला। रानियाँ धौरहरपर खडी होकर उसे देखने लगी। ब्राह्मणोंने लोरकको आशीर्वाद दिया, गोवरम आनन्द मनाया जाने लगा। (१४४)

१५—चाँद भी अपनी दासी बिरस्पतको लेकर धौरहरके ऊपर गयी और उससे लोरकको दिखानेको कहा। बिरस्पतने उसे दिखाया। लोरकको देखते ही चाँद विकल होकर मूर्छित हो गयी। बिरस्पतने उसके मुखपर पानी छिडका और बोली कि अपनेको सम्हालो। जो तुम्हारे मनम है उसे कहो, मैं उसे रात बीतते ही पूरा करूँगी। (१४५ १४८)

१६—दूसरे दिन प्रात काल जब बिरस्पत आयी तो चाँदने कहा—जिसे मैंने कल देखा, उसे या तो मेरे घर बुलाओ या मुझे उसके निकट ले चलो। बिरस्पतने कहा कि मैं लोरकको अपने घर बुलानेका उपाय तुम्ह बताती हूँ। तुम अपने पितासे गोवर-के नागरिकोंको ज्योनारपर बुलानेक लिए कहो। यह सुनते ही चाँद महरके पास गयी और बोली कि मैंने मनौती मानी थी कि जब मेरे पिता रण जीतकर आयेंगे तो सब लोगोको निमन्त्रित कर भोजन कराऊँगी। चाँदकी बात सुनते ही महरने नाई बुलाकर सारे गोवरमे ज्योनारका निमन्त्रण भेज दिया और नाई दसो दिशामें जाकर निमन्त्रण दे आये। महरने अहेरियोंको शिकार लाने और बारियोंको पत्ते लानेके लिए भेजा।

(कविने यहाँ शिकारियों द्वारा लाये पशु पक्षियों तथा भोजन सामग्री तरकारी, पकवान, चावल, रोटी आदिका विस्तारपूर्वक वर्णन किया है।) (१४९ १६०)

१७—नागरिक लोग महरके घर आये और ज्योनारपर बैठे। तब चाँद श्रृंगार कर धौरहरपर आकर खड़ी हुई। उसे देखकर लोरक खाना भूल गया। उसके लिए भोजन विपवत हो गया। घर लौटते ही वह चारपाईपर पड़ गया। यह देखकर उसकी माँ खोलिन विलाप करने लगी। कुटुम्बी जन आदि एकत्र हुए, पण्डित, वैद्य, सयाने बुलाये गये। सभीने कहा कि उसे कोई रोग नहीं है। वह काम विद्ध है। (१६१ १६५)

१८—बिरस्पत बाजार गयी तो उसके कानोंमें खोलिनका करुण विलाप पड़ा। वह उसके घर पहुँची और रोनेका कारण पूछा। खोलिनने लोरककी दुरवस्था कह सुनायी। सुनकर बिरस्पतने पूछा कि तुम्हारा रोगी कहाँ है, मैं उनके रोगकी औषधि जानती हूँ। खोलिन उसे लोरकके पास ले गयी। बिरस्पतने उनके अंग अंगको देखा फिर बोली—मैं महरके भण्डारकी भण्डारी और चाँदकी धाय हूँ। मैं बुलानेपर आयी हूँ, आँख खोलकर अपनी बात कहो।

चाँदका नाम सुनते ही लोरक चैतन्य हो गया और बोला कि लज्जाके कारण अपनी व्यथा नहीं कह सकता। यह सुनकर खोलिन अलग जा खड़ी हुई और तब लोरकने अपने मनकी व्यथा बिरस्पतसे कह सुनायी। बिरस्पतने इस बातको भूल जाने को कहा। लोरक उसका पाँव पकड़कर चाँदसे मिलन करा देनेका अनुरोध करने लगा। बिरस्पत द्रवित हो उठी और बोली कि तुम शरीरमें भभूत लगाकर जोगी बन कर मन्दिरमें चलकर बैठो। वहाँ दर्शनके लिए भक्त आयेगा, तुम यथेच्छा देखते रहना। यह कहकर बिरस्पत बाहर निकली। निकलते ही खोलिनने उनके पैर पकड़ लिये। बिरस्पत ने कहा कि तुम्हारा रोगी अच्छा हो गया है। नहा धोकर पूजा करो और लोरकको नहला धुलाकर उसपर कुछ धन न्यौछावर कर उसे बाहर भेज दो। यह कहकर वह चाँदके पास लौट गयी। (१६६ १७३)

१९—बिरस्पतके कथनानुसार लोरक जोगी बनकर मंदिरमें जा बैठा। वह एक वर्षतक मन्दिरकी सेवा और चाँदके प्रेमकी कामना करता रहा। कार्तिकमें जब दीवाली का पर्व आया तब चाँद अपनी सखियोंको लेकर दीवाली खेलने गाने चली। रास्तेमें उसका हार टूट गया और मोती बिखर गये। तब बिरस्पतने चाँदसे कहा कि तुम मन्दिरमें चलकर आराम करो। ये सखियाँ हार पिरोकर लायगी। यह सुनकर चाँद मन्दिरके भीतर [illegible] गया। सखी (बिरस्पत)ने मन्दिरके भीतर झाँककर कहा कि इस मन्दिरमें एक [illegible] आदि गये हुए हैं, उनके देखते ही सारे पाप भाग जाते हैं। चाँदने उस [illegible] मरे दिन स्पीस नवाया। योगी चाँदको देखते ही मूर्छित हो गया। चाँद [illegible] [illegible]। युद्ध आरम्भ और बिरस्पतके पूछनेपर जोगीको स्थिति कह सुनायी। [illegible] आपने पदिया और चाँदने उसे गलेमें पहन लिया। तब बिरस्पत कर सर। - [illegible] को घर चल, घरपर महरि घबरा रही होंगी। (१७४ १८१)

२०—चाँदको देखकर मूर्छित होनेके पश्चात् होशमें आनेपर लोरक विलाप और अपनी स्थितिपर खेद प्रकट करने लगा। तब मन्दिरके देवताने बताया कि अप्सराओं का एक समूह आया था। उन्हींमेंसे एकको देखकर तुम मूर्छित हो गये। (१८० १८३)

२१—उधर चाँदने बिरस्पतको बुलाकर अपनी व्याकुलता दूर करनेको कहा। तब बिरस्पतने मन्दिरमें बैठे जोगीकी ओर संकेत किया। चाँदने उसे मजाक समझा। बोली—जिस दिनसे लोरकको देखा है, वह मेरे मन बस गया है। मैं उसकी हूँ और वही मेरा पति है। तब बिरस्पतने बताया कि वही लोरक तो तेरा भिखारी है और तेरे दर्शनके निमित्त ही तो वह जोगी बना बैठा है और तुझे देखते ही मूर्छित हो गया था।

तब चाँद बिरस्पतसे बोली—तूने नहीं बताया कि मन्दिरमें लोरक है। नहीं तो उसके योग्य मैं भक्ति युक्ति करती। उसके घृत भरे वचन सुनती। खैर, तुम जाकर कहो कि अब वह अपना भस्म और कन्था उतार दे। बिरस्पत पान मिठाई लेकर मन्दिरमें गयी और लोरकसे जोगीका वेश त्यागकर घर जानेको कहा। लोरक योगी वेश त्यागकर अपने घर गया और बिरस्पतने आकर यह सूचना चाँदको दी। (१८४ १९१)

२२—घर आकर लोरक चाँदके विरहमें स्थिर न रह सका और बार बार मन्दिर की ओर आता और चाँदके लिए रोता रहता। सारे दिन वह बन नगरमें घूमता रहता और रातको गोवरमें आता—कदाचित् एक क्षणके लिए चाँद दिखाई दे जाय। उधर चाँद भी लोरकके वियोगमें छटपटाती रहती। उसकी समझमें ही नहीं आता कि लोरक से किस प्रकार मिलाप हो। अन्तमें उसने एक दिन बिरस्पतको लोरकके पास भेजा। बिरस्पत लोरकको साथ लाकर चाँदके धौरहरका मार्ग दिखा गयी। (१९२ १९८)

२३—लोरकने बाजार जाकर पाट खरीदा और उसका तीस हाथ लम्बा एक बरहा (मोटा रस्सा) तैयार किया। उसमें बीच बीचमें गाँठें लगायी और ऊपर एक अंकुश बाँधा। उसे देखकर मैंनाने पूछा कि यह बरहा क्या होगा तो लोरकने कहा कि एक भैंस निगडैल हो गयी है, उसे बाँधूँगा। (१९९)

२४—भादोंकी घोर अँधेरी रातमें लोरक बरहा लेकर चला। मगर अँधेरेमें उसे कुछ पता ही नहीं चलता था कि चाँदका आवास किधर है। इतनेमें बिजली कौंधी और लोरकने उसे पहचान कर बरहेको जोरोंसे ऊपर फेंका। बरहा जब ऊपर पहुँचा तो उसकी आवाजसे चाँद जागी और अंकुशीको खौभेसे लगा देखा। उसने नीचे झाँक कर देखा तो लोरकको खड़ा पाया। तत्काल उसने अँकुरी निकालकर बरहेको नीचे गिरा दिया। लोरक बार-बार बरहा ऊपर फेंकता और हर बार चाँद हँसकर उसे नीचे गिरा देती। जब उसने अनुभव किया कि लोरक परेशान हो गया है और अब यदि कुछ करती हूँ तो वह नाराज होकर चला जायगा और फिर कभी न आयेगा, तो वह अपने कियेपर पछताने लगी। जब फिर बरहा ऊपर आया तो दौड़कर उसने उसे पकड़ लिया और उसे खींचकर खम्भेतक लायी। जब लोरकको रस्सीके सहारे ऊपर आते देखा तो वह चुपचाप चारपाईपर जाकर लेट गयी। लोरकने ऊपर आकर चाँदका

होगी। वह दिन आया। सभी जातिकी स्त्रियाँ पूजा करने चलीं। चाँद भी अपनी सहेलियोंको लेकर मंदिर गयी, देवताकी पूजा की और मनौती मानी कि यदि लोरक पतिके रूपमें प्राप्त हो गया तो आपके कलशको घृतसे भरवाऊँगी। (२५० २५४)

३१—मैना भी पालकीपर सवार होकर अपनी सखियों सहित मंदिरमें आयी और देवताकी पूजाकी और उन्हें अपनी व्यथा कह सुनायी। पूजा कर जब वह बाहर निकली तो उसके कुम्हलाये हुए रूपको देख चाँदने हँसकर उदासीका कारण पूछा। मैनाने उसका उत्तर दिया और अपने मनका रोष चाँदपर प्रकटकर दिया। फलतः हँसीकी बात उत्तर प्रतिउत्तरमें उत्तरोत्तर गम्भीर होती गयी। चाँद और मैनामें पहले गाली गलौज और फिर मारपीट होने लगी। तब लोरकने आकर उन दोनोंको अलग किया। दोनों ही स्त्रियाँ अपने-अपने घर लौटीं। (२५५ २७४)

३२—मैनाने घर आकर मालिनको बुलाया और उसे चाँदकी शिकायत लेकर महरिके पास भेजा। मालिनने जाकर महरिसे चाँदकी सारी बात कही। उसे सुनकर महरि अत्यन्त लज्जित और क्षुब्ध हुए। (२७५ २७८)

३३—चाँदने बिरस्पत से कहा कि जो कुछ बात ढँकी छिपी थी, वह अब सब लोगों पर प्रकट हो गयी। जिस बातसे मैं डर रही थी, वही बात सामने आ गयी। अब तो यही रह गया कि या तो देशकी गालियाँ सुनूँ या फिर कटार भोंककर मर जाऊँ। तुम लोरकसे जाकर कहो कि आज रातको वह मुझे लेकर भाग चले नहीं तो प्रातःकालमें प्राण तज दूँगी। बिरस्पतने जाकर लोरकसे चाँदका सन्देश कहा। पहले तो लोरक भागनेपर राजी नहीं हुआ, पर बादमें बिरस्पतके समझाने बुझानेपर चाँदको ले जानेको तैयार हो गया। पण्डितसे शुभ घड़ी पूछकर उसने आधी रातको चलनेका निश्चय किया। (२७९ २९०) (इस अंशके कुछ कड़वक अप्राप्य है, अतः घटनाका स्पष्ट रूप सामने नहीं आता।)

३४—रात हुई तो लोरक आया और बरहा (रस्सी) फेंककर अपने आनेकी सूचना चाँदको दी। चाँद उसकी प्रतीक्षा कर ही रही थी। आभरण, मानिक, मोती साथ लेकर वह रस्सीके सहारे नीचे उतर आयी। बरसातकी घोर अँधेरी रात्रिमें दोनों चल पड़े। रास्तेमें चाँदने कहा कि हमारे भागनेकी खबर यदि बावनको मालूम हो गयी तो उसके देखते कोई भागकर जा नहीं सकता। वह देखते ही मछलीकी तरह मार डालेगा। लोरकने कहा—तुम मुझे इस तरह मत डराओ। अभीतक मैंने रूपचन्द और बाँठाको मारा है, अब बावनकी बारी है। (२९१ २९२)

३५—लोरकके भाग जानेपर उसकी पत्नी मजरी (मैना) उसके अस्त्र शस्त्रोंको लेकर रोती रही। (२९३)

३६—लोरक और चाँदने काले वस्त्र पहन लिए। लोरकने अपने दोनों हाथोंमें खाँड़ और चाँदने अपने हाथमें धनुष लिया और दोनों चल पड़े। गोवरसे दस कोस दूर पहुँचे और रास्तेको कतराकर चलने लगे। यहाँ लोरकका भाई कँवरू रहता था। उसने लोरकको आते देखा और उसकी ओर भागा। लेकिन चाँदको पीछे पीछे

आते देख ठिठक गया। लोरकसे बोला कि तुमने यह बहुत बुरा किया। और वह उसकी भर्त्सना करने लगा। यह सुनकर चाँदने कँवरूको समझानेकी चेष्टा की तो कँवरू उसकी भी भर्त्सना करने लगा। अन्तमें लोरकने यह कहकर कँवरूसे विदा ली कि कातिक मासतक लौट आऊँगा। (२९४-३००)

३७—वहाँसे दोनों तेजीके साथ आगे बढ़े। जब शाम हुई तो गगाके घाटको कठिन समझकर पेड़के नीचे सो रहे। सुबह दोनों घाटके किनारे आये। (बीचके कड़वक अप्राप्य है, अत कथाका मर्म कुछ अस्पष्ट है।) लोरक एक ओर छिप गया और चाँद तटपर खड़ी होकर अपना प्रदर्शन करने लगी। उसे देखते ही एक मल्लाह निकट आया। चाँदको अकेले देख उसकी उत्सुकता जागी और नाव लेकर उसके पास आया। चाँदके रूपको देखते ही वह उसपर मुग्ध हो गया और उसे नावपर बैठाकर पार ले चला। गगाके बीचमें केवटने उससे पूछा कि तुम कौन हो? घर कहाँ है? नदीके आसपास कोई गाँव नहीं है, फिर तुम रातको कहाँ ठहरी थीं?

चाँदने कहा—मैं घरसे रूठकर चली हूँ और रातभर चलकर अकेले ही यहाँतक आयी हूँ।

यह बातें हो ही रही थीं कि लोरकने पानीमेसे सर बाहर निकाला और केवट-को पानीमें ढकेलकर स्वय नावपर सवार होकर चाँदको लेकर चल पड़ा। (३०१-३०७)

३८—इतनेमें बावन आ पहुँचा और केवटसे पूछने लगा—इस रास्ते मेरे दो दास-दासी आये हैं उन्हें तुमने देखा है? यह सुनकर केवट हँसा और बोला—यहाँ तो एक कुँवर और कुँवरी आये थे। पुरुष छिप गया और स्त्री दिखायी पड़ी। उसकी ओर आकृष्ट होकर मैं यहाँ आया। वे लोग नाव लेकर उस पार गये हैं। लेकिन वे तुम्हारे दास-दासी नहीं हो सकते। इतना सुनते ही बावन पानीमें कूद पड़ा और लोरकका पीछा किया। जबतक बावनने नदी पार करे तबतक लोरक छ कोस जा पहुँचा। बावनने दौड़कर उनका पीछा किया और दस कोसपर उन्हें जा पकड़ा। लोरकपर उसने तीन बाण चलाये पर वे तीनों ही बेकार गये। तब हार मानकर लोरकसे कहकर कि यह स्त्री तुम्हारी हुई, बावन अपने घर लौट गया। (३०८-३१५)

३९—बावन गोवरकी ओर गया, लोरक और चाँद आगे बढ़े। रास्तेमें उन्हें बिधादानी नामक एक ठग मिला जिसने दानके बहाने स्त्री (चाँद) की माँग की। इसपर लोरकने उसके हाथ और कान काट लिये और उसका मुँह काला कर देशोंमें बैल बाँधकर छोड़ दिया। (कुछ कड़वकोंके प्राप्त न होनेसे यह घटना बहुत अस्पष्ट है।) (३१६-३२२)

४०—बिधाने जाकर लोरकके विरुद्ध राव करकासे फरियाद किया। रावने अपने मन्त्रियोंसे परामर्श कर लोरकको बुलानेके लिए ब्राह्मणोंको भेजा। लोरकने आकर रावसे सारी बात कह सुनायी। सुनकर रावने उसे घोड़ा आदि देकर सम्मानित किया और कहा कि चाहो तो यहाँ रहो अन्यथा जहाँ इच्छा हो जा सकते हो। लोरक रावसे विदा लेकर चला और एक ब्राह्मणके घर आकर ठहरा। वहाँ लोरक

और चाँद दोनों फूलोंकी सेज बिछाकर सोये। रातमें सुगन्धसे आकृष्ट होकर एक साँप आया और चाँदको काट लिया। (३२३ ३३२)

४१—साँपके डँसते ही चाँद बेहोश हो गयी। लोरक सात दिनोंतक शोकाकुल होकर विलाप करता रहा। तब एक दिन एक गुनी आया और उसने मन्त्र पढ़ा और चाँद जीवित हो उठी। फिर वे दोनों हरदीकी ओर चले। (३३३ ३३७)

४२—(३३८ से ३४३ के बीच केवल दो कडवक उपलब्ध हैं जिनसे वास्तविक घटनाका अनुमान नहीं होता, केवल इतना ही पता लगता है कि लोरकको कोई युद्ध करना पड़ा था। उसने शत्रुओंको मार भगाया। पश्चात् दोनों पुन हरदी की ओर चले।)

४३—चलते चलते एक वनखण्डके बीच शाम हो गयी और वे दोनों एक पाकड़के पेड़के नीचे रुक गये और खा-पीकर सो रहे। रातमें पुन साँपने चाँदको डँस लिया। उसके वियोगमें लोरक घोर विलाप करने लगा। दिन बीता, रात हुई और वह रोता ही रहा। दूसरे दिन सुबह लोरकने चिता तैयार की और उसपर चाँदको लेकर बैठ गया। इतनेमें एक गुनी आया। उसे देखकर लोरक उसके पाँवपर गिर पड़ा उसने उससे चाँदको जीवित कर देनेका अनुरोध किया और अपना सर्वस्व देनेको कहा। गुनीने लोरकको आश्वस्त किया और मन्त्र पढ़कर पानी छिड़का। तत्काल चाँद-का विष उतर गया और वह उठ बैठी। लोरकने सारे आभूषण उतारकर गुनीको दे दिये। (३४५-३६०)

४४—गारुडी, जाते हुए चाँद और लोरकसे कहता गया कि पाटन देश मत जाना और जाना तो दाहिने रास्तेको अपनाना। लेकिन उन्होंने उसकी बात न मानी और चल पड़े। शाम होते होते वे सारंगपुर पहुँचे। यहाँ लोरकके साथ क्या बीती यह व्यक्त करनेवाले कडवक हमें उपलब्ध नहीं हैं। किन्तु रावत सारस्वतने जो कथासार दिया है उसके अनुसार सारंगपुर पहुँच कर लोरकने वहाके राजा महीपतिके साथ जुआ खेला। (जुएका वृत्तान्त प्राप्त नहीं है पर लोक-कथाके अनुसार लोरक अपना सब कुछ हार गया और अन्तमें चाँदको भी दाँवपर लगा दिया और उसे भी हार गया। तब चाँदने अपनी चातुरीसे उन्हें पुन एक बार खेलनेको कहा और महापतिको अपने सौन्दर्यके प्रति ऐसा आकृष्ट कर लिया कि वह खेलकी ओर समुचित ध्यान न दे सका और हार गया।) पश्चात महीपतिको लोरकने मार डाला। महीपतिके मरने पर उसके भाइ असिपतिने उसे घेर लिया। रावत सारस्वतके दिये हुए कथासारके अनुसार राक्षसी मायासे लोरकको दिखाई देना बन्द हो गया। तब चाँदने वीरतापूर्वक सबको मार डाला। (३६१ ३७०)

४५—महीपति और असिपतिको पराजित कर चाँद और लोरक आगे चले तो सम्भवत चाँदको पुन एक बार साँपने काटा और वह मरकर पुन जीवित हो उठी। (यह अश अनुपलब्ध है। उपलब्ध कडवक ३७० से इस घटनाके घटित होनेका अनु मान मात्र होता है।) जब वह जीवित होकर उठी तो बोली कि ऐसी कोइ कि क्या

कहूँ ? मैंने चार स्वप्न देखे। कल रात जब हम वनमें घुसे तो एक सिद्ध आया जिसने हम दोनोंका मिलन कराया। मैंने उसका पैर पकड लिया और बोली कि जबतक जीवित रहूँगी, तुम्हारी सेवा करूँगी। तब उसने आशीर्वाद देकर कहा कि लोरक तू मेरा भाई है। रास्ते में एक टूँटा योगी है। उधर चाँदको मत ले जाना। लेकिन अगर तुझ पर कोई कष्ट आये और टूँटा चाँदको अपहरण कर ले जाय तो ईश्वर को स्मरण कर मुझे स्मरण करना। यह कहकर सिद्ध उड कर चला गया। (३७० ३७४)

४६—स्वस्थ होकर लोरक और चाँद पुन आगे बढे और चार दिन चलनेके बाद एक नगरमे पहुँचे। चाँदको एक मन्दिरमें बैठाकर लोरक नगरमे खाने पीनेका सामान लाने गया। टूँटा योगीने चाँदको देखा और उसने पास आकर सिगी नाद किया। चाँद बेसुध हो गयी और उसके पीछे चल पडी। जब लोरक लौटकर आया तो मन्दिरको चाँदसे शून्य पाया। वह चाँदके वियोगमें रोने लगा। रात भर वह चाँद को खोजता रहा, पर वह न मिली। दूसरे दिन वह जगह जगह चाँदको पूछता फिरा। एक जगह उसे पता चला कि शामको टूँटेके साथ एक स्त्री जा रही थी। टूँटेको खोजते खोजते उसे एक नगरमें पता लगा कि टूँटेके साथ स्त्री आयी है। तत्काल लोरकने उसे जा पकडा। लेकिन टूँटेने जब आँख दिखायी तो लोरक भाग चला। तभी उसे सिद्धका वचन स्मरण हो आया। स्मरण करते ही सिद्ध उसके पास आ खडा हुआ। अब लोरक और टूँटेमे झगडा होने लगा। दोनों ही चाँदको अपनी पत्नी बताने लगे। चाँद गूँगी बनी यह सब देखती रही। सिद्धने तब कहा कि तुम आपसमे क्यों लड रहे हो। सभाके पास चलकर फैसला करा लो। और तब चारों आदमी—टूँटा, लोरक, चाँद और सिद्ध सभामें पहुँचे। वहाँ लोरक और टूँटा दोनों ने अपनी अपनी बात कहकर चाँदको अपनी पत्नी बताया। पर दोनोंमेसे किसीके पास कोई साक्षी न था। सभाने कहा कि चाँदसे पूछो कि वह क्या कहती है। पर टूँटेने ऐसा मन्त्र पढ दिया था कि चाँदको कुछ स्मरण नहीं रह गया था। (३७५-३८४) (सभाने किस प्रकार लोरकके पक्षमें निर्णय दिया, यह वृत्त अनुपलब्ध है)।

४७—इन सब सकटोंपर विजय प्राप्त कर अन्तमें लोरक और चाँद हरदी पहुँचे। प्रात काल जिस समय वे हरदीकी सीमामें घुस रहे थे, उसी समय वहाँका राजा शेतम शिकारके लिए बाहर जा रहा था। उसने उन्हे देखा और उनका परिचय प्राप्त करनेके लिए नाई भेजा। नाईने उन्हे एक स्थानपर लाकर ठहराया और उनका परिचय प्राप्त कर लौटा। तब राव शेल्तने लोरकको बुलवाया और आनेका कारण पूछा। फिर उसका भरपूर सम्मान किया और नाना प्रकारकी सामग्री उसे भेंट की। दोनों वहाँ आनन्दपूर्वक रहने लगे। (३८९ ३९७)

४८—उधर मैना दिन-रात लोरकके वापस आनेकी प्रतीक्षा करती हुई रोती रही। एक दिन उसने सुना कि नगरमें सात दिनासे कोई टाँड (व्यापारियोंका समूह) आया हुआ है। उसने अपनी सासमे कहा कि पता लगाइये वे कहाँसे आये हैं। तब खोलिनने उसके नायक सिरजनको अपने घर बुलवाया और उससे पूछा कि

कि टाँड कहाँसे आ रहा है, क्या बनिज उसने लाद रखा है और कहाँ जायगा ! फिर उसका नाम धाम कुटुम्ब परिवारकी बात पूछी और अपनी व्यथा उसे कह सुनायी। यह सुनकर कि टाँड हरदीपाटन जायेगा, खोलिन खूब रोयी और मैना आकर उसके पाँवोंपर गिर पड़ी और बताया कि उसके पति लोरकको चाँद भगाकर पाटन ले गयी है। उसने अपनी सारी व्यथा कह सुनाई (कविने विरह व्यथाका वर्णन बारहमासाके रूपमें किया है)। मैना और खोलिन दोनोंने सिरजनसे लोरकके पास जाने और उससे उनकी दीन दुखी अवस्था कहने और वापस आनेका आग्रह करनेका अनुरोध किया। (३९७-४१६)

४९—सिरजन मैनाका सन्देश लेकर चला और चार मासमें हरदीपाटन जा पहुँचा। लोरकके घरका पता लगाकर वहाँ गया और अपने आनेकी सूचना भेजी। उस समय लोरक सो रहा था। द्वारपालों ने सूचना दी कि बाहर एक पण्डित आकर खड़ा है। सुनते ही लोरक बाहर आया और ब्राह्मणको प्रणाम किया। ब्राह्मणने उसे आशीर्वाद दिया और फिर बैठकर पोथी देखकर राशि आदिकी गणना की और बोला कि तुम्हारा राजपाट गोवरमें है और तुम मैनाके पति हो। उसे तुमने भूमिमें डालकर चाँदको आकाशमें चढा रखा है। (४१७-४२४)

५०—मैनाका नाम सुनते ही लोरकका हृदय घबराने लगा। पूछा मैनाकी बात तुमने कहाँ सुनी और चाँदकी बात तुमसे किसने कही ? तुम कहाँसे आये हो ! तुम्हें किसने हरदीपाटन भेजा ! तुम तो परदेशी नहीं, सहदेशी जान पडते हो। माँ, भाई, मैनाका कुशल क्षेम मिले तो तुम्हारे पैरकी धूलि अपने शीशपर लगाऊँ। तब सिरजनने उसे उसके घरकी सारी दुरवस्था कह सुनायी। मैनाकी दुरवस्था सुनकर लोरक रोने लगा और उसके लिए व्याकुल हो उठा। बात करते करते शाम हो गयी पर ब्राह्मणकी बात समाप्त न हुई। लोरकने सिरजनको स्नान कराकर भोजन कराया और दो लाख दाम (ताँबेका एक सिक्का) और हजार बैल सामग्री भेंट की और कहा कि कल चलूँगा। तुम भी मेरे साथ चलो। (४२४-४३०)

५१—सिरजन की बात सुनकर चाँद का मुख एक दम मलीन हो उठा। उसने समझ लिया कि लोरक अब अपने घर लौट चलेगा। उसने उस रात कुछ नहीं खाया और वह उदासी ही सो रही। (४३१)

५२—दूसरे दिन लोरक पाटनके रावके बुलाने पर उसके पास गया और घरसे आया सन्देश बताया और अपने मनकी विकलता प्रकट की। तत्काल राजाने उसके जानेकी तैयारी कर दी और साथमें कुछ सैनिक भी कर दिये, जो उसे गोबर पहुँचा आयें। चाँदने हरदीसे न जानेके लिए लोरकको समझाने बुझानेकी चेष्टाकी पर लोरकने उसकी एक न सुनी। चाँदाको लेकर वह गोबरकी ओर चल पडा। (४३२-४३५)

५३—वे लोग जब गोबर के निकट पहुँचे और वह केवल तीस कोस रह गया तो देवहाके आसपासके लोगोंने गोबर जाकर सूचना दी कि कोई राव सेना लेकर

आ रहा है। जब तक वह यहाँ तक आये, तुम लोग तैयार हो जाओ। यह सुनते ही गोवर भरमें खलबली मच गयी। सब लोग अपनी अपनी फिक्र करने लगे। लेकिन मैंनाको ऐसा लगा कि लोरक आ रहा है। उसने अपनी सास खोलिनसे कहा कि रात बीतते बीतते लोरकका कुछ न कुछ समाचार मिलेगा। रातको उसने लोरकके आनेका स्वप्न देखा है। (४३५-४३९)

५४–सुबह लोरकने माली बुलाया और गोवर जानेको कहा। और कहा कि यह मत कहना कि लोरकने भेजा है। अगर कोई पूछे तो कहना कि अपने आप आया हूँ। तदनुसार मालीने डोलचोंमें फूल भर लिये और गोवरमें घर-घर देता फिरा। फूलोंको देखते ही मैंना रो उठी। बोली—फूल उसीको शोभा देता है जिसका पिय घर पर हो। मेरा पति तो परदेशमें विराज रहा है। मुझे फूल पान कुछ अच्छा नहीं लगता है। फिर वह मालीसे पूछने लगी कि तुम कहाँसे आये हो? इन फूलोंके बासमें तो मुझे लोरक जान पडता है। लगता है लोरकने ही तुम्हे भेजा है।

माली बोला—मैं तो परदेशी हूँ और गोवर नगर देखने चला आया। मैंने अब तक तुम्हारे जैसा विरह किसीमें नही देखा। तुम अगर दूध लेकर बागमें आओ तो लोरकका समाचार मिलेगा, वहीं उससे भेट होगी। सुबह हुई और मैंना अपनी दस सहेलियोंको साथ लेकर दूध बेचती हुई बागमें पहुँची। दही खरीदनेके लिए लोरकने उन अहीरिनोंको बुलाया और मैंनाको पहचान कर चाँदसे कहा कि जो सबसे पीछे आ रही है, उसका दूध दही लेकर उसे दस गुना दाम देना और बिदाईमें सोना चाँदी जैसा समझना देना।

तदनुसार चाँदने दूध दही लेकर दाम दिलाया और उन सब दूध वालियोंका सीप सिधोरा लेकर माँग भरवाया। सबने सिंदूर चन्दन लिया, पर मैंनाने अपना शृगार नहीं करने दिया। बोली—सिंदूर वह करे जिसका पति हो। मेरा पति तो हरदीमें सो रहा है। जब तक वह मुझे तजे हुए है, तब तक मुझे इसकी इच्छा नहीं है। ऐसी कह कर वह अपना दु ख प्रकट करने लगी।

जब मैंना जाने लगी तो लोरकने रोक लिया और छेडछाड कर उससे उसका भेद लेना चाहा। मैंना बिगड उठी और क्रुद्ध होकर घर चली गयी। (४४० ४४५)

५५–दूसरे दिन सुबहको फिर अहीरिनें लोरकके शिविरमें गयीं। चाँदने मैंनेको देखकर भीतर बुलाया और लोरककी करनी पूछने लगी। मैंनाने कहा कि बारह महीने हुए वह चाँदको लेकर भाग गया। अगर यहीं चाँद मिले तो उसका मूँड़ बाल करके नगर भरमें फिराऊँ। यह सुन चाँद अपनी बड़ाई करने लगी। मैंना झेंप गयी और लज्जित होकर चुप रही। लेकिन बातों बातोंमें बात बढ गयी और मैंना चाँद दोनों परस्पर जूझ पड़ीं। तब लोरक वहाँ आया और उसने अपनेको प्रकट किया। मैंना प्रसन्न हो उठी। लोरकने चाँदको डाँटा और दासियोंको आदेश दिया कि वे आकर मैंनाका शृगार करें। उसे देखकर लोरक चाँदको भूल गया। रातको

उसने मैनाको मनाया और विश्वास दिलाया कि मैं तुम्हें चाँदसे अधिक प्रेम करता हूँ। उसने चाँद के साथ मिलकर रहनेका उससे अनुरोध किया। (४४६ ४४८)

५६—गोवरमें यह बात फैल गयी कि मैना आगन्तुकके साथ मैत्री रखती है। खोलिनने यह बात जाकर अजयीसे कहा और गुहार लगायी। अजयी तत्काल घोड़े पर सवार होकर आया और लोरक भी लड़नेके लिए निकल पड़ा। अजयीने दौड़कर खाँड़ा चलाया। लेकिन वह बीचमें ही टूट गया। तब लोरकको उसने पहचाना और दोनों एक दूसरेके गले मिले। अजयीने लोरक्से कहा कि इस तरह छिपे क्यों हो, अपने घर चलो। तत्काल लोरक अपने घर आया और माँके पाँव पड़ा। खोलिनने दोनों बहुओं (चाँद और मैना) को बुलाया। दोनों पाँव पड़कर गले मिलीं और तीनों सुखसे रहने लगी। सारे गोवरमें प्रसन्नता छा गयी। (४४९ ४५०)

५७—लोरकने अपनी माँसे पूछा कि मैना कैसे रही, कैसे भाई रहे। तब खोलिनने बताया कि तुम्हारे पीछे बावन आया था। उसने मैनाको गालियाँ दीं। अजयीने आकर मैनाको बचाया। तुम्हारे पीछे महरने नाई भेजकर मॉंकरको कहलाया कि लोरक देश छोड़कर हरदीपाटन भाग गया है। मॉंकर अपनी सेना लेकर आया। कँवरूने अकेले उसका सामना किया, पर वह अकेला क्या करता, मारा गया। एक तो तुम्हारा दु ख था, दूसरा यह दु ख लग गया। दिन भर रोती और रात भर जागती रही हूँ। (४५१ ५५२)

(इसके आगेका अंश उपलब्ध नहीं है, जिससे कथाके अन्तके सम्बन्धमें कुछ नहीं कहा जा सकता। पर अनुमान होता है कि अपनी माँ की कष्ट कथा सुनकर लोरक अपने शत्रुओंके विनाशमें रत हुआ होगा, पश्चात् अपनी दोनों पत्नियोंके साथ सुख पूर्वक जीवन बिताकर स्वर्ग सिधारा होगा।)

कथा सम्बन्धी भ्रान्त धारणाएँ

चन्दायनकी कथाका उपर्युक्त स्वरूप सामने न रहनेके कारण दो अन्य ग्रन्थोंके आधारपर विद्वानोंने कथाके सम्बन्धमें कुछ अद्भुत कल्पनाएँ प्रस्तुत की हैं। कुछ आगे कहनेसे पहले उनका निराकरणकर देना उचित होगा।

बंगला भाषामें सति मैना उ लोर-चन्दानी नामक एक काव्य ग्रन्थ है जिसकी रचना सतरहवीं शताब्दी में दौलत काजी और अलाओल नामक कवियोंने की थी। प्रणेताओं के कथनानुसार उनका यह काव्य साधन नामक कविकी गोहारी भाषामें लिखे काव्यका बंगला रूप है। साधन कविकी मैना-सत नामक काव्यकी नागरी और फारसी लिपिमें लिखी अनेक प्रतियाँ मिलती हैं। साधन कृत मैना-सत और उपर्युक्त बंगला काव्यके उत्तरांशमें बहुत साम्य है, अत कहा जा सकता है कि बंगला काव्यका आधार मैना-सत ही रहा होगा। पर उसके पूर्वांशकी तुलनाके लिए ऐसी कोई सामग्री प्राप्त नहीं जिसे साधन कृत कहा जा सके। उसके अभावमें वासुदेव शरण अग्रवालकी धारणा हुई कि यह अंश दाऊद कृत चन्दायन पर आश्रित

होगी ।[1] अर्थात् उनकी दृष्टिमें दौलत काजीने दाउदके चन्दायन और साधनके मैना-सतको एकमें जोड़ कर अपने काव्यकी रचना की है, समूचा काव्य साधनकी रचनाका रूपान्तर नहीं है ।

इस धारणाके फलस्वरूप चन्दायनकी कथाकी कल्पना बंगला लोर-चन्दानी के आधार पर की जाती रही है । परिशिष्टमें हम सति मैना उ लोर-चन्दानीकी कथा दे रहे हैं । उसे देखने मात्रसे यह स्पष्ट हो जायेगा कि उक्त बँगला काव्य और चन्दायनके मूलमें लोरक और चाँदकी प्रेम कथा होते हुए भी दोनोंके रूप और विस्तारमें इतना अन्तर है कि बँगला काव्यको चन्दायनका रूपान्तर नहीं कहा जा सकता ।

बँगला काव्यकी कथा चन्दायनकी तुलनामें अत्यन्त संक्षिप्त है । उसमें हरदी पाटनके मार्गमें लोरक और चाँदके सामने आनेवाली विपत्तियों और कठिनाइयों की कोई चर्चा नहीं है । इस कथामें लोरक द्वारा मैनाके परित्यागमें चाँदका कोई योग नहीं है । लोरक स्वेच्छया वनमें जाकर रहने लगता है और वहाँ वह योगीके मुखसे चन्दानीकी रूप प्रशंसा सुनता है । चन्दायनमें चाँदकी रूप प्रशंसा योगी राजा रूपचन्दके सम्मुख करता है, जिसका बँगला ग्रन्थमें कोई उल्लेख नहीं है । बँगला कथामें लोरक योगीसे चन्दानीकी रूप प्रशंसा सुन कर चन्दानीके पिताके राज्यमें जाता है । वहाँ चन्दानी लोरकको देखती है और लोरक चन्दानीकी छवि दर्पणमें देखता है और दोनों एक दूसरे पर आसक्त होते हैं । तदनन्तर लोरक चन्दानीके महलमें प्रवेश करता है और उसे ले भागता है । चाँदका पति बावन लोरकसे लड़ने आता है और मारा जाता है । लोरक अपने श्वसुरके राज्यको भोगता है । लौटते समय चन्दानीको साँप काटता है और उसे एक योगी अच्छा करता है । पश्चात् दोनों सुख पूर्वक राज्य करते हैं । चौदह वर्ष पश्चात् मैना लोरकके पास ब्राह्मण भेजती है और तब लोरक लौटता है । इन घटनाओंके वर्णनका ढंग भी चन्दायनसे बहुत भिन्न है ।

कथाके इस रूपसे स्पष्ट झलकता है कि दौलत काजीके सामने लोरक-चाँदकी दाउद कथित कहानी नहीं थी । बहुत सम्भव है, जैसा कि दौलतकाजी ने कहा है, साधनने भी लोरक-चाँदकी प्रेम कहानी अपने ढंगपर लिखी हो और वह काव्य हमें पूरे रूपमें उपलब्ध न होकर मैना-सतके रूपमें अंशमात्र ही उपलब्ध हो ।

माताप्रसाद गुप्तकी धारणा है कि साधन कृत मैना-सत चन्दायनके एक प्रसंगके रूपमें कहा गया है ।[2] उनकी धारणाका भी आधार दौलतकाजीका ही बँगला काव्य है । चन्दायनकी बम्बईवाली प्रतिके साथ मैना-सतके चार पृष्ठ मिले थे, इस बातको उन्होंने अपने कथनका प्रमाण माना है । पर इस तथ्यको सिद्ध करनेके लिए बम्बई प्रतिका साक्ष्य मात्र नहीं है । मैना-सतके ये चार पृष्ठ स्पष्ट रूपसे

---

१. भारतीय साहित्य, वर्ष १, अंक १, पृष्ठ १६४ ।
२. भारतीय साहित्य, वर्ष ४, अंक २, पृ० ४९-५८ ।

बम्बईवाली प्रतिमें चन्दायनके पृष्ठोंसे अलग अन्तमें थे। किसी एक जिल्दमें दो ग्रन्थोंके खण्डित पृष्ठोंका एक साथ होना कोई नवीन बात नहीं है।

मैंना-सतकी कथा, जिसे हम परिशिष्टमें दे रहे हैं, अपने आपमें इतनी पूर्ण और इस ढंगकी है कि उसे किसी प्रकार चन्दायनमें जोड़ा नहीं जा सकता। जिस परिस्थितिमें साधनने मैंना-सतमें बारहमासा दिया है, उसी परिस्थितिमें चन्दायनमें पहलेसे एक बारहमासा मौजूद है। मैंना-सतकी मैंना अपने घरमें एकाकी है जिसके कारण वह दूतीको, विश्वास कर अपने पास रख लेती है। चन्दायनकी मैनाके पास उसकी सास खोलिन मौजूद है। उसके रहते दूतीका मैंनाको बहका सकना सम्भव नहीं है। मैंना-सत किसी भी प्रकार चन्दायनमें खप नहीं सकता। अतः यह कहना कि मैंना-सत चन्दायनके प्रसंग रूपमें रचाया गया था, गलत है।

साथ ही, इस प्रसंगमें यह बात भी ध्यान देनेकी है कि मैंना-सतके प्रत्येक कडवकमें साधनके नामकी छाप है। किसी पूर्व रचनामें समावेश करनेके लिए रची गयी सामग्रीमें कोई कवि अपना नाम नहीं देता। यह बात पदमावतके उन अंशोंको देखनेसे स्पष्ट हो जाती है जिन्हें माताप्रसाद गुप्तने प्रक्षिप्त माना है। दूसरी बात यह है कि मैंना-सतके प्रत्येक कडवकके आरम्भमें एक सोरठा है, जिसका चन्दायनमें सर्वथा अभाव है। यदि चन्दायनमें सम्मिलित करनेके लिए मैंना-सतकी रचना हुई होती तो उसमें सोरठोंका कदापि प्रयोग न होता।

अतः साधन कृत मैंना-सत और दौलत काजी कृत सति मैंना व लोर-चन्दानीके आधारपर चन्दायनकी कथा आदिके सम्बन्धमें किसी प्रकारकी कल्पना करना भ्रम उत्पन्न करना मात्र है।

कथा-स्वरूप की विशेषता

चन्दायनकी कथा, अपने किसी भी रूपमें भारतीय कथा-साहित्य—संस्कृत या अपभ्रंश—में नहीं पायी जाती। वह अपने आपमें अनूठी है।

इसका सबसे बड़ा अनोखापन इस बातमें है कि यह कथा नायक प्रधान न होकर नायिका प्रधान है। कथाका आरम्भ नायिकाके जन्मसे आरम्भ होता है और उसके जीवनकी घटनाओंको लेकर ही कथा आगे बढ़ती है। उसके सारे पात्र नायिका चाँदको केन्द्र बनाकर सामने आते हैं। लोरक, जिसे इस काव्यका नायक कहा जा सकता है, कहीं भी मुख्य पात्रकी तरह उभरा हुआ प्रतीत नहीं होता। कथामें वह हमारे सामने सहदेव रूपचन्द युद्धके समय पहली बार सहदेवके सहायक वीरके रूपमें आता है। युद्ध समाप्तिके पश्चात् यदि चाँद उसकी ओर आकृष्ट न होती, तो उसका कोई महत्व न होता। सामान्यतः नायक ही नायिकाकी प्राप्तिकी चेष्टा किया करते हैं, किन्तु इस प्रकारकी कोई भी चेष्टा लोरककी ओरसे आरम्भ नहीं होती। नायिका चाँद ही, सामान्य नायिकाओंके सामान्य स्वभावके सर्वथा प्रतिकूल, लोरकको प्राप्त करनेकी ओर सचेष्ट होती है और युक्तिपूर्वक उसको अपनी ओर आकृष्ट करनेका यत्न करती

है। लोरक चाँद द्वारा आकृष्ट किये जानेके बाद ही, उसकी ओर आकृष्ट होता है। वह चाँदके वियोगमें तड़पता अवश्य है, पर उसको प्राप्त करनेके निमित्त स्वयं कोई चेष्टा नहीं करता। चाँद ही अपनी दासी विरस्पतके माध्यमसे उसे अपने निकट बुलानेका उपक्रम करती है और उसे अपने पास बुलाती है। चाँद ही लोरकको साथ लेकर भाग चलनेको प्रेरित करती है। चाँदकी प्रेरणासे ही वह गोवर छोड़कर हरदीकी ओर प्रस्थान करता है। मार्गमें जब बावन उससे लड़ने आता है तो चाँद ही उसे उससे बचनेका उपाय बताती है। मार्गकी कठिनाइयोंमें भी चाँद ही प्रधानता लिए दिखायी पड़ती है। लोरक तो उसका सहायक मात्र लगता है। कहनेका तात्पर्य यह है लोरकका सारा कार्य यन्त्रवत् है। उसके कार्योंकी सूत्रधार चाँद है।

लोरकसे अधिक निखरा हुआ रूप मैंनाका है, उसे हम सरलतासे उप-नायिका या सहनायिका कह सकते हैं। यों तो मैंना भी लोरककी तरह ही चाँदके माध्यमसे काव्यमें उभार पाती है, पर उभरनेके पश्चात् वह अपना स्वतन्त्र अस्तित्व लेकर काव्यके उत्तरार्धपर छा जाती है। यहाँ भी पुरुष पात्रके रूपमें लोरकका किसी प्रकारका निखरा रूप सामने नहीं आता।

चन्दायनमें दूसरी उल्लेखनीय बात यह है कि इसके नायक, नायिका और उपनायिका तीनों ही विवाहित हैं। नायिका चाँदका विवाह बावनसे हुआ है, जिसका स्थान समूचे काव्यमें नगण्य है। उपनायिका मैंना मॉजरि नायक लोरककी पत्नी है। भारतीय प्रेमकथाओंमें अधिकांशतः हम नायक-नायिकाके रूपमें अविवाहित युवक-युवतियोंको ही पाते हैं। उनके प्रेमाकर्षणकी परिणति विवाहमें होती है और कथा समाप्त हो जाती है। कुछ प्रेम-कथाएँ ऐसी अवश्य हैं जिनमें नायक विवाहित होते हुए भी किसी सुन्दरीके प्रति आकृष्ट होता है और उसे प्राप्त करनेकी चेष्टा करता है। पुरुरवा-उर्वशी और दुष्यन्त शकुन्तलाकी कथाएँ इसी ढगकी हैं। पर भारतीय साहित्यमें ऐसी कोई कहानी नहीं मिलती जिसमें कोई नायिका विवाहित होकर किसी पुरुषके प्रति आकृष्ट हुई हो और उसे प्राप्त करनेकी चेष्टाकी हो। हाँ, फारसी प्रेमाख्यानों, यथा—लैला-मजनूँ, शीरीं-फरहाद आदिकी नायिकाएँ विवाहित पायी जाती हैं; किन्तु उनकी भी कोई नायिका स्वतः किसी पुरुषकी ओर आकृष्ट नहीं होती। पुरुष ही अपनी प्रेमकी तीव्रतासे उसे अपनी ओर खींचनेकी चेष्टा करता है। इन तथ्योंपर ध्यान देनेपर कथाका यह अनोखापन अपने आपमें उभर उठता है।

चन्दायनकी कथाका एक अनोखापन यह भी है कि नायिका चाँदको नायक लोरकके मिलने तक ही प्रेम-व्यथा सहन करना पड़ता है। उसके पश्चात् जब नायक लोरक उसके निकट आ जाता है तो उसे अपनी प्रेमिकाके अत्यन्त निकट रहते हुए भी वियोगका दुःसह दुःख भोगना पड़ता है। उसकी प्रेमिका बार-बार मरकर अथवा सोकर उसे दुःखी बनाती रहती है। इस कथामें विरहका वास्तविक भार तो उपनायिका मैंनाको सहना पड़ता है। वह लोरकके विरहमें दिन रात झुरती रहती है।

इस कथामें यह भी असाधारण बात देखनेको मिलती है कि सामान्य प्रेम-

कथाओंकी तरह नायिका नायकके मिलनेके पश्चात् इस कथाका अ त नहीं होता। वरन लोरक चाँदके मिलनेके पश्चात् कथाका विस्तार होता है। तदनतर उपनायिका मैंनाकी विरहव्यथासे द्रवित होकर, नायिकाकी बातोंको अनसुनी कर लोरक घर लौटता है। लौटकर भी वह सुख चैनसे नहीं बैठता। आगे भी कुछ करता है, जिसका पता ग्रथके खण्डित होनेके कारण हमें नहा लगता।

इस प्रकार चन्दायन किसी निश्चित शैली अथवा परिपाटीमें बँधी प्रेम कथा नहीं है। उसका लक्ष केवल चाँद और लोरकके रूपाकर्षणकी चरम परिणति दिखाना नहीं है। इसमें चाँद और उसके साथ साथ लोरकका सम्पूर्ण चरित्र उपस्थित किया गया है। इस दृष्टिसे इसे प्रेमाख्यान कहनेकी अपेक्षा चरित काव्य कहना अधिक सगत होगा।

यदि हमारी धारणाके अनुसार चन्दायन चरित काव्य है तो चाँद और लोरक का ऐतिहासिक अस्तित्व होना चाहिये। किसी जीवन वृत्तके कल्पना प्रसूत होनेकी सम्भावना बहुत कम होती है। काव्यके रूपमें उसमे कल्पनाके मिश्रणसे अतिरजना हो सकती है पर उससे मुख्य पात्रोंकी ऐतिहासिकतामें किसी प्रकारकी कमी नहीं आती। चाँद और लोरकके ऐतिहासिक अस्तित्वसे हमारा यह अभिप्राय यह कभी नहीं है कि उनका उल्लेख हमें ऐतिहासिक अथवा पौराणिक ग्रथोंमें मिलना ही चाहिये। हो सकता है, चाँद और लोरक ऐसे लोगोंमें हों, जिनकी कहानी इतिहासकारोंको आकृष्ट नहीं कर पायी फिर भी जन जीवनकी स्मृतियोंमें उनकी याद बनी रही।

आधारभूत लोक कथा

चन्दायनकी कथा, लोक जीवनमें प्रचलित कथाका ही साहित्यिक रूप है, इस बातमे तनिक भी स देह नहीं रह जाता, जब हम नायक लोरक, नायिका चाँद और उपनायिका मैंना माँजरिके ताने बानेके साथ बुनी गयी उन लोक कथाओंको देखते हैं जो पूर्वी उत्तर प्रदेश, बिहार, बगाल और छत्तीसगढके प्रदेशोंमें बिखरी मिलती हैं। (इन लोक कथाओंको हम परिशिष्ट रूपम सकलित कर रहे हैं।)

इन सभी कथाओं का बाह्यरूप एक-सा है, केवल यत्र तत्र आ तरिक घटनाओंके रूपमें भिन्नता है कोई घटना किसी कथामें है किसीम नहीं। उनके तुलनात्मक अध्ययनसे ऐसा जान पडता है कि इन लोक कथाओंके ये सभी तत्त्व, जो आज हमें बिखरे मिलते हैं, किसी समय एक सूत्र मे ग्रथित रहे होंगे। समयके साथ कथाके विस्तृत क्षेत्रमें फैलनेपर कहीं पुराने तत्व नष्ट हो गये और कहीं नये तत्त्व आकर जुट गये। इस दृष्टिको रखकर जब हम इन लोक कथाओंके साथ चन्दायनकी कथाका अध्ययन करते है तो हमें उसमें लोक कथाओंमे बिखरे प्राय सभी तत्त्व एक साथ मिल जाते हैं।

लोरक चाँदकी प्रेम कथा, दाऊदके समयमें काफी प्रचलित लोक कथा रही होगी, इसका अनुमान इस बातसे हो सकता है कि उसका उल्लेख मैथिल कवि

ज्योतिरीश्वर शेखराचार्यकी, जिनका समय चौदहवीं शताब्दीका पूर्वार्द्ध समझा जाता है, सुप्रसिद्ध रचना वर्णरत्नाकरमें लोरिकनाच्योंके रूपमें हुआ है।

दाऊदने अपनी कथाको लोक जीवनसे ही ग्रहण किया था, यह उनके इस कथनसे भी सिद्ध होता है कि उन्होंने उसे किसी मलिक नथनसे सुनकर काव्यका रूप दिया। यह मलिक नथन कोई सामान्य नागरिक थे अथवा कोई विशिष्ट पुरुष, यह कहा नहीं जा सकता। असकरीने उनके सम्बन्धमें अनुमान करते हुए मुनीस-उल्-कुलूब नामक ग्रन्थमें बिहार निवासी सूफी हुसेन नौशाद तौहीदके, जो चौदहवीं शताब्दीमें हुए थे, जीवन प्रसंगमें उल्लिखित मौलाना नथनका उल्लेख किया है।[१] पर यह कोरा अनुमान है। परशुराम चतुर्वेदीने अलीगढ़से प्रकाशित इसलामिक कल्चर नामक पत्रिकामें छपे हुवीबके किसी निबन्धके हवालेसे लिखा है कि चिराग-ए देहली शेख नसीरुद्दीनके एक मित्र पटना निवासी नाथू नामक कोई सज्जन थे जिन्होंने उन्हें एक बार उपवासके अवसरपर दो रोटियाँ दी थीं। अतः उनका अनुमान है कि नाथू दाऊदके समकालिक हो सकते हैं।[२] पर इस अनुमानमें भी कोई तथ्य नहीं है। नसीरुद्दीन दाऊदके गुरु जैनुद्दीनके गुरु थे, इस कारण उनके समकालिक नाथू दाऊदके समकालिक कदापि नहीं हो सकते।

अभिप्राय और रूढ़ियाँ

चन्दायन यद्यपि लोक कथापर आश्रित प्रेम मिश्रित चरित काव्य है, तथापि उसमें कथा साहित्यमें पाये जाने वाले अभिप्रायों और रूढ़ियोंकी कमी नहीं है। उनका सांगोपांग अध्ययन तो तभी किया जा सकेगा जब काव्यका पूर्ण रूप हमारे सामने होगा और कथा अपनेमें पूर्ण होगी। फिर भी कुछ अभिप्रायों और रूढ़ियों को तो हम स्पष्ट देख ही सकते हैं —

(१) **क्लीव पति छोड़कर परपुरुषके साथ भाग जाना**—अपभ्रंश काव्य रणसेहरी कहामें रत्नावली नामक रानीकी कथा है, जिसका पति रत्नशेखर काम भोगसे विरत रहता था, फलतः रानी कुपित होकर एक दासके साथ भाग गयी। इतिहासमें भी इसी तरहकी एक घटना गुप्तवंशमें प्राप्त है जिसकी चर्चा विशाखदत्तने अपने नाटक देवीचन्द्रगुप्तम् में की है। रामगुप्तकी क्लीवताके कारण उसकी पत्नी ध्रुवस्वामिनी चन्द्रगुप्तपर आसक्त हुई और चन्द्रगुप्तने रामगुप्तको मारकर ध्रुवस्वामिनीसे विवाहकर लिया। प्रस्तुत काव्यमें चाँद पतिकी काम भोगके प्रति उदासीनताके कारण ही मायके आकर लोरकके प्रति आसक्त होती है।

(२) **नारी द्वारा पुरुषको भगा ले जाना**—नारी द्वारा किसी पुरुषको भगा ले जानेकी घटना असाधारण है, फिर भी यह भारतीय कलाका एक जाना पहचाना अभिप्राय है। मथुरा संग्रहालयमें कुषाणकालीन एक फलक है जिसपर एक स्त्री पुरुषको

१ करेण्ट स्टडीज (पटना कालेज), १९५५, पृ० १२, पाद टिप्पणी १०।

२. हिन्दीके सूफी प्रेमाख्यान, पृ० ३६।

अपहृत कर ले जाती हुई अन्ति की गयी है। वर्तमान काव्यमें हम चाँदको भाग चलनेके लिए लोरकको प्रेरित करते पाते हैं।

(३) रूप-गुण-जन्य आकर्षण—भारतीय प्रेमाख्यानोंमें पूर्वानुराग एक मुख्य अभिप्राय है। कथासरित्सागरमें नरवाहनदत्त तपसीके मुखसे कर्पूरसम्भव देशकी राजकुमारी कर्पूरिकाका रूप गुण सुनकर उसकी ओर आकृष्ट होता है। इसी प्रकार प्रतिष्ठानका राजा पृथ्वीराज बौद्ध भिक्षुके मुखसे मुक्तिपुर द्वीपकी रूपलता नामक कन्या का सौन्दर्य सुनकर उसपर मुग्ध हो जाता है। विक्रमाकदेव चरितमें विक्रम चन्द्रलेखाकी प्रशंसा सुन विरह व्यथासे व्याकुल हो उठता है। ठीक उसी प्रकार इस काव्यमें बाजिरके मुखसे चाँदकी रूप प्रशंसा सुनकर रूपचन्द व्याकुल हो उठता है और उसे प्राप्त करनेकी चेष्टा करता है।

(४) अकेले पाकर नायिकाका अपहरण—नायिकाको अकेली छोड़कर किसी कार्यसे नायकके चले जानेपर किसी अन्य व्यक्ति द्वारा उसका अपहरण अनेक भारतीय कथाओंमें पाया जाता है। रामायणमें रामके मृगके पीछे जानेपर रावण द्वारा सीताका अपहरण एक प्रसिद्ध घटना है। प्रस्तुत काव्यमें लोरकके बाजार चले जानेपर मन्दिरमें अकेला पाकर टूँटा द्वारा सम्मोहनकर चन्दाका अपहरण ऐसी ही घटना है।

(५) जुएमें पत्नीको दाँवपर लगा देना—जुएमें पत्नीको दाँवपर लगा देना भी भारतीय साहित्यका एक जाना पहिचाना अभिप्राय है। पाण्डवों द्वारा द्रौपदीको दाँवपर हार जानेकी कथा इसका एक प्रसिद्ध उदाहरण है। चन्दायनके लोक कथात्मक रूपमें लोरक द्वारा चन्दाको जुएमें हारजानेका स्पष्ट उल्लेख है। सम्भवत दाऊदने भी इसका उल्लेख अपने काव्यमें किया है पर तत्सम्बन्धी अंश अनुपलब्ध होनेसे निश्चय पूर्वक कुछ नहीं कहा जा सकता।

(६) पत्नीके सतीत्वकी परीक्षा—पतिसे विलग रही पत्नीके सतीत्वकी परीक्षा रामायणकी एक प्रमुख घटना है। इस काव्यमें भी लोरक हरदीपाटनसे लौटकर मैंनाके सतीत्वके परखनेकी चेष्टा करता है।

(७) प्रवासी पतिके विरहमें पत्नीका झूरना—प्रवासी पतिके विरहमें दग्ध पत्नियोंकी कथायें अपभ्रंश साहित्यमें प्रचुर मात्रामें मिलती हैं। यथा—नेमिनाथ फागु, सन्देशरासक, बीसलदेव रास। मैंनाका लोरकके वियोगमें बिसूरना उसी कोटिका अभिप्राय है।

वर्णनात्मकता

मौलाना दाऊदने चाँद और लोरकके जीवनमें घटित घटनाओंका जिस रूपमें वर्णन किया है, उससे लगता है कि उनका उद्देश्य चाँद और लोरकके चरितके माध्यमसे अपने समयके सामन्तवादी जीवनका यथार्थ चित्रण करना ही रहा है। गोवरसे हरदीपाटन तक विस्तृत पार्श्वमें लोक और जीवनका जो चित्र उन्होंने उपस्थित किया, उसमें कहीं भी आदर्शकी झलक दिखाई नहीं पड़ती।

यद्यपि कविने उन्हीं घटनाओंकी चर्चाकी है जिनका सीधा सम्बन्ध नायिका-नायकके जीवनसे है, तथापि उसमें युग-जीवनकी विविधता और विस्तार दोनों ही देखा जा सकता है। घटनाएँ वैयक्तिक होते हुए भी, सामाजिक और धार्मिक क्षेत्रोंसे सम्बन्ध बनाये हुए हैं। कविने जिस सूक्ष्मताके साथ पारिवारिक जीवन—जन्म, विवाह, काम-केलि, खान-पान, कलह विवाद, भूषण वसन, साज-सज्जाका परिचय दिया है, उसी सूक्ष्मताके साथ उसने नगर, बाजार हाट, मन्दिर-देवालय, भवन-आवास, रीति-रिवाज, ज्योतिष शकुन, राशि-नक्षत्र, युद्ध, यात्रा, जय पराजयकी भी चर्चाकी है। सर्वत्र उन्होंने अपनी पैनी दृष्टि और सजग बुद्धिका परिचय दिया है। कहना न होगा कि दाऊदने जीवनको अत्यन्त निकटसे देखा था और मानव मनोविज्ञानका भी सूक्ष्म अध्ययन किया था। उनका ज्ञान कोरा पुस्तकीय न था। उदाहरणके लिए चाँद और सासकी नोंक-झोंक, चाँद मैनाके वाक्युद्ध और हाथापायीका जैसा चित्रण उन्होंने किया है, हूबहू वैसा ही दृश्य पूर्वी उत्तर प्रदेशके किसी गाँवमें आजसे तीस-पैंतीस वर्ष पूर्व नित्य सरलतासे देखा जा सकता था।

वस्तु वर्णनकी तरह ही दाऊद ने मानसिक दशाओंका चित्रण भी मार्मिक ढगसे किया है। प्रेम, वियोग, मातृ ममता, यात्रा कष्ट, विपत्ति, शत्रुता, मित्रता, वीरता आदिके चित्र स्थान स्थान पर उभरे रूपमें सामने आते हैं। किन्तु कविके काव्य-प्रतिभाके दर्शन सबसे अधिक चाँदके रूप-सौन्दर्य और लोरकके विरहकी मनोदशाओं-के चित्रणमें पाते है। वस्तुतः दाऊदने प्रेम और विरहको ही सर्वाधिक और व्यापक रूपसे चित्रित किया है। इनके चित्रणमें अनुभूतिकी गहराई, सच्चाई, तीव्रता, सभी कुछ निहित है।

कहनेका यह तात्पर्य कभी नहीं है कि दाऊदने जो कुछ कहा है वह सर्वथा मौलिक है। चाँदके रूपका सागोपाग अर्थात् शिख-नख वर्णन, बारहमासाके रूपमें ऋतु-चर्चा आदि शास्त्रीय एव लोक-परम्परा पर ही आश्रित हैं। उनकी उपमाएँ भी परम्परागत ही अधिक है।

कविका ध्यान प्रकृतिकी ओर भी गया है और अपने दोनों ही बारहमासाओंमें उद्दीपनके रूपमें उसने प्राकृतिक वस्तुओंका उल्लेख किया है। गोवर नगरके वर्णनमें वृक्षों और पुष्पोंकी भी चर्चा की है। पर उन्हें हम सूची मात्र ही कह सकते हैं। हाँ, अपने अलंकार विधानमें जहाँ उन्होंने प्रकृतिका उपयोग किया है, वहाँ हमें उनके प्रकृति निरीक्षणकी सूक्ष्मताका परिचय मिलता है। यथा—

माँग चीर सर सेंदुर पूरा। रेंग चला जनु कानकेजूरा ॥ ७५।२
लाँव केस मुर बाँध धराये। जानु सेंदुरी नाग सुहाये ॥ ७६।२
अम्ब फार जनु मोतिहि भरे। ते लै भौंह के तर धरे ॥ ७९।२
मुख क सोहाग भयेउ तिल संगू। पदम पुहुप सिर बैठ भुजंगू ॥ ८५।२
परें लंक बिसेरै धना। और लंक पातर कर गुना ॥ ९०।४

चन्दायनमें एक बात, जो विशिष्ट रूपमें देखनेमें आती है, वह यह कि दाऊद्-ने उसे आध्यात्मिकता और दार्शनिकताके बोझसे सर्वथा मुक्त रखा है। वे कहीं भी, परवर्ती प्रेमाख्यानकारोंकी तरह धार्मिक प्रवचनके रूपमें आत्मा-परमात्मा, साधक और साधनाकी बात करते दिखाई नहीं पड़ते। उन्होंने जो कुछ कहा है, वह लौकिक धरातल पर बैठ कर ही कहा है। वे अपने कथनमें इतने सरल है कि उन्हें किसी बात-की व्याख्या करने अथवा किसी प्रकारका अपना मत प्रकट करनेकी आवश्यकता बहुत ही कम हुई है। समूचे काव्यमें हम ऐसे केवल तीन ही स्थल ढूँढ पाये। हो सकता है एक-आध स्थल और भी हों। इन स्थलों पर भी उन्होंने अपनी बात दो चार पंक्तियोंमें कहकर ही समाप्त कर दी है; और उन्हें भी वे कविके रूपमें स्वयं अपनी ओरसे नहीं कहते। उन्हें अपने पात्रोंके द्वारा प्रसग रूपमें ही सामने रखा है। वे पंक्तियाँ हैं—

१. सतहिं तरे सायर महि नावा। बिनु सत बूड़े थाह न पावा॥
जिंहि सत होइ सो लागै तीरा। सत कइ हुनैं बूड मँझ नीरा॥
सत गुन खींचि तीर लइ लावा। सत छाड़े गुन तोरि बहावा॥
सत सँभार तो पावइ थाहा। बिनु सत थाह होइ अवगाहा॥ २१७

२. हिरद बोल भार सह लीजा। हिरदैं कहँ जीउ गरू न कीजा॥
हिरद होइ बुध केरि उतानौं। हिरद नसैनी कहा सयानौं॥
हिरद सो भूँख न जाय अदाथी। पाउ न डोल जिंह चित गरुआई॥ २३९

३. पिरम झार जिंह हिरदैं लागी। नींद न जान बितत निसि जागी॥
सात सरग जो बरसहिं आई। पिरम आग कैसें न बुझाई॥ ३५३

दाऊद् अपने सम्पूर्ण काव्यमें अत्यन्त संयत रहे हैं और किसी बातको बढ़ा-चढ़ा कर कहनेकी चेष्टा नहीं की है। कहनेका तात्पर्य यह नहीं कि उन्होंने अत्युक्ति की ही नहीं है। अत्युक्ति कथन तो हिन्दी कवियोंमें स्वभाव-जन्य है और दाऊद् उसके अपवाद नहीं है। यत्र तत्र अत्युक्ति बिखरी मिलती हैं, पर एक स्थलको छोड़कर अन्यत्र उनकी अत्युक्तियाँ ऐसी हैं जो अस्वाभाविक नहीं लगतीं। जिस स्थलकी ओर हमारा संकेत है उसमें अतिरञ्जना इतनी अधिक है कि वह कृत्रिमताकी सीमाका अतिक्रमण करता जान पड़ता है। वह स्थल है मैंनाके विरह वेदनाका सन्देश ले जाने-वाले सिरजनकी यात्रा मार्गका। कवि कहता है—

मिरग जो पन्थ लाँघ कर जाहिं। धूम बरन होई जाँय पराहिं॥
जाँवत पंखि ऊरध उड गये। किसन बरन कोइला जर भये॥
चालइ सिरजन होइ सोतारा। करिया दहै नाव गुनधारा॥
सायर दाह मँछ दह दहे। दहे कँवला जलहर अहे॥
भस झार बिरह कै भयी। धरती दाहि गगन लइ गयी॥

सरग चँदरमा मेला, और भूम पंख भयि चार।
सिरजन बनिज तुम्हारे, ऊबरे बूड़ न पार॥११८

सूफी तत्त्वोंका अभाव

मौलाना दाऊदका प्रत्यक्ष सम्बन्ध सूफी सम्प्रदायके साधकोंसे था। सूफी साधक प्रेमके माध्यमसे परमात्माका नैकट्य प्राप्त करते हैं। उनका प्रेम निराकार ईश्वरके प्रति होता है, इस कारण उनके लिए उसका वर्णन प्रतीक द्वारा ही सम्भव हो पाता है। अतः वे अपने इस प्रेमका वर्णन लौकिक प्रेम-प्रदर्शनके प्रतीकों द्वारा किया करते हैं। वे अपने इस आदर्श प्रेमके वर्णनमें ईश्वरको नारी रूपमें स्वीकार करते हैं और लौकिक प्रेमके वर्णनमें वे अलौकिक प्रेमकी झलक देखते हैं। दूसरे शब्दोंमें यदि हम कहना चाहें तो कह सकते हैं कि सूफियों द्वारा रचित प्रेमाख्यानक काव्य अन्योक्ति अथवा रूपक (अलेगरी) हुआ करते हैं। वस्तुतः फारसीके अनेक प्रेम काव्य हजल अर्थात् रूपक कहे और माने जाते ही हैं। लैला-मजनू आदि प्रेमाख्यानोंकी गणना इसी ढगके द्वयर्थक कथाओंमें होती है। मुसलमान कवियों द्वारा रचित हिन्दी के अनेक प्रेमाख्यान भी इसी दृष्टिसे सूफियोंकी प्रेम-मूलक साधना पद्धतिपर आधारित माने जाते हैं। अतः चन्दायनके सम्बन्धमें भी सहज अनुमान लगाया जा सकता है कि वह भी लौकिक प्रेमके आवरणमें अलौकिक प्रेमको व्यक्त करनेवाला हजल अर्थात् रूपक ही होगा। इस अनुमानको काव्यके नायक नायिकाके नामसे भी बल मिल सकता है। पदमावतमें जायसीने रत्नसेनको सूरज और पद्मावतीको चाँद कहा है और दोनोंके प्रेम, विरह और मिलनकी बात कही है। चन्दायनमें दाऊदने नायक-नायिकाको सीधे-सीधे सूरज[1] और चाँदका नाम दिया है। लोरकका उल्लेख स्थान-स्थान पर कविने सूरज कह कर किया है। यथा—

> सुरज सनेट चाँद कुँभलानी। १४७।३
> चाँद बिरसपत के पाँ परी। काल्ह सुरज देखेंउ एक घरी॥ १४९।४
> चाँद सुनित मैं देखी, सुरज मन्दिर जिंह जाउँ। १४९।६
> सुरज घरहिं बिरसपत आयी। १२७।३

प्रेमी प्रेमिकाके प्रसगमें सूरज चाँदकी सज्ञामें विद्वानोंने आध्यात्मिक प्रतीक ढूँढ निकाला है। सूर्य-चन्द्रके प्रतीकात्मक रूपकी व्याख्या करते हुए वासुदेवशरण अग्रवालने लिखा है कि प्रेमकी साधना द्वारा दो पृथक तत्त्व एक-एक दूसरेसे मिलकर अद्वय स्थिति प्राप्त करते हैं। इसी सम्मिलनको प्राचीन सिद्धोंकी परिभाषामें युगनद्ध भाव, समरस या महासुख कहा गया है। प्रेमी-प्रेमिका-की नयी परिभाषामें प्राचीन शिव-शक्ति या सूर्य-चन्द्रके वर्णनोंको नया रूप प्राप्त हुआ। पुरुष सूर्य स्त्री चन्द्रमा है। दोनों अद्वय तत्त्वके दो रूप हैं। सिद्ध

१. लोरक शब्द लोरानका अपभ्रष्ट रूप (लोरान>लोलारक>लोरारक>लोरक) है।

आचार्योंने सूर्य-चन्द्र या सोना-रूपा इन परिभाषाओंका बहुधा उल्लेख किया है। बौद्ध आचार्य विनयश्रीके एक गीतमें आया है—

चन्दा आदिज समरस जोये

अर्थात् चन्द्रमा और आदित्यका समरस देखना ही सिद्धि है। चन्द्रमा और सूर्य जहाँ अपना-अपना प्रकाश एकमें मिला देते हैं, अर्थात् समरस बनकर एक हो जाते हैं, वहीं उज्ज्वल प्रकाश हो जाते है, चन्द्र-सूर्यके प्रतीकमें सृष्टि और ससार, स्त्री और पुरुष, सोममयी ऊमा और कालाग्नि रुद्र, इडा और पिंगला आदिके प्राचीन प्रतीक पुनः प्रकट हो उठे हैं।[१]

सूरज और चाँदकी इस आध्यात्मिक व्याख्याके अनुसार लोरक और चाँद किस सीमा तक आत्मा और परमात्मा के प्रतीक है और उनके प्रेममें अलौकिकता कहाँतक देखी जा सकती है, इसका उहापोह करनेके पश्चात् ही चन्दायनके हजल (रूपक) होनेका निश्चय किया जा सकता है।

लौकिक कथाके रूपमें चन्दायनमें प्रेमी प्रेमिकाके दो युग्म है—(१) लोरक और चाँद, (२) लोरक और मैना। दोनो ही युग्मोंकी प्रेम व्यथाकी अभिव्यक्ति दाऊदने चरम रूपमें की है। अत दोनोंमें ही अलौकिक प्रेम देखनेकी चेष्टा की जा सकती है और दोनोंको ही परमात्मा और आत्माका प्रतीक कहा जा सकता है। पर सूफी दर्शनकी दृष्टिसे विश्लेषण करनेपर दोनो युग्मोंमेंसे किसी युग्ममें आत्मा-परमात्माके अलौकिक प्रेमका रूप नहीं दिखाई पडता।

सर्वप्रथम चाँदका परकीयत्व ही उसे परमात्माका प्रतीक माननेमें बाधक है। यदि उसकी उपेक्षा कर दी जाय तो भी चाँद और लोरकका जो प्रेम स्वरूप काव्यमें प्रकट किया गया है उससे सूफी साधकके अलौकिक प्रेमका किसी प्रकार सामजस्य नहीं होता। परमात्मा रूपी नारी (चाँद) के प्रति साधक रूपी नर (लोरक) के प्रेमकी जो तीव्रता होनी चाहिये, उसका काव्यमें सर्वथा अभाव है। काव्यके लौकिक स्वरूपको अलौकिकताके चश्मसे देखने पर लगेगा कि नारी रूपी परमात्मा ही नररूपी आत्माके पीछे पागल हो रहा है। चाँदा ही लोरकके प्रति आकृष्ट होती है, वही उसके प्राप्त करनेके लिये सचेष्ट होती है। लोरक तो स्वत निष्क्रिय यन्त्र-सा बना रहता है विरस्वत उससे जो कुछ कहती है चुपचाप करता जाता है।

सूफी साधनाके अनुसार आत्मा-परमात्माके मिलनेके मार्गमें नाना प्रकारकी बाधाएँ आती है। यहाँ लोरक और चाँदके मिलनके पश्चात् उनके मार्गमें बाधाएँ आती हैं और लोरक अपनी प्रेमिकाके निकट होकर भी दूरीका अनुभव करता है और उसके लिए बिसुरता है। इस प्रकार आत्माके परमात्मा तक पहुँच कर फना होने या बन्दकी स्थिति प्राप्त करने जैसी कल्पना लोरक और चाँदके इस रूपमें दिखाई नहीं देती।

---

१ पदमावत, सजीवनी व्याख्या, प्रथम सस्करण, प्राक्कथन, पृ० ६-७।

लोरक चाँदका हरदीपाटनमें सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करना आत्मा और परमात्माके एककार हो जानेकी चरम परिणतिका रूपक कहा जा सकता है। पर उस स्थितिमें पहुँच कर भी लोरक चाँदमें अपनेको आत्मसात नहीं कर देता। मैना और परिवारके अन्य लोगोंके लिए उसकी व्याकुलता बनी रहती है। फनाके पश्चात् ऐसी स्थिति सूफी अध्यात्मवादमें कल्पनातीत है।

अतः सूरज और चाँद नाम होते हुए भी काव्यके नायक नायिकामें आत्मा-परमात्माका सूफियाना रूप नहीं झलकता।

लोरक मैना वाले युग्मके प्रेम-भावमें भारतीय नारीकी पातिव्रत्य भावना निहित है। पति रूपमें लोरक उसे छोड़ कर भाग जाता है, मैना उसके लिए विसूरती रहती है। यहाँ भी रूपककी दृष्टिसे आत्मा (नर) का परमात्मा (नारी) के प्रति कोई आकर्षक नहीं है, जो सूफी साधनाका मूल तत्व है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि दाऊदके सम्मुख काव्य रचनाके समय कोई सूफी दर्शन नहीं था, लोकप्रचलित कथाको काव्य रूप में उपस्थित करना ही अभीष्ट था।

लोक-प्रियता

सूफी साधनाका रूपक न होनेपर भी चन्दायनने सूफी साधकोंको अपनी ओर आकृष्ट किया था। दिल्लीके शेख बदरुद्दीन वायज रब्बानी अपने धार्मिक प्रवचनोंमें इस काव्यका पाठ किया करते थे। उनका मत था कि इसमें प्रेम और भक्तिकी जिज्ञासाकी पूर्ति है और धार्मिक तत्व निहित हैं। लगता है प्रेम और विरहकी तीव्रतासे प्रभावित होकर परवर्ती सूफियोंने खींचतानकर इस काव्यमें अपनी भावनाओंको किसी प्रकार आरोपितकर लिया था।

सामान्य जनतामें भी यह काव्य काफी लोकप्रिय था, यह बात तो अब्दुर्कादिर बदायूनीने स्पष्ट शब्दोंमें लिखा ही है। इस ग्रन्थकी अधिकांश उपलब्ध प्रतियोंका सचित्र होना भी, इस बातका समर्थन करता है। चित्रकारों और उनके संरक्षकोंको इस काव्यमें अत्यधिक रस मिलता रहा होगा तभी तो उन्होंने एक एक कडवकको चित्रित करनेका श्रम किया और अपना पैसा बहाया।

विद्वानोंमें भी इस ग्रन्थका मान था। हजरत रुक्नुद्दीन ने, जो अकबरकालीन सदर उद्-सदर (प्रधान न्यायाधीश) शेख अब्दुर्नबीके पिता थे, लताइफे कुद्दूसिया नामक एक ग्रन्थ लिखा है। उसमें उन्होंने चन्दायनकी प्रशंसाकी है और लिखा है कि उनके पिता हजरत अब्दुर्कुद्दूस गंगोहीने उसका फारसी अनुवाद किया था किन्तु दुर्भाग्य वश वह दिल्ली सुल्तान बहलोल लोदी और जौनपुर सुल्तान हुसेनशाह शर्कीके बीच युद्धके समय नष्ट हो गया। उन्होंने अपनी स्मृतिसे ६८ वें कडवककी तीन पंक्तियाँ और उनका अपने पिता द्वारा किया गया फारसी अनुवाद भी अपने ग्रन्थमें उद्धृत किया है।[१]

१. लताइफे कुद्दूसिया, मतबा ए मुजतबाई (दिल्ली) में मुद्रित संस्करण, पृष्ठ ९९-१००।

परवर्ती साहित्यपर प्रभाव

हिन्दीके परवर्ती मुसलमान कवियोंने चन्दायनको अपनी रचनाओंमें निमित्त आदर्श रूपमें स्वीकार किया था, यह तथ्य उनकी रचनाओंको देखने मात्रसे ज्ञात होता है। उन्होंने छन्द योजना की प्रेरणा चन्दायनसे ली। कुतबनकी मिरगावति और मंझनके मधुमालतिमें पाँच यमक और एक घत्तावाला कड़वक मिलता है।

चन्दायनकी तरह ही उनके काव्यके आरम्भमें ईश्वर, पैगम्बर, चार यार, गुरु, शाहेवक्त आदिकी प्रशंसा और उल्लेख पाया जाता है। तदन्तर सभी काव्य अपना आरम्भ चन्दायनकी तरह ही नगर वर्णनसे करते हैं और तब कथा आगे बढ़ती है।

सभी कथाओंमें हम पाते हैं कि नायक अथवा नायिकाके जन्मके पश्चात् ज्योतिषी आते हैं और उनके भविष्यकी घोषणा करते हैं। लोरकको तरह ही सभी काव्योंके नायक योगीका रूप धारण करते हैं। पदमावतमें रतनसेन पद्मावतीके लिए, मधुमालतिमें मनोहर मधुमालतीके लिए, चित्रावलीमें सुजान चित्रावलीके लिए योगी बनकर निकलते हैं। मिरगावतिका नायक भी योगी होता है। सभी कवि दाऊदकी तरह ही योगी वेश भूषाका चित्रण करते हैं।

जिस तरह दाऊदने चाँदके रूप सौन्दर्यको महत्व देनेके लिए उसके शिख-नखका वर्णन किया है, उसी तरह नायिकाओंका रूप वर्णन प्राय अन्य सभी कवियों-ने किया है। जायसी, मंझन, उसमान सभीने केश, अलक, शीश, ललाट, भौं, नयन, कपोल, नासिका, अधर, दाँत, रसना, कान, ग्रीव, कलाई, कुच, कटि, नितम्ब, जंघ, चरण आदिका विशद वर्णन किया है।

जिस तरह दाऊदने चाँदको लेकर हरदीपाटन पहुँचनेतक लोरकके मार्गमें अनेक कठिनाइयोंका उल्लेख किया है, उसी प्रकार अन्य सभी कवि अपनी प्रेमिकाकी प्राप्तिके पूर्व नायकोंको अनेक प्रकारकी बाधाओंका सामना करते हुए दिखाते हैं।

चाँदके रूपपर आसक्त होकर लोरक जिस प्रकार घर आकर पड़ रहता है और कुटुम्बके लोग देखने आते हैं, वैद्य आदि बुलाये जाते हैं, उसी प्रकार अन्य काव्योंके प्रेम-रुग्ण नायक अथवा नायिकाको देखनेके लिए लोग एकत्र होते और प्रेम रोग होनेका निदान करते हैं। पदमावत, मधुमालति, चित्रावली सभीमें यह प्रसंग प्राप्त है।

चाँदकी काम-वेदना और मैनाकी विरह वेदनाकी तीव्रता व्यक्त करनेके लिए दाऊदने बारहमासाका सहारा लिया है। उसी तरह अन्य कवियोंने भी बारहमासाको अपनाया है। मिरगावति, पदमावत, चित्रावली आदि सभीमें यह पाया जाता है। जिस तरह अपनी विरह व्यथा मैंनाने बनजारा सिरजनसे कहा है उसी तरह मिरगावतिमें रूपमणि (रुक्मिनि)ने अपनी व्यथाका सन्देश बनजारोंकी टोलीको दिया है।

इनके अतिरिक्त भी चन्दायनमें प्रस्तुत कुछ अन्य आदर्श ऐसे हैं, जो विविध प्रेमाख्यानक काव्योंमें देखे जा सकते हैं।

चन्दायनसे सबसे अधिक प्रभावित पद्मावत है। पद्मावतकी कथाका उत्तरार्ध, जिसे रामचन्द्र शुक्ल एवं कुछ विद्वान् ऐतिहासिक समझते रहे हैं, वस्तुत चन्दायनकी कथाका ही पूर्वार्ध है, नामोंको बदल कर जायसीने उसे अविकल रूपसे आत्मसात कर लिया है।

चन्दायनमें चाँदको झरोखेपर खड़ी देखकर बाजिर मूर्च्छित होता है और वह जाकर रूपचन्दसे उसके रूप सौंदर्यकी प्रशंसा करता है। उसे सुनकर रूपचन्द गोवरपर आक्रमण करता है। ठीक यही कथा पद्मावतकी भी है। इसमें बाजिर, चाँद और रूपचन्दके स्थानपर क्रमश राघव चेतन, पद्मावती और अलाउद्दीनका नाम दिया गया है। जिस ढगसे दाऊदने चाँदका रूप वर्णन किया है ठीक उसी ढगसे जायसीने पद्मावतीका किया है।

आगे जिस प्रकार सहदेव महर, भोजका आयोजन करते हैं और उसका जिस विस्तारके साथ दाऊदने वर्णन किया है, ठीक उसी प्रकार हम रतनसेनको भी पद्मावतमे भोजका आयोजन करते पाते हैं और उसी विस्तारके साथ जायसीने उसका वर्णन किया है।

चाँदके रूप दर्शनके बाद लोरक बीमार बनकर खाटपर पड रहता है, ठीक उसी दशामें हम पद्मावतमें पद्मावतीके रूप श्रवणके बाद रतनसेनको पाते हैं। चाँदकी प्राप्तिके लिए लोरक योगी बनता है उसी तरह पद्मावतीकी प्राप्तिके लिये रतन सेन भी योगीका रूप धारण करता है।

चाँदका लोरककी प्राप्तिके निमित्त और पद्मावतीका रतनसेनके समागमकी प्राप्तिके लिए देव दर्शनको जाना, एक-सी घटनाएँ हैं।

चन्दायन और पद्मावतकी कथाओंमे इसी तरहकी और बहुत सी कथानक सम्बन्धी समानताएँ है। ये अद्भुत समानताएँ यह सोचने और कहनेको विवश करती हैं कि जायसी चन्दायनसे पूर्णत परिचित थे। वे परिचित ही नहीं थे, उन्होंने अपनी काव्य रचनामे उसका मुक्त रूपसे उपयोग भी किया है।

इस धारणाको इस बातसे और भी बल मिलता है कि पदे पदे पद्मावतके वर्णनोंमे चन्दायनके साथ अत्यधिक भाव-साम्य है। उसके कुछ नमूने इन पक्तियोंमें देखे जा सकते हैं .

चन्दायन	पद्मावत
सिरजसि छाँह सीउ औ धूपा। १।५	कीन्हेसि धूप सीउ और छाहाँ। १।६
पुरुख एक सिरजसि उजियारा।	कीन्हेसि पुरुष एक निरमरा।
नाउँ मुहम्मद जगत पियारा॥ ६।१	नाउँ मुहम्मद पूनिउँ करा॥ ११।१
गउव सिंघ एक पथहिं रेंगावै।	गउव सिंह रेंगहि एक बाटहि।
एक घाट दुहुँ पानि पियावै॥१२।४	दुअउ पानि पियहिं एक घाटा॥ १५।५
एक बाट गयी हरदी,	एक बाट गौ सिंघल,
दोसर गयी महोब। ४११।६	दोसर एक समीप॥ १३७।८

अगहन रैन बाढ़ दिन खीना । ४६६।१	अगहन देवस घटा निसि बाढ़ी ।
आगे परे नीर खीर पावइ ।	अगलहि काहिं पानि खर बाँटा ।
पाछे रहइ सो धूर पकावइ ॥ १००।३	पछिलेहि काहिं न काँदहु आँटा ॥ ११।७
फूले काँस हाँस सिर आये ।	सरवर सँवरि हंस चलि आये ।
सारस कुरलहिं खिडरिज आये । ४४४।२	सारस कुररहिं खजन देखाये ॥ ३४७।६

यही नहीं, अनेक स्थानों पर तो पद्मावतमें अविकल रूपसे चन्दायनकी ही शब्दावली देखनेमें आती है। अकस्मात् सामने आये ऐसे तीन चार उदाहरण हम यहाँ दे रहे हैं :

चन्दायन	पद्मावत
चकवा चकयी केरि कराहैं । २२।१	चकई चकवा केलि कराही । ३३।५
चाँद धौरहर ऊपर गयी । १४५।१	पदुमति धौराहर चढ़ी । २७८।१
पंडित वैद सयान बुलाये । १६४।३	ओझा वैद सयान बोलाये । १२०।२
तिलक दुआदस मस्तक कादा । ४२०।२	तिलक दुआदस मस्तक दीन्हे । ४०९।३

ध्यानसे देखनेपर इस तरहकी पंक्तियाँ बड़ी मात्रामें पायी जा सकती हैं।

इन सबको मात्र आकस्मिक, संस्कारजन्य अथवा किसी अविच्छिन्न विचार परम्पराका परिणाम कहना, किसीके लिए भी कठिन ही नहीं असम्भव होगा।
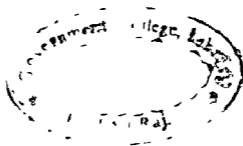
चन्दायन

(टिप्पणी सहित मूल पाठ)

सम्पादन विधि

● प्रस्तुत सम्पादन कार्यमें प्रत्येक कडवकको अङ्कबद्ध कर पाठ क्रम निर्धारित किया गया है। जहाँ कहीं किसी कडवकका अभाव जान पड़ा, उसका अङ्क छोड़ दिया गया। जिन कडवकोंको पूर्वापरके अभावमें क्रमबद्ध करना सम्भव न हो सका, उन्हें सम्भावित स्थानपर बिना किसी क्रमसंख्याके रख दिया गया है।

● प्रत्येक कडवक संख्याके नीचे उस प्रति अथवा प्रतियोंका नाम और पृष्ठ दिया गया है जिसमें वह कडवक उपलब्ध है। जिस प्रतिका पाठ ग्रहण किया गया है, उस प्रतिका नाम पहले अन्य प्रतियों का बादम रखा गया है।

● तदनन्तर अनुवाद सहित कडवकका फारसी शीर्षक दिया गया है। शीर्षक भी उसी प्रतिसे दिया गया है, जिसका पाठ ग्रहण किया गया है। अन्य प्रतियों के शीर्षक पाठान्तरके अन्तर्गत दिये गये हैं। यदि शीर्षक कडवकके विषयसे भिन्न अथवा भ्रमात्मक है, तो उसका संकेत टिप्पणीके अन्तर्गत कर दिया गया है।

● काव्य पाठ किसी एक प्रतिसे लिया गया है। जिस प्रतिसे पाठ लिया गया है, उसका उल्लेख कडवकके ऊपर पहले किया गया है। अन्य प्रतियोंके पाठान्तर नीचे दिये गये हैं।

● प्रतियोंके लिपि दोषको ध्यानमें रखते हुए विवेकके सहारे पाठ सम्पादन किया गया है।

● पाठ सम्पादन करते समय मात्राओंके सम्बन्धमें निम्नलिखित सिद्धान्त ग्रहण किये गये हैं—

(क) ई, ए और ऐ की मात्राएँ जहाँ दी गयी हैं, वहाँ ये (छोटी या बड़ी) पढ़ा जा सका है।

(ख) मात्रा चिह्नोंके अभावमें इ और उ की मात्राओंको शब्द रूप और प्रयोगके अनुसार अपनाया गया है।

(ग) वाव को प्रसंगानुसार ऊ, ओ और औ की मात्राके रूपमें ग्रहण किया गया है।

● अक्षरोंके सम्बन्धमें निम्नलिखित तथ्य उल्लेखनीय हैं—

(क) नुक्तोंके अभावमें जहाँ किसी शब्दके एकसे अधिक पाठ सम्भव है, वहाँ सर्वसंगत अथवा अर्थ संगत पाठ ग्रहण किया गया है। जहाँ आवश्यक जान पड़ा, वहाँ अन्य सम्भव पाठोंको भी टिप्पणीके अन्तर्गत दे दिया गया है।

(ख) वावको शब्दक आरम्भमें सर्वत्र व और अन्तमे आये वावको प्राय उके रूपम ग्रहण किया गया है।

(ग) शब्दके आरम्भम आये अलिफको अ, आ, इ और उके रूपमें और येको यके रूपम ग्रहण किया गया है।

(घ) शब्दक आरम्भम अलिफ और येक सयुक्त प्रयोगको ए और ऐकी अपेक्षा अइके रूपमें पढा गया है।

(ङ) शब्दके आरम्भम अलिफ और वावके सयुक्त प्रयोगको प्रसगानुसार ऊ, ओ, औ अथवा आउ पढा गया है। शब्दके अन्तम आनेपर उसे केवल आउ माना गया है।

(च) सज्ञा आदि शब्दोंके अन्तम वाव और येके सयुक्त प्रयोगको प्रसगानुसार वे अथवा वै पढा गया है, कि तु कियाओंमें हम वैकी अपेक्षा वइ पाठ अधिक सगत और उचित जान पडा है।

● यदि गृहीत प्रतिके पाठमें कहीं कोई छूट या अभाव है तो वह दूसरी प्रतिसे लेकर पूरा किया गया है। इस प्रकार दूसरी प्रतिसे ग्रहण किये हुए पाठको बड़े कोष्ठक—[ ] म दिया गया है।

● यदि छूटे हुए पाठकी पूर्ति अनुमानसे की गयी है तो उसे बडे कोष्ठक [ ] मे रखकर ताराङ्कित कर दिया गया है।

● छूटे हुए पाठकी पूर्ति यदि किसी प्रकार सम्भव नहीं हो सका है तो वहाँ बड़े कोष्ठक [ ] के भीतर अनुपलब्ध मात्राओंके अनुसार डैश रख दिये गये हैं।

यदि कहीं लिपिकने प्रमादवश किसी शब्दको दुहरा दिया है तो ऐसे शब्दको ताराङ्कित कर दिया गया है। यदि उसने कोई अनपेक्षित अतिरिक्त शब्द रख दिया है तो पाठसे उस शब्दको निकाल दिया गया है और मूल पाठ अलग सग्रह कर दिया गया है।

● इसी प्रकार कोई पाठ स्पष्ट रूपसे अशुद्ध जान पडा तो वहाँ सम्भावित पाठ छोटे कोष्ठक ( ) म देकर मूल पाठको अलग सग्रह कर दिया गया है।

● ऐसे शब्दोंको, जिनका हम समुचित पाठोद्धार करनेमें असमर्थ रहे अथवा जिनके पाठके सम्बन्धमें हमें किसी प्रकारका स देह है, पाठके अन्तगत भिन्न टाइपम दिया गया है।

● प्रत्येक कडवकके पाठके नीचे अशुद्ध मूल पाठ अथवा पाठान्तर देकर टिप्पणी दिये गये हैं। प्रत्येक पक्तिसे सम्बधित टिप्पणियाँ पक्ति-सख्या देकर अलग अलग दी गयी हैं। इन टिप्पणियोंके अन्तर्गत शब्दोंका अर्थ, व्याख्या, आवश्यक सूचना आदि दिया गया है। किन्तु यह कार्य पूर्ण विस्तारसे नहीं किया जा सका।
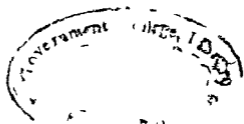
कड़वक सूची

[उपलब्ध सभी प्रतियोंमें कडवकके आरम्भमें फारसी भाषामें कडवकका साराश अथवा शीर्षक दिया हुआ है। उन शीर्षकोंको हमने अनुवाद सहित प्रस्तुत किया है। किन्तु अनेक स्थलोंपर ये शीर्षक भ्रमात्मक अथवा विषयेतर है। अत हम अपनी ओरसे कडवकके विषयोंकी एक स्वतन्त्र सूची यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं, ताकि अपेक्षित कडवक ढूँढनेमें सुगमता हो। कथावस्तुकी रूपरेखा स्पष्ट करनेके लिए, पदमावतके अनुकरणपर विषयके अनुसार कडवकोंको हमने यहाँ समूहोंमें एकत्रकर दिया है, और अपनी ओरसे उनका नामकरण किया है। आशा है पाठकोंके लिए यह उपयोगी सिद्ध होगा।]

स्तुति—

१–ईशस्मरण, ६–मुहम्मद, ७–चार मीत, ८–दिल्ली सुल्तान फीरोज शाह, ९–शेख जैनुद्दीन, ११–खानजहाँ, १२–खानजहाँका न्याय, १३–मलिक मुबारिककी प्रशसा, १७–डलमऊ नगर।

(यह अश अत्यन्त खण्डित रूपमें है, और बीकानेर प्रतिके वरदामें प्रकाशित रूपपर आश्रित है।)

गोवर वर्णन—

१८–अमराइयाँ, २०–सरोवर और मन्दिर, २१–सरोवरका निर्मल जल, २२–सरोवरके जन्तु, २४–नगरकी खाँई, २५–दुर्ग, २६–नगरनिवासी, २७–राज्याधिकारी (?), २८–पन्थ और फूलहाट, २९–राजीगर आदि, ३०–राजद्वार, ३१–राजमहल, ३२–रानियाँ।

(रीलैण्ड्स प्रतिके आधारपर यह वर्णन क्रम दिया गया है। इसमें कुछ कडवकोंका अभाव है और वर्णनक्रम भी पूर्णत सगत नहीं जान पडता।)

चाँदका जन्म और विवाह—

३३ ३४–जन्म, ३५–छठीपूजन और ज्योनार, ३६–चाँदके रूपकी ख्याति, ३७–जीत (चेत)का विवाह प्रस्ताव, ३८–ब्राह्मण नाइका सहदेवसे अनुरोध ३९–सहदेवका उत्तर, ४०–विवाहकी स्वीकृति, ४१–जीत (चेत) को स्वीकृतिकी सूचना, ४२–बारातका प्रस्थान, ४३–विवाह, ४४–दहेज।

चाँद की व्यथा—

४५–चाँदके प्रति बावनकी उपेक्षा, ४६–चाँदका आत्म-सन्ताप, ४७–सासका

समझाना; ४८–चाँद का उत्तर; ४९–सासका क्रोध; ५०–सहदेव का सूचना; ५१–चाँदका मैके लौटना, ५२–सहेलियोंसे भेंट।

व्यथा-वर्णन—

५३ ५४–माघ मास, ५५–फागुन मास, ५६–चैत मास।

(यह अंश बारहमासाके रूपमें है। अतः उसमें कमसे कम १२ कडवक रहे होंगे। किन्तु तीन ही मास सम्बन्धी कडवक उपलब्ध हैं। उपलब्ध कडवक भी अधूरे हैं, जो पंजाब प्रतिसे प्राप्त हुए हैं।)

बाजिर का चाँद-दर्शन—

६६–बाजिरका चाँदको देखकर मूर्छित होना, ६७–जनताका बाजिरसे मूर्छाका कारण पूछना, ६८ ६९–बाजिरका उत्तर, ७०–बाजिरका नगर छोड़ कर जाना; ७१–दूसरे नगर मे पहुँचकर बाजिरका गाना; ७२–राजा रूपचन्दका बाजिरको बुलाना; ७३–बाजिरका चाँद दर्शनकी बात कहना, ७४–चाँदके प्रति राजाकी जिज्ञासा।

चाँदकी रूप-चर्चा—

७५–माँग; ७६–केश, ७७–ललाट; ७८–भौंह, ७९–नेत्र, ८०–नासिका ८१–अधर; ८२–दाँत, ८३–रसना, ८४–वर्ण, ८५–तिल, ८६–ग्रीवा, ८७–भुजाएँ; ८८–कुच, ८९–पेट, ९०–पीठ, ९१–जानु, ९२–पग और गति, ९३–आकार; ९४–वस्त्र, ९५–आभूषण।

रूपचन्दका सहदेव पर आक्रमण—

९६-९७–कूचकी तैयारी; ९८–रूपचन्दके अश्व; ९९–उसके हाथी: १००–सेनाकी कूच, १०१–मार्गमें अपशकुन; १०२–गोवर नगर पर घेरा; १०३–नगरमें आतंक; १०४–सहदेवका रूपचन्दके पास दूत भेजना; १०५–दूतोंको रूपचन्दका उत्तर; १०६–दूतोंका समझाना; १०७–दूतों पर रूपचन्दका क्रोध, १०८–दूतोंको जानेका आदेश, १०९–रूपचन्दका चाँदकी माँग करना; ११०–दूतोंका लौटना; १११–सहदेवका अपने सेनानायकोंसे परामर्श, ११२–सहदेवके अश्व, ११३–उसके अश्वारोही, ११४–धनुर्धर; ११५–रथ, ११६–हस्ति।

रूपचन्द-सहदेव युद्ध—

११७–सेनाओंका युद्धक्षेत्रमें आना; ११८–धँवरू बाँठाका युद्ध; ११९–रूपचन्दकी सेनामें विजयोल्लास, १२०–लोरकके पास भाटका जाना; १२१–लोरकका युद्धके लिये तैयार होना; १२३–मैनाका लोरकको युद्धमे जानेसे रोकना, १२४–लोरकका अजयीके घर जाना; १२५–अजयीका युद्ध-कौशल बतलाना; १२६–लोरकका महरके पास पहुँचना, १२७–लोरकका युद्धके मैदानमें जाना; १२८–लोरककी सेना; १२९–उसे देखकर रूपचन्दका भयभीत होना और दूत भेजना;

१३०–दूतोंका लौटना और खीरका मारा जाना, १३१–सिगार बाँठा युद्ध; १३२–मसदासका मारा जाना, १३३–भरमूँका युद्ध करना, १३४–रणपतिका युद्ध करना, १३५–मैदानमें सेना सहित बाँठाका आना, १३६–बाँठाके मुकाबिले लोरकका आना, १३७–लोरक बाँठा युद्ध, १३८–रूपचन्दका बाँठासे परामर्श, १३९–बाँठाका उत्तर, १४०–लोरक-रूपचन्द युद्ध, १४१–बाँठाका मारा जाना, १४२–लोरकका रूपचन्दकी सेनाको खदेड़ना, १४३–युद्धके मैदानमें मुर्दाखोर पशुपक्षी।

चाँदका लोरकपर मुग्ध होना—

१४४–विजयोल्लास और लोरकका जुलूस, १४५–चाँदका जुलूस देखना; १४६–लोरकका रूप वर्णन, १४७–लोरकको देखकर चाँदका मूर्छित होना, १४८–बिरस्पतका चाँदको समझाना १४९–बिरस्पतका लोरकको घर बुलानेका उपाय बताना, १५०–चाँदका पितासे जेवनारके आयोजनका अनुरोध।

ज्योनार—

१५१–ज्योनारका आयोजन, १५२–अहेरियोंका अहेर लाना, १५४–पक्षियोंका पकड़ कर लाया जाना, १५५–भोजनकी व्यवस्था, १५६–तरकारी वर्णन, १५७–पकवानका वर्णन, १५८–चावलोंका वर्णन, १५९–रोटीका वर्णन, १६०–वन पत्रका वर्णन, १६१–निमन्त्रितोंका बैठना, १६२–व्यंजनोंका परसा जाना।

चाँदके प्रति लोरकका आकर्षण—

१६३–भोजके समय लोरकका चाँदको देखना, १६४–लोरकका घर आकर खाटपर पड़ रहना, १६५–लोरककी माँका विलाप, १६६–बिरस्पतका लोरकके घर आना, १६७–बिरस्पतका लोरकको देखना, १६८–लोरकका बिरस्पतसे चाँद-दर्शनकी बात कहना, १६९–बिरस्पतका लोरकको समझाना, १७०–लोरकका बिरस्पतके पाँव पकड़कर अनुनय करना, १७१–बिरस्पतका उपाय बताना, १७२–बिरस्पतका लौटना, १७३–बिरस्पतका चाँदके पास जाना।

लोरकका योगी रूप धारण—

१७४–लोरकका योगी होना, १७५–चाँदका मन्दिरमें आना, १७६–चाँदका मुक्ताहार टूटना, १७७–चाँदको योगीकी सूचना मिलना, १७८–चाँदका योगीको प्रणाम करना और योगीका मूर्छित होना, १७९–चाँदका मन्दिरसे घर लौटना, १८२–लोरकका पश्चाताप, १८३–देवताका उत्तर।

चाँद और लोरककी व्याकुलता—

१८४–चाँदका बिरस्पतसे प्रेमके प्रति जिज्ञासा, १८५–बिरस्पतका उत्तर, १८६–चाँदका बिरस्पतपर क्रोध, १८७–बिरस्पतका चाँदसे लोरकके मोहित होनेकी बात कहना, १८८–चाँदका खेद प्रकट करना, १८९–बिरस्पतको लोरकके पास

भेजना, १९०—बिरस्पतका लोरकसे योगा-वेष लागनेको कहना, १९१—लोरकका योगी वेश लागना, १९२—लोरकका घर लौटना, १९३—चाँदके लिए लोरककी विकलता, १९४-१९५—लोरकके लिए चाँदकी विकलता, १९६—चाँदका बिरस्पत-को लोरकके पास भेजना, १९७—बिरस्पत और लोरककी बातचीत, १९८—बिरस्पत का लोरकको चाँदके आवासका रास्ता दिखाना।

लोरकका धौराहर प्रवेश—

१९९—लोरकका पाट खरीदकर कमन्द बनाना, २००—अंधेरी रातमें लोरकका चाँदके घरकी ओर जाना, २०१—लोरकका चाँदका आवास पहचानना, २०२—चाँदका कमन्द गिरानेपर खेद, २०३—लोरकका चाँदके आवासमें प्रवेश।

चाँदका आवास—

२०४—लोरकका चाँदका शयनागार देखना, २०५—चित्रकारीका वर्णन, २०६—सुगन्धका वर्णन २०७—शय्याका वर्णन, २०८—लोरकका चाँदको जगाना, २०९—जागकर चाँदका चिल्लाना, २१०—लोरकका चाँदसे कहना, २११—चाँद का उत्तर, २१२—लोरकका कथन, २१३—चाँदका प्रश्न, २१४—लोरकका उत्तर, २१५—चाँदका लोरकका उपहास करना, २१६—लोरकका उत्तर, २१७—चाँदका प्रेम प्रश्न, २१८—लोरकका उत्तर, २१९—चाँदका अपने प्रेमके प्रति जिज्ञासा, २२०—लोरकका उत्तर, २२१—चाँदका मैंनाकी प्रशंसा करना, २२२—लोरकका उत्तर, २२३—चाँदका अपना प्रेम प्रकट करना, २२४—हास-परिहासमें रात बीतना, २२५—लोरक चाँद प्रणय, २२६—प्रातःकाल खाटके नीचे लोरकको छिपाना, २२७—दासियों और सहेलियोंका आना, २२८—चाँदका बहाना बनाना, २२९—बिरस्पतका चाँदकी माँको सूचना देना, २३०—चाँदके माता पिताका आना, २३१—चाँदका लोरकको विदा करना, २३२—लोरकको द्वारपालका देख लेना, २३३—चाँदका कमरेमें लौटकर भविष्य गुनना।

लोरक मैंनामें कहा सुनी—

२३४—मैंनाका लोरकसे रातको गायब रहनेकी बात पूछना, २३५—महलमें पर पुरुष आनेकी बात फैलना, २३६—खोलिनका मैंनासे मलिनताका कारण पूछना, २३७—खोलिनका लोरकके सम्बन्धमें अपनी अनभिज्ञता प्रकट करना, २३८—मैंनाका कहना, २३९—खोलिनका समझाना, २४०—२४१ मैंनाका खोलिनसे कहना, २४२—लोरकका समझ जाना कि मैंना बात जान गयी, २४३—मैंनाका लोरकसे क्रुद्ध होकर बोलना, २४४—लोरकका मैंनाको धमकाना, २४५—खोलिन-का आकर लोरक मैंनामें सुलह कराना, २४६—लोरक-मैंनामें सुलह, २४७—लोरकका मैंनाकी प्रशंसा करना, २४८—मैंनाका उत्तर, २४९—लोरक-मैंनाकी प्रसन्नता।

चाँद और मैनाका मन्दिर गमन—

२५०–पण्डितका चाँदसे देव पूजा करनेको कहना, २५१–देव पूजाके लिये नाना जातिकी स्त्रियोंका जाना, २५२–सहेलियोंके साथ चाँदका मन्दिर जाना, २५३–चाँदका मन्दिर प्रवेश, २५४–चाँदका पूजा करना और मनौती मानना, २५५–मैनाका सहेलियोंके साथ मन्दिरमें आना और पूजा करना।

चाँद-मैना संग्राम—

२५६–चाँदका मैनासे उदासीका कारण पूछना, २५७–मैनाका क्षोभ भरा उत्तर देना, २५८–चाँदका प्रत्युत्तर, २५९–मैनाका चाँदको उत्तर २६०–चाँदका मैनाको गाली, २६१–मैनाका चाँदके अभिसारकी बात प्रकट करना, २६२–चाँदका उत्तर, २६३–मैनाका प्रत्युत्तर, २६४–चाँदका उत्तर, २६५–मैनाका प्रत्युत्तर, २६६–चाँद मैनामें हाथापायी, २६७–चाँद मैनामें गुत्थमगुत्थी, २६८–दोनोंका रक्तरंजित होना २६९–युद्धसे मन्दिरके देवताकी परेशानी, २७०–लोरकका आना और स्थितिसे परिचित होना, २७१–लोरकका मैना चाँदाको अलग करना।

महरिसे चाँदकी शिकायत—

२७२–चाँदका मन्दिरसे घर लौटना, २७३–मैनाका मन्दिरसे घर आना, २७४–खोलिनका मैनासे मन्दिरकी घटना पूछना, २७५–मैनाका मालिनको बुला कर महरिके पास शिकायत भेजना, २७६–मालिनका महरिके पास जाना, २७७–मालिनका महरिसे चाँदकी शिकायत करना, २७८–चाँदकी नादानी पर महरिका लज्जित होना।

लोरक-चाँदका गोवर छोड़नेकी तैयारी—

२७९–चाँदका बिरस्पतको लोरकके पास भेजना, २८०–बिरस्पतका लोरकसे चाँदका सन्देश कहना, २८१–बिरस्पतका लोरकको समझाना, २८७–बिरस्पतका चाँदके पास वापस आना, २८८–लोरक चाँदका भाग चलनेका निश्चय करना, २८९–लोरकका यात्राका मुहूर्त पूछना, २९०–ब्राह्मणका मुहूर्त बताना, २९१–चाँदका महलसे निकलना, २९२–चाँद लोरकका गोवरसे प्रस्थान, २९३–उनका काले वस्त्र पहन आगे बढ़ना, २९४–मैनाका दुःखी होना।

कुँवरूसे भेंट—

२९५–कुँवरूका मार्गमें लोरकको पहचानना, २९६–चाँदका कुँवरूसे अपने प्रेम की बात कहना, २९७–कुँवरूका चाँदकी भर्त्सना करना, २९८–लोरकका कुँवरूसे मिलकर आगे बढ़ना।

लोरक-चाँदका गंगा पार करना—

२९९–सायंकाल लोरक चाँदका वृक्षके नीचे सोना, ३०४–दोनोंका गंगा तट

पर पहुँचना, ३०५–चाँदके रूप पर मल्लाहका मोहित होना; ३०६–मल्लाहका चाँदसे परिचय पूछना; ३०७–लोरकका मल्लाहको गिरा कर नाव पार ले जाना।

(इस अशमें कुछ कडवकों का अभाव जान पडता है। गगा तट तक पहुँचने और मल्लाह के साथ होनेवाली घटनाका स्वरूप अस्पष्ट है।)

बावन-लोरक युद्ध—

३०८–गगा तटपर बावनका आना, ३०९–बावनका गगामें कूदकर लोरकका पीछा करना, ३११–चाँदका बावनके आ पहुँचनेकी सूचना लोरकको देना; ३१२–चाँदका बावनसे अपने उपेक्षिता होनेकी बात कहना, ३१३–बावनका उत्तर और लोरकपर बाण छोडना; ३१४–चाँदका लोरकको सचेत करना और बावनका पुन. बाण मारना, ३१५–बावनका हार मानना, ३१६–बावनका खेद प्रकट करना।

लोरक और विद्याका (?) संघर्ष—

३१७–मार्गमें लोरक चाँदसे विद्या (!) का भेंट : ३१८– किसीका राय (!) से चाँदकी प्रशसा : ३१९–राय गागेउका लोरकके पास आना (!) ३२०–लोरकका विद्यादानीसे युद्ध : ३२२–लोरकका विद्याका हाथ काटना : ३२३–विद्याका रावसे फरियाद करना : ३२४–रावका विद्यासे हाल पूछना और विद्याका बताना

(यह अश अपूर्ण है। उपलब्ध कडवकोंसे कथा क्रमका पता नहीं चलता। कडवकोंका क्रम भी अनिश्चित है। उनके व्यतिक्रम होनेकी सम्भावना अधिक है।)

राव करिंगा और लोरक—

३२५–राव करिंगाका मन्त्रियोंसे परामर्श, ३२६–रावका लोरकको बुलानेके लिए ब्राह्मण भेजना : ३२७–लोरकसे ब्राह्मणोंका निवेदन करना; ३२८–लोरकका रावके पास जाना, ३२९–लोरकका रावसे बातचीत; ३३०–रावका लोरकका सम्मान करना : ३३१–लोरकको भेंट देकर रावको विदा करना।

चाँदको साँपका डसना—

३३२–लोरक चाँदका ब्राह्मण के घर ठहरना और रात में चाँदको साँपका डसना; ३३३–चाँदका मूर्छित होना; ३३४–चाँदके वियोगमें लोरकका रोना; ३३५–लोरकका विलाप, ३३६–गारुडीका आकर मन्त्र पढना; ३३७–चाँदका जीवित हो उठना।

लोरकका अहीरों-चदेलियोंसे युद्ध—

(कडवक ३३८–३४३ अप्राप्य हैं। इनमें बीचका केवल एक कडवक उपलब्ध है जिससे इस घटनाका अनुमान मात्र होता है)

चाँदको दुबारा साँप काटना—

३४४–लोरक-चाँदका नगरमें डेरा डालना और चाँदको साँप काटना; ३४६-३४७ चाँदका मूर्छित होना और लोरकका विलाप करना,; ३४८—लोरकका पाण्डुके

वृक्षकोंकी कोसना; ३४९–लोरकका साँपको कोसना; ३५०-३५५ लोरकका कोसना और विलाप करना; ३५६–गारुडीका आना और लोरकका उसके पाँव पड़ना; ३५७–लोरकका अपना सर्वस्व देनेका वादा करना; ३५८–गारुडीका मन्त्र पढ़ना और चाँदका जीवित होना; ३५९–लोरकका गारुडीको सारे आभूषण देना; ३६०–कविकी उक्ति।

सारंगपुरमें लोरक—

महीपतिके साथ जुआ—

असिपतिके साथ युद्ध—

महसिया द्वारा लोरकका सम्मान (?)—

महुअरके साथ युद्ध (?)—

चाँदको तीसरी बार साँप काटना—

(उपर्युक्त घटनाओंसे सम्बन्ध रखनेवाला अंश अनुपलब्ध है। इनका वर्णन कितने कडवकोंमें किया गया है, बताना कठिन है। हमने इनका वर्णन कडवक ३६१-३७२में होनेका अनुमान किया है। कडवक ३६१से लोरकके सारंगपुर पहुँचनेका अनुमान होता है। इसके अतिरिक्त चार खण्डित कडवक और उपलब्ध हैं जिनसे अन्य घटनाओंका आभास मात्र होता है।)

चाँदका स्वप्न वर्णन—

३७३–चाँदका होशमें आना और स्वप्न देखनेकी बात कहना; ३७४–स्वप्नमें सिद्धका लोरकको आदेश।

टूँटा द्वारा चाँदका अपहरण—

३७५–चाँदको मन्दिरमें बैठाकर लोरकका जाना और टूँटा (योगी)का आना; ३७६–टूँटा (योगी) का जादू करना और चाँदका विस्मृत होना, ३७७–लोरकका लौटकर आना और चाँदको न पाना, ३७८—टूँटा (योगी) का पता लगाना; ३७९–टूँटा और लोरक, दोनोंका चाँदको अपनी पत्नी बताना; ३८०–सिद्धका उन्हें सभासे झगड़ेका फैसला करानेकी सलाह देना; ३८१–सभासे लोरककी फरियाद; ३८२–सभाका लोरकसे प्रश्न; ३८३–लोरकका उत्तर; ३८४–जोगीका चाँदको अपनी पत्नी बताना

(इस अशके आगेके कुछ कडवक अप्राप्य हैं।)

हरदीमें लोरक और चाँद—

३८९–लोरक-चाँदका हरदीकी सीमापर पहुँचना; ३९०–शिकारको जाते हुए राय सेतमका लोरकको देखना; ३९१–लोरकके सम्बन्धमें नाईका जानकारी प्राप्त करना; ३९२–लोरकका परिचय बताना; ३९३–राय सेतमको लोरकका परिचय मिलना; ३९४–लोरकका रायके पास जाना; ३९५–रायका लोरकका सम्मान करना; ३९६–रायका लोरकके घर पारिवारिक उपयोगकी सामग्री भेजना; ३९७–लोरकका नाई आदिको दान देना।

मैनाका वियोग-वर्णन—

३९८–मैनाका दुख वर्णन, ३९९–खोलिनका टाँडके नायक सिरजनको बुलाना ४००–सिरजनका परिचय बताना, ४०१–खोलिनका रोना और मैनाका सिरजनके पैरोंपर गिरना, ४०२–मैनाका व्यथा वर्णन करना—सावन मास, ४०३–भादो मास, ४०४–कुआर मास, ४०५–कातिक मास ४०६–अगहन मास, ४०७–पूस मास, ४०८–माघ मास, ४०९–फागुन मास, ४१०–विरह अवस्था कहना, ४१२ ४१५ लोरकके पास सन्देश लेजानेका आग्रह करना, ४१६–खोलिनका सिरजनसे अनुरोध करना।

सिरजनका लोरकको सन्देश—

४१७–सिरजनका हरदीपाटन रवाना होना, ४१८–विरहदाहके कारण मार्गकी अवस्था, ४१९–हरदीपाटन पहुँचकर सिरजनका लोरकसे मिलने जाना, ४२०–द्वारपालका लोरकको सिरजनके आनेकी सूचना देना ४२१–लोरकका सिरजनसे भेंट करना, ४२२ ४२४–सिरजनका भाग्य वर्णनके बहाने मैनाकी चर्चा करना, ४२५–लोरकका मनार सम्बन्धमें जिज्ञासा, ४२६–सिरजनका गोवरका समाचार कहना, ४२७–अपने वनिजके सम्बन्धमें बताना, ४२८ ४२९–मैनाकी अवस्थाका वर्णन, ४३०–मैनाकी दुरवस्था सुनकर लोरकका दुखी होना, ४३१–मैनाके समाचारसे चाँदका परेशान होना।

लोरकका घर लौटना—

४३२–राव क्षेतमका लोरकको विदा करना, ४३३–साथमें सहायक देना, ४३४–चाँदका लोरकसे अनुरोध, ४३५–लोरकका उत्तर, ४३६–हरदासे चलकर गोवरके निकट पहुँचना, ४३७–गोवर नगरमें आतंक।

मैनाकी परीक्षा—

४३८–मैनाका लोरकके आनेका स्वप्न देखना, ४३९–लोरकका फूलके साथ मालीको मैनाके पास भेजना, ४४०–मैनाका रोकर अपनी अवस्था कहना, ४४१–मालीका उत्तर, ४४२–मैनाका दूध बेंचते हुए लोरकके पड़ावपर जाना, ४४३–लोरकका दूध खरीदकर दाम देना, ४४४–मैनाको रोककर छेड़खानी करना, ४४५–मैनाका अपनी स्थिति कहना, ४४६–दूसरे दिन मैनाका फिर लोरकके पड़ावमें जाना, ४४७–चाँदाका मैनासे अपनी बड़ाई करना, ४४८–मैनाका शृंगार करना।

लोरकका घर आना—

४४९–लोरकका अपने आनेकी सूचना घर भेजना, ४५०–घर आकर माँके पैर पड़ना, ४५१ ४५२–माँसे घरकी अवस्था पूछना।

(आगेका अंश अप्राप्य है।)

१

(बीकानेर प्रतिके प्रकाशित पाठके आधारपर)

पहिले गावउँ सिरजनहारा। जिन सिरजा इह देयस बयारा ॥१
सिरजसि धरती और अकासू। सिरजसि मेरु मँदर कविलासू ॥२
सिरजसि चाँद सुरुज उजियारा। सिरजसि सरग नखत का मारा ॥३
सिरजसि छाँह सीउ औ धूपा। सिरजसि किरतन और सरूपा ॥४
सिरजसि मेघ पवन अँधकारा। सिरजसि बीजु करै चमकारा ॥५
जाकर सभै पिरिथिमी, कहेउँ एक सो गाइ ॥६
हिय घवँरै मन हुल्हसै, दूसर चित न समाइ ॥७

टिप्पणी—(१) सिरजनहारा—सृष्टिकर्ता, ईश्वर। बयारा—वायु।
(३) मेरु—सुमेरु पर्वत। मँदर—मन्दराचल। कविलास—(कैलास> कइलास> कयिलास (वकारका प्रश्लेष—कविलास) कैलास पर्वत; ऊँचे महल और स्वर्गके अर्थमे भी जायसी आदिने कविलासका प्रयोग किया है।
(४) सीउ—शीत।
(५) अँधकारा—अन्धकार। बीजु—बिजली।

६

(बीकानेर प्रतिके प्रकाशित पाठके आधारपर)

पुरुख एक सिरजसि उजियारा। नाँउ मुहम्मद जगत पियारा ॥१
जहँ लगि सबै पिरिथिमी सिरी। औ तिह नाँउ मौनदी फिरी ॥२

टिप्पणी—(२) मौनदी—मुनादी; ढिंढोरा।

७

(बीकानेर प्रतिके प्रकाशित पाठके आधारपर)

अबाबकर उमर उसमान, अली सिंघ ये चारि ॥६
जे निद्दतु कर विज तिस, तुरहि झाले मारि ॥७

टिप्पणी—(६) मुहम्मद साहबके पश्चात् अबा बकर (अबू बकर) (६३२-६३४ ई०), उमर (६३४-६४४ ई०), अली (६४४-६५५ ई०) और उसमान

(६५५ ६६६ ई०) क्रमशः उनके उत्तराधिकारी खलीफा हुए। ये चार यारके नामसे पुकारे जाते हैं। अबू बकर सिद्दीक (सत्यवादी), उमर फारुक (न्यायी), उसमान विनम और अली आलिम (विद्वान) कहे जाते हैं।

८

(बीकानेर प्रतिके प्रकाशित पाठके आधारपर)

साहि फिरोज दिल्ली बड़ राजा। छात पाट औ टोपी छाजा ॥१
एक पण्डित औ है पडिग्राहा। दान अपुरिस सराहै काहा ॥२

टिप्पणी—(१) फिरोजशाह—फीरोजशाह तुगलकवंशीय दिल्ली सुल्तान गियासुद्दीन तुगलकके छोटे भाई रजबका पुत्र और मुहम्मद तुगलकका चचेरा भाई था। मुहम्मद तुगलककी मृत्युके पश्चात् वह २३ मार्च १३५१ ई० को सुल्तान घोषित किया गया और ३७ वर्षतक शासन करनेके पश्चात् २२ सितम्बर १३८८ ई० को उसकी मृत्यु हुई। उसके समयमें प्रजा अपेक्षाकृत सुखी और समृद्धिपूर्ण थी। छात—छत्र। पाट (सं० पट्ट)—राजपट, सिंहासन। टोपी—मुकुट। छाजा—(प्रा० धात्वादेश छज्ज) सुशोभित होना।

९

(बीकानेर प्रतिके प्रकाशित पाठके आधारपर)

सेख जैनदी हौं पथिलावा। धरम पन्थ जिंह पाप गँवावा ॥१
पाप दीन्ह मैं गाँग बहाई। धरम नाव हौं लीन्ह चढ़ाई ॥२

टिप्पणी—(१) सेख जैनदी—शेख जैनुद्दीन सुप्रसिद्ध चिश्ती सन्त हजरत नसीरुद्दीन महमूद अवधी 'चिराग ए दिल्ली' की बड़ी बहनके बेटे थे। बड़ी बहनके बेटे होनेके साथ साथ वे उनके शिष्य और खादिमे खास (मुख्य सेवक) भी थे।

११

(बीकानेर प्रतिके प्रकाशित पाठके आधारपर)

खानजहाँ सरि जुग जुग खानी। अति नागर बुधवन्त बिनानी ॥१
चतुर सुजान भाख सब जाना। रूपवन्त मन्तरी सुजाना ॥२

टिप्पणी—(१) खानजहाँ—यह दिल्लीके तुगलकवंशीय सुल्तानोंकी ओरसे दी जानेवाली एक उपाधि थी। यहाँ खानजहाँसे तात्पर्य खानजहाँ मकबूलसे है, जिन्हें खाने आजम और कवाम-उल मुल्ककी भी उपाधि प्राप्त थी। वे मूलतः तैलंगानाके निवासी ब्राह्मण थे और उनका नाम कट्टू था। मुसलमान हो जानेपर वे मुल्तान मुहम्मद तुगलकके कृपापात्र बने। निरक्षर होते हुए भी वे अत्यन्त कुशाग्र बुद्धि थे। मुहम्मद तुगलक उनका अत्यन्त सम्मान करता था। फीरोज तुगलक ने उन्हें अपना वजीर नियुक्त किया। वे फीरोजशाहके इतने विश्वास पात्र थे कि जब कभी वह राजधानीसे बाहर रहता, उस समय वे ही उसका प्रतिनिधित्व करते थे। वे अत्यन्त धार्मिक, प्रजावत्सल और दीनबन्धु थे। सुप्रसिद्ध इतिहासकार अफीफने उनके जीवन चरित और उनके कार्योंका बड़े विस्तारसे वर्णन किया है। उसका कहना है कि खाँनजहाँ मकबूल चिश्ती सन्त नसीरउद्दीन महमूद अवधीके मुरीद (भक्त) थे। ७७२ हिजरी (१३७४ ई०) म उनकी मृत्यु हुई।

१२

(बम्बई १०)

ऐजन, ल्हू, पी मद्हे खानजहाँ दर बाबे अद्ल व इन्साफ

(वही, खानजहाँकी प्रशंसा और उसके न्यायकी चर्चा)

एक खम्भ मेदिनि कहँ कीन्हा। डोल परै जो होत न दीन्हा ॥१
थकैं परैं लोग चढ़ावइ। कर गुन खीचि तीर लइ लावइ ॥२
हिन्दू तुरुक दुहूँ सम राखै। सत जो होइ दुहुन्ह कहँ भाखै ॥३
गउव सिंह एक पन्थ रेंगावइ। एक घाट दुहुँ पानि पियावइ ॥४
एक दीठि देखइ संसारू। अचल न चलैं चलै बेवहारू ॥५
मेरु धरनि जस भारन, जग भारन संस्यार ॥६
खानजहानहु कौन बड़ाई, बड़ जो कीन्हि करतार ॥७

टिप्पणी—(४) गउव—गौ, गाय। वासुदेवशरण अग्रवालकी धारणा है कि यह सम्भवतः (स०) गवय (नील गाय)का रूप है। जंगलमें नील गाय और शेरका मिलना और एक ही मार्गपर साथ चलकर पानी पीना अधिक सम्भव है (पदमावत, पृ० १५)। किन्तु अवधी भोजपुरी क्षेत्रोंमें गायके लिए ही गउव सामान्य और प्रचलित शब्द है।

१३

(होष्टर प्रति)

मद्हे मालिक उल-उमरा मलिक मुबारिक इब्न मालिक बयाँ

मनतअ सनूद बूद

(मालिक बयाँ के पुत्र मालिक मुबारिककी प्रशंसा)

मलिक मुबारक दुनि क सिंगारू । दान जुझ बड बीर अंपा[रू^{०}] ॥१
खड़ग खाइ हॅहि परहिं पहारा । बासुकि कॉपैं नाहिं उबारा ॥२
कान्ध तोरइ रकत बहावइ । धर सिर बन तिन्ह माँझ परावइ ॥३
बिधना मारि देस महँ आनी । भागहि राइ छाडि निसि रानी ॥४
जिन्ह सर दइ मुदगर कर घाऊ । फेरि नहिं धरै सीध कै पाऊ ॥५

जिन्ह जग परा भगानों, छाड देस नृप भाग ॥६
मीर देन्ह सरब दण्ड, गये ते बयाँ लाग ॥७

टिप्पणी—(१) मालिक मुबारिक—इनके सम्बन्धकी जानकारी अन्यत्र उपलब्ध नहीं है। इस ग्रन्थ से केवल इतना ही ज्ञात होता है कि ये मालिक बयाँके पुत्र और डलमऊके मीर (न्यायाधीश) थे। सम्भवत इन्हें मालिक उल उमराकी उपाधि प्राप्त थी। बहुत सम्भव है कि ये चन्दायनके रचयिता मौलाना दाऊदके पिता हों। डलमऊके किलेके खण्डहरमें एक कब्र है जिसे लोग शेख मुबारिककी कब्र बताते हैं। उनके सम्बन्धमें कहा जाता है कि ये सैयद सालार मसऊद गाजीके साथ आये थे। नाम साम्यके कारण मित्रोंने उनकी ओर मेरा ध्यान आकृष्ट किया है। किन्तु वे इन मलिक मुबारिकसे सर्वथा भिन्न थे।

१७

(बीकानेर प्रतिके प्रकाशित पाठके आधारपर)

बरिस सात सै होइ इक्यासी[1] । तिहि जाह कवि सरसेउ भासी[2] ॥१
साहि फिरोज दिल्ली सुलतानू । जौनासाहि वजीरु बखानू ॥२
डलमउ नगर बसै नवरंगा । ऊपर कोट तले बहि गंगा ॥३
धरमी लोग बसहिं भगवन्ता । गुनगाहक नागर जसवन्ता[3] ॥४
मलिक बयाँ पूत उधरन धीरू । मलिक मुबारिक तहाँ कै मीरू ॥५

[ ] ॥६
[ ] ॥७

पाठान्तर—परशुराम चतुर्वेदीने इस कडवकके प्रथम चार पंक्तियोंका त्रिलोकीनाथ दीक्षितसे प्राप्त एक पाठ प्रकाशित किया है (हिन्दी साहित्य, द्वितीय खण्ड, पृ० २५०, पाद टिप्पणी २)। यह उन्हें किसी मौखिक परम्परासे प्राप्त हुआ था (हमारे नाम दीक्षितका १९ अगस्त १९६० का पत्र)। उसमें प्राप्त मुख्य पाठान्तर इस प्रकार हैं—

१—हते उन्यासी; २-सहिया यह कवि सरस अभासी, ३-चितवन्ता।

टिप्पणी—(२) जौनासाहि—यह फीरोजशाह तुगलकके वजीर खानजहाँ मकबूलके पुत्र थे। उनका जन्म उस समय हुआ जब खानजहाँके अधिकारमें मुल्तानका इक्त था। उस समय सुल्तान मुहम्मद तुगलकने स्वयं फरमान भेज कर शिशुका नामकरण जौनाशाह किया था। उसे उस समय सुप्रसिद्ध सन्त जकरिया मुल्तानीके नाती सुहरवर्दी सन्त रुक्नुद्दीनका भी आशीर्वाद प्राप्त हुआ था। पिताकी मृत्युपर जौनाशाह ७७२ हिजरी (१३७० ई०)में फीरोजशाह तुगलकके वजीर हुए और उन्हें भी खानजहाँकी उपाधि मिली। उनकी ख्याति अत्यन्त मेधावी और दूरदर्शी राजनीतिज्ञके रूपमें है। वे बीस बरसों तक फीरोजशाहके विश्वस्त सलाहकार रहे। किन्तु अन्तिम दिनोंमें उनका सुल्तानके अधिकारोंके प्रश्नको लेकर शाहजादा मुहम्मदसे, जो पीछे सुल्तान बना, मनमुटाव हो गया। निदान ७८९ हिजरी (सन् १३८६ ई०) में वे वजीरके पदसे हटा दिये गये और उसका मकान लूट लिया गया। उसी वर्ष उन्हें मलिक याकूब उर्फ सिकन्दर खाँने मार डाला।

(३) डलमऊ—यह उत्तर प्रदेशके रायबरेली जिलेका एक प्रसिद्ध कस्बा है, और रायबरेलीसे ४४ मील और कानपुरसे ६१ मील पर स्थित रेलवे जकशन है। वहाँ गंगाके करारके ऊपर किलेका भग्नावशेष अब भी मौजूद है।

१८

(बीकानेर प्रतिके प्रकाशित पाठके आधारपर)

गोबर कहाँ महर कर ठाऊँ। कूआ वाइ बहुत अँबराऊँ ॥१
नरियर गोवा कै तहँ रूखा। देखत रहै न लागै भूखा ॥२

दारिउँ दाख बहुल लै लाई। नारिंग हरिक कहै न आई ॥३
कटहर तार फरे अविरामा। जामुन कै गिनती को जाना ॥४
[--------------] । [--------------] ॥५
घॉस खजूर बर पीपरा, अँबिली भई सेवार ॥६
राय महर कै बारी, देवस होइ अँधियार ॥७

टिप्पणी—(१) गोवर—दौलतकाजीने अपने सति मयना उ लोर-चन्द्रानीमें इसका नाम गोहारि दिया है। उसकी विवेचना करते हुए हरिहरनिवास द्विवेदीने उसे ग्वालियर बतानेका प्रयत्न किया है (साधन कृत मैंना सत, पृ० ११३-११४)। किन्तु गोवर नगर ग्वालियरसे सर्वथा भिन्न था यह छिताईवार्ताके साक्ष्यसे सिद्ध है। अगरचन्द नाहटाको इसकी जो प्रति मिली है, उसमें देवचन्दने दामोदरका परिचय देते हुए उनका जन्मस्थान गोवर बताया है (कायथवश तामोरी जाता। गोवर गिरी तिनकी उतपाता ॥) और अपने जन्मस्थानके रूपमें ग्वालियरका नाम लिया है (देवीसुव कवि दिउचन्दु नामु। जन्म भूमि गोपाचल गाऊँ ॥)। लोक कथाओंमें इसका नाम गौर या गौराके रूपमें आया है। सतीशचन्द्रदासका कहना है कि यह माल्दा जिले (बंगाल) में है। (जर्नल आव द मिथिक सोसाइटी, खण्ड २५, पृ० १२२)। सत्यव्रत सिन्हाने लिखा है कि बिहारके शाहाबाद जिलेमें डुमराँव तहसीलमें गउरा नामक ग्राममें अहीरोंकी एक बहुत बडी बस्ती है। लोरिकीके गायकसे यह ज्ञात हुआ कि लोरिक इसी गउराका रहनेवाला था। अहीरों की बडी बस्ती से हम यह अनुमानकर सकते हैं कि लोरिकका स्थान यही है (भोजपुरी लोकगाथा, पृ० ९२)। प्रस्तुत काव्यमें जो भौगोलिक सूत्र उपलब्ध हैं उनसे ज्ञात होता है कि गोवर गगा नदीसे बहुत दूर न रहा होगा। गोवर के निकट देवहा नदी होने का पता भी इस काव्यमें मिलता है। देवहा नदीकी पहचान होनेपर इस स्थानका निश्चय अधिक प्रामाणिकतासे किया जासकेगा। अभी इसके सम्बन्धमें इतना ही कहा जा सकता है कि वह गगाके मैदानमें पूर्वी उत्तरप्रदेश अथवा बिहारमें कहीं रहा होगा। कूपा—कूप। बाई—वापी। अँबराऊँ—आम्राराम, आम का बगीचा।

(२) गोवा—(स० गुवाक) एक प्रकारकी सुपारी। नरियर—नारियल।

(३) दारिउ—दाडिम, अनार। दाख—अगूर।

(४) कटहर—कटहल। तार—ताड।

(६) बर—बड। पीपरा—पीपल। अबिली—इमली। सेवार—अधिक।
(७) बारी—बगीचा।

२०

(रीलैण्ड्स २)

सिफ्ते बुतखानः बर हौज व मानदन जोगियान मर्दान व जनान दरा

(सरोवरके ऊपर स्थित मन्दिरका वर्णन जहाँ स्त्री पुरुष जोगी रहते हैं।)

नारा पोखर कुण्ड खनाये। मढ़ि देव जेहिं पास उठाये ॥१
कानफाट नितइ आवहिं तहाँ। औ भगवन्त रहैं तिंह महाँ ॥२
सिव [अ- - - - - - - - -] छाये। पुरुख नाँउँ तिह ठाँर न जाये ॥३
भेरा डँवरू डाक बजाये। सबद सुहाव इंदर मन भाये ॥४
जोगी सहस पाँच एक गावहिं। सींगी पूरहिं भसम चढ़ावहिं ॥५

सिद्ध पुरुख गुन आगर, देखि लुभाने ठाउँ ॥६
कहत सुनत अस जानै, दुनि चलि देखै जाउँ ॥७

टिप्पणी—(१) मढ़ि–मण्डप, देवस्थान।
(४) भेरा–मुँहसे फूँककर बजानेवाला बड़ा बाजा। डँवरू—डमरू। डाक–डंका।
(५) सींगी–(सं० शृंग) सींगका बना फूकनेका बाजा।

२१

(रीलैण्ड्स ३ पजाब [प])

सिफ्ते हौज व ल्ताफ्ते आवे उ गोयद

(सरोवर और उसके निर्मल जल का वर्णन)

सरवर एक सफरि भरि रहा। झरनाँ सहस पाँच तिंह बहा ॥१
अति अवगाह न पायइ थाहा। बातैं चूक सराहउँ काहा ॥२
[बास केवँरें कह नित आवइ]। देखत मोतीचूर सुहावइ ॥३
[कुँवर लाख दोइ पानी चाहैं]। तीर बैठि ते लेहिं भर आहैं ॥४
[ठाँउ ठाँउ बैसे रखवारा]। घोर नहाइ न कोऊ पारा ॥५

[जाप होइ महरहिं कै, - - - - सौं कह - - -] नी पाट ।६
[पाप रूप सरवर कै, खेवत बाँ]धी घाट ॥७

पाठान्तर—१–आवा । २–सुहावा ।

टिप्पणी—रीलैण्ड्स प्रतिका यह पृष्ठ फटा है जिसके कारण अंतिम तीन यमकोंकी पूर्व अर्धालियाँ तथा घत्ताका अधिकांश नष्ट हो गया है। पंजाब प्रतिका उपलब्ध फोटो भी अत्यन्त अस्पष्ट है, जिसके कारण घत्ताके नष्ट अंशोंका समुचित उद्धार सम्भव न हो सका।

(१) सफरि—मछली। सुभर पाठ भी सम्भव है—सुभर सरोवर हंस केलि कराहिं (पदमावत)।

(२) अवगाह (सं०—अगाध, वकारके प्रश्लेषसे अवगाह)—गम्भीर, अथाह। चूर—समाप्त हो गया।

२२

(रीलैण्ड्स ४)

सिफ्ते जानावराँ दर आँ हौज गोयद

(सरोवरके जन्तुओंका वर्णन)

पैरहिं हंस मॉछ बहिराहैं । चकवा चकवी केरि कराहैं ॥१
दबला ढेंक बैठ झरपाये । बगुला बगुली सहरी खाये ॥२
बनलेउ सुवन घना जल छाये । अरु जलकुकुरी वर छाये ॥३
पसरीं पुरई तूल मतूला । हरियर पात वइ रात फूला ॥४
पॉखी आइ देस कर परा । कार कँरजवा जलहर भरा ॥५
सारस कुरलहिं रात, नींद तिल एक न आवइ ।६
सबद सुहाव कान पर, जागहिं रैन बिहावइ ॥७

टिप्पणी—(३) ढेंक—आँजन बगुला। सहरी—सफरी, मछली।

(४) पसरी—(सं०प्रसार) फैली। पुरई—पुरइन (सं० पुटकिनी), कमलकी बेल। हरियर—हरी। पात—पत्ती। रात—(सं० रक्त) लाल।

(५) पॉखी—पक्षी। देस कर (मुहावरा)—नाना प्रकारके। कार—काला। कँरजवा—करज, पक्षी विशेष।

(६) कुरलहिं—चहकते हैं।

२४

(रीलैण्ड्स ५)

सिफ्त खंदक वर गिर्दे शहर गोवर गोयद

(गोवर नगरकी खाँईका वर्णन)

जाइ देस गोवर [कै*] खाई । पुरिस पचास केर गहराई ॥१

निरहत पथरै तिसके बाँधे। कण्ठ न सूझ अन्तर साँधे ॥२
देखि फिरे आछे पैराऊ। तिल एक नीर घटे न काऊ ॥३
नीर डरावन हरियर पानूँ। झाँखत हिये कीन्ह डर आनूँ ॥४
जो खसि परै सो जम पँथ जाई। परतहि माँछ मगर तेहि खाई ॥५
राइ बीस एक जो चलि आवहिं, केसहिं कहँ न जायि ।६
दण्डी कै आपुन भागँहि, साहन जाहिं गरायि ॥७

टिप्पणी—(१) पुरिस—मनुष्यकी लम्बाइक बराबर ऊँचाइ और गहराई नापनेकी इकाई।

२५

(रीलण्ड्स ६)

सिफ्त हिसार गिद शहर गोवर गोवद

(गोवर नगरके दुर्गका वर्णन)

तिहू जाह जो कोट उनावा। कार सेत गढ पाथर लावा ॥१
हाथ तीस कर आह उँचाई। पुरिस साठ कै है चौडाई ॥२
ग[-----] अनेकर लागा। ऊपर देखत खसि परि पागा ॥३
तेल धार जइस चिकनाई। ऊपर देखहिं चढइ न जाई ॥४
सकर देवस चहुँ दिसि फिरि आये। खूर अथवईं ओर न पाये ॥५
बीस पौर बीसो महँ, लोहे रसे केवार ।६
देवसहिं रहहिं पवरिया, रात सम्हों कोटवार ॥७

टिप्पणी—(१) कोट—दुर्ग, गढ, किला। उनावा—ऊपर उठाया, बनवाया। कार—काला। सत—स्वेत, सफेद।
(२) साठ—सात पाठ भी सम्भव है।
(३) खसि—गिरना। पागा—पाग, पगडी।
(६) पौर—नगरद्वार। केवार—किवाड, दरवाजा, फाटक।
(७) पवरिया—द्वारपाल। सम्हों—समय। कोटवार—कोटपाल, दुर्गरक्षक।

२६

(रीलैण्ड्स ७)

सिफत खल्के शहर व सकना बूदन्द दरआँ शहरे मज्कूर

(उस नगरके निवासियोंका वर्णन)

बाँभन खतरी बसहिं गुवारा । गहरवार औ आगरवारा ॥१
बसहिं तिवारी औ पचवानाँ । धागर चूनी औ हजमानाँ ॥२
बसहिं गँधाई औ बनजारा । जात सरावग औ बनवारा ॥३
सोनी बसहिं सुनार बिनानी । राउत लोग बिसाती आनी ॥४
ठाकुर बहुत बसहिं चौहानाँ । परजा पौनि गिनति को जानाँ ॥५

बहुत जात दरमर अथह, खोरहि हींड न जाइ ।६
तैंस बा देस गोबर, मानुस चलत भुलाइ ॥७

टिप्पणी—(१) बाँभन—ब्राह्मण । खतरी—खत्री अथवा क्षत्रिय । गुवारा—ग्वाल, अहीर । गहरवार—गहड़वाल, राजपूतोंका एक वर्ग । आगरवारा—अग्रवाल, वैश्योंका एक प्रमुख वर्ग ।

(२) तिवारी—त्रिपाठी, ब्राह्मणोंका एक वर्ग । पचवानाँ—पंचम वर्ण । धागर—निम्न वर्गकी एक जाति, जिनकी स्त्रियाँ जन्मके अवसरपर शिशुके नाल काटने और सूतिका गृहके अन्य काम करती थीं । हजमानाँ—हजाम, नाई ।

(३) गँधाई—गन्धी, तेल सुगन्धितका काम करनेवाले । बनजारा—(स० वाणिज्यकारण> वाणिज्यारक) व्यापारी, यह सार्थवाह शब्दका मध्यकालीन पर्यायवाची था और इसका प्रयोग उन व्यापारियोंके लिए किया जाता था जो टाँड लाद कर (सामूहिक रूपसे माल लाद कर) दूर देशोंसे व्यापार करने आया करते थे । सरावग—(स० श्रावक) जैन धर्मावलम्बी गृहस्थ । बनवारा—वर्णवाल, वैश्योंकी एक जाति, पनवारा पाठ भी सम्भव । उस समय इसका अर्थ होगा—पानवाला, तरई ।

(४) सोनी—सोनेका काम करनेवाले । बिनानी—विज्ञानी । राउत—(स०—राजपुत्र> राउत्त> राउत्त> राउत) राजपूतोंका वर्ग विशेष, मूलतः यह राजवंशोंसे सम्बन्ध रखनेवाले लोगोंकी उपाधि था । बिसाती—फेरी लगाकर बेचनेवाले व्यापारी ।

(५) ठाकुर—क्षत्रियोंकी उपाधि, भोजपुरी-अवधी आदि प्रदेशोंमें यह क्षत्रिय जातिका बोधक है। परजा पॉनि—सेवाकार्य करनेवाले लोग।

(६) खोर—गली, रास्ता, मार्ग। हींड—टटोलना, ढूँढ़ना।

(७) तैस—ऐसा। बा (क्रिया)—है।

२७

(रीलैण्ड्स ८)

सिफ्ते मजलिसे तरक्शबन्दाने राय महर गोयद

(राय महरके सैनिकों (?) का वर्णन)

राजकुँरै कै बीस इठानी। हम फुनि तहाँ भैठहिं जाती ॥१
अति बिधवाँस पँडित ते बड़े। रूपमरार दयी के गढ़े ॥२
अधरन लागे पान चबाहीं। मुख मँह दाँत तडसो जिहँ माहीं ॥३
दान झझ कर बिरुद बुलावहिं। भाटहिं कापर घोर दिवावहिं ॥४
हाथ खरग बीरहिं सर दीन्हें। बीरहिं ऊपर बीरा लीन्हें ॥५

छतस करे राज नित, भूँजहिं सासन गाँउ ।६
देस कै डाँड आउ महँरे कहँ, तिहँ गउरहँ कै नाँउ ॥७

टिप्पणी—(१) इस यमकका सन्तोषजनक पाठोद्धार सम्भव नहीं हो सका। प्रथम वाचनके समय हमने पूर्वपदको 'राज करै कै पैस उठाई' पढ़ा था, पर आगेके यमकोंके प्रसंगमें यह पाठ असंगत जान पड़ा। साथ ही यह परिवर्तित पाठ भी सन्दिग्ध है, विशेषरूपसे अन्तिम शब्दका पाठ। उत्तर पदके किसी शब्दके पाठसे भी हम सन्तोष नहीं है। 'तहाँ'का पाठ 'थान' और 'भैठहि'का पाठ 'भये तिहिं' भी हो सकता है। पर किसी भी पाठके साथ कोई अर्थ नहीं निकलता।

(२) बिधँवास—विद्वान। रूपमरार—इस शब्दका प्रयोग रूपका वर्णन करते हुए कविने अनेक स्थानोंपर किया है। जायसीने भी पदमावतमें इसका प्रयोग किया है। वहाँ इसे 'रूपमुरारी' पढ़ा गया है और वासुदेवशरण अग्रवालने टीका करते हुए इसका अर्थ 'रूपमें कृष्णके भाँति सुन्दर' किया है। किन्तु न तो यह पाठ ही ठीक जान पड़ता और न अर्थ ही। चौदहवीं शताब्दीमें कृष्ण रूप-सौन्दर्यके प्रतीक बन गये थे, इसका कोई प्रमाण उपलब्ध नहीं है। हमारी धारणा है कि इन कवियोंने यहाँ कृष्णवाचक 'मुरारि'का प्रयोग नहीं किया

है। यह कोई सौन्दर्य-बोधक विशेषण है। जिसका भाव और अर्थ हमे स्पष्ट नहीं हो रहा है। शिवसहाय पाठकका सुझाव है कि 'मरार' का तात्पर्य 'मराल'से है और 'रूप मरार'का भाव है 'मयूरके समान सुन्दर'।

(४) कापर-कपड़ा। घोर-घोड़ा।

(५) खरग-खड्ग, तलवार।

(६) भूँजहिं-भोग करे। सासन (सं० शासन)—राजाज्ञा अंकित ताम्र पत्र। सासन गाँउ—राज्यादेशसे प्राप्त ग्राम।

२८

(रीलैण्ड्स ९)

सिफ्त बाजार इत्रियात शहरे गोवर व खरीदने खल्क

(गोवर नगरके सुगन्धिके बाजार तथा वहाँकी खरीदारीका वर्णन)

सुनी फूल हाट सब फूला। जीउ विमोह गा देखत भूला ॥१
अगर चन्दन सब धरा बिकाने। कुंकुं परिमल सुगँधि गँधाने ॥२
बेनाँ और केवर सुहावा। मोल किये [पर*] महँक (सुँधाना)॥३
पान नगरखण्ड सुरंग सुपारी। जैफर लोंग निकारी झारी ॥४
दौनों मरवा कुन्द निवारी। गूँदइ हार ते देचहिं नारी ॥५
खाँड चिरोंजी दाख खुरहुरी, बैठे लोग निसाह ।६
हीर पटोर सों भल कापड, जित चाहे सब आह ॥७

मूलपाठ—(३) सुनावा।

टिप्पणी—(२) धरा—धरा, पाँच सेरका तौल। कुकूँ—केसर। परिमल-कई सुगन्धियोंको मिलाकर बनाई हुई विशेष वास (वासुदेवशरण अग्रवाल)।

(३) बेना—वीरण, खस। केवर—केवड़ा।

(४) जैफर—जायफल।

(५) दौनों—तुलसीका जातिका पौधा जिसकी पत्तियोंमें सुगन्धि होती है। मरवा—(सं० मरुवक) यह फाल्गुन-चैत्रमें फूलता है। इसके फूल लाल और सफेद दो रंगोंके होते हैं। कुन्द—सफेद रंगका छोटा फूल जो अगहन-पूसमें फूलता है। नेवारी—इसे निवाड़ी भी कहते हैं। यह चैतमें फूलनेवाला सफेद फूल है। आइने अकबरीमें इसे एक पत्तेका फूल कहा गया है। यह रायबेलासे मिलता जुलता है। इसके फूल इतने अधिक आते हैं कि पेड़ ढक जाता है।

(६) खाँड—शक्कर, चीनी। खुरहुरी-पदमावतमें इसका उल्लेख हुआ है। वहाँ वासुदेवशरण अग्रवालने इसकी व्युत्पत्ति क्षुद्रफुल्ली-खुदहुल्ली-खुरहरी बताया है और वाट इन डिक्शनरी आव द इकनामिक प्राडक्ट्स (भाग ३, पृष्ठ ३९४)से इसके अनेक नाम गिनाये हैं। (पदमावत २८।४)। पर हमारी दृष्टिमें यहाँ तात्पर्य छुहारेसे है।

(७) हीर-इसके कई अर्थ हो सकते हैं। (१) ईराक स्थित हीरके बने हुए वस्त्र। इब्न-बतूताने वहाँके बने दीबाज (जरीका बना वस्त्र), हरीर (रेशम) और चित्रित वस्त्रोंकी चर्चा की है जो वहाँ इस्लामके उद्भवसे पूर्व तैयार होते थे (आर्स इस्लामिया, खण्ड ९, पृ० ८९)। किन्तु इस्लामके युगमें इस स्थानका महत्व घट गया था। इस कारण कदाचित इससे यहाँ तात्पर्य यह न होगा। (२) मोतीचन्द्रका कहना है कि हेरातके मार्गसे जो वस्त्र भारत आते थे वे पट्टहरि अथवा हीरपट्ट कहे जाते थे। (कास्टयूम्स ऐण्ड टेक्सटाइल्स इन सल्तनत पीरियड, पृ० ३४)। (३) ऐसा वस्त्र जिसपर हीरेकी आकृति हो (यह सुझाव भी मोतीचन्द्रका ही है)। हो सकता है यहाँ इसीसे तात्पर्य हो, क्योंकि लहर-पटोर जैसा प्रयोग पदमावतमें मिलता है (३२९।१); जिसका तात्पर्य लहरियादार पटोर है। उसी प्रकार यहाँ हीर पटोरसे तात्पर्य हीरेकी आकृति अंकित पटोरसे हो सकता है। (४) लोकमें बोलचालमें किसी वस्तुकी सर्वोत्तम छाँटी हुई वस्तुको, उस वस्तुका हीर कहा करते हैं। हमारी समझमें उसी भावमें यहाँ इसका प्रयोग हुआ है। हीर पटोरसे तात्पर्य है उच्च कोटिका पटोर, अथवा बारीक किस्मका पटोर।

पटोर-देखिये आगे ३२।७।

२९

(रीलैण्ड्स १०)

सिफ्ते बाजीगराँ दर बाजार शहर गोबर गोवद

(गोवर नगरके बाजीगरोंका वर्णन)

हाट छरहँटा पेखन होई। देखँहिं निसर मनुस औ जोई ॥१
परवा राम रमायन कहहीं। गावँहि कवित्त नाच भल करहीं ॥२
बहुरुपिये बहु भेस भरावा। बार बूढ़ चलि देखै आवा ॥३
रासँ गावँहिं भइ झडलावँहिं। संग मूद बिस देंह पदावँहिं ॥४
कीनर गावँहिं होइ पँवारा। नट नाचहिं औ बाजहिं तारा ॥५

भाट हँकारे कूद चँढ़ि, हम देखा होइ अजार ।६
अचँह बधावा गोबर, घर घर मंगराचार ॥७

टिप्पणी—(१) छरहँटा—सं० छलहट्ट = छल्का बाजार, जादूका तमाशा । पेखन—सं० प्रेक्षण = नाटक, तमाशा । जोई—स्त्री ।

(२) परवा—पर्वी । राम रमायन—इस उल्लेखसे यह स्पष्ट प्रकट होता है कि तुलसीदास कृत रामायणकी रचनासे बहुत पूर्व लोकमें राम कथा व्याप्त हो चुकी थी और लोग रामायण नामक किसी रचनासे पूर्ण परिचित थे और उसका पाठ किया करते थे । भवनोंमें उसके चित्र बनते थे यह २०५वें कडवकसे ज्ञात होता है । अन्यत्र भी कई स्थलों पर रामायणकी घटनाएँ अभिप्राय रूपमें ग्रहीत हैं ।

(५) कीनर—किन्नर, सम्भवत यहाँ तात्पर्य हिजड़ोंसे है ।

(६) अजान—अज्ञाणी>अजानी>अजान, मूक ।

३०

(रीलैण्ड्स ११)

सिफ्त दरबारे राय महर गोयद

(राय महरके दरबारका वर्णन)

कहौं महरिह बारि बखानि । बैठ सींह गढ़ से धरँ बनानी ॥१
बहुत बीर तिंह देख पराहें । हियें लाग डर खँद न खाहें ॥२
देखत पौर डीठि फिरि जाई । एक सूत सतधार उँचाई ॥३
औट रूप कै पानीं द्वारा । अस कै महरि दुवारि सँवारा ॥४
सात लोह एकहिं औटाने । बजर केवार पौंर गढ़ लाने ॥५
रातहिं बँसे चौकी, कुन्त खरग रहि छाइ ।६
पाखर सहस साठ फिरि, चाटँहि सँचर न जाइ ॥७

टिप्पणी—(१) बारि—घर, निवास स्थान । सींह—सिंह, मध्यकालीन घरोंके प्रवेश द्वारपर दोनों ओर दो सिंह बनानेकी प्रथा थी । उन्हें प्राय मरोडदार पूँछ फटकारते और जीभ निकाले हुए बनाया जाता था । बनानी—वर्ण, भाँतिके, तुलना कीजिये—बहु बनानके नाहर गढ़े (पदमावत ४१।८) ।

(५) केवार—किवाड़, दरवाजा ।

(६) कुन्त—पैदल सैनिकों द्वारा प्रयोगमें आनेवाला बर्छा ।

३१

(रीलैण्ड्स १२)

सिफ्त कस्रहाय राय महर गोयद

(राय महरके महलोंका वर्णन)

फुनि हौं कहौं धौराहर बाता। इंगुर पानि ढार कइ राता ॥१
सतखँड पाटा आनों भाँती। सात चौखण्डी भयी जिंह पाँती ॥२
चौरासी [--] वसे उचाई। लगी दरेरें अती सुहाई ॥३
अस रचना कै कौन बनानी। सातौं करस धरै सुनवानी ॥४
कनक खम्भ जड़ मानिक धरे। जगमगाहिं जनु तरइँ भरे ॥५
अगर चँदन अन्तो लै, अछर सुहावन घास।६
देव लोग अस भाराहिं, मकु आह कबिलास ॥७

टिप्पणी—(१) धौराहर—सं० धवलगृह, राजमहलके भीतर रनिवास धवलगृह कहलाता था। इसे अन्त पुर भी कहते थे।

(२) सतखँड—सप्तभूमिक प्रासाद, सतमंजिला महल। इस प्रकारके राजप्रासादोंकी कल्पना गुप्तकालसे ही इस देशमें प्रचलित थी। दतियाँमें सतरहवीं शतीका वीरसिंह देवका महल सतखण्डा है। आनों—अन्यान्य, अनेक प्रकारके, भाँति भाँतिके, तरह तरहके। लोकमें बहु प्रचलित इस सीधे सादे शब्दसे परिचित न होनेके कारण माताप्रसाद गुप्तने पदमावत और मधुमालतीमें सर्वत्र फारसी लिपिमें लिखे 'अलिफ', 'नून', 'वाव', 'नून'को 'अनवन' पढ़ा है और उसके अनवन <अन्यवर्णके विकृत पाठ होनेकी क्लिष्ट कल्पना की है। चौखण्डी—चार खण्डकी चौकियाँ अथवा बुर्ज।

(४) करस—कलश, गुम्बद। सुनवानी—सोनेके वर्णवाला, सुनहरा।

(७) मकु—मानों। कबिलास—स्वर्ग।

३२

(रीलैण्ड्स १३)

सिफ्त हरमाँ राय महर हस्ताद व चहार बूदन्द

(राय महरकी चौरासी रानियोंका उल्लेख)

राय महर रानी चौरासी। एक एक के तर चेरि अरुासी ॥१
केकर केकर होइ जेउनारा। केकर मँदिर सेज सँवारा ॥२

पाटमहादेवि फुलारानी। सबै अचेत वह अहै सयानी ॥३
अगर चँदन फुल औ पानूँ। कुंकूँ सेंदुर परसँहि आनूँ ॥४
रचै हिंडोला झूलें नारी। गावहिं अपुरुब जोबनवारी ॥५
अरथ दरब घोर औ हति, गिनत न आवइ काउ ।६
अन-धन पाट-पटोर भल, कौतुक भूला राउ ॥७

टिप्पणी—(१) तर—नीचे, आधीन। चेरि—दासी। अछरी—अप्सरा।

(२) बेकर बेकर—अलग-अलग; तरह-तरहके। जेउनारा—(प्रा० जेमणवार) भोजन, रसोई।

(५) जोबनवारी—यौवनवाली, युवती।

(६) दरब—द्रव्य; हति—हाथी।

(७) पाट—हमें इस शब्दका प्रयोग किसी पूर्ववर्ती साहित्यमें नहीं मिला। समवर्ती साहित्यमें भी केवल नरपति नाल्ह कृत बीसलदेव रासोमें इसका उल्लेख 'पाट-पटम्बर'के रूपमें है। परवर्ती साहित्यमें पदमावतमें एक स्थानपर इसका उल्लेख है (२११।६)। सम्भवतः यह शब्द संस्कृत पट या पट्टसे निकला है। ग्यारहवीं शतीके वैजन्ती कोष (१६८।२३१) और बारहवीं शतीके अभिधान चिन्तामणि कोष (३।६६६-६७)के अनुसार पट वस्त्रकी सामान्य संज्ञा जान पड़ती है। अभिधानमें पुराने कपड़ेके लिए पटच्चर शब्द है (३।६७८)। दसवीं शतीके प्रारम्भमें लिखे गये त्रिविक्रमभट्ट कृत नलचम्पूमें दमयन्तीकी माताको सम्बोधित करते हुए कहलाया गया है कि—इन चीनांशुक पटोंको स्वीकार करें जो अनलशौचम् (अग्नि द्वारा स्वच्छ किये जानेवाले) हैं। स्पष्टतः यहाँ चीनके बने अभ्रकके वस्त्रोंसे तात्पर्य है। इससे भी यही लगता है कि पट सामान्य रूपसे वस्त्रको कहते थे। इसके विपरीत अनेक ऐसे भी उल्लेख प्राप्त होते हैं, जिनसे जान पड़ता है कि पट किसी विशेष प्रकार, सम्भवतः रेशमी वस्त्रको कहते थे। पश्चिमी चालुक्य नरेश सोमेश्वर (११२४-११३८ ई०) ने अपने मानसोल्लासमें चित्रित वस्त्रोंके विविध सूतोंका उल्लेख किया है, उसमें कर्पास (कपास, रुई), क्षौम (सन पाट आदि पौदोंसे निकाले जानेवाले सूत), रोम (ऊन)के साथ साथ पट्टसूत्रका भी उल्लेख किया है, जो प्रसंगके अनुसार रेशमी सूत अनुमान किया जा सकता है। कल्हणके राजतरंगिणीमें एक स्थानपर इस बातका उल्लेख है कि श्रीनगरसे वराहमूल (बारामूला) जानेवाले मार्गमें स्थित पट्टन (आधुनिक पटन) पट्टवानर् (पट्टकी

बुनाई)के लिए प्रसिद्ध था। इससे भी प्रकट होता है कि पट्ट रेशम को कहते थे। ज्योतिरीश्वर ठक्कुर (चौदहवीं शती)ने वर्णरत्नाकरम वस्त्रोंकी तीन सूचियाँ दी हैं। एक सूची तो सूती वस्त्रोंकी है। दूसरी दो सूचियोंके विषय हैं—पटम्बर जाति वस्त्र और देशी पट्ट। इनसे भी स्पष्ट है कि पट सूती वस्त्रोंसे भिन्न वस्त्रको कहते थे। पाटके अन्तर्गत पट्टके किस अर्थको ग्रहण किया गया है, यह निश्चित रूपसे कहना कठिन है। पाट कदाचित उन रेशमी वस्त्रोंको कहते रहे हों, जिन्हें ज्योतिरीश्वरने देशी पट्ट-वस्त्र कहा है। किन्तु लोकमें प्रचलित व्यवसाय बोधक जाति सज्ञा पटुआ और पटहरा इस ओर सकेत करते हैं कि लोकमें पाट सूती वस्त्रकी सज्ञाके रूपम ही ग्रहण किया गया रहा होगा। प्रस्तुत प्रसग भी इसीका समर्थन करता जान पड़ता है। पटोर-पटोल अथवा पटोला नामक वस्त्र आज भी गुजरातमे काफी प्रसिद्ध है। वहाँ ऐसे वस्त्रको पटोला कहते हैं जिसके सूतको बुननसे पूर्व ही, निश्चित डिजाइनके अनुसार बाँधन पद्धतिसे रग लिया जाता है। चौदहवीं शतीम वहाँ इसका प्रचार साडीके रूपम काफी हो गया था, ऐसा वहाँके प्राचीन फागुओको देखनेसे जान पड़ता है (प्राचीन फागु सग्रह, ४।३९, ६।५१)। वर्णकोंमें इसका उल्लेख पटोलु, पटुला, पटुली आदि नामोंसे हुआ है (वर्णक समुच्चय, १८१)। इतिहासकार जियाउद्दीन बारनीने भी पटोलाका उल्लेख अलाउद्दीन खिलजीको देवगिरिसे प्राप्त वस्तुओंमें किया है (पृ० ३२३)। पटोलका प्राचीनतम उल्लेख सोमदेवके यशस्तिलक चम्पूम मिलता है। वहाँ उसकी गणना "पट्टकूलवस्त्राणि"के अन्तर्गत हुई है (पृ० ३६८)। बारहवीं शतीके मेदिनी कोषम पटोलको रेशमी वस्त्र बताया गया है (१८७।१६६)। पटोरका उल्लेख वर्ण-रत्नाकरमें पहली बार हुआ है। ज्योतिरीश्वर ठक्कुरने उसे देशी पट्टवस्त्रोंके अन्तर्गत रखा है। नरपति नाल्हने बीसलदेव रासोमें पाट पटम्बरका उल्लेख किया है जो पाट पटोरका समानार्थी जान पड़ता है। इसके अनुसार पटोर पटम्बरका ही पर्याय ठहरता है। इस प्रकार जान पड़ता है कि पटोर रेशमी वस्त्रकी लोक प्रचलित सामान्य सज्ञा थी। पाट-पटोर—उपर्युक्त विवेचनके पश्चात हमारी धारणा है कि पाट सूती और पटोर रेशमी वस्त्रको कहते थे और पाट पटोर बोलचालमें वस्त्रके लिए सामान्य ढगसे प्रयोग होता था।

३३

(रीलैण्ड्स १४)

तवल्लुद शुदने चाँदा दर खान ए महर व खिदमते कर्दने हमाँ सितारगान

(महरके घर चाँदाका जन्म और ज्योतिषियोंकी भविष्यवाणी)

सहदेव मंदिर चाँद औतारी। धरती सरग भई उजियारी ॥१
भले घरैं भयउ औतारू। दूज क चाँद जान सयँसारू ॥२
सातो चँदर नखत भा माँगा। जानों सूर दिपै जिंह आँगा ॥३
भये सपूरन चौदस राती। चाँद महर धी पदुमिनि जाती ॥४
राहु केतु दोइ सेउ गराहैं। सूक सनीचर बहिरैं चाहैं ॥५
औंर नखर अरकाउँ, आछँहि पँवर दुआर ॥
चाँद चलत नर मोहहिं, जगत भयउ उजियार ॥७

टिप्पणी—(५) सेउ—सबा, अधिक, बडे। गराहें—ग्रह। सेउ कराहें भी पढा जा सकता है। उस अवस्था में अर्थ होगा—सेवा करते हैं।

३४

(बीकानेर प्रतिके प्रकाशित पाठ से)

चाँद सुरुज तेहि निरमरा, सहदेव गिनी जुवारि ॥६
गन गंधर्ब रिसि देवता, देखि बिमोहे नारि ॥७

टिप्पणी—(७) गन गंधर्ब—गन्धर्व समूह। यह पूरी पंक्ति ९३वे कडवकमें भी है।

३५

(रीलैंड्स १५)

रोजे पंजुमे शबमी शबे ज्याफ्ते ख्वान्दा करदन व दीदन जुन्नारदारॉं ताले

(पाँचवें दिन रात्रिमें भोज और ब्राह्मणोंका कुण्डली देखना)

पाँचों दिवस छठी भइ राती। निउता गोबर छतीसो जाती ॥१
घर घर सभ कर निउता आवा। औ तिंह ऊपर बाज बधावा ॥२
महरें सहस सात एक आये। अंग मूड़ सेंदुर अन्हवाये ॥३
बाँभन सभा आइ जो बइठी। काढ़ि पुरान रासि गुन दीठी ॥४
छटी का आदर देखि लिलारा। अरु दहि सों जाइ जिंवारा ॥५

अगिन बरक भा चाँदा, अरकत छुई न जाइ ॥६
जस उजियारें भुनगा, मरहि राई अदाइ ॥७

टिप्पणी—(१) निउता—न्योता, निमन्त्रित किया।
(३) सात—साठ पाठ भी सम्भव है।
(४) पुरान—यहाँ तात्पर्य ज्योतिष ग्रन्थोंसे है। इसका प्रयोग जायसीने भी इसी अर्थमें किया है (५२।२)। रासि—राशि। गुन—गुण। दीठी—देखा।
(५) भुनगा—दीपक पर मँडरानेवाला कीट, पतंग।

३६

(रीलैण्ड्स १६)

सिफ्ते जमाल सूरते चाँदा दरहम शहरहा मुन्तशिर शुद

(समस्त नगरोंमें चाँदाके सौन्दर्यकी चर्चा)

बरहें माँस [प्र*]गटी बाता। धौरसमुँद माबर गुजराता ॥१
तिरहुत अउध बदाऊँ जानी। चहूँ भुवन अस बात बखानी ॥२
गोवरहि आह महर कै धिया। चाँद नाउ धौराहर दिया ॥३
अस तिरिया जो माँगे पाई। अरु तिहि लाइके बियाहैं जाई ॥४
राजा के नित बरउत आवँहिं। फिरि जाँहिं पै उतर न पावँहिं ॥५
महर कहै को मोरै जोगहि, कासों करउँ बियाहु ।६
तकतै चितत सबको आँहे, जात न देखउँ काहु ॥७

टिप्पणी—(१) बरह—बारहवें। धौरसमुद—द्वारसमुद्र, डोरसमुद्र, दक्षिणमें वेलूरसे आठ मील उत्तर पश्चिम स्थित सुप्रसिद्ध नगर, जो १०६२ ई० से होयशळोंकी राजधानी थी। माबर—दक्षिण पूर्वी तटवर्ती भाग जो प्राचीनकालमें चोळमण्डल और आजकल कारोमण्डल कहलाता है, दूसरे शब्दोंमें मद्राससे लेकर तिन्नेवेली तक विस्तृत प्रदेश। तिरहुत—तीरभुक्ति, बिहारका मैथिल प्रदेश।
(२) अउध—अवध। बदायूँ—उत्तर प्रदेशका एक मुख्य नगर जो दिल्ली सुल्तानोंके शासनकालमें अपना विशेष महत्व रखता था।
(३) धिया—धी, पुत्री।
(४) तिरिया—स्त्री, नारी।

(५) बरउत—सगाई पक्का करनेके निमित्त आनेवाले नाई और ब्राह्मण।
(६) जोगहिं—योग्य, पद मर्यादामें समान। कासों—किससे।

३७

(रीलैण्ड्स १७)

पुरिस्तादने राय जीत बाँमन व हज्जाम रा बर महर बराये पैगाम बावन रो

(राय जीतका बावनके विवाहके सन्देशके साथ नाई और ब्राह्मणको भेजना)

चौथें बरिस धरसि जो पाऊ। जीत बुलावा बाँभन नाऊ ॥१
दीनि बिसारी मोतिन्ह हारू। कहहु महर सों मोर जुहारू ॥२
औ अस कहहु मोर तूँ भाई। राजा नीके करहु सगाई ॥३
औ जस जान कहसि सँवारी। जइसन घर घर सुनी सँकारी ॥४
महर कहसि को मुँहि पै आजू। हम चाहत हहिं आपन काजू ॥५
इत कहि के बाँभन नाऊ, दोऊ दीन्हि चलाइ।६
घरें चाँद बावन कँह, बेग कहउ मुँहि आइ ॥७

टिप्पणी—(१) जीत—चेत पाठ भी सम्भव है।
(२) जुहार—प्रणाम।
(३) अस—ऐसा। मोर—मेरा। नीकें—अच्छे।
(४) जस—जैसा। जइसन—जैसा।

३८

(रीलैण्ड्स १८)

आमदने बरँमन व हज्जाम बर महर व अर्जे कर्दने पैगामे-बावन

(ब्राह्मण और नाईका महरके पास जाकर बावनका सन्देश कहना)

बाँभन नाऊ गये सिंहवारू। देख महर दुहुँ कीन्हि जुहारू ॥१
महर कहा कित पाँडे आवा। औहट लहि औघारी पावा ॥२
सुनहु देउ मम जीत पठाई। धरम लाग चितन्ते आई ॥३
उहो आह तुम्हारेउ भाई। राजा नीकें करहु सगाई ॥४
धरमराज तुम जुग जुग पावहु। हम दिये कर बोल सुनावहु ॥५

जात करम गुनआगर, देस मान सम लोग ।६
सुनै बोल जीतइँ दीजइ, बेटी बावन जोग ॥७

टिप्पणी—(१) सिंहबारू—सिंहद्वार, प्रवेशद्वार। कित—कहाँ, कैसे।

(२) औहट—ओट, सहारा; यहाँ तात्पर्य आसनसे है। औधारी—अवधारण> औधारन> औधार, रखना, बैठना। पावा—लीजिये। औहट लहि औधारी पावा—आसन लेकर बैठिये, आसन ग्रहण कीजिये।

(३) बितन्तै—वृतान्त, अभिप्राय।

(४) उहो—वह भी। आइ—है। नीके—अच्छे।

३९

(रीलैण्ड्स १९)

जबाब दादने बरँमन व हज्जाम रा अज ताले चाँदा व बावन

(बावन और चाँदाकी जन्मकुण्डली देखकर ब्राह्मण और नाईका उत्तर)

सुन साधो तू पंडित सयानाँ। गुनितकार कस होत अयानाँ ॥१
छठ आठैं गसैं जड़ रासी। घरी धरसु औ गुनत खुलासी ॥२
अस फुनि असकत करी न जाई। पाछे रहे न तोर बुराई ॥३
नेह सनेह जो बिरथ न होई। कहां क पुरुष कहां कै जोई ॥४
दयी लिखा जो ई आहा। ताको हम तुम करिहहिं काहा ॥५
तोर कहा हौं कैसे मेटौं, सुनिके रहौं लजाई ।६
गुनति रासि जिन भूलहु, पाछैं होइ पछताइ ॥७

टिप्पणी—(१) अयाना—अज्ञानी।

(२) जड़रासी—जड राशि—कन्या और वृश्चिक; छठे घरमें कन्या और आठवें घरमें वृश्चिक।

(३) असकत—आलस्य।

(४) जोई—नारी।

(५) मेटौं—मिटाऊँ, टालूँ।

४०

(रीलैण्ड्स २०)

बाज नमूदने बुजारदार पैगामे-बावन व कबूल कर्दने महर व दहानीदने नेग

(ब्राह्मणके बावनका सन्देश कहनेके पश्चात् महरका उसे स्वीकार करना नेग दिलाना)

बाँभन टीक बोल कै पाई । बरउ चाँद रहु मोर बड़ाई ।।१
तूँ नरिन्द देस कह राऊ । तोकहँ बरहि न आवइ काऊ ।।२
रास गुनित कर नाँउँ न लीजा । राइ जीत घर बेटी दीजा ।।३
दयी लाग काज जो करा । ताकर धरम दुहूँ जग धरा ।।४
बाँभन बोल महर जो मानाँ । गोद क बनिज दिचाई पाना ।।५
सेंदुर फूल चढ़ाये, औ मोतिंह गलहार ।६
देत चाँदा बावन कहँ, तीर लाउ करतार ।।७

४१

(रीलैण्ड्स २१)

बाज गश्तन बुजारदार व हज्जाम व बाज गुफ्तन कैफियत निकाह बर जीत

(ब्राह्मण और नाईका वापस आकर जीतसे सगाईकी बात कहना)

तेल फुलेल दुवउ अन्हवाये । अपुरुब बस्त्र काढ़ि पहिराये ।।१
महर मंदिर जेइहिं जेवनारा । लीन्हि पान भये असवारा ।।२
दयी असीस फिरायी बागा । रहत चले बोल भल लागा ।।३
जायि जीत घर देत बधाई । बरी चाँद बावन कहँ पाई ।।४
पह भयी निसि अँधियार बिहावा । करहु बियाह चाँद घर आवा ।।५
जीत बुलाये लोग कुटुँब, जिन सुन्ह एक सत आइ ।६
महर देत बावन कँह चाँदा, चलहु नियाहँ जाइ ।।७

टिप्पणी—अन्हवाये—स्नान कराया ।

४२

(रीलैण्ड्स २२)

रवाँ कर्दन जीत बराय निकाह बर कर्दन दर खाने रायि महर

(विवाहके निमित्त रायि महरके घर जीतका बारात रवाना करना)

भार सहस दोइ लादू लावहिं । चाँचर पापर बहुतै पकावहिं ॥१
कीन्ह खिरोरा औ केसारा । फल कंडोर भये असँभारा ॥२
चीर पटोर बराती माँगा । टाँका लाख सो अभरन लागा ॥३
डाँडी असी नवै इक चली । एक एक जाइ सो एक एक बहली ॥४
सात आठ से घोर पिलाने । भये असवार राइ औ राने ॥५
जस बसन्त रितु टेसू फूलैं, जिंह अस देखी रात ।६
भाट कलावंत बहुरिया, तस होइ चली बरात ॥७

टिप्पणी—(२) खिरौरा—इसका उल्लेख जायसीने भी किया है (पदमावत ५८६।?), ग्रियर्सनके अनुसार चाँवलके आँटेसे गर्म पानीमें बनाये हुए लड्डू (बिहार पेजेण्ट लाइफ, पृ० ३४७)। केसारा—सम्भवतः कसार, आटा भून कर शक्कर मिलाकर बनाया हुआ लड्डू । यह पूर्वी उत्तर प्रदेशमें विवाहके अवसरपर विशेष रूपसे बनाया जाता है। कंडोर—सम्भवतः शुद्ध पाठ खँडोर होगा। इसका तात्पर्य मिठाईसे होगा।

(३) टाँका—टक, दिल्ली सुल्तानोंके समयमें प्रचलित चाँदीका सिक्का जिसका वजन १६८-१७० ग्रेन था।

(५) पिलाने—पील, हाथी।

(७) कलावन्त—गायक। बहुरिया—नर्तकी।

४३

(रीलैण्ड्स २३)

निशानीदन जीत रा दर खाने व रवादने निकाह मियाने बावन व चाँदा

(जीतका स्वागत और बावन-चाँदाका विवाह)

जहाँ महर घतसार सँवारी । आन बरात तहाँ बैसारी ॥१
छींपर नेत पटोर बिछाई । कुसुँभी एक रंग तिंह लाई ॥२

दिया सहस चहूँ दिसि बारा । घर बाहर सभ भा उजियारा ॥३
भयी जेउनार फिर आये पानाँ । बेद भनहिं बाँभन परधानाँ ॥४
मानुस बहुत सो देखत रहा । कोउ कहे रात देवस कोउ कहा ॥५
लाये बरन्हि बाबन कँह, चाँदा आरति दीन्ह उतार ।६
जात सराकत देखेउ नाहीं, बेटवा भीमर बार ॥७

टिप्पणी—(२) छाँपर—छपा हुआ । नेत (स० नेत्र)—इसका उल्लेख बाणभट्ट और उसके पश्चात्के प्राचीन और मध्यकालीन साहित्यमें प्राय मिलता है । क्षीरस्वामीके कथनानुसार वह जटांशुक था । अन्यत्र उसे सूक्ष्म रेशमीवस्त्र (सूक्ष्मपट्टदुकूलवाललाना) बताया गया है । नेत्रका अर्थ बटा हुआ भी होता है । यह इस बातका सकेत करता है कि वह बटे सूतका बनता रहा होगा । ऐसा जान पडता है कि यह वस्त्र पहननेके काममें कम, बाहरी कामके लिए ही अधिक प्रयुक्त होता था, यहाँ इसके फर्शपर बिछाये जानेका उल्लेख है । धनपाल (९७२ ई०) ने अपनी तिलकमजरीमें इसके बने वितानका उल्लेख किया है (पृ० ९१) । किन्तु उत्तम कोटि नेत्रका उपयोग परिधानमें भी होता था ऐसा नल चम्पू (आरम्भिक १०वीं शती) से जान पडता है (पृ० २१८) । पटोर—देखिये पीछे ३२।७ ।
(७) भीमर—काना, दोषयुक्त नेत्र । बार—बाल, अल्पवयस्क ।

४४

(रीलैण्ड्स २४)

सिफ्त जहेज चाँदा गोयद

(दहेजका वर्णन)

गाँव बीस भल दायजि पाये । फीनस एक दरब भरि आये ॥१
घोर पचास आन कै ठाढ़े । टंका लाख हथ तै बाँधे ॥२
चेरी चेर सहस एक पावा । गाइ भैंस नहिं गिनत बतावा ॥३
कापर जात बरन को काहा । हीरा मोंति लागि जिंह आहा ॥४
सेज सौर कर नाँउ न जानाँ । कहाँ सेज अस काह बखानाँ ॥५
चाउर, कनक, खाँड घिउ, लोन, तेल निसबार ।६
लाद टाँड भुकराना, बरदं भये असँभार ॥७

टिप्पणी—(१) उत्तर पदका भैस एक अरब बहिराये पाठ भी सम्भव है। किन्तु तीसरे यमकको देखते हुए भेस पाठ यहाँ सम्भव नहीं है। अरबकी अपेक्षा दरब मूल लेखके अधिक निकट है।

(५) सौर—ओढना विछौना, दिल्ली मेरठकी बोलीमें सौरका अर्थ रुई भरी रजाई है जो ओढनेके काम आती है। चित्रावली (२१३।७) से ज्ञात होता है कि रुई भरे हुआ बिछानेके गद्देको सौर कहते हैं (सौरि माँह जिन विनउर टोवा। कुस साँथरि सो कैसैं सोवा ॥) जायसीने भी इसका कई स्थलोंपर उल्लेख किया है (१२९।२, ३३५।४, ३३६।६, ३४०।२) पर उन्होने सौर-सुपेती युग्म का प्रयोग किया है और उसका तात्पर्य कहीं ओढने और कहीं बिछौनेसे है (देखिये—वासुदेवशरण अग्रवाल, पदमावत ३३५।४ टिप्पणी)।

(६) चाउर—चावल। कनक—आग। खाँड—शक्कर, चीनी। घिउ—घी। लोन—लवण, नमक। बिसवार—मसाला।

(७) डाँड—सामग्री। मुकरावा—मुकलावा, दहेजमें प्राप्त वस्तुएँ।

४५

(रीलैण्ड्स २५)

दुआजदहुम साले बुदन निकाह चाँदा व बावन व नजदीक नेआमद ने बावन

(चाँदा-बावनके विवाहके बारह साल बाद, बावनका चाँदाके पास न जाना)

बरख दुआदस भयउ बियाहू। चाँदा तरै सोक जस नाहू ॥१
उनत जोबन भइ चाँदा रानी। नाँह छोट औ आँखियौ कानी ॥२
जाकहिं पिउहर बोलै लोगू। सो वै चाँद न दीन्हों भोगू ॥३
हाथ पाउ मुख चरम न धोवा। औ तिह ऊपर संग न सोवा ॥४
दइया कौन मैं कीन्हि बुराई। सरैं कचोरैं बूडेउ आई ॥५
रात देवस मन झुरवइ, ऊपह सास केरोई ।६
चाँद धौराहर ऊपर, बावन धरती सोइ ॥७

टिप्पणी—(१) दुआदस—द्वादश, बारह। नाहू—नाथ।

(२) उनत—उन्नत, उभरा हुआ। नाँह—पति।

(५) कचोरै—कटोरा।

(६) झुरवइ—(सं० स्मृ० धातुका प्रा० धात्वादेश झरई; चिन्तित रहती है। केरोइ—कुरेदती है, कोंचती रहती है।

४६

(रीलैण्ड्स २६)

गिरिया व जारी कर्दन चाँदा अज दूर मानदने बावन व सुनीदने नन्द

चाँदाका विरह-विलाप; ननद का सुनना)

बरस देवस भा चाँद बियाहें। सूर न देखी आछी छाँहें ॥१
पतिवाँती निसि सेज दुहेली। सो धनि कैसे जिये अकेली ॥२
बावन काउ पूछि नहिं बाता। हौं रे न जीयउँ कार क राता ॥३
एको साध न हियें बुझानीं। मुयों पियासन नाँक लहि पानी॥४
यहिं बिरहें उठि मैंकें जाऊँ। तैसों राँड़ सुहागिन नाँऊँ ॥५
ननद बात सब सुन के, कही महरि सों जाइ ।६
दीदी जाय मनावहु, चाँदा [रजलस*] खाइ ॥७

टिप्पणी—(२) दुहेली—दोके साथ।

(७) दीदी—माँ। यह प्रयोग असाधारण है। पिताके लिए दादा सम्बोधन लोकमे प्रचलित है। सम्भव है उसीके अनुकरणपर माँको दीदी कहा जाता रहा हो। पर अब इसका प्रयोग बड़ी बहनके लिए होता है। दाउदने अन्यत्र (३९९।१) सासके लिए भी बहुमे यही सम्बोधन कराया है।

४७

(रीलैण्ड्स २७)

आमदने उलुअ व तफ्हीम कर्दन चाँदा रा

(सासका आकर चाँदाको समझाना)

सुनिके महरि चाँद पहँ आयी। काहे बहू रजलस खायी ॥१
दूध दाँत तूँ बिटिया बारी। तूँ का जानसि पुरुख अढ़ारी॥२
तूँ अचेत पुरुख का जानसि। बिन पानी सातू कस सानसि॥३

सोन रूप भल (अभरन) आई । दिन-दिन पहिरहु चीर धोआई ॥४
जौलहि पावन होइ सँजोगा । पान फूल रस करिहै भोगा ॥५
जो तुम्ह रायि महर के चेटी, अजहुँ कुर न लजाइ ।६
तात दूध अवटहु, वहि चाँदा पीय सिराइ ॥७

मूल पाठ—४ भल फिर पहिराइ या भल फिर फिर आइ है। पर इनमेसे कोइ भी प्रसग सगत पाठ नही है। हमारी समझम मूल पाठ अभरन रहा होगा। जान पड़ता है लिपिक आरम्भका अलिफ और अन्तका नून लिखना भूल और बीचके भरको दो बार लिख गया है।

टिप्पणी—(३) सातू—सत्तू भुने हुए चने, जौ, मटर आदि का मिश्रित आटा जिसे पानीमे घोल अथवा सान कर नमक अथवा शक्कर मिला कर खाया जाता है। यह पूर्वी उत्तर प्रदेश और बिहारके लोक जीवन म बहु प्रचलित भोजन है।

(६) कुर—कुल।

(७) तात—गर्म।

४८

(रीलैण्ड्स २८)

जवाब दादने चाँदा मर खसुअ रा

(चाँदाका सासको उत्तर)

तुम्ह हूँ सास अतहिं गँवानी । रासहु दूध पियायहु पानी ॥१
दही न देइ खाँउ जिहँ लाई । महरैं कै हो परी अदाई ॥२
सोन रूप का हमरे नाहीं । जनाँ सहज जेउनारहि खाही ॥३
तुम्हरे घी जो सीरें आहा । पीउ न पूँछत बोलहु काहा ॥४
अबलहि मे कुर आपन धरा । काम लुबुध निरहें तन जरा ॥५
निसि अँधियार नीर घन, बीज लवइ मुँइ लागि ।६
सेज अकेलि फाटि मोरि हिरदँ, जो जो देखउँ जागि ॥७

४९

(रीलैण्ड्स २९)

गुस्सअ कर्दने ससूअ बर चाँदा दर व रज़ा दादन बराम महर रफ्तन

(सासका चाँदसे क्रुद्ध होकर महरके घर चले जानेको कहना)

तोरे आध मैं तहिया जानी। बात कहत तूँ मुँहि न लजानी ॥१
तोकों चाही कीतर पसेऊ। बिन दहि मथें के निसरे घीऊ ॥२
बावन मोर दूध कर पोवा। निस कित बावन तों संग सोवा ॥३
तूँ अमरैल न देखसि काहू। बिन धहि कस नबइ गयाहू ॥४
जौलहि बावन होइ सयाना। और बियाहि के हैं तो आना ॥५
जो तूँ जैहसि मैकें, अभै पठौं सन्देस।६
कहाँ कर तूँ बाँगर बिटिया, जारौं सोई देस ॥७

५०

(रीलैण्ड्स ३०)

तल्बीदने चाँदा बुलादार रा व फिरिस्तादने दुश्वारी बर पिदर

(चाँदाका ब्राह्मणको बुलाकर पिताके पास अपना कष्ट कहलाना)

चाँदहि गरुव भयउ घरबारू। चेरी बाँभन जाइ हँकारू ॥१
आइ सो बाँभन दीन्ह असीसा। चन्द्र बदन मुख फेंफर दीसा ॥२
परहँसि कहि सँदेस पठावा। बोल थाक हियँ घबरावा ॥३
नैन सीप जस मोतिहँ भरे। रोयसि चाँद आँसु तस ढरे ॥४
चोली चीर भीज गा पानी। जनु अभरन सों गांग नहानी ॥५
बाँभन कहसु महर सों, मोरै दुख के बात।६
भाइ कहार सुखासन, बेगि पठउ परभात ॥७

५१

(रीलैण्ड्स ३१)

बाज नमूदने बरँहमन बर महर आरानीदने महर चाँदा रा व दास्तन बर खानः

(ब्राह्मणका महरसे सन्देश कहना और महरका चाँदाको
अपने घर बुलाना)

बाँभन जाइ महर सों कहा। हियें लाग दौं जरतहिं रहा ॥१

जस मँछरी देखी बिनु पानी । (तरपत) महरँ रैन बिहानी ॥२
भानु सँझान न कीत बयारू । कैसँ आह सो चाँद दुलारू ॥३
देत सुखासन चले कहारा । नाती पूत भये असवारा ॥४
धानुक पाँयक आगे बैठे । जीत महर के बासर केते ॥५
काढ़ि चाँद बैसार सुखासन, तुरत बेग लै आइ ।६
बरनी होइ महर गै, चूँब चाँद के पाइ ॥७

मूलपाठ—२-बितत ।
टिप्पणी—(१) दौं—दावाग्नि ।
(३) भानु—सूर्य । सँझान—अस्त हुए । कीत—किया । बयारू—ब्यालू, रात्रिका भोजन ।
(४) सुखासन—पालकी ।

५२

(रीलैण्ड्स ३२)

आमदने चाँदा दर खानये मादर व पिदर व रसीदन सहेलियान चाँदा रा

(चाँदाका मैके आना और सहेलियोंसे भेट)

कुँकुँ मरद चाँद अन्हवाए । सेंदुरी चीर काढि पहराए ॥१
माँग चीर सिर सेंदुर (पूरी) । जानहु चाँद फेर औतरी ॥२
सखी सहेलिन देखन आईं । हँस हँम चाँद बहिरि कैं लाईं ॥३
सेज पिरम रस बनिज सुहागू । पिरत पियार भुगति कम भागू ॥४
अंक बैठि देखहुँ जिह पासा । कहँहु चाँद कस कीन्ह बिलासा ॥५
चाँद सहेलिन पूँछि रस, धौरहराँ लाइ ।६
सीत आह जिनु भरु, कहु कैसँ रैन बिहाइ ॥७

मूलपाठ—२-पूरा ।
टिप्पणी—(२) सेंदुर पूरी—माँगमें सिंदूर भरनेको स्त्रियाँ सेंदुर पूरना कहती हैं ।

५३

(रीलैण्ड्स ३३)

जवाब दादने चाँदा बा सहेलियाने खुद चहार माहे जमिस्ता

(चाँदाका सहेलियोंको उत्तर—जाड़ेके चार मासका वर्णन)

जस तुम्ह पूछहु तस हौं कहौं । बुर कै कान लजाती अहौं ॥१

माह माँस मो यों धुँधुवाई। लागी सीउ न पीउ तन आई ॥२
रैन झमासी परी तुनारू। हियें अँगीठी चरा मरारू ॥३
बिरहिन नैन न आग बुझायी। सौर-सुपेतीं जाड़ न जायी ॥४
अस कै सखी निगोतिउँ नाँहाँ। सेज बहै निसि जलहर माँहाँ ॥५
जस बरै दह मारे, हींउँ सरहि सुखाइ ।६
पिउ बिरहैं मोर जोबन, फूल जैस कुँभलाइ ॥७

टिप्पणी—(४) सौर सुपेतीं—बिछौना, बिस्तर।

५४

(पंजाब [प])

कैफियत वर्दन चाँद फिराक माह फागुन पेश सहेलियान गुदार्द गौहर

(चाँदा का सहेलियों से फागुन मास में पति-बिरहकी स्थिति का वर्णन करना)

कहाँ सखी माह माँस कै बाता। करसि रांग सभै धनि राता ॥१
कर गहि गरों कन्त लै लावउँ। उठ के पिया सरि सेज बिछावउँ ॥२
गिल दिन बाढ़ होइ तिलसानी। हौं तिल एक पिय संग न जानी ॥३
रैन डरावन बरबर कारी। घटै न आवइ बजर कै मारी ॥४
जागत लोयन आधी राती। पहरेदर पिउ घर तरसहिं राती ॥५
रैन तुमार जनु कछु थोरों, रहौं भू पर गिय लाइ ।६
सौर सुपेती कन्त बिनु, तिल एक थाँभ न जाइ ॥७

टिप्पणी—शीर्षक में फाल्गुन मास का उल्लेख है। कडवक में माघ मास का वर्णन है। (१) माह—माघ।

५५

(पंजाब [ल])

(फाल्गुन वर्णन)

फागुन पवन झरहिं बन पाता। खेलहिं फाग जिह सद पिउ (राता*) ॥१
फूल सुहावा फूज औ करनाँ। बहुल चइंठ देखि दइ धरनाँ ॥२

सुन्दर फागुन [------] री। केम सिंगार क [-------] ॥३
जिह रस दीस नन फूले टेसू। हा पी निन भइ बारन भेसू ॥४
[ ]। [ ] ॥५
[ ] ।६
[ ] ॥७

टिप्पणी—उपलब्ध फोटो में शीर्षक और अन्तिम तीन पंक्तियाँ नहीं आयी है। तीसरी पंक्ति भी अत्यन्त अस्पष्ट है।

(१) फागुन पवन—फगुनहट यह बहुत तेज और बरफीली होती है।
(२) कूज—इसे फारसी म कूजा कहते हैं। आइने अकबरी म इसे गुलाब क आकृति का फूल कहा गया है। सम्भवत यह मोतिया या बेल का ही फारसी नाम है। करना (स० कण)—मोनियर विलियम्स के संस्कृत कोष क अनुसार कण अमलतास और आक (मदार) के पुष्प को कहते है। हिन्दी शब्द सागर मे इसे केवड की तरह लम्बे कितु बिना काटोवाला पौधा कहा गया है और पर्याय रूपम सुदर्शन का उल्लेख है। आइने अकबरी क फूलो की सूची म इसे वसन्त म फूलनेवाला सफेद फूल बताया गया है।

५६

(पजाब [प])

(चैत वणन)

चैत नॉग सब क [-----] ई। [----] तर होइ भुइँ [-----] ॥१
जोह कहो सभ जग होली। [----- --] धरती फूली ॥२
नौ खंड फूले फूल सुहाए। [-- ---- -------] ॥३
सखी बसन्त सभ देख [----]। [---------------] ॥४
हीउर जैस बैसन्दर जरै। [---------------] ॥५
[------------------------] ।६
[--------------- -------] ॥७

टिप्पणी—यह पृष्ठ अत्यन्त जीण अवस्था म है। इसका अधिकाश अंश गायब है। जो रचा है वह भी उपलब्ध फोटो म अत्यन्त अस्पष्ट है। अत जो कुछ अनुमानत पढा जा सका दिया गया है। पर इसे एक सामान्य वाचन ही मानना चाहिये।

५७-६५

(अप्राप्य)

[सम्भवत. यहाँ शेष नौ महीनों का वर्णन नौ कडवकों मे रहा होगा ।]

६६

(बम्बई २२)

आमदने बाजिर दर गोबर व गुजिश्तन बजारे जेरे चाँदा व
दीदन व आशिक शुदन व उफ्तादन

(गोवरमें बाजिरका आना और चाँदाके महलके नीचेसे आना
, और उसे देख कर मोहित होकर मूर्छित होना)

बाजिर एक कितहुत आवा । गोबर फिरै बिहाऊ गावा ।।१
घर घर भुगुति माँग लै खाई । खिन खिन राजदुआरिहँ जाई ।।२
दिन एक चाँद धौरहर ठाढ़ी । झाँकसि माँथ झरोखा काढ़ी ।।३
तिह खन बाजिर मूँड़ उचावा । देखसि चाँद झरोखें आवा ।।४
देखतहिं जनु नौहारहिं लीन्हा। बिदका चाँद झरोखा दीन्हा ।।५
धरहुत जीउ न जानैं कितगा, कया भई बिनु साँस ।६
नैन नीर देह मुँह छिरकेंहि, आये लोग जिहि पास ।।७

टिप्पणी—(१) बाजिर- -चक्रयानी योगी । बिहाऊ—विराग ।
(२) भुगुति—भुक्ति, भोजन ।
(३) माँथ—सर । झरोखा—(स० जल गवाक्ष) महल का वह स्थान या गोख जहाँ बैठ कर राजा प्रजा को दर्शन देते या महल से बाहर देखते थे, खिडकी । काढ़ी—निकाल कर ।
(४) मूँड—सर । उचावा—ऊँचा किया, उपर उठाया ।
(५) नौहारहिं—मर कर जी उठने को नौहार लेना कहते हैं । बिदका—बन्द कर दिया ।

६७

(रीलैण्ड्स ३४)

बरसीदने खल्क बाजिर रा अज हाले बेहोशी

(बाजिरकी मूर्छा सुन कर जनताका आना)

कहु बाजिर तोर बेदन काहा । लोग महाजन पूछत आहा ।।१
पीर कहसि तू मँह बिनानीं । औखद मूर देहुँ तिहिं आनी ।।२

कै जर जाद कै पेट कै पीरा । कै सिर दाह को डसहुँ कीरा ॥३
कै खर लाग घाम कै झारा । पान पेट तूँ गा बिसँभारा ॥४
कै दरसन काहू कै राता । पिरम भुलान कहसि नहिं बाता॥५
कै तिहँ अरथ गँवावा, मार लीन्ह बटमार ।६
नाउँ न कहसि नहिं ताकै, बाजिर मुरुख गँवार ॥७

टिप्पणी—(३) जर—ज्वर । जाद—अधिक । सिरदाह—सिरदर्द । कीरा—सर्प ।
(४) खर—तीव्र । घाम—धूप । झारा—गरमी । बिसँभार—बेहोश ।
(६) बटमार—बटमार, रास्तेमें यात्रियोंको लूटने वाले ।

६८

(रीलैण्ड्स ३५)

जवाब दादन बाजिर मर खल्क रा तरीके मुअम्मा

(सांकेतिक ढंगसे बाजिरका जनताको उत्तर)

लोग कहँ यह मुरुख अयानां । कहौं हियारी बूझ सयानां ॥१
सिरिख ऊँच फल[१] [लाग[*]] अकासा । हाथ चढ़ै कै नाँही आसा ॥२
गहि चूकत को बाँह पसारे । तरुवर डार धरैं[२] को पारे ॥३
रात देवस राखहिं[३] रखवारा । नैन जो देखैं[४] जाइ सो मारा॥४
उरग डार फिरि देखेंउ रूखा । कँवल फूल मोर हिरदैं सूखा॥५
पियर पात जस बन जर, रहेउँ काँप कुँभलाइ ।६
बिरह पवन जो डोलेउ, टूट परेउँ यहराइ ॥७

प्रस्तुत कडवककी दूसरी तीसरी और चौथी पंक्तियोंको हजरत रुक्नुद्दीनने अपनी पुस्तक लताइफे कुद्दूसियामें उद्धृत किया है और उसके साथ अपने पिता अबदुलकुद्दूस गंगोहीका किया हुआ उनका फारसी अनुवाद भी किया है। वह इस प्रकार है :

(२) शजरे बलन्दस्त समर दर समा । किता उमीदस्त वरा दस्ते मा ॥
(३) जह किरा दस्त फराजी कुनद । शाखे फलक दस्त के बाजी कुनद ॥
(४) रोज शब गश्ता निगहबा बसे । कुश्तः शवद चूँकि बबीनद कसे ॥

पाठान्तर : लताइफे कुद्दूसियासे ।
१—फर । २—छुवै । ३—बहुत । ४—नैनन देखहि ।

टिप्पणी—(५) उरग -साँप ।

६९

(रीलैण्ड्स ३७)

इस्तफ्हाम नमूदन बाजिर पेशे खल्के शहरे गोवर

(गोवरवासियोंसे बाजिरका प्रश्न)

हौं मारेउँ इँह गाँव तुम्हारे । नैन बान हत गयी बिसारे ॥१
रकत न आवा दीस न घाऊ । हियें साल मोर उठै न पाऊ ॥२
किते मैं देख धौराहर ठाढ़ी । हते नैन जिउ लै गइ काढ़ी ॥३
कौन बनिज मोर आगे आवा । लाभ न बिसवा मूर गँवावा ॥४
हौं तुम कहेउँ बोल पतियाहू । जैं मारेउँ तिहि कहू न काहू ॥५
पूछि देखि तिह घायल, रात पीर जो जाग ।६
गयो सो जान जिह मेला, कैसो जान जिय लाग ॥७

टिप्पणी—(१) बिसारे—विषाक्त ।

७०

(रीलैण्ड्स ३७)

गुरीख्तने बाजिर अज शहर गोवर बेतर्से राय महर

(राय महरके भयसे बाजिरका गोवर नगर छोड़कर भागना)

बाजिर देखि मींचु मोर आई । गोवर तजि हौं जाँउ पराई ॥१
कहा दीख मँह नींद न (आवइ) । भूख गयी अन-पानि न भावइ ॥२
जो सो तिरी फिर दिखरावइ । औहट मींचु नियर होइ आवइ ॥३
महर पास जो कहि कोउ जाई । खिन एक भीतर खाल मढ़ाई ॥४
बिधना क कहा बिसेखैं कीजा । आनैं बाँच बर सासो जीजा ॥५
चला छाड़ि कै बाजिर, बसा और ठहँ जाइ ।६
चाँद रहे मन भीतर, सँवर सँवर पछताइ ॥७

मूल पाठ—२-आवा ।
टिप्पणी—(१) मींचु—मृत्यु ।
(२) अन-पानि—अन्न-पानी, खाना-पीना ।

(६) इहँ—ठौर, जगह।
(७) सँवर सँवर—स्मरण कर करके।

७१

(रीलैण्ड्स ३८)

रसीदन बाजिर दर शहरी व सुरूद कर्दने बाजिर अन्दर शब व शुनीदने राय अज बाम

(बाजिरका एक नगरमें जाकर रातको गाना और छतपरसे राजाका सुनना)

एक खँड छाड आन खँड जाई। मॉस एक बाजिर बाट घटाई ॥१
पुनि जो आइ भयउ पैसारा। पैठि पौंरिया नगर दुआरा ॥२
बात बूझ सब लेतस नॉऊँ। भीख मॉग खाओं इँह गाँऊँ ॥३
राइ रूपचंद बॉठ सरेखा। नगर राज फिर बाजिर देखा ॥४
दिवस गयो निसि भयउ उबेरा। बाजिर फिर कर लेत बसेरा ॥५
तिहँ रात सुहावन, बाजिर ठोका तार।६
गाइ गीत चँदरावल, नगर भयउ झनकार ॥७

टिप्पणी—खँड—खण्ड, देश विभाग।

७२

(रीलैण्ड्स ३९)

दर रोज तल्बीदन राव बाजिर रा व पुरसीदन कैफियते सुरूदे शब

(दूसरे दिन रावका बाजिरको बुलाकर गानेका कारण पूछना)

दिन भा राजै बॉठ बुलावा। आज रात निसहँ कैं गावा ॥१
बॉठ कहा इँहवाँ क न होई। होइ रजायसु ऑनौं सोई ॥२
चहुँ दिसि बॉठें जन दौराये। बाजिर हेर टोह ले आये ॥३
पूछा राउ कौन तोर ठाऊँ। सुर कण्ठ तिह दीन्हि गुसाऊँ ॥४
आज रात निसहँ तैं गावा। चँदरावल मन रहरॉ लावा ॥५
गीत नाद सुर कवित कहानी, कथा कहु गाननहार।६
मोर मन रैन देवस सुख राख, भूँजसु गाउँ गितहार ॥७

टिप्पणी—(२) इहवाँ—यहाँ। रजायसु—राज्यादेश। आनौं—ले आऊँ।
(३) हेर टोह—ढूँढ़-खोज कर।
(७) गितहार—गीतकार, गायक।

७३

(रीलैण्ड्स ४०)

हिकायते दीदने चाँदा बयान कर्दन पेश राव रूपचन्द

(राव रूपचन्दके सम्मुख चाँदाके दर्शनका उल्लेख)

सुवन क सुनौं कहउँ हौं काहा। बोलेउँ सोइ जो देखउँ आहा ॥१
नगर उजैन मोर अस्थानू। बिकराजित राजा धरमानू ॥२
चारिउँ भुवन फिरत हौं आवा। गोबर देखेउँ नगर सुहावा ॥३
तिहवाँ चाँद तिरी मैं देखी। पाथर कीर जइस चित पैठी ॥४
मनहुत कइसहिं मेट न जाई। दिन-दिन होई अधिक सवाई ॥५
सहदेव महर कर धिय चाँदा, चहूँ भुवन उजियार ।६
मानिक जोत जान वर जरँहि, नागर चतुर अपार ॥७

७४

(रीलैण्ड्स ४१, बम्बई ६०)

आशिक शुदने राव बर नामे चाँदा व अस्प दहानीदन बाजिर रा

(चाँदाका नाम सुनकर रावका आसक्त होना और बाजिरको घोड़ा देना)

सुन कै चाँद राउ अँगरानाँ। बाजिर उधत नीर घर आनाँ ॥१
जस कौं छत बैठि उठि जागी। राजा हियें चटपटी लागी ॥२
तुरी दइ बाजिर कहँ आनीं। पीठ खाल पाखर सनवानीं ॥३
बाजिर कौन देस सो नारी। ठौर कहउ बरु तुमहि बिचारी ॥४
करन कहउ औ लखन बिसेखीं। अछरं रूप सो तिरिया देखी ॥५
मारग कौन कैस बेउहारा, लाँन छोट कस आह ।६
सहज सिंगार भोग रस, पिंडक, पराक्रित कै चाह ॥७

पाठान्तर—बम्बई प्रति—

शीर्षक—शुनीदने राव रूपचन्द नामे चाँदा व पुरसीदने बाजिर रा सूरतो जेवाइये ऊ (चाँदाका नाम सुनकर राव रूपचन्दकी बाजिरसे उसके सौन्दर्यके प्रति जिज्ञासा)।

१—अहत। २—कोइ। ३—नैस। ४—आनीं। ५—सनवानीं। ६—गाँउ कहउ अरु ठाँउ बिचारी। ७—रूपन कहि औ करन बिसेखी। ८—कौन। ९—रूप। १०—कस ताह।

टिप्पणी—(२) चटपटी—छटपटी, उत्सुकता।

(३) तुरी—(स० तुरग > तुरय > तुरीय > तुरी) घोडा। पाखर = पक्खर, कवच।

(५) बिसेखी—विशेष। अछर—अप्सरा।

(७) पिंदक—पिण्ड, शरीर। पराकित—प्रकृति, स्वभाव।

७५

(रीलैण्ड्स ४२)

सिफ्ते फर्के चाँदा गुफ्तन बाजिर बर राव रूपचन्द

(राव रूपचन्दसे बाजिरका चाँदाके माँगका वर्णन)

पहले माँग क कहउँ सोहागू। जिहिं राता जग खेलै फागू ॥१
माँग चीर सर सेंदुर पूरा। रेंग चला जनु कानकेजूरा ॥२
दिया जोत रैन जस बारी। कारें सीस दीस रतनारी ॥३
मैं वह माँग चीर तर दीठी। उवत सूर जनु किरन पईठी ॥४
मोंत पिरोय जोत पैसारा। सगरें देस होइ उजियारा ॥५
राउ रूपचँद बोला, फुनि यहै खँड गाउ ।६
माँग सुनत मन राता, बाजिर करब बिपाउ ॥७

टिप्पणी—(१) राता—अनुरक्त।

(२) सेंदुर पूरा माँगमें सिन्दूर भरनेको स्त्रियाँ सिन्दूर पूरना कहती हैं। कानकेजुरा—कनखजूरा, लालवर्ण का एक लम्बा कीडा।

७६

(रीलैण्ड्स ४३)

सिफ्ते मुयेहा चाँदा गोयद

(केश वर्णन)

भँवर बरन सों देखी बारा । जनु बिसहर लर परे भँडारा ।।१
लाँब केस मुर [बाँध*] धराये । जानु सेंदुरी नाग सुहाये ।।२
बेनी गूँद जूहि अरमावइ । लहर चढ़हि बिस सतक दहावइ।।३
देखत बिस चढहि मँतर न माने । गारुर काह अनारी जाने ।।४
जूडा छोर झार सो नारी । देवसहिं रात होइ अँधियारी ।।५
डंक चढा सुन राजा, परा लहर मुरझाइ ।६
बात कहत जिह बिस चढहि, गारुर काह कराइ ।।७

टिप्पणी—(१) भँवर—भ्रमर, काला । बरन—वर्ण, रंग । बारा—बाल, केश । बिसहर—विषधर, सर्प । लर—लड, लडी, पंक्ति ।
(२) मुर—मुड, मूँड, सिर ।
(४) गारुर—विष वैद्य, सर्प के विष को उतारने वाला । काह—क्या ।
(५) जूड़ा—बँधे हुए केश । छोर—खोल कर । झार—झाड ।

७७

(रीलैण्ड्स ४४)

सिफ्ते पेशानी चाँदा गोयद

(ललाट वर्णन)

देखि लिलार बिमोहे देवा । लोक तज कुटुँब कीनहि सेवा ।।१
दूज क चाँद जानु परगसा । कै खर सोवन कसौटी कसा ।।२
बदन पसीज बूँद जो आवहिं । चाँद माँझ जनु नखत दिखावहिं ।।३
मुँह दप सोंह न देखी जायी । सरग सूर जनु अदनल आयी ।।४
ससहर रूप भई उठ रेखा । मैं न अकेलें सभ जग देखा ।।५
भोर चढ़ा बिस उतरा, राजैं करवट लेत ।६
सुन लिलार उठ बैठो, याजिर कंचन देत ।।७

टिप्पणी—(१) लिलार—ललाट।
(२) खर—खरा, शुद्ध। सोवन—सुवर्ण, सोना।

७८

(रीलैण्ड्स ४५अ)

(भौंह वर्णन)

भौंहें धनुक जनु दुइ कर ताने। पंचबान गुन खींच सयाने ॥१
बान बिसार सान दइ लावइ। पारध जैस अहेरै आवइ ॥२
अरजुन धनुक सरग में देखी। चाँद भौंह गुन सोइ बिसेखी ॥३
सर तीखे जिंह मार फिरावइ। ठौर परे सो बेगि न जावइ ॥४
चाँद भौंह गुन ऐसें अहा। मूँड न डोल जु गाइ कहा ॥५

बन सिकार छँद बाजिर, धानुक भई सो नारि।६
सहज मिरग भा राजा, मया मोह गये बिसारि ॥७

टिप्पणी—(१) पचबान—पचशर, कामदेव।
(२) बिसार—विषाक्त। सान—शान। दइ—देकर। पारध—शिकारी। अहेरै—शिकार को।

७९

(रीलैण्ड्स ४५ब)

सिफ्ते चश्महाय चाँदा गोयद

(नेत्र वर्णन)

नैन सरूप सेत महँ कारे। खिन खिन बरन होंहि रतनारे ॥१
अम्ब फार जनु मोतिंह भरे। ते लइ भौंह कै तर धरे ॥२
सहजहि डोलहि जानु मधु पिया। कै निसि पवन झकोरै दिया ॥३
अलत समुँद मानिक भर रहे। राइ थाक कर गाँठ न गहे ॥४
नैन समुँद अति अवगाहा। बूड़हिं राइ न पावहिं थाहा ॥५

भीतर नैन चाँद बस आये, दीखइ दिन आह।६
सरग जायि चद बैसे, राजा पूछहु काह ॥७

८०

(रीलैण्ड्स ४६ अ)

सिफते बीनीये चाँदा गोयद

(नासिका वर्णन)

मुँह मॅह नाक अइस क सिंगारू। जनु अभरन ऊपर कै हारू ॥१
सुवा नाक जो लोग सराहा। तिहू जाह अधिक ते आहा ॥२
सहज ऊँच पिरिथ में सब जानाँ। औ सब ताकर करहिं बखानाँ ॥३
तिलक फूल जस फूल सुहावा। पदुमिनि नाक भाउ तस पावा ॥४
नाक सरूप अइस मैं कहा। जानु खरग सोन कर अहा ॥५
चेनॉ परिमल फूल कस्तूरी, सबै बास रस लेइ ।६
खिन मुरखै राउ रूपचँद, अरथ दरब सन देइ ॥७

टिप्पणी—(१) अइस—इस प्रकार। क—का।
(२) सुवा—शुक, तोता।
(४) तिलक—एक प्रकारका पुष्प। फूल—नाककी फुल्ली, नाकमें पहननेका आभूषण। सम्भवत साहित्यमें नाकके आभूषणका यह प्राचीनतम उल्लेख है। मुसल्मानी शासनके आरम्भसे पूर्व नाकके किसी आभूषणकी चर्चा न तो किसी भारतीय साहित्यमें है और न कलामें ही उसका अंकन पाया जाता है। पदुमिनी—पद्मिनी जातिकी स्त्री।
(६) चेना—रस, वरण। परिमल—कई सुगन्धियोंको मिलाकर बनाई हुई वास विशेष।
(७) अरथ—अर्थ। दरब—द्रव्य, धन।

८१

(रीलैण्ड्स ४६ ब)

सिफते लबहाय चाँदा गोयद

(ओष्ठ वर्णन)

राचा औ रत अधर निरासी। जनु मनुसैं कै रकत पियासी ॥१
लखी दरेरैं दरेरैं लीखी। रकत पियइ मनुसैं गुन सीखी ॥२

सहज रात जनु सुरँग पटोरी । औ रँगराती पान सुपारी ॥३
हार डोरिंह तिह रंग राता । तिह रंग बाजिर कही सो बाता ॥४
जान निरासा कस लै जीवा । खाँड आन तिह ऊपर पीवा ॥५
अस कै अधरैं सुन कै, राजा भा मन भोर ।६
रकत धार तिह बेंद, रस धर मारा जोर ॥७

८२

(रीलैण्ड्स ४७अ)

सिफ्ते दन्दाने चाँदा गोयद

(दन्त वर्णन)

चौक भये पानहि रंग राता । अंतरहिं लाग रहे जनु चाँता ॥१
अधर बहिर जो हँसे कुवारी । निजरी लौक रैन अँधियारी ॥२
मुख भीतर दीसै उजियारा । हीरा दसन करहिं चमकारा ॥३
सोन खाप जानु गढ़ धरे । जानु सूकर कर कोठिला भरे ॥४
दारिंउ दाँत देखि रस आसा । भँवर पंख लागै जिहिं पासा ॥५
समझा राउ रूपचन्द, सुनिके बचन सुहाउ ।६
भोजन जेवँत राजहि, लाग दाँत कर घाउ ॥७

टिप्पणी—(१) चौक—(सं० चतुष्क) आगेके चार दाँत। चाँता—चींग।
(४) सोन—सोना, सुवर्ण। खाप—लम्बी गुल्ली। कोठिला—कोठार, अनाज रखनेका बड़ा पात्र या घर।
(५) दारिंउ—दाडिम, अनार।

८३

(रीलैण्ड्स ४७ब)

सिफ्ते जुबाने चाँदा गोयद

(रसना वर्णन)

चाँद जीभ मुख अमरित बानी । पान फूल रस पिरम कहानी ॥१
पदुमनि बचन नींदि सुनि आवइ । दुख घरै सुख रैन बिहावइ ॥२
अमरित कुण्ड भयउ मुख नारी । सहज मात रस बहै पौनारी ॥३

कँवल क फूल जीभ तिह माँहा । अधर बानि कहि आछे छाँहा ॥४
बानि जैसि मुख जीभ अमोला । फूल झरहिं जो हँसि-हँसि बोला ॥५

झँरका राउ रूपचन्द, धरहु धरहु चिल्लाइ ।६
बानि फूल अँबरित जस चाँदा, अभै गई दिखराइ ॥७

टिप्पणी—(३) पौनारी—पनाली, पानीकी नाली ।
(७) अँबरित—अमृत ।

८४

(रीलैण्ड्स ४८अ)

सिफ्ते गोशहाय चाँदा गोयद

(कर्ण वर्णन)

सुवन सीप चन्दन घिसि भरे । कूँक बरन [--*] अति गँवरे ॥१
लाँब न छोट थूल न तिये । कान कनक जनु झरकँहि दिये ॥२
गाँर कपोल रूप अति लोने । कौंधा सरग लवँहि दुहुँ कोने ॥३
दुहुँ गालहि घी कै चिकनाई । जनु आरसी दुहुँ दिसि लाई ॥४
अमरित कुण्ड छँक कर भरा । अइस न जानों काह किहँ धरा ॥५

अमर सबद सो चाँदा, मुख अमरित धन बार ।६
इव बोल सुन राजा, भुई उठि बइठ खँसार ॥७

टिप्पणी—(१) सुवन—श्रवण, कान ।
(२) थूल—स्थूल, मोटा । तिये—पतला ।
(३) कौंधा—बिजली । लवँहि—लपकते हैं, चमकत हैं ।

८५

(रीलैण्ड्स ४८ब ; बम्बई १)

सिफ्ते खाले चाँदा गोयद

(तिल वर्णन)

नैंन सवन बिच तिल एक परा । जान परहि मँसि बुँदका धरा ॥१
मुख क सोहाग भयउ तिल संगू । पदम पुहुप सिर बैठ भुजंगू ॥२

बास लुबुधि तहँ पैठउ आई[1] । गाढ़ रहा हरजाँह बड़ाई ।।३
तिल बिरहें बन घुँघची जरी । आधी[2] कार आधी रत फरी ।।४
तिंह बिरहें महिं[3] मरन सनेहा । रकतहीन कोइला भइ देहा ।।५
तिल सँजोग बाजिर सर कीन्हों, औहट भा परजाइ ।६
राजा हिये आग बड जारे, तिल तिल जरै बुझाइ ।।७

पाठान्तर—बम्बई प्रति—

शीर्षक—सिफ्ते खाले बेमिसाले मह पैकरे चाँदा मियानये चश्मोगोश गुफ्तये सियाह उफ्तादन (चन्द्रवदनी चाँदाकी आँख और उसके कानके बीच स्थित तिलकी प्रशंसा) ।

१—बास लुबुधि बैठो भुलाई । २—आधि । ३—बिरह दगध हौं ।

टिप्पणी—(१) मसि—स्याही ।

(४) घुँघची—रत्तिका, कृष्णल, रत्ती । कार—काला । रत—रक्त, लाल ।

८६

(रीलैण्ड्स ४१७अ , बम्बई ४)

सिफ्त गुलूये चाँदा गोयद

(ग्रीवा वर्णन)

राजा गियँ कै सुनहु निकाई । जनु कुम्हार धरि चाक फिराई ।।१
भोंगत नारि कचोरा[1] लावा । पीत निरातर गहि[2] दिखरावा ।।२
देव सराहँहि (तैसो)[1] गोरी । गियँ उँचार गह लिहसि[3] अजोरी।।३
अस गियँ[4] मनुसँहि दीख न काहू[5] । ठास धरा जनु पलै कियाहू[6] ।।४
का कहुँ[7] असकै दयी सँवारी । को तिहँ लाग दयि अँकवारी ।।५
हियै सिरान राजा कर, सुनसि कण्ठ अँकवारि ।६
गोचर मार बिधासों, आनों चाँदा नारि ।।७

मूलपाठ—(१) तिंह तैसो ।

पाठान्तर—बम्बई प्रति—

शीर्षक—सिफ्त गोहरये मह पैकरे चाँदा मिस्ले आँदे कुलाल गुजाश्तन (चन्द्रवदनी चाँदाके ग्रीवाकी कुम्हारके चाकसे तुलना)

१—कजीरैं। २—तितशो। ३—नहिं। ४—अपछरा कै लीन्ह।
५—अस मनुसहि आव न काहू। ६—ठास धरी चल्त कियाहू।
७—कहीं। ८—कँठ।

टिप्पणी—(१) गियँ—ग्रीवा, कण्ठ। निकाई—सुघरता।
(५) हिये—हृदय। सिरान—ठण्डा हुआ।
(७) विधासौं—विध्वस करूँ। आनौं—ले आऊँ।

८७

(रीलैण्ड्स ४९ ब)

सिफ्ते दो दस्त चाँदा गोयद

(भुजा वर्णन)

सुनहु भुआ दण्ड कहि लै लावउँ। यहँ जग जो तन कछु न पायउँ॥१
कदरि खँभ देखउँ तस बाँहें। जर पौंनार निसेखी बाहें॥२
ईंगुर जइस सलोनी बीसा। अरु कित पुरुख हथौरिहिं दीसा॥३
कर बाहु जनु (धर) सारे। वेध सहित बाउ सिंगारे॥४
जोर भुआ पुरुस पोसाऊ। एको नियर न जियते पाऊ॥५
नख फाल राउत कैं, धरे फेर गढ़ सान।६
बड झर लाग अनारी, राजा देथ परान॥७

मूलपाठ—१—धरधर।
टिप्पणी—(४) दोना पदाका पाठ असन्तोषपूर्ण है।

८८

(रीलैण्ड्स ५०अ , पजाब [ला])

सिफ्ते पिस्तान चाँदा गोयद

(कुच वर्णन)

सोन थार हीयें चुन धरे। रतन पदारथ मानिक भरे[१]॥१
सहज मिंधोरा मेंदुर भरे[२]। थनहर फेर कँदीरें धरे[३]॥२
नारंग थनहर उठहिं अमोला। सुर न देखी पवन न टोला॥३

समुँद भरा जनु लहरें दिये । पुरइन क रस जस भँवरें लिये ॥४
अँबरित हिरदेउँ बेल उपाने । साज कचोरा हिरदेउँ ताने ॥५
कुसुम चीर तर देखेउ, फरे बेल इह भाँत ॥६
राजा खाइ निसर गै, सुन अस्थन भइ सात ॥७

पाठान्तर—पंजाब प्रति—

इस प्रतिके उपलब्ध फोटोमें लाल स्याहीसे लिखी पंक्तियां नहीं उभरी जिसके कारण शीर्षक तथा पंक्ति १, ६ और ७ का पाठ ज्ञात न हो सका। साथ ही पृष्ठ फटा होने के कारण पंक्ति ५ का उत्तर पद भी उपलब्ध नहीं है।

इस प्रति में पंक्ति ४ और ५ परस्पर स्थानान्तरित हैं।

१—जरे। २—भरा। ३—खरे। ४—कचोरी।

टिप्पणी—(२) सिंधोरा—सिंदूर रखने का पात्र। थनहर—स्तन।

(४) पुरइन—(सं० पुटकिनी) कमल।

(५) कचोरा—कटोरा।

(६) तर—नीचे। फरे—फले।

८९

(रीलैण्ड्स ५०ब)

सिफ्ते शिकमे चाँदा गोयद

(पेट वर्णन)

पेट कहौं सुन बउचक राजा। ऐपन सान कौंपर साजा ॥१
पूरन खाँड सपूरन चोरे। जहवाँ दीसहि तहवाँ गोरे ॥२
जानु सुहारी घिरत पकाये। देखत पान फूल पतराये ॥३
नाभी कुण्ड जो डुबकी परो। देखतहिं बूड़ न पावइ तीरो ॥४
जाँनों अन्त पेट महँ नाही। अँतर क चाँद दीस परछाँहीं ॥५
अति अवगाह बोल अस बाजिर, तामँहि थाह न तीर ॥६
सुनके राउ दौर घस लिये, बूड़ न पावइ तीर ॥७

टिप्पणी—(१) बउचक—मूर्ख, अज्ञान। ऐपन—भिगोये हुए चावलमें हरदी मिलाकर पीसा हुआ योग, जिसे शुभ अवसरोंपर स्त्रियाँ चौक पूरने,

थाल रँगने आदिके काममे लाती हैं। कॉपर—चौड़ा, किन्तु कम गहरा, कटोरेके आकारका पात्र, जो शुभ अवसरोंपर प्रयोग होता है। अग्रवाल जातिमे इसका प्रयोग विशेष रूपसे कन्यादानके समय किया जाता है।

(३) सुहारी—जिसे सामान्यत पूडी (पूरी) कहते हैं, वह अवध और भोजपुर में सोहारी कही जाती है। यहाँ उसी से तात्पर्य है। पर कहीं कहीं आटे को बेल कर धूप मे सुखाने के पश्चात् घी में तली हुई पूरी को सोहारी कहते हैं।

(७) अवगाह—अगाध।

९०

(रीलैण्ड्स ५१अ)

सिफ्ते पुश्त चाँदा गोयद

(पीठ वर्णन)

घोटहिं घोट पीठ बैसारी। गढी बनाई साँचे ढारी ॥१
कर चूर हीर पात क दोवा। पीठ ठाँउ सहज दुइ मोवा ॥२
लंक पार जस देह न आवइ। चाँद चीर मँह भरम दिखावइ ॥३
बरें लंक बिसेसै धनाँ। और लंक पातर कर गुनाँ ॥४
फूँकहि टूट होई दुइ आधा। नैन देख मन उपजै साधा ॥५
मूरख होइ जो तरें न जाने, चाहे पवरें पाउ ॥६
कर गुन भये पीठ भा, बूड़त काढ़ा राउ ॥७

९१

(रीलैण्ड्स ५१ ब; पंजाब [ग])

सिफ्ते रानहा व रफ्तार चाँदा गोयद

(जानु एवं चाल वर्णन)

कदरि कम्भ दोइ चीर पहिराये। चाँद चलन अपुरुब घर लाये ॥१
औ समतोल दीख अमि धारा। देख बिमोहे सरँग पँतारा ॥२
देखि कम्भ मोर मन तम लागा। मरभें धरउँ खाल कें नाँगा ॥३

चौदहँ चाँन देखि पाँ लागहिँ । पापकेत परसहिं कर भागहिँ ॥४
रूप पुतरि गढ़ दस नख लावा । तरुवहिं रकत भू तर चलि आवा ॥५
पायि परौं मुख जोऊँ, सो धनि उतर न देइ ।६
सुनत राउँ बिसँभरि गा, मर मर साँसें लेइ ॥७

पाठान्तर—पंजाब प्रति—

इस प्रतिकी उपलब्ध फोटोमें लाल स्याहीसे लिखी पंक्तियाँ अत्यन्त अस्पष्ट हैं। फलतः शीर्षक और तीसरी पंक्तिका पाठ सम्भव न हो सका। पृष्ठ फटा होनेसे पंक्तियाँ ६-७ भी अप्राप्य हैं।

१—खम्भ। २—परहाये। ३—गढ। ४—औ समतोल हिय तर अस धरा। ५—बिमोहँहि। ६—जाहि। ७—लागी। ८—भागी (पूर्व पद के अनुसार)। ९—तरुवन।

९२

(रीलैण्ड्स ५२ अ)

सिफ्ते पाय व रफ्तारे चाँदा

(पग और गति वर्णन)

हँस गँवन ठुमठुमकत आवइ । चमक चमक धनि पाउ उचावइ ॥१
झनक झकक पौ धरती धरा । चमक चमक जनु सुगति भरा ॥२
सेल मल्हान सों चाँदा आवइ । जानों कीनरि बेगु उचावइ ॥३
सर भुईं धरउँ चाँद धरि पाऊ । नान हुतैं न काढ़ेउँ गाऊ ॥४
पागैं धूर नैन भरि आँजों । जीभ काढ़ि दुइ तरुवा माँजों ॥५
चलत चाँद चित लागा, मनहुत उतर न काउ ।६
पाँयहि हाथ न पहुँचे, हँस हँस रोवइ राउ ॥७

टिप्पणी—(१) उचावइ—उठाती है।

(२) पौ—पाव, पैर।

(४) भुई—पृथ्वी। नानहुतैं—छुटपन से ही।

(५) धूर—धूलि। आँजों—अंजन की तरह लगाऊँ। तरुआ—ताल, पैर का निचला भाग।

९३

(रीलैण्ड्स ५२ब)

सिरत क्दोकामदे चाँदा गोयद

(आकार वर्णन)

लगु जैस इह अहि बुतकारी । चन्दन जैफर मिरै सँवारी ॥१
सरग पवान लाग जनु आयी । चाहत बैसैं जाइ उड़ायी ॥२
बाँसपोर हुत जनु घर काँढ़ी । अछरि अइस देखि मैं ठाढ़ी ॥३
कोंइ पुहुप अस अंग गँधाई । रितु बसन्त चहुँ दिसि फिर आई ॥४
अंग बास नौखण्ड गँधाने । बास केतकी भँवर लुभाने ॥५

उपेन्दर गोयन्द चँदरावल, बरभाँ बिसुन मुरारि ।६
गुन गँधरब रिसि देवता, रूप बिमोहे नारि ॥७

टिप्पणी—(१) बुतकारी—मूर्तिकारी । जैफर—जायफल । मिरै—मिलाकर ।
(४) कोंइ—कुमुदनी ।
(६) गोयन्द—(फारसी) कहते हैं ।
(७) यह पद ३४ कडवकमें भी है ।

९४

(रीलैण्ड्स ५३अ ; पंजाब [प])

लिफ्ते क्सिवत चाँदा गोयद

(वस्त्र वर्णन)

सुनहु चीर कस पहिर कुवाँरी । फुँदिया राध सेंदुरिया सारी ॥१
पहिर मघवना औ कसियारा । चकवा चीर चौकरिया सारा ॥२
मुँगिया पटल अंग चढ़ाई । मडिला छुदरी भर पहिरायी ॥३
मानों चाँद कुसँमी रातीं । एकरँग छाप (मोह) गुजरातीं ॥४
दरिया चँदरौटा औ बुरहारू । साज पटोरें बहुल सिंगारू ॥५

चोला चीर पहिर जो चाली, जानों जाइ उड़ाइ ।६
देखब रूप बिमोहे देवता, कितहुत अछर[ी*] आइ ॥७

मूलपाठ—(४) सो सोइ।

पाठान्तर—पंजाब प्रति—

इस प्रतिके उपलब्धमें फोटोमें लाल स्याहीसे लिखी पंक्तियाँ अत्यन्त अस्पष्ट हैं। जिससे शीर्षक, और पंक्ति ३, ६ और ७ का पाठ प्राप्त करना सम्भव नहीं है।

१–मुकीना २–अरु ३–चविया ४–जोगवई ५–पहिर ६–खण्ड ७–राता ८–गुजराता ९–चदोटा १०–आला बजारू।

टिप्पणी—(१) फुंदिया—इसका उल्लेख पदमावत (३२९।२) में भी है। वहाँ वासुदेव शरण अग्रवालने उसके फुँदने लगा हुआ नीवीबन्ध होनेकी सम्भावना प्रकट की है। किन्तु प्रस्तुत प्रसंगमें यह अनुमान संगत नहीं है। हमारी समझमें यह किसी प्रकारका अंगिया या चोली है। अथवा यह पद्मनाभ कृत कान्हडदे प्रबन्धमें उल्लिखित फूँदडी (३।१५३) है। फूँदडी किसी प्रकारका मूल्यवान वस्त्र था जिसमें सोने और रत्नोंका प्रयोग होता था (कनक सुकोमल फूँदडी ए विचि रतन बईटा)। सेंदूरिया—सिंदूरी रंगकी। सारी—साड़ी।

(२) मघवनाँ—पदमावतमें मेघोनारा (३२९।८) और पृथ्वीचन्द्र चरितमें मेघवनाका उल्लेख है (प्राचीन गुर्जर काव्य संग्रह, बड़ौदा, १९०९, पृ० १०२)। सम्भवतः यह वही वस्त्र है जिसे ज्योतिरीश्वर ठाकुरने अपने वर्णरत्नाकरमें मेघवर्ण और मेघडम्बर नामसे पटम्बर जातिके वस्त्रोंमें किया है। चौदहवीं शतीके विविधवर्णकमें भी मेघडम्बर, मेघाडम्बर और मेघावली नामक वस्त्रोंका उल्लेख है (वर्णक समुच्चय, सम्पादक बी० जे० सदेसरा, पृ० ३४–३५)। मेघडम्बर साड़ियोंका उल्लेख प्राचीन बंगला साहित्यमें भी प्रायः मिलता है। इन सबसे अनुमान होता है कि यह आसमानी (बादली) रंगका कोई रेशमी वस्त्र रहा होगा। कसियारा—इस पाठके सम्बन्धमें कुछ निश्चित नहीं कहा जा सकता। उसे कयारा या गयारा भी पढ़ा सकता है। पर इन नामोंके किसी वस्त्रकी जानकारी कहीं प्राप्त नहीं है।

चकवा—पद्मावतमें भी इसका उल्लेख है (३२९।४)। (वहाँ उसके सम्पादकोंने उसे चिकवा पढ़ा है। यह पाठ सम्भव है, पर हमने उसे जान बूझकर ग्रहण नहीं किया है।) रामचन्द्र शुक्लने इसे चीकट नामक रेशमी वस्त्र बताया है। शब्दसागरके अनुसार विवाहमें नेगके रूपमें दिये जानेवाले वस्त्रको चीकट कहते हैं। चकवाका उल्लेख यहाँ विवाहके अवसरपर दिये जाने वस्त्रोंके प्रसंगमें नहीं है। अतः उसे चीकटके इस रूपमें नहीं पहचाना जा सकता। उसे वस्त्रके किसी किसके रूपमें समझना होगा। मोतीचन्द्रने उसे गहरे

खाकी रंगका रेशमी वस्त्र बताया है (कास्ट्यूम्स एण्ड टेक्सटाइल्स इन सल्तनत पीरियड, पृ० ५२)। सम्भवतः उन्होंने यह अनुमान उसके चीकट वाली पहचानके आधारपर किया है। (बनारसकी बोलीमें सामान्यतः चीकट अत्यन्त मैले वस्त्रको कहते हैं)। हमारा अनुमान है कि चकवा वही वस्त्र है जिसका उल्लेखसे जीवणवारपरिधानविधि नामक वर्णकमें चक्कवडा नामसे किया गया है। (वर्णकसमुच्चय, पृ० १८०)। चक्कवटा (सं० चक्रपट) किसी ऐसे वस्त्रका नाम होगा जिसपर चक्र अथवा फूल बना रहता रहा होगा। भोजनके समय पहननेके वस्त्रोंके रूपमें यह निस्सन्देह रेशमी रहा होगा। चीर—आइन-ए अकबरीमें सोनेके काम किये हुए वस्त्रको चीर कहा गया है। चौकडिया—इसका उल्लेख पृथ्वीचन्द्रचरितमें भी हुआ है और सम्भवतः इसीका उल्लेख वर्णकसमूहमें चोक्कपाटीयके रूपमें हुआ है। गुजरातीमें इसे चौकडी कहते हैं। जॉन अर्विनने सत्तरहवीं शतीके भारतीय वस्त्र व्यवसायका जो अध्ययन प्रस्तुत किया है, उसमें उन्होंने इसे सस्ते किस्मका चारखानेदार सूती कपड़ा बताया है। हो सकता है। यह उड़ीसामें बनने वाला रेशम और सूतमिश्रित वस्त्र हो जो चारखाना कहा जाता था (मोनोग्राफ आन सिल्क, युसुफ अली, पृ० ९३)।

(३) मुगिया—इसके कई अर्थ हो सकते हैं: (१) मूँगेके रंगका रेशमी वस्त्र, (२) आसामका सुप्रसिद्ध मूँगा रेशम, (३) मूँगीपट्टन (पैठन) की बनी सुप्रसिद्ध साड़ी। यह स्थान औरंगाबादसे २० मील दक्षिण पश्चिम है और मध्यकालमें अपने वस्त्रोंके लिए प्रसिद्ध था। मंडिल—वर्णक समुच्चयमें मण्डील और माण्डलिया नामक वस्त्रोंका उल्लेख हुआ है। जान अर्विनने मण्डिल नामक वस्त्रको रेशम और सूत मिश्रित धारीदार वस्त्र बताया है, जो काफी चटकीला होता था। यह वस्त्र बंगालमें माल्दा कासिमबाजारके क्षेत्रमें तैयार होता था। माण्डलियाके सम्बन्धमें मोतीचन्द्रकी धारणा है कि वह उत्तरी गुजरातके मण्डलीपत्तनमें तैयार होता था। चुंदरी—चूँदरी।

(४) एकखण्ड—खण्ड रेशमीवस्त्रको कहते हैं। एकखण्डसे तात्पर्य एक रंग वाला रेशमी वस्त्र है। छाप—छपा हुआ। गुजराती—गुजरातका बना हुआ। इसका कजराती पाठ भी सम्भव है। उस अवस्थामें इसका अर्थ होगा काजलके रंगका।

(५) दरिया—सम्भवतः धारीदार वस्त्र जिसे फारसीमें दरियाई कहा गया है। इसका डुरिया अथवा डुरिया पाठ भी सम्भव है। डुरिया (डोरिया) धारीदार वस्त्रको कहते हैं किन्तु वह सूती होता है। चँदरौटा—जायसीने पदमावतमें चँदनौटा नामक वस्त्रका उल्लेख किया है (३२९।३)।

सम्भवत दोनोंका तात्पर्य एक ही वस्त्रसे है। वासुदेवशरण अग्रवालने इसे चन्दनके रंगका वस्त्र (चन्दनपट्ट) बताया है। हमारी धारणा है कि यह वह रेशमी वस्त्र है जिसे ज्योतिरीश्वर ठाकुरने वर्णरत्नाकरमें चन्द्र-मण्डल कहा है। सम्भवत इसपर चन्द्रमा जैसी कोइ आकृति छपी होती थी। बुखारू—यह पाठ निश्चित नहीं है। इसे नजारू भी पढ़ सकते हैं। पजाब प्रतिका पाठ बजारू स्पष्ट है। नजारू और बजारू सार्थक न जान पड़नेके कारण हमने बुखारू पाठ स्वीकार किया है। यदि यह पाठ ठीक है तो इसका तात्पर्य बुखारासे आने वाले किसी वस्त्रसे होगा।

(६) चोला—चोळ देशका बना वस्त्र। सम्भवत काँजीवरम्‌के बने वस्त्रसे तात्पर्य है। यह भी सम्भव है कि चोला पाठ अशुद्ध हो और मूल पाठ चोली हो। उस अवस्था में वह परिधान होगा।

(७) अछरी—अप्सरा।

९५

(रीलैण्ड्स ५३ब)

सिफ्ते जरीनहा चाँदा गोयद

(आभूषण वर्णन)

कुण्डर सुवन जरै ले हीरा। चहुँ दिसि बैठि विदारथ बीरा ॥१
अरु दुइ खूँट सरग जनु तारा। टूटि परहि निसि होइ उजियारा ॥२
आवइ उगसत नाक कै फूली। नखत चार सूरज गा भूली ॥३
हार डोर औ सिंकड़ी पूरी। अभरन भार परै जनु चूरी ॥४
दस अँगुरिहँ अँगूठी पगनाई। कर कंगन फिर भरे कलाई ॥५
चूरा पायल बजहिं, गोवर होइ झंकार ॥६
नखत चाँद कर अभरन, अभरन चाँद सिंगार ॥७

टिप्पणी—(१) कुण्डर—कुण्डल।

(२) खूँट—पद्मावत में इस आभूषण का उल्लेख दो स्थलों पर (११०।४, ४७९।७) हुआ है। उसके एक उल्लेख (तेहि पर खूँट दीप दुइ बारे —११०।४) से जान पड़ता है कि यह दीपके आकारका गोल आभूषण था जो कानमें पहना जाता था।

(३) उगसत—विकसित होता हुआ। नाक कै फूली—नाकमें पहननेकी फूलनुमा कील।

(४) सिकरी—गलेमे पहनेकी जंजीर।
(६) चूरा—पैरमें पहननेकी चूड़ियाँ, छडा। पायल—(सं० पादपाल>पायवाल>पायाल>पायल) पायजेब, झाँवर।

९६

(रीलैण्ड्स ५४)

तमाम कर्दन हाजिर सिफ्ते चाँदा व इस्तेदादे कूच कर्दने राव

(रूप वर्णन सुनकर राव द्वारा कूचकी तैयारी)

सभ सिंगार बाजिर जो कहा। राजा नैन बैतरनी बहा ॥१
राइ कहा सुन बाँठा आई। राजकुँरै फेरि देहु दुहाई ॥२
राउत पायक साहन थारी। झेतस करि लै आउ हँकारी ॥३
जाँवंत भरे देस मोर आनों। ताँवत जाइ पठउ परधानाँ ॥४
जिहि लग बाँधे जानै काछा। मार बिपारौ जो घर आछा ॥५
राजा चला बरेख, साँभर लेइ मँजोइ ।६
आगें दयि कै चला वह, पाछें रहै न कोइ ॥७

टिप्पणी—(२) राजकुँरै—राजकुलों मे।
(३) राउत—(सं० राजपुत्र>राअउत्त>राउत्त>राउत) यहाँ तात्पर्य सामन्तोंसे है। पाँयक (सं० पदातिक>पाइक) पैदल सैनिक। झेतस—शीघ्र।
(५) काछा—कच्छ।

९७

(रीलैण्ड्स ५५)

सिफ्ते दर इस्तेदादे गोयद

(कूचकी तैयारी)

ठोंके तबल मेघ जनु गाजे। घर-घर सबही राउत साजे ॥१
अगनित बीर बहुल धनुकारा। सात सहस चले कँटकारा ॥२
नवइ सहस घोड़ पाखरे। तारूँ तरवाँ लोहें जरे ॥३
चढे आयें लाख असवारा। लाख गयानें औ परवारा ॥४
एक सहस फरकार चलावा। तूराँ सींगाँ अन्त न पावा ॥५

राहु केतु घर उठे, दसा सूर भा आइ ।६
सूँक सोंह उतरा पॅथ, जोगिनि बाहर सब लै जाइ ।।७

टिप्पणी—(१) तबल—नक्कारा, धौंसा, स्टाइनगइसके फारसी कोषके अनुसार तबल ढोलकी सज्ञा है जो घोड़े या ऊँटपर रख कर बजाया जाता था ।
(२) कँटकारा—सैनिक ।
(३) घोर—घोड़ा । पाखरे—पक्खरयुक्त, कवचधारी ।
(४) तूरा—(सं० तूर्य, प्रा० तूर) तुरही । सींगा—सींग का बना हुआ बिगुल ।

९८

(रीलैण्ड्स ५६)

खिस्ते असपाने अरबी ताजी राव रूपचन्द

(राव रूपचन्दके अरबी अश्व)

आनों भाँत दीख कैकानाँ । अँगुरा दोइ-दोइ तिहँ कै कानाँ ।।१
सेत कियाह कार जनु रीठा । हरीयाँत मुख झमकत दीठा ।।२
काह संकोची लोह चबाहें । समुँद लाँघि जनु लंघन चाहें ।।३
नैन मिरघ जनु पाइ पखारी । पवन पंख देखत हरियारी ।।४
घात चढ़ै मुख धाथी दीजा । तंग बिसार बैत धर लीजा ।।५
केरे सॅमुद हुत काढे, कै यह पाथि पयान ।६
सोंन पाखर खाल के, आनँ पिये पलान ।।७

टिप्पणी—(१) भाँत भाँति प्रकार । कैकानाँ—घोड़े । कैकान वस्तुत बोलन दर्रेके दक्षिण, बलूचिस्तानके उत्तर पूर्व, मस्तुग और कलातके आस पास के क्षेत्रका नाम है । वह अति प्राचीन कालसे घोड़ोंकी अच्छी नस्लके लिए प्रसिद्ध है । यहाँके घोड़ोंका उल्लेख भोज कृत युक्ति कल्पतरु (अश्व परीक्षा, श्लोक २६), मानसोल्लास (४।६६०) नकुल कृत अश्व चिकित्सा (२।८) और शालिभद्र सूरि कृत बाहुबलिरास (बारहवा शतीमे रचित) में हुआ है । कालान्तरमे कैकान घोड़ोंका पर्यायवाची बन गया । अँगुरा—अंगुल ।
(२) सेत—श्वेत सफेद । कियाह—कत्थई लाल, ताड़ के पके फलका रग । कार—काला । रीठा—एक फल जिसका छिल्का काला

होता है। हरियाँत—हलका हरा रंग; ऐसा रंग जिसमें हरीतिमा की आभा हो।

(३) पखारी—पखर से युक्त।

९९

(रॉलैण्ड्स ५७)

सिफ्ते पीलाने राव रूपचन्द गोयद

(राव रूपचन्द के हाथी)

पखरे हस्त दाँत वहिराये। धानुक लै ऊपर वैसाये ॥१
वनखंड जैस चले अतिकारे। आने जानु मेघ अँधकारे ॥२
चलन लाग जनु चलहिं पहारा। छाँह परै जग भा अँधियारा ॥३
झेंकरहि चोटहिं आँकुस लागे। वरु दस कोस सहस अग भागे॥४
जो कोपँहि तो राइ सँघारहिं। वन तरुवर जर मूर उपारहिं ॥५

सींकर पाइ पानि उठ, करै काँदो होइ ।६
राउ रूपचंद कोपा, तेग न पारे कोइ ॥७

टिप्पणी—(१) पखरे—पाखर; हाथीके दोनों बगलोंकी लोहेकी झूल। वहिराये—निकाले हुए। धानुक—धनुर्धारी सैनिक।

(४) अग—आगे।

(५) जर मूर—जड़मूल।

(६) काँदो—कीचड़।

१००

(रॉलैण्ड्स ५८)

सिफ्ते कूच कर्दने राव बालकरे ब्यहिरा

(सेनाकी कूच)

सबही गजदल भयउ पयाना। ठोंके तबल देउ अँगराना ॥१
अकछत फौज चलै असवारा। कोस बीस लग भयउ पसारा ॥२
आगें परे नीर खीर पावइ। पाछे रहे सो धूर पकावइ ॥३
सगरैं देस अइस डर छावा। सभै नराहँ राउ चल आवा ॥४
उठे खेह अरु सूझ न पागा। जानु सरग धरती होइ लागा ॥५

महते साथ बाँठ लै, राजा कीन्ह पयान ।६
तरैं ताब बासुकि खरभरे, सुरज गयउ लुकान ।।७

टिप्पणी—(१) पयानाँ—प्रयाण, प्रस्थान, रवानगी । तबल—नक्कारा ।
(२) अकछत—अक्षत, अपार । पसार—प्रसार, फैलाव ।
(४) सगरैं—सारे । नराइँ—नरेश ।
(५) खेह—धूल ।
(६) महतै—महत्, श्रेष्ठ अर्थात् ब्राह्मण ।

१०१

(रीलैण्ड्स ५९)

दर राह पाल नजिस आमदन पेशे राव रूपचन्द व मने कर्दन महता

(राहम अपशकुन)

सूके रूँख काग रिरियाये । जोगी आवा भसम चढाये ।।१
दहिने दिसिहुत भर्रा आवा । डँवरू बायें हाथ बजावा ।।२
उवत सूर दिसि फकरि सियारी । अरु भुइँ रकत दीख रतनारी ।।३
कुसगुन भये न बहिरै राऊ । न बहिरै न देखेउँ काऊ ।।४
महते जाइ राउ समझावा । कुसगुन भयउँ किस आगे नावा।।५
चाँद सनेह काम रस बेधा, राजा गा बउराइ ।६
एको सगुन न मानी राजा, गोवर छेकसि आइ ।।७

टिप्पणी—(६) गा—हो गया । बउराइ—पागल ।

१०२

(रीलैण्ड्स ६०)

गिर्द कर्दन राव रूपचन्द शहर गोवर रा व दर हिसार मानदन शहर

(गोवर नगरपर रूपचन्दका घेरा)

चहुँ दिसि छेका गाढ फिराना । खोदहिं खोट जोरि गर लावा ।।१
तुरिहँ पान-बेलि पनवारी । केतिह खेत रूँख फुलवारी ।।२
काटे चहुँ पास अँबराऊँ । तार खजूर आम लखराऊँ ।।३

दीन्हि मढ़ि देउर उँपराई । पैसथ नारा पोखर पाई ॥४
काटे बारी महर के लाई । नरियर गोवा और फुलवाई ॥५
महर मँदिर चढ़ देखा, बहुल हुत असवार ।६
ओडन फिरें न सूझैं, खाँडहि होइ झनकार ॥७

मूल पाठ—पंक्ति ४ के दोनों पदोंके अन्तिम शब्द क्रमशः उपरायउँ और पायउँ पढ़े जाते हैं। पर साथ ही पहले पदका अन्तिम शब्द यउँ के ऊपर ई भी लिखा है। वस्तुत उँपराई पाठ ही संगत है। उसी के अनुसार उत्तर पदके अन्तिम शब्द का पाठ पाई दिया गया है।

टिप्पणी—(१) छेका—घेरा। गाढ़—कठिन। फिरावा—फैलाया।

(२) तुरँह—तोड़ डाला। पनवारी—पानके खेत। केतिह—कितने ही। रूँख—वृक्ष।

(३) अँबराऊँ—आम्राराम, आम के बगीचे। तार—ताड़। जाम—जम्बु, जामुन। लखराऊँ—(लक्षाराम>लक्खाराम>लखराउँ) एक लाख-वृक्षोंका बगीचा।

(४) मढ़ि—मठ। देउर—(सं० देवकुल>प्रा० देउल>देउर) देवगृह, मन्दिर। नारा—नाला। पोखर—पुष्कर, तालाब।

(५) बारी—बगीचा। नारियर—नारियल। गोवा—सुपारी। फुलवाई—फुलवारी।

(७) ओडन—ढाल। खाँड—लम्बी सीधी तलवार जिसे सैनिक हाथमें लेकर चलते हैं।

१०३

(रीलैण्ड्स ६१)

हैबत उफ्तादन दर शहर व फिरिस्तादने महर रसूलान रा नज़द राइ

महर

(नगरमें आतंक—राव रूपचन्दके पास दूतका जाना)

बाँधे पवँर भई तहतारा। बापहि पूत न कोउ सँभारा ॥१
महर लोग सब- झार हँकारे। भाझे चेत तनैं बिसारे ॥२
गाय, भैंहसें बाँधें रिरियाई। राँधा भात न कोऊ खाई ॥३
रोवहिं हीं करब [अब*] काहा। केमहुँ काँप सरापत आहा ॥४
छेंक गाउँ अँबराँउँ कटावहिं। पठिये बसीठ उतर कस पावहिं ॥५

पठये बसीठ तुरी दै, राजा कह धुन काह ।६
किहँ औगुन हम छँके, कौन रजायसु आह ॥७

टिप्पणी—(१) पँवर—प्रवेश द्वार । तहतारा—तहलका ।

(२) झार—एक एक करके ।

(३) भँइस—भैंस । रिरियायी—निस्सहाय की भाँति चिल्लाना । राँधा—पकाया हुआ । भात—चावल ।

(४) करब—करूँगा । काहा—क्या । सरापत—कोसते है ।

(५) पठिये—भेजिये । बसीठ—(सं०—अवसृष्ट> प्रा० अवसिट्ठ> वसिट्ठ> वसीट्ठ> बसीठ), ऐसा दूत जिसे सन्देशका पूरा उत्तरदायित्व सौंप दिया जाय ।

(६) पठये—भेजे । तुरी—घोडा । धुन—विचार । काह—क्या ।

(७) औगुन—अवगुण, अपराध । रजायसु—राज्यादेश । आह—है ।

१०४

(रीलैण्ड्स ६२)

रफ्तने रसूलान पेशे राव रूपचन्द व राज नमूदन मुखनी राव महर

(दूतोंका महरका सन्देश राव रूपचन्दको देना)

बसिठ जाइ कटक नियराना । रॉइ कर बॉठा आगैं आवा ॥१
रा[इ*]कै वायन बसिठ लइ लाये । तुरी भेंट आगें लै आये ॥२
फुनि बसिठहि सर भुइँ लै आवा । कौन रीस राजा चल आवा ॥३
जो मन होइ सो ऊतर दीजा । जो तुम्ह चाहियै अबही लीजा ॥४
दरब कहउ ती भीस भरावहुँ । घोड़ कहो अबही लै आवहुँ ॥५

राजा देहु रजायसु, माथे पर चढ लेहुँ ।६
ईंह महँ जौं तुम चाहउ, आज काल के देहुँ ॥७

टिप्पणी—(१) कटक—सेना ।

(२) वायन—उपहार ।

(३) रीस—क्रोध, कोप ।

(४) दरब—द्रव्य, धन ।

१०५

(रीलैण्ड्स ६३)

जवाब दादन राव मर रसूलान

(दूतों को राव का उत्तर)

सुन परधान बोल तूँ मोरा । कहस तू छाड जाउँ गड तोरा ॥१
दण्ड तोर हौं लेहौं नाहीं । घोड लाख दोड मोहि तल आहीं ॥२
जाइ कहु तुम अरथ दिवाऊँ । तोकें गोबर आज बसाऊँ ॥३
हम तुम जरम करहिं जग राज । चाँद बिआह देहु महिं आज ॥४
जो सुख देहु तो पाट पठाऊँ । घरके लेउँ तिहि धानि भराऊँ ॥५

जो तुम आवड डर राख, चाँद नियाही देहु ।६
जो रुचि आहे माँग, सो तुम अबहीं लेहु ॥७

१०६

(रीलैण्ड्स ६४)

जवाब दादन रसूलान मर राइ रूपचन्द रा

(राव रूपचन्दके दूतोंका कथन)

तूँ नरिन्द देस घर राजा । अइस बोल तिहि कहत न छाजा ॥१
जिन धी होइ सो नाँउ न लिये । परबतरह अस गारि न दिये ॥२
जो घर पुतरिंस माइ बुलावा । सो राजा गारी कम पावा ॥३
जो रे महर गारी सुन पावइ । आग लाइ पानी कहँ धावइ ॥४
चाँद और कहँ (दीन) बियाही । कौन उत्तर अब दीजै ताही ॥५

बरु हम मार पियारहु, फुनि उठ जारहु गाँउँ ।६
चाँदहिं दहाँ मिलि आगी, अइसे पार को नाँउँ ॥७

मूलपाठ—५–देत ।

१०७

(रीलैण्ड्स ६५)

बर गुस्सह शुदन राव रूपचन्द बर रसूलान व सामोश मानदने ईशा

(राव रूपचन्दका दूतोंपर क्रोध)

अबहिं डीठ तिह मार पियारू । खिन एक भीतर गोवर जारूँ ॥१
मूँड़ काट के गवँइ फिराऊँ । खाल काढ़ कै रूँख टँगाऊँ ॥२
चील्ह खून माँस लै जाँहि । कुकुरहिं खून रकत सब खाँहिं ॥३
तिह का चूकत करत ढिठाई । जइस मों कहउँ तइस कहु जाई ॥४
जाइ बेग चाँदा लै आवहु । मूख दुआर टूट लै पावहु ॥५
करबों तस जस बोलेउँ, नाँउँ बसिठ कर आहु ।६
बेग चाँद लै आवहु, तूँ इहवाँ हुत जाहु ॥७

टिप्पणी—(२) गवँइ—गाँव । काढ़—निकाल कर ।
(३) चील्ह—चील पक्षी । कुकुर—कुत्ता ।
(५) मूख दुआर—मुख्य द्वार ।
(६) करबों—करूँगा ।
(७) इहवाँ—यहाँ ।

१०८

(रीलैण्ड्स ७४)

रजा तलबीदने रसूलान वराये बाज गुश्तन खुद अज राय

(दूतोंको जानेका आदेश)

राजा (बोलि क)[1] दीन्हि रजायसु । सुनकै (बासिठ कीन्हि)[2] छंदायसु ॥१
अस तूँ राजा कीन बुराई । चाँद सबद सुनि गोवर धाई ॥२
गोवर समुँद अतै अवगाहा । बूड़हि राइ न पावइ थाहा ॥३
राजा (जो)[3] सरग चढ़ धावहु । तौ न धूर चाँदा कै पावहु ॥४
राजा नखत जो सरग भू आहें । चाँद निहारें मुहँ निसि चाहें ॥५
गगन चढ़े जो देखे, जाने इहवाँ आह ।६
थाह न पँइह राजा, बूड़ मरियहु काह ॥७

मूलपाठ—१—बोलि क कह, २—बारस फेरे, ३—जो र ।

१०९

(रीलैण्ड्स ७५; काशी)

बाज़ उम्मीद शुदने राव अज़ मुख़ने रसूलान व बाज़ गर्दानीदने ईशान रा

(दूतोंकी बात सुनकर रावका निराश होना और उन्हें लौटाना)

बात संजोग बसिठ जो कहा। नाइ मूँड सुन राजा रहा ॥१
बसिठ बचन बिस भरे सुनाये[1]। राजै ठग गै लाइ खाये[2] ॥२
गा अमरो मनहुत जो सँजोवा। भा निरास चित भीतर रोवा ॥३
सरग चाँद मैं[3] पाई नाहीं। बसिठों[4] उत्तर देउँ उठ जाहीं ॥४
आज साँझ जो चाँद न पाऊँ। पहर रात तुम्ह सरग चलाऊँ ॥५

जीउ दान जो चाहु, पठउँ[5] चाँद दिवाइ ।६
नतरु खूर उवत गढ़ तोरौं, कहु[6] महर सौं[7] जाइ ॥७

पाठान्तर—काशी प्रति :
'शीर्षक—जवाब दादने राव रूपचन्द रसूलान रा (दूतोंको राव रूपचन्द का उत्तर)
१—सुनावा; २—राजै गै ठग लाइ खावा; ३—मइ; ४—बसिठहिं; ५—पठवहु; ६—कहहु; ७—सो।

टिप्पणी—(१) नाइ—झुका कर। मूँड—सिर।
(२) गा—गया। अमरा—आसरा, आशा।
(७) नतर—नहीं तो।

११०

(रीलैण्ड्स ७६)

बाज़ आमदने रसूलान बर महर व बाज़ नमूदने अर्ज़े राव रूपचन्द

(दूतोंका वापस आकर राव रूपचन्दकी माँग कहना)

बसिठ बहुरि गोबर महँ आये। महर देखि जिन आगें धाये ॥१
पूछा महर कुमर सौं आयहु। का कहु कस उत्तर पायहु ॥२
जस पूछा तस बसिठौं कहा। सुनें नहिं राजा कोह कै रहा ॥३
हस्ति घोड़ धन दरब न मानैं। चाँद माँगि जिन दूर न जानैं ॥४
जो जिउ चाँदा पीठहि दीन्हाँ। तो तू राउ चाहु जिउ लीन्हा ॥५

कै मन्त जस तुम्ह उपजे, राजा कीजइ सोइ ।६
उवत सूर गढ़ तोरै, फुनि तजियावा होइ ।।७

१११

(रीलैण्ड्स ६९)

मुशाविरत कर्दने महर बाल्दकरियाने मुकर्रिबे खुद

(महरका अपने सेनानायकोंसे परामर्श)

महरें मुख कुँवरहिं कर चाहा । झेतस कुरे इहँ बोले काहा ।।१
बहुतहि कहा चाँद जो दीजै । एक मुख होइ राज फुनि कीजै ।।२
और कहा घर निकर पराई । दिवस चार बाहर कै आई ।।३
कँवरू धँवरू दीने गारी । जे न जरमहिं सो माइ मयारी ।।४
भूँजहि बैठे पाटन गाँऊँ । अब जिउ देहुँ चाँद कै ठाऊँ ।।५
जौलहि साँस पेट महँ, तौलहि करिहैं मारि ।६
फुनि सूरज पह मरिहहिं, जइस होइ उजियारि ।।७

११२

(रीलैण्ड्स ७७)

सिफत असबान राव महर

(राव महरके अश्वोंका वर्णन)

महरैं काढ़ि तुखार बुलाने । इन्ह दस धरे पौर मँह आने ।।१
हंस हँसोली भँवर सुहाये । हिना यक खिंगारे बहु आये ।।२
उदिर सँमुद भुइँ पाउ न धरिहैं । भाव गरब ते नाचत रहैं ।।३
यह तुरंग तीन पा ठाढ़े । नीर हरियाह पखरिन्ह गाढ़े ।।४
बोर गरैया अउरो अहा । इन्ह अस रूप जो बुत ते रहा ।।५
पौन बाइ परत सम देंहीं, देखत रास उड़ाइ ।६
बहुल धाब धरि धावहिं, थापैं थिर न रहाहिं ।।७

टिप्पणी—(१) तुखार—घोड़े : मूलतः यह मध्य एशिया एलित शकोंसे एक कबाल

और उसके मूल निवास स्थानका नाम था। वहाँसे आने वाले घोड़ोंको तुखार कहते थे। पीछे वह अश्वका पर्याय बन गया।

(२) हंस—यह नाम हमें अश्वों की सूची में अन्यत्र कहीं देखने को नहीं मिला। हो सकता है हस के समान सफेद घोडे को कहते रहे हो।
हँसोली—सम्भवत इसे ही जायसी ने हाँसुल कहा है (पद्मावत ४७।२)। ऐसा घोडा जिसका शरीर मेहदीके रगका और चारों पैर कुछ कालापन लिये हो, कुम्मैत हिनाई।
भँवर—भौरेके रगका घोडा, मुश्की।
हिना—सम्भवत. मेहदीके रगका अश्व।
खिगारे—इसे ही सम्भवत. जायसीने खग कहा है (पद्मावत, ४९६।३)। फरहग इस्तहालात (पृ० १८) के अनुसार दूधकी रगत के समान सफेद रगके घोड़ेको सिंग कहते थे। नकुल कृत शालिहोत्र (पृ० ३७) मे सिगका वर्णन इस प्रकार है :

दिन सेली तन पाडुरो, होइ इक सम अग।
दूजी रग न देखिये, तासो कहिये सिंग॥

(३) उंदिर—(स०—उन्दीर) जगली चूहे और लोमडीके रगसे मिलता हुआ घोडा। सम्भवतः इसे ही सजाब या सिंजाब भी कहते थे।
समुद—समन्द; बादामी रगका घोडा।

(४) नीर—नील, नीले रगका घोडा। हरियाइ—सम्भवतः अन्यत्र उल्लिखित हरियाँत (९८।२) और हरियाइ एक ही प्रकारके घोडोंके लिए प्रयुक्त हुआ है। हरे रगका घोडा, सब्जा। इस रगका घोडा अत्यन्त दुर्लभ है।

(५) बोर—स्टाइनगासके फारसी कोष (पृ० २०६) के अनुसार शहदके रगका घोडा। फरसनामा हाशिमीमें कहना है कि हिन्दके लोग बोरको शोण वर्ण कहते थे (पृ० १७)। गर्रया—(गर्र, गर्रा) श्वेत और लाल रगकी खिचडी बालोंवाला घोडा।

(६) पौन—पवन। बाउ—वायु। रास—बागडोर।

(७) धाय—कोससे छोटा, किन्तु मीलसे बडा दूरी नापनेकी इकाई। धावै—थपथपानेसे।

११३

(सैयद ७८)

सिरते सवारोंने जगी

(अश्वारोहियोंका वर्णन)

कसि कसि चढ़े सभ असवारा। जियत न देखेउँ जिहि कर मारा॥१

घिसहिं बुझाये साने धरे । बेलग सौ सौ तरकस भरे ॥२
खरगहिं चर्सै बीजु कै कया । रकत पियासी करहिं[न*]मया ॥३
बीर अस नर पखरहिं चढ़े । तारू तरवा लोहैं जड़े ॥४
तातर भुँजवर आगें कसे । झरकैं डोकैं सोनैं रसे ॥५
जिहकैं हाक परहि नर, औ गज कीन्ह तरास ।६
मरन सनेह हिये डर, इनके रहे न पास ॥७

टिप्पणी—(२) बेलग—(फारसी शब्द) चौड़े फल अथवा बेल्चेके आकारकी अनी का तीर। इतर पाठ बैलक—दो नोका वाला तीर, दुफकी तीर। सम्भवत यह गला काटनेर लिए प्रयोग होता था।
(३) कया—शरीर।
(६) जिहकैं—जिस ओर। हाक परहिं—घुस पड़ते है।

११४

(रीलैण्ड्स ८२)

सिफ्ते तीरदाजान गोयद

(धनुर्धर-वर्णन)

तिंहि तुरि बैस गये धनुकारा । जिहिं पंथ पवान भुइँ अधारा ॥१
साज बिदो आतिस के गढे । देत न कोडा घोडहिं चढ़े ॥२
अबरें नर तिंह सँकरें मूँतहि । बनिज धरे सतुरहि पूतहिं ॥३
बानसार के ऑग उचाये । पाँखि गरुर काट रचि लाये ॥४
दई फॉख सर मूँठ सँचारहिं । बोलत बोल माँछ सँह मारहिं ॥५
जन्त्र लरौरी काढे हुत दाँप हँकार ।६
मरि-मरि काँटा बाँधे, तिहँ पहँ कहाँ उबार ॥७

टिप्पणी—(३) अबरें—निर्बल।
(५) फॉक—मधुमालती और पदमावतमें भी यह शब्द आया है। 'कुँवर फॉक मर धरि लटकावा' (मधुमालती २६७।०) में इस शब्दका अर्थ माताप्रसाद गुप्तने 'पुंखा मिथ्या' किया है (पृ० ४१८), और 'फाक सर'को बिना फलका बाण बताया है (पृ० २२७) जो अस गत ही नहीं अत्यन्त हास्यास्पद भी है। 'धान करोरि एक मुख

छूटहिं । बाजहिं जहाँ पोक लगि फूटहिं ॥ (पदमावत ५२४।३) में पोककी व्युत्पत्ति पुङ्खसे मान कर वासुदेवशरण अग्रवालने बाण में लगे पर व्यक्त किया है। बृहद् हिन्दी कोशमें इसे तीरके पीछेकी ओर का सिरा बताया गया है। ये दोनों अर्थ भी सगत नहीं है। अंजुमने-इस्लाम उर्दू रिसर्च इन्स्टीट्यूट (बम्बई) में एक मध्यकालीन हिन्दी-अरबी-फारसी कोश की हस्तलिखित प्रति है। उसमें इस शब्दका अर्थ नुकीला बताया गया है। यही अर्थ ठीक भी है।

११५

(रीलैण्ड्स ८३)

सिफ्ते रथे जंगी गोयद

(रथ-वर्णन)

साजे रथ बितानहि कढ़े । सौ-सौ धानुक एक-एक चढ़े ॥१
हूके आय इनैं सहँ घनैं । तीन-चार सै ऊभैं गुनैं ॥२
जोयन बीस गरव्वाइ चलावहिं । खिन एक माँह बहुरि तिहँ आवहिं ॥३
ठौर ठौर ले रन महँ धरे । जनु बोहित्त सागर महँ तिरे ॥४
रथ क अरथ कछु किहँ कीन्हा । वर दर मुख लै लूँटा दीन्हा ॥५
देख कुझार राइ कै, गरधर रहे तँवाइ ।६
बहुत भलै राइ औ राउत, पौंद लोक मो आइ ॥७

टिप्पणी—(३) जोयन—योजन।
(४) बोहित—जहाज। सायर—सागर।

११६

(रीलैण्ड्स ८४)

सिफ्ते फीलान गोयद

(हस्ति वर्णन)

गज गवनैं डर साँसों भयउ । बासुकि (नाग) पतारहिं गयउ ॥१
डिंकरत इँदरासन डर होई । कापहिं पाउ न अँगवइ कोई ॥२
चढ़े महावत कसें उपनारे । दाँत पतर मद सूँड़ सिंगारे ॥३

चोटहिं महावत आँकुस गहें । बन कुंजरैं डर राख न रहें ॥४
सावन मेघ ओनइ जनु रहे । पखरे कीनर परिखहिं चढ़े ॥५

बीजु भाँत घन परे, परे छाहँ रन आइ ।६
उठे खेह दर पौंदर, सूरज गयउ लुकाइ ॥७

मूलपाठ—१—नास ।
टिप्पणी—(३) ओनइ—घिर ।

११७

(बम्बई ६३, रीलैण्ड्स ७०)

रुने दुवम राव रूपचन्द कसदे हिसार कदन व बीरून आमदने महरा जंग कर्दन उफ्तादन

(दूसरे दिन राव रूपचन्दका दुर्गकी ओर आना और महरका युद्ध के लिए बाहर निकलना)

राउं[1] रूपचन्द गढ होइ बाजा[2] । राइँ[3] महर दर आपुन साजा ॥१
फिर सँजो[4] बाँठहिं[5] हथवासा । कँवरू धँवरू[6] पाउ हुलासा ॥२
बाँठ कहा अर तोंको आही । बिथा मरसि उठु घर जाही ॥३
कँवरू तडपि खाँड कै[7] काढ़ी । झेतस करी सभ[8] देखै ठाढ़ी ॥४
बाँठै[9] ताक खड[ग*] गहि[10] मारा । फिरै मामद[11]धड गयउ उपारा॥५

दीठि भुलान खडग जो चमका, हाथ फिरै हथ जोत[11] ।६
लाग खाँड बाँठा कर, कँवरू गा भुइ लोट[12] ॥७

पाठान्तर—रीलैण्ड्स प्रति—

शीर्षक—नमूदार शुदने हरदू फौजहा व जंग करदने कँवरू बा बाँठा व कुश्ता शुदने ऊ (दोनों सेनाओं का आमने सामने आना और कँवरू-बाँठा का युद्ध, कँवरूका मारा जाना) ।

१—राइ । २—यह शब्द छूटा है । ३—राउ । ४—सजोइ । ५—बाँठ । ६—आग । ७—रै । ८—सब । ९—बै । १०—लाग । ११—फिरै हाथ हत छूट । १२—सूत ।

११८

(रीलैण्ड्स ७९)

जगे वर्दने धँवरू बा बाँठा व गुरेखः गुदने धँवरू

(धँवरू-बाँठा युद्ध)

धँवरू देखा कँवरू परा । रोहतास जैसे परजरा ॥१
हाथ साँग मारसि तस आई । फिरै लाग धड़ गयउ चुकाई ॥२
फुनि काढ़सि बिजुरी तरवारा । डाक दइ कै हनसि कपारा ॥३
टूटि खाँड तातर सथ धावा । बाँठ कहा हौं इहँ पै धावा ॥४
फुनि लेंहति काढ़सि तरवानी । तोहुत बाँठा चला परानी ॥५
खेदत उड़का धँवरू, परा दाव सँहराइ ।६
पलटि बाँठ जो देखा, तो बहुरि मारसि आइ ॥७

टिप्पणी—(२) साँग—एक प्रकारका भाला जो बर्छेसे छोटा अर्थात् ७-८ फुट लम्बा होता है और उसका सिरा ढाई फुट लम्बा और पतला होता है। इसका दण्ड भी लोहेका होता है। (अर्विन, आर्मी आव द इण्डियन मुगल्स)
(६) खेदत—पीछा करते हुए। उड़का—ठोकर खाकर गिरा।

११९

(रीलैण्ड्स ८०)

शादियाना जदन दर लश्करे राव रूपचन्द अज हिरवते फौज

(राव रूपचन्दकी सेनामें विजयोल्लास)

ताजी तार दोउ जन मारे । औ कुँवर महरैं कै हारे ॥१
दोउ आनैं बाधि खपाई । पाँयक बैठे करहिं बड़ाई ॥२
रकत लहू लै सरवर भरा । एको कुँवर न आगे मरा ॥३
जिन्ह देखा तिन्ह गयउ परानाँ । डर सहँ कोउ न करै पयानाँ ॥४
जे महरैं जेउनार जिवाये । सगरैं बीर न काजैं आये ॥५
भाट कहा महर सौं, तोपैं ना वह बीर ।६
बेग हँकार पठावहु, लोरक बावनबीर ॥७

१२०

(रीलैण्ड्स ८१)

आमदन भट बर लोरक अज फिरस्तादन महर

(महरके भेजे भाटका लोरकके पास आना)

भाट गुसाँई तुम्ह गढ धावसि । आगें दइ लोरक लै आवसि ॥१
चढ तुरंग भाट दौराना । लोरक जाइ जो आभर पावा ॥२
कहवाँ भाट घोड दौरायहु । काकर पठये कसा तुम्ह आयहु ॥३
लोर महर तुम्ह बेग हँकारी । कँवरू धँवरू थाँठें मारी ॥४
जारब गोवर लाग गोहारी । लइ अब चाँद होइ अँधियारी ॥५
उठा लोर सुन माँग कुमारी, महर भया अवसान ।६
आज बाँठ रन मारौं, देखउँ राइ परान ॥७

टिप्पणी—(५) जारब—जला दूँगा ।
(६) अवसान—हताश, परेशान ।

१२१

(रीलैण्ड्स ५७ , बम्बई १३)

दुरूने खाना रफ्तने लोरक व मुस्तइद शुदन बर जंग

(लोरकका युद्धके लिए सुसज्जित होना)

घर गा लोरक डाँक सँभारी । ओडन खाँड लीन्ह तत्तारी ॥१
बाँध रकावल खसि सर पागा[२] । पहिरसि तारसार कर आँगा ॥२
यनसहरी कर खींच बधाना । पीत[३] काट सनाह मढाना ॥३
तातर जिंहजन लीन्ह उचाई । लोरक मूँड़ दीन्हि औधाई ॥४
सारंग एक जुगत कर चढा । जनु अरजुन कहँ रावन[५] कढा ॥५
फिर सँजोइ कटार[६] लीन्ह, बाँध चला तरवारि ।६
रकत पियास खाँड लोर कर, दौरा जीभ[७] पसारि ॥७

पाठान्तर—बम्बई प्रति—
शीर्षक—आमदने लोरक दर खाना व साख्तःशुदन बराय जंग व पोशीदन अस्ल्हा व बस्तने अस्ल्हा (घर आकर युद्धकी तैयारी करना और शस्त्रास्त्रसे सुसज्जित होना)

१—धसि । २—ब०—पाँगा (पे के नीचे नुक्तों का अभाव है जिससे माँगा पढ़ा जाता है)। ३—पीतर। ४—धौरव कहँ। ५—सँजोइ कटारी। ६—जाँभ।

१२२

(रीलैण्ड्स ६८)

आमदने मैना पेशे लोरक व गिरिया कर्दन रा

(लोरकके सामने आकर मैंनाका विलाप)

आगें आइ ठाढि धनि मैंनाँ । नीर समुँद जस उलटै नैनाँ ॥१
चुइ-चुइ बूँद परहि थनहारा । जनु टूटहिं गज मोतिहँ हारा॥२
जो तुम्ह हैं जूझैं कैं साधा । महि तू मार करहु दुइ आधा ॥३
तौ पीछे उठ झूझैं जायहु । मोर असीस जीत घर आयहु ॥४
जाकर नारि सो झुजहि न जाई । बावन सिखण्डि रहा लुकाई ॥५
देहु असीस रोचन, मारि बाँठ घर आवउँ ।६
सोने मेंड़ि गढ़ाइ, मोतिहँ माँग भरावउँ ॥७

टिप्पणी—(१) धनि—स्त्री, पत्नी। मैंना—लोरककी पत्नी।
(२) थनहारा—स्तन।
(५) सिखण्डि—शिखण्डी, महाभारत का एक पात्र जो नपुंसक था।
(६) रोचन—टीका।
(७) मेंड़ि—पैर का एक आभूषण।

१२३

(अप्राप्य)

१२४

(रीलैण्ड्स ८५ ; बम्बई ७)

रफ्तन लोरक दर खानये अजयी व वहाना-ये मर्ज कर्दन ऊ

(लोरका अजयीके घर जाना)

जैम असीम देत तम पायहु । लोरक राउ जीति घर आयहु ॥१
लोरक गा अजयी के बारा । भीतर हुतें जो आइ हँकारा ॥२

पहिलहिं अजयी दोख अनावा[1] । मिस कै बरका दाँत कँपावा ॥३
घात काट कहसि केर ओ फरी । घिरैं लै यौंडी तर धरी ॥४
अंग मूँड अस करे पुकारा । कौन मींचु दीन्हें करतारा ॥५
लाज लाग महरै मुँह, अबहीं[2] राउ कह आउ ।६
खाँड मींचु मनायउँ, दइ भल पछताउ ॥७

पाठान्तर—बम्बई प्रति—

शीर्षक—राजी शुदने खोलिन व इजाजत दादने मैना, बिदअ करदने लोरक बरायने राव रफ्तन (खोलिनका राजी होना, मैनाका अनुमति देना और लोरकका रावके यहाँ जाना)

१—राइ । २—अजबी । ३—अपावा । ४—अमबइ ।

टिप्पणी—(२) अजयी—लोक कथाओंके अनुसार अजयी लोरकका गुरु था। यहाँ उसके सम्बन्धमें स्पष्ट कुछ नही कहा गया है, परन्तु प्रसगसे लोक कथाओं की बात ठीक जान पडती है।

१२५

(रीलैण्ड्स ८६ , बम्बई ८)

नमूदने लोरक रा अजयी तरीके जग

(अजयी का युद्ध कौशल बताना)

अजयी कर बरकै बतलाओं[1] । यहै बहुत तुम्ह हुत[2] सिधि पाओं[3] ॥१
मैं लोरक तहियाँ मिधि दीन्हें[4] । हाथ भिरै तुम्ह अहियाँ लीन्हें[5] ॥२
अब बुधि देउँ सुनसु तूँ[6] मोरी । ओडन देह न देखें तोरी ॥३
फिरै तेग[7] भुइँ पाउ उचावहु[8] । बाँह लुकाइ खडग चमकावहु ॥४
पाट गहत जिन भूलै दीठी । पाउ न देखें अखरहिं पीठी ॥५
खाल उधारैं खेदहुं, सीस भरे जिउ जाइ ।६
खडग भरहर[9] मारसु, जइसैं बन अरराइ ॥७

पाठान्तर—बम्बई प्रति ।

शीर्षक—बिदआ करदने लोरक मर अजयी रा व हुनरहाये जग आमोख्तने अजयी मर लोरक रा (लोरकका अजयीसे विदा माँगना और अजयीका उसको युद्ध कौशल बताना)

१—पकरहिं बतलावउँ। २—लेउँ। ३—पावउँ। ४—देते। ५—देते।
६—सुनहु तुम। ७—पाट धरै। ८—उचायहु। ९—चमकावहु।
१०—उधारत खेदसि। ११—दइ मराइर।

टिप्पणी—(२) तहिया—उस दिन। जहिया—जिस दिन।
(३) ओदन—दाल।
(६) खेदहु—खदेड़ो।
(७) अराय—पेड़के गिरनेकी क्रिया।

१२६

(रीलैण्ड्स ७१)

रफ्तने लौरक बर महर व बर्ग दहानीदने महर लोरक रा

(लोरकका महरके पास जाना : महरका लोरकको पान देना)

पहिले जाइ महर (अरगायहु)[१]। तौ पाछें तुम्ह झूझें जायहु ॥१
लोरक जाइ महर अरगावा। पेग बीस चल आगें आवा ॥२
अबलहि लोरहिं भये परजाई। सगरें होइ मैं देखेउँ आई ॥३
लोरक सूर विहसि तूँ मोरा। मार बाँठ मुख देखउँ तोरा ॥४
हौं तुम्ह धँ बीर जो पाऊँ। आधे गोवर राज कराऊँ ॥५
तीन पान कर बीरा, महरें लोरहि दीन्हि हँकार ।६
घोर देउँ सो आखर पाखर, जो आयहु रन मार ॥७

मूलपाठ—१—अरगावा।
टिप्पणी—(१) तौ—उसके।
(६) तइम—उसके अनुसार।

१२७

(रीलैण्ड्स ७२)

रफ्तने लोरक बा याराने खुद दर मैदानेजंग

(लोरकका अपने साथियोंके साथ युद्धके मैदानमें जाना)

चला लोर लै आपुन साथी। जहवाँ परारे मैमत हाथी ॥१
लोहु नदी जनु दइ धुड़काई। वारूँ तरवाँ लै अन्हवाई ॥२

झिरक लोह जनु अदनल भानूँ । डरहँ दूसर सूझि न आनूँ ॥३
देखि बाँठ राजा पहँ आवा । चाँद कहा सूरज चलि आवा ॥४
उठै झार डर रहै न जाई । हाथि घोर सब चला पराई ॥५
झूजहु बाँठ तैं जीतब, आइ लोर छँदलाइ ।६
सूर बीर तैं मारब, तिहँ मँह एक न जाइ ॥७

टिप्पणी—(१) पखरे—लोहेके झूल्से सुसज्जित ।

१२८

(रीलैण्ड्स ७३)

सिफ्ते मुस्तैदिये फौज लोरक

(लोरककी सेनाकी तत्परता)

निसरत लोर सैन नीसरी । एक एक जन बरकहिं अगरी ॥१
लउकहिं खड़ग दाँत लै बहिरे । बाँधे बाट जिव रुधिर धरे ॥२
झलकहिं ओडन तानें तरे । बाँधे पवरैं लोहैं जरे ॥३
पटोर तारसार कै पहने । भये अतै वजर कै बने ॥४
सीह सिंदूर दरेरें धरे । भाजहिं देख घोर पाखरे ॥५
नियरें नियरा पायक, चढ़ा सहस बर राउ ।६
अचल चलायें न चलें, रहे रोप धर पाउ ॥७

टिप्पणी—(५) सींह-सिंदूर—इसका उल्लेख दो अन्य स्थलों पर भी हुआ है (१९६।३, २०५।६) । सर्वत्र सीन, ये, नून, हे, और सीन, नून दाल, वाव, रे बहुत स्पष्ट रूपसे लिखे गये हैं। पहले शब्दके सींह पाठमें कोई सन्देह नहीं हो सकता । दूसरे शब्दको सन्दूर, सँदूर, सिन्दूर, सिदूर, कुछ भी पढा जा सकता है। पदमावतमें भी यह शब्द युग्म दो बार आया है (१४४।६; ६३६।१) । वहाँ माताप्रसाद गुप्तका पाठ है—सिंघ सदूरा, सिंह सदूरहि । मधुमालतीमें उन्होंने सीह सेदूर (१००।२; १८१।२) पाठ दिया है। वासुदेवशरण अग्रवालने इनका तात्पर्य सिंह और शार्दूल बताया है। और यही अर्थ माताप्रसादगुप्तने मधुमालतीमें स्वीकार किया है । सदूर अथवा सेदूर हमारी दृष्टिमें नुक्तोंके अभावमें अपपाठ है । वास्तविक पाठ सिंदूर, सिन्दूर अथवा सँदूर है । और वह अपने मूल रूपमें

सिन्धुर है, जिसका अर्थ होता है हाथी। मध्यकालीन कलामें सिंह हस्ति एक अति प्रचलित 'मोटिफ' रहा है।

(७) रोप—(धा०-रोपना), गाड़ना, दृढ करना।

(४) तारसार—लोहेके तार का बना हुआ (सार—लोहा (मुये खालकी साँस सो सार भसम होइ जाय)।

१२९

(रीलैण्ड्स ८८)

रैयत खुर्दने रूपचन्द व फिरिस्तादने भट

(रूपचन्दका भयभीत होकर दूत भेजना)

चहुँ दिसि देस राउ डरि आवा। रहा अचल होइ चल न चलावा॥१
जोर चलावहिं जाइ कहाँ। कौन उत्तर अस दीजै तहाँ॥२
ओछे दर हम बाजै आये। अनै पौर अब जाइ न जाये॥३
देस मँदिर महँ लागी लाजा। पौर राउ औ जिहँ सहँ भाजा॥४
काहू सौ मन्त करे बितारे। जे रहे मॉन सो आगैं हारे॥५
राइ भाट कह पठये, महर गढ़ अस गाउ।६
एक एक सहँ झझे, दूसर नर नहिं आउ॥७

१३०

(रीलैण्ड्स ८९)

बाज गश्तने भट व जग वर्दने सींह व कुश्तः शुदन ऊ

(दूतका लौटना : युद्धमें साँहका मारा जाना)

बहुरे भाट दिवाई पानॉ। महर बोल राजा कर मानाँ॥१
बाँठ झुझार फुरै लै आवा। पाछैं सरे नहिं जिह कर पावा॥२
सींह सिंगार बीर दुइ आये। राइ मया कर पान दिवाये॥३
ओडन सींह झकोर उतरा। हाथ खड़ग खसि धरती परा॥४
चढ़ दूत अनै बुमगुन अस भयऊ। सींह सिंगार लौंट रन गयऊ॥५

सीह लाग रन रीसे, काँप उठी नपार ।६
नहाँ भयउ जर कँवरू, काटसि खेद सियार ।।७

टिप्पणी—(२) कुरै—तत्काल ।

१३१

(रीलैण्ड्स ९०)

जग करदने सिगार बा बाँठा व कुश्त शुदने सिंगार

(सिंगार बाँठा युद्ध सिंगारकी मृत्यु)

देख सिंगार कोह घर चढा । बाँध फरहरा आगें सरा ।।१
दौर गहसि सर खाँडइ घाऊ । तातर टूट काढि गा पाऊ ।।२
दूसर खाँड लिहसि तत्तारी । भिरे भाट धर गींउ उपारी ।।३
दाब सिंगार चीर तस मारा । बिचला खाँड टूट गइ धारा ।।४
फुनि जमधर साते कर गहे । वजर चोट सर चेरैं सहे ।।५
बिनु हथियार भया राउत, परिगा थाक सिंगार ।६
एक चोट दोइ कीतस, धर सों फाट कपार ।।७

टिप्पणी—फारसी शीर्षक असगत जान पडता है । इस कडवकमें बाँठका कोई उल्लेख नहीं है । इसमें केवल सिंगार के युद्धकी बात जान पडती है ।
(१) फरहरा—पताका, झंडा ।
(३) गींउ—गर्दन ।
(५) जमधर—छुरी नोकवाली कटार ।

१३२

(रीलैण्ड्स ९१)

आमदने ब्रह्मदास व धरमूँ अन तरफे राव रूपचन्द व कुश्तः शुदने ब्रह्मदास

(राव रूपचन्दकी ओरसे ब्रह्मदास और धरमूँका आना और ब्रह्मदासका मारा जाना)

ब्रह्मदास धरमू दुइ आये । राइ मया कर पान दिवाये ।।१
आज सुदिन जाकहँ पटतारे । गाँउ ठाँउ कापर सँ सारे ।।२

ओडन चँवर लाग घूँघरा। बरमदास सो आगें घरा ॥३
छाँड़ फिरे धानुक कर गहा। बानि भूलि धरि चीरैं रहा ॥४
बरमदास तुम नेर न आवहु। कौन लाभ किहँ जीउ गँवावहु ॥५
बरमदास मन कोपा, काट मूँड लै जाउँ ।६
बुझता बान निकर गा, ब्रह्मदास परा ठाँउ ॥७

१३३

(रीलैण्ड्स ९२)

जग गर्दन धरमूँ व कुश्त. शुदन धरमूँ

(धरमूँका युद्ध करना और मारा जाना)

फ़ुनि धरमूँ गुन मेलस तानी। बाँध टूट औ पंच गँवानी ॥१
चला बजाइ भेरि औ (तूरा)। तौलहि धरमूँ चाँपइ पाला ॥२
धरमूँ कोप पीठ लइ भिरे। चीरैं गर धरमूँ कै धरे ॥३
गये परान धरमूँ धर मारसि। काढ़ कटार हिये महँ सारसि॥४
देइ पाउ तोरसि भूदण्डा। काटसि चीर सीस नौखण्डा ॥५
रनमल पैठ खड़ग लै मारसि, कँवरू कह पूत ।६
रहे न तेगा नर पै, जूझ राड जमजूत ॥७

मूलपाठ—तरा।

टिप्पणी—(२) इसका पूर्वपद और अगले कडवककी पंक्ति २ का पूर्व पद एक ही है।

१३४

(रीलैण्ड्स ९३)

जैंगिदने अंगे रनपति गोयद

(रनपतिका युद्ध)

रनपत दीन्हि महर अगसारी। चाहु बियाहि अनैं कुँवारी ॥१
चला बजाइ भेरि औ (तूरा)। खड़गमूँठ भर लिहसि सिधोरा॥२
दौर खाँड रनमल सर दीन्हाँ। रकत धार सब सेंदुर कीन्हाँ ॥३

रनमल मरत सिरीचँद आवा। रनपत पाखर खाल खिंचावा ॥४
अजैराज सेंगर कर गहे। मारसि भेलक पाखर रहे ॥५
छाड़ सिरीचँद पाखर भागा, जिउ लै गयउ पराइ।६
राइ देखि बाँठा, तुम कस झूझ न जाइ ॥७

टिप्पणी—(२) 'चला ल्जाइ फेरि उतरा' पाठ भी सम्भव है।

१३५

(रीलैण्ड्स ९४)

आमदने बाँठा बा फौज खुद दर मैदान जग

(युद्धक्षेत्रमें ससैन्य बाँठाका आगमन)

बीरपाल करपत लै आवउँ। भजवीर हमीर सनेकन बुलावउँ ॥१
करमदास मतिराज देवानन्द। बिर्जसेन औ महराज बिर्जैचन्द ॥२
बिकटनगर व देसूँ ताको। हरदीन खीरू मरदेउ जाको ॥३
देवराज हरराज सरूपा। अजयसिंह हरपार निरूपा ॥४
धीरू हरखू गनपत आनों। सिउराज मदनूँ भल जानों ॥५
तीस पखरिया आनों, सब दर मारों आज।६
हाथि घोड धन चाँदा लीजइ, गोबर कीजइ राज ॥७

१३६

(रीलैण्ड्स ९५)

फिरस्तादने महर लोरक बा मुकाबिले बाँठा

(महरका बाँठाका सामना करनेके लिए लोरकको भेजना)

आनै पौर बाँठा लइ आवा। महर देखि औ लोर बुलावा ॥१
लोरक बीर पखरिया पारहु। पठै डाकवइ तीस हँकारहु ॥२
पाँच बैस पाँच चौहानाँ। दतरी पाँच देस जिहिं जानाँ ॥३
नाऊ एक तीन साहलें। पाखर एक सरोद कै गिने ॥४
गहरवारा औ रोद दस आनी। पाखर कुण्ड तुलानेउँ जानी ॥५

आठ आइ दोइ आनैं, जैस अखार कै मेह ।६
लोह पहिरे सब ठाढे, तिल एक सूझ न देह ॥७

टिप्पणी—(२) दाकवइ—सन्देशवाहक ।
(४) साहनैं—सैनिक, प्रधान ।
(६) अखार—आषाढ ।

१३७

(रीलैण्ड्स ९६)

सिफ्ते जंग कर्दने बाँठा या लोरक व हजीमते खुर्दने ऊ

(बाँठा–लोरक युद्ध : बाँठा की हार)

उभरे खड़ग कुन्त तरवारी । घिरे एक लह होइ रनमारी ॥१
टूटहिं मुण्ड रुण्ड धर परहीं । जियकर लोभ न चित महँ धरहीं॥२
खरल दँडाहर बाजहिं तारा । भये भाग दर रन रतनारा ॥३
जस फागुन फूलहिं बन टेसू । तस रन रकत रात भये भेसू ॥४
बाजहिं भेरि सींग औं तूरा । दर भा चाचर रकत सिंदूरा ॥५
परे पखरिया चहुँ दिसि, कुन्त राज सर लाग ।६
पहर बीर कुछ उबरे, बाँठा जिउ लइ भाग ॥७

टिप्पणी—(३) दँडाहर—दण्डताल; ताल देनेका वाद्य । तारा—करताल ।
(४) टेसू—पलासका फूल । यह फागुनके महीनेमें होलीके आसपास फूलता है । इसका रंग गहरा लाल होता है । जब फूलता है तो पूरे वृक्ष पर छा जाता है और दूरसे देखने पर जान पड़ता है कि जंगलमें आग लगी हुई है ।
(५) भेरि—मृदंगसे मिलता जुलता वाद्य । ब्रजमें लम्बी तुरहीके समान एक बाजेको भी भेरि कहते हैं ।
सींग—(सं० शृंगन>सिंग>सींग)—पशुके सींगसे बना फूँकनेका वाद्य । आइने-अकबरीमें नक्कारखानेके बाजोंमें इसका उल्लेख है । वहाँ कहा गया है कि यह गायकी सींगकी शक्लका ताँबेका बनता है और एक साथ दो बजाये जाते हैं । तूरा—धातुका बना मुँहसे फूँकनेका बाजा । कदाचित इसे ही आजकल तुरही कहते हैं ।
(६) पखरिया—पक्खर (कवच) धारी सैनिक ।
(७) उबरे—तावतमें अधिक ।

१३८

(रीलैण्ड्स १७)

मुशावरत कर्दने राव रूपचन्द बा बाँठा

(राव रूपचन्दका बाँठासे परामर्श)

राइ कहा बाँठा कम कीजइ । सब दर चाँप नगर किन लीजइ ॥१
जो तिहँ राइ आपुन पॅछवाई । चाँद सनेह झूझ पुनि पाई ॥२
बहिरँ खाँड अनै लस जोरी । देखहिं देव तैंतीसो कोरी ॥३
पेखहिं पेखहिं भयउ अभेरा । चला भाजि राजा कर खेरा ॥४
चाँदा कारन जूझ पुनि पायी । औ तिहँ रकतहँ भयउ निरावा ॥५
लै जो पखरिया समता महँ, बाँठह कम्म कीज ।६
कै चाँदा लै जाइ राजा, कै गोवराँ जिउ दीज ॥७

टिप्पणी—(२) दूसरी पंक्तिका उत्तर पद और पाँचवी पंक्तिका पूर्वपद लगभग एक-सा है।

(५) प्रतिके अनुसार पाठ ठीक होते हुए भी पूरी पंक्तिके शुद्ध पाठ होनेमें सन्देह है।

१३९

(रीलैण्ड्स १८)

जवाब दादन बाँठा मर राव रूपचन्द रा

(बाँठाका उत्तर)

राइ पखरिया सौ महिं देहू । अदमी तीन चार तुम्ह लेहू ॥१
लै अभरों हौ राउत जहाँ । पाछैं मोर न छाँड़हिं तहाँ ॥२
चला महर खासि परी भठानी । बाँठै पिनिनै तिहँ कै आनी ॥३
दुरि लै बाँठा तिहँ भुईं गयउ । जहाँ अभेर महर सौं अभयउ ॥४
दूध पियावत फिरँहिं न कोई । अस कै मथैं काल कित होई ॥५
परे पखरिया नौ दस, भल बानैं होइ फाग ।६
महर सनाह टूटि गा, ओछ खाँड धर लाग ॥७

१४०

(रीलैण्ड्स ९९)

जंग कर्दने लोरक बा राव व हजीमत खुर्दने राव

(लोरक और रावका युद्ध : रावकी हार)

पलटा लोर संग जस गाजा । फल खाँड राजा सर बाजा ॥१
खड़ग तार लोरक कै बाजी । पाखर काट राउ गा भाजी ॥२
बिजली आँनें धरसि महराजू । मारसि सिरिचन्द औ भुईंराजू ॥३
बीरराज मारसि औ फिरे । बजर आग खाँडे परजरे ॥४
मार सकति लै रकत बहाये । खड़ग झार लोहैं बुझाये ॥५
आगैं दइ लिहसि दर आपुन, हाक चला तस टाँड ।६
लौटा बाँठ लोर [- - -], सघन उभारस खाँड ॥८

टिप्पणी—(५) सकति (सं० शक्ति)—तीन नोकोंवाला त्रिशूलके ढगका छोटा भाला।

१४१

(रीलैण्ड्स १००)

उस्तादने बाँठा दर मैदान व हजीमत खुर्दने राव रूपचन्द

बँठाका गिरना : राव रूपचन्दका पराजय

उभर बाँठ लोरक तस मारा । परा घोर नर दयी उबारा ॥१
दूसर खाँड जो पैठ सनाहाँ । धुँजो टूटि उपरि गइ बाहाँ ॥२
उठा लोर सकति कर गहे । मारसि बेलक पाखर रहे ॥३
उभरे बीर दोउ बरबण्डा । अगिन बरै बर बाजत खण्डा ॥४
गरह मँजीठ बाँठ खसि परा । हियैं पाउ दइ लोरक धरा ॥५
धरसि तार तरवारि कण्ठहुत, काट चला लै मुण्ड ।६
भाजि चला डर राउ रूपचँद, देख पड़ा धड़ रुण्ड ॥७

टिप्पणी—(४) बरबण्डा (बरिपण्ड)—बलवान, प्रचण्ड, दुर्धर्ष ।

१४२

(रीलैण्ड्स १०१)

दुम्बाल कर्दने लोरक अज लश्करे राव रूपचन्द

(लोरकका रूपचन्दकी सेनाका पीछा करना)

लोरक कहा जान जनि पावहिं । तस मारों जस फिर न आवहिं ॥१
मारहिं पायँक कीचहँ भरे । खेँह रकत पूरइ भरे ॥२
मार महावत हाथी धरे । धीर न ठाढ घोड़ पाखरे ॥३
बहुतै वीर जियत धर आनें । बहुतै जीउ लै निसर पराने ॥४
मारत खड़ग मूँठ अस लागी । परी साँझ राजा गा भागी ॥५
मरिहँ न सूझै धरती, रकत भयउ पैराउ ।६
चला गँवाइ राउ दर आपुन, बहुरि न आवइ काउ ॥७

टिप्पणी—(१) जनि—मत, न ।

१४३

(रीलैण्ड्स ८७ ; पंजाब [प])

सिफ्ते जानवरान मुर्दार खार

(मुर्दा खानेवाले जीव)

गीधहिं नोता केतन हँकारा[१] । कीत[२] रसोई अगिन[३] परजारा ॥१
आज बाँठ इतै खँड तारा ।[४] लोर[५] बसायें करउँ जेउनारा ॥२
नोता काल देस कर आवा ।[६] चील्ह के दर माँडो छावा ॥३
सरग उड़त खबरहर खीनी ।[७] काल कपोहँ भाँत दस कीनी ॥४
सुनाँ सियार पितरपुरस[८] आवा । रैन बास सब जात बुलावा ॥५
कूद माँस धर तोरच, रकत भरब लै कुण्ड ।६
आठ माँस धरि जेंवत, सात माँम लहि मुण्ड[१०] ।७

पाठान्तर—पंजाब प्रति—

शीर्षक काफी लम्बा है किन्तु उपलब्ध फोटोमे अपाठ्य है ।

१—पद अपाठ्य है। २—आन। ३—आग। ४—पद अपाठ्य है।
५—लोग अथवा लोक। ६—पद अपाठ्य है। ७—पद अपाठ्य है।
८—कार कचोर। ९—अपाठ्य है। १०—पंक्ति ६-७ अपाठ्य हैं।

टिप्पणी—(१) परजारा (सं० प्रज्वल > प्रा० पज्जल, पर्जल > पर्जर, परजरना)—
जलाया।
(३) माढो—मण्डप।
(५) सुर्नां—श्वान, कुत्ता।

१४४

(रीलैण्ड्स १०२)

बाज गुस्तन महर या फतह व नवाख्तने लोरक रा व बर पील सवार
करदन व दीदने खलकहा

(महरका विजय कर लौटना और लोरकको हाथी पर बैठा कर
जुलूस निकालना)

रन जित महर गोवर सिधारा। लोरक खतरी बीर हँकारा ॥१
दइ के पान महर गिय लावा। औ गज मैमत आन चढ़ावा ॥२
चँवरधर दोइ चँवर डुलावहिं। औ राउत आगे कै आवहिं ॥३
ऊपर रात पिछौरे तानी। चढि धौराहर देखैं रानी ॥४
चल गोवर सब देखैं आवा। रन लोरक खाँडे जस पावा ॥५
मुनिवर दीन्ह असीसा, गोवराँ होइ बधाउ ।६
धन धन बीर भू ऊपर, पूजा लोग चढ़ाउ ॥७

टिप्पणी—(२) गिय लावा—गले लगाया।
(४) रात पिछौरा—लाल चँदोवा। अब्बास खाँ कृत तवारीखे शेरशाहीके अनुसार लाल रंगका तम्बू या शामियाना केवल राजाके उपयोगमें आता था अथवा जिस पर राजकृपा होती थी उसे प्रदान किया जाता था। जायसीने पद्मावतीके शयनागारमें लाल चँदोवेका उल्लेख किया है (२९१।४)। लाल रंग राज सम्मानका सूचक समझा जाता था।
(५) जस—यश।

१४५

(रीलैण्ड्स १०३)

बर आमदने चाँदा बर बालाये क्स्र व दीदन तमाशा लोरक व बुदने बिरस्पत रा बा खुद

(बिरस्पतके साथ चाँदका महलकी छतपर जाकर लोरकका जुलूस देखना)

चाँद धौराहर ऊपर गयी । चेरि बिरस्पत गोहन लयी ॥१
परी साँझ जग भा अँधियारा । चाँद मँदिर चढ़ गउ उजियारा ॥२
सो कस आह जै गोबर उबारा । कवन बीर जिहँ कटक संघारा ॥३
कौन मनुख जिहँ बीगर हनाँ । धन सो जननि अइस जै जनाँ ॥४
पूछेउँ धाइ बचन सुन मोरा । इहँ दर कौन सो कँकूँ लोरा ॥५

कवन रूप गुन सुन्दर, आँखों बिरस्पत तोहि ।६
साध मरत हौं बीरन, लोर दिखावहु मोहि ॥७

टिप्पणी—(१) गोहन—साथ ।

(२) मंदिर—आजकल मंदिरका प्रयोग देवस्थानके लिए किया जाता है, पर मध्यकालीन साहित्यमें सुन्दर भवन और राजपुरुषोंके आवासको मंदिर कहा गया है । बाणने महासामन्त स्कन्दगुप्तके मंदिरका उल्लेख किया है ।

(३) उबारा—उद्धार किया ।

(७) साध—इच्छा ।

१४६

(रीलैण्ड्स १०४ काशी)

निशानी नमूदने बिरस्पत चाँदा रा अज जमाले सूरते लोरक

(बिरस्पतका चाँदको लोरकका रूप बताना)

लोरह चाँद सुरुज कै जोती । सुन्दर सोन देंह गजमोती ॥१
चँदर लिलार[१] धरा जनु लाई । चमक बतीसी अतइ सुहाई ॥२
गुनिया कैस लक लह आई । लंक छीन कोने पचमाई[२] ॥३

नैन कचोरा दूधँ[1] भरे । जनु छितया[4] तिहँ भीतर परे[5] ॥४
कनक बरन झरकत है देहा । मदन मुरत अद लाग न खेहा ॥५
तानी रात पिछौरी, हस्ति चढ़ा दिखाउ ।६
कस सर पाग[6] सलोने, तिरिछ[8] कटार सुहाउ ॥७

पाठान्तर—काशी प्रति—

शीर्षक—नमूदने बिरस्पत लोरक रा बर चाँदा (चाँदसे बिरस्पतका लोरक-की प्रशंसा करना)।

१—ललाट । २—खोंपा केस इतह (!) लहराई । लंक छीन हर (!) कही न जाई ॥ ३—रूपै । ४—छतिया (!) । ५—धरे । ६—कर हर पाग । ८—आजन (!) ।

टिप्पणी—(६) रात पिछौरी—देखिये १४४।४ ।

१४७

(रीलैण्ड्स १०५)

दीदने चाँदा जमाले कमाल लोरक व बेहोश शुदने ऊ

(लोरकका सौन्दर्य देखकर चाँदका मूर्छित हो जाना)

चाँदहि लोरक निरख [नि[*]]हारा । देखि बिमोही गयी बेकरारा ॥१
नैन झरहिं मुख गा कुँभलाई । अन न रूच औ पानि न सुहाई ॥२
सुरुज सनेह चाँद कुँभलानी । जाइ बिरस्पत छिरका पानी ॥३
घर आँगन सुख सेज न भावइ । चाँदा माहे सुरुज बुलावइ ॥४
पूनिउँ चँदर जैस मुख आहा । गइ सो जोत खीन होइ रहा ॥५
सहसकरों सुरुज कै, रहै चाँद चित छाइ ।६
मोरहकराँ चाँद कै, भयी अमावस जाइ ॥७

टिप्पणी—(६) सहसकरा—हजार किरण अथवा हजार कलाएँ ।

(७) सोरहकरा—सोलह कलाएँ । चन्द्रमामें सोलह कलाएँ मानी जाती हैं । पूर्णिमाके चन्द्रमें पन्द्रह कलाएँ होती हैं । आकाशमें फैले हुए नक्षत्र, जिनके मध्य चन्द्रमा सुशोभित रहता है, उसकी सोलहवीं कला कही जाती है ।

१४८

(रीलैण्ड्स १०६ : पंजाब [ला०])

तफहीम कर्दने बिरस्पत चाँदा रा कि होशियार बाश

(बिरस्पतका चाँदाको समझाना)

कहइ बिरस्पत चाँद सँभारू । सुरुज लागि कस करसि खभा[रू][1] ॥१
हाथ पाउ समरस नहिं चारी । बाँधु केस ओढ़ि लै सारी[2] ॥२
जोत लागि सुरुज कै झारा । कै खँडवान पियाऊँ सारा[3] ॥३
राजकुँवरि तूँ कान न करसी[4] । हौं सो धाइ मोर लाज न धरसी ॥४
आनौं पानि बैसि मुख धोवहु । अल्हर[5] सेज सुख निदरा सोवहु[6] ॥५

जो चित है तुम्ह (बसा), भोर कहउ मोहि ।६
रैन जाइ दिन अगवइ, उतर देउ मैं तोहि[7] ॥७

पाठान्तर—पंजाब प्रति—

फोटोमें शीर्षक अपाठ्य है ।

१—कभारू । २—भारी । ३—यह पंक्ति अपाठ्य है । ४—ना न करी । ५—उल्र । ६—यह शब्द कट गया है । ७—फोटो मे दोहा अपाठ्य है ।

मूलपाठ—(६) निसा ।

टिप्पणी—(३) झारा (सं० ज्वाला> झार) तेज । खंडवान—खाँडका पानी, शरबत ।
(५) अल्हर—अल्हड । यह अपपाठ जान पडता है । पंजाब प्रतिका पाठ उल्र अधिक संगत है (उलर—आरामसे लेटना; निश्चेष्ट होकर पड रहना) ।

१४९

(रीलैण्ड्स १०७)

फ्न्दादने बिरस्पत चाँदा रा अज आमदन लोरक दर खान

(बिरस्पतका लोरकको घर बुलानेका उपाय चाँदको बताना)

गयी सो खेल रैन अँधियारी । उठा सुरुज जग किरन पसारी ॥१
दिन गये घरी बिरस्पत आई । चाँद कर आन जाइ जगाई ॥२

कहु सो बात जिहँ तूँ अस भई । काह लाग भर अँगर गई ॥३
चाँद निरस्पत कै पाँ परी । काल्हि सुरुज देखउँ एक घरी ॥४
कै वह मोरें घरें बुलावहु । कै मैं टै वोकै (ढिंग) लावहु ॥५
चाँद गुनित मैं देखी, सुरुज मँदिर जिहँ आउ ।६
कर महर सेंउ बिनती, गोबर नोत जिवाँउ ॥७

मूलपाठ—(५) दन्द । गापचा मरकत छूट जानवे यह पाठ है ।
टिप्पणी—(४) घरी—घड़ी । ४५ मिनटकी एक घड़ी होती है ।
(४) काल्हि कल ।
(५) कै—या तो । वोके—उसके ।

१५०

(रीलैण्ड्स १०८)

रफतन चाँदा दर महर व अर्ज़े दाश्त मेहमानिये ठल्क कदन

(चाँदके महरसे जन भोज करनका अनुरोध करना)

निरस्पत बचन चाँद चित धरा । हींउर पूरि खाँड घिउ भरा ॥१
सुनतें बचन महर पहँ गयी । जाइ ठाढि आगें होइ भयी ॥२
एक ईछ ईछी मैं पीता । तो तुम्ह राउ रूपचन्द जीता ॥३
देवहिं पूजा फूल चढाऊँ । पायँ लाग कर जोड़ मनाऊँ ॥४
पिता मोर जो रन जित आइह । देस लोग सभ नोत जिंवाइह ॥५
पर वह बाच जो कीन्हेउँ, अरस होइ सो नारि ।६
राइ सहग रन जीत, आयहु कटक सँवारि ॥७

टिप्पणी—(१) हींउर—हृदय ।
(२) ठाढि—खड़ा ।
(३) ईछ—इच्छा । ईछी—इच्छा किया, संकल्प किया ।
(४) आइह—आयेगा । जिवाँइह—भोजन करायेगा ।
(६) बाच—वचन ।

१५१

(रीलैण्ड्स १०९)

कबूल कर्दने महर सुखुने चाँदा व इस्तेदाद दादने हमें खल्क रा

(चाँदाके अनुरोधपर ज्योनारका आयोजन)

चाँद वचन हौं कहवाँ पावउँ । सब गोबर औं देम जिवावउँ ॥१
महरें नाउहिं कहा बुलाई । घर घर गोबर नोतहु जाई ॥२
काल्हि महर घरें जेंवनारा । बार बूढ़ सब झार हँकारा ॥३
सुनिकै नाउ दहा दिसि गये । तैंतीसों पार सब नोता लिये ॥४
खोंट खोंट सभ नोता झारी । अथवाँ सुरुज परी अँधियारी ॥५

पारथ पठये अहेरें, औं बारी पनवार ।६
पिछले रात आये बहुरि, नाऊ सहदेव (दुआर) ॥७

मूलपाठ—(७) महर ।

टिप्पणी—(३) झार—एक एक करके ।
(४) दहा—(फारसी) दस । पार—पाद, पंक्ति, समूह, यहाँ जातिसे तात्पर्य है ।
(६) पारथ—शिकारी । पठये—भेजा । बारी—पत्तल बनानेवाली जाति । पनवार—पत्तल ।

१५२

(रीलैण्ड्स ११०)

आवर्दने सैयादाने हैवानाते हर जिन्सी

(अहरियोंका अहेर लेकर आना)

दिन भा पारध आइ तुलाने । अगनित मिरग जियत घर आने ॥१
बहुतै रोझ गेंदना न गिने । चीतर झाँख जाँहि न गिने ॥२
गीन पुछारि औं लोखरा । ससा लँबकनों खर एकु [सँकरा*] ॥३
मेढ़ा सहस मार के टाँगे । चार पाँच सै बकरा माँगे ॥४
औं साउज मह बनडल मारे । सँधर पार को कहै न (पारे) ॥५

साउज दीस न अनरा, अनैं सै धर आइ।६
जाँवँत पंखि सँकोले, कही (बिरंत) सब गाइ ॥७

मूलपाठ—(५) वरारे। (७) मरस (नुक्तोंके अभावमें यह पाठ है)।

टिप्पणी—(२) रोझ (स० ऋश्य>प्रा० रोज्झ)—नीलगाय। चीतर—चीतल, एक प्रकारका मृग। झाँख—साँभर।

(३) गौन—एक प्रकारका बारहसिहा, जिसे गोंड भी कहते हैं। पुछारी—मोर। लोखरा (लैखडा)—लोमडी (लोमडी खाद्य है, यह संदिग्ध है)। ससा—शशक, खरगोश। लँबकना (लम्बकर्ण)—लम्बे कान वाला खरगोश। खर—चोखा, शुद्ध, पूरा पूरा।

(५) साउज—(स० श्यापद>साउज्ज>साउज)—जगली जानवर। बनइल (बनैल)—जगली। यहाँ सूअरसे अभिप्राय है।

(६) दीस—दिखाई पडा। अनरा—दुर्बल। अनैं—अनेक।

१५३

(अप्राप्य)

१५४

(रीलैण्ड्स ११२)

सिफते जानवरान दर ज्याफ्ते महर

(पक्षियोंका वर्णन)

बटेर तीतर लावा धरे। गुडरू कँवाँ खाचियन भरे ॥१
बहुल बिगुरिया औ चिरयारा। उसर तलोवा औ भनजारा ॥२
परवा तेलकार तलोरा। रैन टिटहरी धरे टटोरा ॥३
बनकुक्करा केरमोरो घने। कूँज महोख जाँय न गिनें ॥४
धरे कोयरें अँकुसी बनाँ। पंखि बहुल नाँउँ को गिनाँ ॥५
जे कब आय समान, सरवस बरन के तेहि।६
अउर पंखि जे मारे, ताकर नाँउँ को लेहि ॥७

टिप्पणी—(१) लावा—(ल्वा) बटेरसे छोटा उसी जातिका पक्षी (बटन क्वेल)। गुडरू—बटेर जातिका इसी नामसे ख्यात पक्षी (कामन बस्टर्ड

कयेल) । कँवा—कंच, जलचौदरी नामक पक्षी जो बतख और मुर्गीके बीचकी जातिकी होती है । खचियन—टोकरियों भर, असंख्य ।

(२) उसरतलोवा—इसे उसरगोरी भी कहते हैं । यह भूरे रंगकी होती है और ऊसरमें दो-तीन सौके झुण्डमें एक साथ पायी जाती है ।

(३) परवा—कबूतर । टटोरा—टटोलकर ।

(४) बनकुकुरा—वनकुक्कुट, वनमुर्गी । केरमोरो—चरज, चरत, सोहन, यह मोरके समान किन्तु उससे छोटा होता है । कूँज—कुंज, क्रौंच, कुलंग ।

१५५

(रीलैण्ड्स ११२)

सिफ्ते पुजानीदने ताआम दर मतबख

(भोजन बनानेका वर्णन)

तीन चार सै बैठ सुवारा । चीडर आन रसोई परजारा ॥१
मास मसोरा कटवाँ कीन्हाँ । लै धँगार पतियाँ कर दीन्हाँ ॥२
बेगर बेगर पंरिं पकाई । घिरत बघार मिरच भराई ॥३
मिरचन अँबिरचन बनवा बरा । रस रतनाकर सेंधो गेरा ॥४
कुँकुँ मेलि कियो बसवारू । दरौंद करौंद अँबिली चारू ॥५
कनक तराकत लखोर, लोन तेल विसवार ।६
खटरस होइ महारस, तिलवुट कियउ अहार ॥७

टिप्पणी—(१) सुवारा—सूपकार, रसोइया । आन—लाकर । परजारा—(सं० प्रज्वलन > प्रा० पज्जल, पर्जल, > पर्जर > परजरना) प्रज्वलित किया, जलाया ।

(२) मसोरा—कचाव, पीसकर बनाया हुआ । कटवाँ—काटकर बनाये हुए । धँगार—छौंकन, बघार ।

(३) बेगर बेगर—तरह तरहके, भिन्न भिन्न प्रकार के । बघार—छौंका ।

(४) सेंधो—सैन्धव, सेंधा नमक ।

(५) कुँकुँ—केसर । मेलि—मिलाकर । बसवारू—छौंकने मसालेसे छौंका ।

१५६

(रीलैण्ड्स ११४)

सिफ़त सब्ज़ियाते हर जिन्सी गोयद

(तरकारीका वर्णन)

चाचर पापर भूँज उचाये । भाँटा टेंडस सोंधि तराये ॥१
करुयें तेल करेला तरे । कुम्हड़ा भूँज साध एक धरे ॥२
खेखसा परवर कुँदरूँ अही । घी तुरई अरुई कहीं ॥३
नोटी चोट धोइ पकाई । चूका पालक औ चौलाई ॥४
लौआ चिचिंडा बहु तोरई । सैंसा सेंच भार दस भई ॥५
गंगल चुवँइ सौंफ औ, सोई मेथि पकान ।६
राधे कुसुँभ कँदुरियाँ, काढे फल सन्धान ॥७

टिप्पणी—(१) पापर—चाचर पाठ भी सम्भव है। चाचर चावलके आटेकी मालपुएके ढंगकी मिठाई है। अलीगढ क्षेत्रमें यह चासरा या चासरीके नामसे प्रसिद्ध है। भूँजनेके प्रसंगसे पापर (सं० पर्पट > प्रा० पप्पड > पापड > पापर) पाठ ही संगत है। सुनीतिकुमार चाटुर्ज्याके अनुसार पापड शब्दके मूलमें तमिल शब्द पर्पु (दाल) है। यह आजकल उर्द या मूँगकी दाल, चावल, साबूदाना, आदिको पीसकर मसाला मिलाकर बनाया जाता है और भून अथवा तलकर खाया जाता है।

भाँटा—भंटा, बैगन। यह प्राय साल भर होने वाली तरकारी है। भारतकी प्राचीन तरकारियोंमें इसकी गणना की जा सकती है। बाणने हर्षचरितमें इसका 'वंगक' नामसे उल्लेख किया है।

टेंडस—ढेंडस, टिण्डा।

(२) करेला—यह काफी प्रसिद्ध तरकारी है। कड़वी होनेके कारण प्राय इसकी तरकारी सरसोंके तेलमें तलकर बनायी जाती है। करुँये तेल—कड़ू तेल, सरसोंका तेल। कुम्हड़ा—कद्दू, गंगाफल, काशीफल, सीताफल, कदुआ, कुष्माण्ड। इसकी बेल होती है और यह गर्मी और बरसातमें होती है। आकारमें यह तरबूजकी तरह और रंगमें पीला होता है। पका हुआ कुम्हड़ा बहुत दिनों तक खराब नहीं होता।

(३) खेखसा—करेलेकी जातिकी छोटे आकारकी तरकारी। इसे काँटोले

क्षेत्रमें कनौरा कहते है। परवर—परवल। यह लता पर होता है और गरमी बरसातमे फलता है। कुँदरूँ—(स०—कुन्दुरु)—परवलके आकारकी सब्जी, जो बरसातमे होता है। इसे संस्कृतमें बिम्ब या बिम्बक भी कहते हैं। पकने पर इसका फल लाल हो जाता है। इसी कारण कवियोने ओठोंके उपमानके रूपमे इसका प्रयोग किया है। घी तुरई—घिया तरोई। यह भी बरसाती तरकारी है और बेल पर होती है।

अरुई—अरवी, घुइयाँ। यह जमीनके भीतर होता है। इसके पत्ते कमलके पत्तेके समान होते है।

(४) पालक—यह पत्तेदार तरकारी है। इसके पत्ते चौडे और चिकने होते है। चौलाई—यह बरसाती साग है। इसकी पत्ती चिकना तथा लाल अथवा हरे रंगका होता है।

(५) लौआ—लौकी। यह लताम उगनेवाली तरकारी है जो आकारमे लम्बी और मुलायम होती है। चिचिंडा—यह साँपकी तरह लम्बा और धारीदार तरकारी है जो बरसातमे होती है। तोरई—घियातरोई की जातिकी तरकारी। सेंब—(स० शिबा, शिम्बिका) सेम, लतामें लगनेवाली फली जातिकी तरकारी।

(६) गंगल—गलगल, एक प्रकारका खट्टा नीबू।

(७) संधान—अचार।

१५७

(रीलैण्ड्स ११५)

सिफत पक्वान दर दर जिन्सी गोयद

(पकवान वर्णन)

बरा मुंगौरा बड़तें कीन्हें। खँडुई काढ़ि घिरत मैं दीन्हें ॥१
बने मिथौरी छड़कुल धरे। औ डुबकी जिहँ मिरिचैं परे ॥२
भूँजी कैथ करेथ पकावा। पनि अदाकर गुझियें लावा ॥३
रोटा गूँद किये मिरचवानी। औंर उभार राइ कर पानी ॥४
तुरसी घालि कढ़ी औटाई। लपसी सोंठ बहुत कै लाई ॥५

दूध फारि कै सिरसा, थाँधा दही सजाउ ।६
और खँडई को कहि, जाकर नाँउ न आउ ॥७

टिप्पणी—(१) बरा—(स० वट-गोल टिकिया), मूँग या उर्दको भिगो कर पीसकर बनायी गयी गोल टिकिया। मुंगौरा—मूँगको पीस कर मसाला डाल कर बनाया जाता है। यह एक प्रकारका बड़ा ही है किन्तु इसमें टिकियाका रूप नहीं देते वरन् पिट्ठीके पिण्ड बनाकर घी या तेलमें छानते हैं। खँडुई—बेसनको पानीमें घोलकर कड़ाइमें हलवेकी तरह गाढ़ा करके नमकीन बनाते हैं। (वासुदेवशरण अग्रवाल, पदमावत ५४९।६)।

(२) मिथौरी—पेठेके साथ उरदकी दालको पीस कर मेथी आदि मसाला डाल कर बनायी गयी बड़ी। डुबकी—डुभकौरी, एक प्रकारकी पकौड़ी जिसे घी या तेलमें नहीं तलते वरन् पानीमें खौलाते हैं। वह खौलते पानीमें ही पकती है।

(५) मुरसी—खटाई। घालि—डालकर। लपसी—हलुवा से मिलता जुलता पक्वान। इसे भी घीमें आटेको भूनकर बनाते हैं किन्तु यह सूखा न होकर गीला होता है।

(६) खिरसा—छेना। सजाउ—जमा हुआ, ऐसी दही जिसके ऊपर मलाईकी तह जमी हो।

(७) खँड़ई—यहाँ सम्भवत कविका तात्पर्य मिटाईसे है।

१५८

(रीलैण्ड्स ११६)

सिफत बिरजहाय हर जिन्सी गोयद

(चावलों का वर्णन)

गीरसार रितुसार बिकौनी। कर्रा धनियाँ मधुकर तूनी ॥१
सगुनाँ छाली औ चौंधरा। ककरू रँडर काँडर भरा ॥२
अगरसार रतनाँ मतसरी। राजनेत मोठ़ी सौंखरी ॥३
करँगी करँगा साठी लिये। मुरमा भन्मा महमर लिये ॥४
पकये घर कुण्डर आगरधनी। रूपसिया दहि सोनदही ॥५
कँदोझा अतिधूपी, काढ़े पय पसाइ ।६
जस बसन्त बन फूलइ, चहुँ दिसि बास गँधाइ ॥७

टिप्पणी—इस कडवक में ३० प्रकारके चावलोंके नाम इस प्रकार गिनाये हैं— (१) गीरसार (२) रितुसार (३) बिकौनी (४) वर्रा (५) धनिया (६) मधुकर (७) तूनी (८) सगुनॉ (९) छाली (१०) चौधरा (११) वकर (१२) खेंडर (१३) कोंडर (१४) अगरसार (१५) रतना (१६) मलमरी (१७) राजनेत (१८) मोटी (१९) सौखरी (२०) करगी (२१) करगा (२२) साठी (२३) सुरमा (२४) भसा (२५) महसर (२६) आगरधनी (२७) रूपसिया (२८) दहिसौंधी अथवा सोनदही (२९) नैदोशा (३०) अतिधूपी। इनमें से केवल ४–५ नाम जायसीकी सूची (पद्मावत, ५४४) म मिलते हैं। इन सब चावलोंकी पहचान हमारे लिए सम्भव नहीं हो सकी।

(१) रितुसार—(स० रक्तशालि> रतसारि> रितुसार)। रक्तशालिका संस्कृत साहित्यमें प्राय उल्लेख मिलता है। सम्भवत यह लाल रंगका धान होगा। बिकौनी—सम्भवत यह जायसी उल्लिखित बिसौरी होगा। मधुकर—हलके काले रंगका पतला छोटा महीन धान, इसका चावल सफेद और इसमें हल्की सुगन्धि होती है। यह अगहनी धान है जो रोपा जाता है।

(२) सगुनॉ—(स० शकुनी) इसे सगुनी या सउनी भी कहते हैं। इसका दाना महीन और चावल अत्यन्त सुगन्धित होता है। खेंडर—यद्यपि निश्चित नहीं पर हो सकता है यह जायसीका खँडचिला हो। कोंडर—यह धान दो प्रकारका होता है—(१) घीकॉडर जो घितकोंदो भी कहा जाता है, और (२) दुधकॉडर। इसकी भूसी लाल और चावल सफेद और मोटा होता है। यह बिना घी-दूधके ही स्वादिष्ट होता है।

(३) राजनेत—सम्भव है यही चावल हो जिसे आज कल राजभोग या राय भोग कहते हैं यह धान आकारमें बहुत छोटा और सितम्बर बोया जाता है। इसम सुगन्धि होती है।

(४) करँगी—लाल अथवा काली भूसीका धान। इसका चावल छोटा और हल्का लाल होता है और खानेमें मीठा होता है। करँगा—करँगीकी जातिका धान जो आकार में कुछ बड़ा होता है। साठी—करँगीकी ही जातिका धान जो नाटा मोटा होता है और कुछ ललाई लिए रहता है। इसे भदई कहते हैं। इसके सम्बन्धमें उक्ति है—साटी पाकै साठ दिनाँ। जब दइउ बरीसैं रात दिनाँ॥ भसा—इसका हँसा पाठ भी सम्भव है। जायसी की सूचीमें रायहंस और हंसाभोरी नामक दो चावलोंका उल्लेख है। रायहंस तो कदाचित हंसराज नामक प्रसिद्ध चावल है। इसकी भूसी सफेद होती है और यह पुआलसे बाहर आकर पकता है। हंसा

भौरीका छिल्का उज्ला और चावल भी सफेद होता है। इसका भात मुलायम होता है। यह अगहनी धान है। इसे दुधकजरी या दूधराज भी कहते हैं।

(५) इसके दूसरे पद का पाठ—रुपसिया दहिसोधी भी हो सकता है। पर दोनों ही अवस्था मात्राओंकी न्यूनता है। इस कारण कहना कठिन है कि चावल का नाम सोनदही है या दहिसोधी।

(६) पप—माँड। पसाप—निचोड़ कर।

१५९

(रीलैण्ड्स ११७ बम्बई १४ पंजाब [प])

सिफत गन्दुम व नाने मैदये खालिस

(गेहूँ ओर शुद्ध मैदेकी रोटीका वर्णन)

हाँसा[1] गोहूँ धोइ पिसाई। कपर छान के छार[2] बनवाई[3] ॥१
अति बडबढती[4] बड भर तोला। मेन सुहाउ[5] कुंज[6] जनु होला ॥२
टूटँ न तानाँ[7] दुँहु कर तोरा। नैनूँ माझ हाथ जनु बोरा ॥३
जउरँ[8] साथ मरे[9] गासँ[10] तलानी[11]। मुख मेलत खिन जाहिं[12] बिलानी[13] ॥४
सफर देसँ[14] जेरँहिं[15] चित लाई। भरँ न पेट न भूख बुझाई[16] ॥५
कपुरवास[17] भर भुख[18], भोंगत चाहिं उड़ाइ ।६
भार सहम दोइ[19] तिलवुट, महरँ धरे बनवाइ ॥७

पाठान्तर—बम्बई और पंजाब प्रति—

शीर्षक—(ब०) सिफते गन्दुम व नाने तग (गेहूँ और छोटी रोटीका वर्णन)। (प०) शीर्षक उपलब्ध फोटो में अपाठ्य है।

१—(प०) हसा। २—(ब०) छाल। ३—(प०) पोआई। ४—(ब०) बडवरती, (प०) बडनड सम। ५—(ब०) सुहाइ। ६—(ब०) खुँज। ७—(ब०) तानें, (प०) तनैं न टूटै। ८—(प०) जउरैं। ९—(ब०, प०) एक। १०—(ब०) कार। ११—(प०, ब०) तलाई। १२—(ब०) जनु जाई। १३—(ब०, प०) बिलाई। १४—(ब०, प०) सर दिन। १५—(ब०-जेंड जो, (प०) जो जीह। १६—(प०) भूँख न जाई। १७—(ब०) कर माम, (प०) पेवरवास अथवा कपूरवास। १८—(प०) मुग भर। १९—(प०) दस।

टिप्पणी—(१) हाँसा—इसके समान सफेद। गोहूँ—गेहूँ। छार—आग।
(४) जउरै—जाउर (खीर) के।

१६०

(रीलैण्ड्स ११८ बम्बई १७ पंजाब [ला०])

सिफत आवदने दगहाये दरख्तान

(पत्तियोंका वर्णन)

पतरिहँ लोग [1]तुरें[2] बन पाता[3]। छोर नैं अबरा कीन्हें निराता ॥१
महुआ ऑब लीन्ह घर बारीं[5]। बर पीपरं कै बाँधैं[7] खारीं[8] ॥२
कटहर बडहर औ लोकरं लिये। जामुनं गुरहरं[11] नॉगसब[12] भये ॥३
कठऊँबर पाकर बहु [13]तोरी। महुले कदमं[14] दास ककोंरी[15] ॥४
तेंदू गुगुची[16] रीठा घनाँ। पुरइनं[17] पात करर[18] को गिनॉ ॥५
पनवइ आइ घनासियत, पानें लाग कर जोर।६
नॉग कीन्ह हौं[19] बारिहें, पात लीन्ह सबं[20] तोरें[21]॥७

पाठान्तर—बम्बई और पजाब प्रति—
(ब०) आवदने बगहाय दरख्तान रा बराये दोंद (?) रा (दाद (?) के निमित्त बनपत्रोंका लाना)। (प०) शीर्षक उपलब्ध फोटोमे अपाठ्य है। १—(प० ब०) कँह। २—(प०) पता। ३—(ब०) छोर न (प०) जौलैंह। ४—(ब०) बीत (प०) शब्द नष्ट हो गया है। ५—(ब०) बारी। ६—(ब०) पीपर, (प०) पेड। ७—(ब०) बाँधहि। ८—(ब०) खारी (प०) शब्द नष्ट हो गया है। ९—(ब०) औ लाबू, (प०) पंक्ति अपाठ्य है। १०—(ब०) जाम (प०) पूरी पंक्ति अपाठ्य है। ११—(ब०) कपिथार। १२—(ब०) सब। १३—(ब०) बहु पाकर। १४—(ब०) महु करोदे। १५—(ब०) कँकोरी। १६—(ब०) बगची (प०) बगुचन। १७—(प०) पुरइ। १८—(ब०) करन। १९—(ब०) हम। २०—(ब०) सब। २१—(प०) पंक्ति ६ ७ अपाठ्य है।

१६१

(रीलैण्ड्स ११९ : बम्बई ११)

आमदने दाल्के गोवर दर खानये महर व नशिस्तने ईशाँ

(नागरिकोंका महरके घर आकर बैठना)

महर[1] मंदिर सब[2] नेत बिछाई । कै खँडवान कुण्ड भराई ॥१
गोवर नोता हुत[3] सोइ बुलावा । तिहतीसों[4] पार सभैं लै[5] आवा ॥२
घटहि न सूझैं[6] सरह जनु चली । उपना देस मँदिर गा भरी ॥३
बैस कुँवर गै पातिहँ पाँती । परजा पौन सो भाँतहिं भाँती ॥४
लोरक[7] महरै पाट बैसारा । गहन मार जैं चाँद उबारा ॥५
बरन चार भरि बैठे, अगनित कही न जाइ ॥६
खेत साथ लहि आँगन, तोहु लोग न समाइ ॥७

पाठान्तर—बम्बई प्रति—

शीर्षक—पराज कर्दने मदूरी दर खानये राय महर (महरके घर भोजकी तैयारी) ।

१—महरे । २—सभ । ३—हुँत । ४—तैतीसो । ५—चलि । ६—सूझहिं । ७—लोरक ।

१६२

(बम्बई १२; रीलैण्ड्स १२०)

आवर्दने तआम दर मजलिसे दरजिन्स

(नाना प्रकारके व्यंजनोंका परसा जाना)

बैठी पार पसारि पँधारा[1] । भात परोसहिं झार सुवारा[2] ॥१
पतरी भरहिं मूँज परुतानाँ[3] । भाँतहिं भाँति लोर पहँ आनाँ ॥२
मास मसोराँ खरवाँ फुनि चरी[4] । दोनाँ सौं सौं चुन पत धरी ॥३
लै मनमार तुलानें नाऊ । घिरत खाँड फीन्ह पैराऊ ॥४
धरे पकवान जेवईं[5] कहे । फल सन्धान लाए एक अहे ॥५

गिन चौरासी से हाँडी, बाभन परसि सँभार ।६
परे बहुल खजहजा, होइ लाग जेउनार ॥७

पाठान्तर—रीलैंड्स प्रति—
शीर्षक—ब आम खुरानीदने महर मर खल्क रा अन अल्वाने नेहमत हा (महरका लोगोंको नाना प्रकारके उत्तम भोजन खिलाना)
१—बैठे पारी पसरि सेवारा । २—होइ जेउनारा । ३—कह आनाँ । ४—बतीसो (?) । ५—मास मसोरा करवा भरे । ६—हुत । ७—गिन चौरासी हाँडी माँऊ । ८—परे खजहजा बहुतर । ९—लाग ।

टिप्पणी—(७) खजहजा—(सं० खाद्याद्य>प्रा० खज्जज्ज>खजह्ज>खजहजा) खाने योग्य, उत्तम फल, मेवा ।

१६३

(रीलैण्ड्स १२१)

आमदन चाँदा बर कस्र व दीदने लोरक व बेहोश शुदन लोरक
(चाँदाको छतपर खड़ी देखकर लोरकका मूर्छित हो जाना)

पहिरि चाँद खिरोदक सारी । सोरह करों सिंगार सिंगारी ॥१
चढ़ धौराहर झिहसि निकासू । देखि लोर कहँ बिसरि गरासू ॥२
लोर जानि अछरहिं दिखरावा । इँह कनिलास अउर को आवा ॥३
अमरित जेवँत माहुर भयो । जीउ सो हर चाँदै लियो ॥४
मुखँ न जोति कया अति रूखी । चाँद मनहु सुरज गा सोखी ॥५

जइस भोंज अमरित कै, झार उठी जेउनार ।६
लोर लीन्ह कै डाँडी, निसँभर कछु न सँभार ॥७

टिप्पणी—(१) खिरोदक (सं० क्षीरोदक)—सातवीं शताब्दीसे इस वस्त्रका उल्लेख भारतीय साहित्यमें मिलता है । इसका उल्लेख बाणने हर्षचरितमें किया है । परिशिष्ट पुराण और नलचम्पू में इसके जो उल्लेख हैं उससे यह प्रकट होता है कि यह अत्यन्त हल्का सफेद रंगका वस्त्र था जिसमें समुद्रकी लहरोंकी सी आभा झलकती थी (क्षीरोदलहरी च्यूत, क्षीरोदोर्मिमयानिव) ।
(२) गरासू—ग्रास, कौर ।
(३) अछरहि—अप्सरा ।
(४) माहुर—विष ।

१६४

(रॉलैण्ड्स १२२)

दर खाने आवर्दने लोरक राव गिरिया कर्दने खोलिन

(लोरकका घर आना और खोलिनका दुखी होना)

लै लोरक घर सेज ओल्लारा । वहहिं नैन कॉखइ असरारा ॥१
खोलिन रोयइ काह यह भया । मोर बार कैं पचहॅडा दिया ॥२
लोग कुटुँब बन्धु जन आये । पंडित बैद सयान बुलाये ॥३
धर नॉरिका बैद अस कहहीं । चॉद सुरुज दुइ निरमल अ[हहीं*] ॥४
बात न पित्त रकत न सीऊ । ताप न जूरी चित्त सँजीऊ ॥५

· देउ न दानौं झरकॉ, यह सीर बरियारि ।६
मन काम कर बिधा, तो बहु रे मुरारि ॥७

टिप्पणी—(१) ओल्लारा—निर्जीव होकर पड़ रहना । कॉखइ—कराहे ।

(२) बार—बाल, पुत्र । पचहॅडा—मरणके दसवें दिन घरसे निकालकर बाहर दूर रखे जानेवाले मिट्टीके पॉच पात्र; किसी व्यक्तिके रोगको दूसरे व्यक्तिके ऊपर डालनेकी क्रिया; उतारा पतारा ।

(३) सयान—ओझा, झाड फूँक करनेवाले ।

(४) धर—पकड धर । नारिका—नाडी ।

(५) सीऊ—शीत । ताप—ज्वर । जूरी—ठण्ड लगकर आनेवाला ज्वर; मलेरिया ।

(६) देउ—देव । दानौं—दानव । सीर—रोग । बरियारि—बहुत बडा ।

१६५

(रॉलैण्ड्स १२३)

ऐजन (लहू); दर गिरिये खोलिन गोयद

(खोलिनका विलाप)

सुरज रैन महँ गयउ लुकाई । चँदर जोत निमि आगें आई ॥१
खोलिन नीर ढार सरयिया । मकु मूयों महँ लोरक जीया ॥२
हौं अस जीउ जीउ इह देऊँ । लोरक केर मॉग कै लेऊँ ॥३

पर मँह बूढ़ी दुख लेजाई । जिनु मोरे (घर) दिया बुझाई ॥४
यह संताप कै कही कहानी । कार रात दुख रोइ बिहानी ॥५
फिर खर परकासा, दिनकर कियो अजोर ।६
खोलिन रोइ डफारा, बार जियावहु मोर ॥७

मूल पाठ—कर ।

टिप्पणी—(२) सरपीदा—वोसा ।
(६) अजोर—उजाला ।
(७) डफारा—(धा० डफारना) गला फाड़कर रोना, चिल्लाना ।
मोर—मेरा ।

१६६

(बम्बई १७, रीलैण्ड्स १२४)

रफ्तने बिरस्पत दर खानये लोरक

(बिरस्पतका लोरकके घर जाना)

धाइ[1] बिरस्पत हाटहिं[2] गयी । कीन बात[3] कछु बिसहन लयी ॥१
कारुन[4] सबद सुनन दुहुँ परा । मुख फिराइ पौं आगें[5] धरा ॥२
तूं इहँ करिहै काह मयारू[6] । जाइ बिरस्पत झाँखा बारू ॥३
खोलिन देखी महर भँडारी । कर गहि पाट आन बैसारी ॥४
काहे तुम्ह रोवहु परधानां[7] । हीउँर मोर सुनत चरांना ॥५
मोर बार जस झुलवा[8], घरी घरी बिहसात ।६
अब न खाइ[9] अन पानीं, दिन दिन[10] जाइ कुमलात ॥७

पाठान्तर—रीलैण्ड्सप्रति—
शीर्षक—रफ्तने बिरस्पत बेबहानेकारो दर खानये लोरक (कामके बहाने लोरकके घर बिरस्पतका जाना)
१—राज । २—हाटहि । ३—पान । ४—करुना । ५—भीतर ।
६—तेउ नेह करिहै होय मयारू । ७—परधाना । ८—मोर बार झुलवा वर । ९—खाँय । १०—देह जाइ ।

टिप्पणी—(१) कीन बात—बातें किया, (पाठान्तरके अनुसार) कीन पान—पान खरीद कर । बिसहन—सौदा, क्रेय वस्तु ।

१६७

(रीलैण्ड्स १२५)

बुर्दने खोलिन बिरस्पत रा दर महल व दीदने बिरस्पत लोरक रा

(बिरस्पतका घरके भीतर जाकर लोरकको देखना)

चल खोलिन तोर कहाँ रोगी । मकु औंखद जानउँ वहि जिउकी ॥१
लेगइ खोलिन लोरक ठाऊँ । देखसि कया सीस धड़ पाऊँ ॥२
सुरुज घरहिं बिरस्पत आई । नैन उघार चँदर बिहसाई ॥३
गुनि गुनि देखि अग कै पीरा । कउन गरह करिहै तुम्ह पीरा ॥४
यह गुन गुनी तिरी परधाना । यह बियाधि न औंखद जाना ॥५

महर भँडार भँडारी औ चाँदा कै धाइ ।६
नैन उघार बात कहु, आयउँ आह बुलाइ ॥७

टिप्पणी—(१) मकु = कदाचित ।
(५) बियाधि—(सं० व्याध) रोग । औखद—औषधि ।

१६८

(रीलैण्ड्स १२६)

दूर शुदने खोलिन व गुफ्तने लोरक हिकायते दीदने चाँदा बा बिरस्पत

(खोलिनका हट जाना और लोरका बिरस्पतसे चाँद-दर्शनकी बात कहना)

जननि जो चाँद कह बोल आहा । सहसकराँ सुरुज परकासा ॥१
कहसि जननि यह बेदन कहाँ । तोरें लाज लजाँस अहाँ ॥२
खोलिन जाइ और तह ठाढी । लोरक पीर हियें कै काढी ॥३
जिहिं दिन हौं जेउनार बुलाया । महर मंदिर काहू दिखराया ॥४
सो जिउ लेगई कही न जाइ । तिन जिउ भयउँ परेउँ घहराइ ॥५

मोरहकराँ सपूरन, चाँद जोत परगास ।६
बीजु चमक घड़ चमकी, बँहि धौराहर पास ॥७

टिप्पणी—(३) पीर—दुःख, कष्ट ।
(५) घहराई—टकराकर गिरना ।

१६९

(रीलैण्ड्स १२७)

मना कर्दने बिरस्पत लोरक रा कि इन हिकायत न गोयद

(बिरस्पतका इस बातको छिपा रखनेको लोरकसे कहना)

सुनु लोरक अस बात न कहिये । जो कहै इँह देस न रहिये ॥१
यह तो आह महर के धिया । चाँद नाउँ धौराहर दिया ॥२
सो तैं दीख बीजु बरियारी । लखें तोर चितै गई न मारी ॥३
तरइँह जाकर सेज बिछावहिं । सबनैं नखत निसि पहरे आवहिं ॥४
मन कै सोंक हियेहुत धोवहु । जेंइ भूँज सुख निदरा सोवहु ॥५
इत राजा के दुआर, औ निसि सरग बसेर ।६
जिहँ का राज पिरिथ में, तिहँ तू गरब न हेर ॥७

टिप्पणी—(४) तरइँह—तारागण । सबनैं—सभी ।
(५) जेंइ भूँज—खा पीकर ।

१७०

(बम्बई १६, रीलैण्ड्स १२८)

मिन्नत कर्दन लोरक पेश बिरसपत

(लोरकका बिरस्पतसे अनुनय)

चाँद क उतर बिरस्पत कहा । सुरुज दुहँ पायँ पर रहा ॥१
आजु बिरस्पत सुदिन हमारा । मुखाकँवल जिहँ देखि तुम्हारा ॥२
कछु सो बात जिहँ होइ मिरावा । भल जो करैं भलाई पावा ॥३
कै निस लै मँहि आन खियावहु । कै सो मँत्र-बिधि आज जियावहु ॥४
किरपाल दस नख मुँह मेलाँ । पाँय परत बिरस्पत ठेलाँ ॥५
पाँयँ न ठेलु बिरस्पत, हा तो चेर तुम्हार ।६
बचन तोर मँहि औखद, खसि न जीउँ हमार ॥७

पाठान्तर—बम्बई प्रति—

शीर्षक—चे पाये उफ्तादने लोरक व इल्हाहे बिसियार नमूदने ऊ (लोरकका बिरसपतके पाँव पड़ना और अनुरोध करना)।

१—जग्हारा। २—जो। ३—करै सो। ४—मँहि लै। ५—मेले।
६—परे। ७—ठेले। ८—पाइ।

टिप्पणी—(३) मिरादा—मिलाप।
(७) ठेला—हटाया।

१७१

(रीलैण्ड्स १२९)

दील आमोख़्तने बिरसपत मर लोरक रा

(बिरसपतका लोरकको उपाय बताना)

बिरस्पत देखि लोर कर कया। मरन सनेह उठी मन मया ॥१
पाय छाड़ु लोरक लै धानी। औखद करौं पीर तोर जानी ॥२
लोरक तोर कहा मैं मानों। कै हौं के तूँ अउर न जानों ॥३
जो लोरक इहँ नात उभारा। महँ करपना धरु झोंगी धारा ॥४
सुनु बिधि मोरी जाइ मढि सेवहु। मैं लै जाव पुजावइ [देवहु*] ॥५
बुताँ रूप होइ बैठउँ, कथा भभूत चढ़ाइ ।६
दरस निकट जो भगत, देखि नैन अघाइ ॥७

टिप्पणी—(१) कया—काया, शरीर। मया—ममता।
(३) कै हौं कै तूँ—या तो मैं या फिर तुम।
(४) झोंगी—जोगी। धारा—धाना, यन्त्र।
(५) जाव—जाऊँगी।
(६) बुताँ—(फारसी) देवता, यहाँ तात्पर्य जोगी रूपसे है। भभूत—भस्म।

१७२

(रीलैण्ड्स १३०)

बीरून आमदने बिरस्पत अज मह्ले लोरक व पाये उफ्तादने खोलिन

(बिरसपतके बाहर आनेपर खोलिनका पाँव पड़ना)

कढ़ि बिरस्पत बाहर भई। खोलिन खेह पाय कै लई ॥१
सीस चढ़ायसु पागे धूरी। आस मोर जनु लीजै चूरी ॥२

खोलिन चँदर मेघ घिरि आगा । सुरुज गहमहुत सोइ छुडावा ॥३
भा सुरा भरम चित जनि धरहू । नहाइ धोइ कुछ अरघ करहू ॥४
लोरहिं घरी चैन कै पाई । जागा सुरुज चँदर बिहसाई ॥५
भरम न करहू खोलिन चित महँ, लोरक लै अन्हवावहु ।६
अरु कुछ अरथ दरब बार, तिहि माहर दे पठावहु ॥७

टिप्पणी—(१) खेह—धूल ।
(२) धूरी—धूलि । जनु—मत । चूरी—चूरचूर करना ।
(३) गहन—ग्रहण । हुत—था ।
(४) अरघ—अर्घ पूजन उपचार ।
(५) अन्हवावहु—स्नान कराओ ।
(७) बार—निछावर करके ।

१७३

(रीलैण्ड्स १३१)

बेतक कर्दने खोलिन बिरस्पत रा अज सेहते लोरक

(खोलिन का बिरस्पतसे वादा करना)

जिहँ दिन लोरक उठी नहाई । लोग कुटुँब मैं करब बधाई ॥१
तिह पहिरॉओं चीर अमोला । जो सुरा आये लोरखँ सूला ॥२
गई बिरस्पत जिहि सब तारा । औ निसि चाँद करै उजियारा॥३
किये सेड सत सूरज के[रा*] । चाँद तरायी सोवन कै फेरा ॥४
पाट बैस निसि चाँदा रानी । नखत तराईं कहहिं कहा[नी*]॥५
चाँद नखत लै तारा, बैठि धौराहर जाइ ।६
लोर लाग तिहँ चितइ, कहि जो बिरस्पत आइ ॥७

टिप्पणी—(१) करब—करूँगी ।
(२) चीर—साडी । अमोला—अमूल्य । सूला—शूल, दर्द ।
(४) सोवन कै फेरा—सोने के लिए भेजा ।

१७४

(रीलैण्ड्स १३२)

जोगी शुदने लोरक व नशिस्तन दर बुतखानये बुत

(मन्दिरमें लोरकका जोगी बन कर बैठना)

सुवन फटिक मुँदरा सरसेली । कण्ठ जाप रुदराकै मेली ॥१
चकर जगौटा गूँथी कंथा । पायँ पावरी गोरखपन्था ॥२
मुख भभूत कर गही अधारी । छाला बैस क आसन मारी ॥३
दण्ड अखर बैन कै पूरी । नेंह चारचा गावइ झोरी ॥४
कर किंगरि तिहँ बार बजावइ । जिहँ चाँदा मुख चितरा पावइ॥५

सिध पुरुस मढ़ि बैठउ, घर तर सूर दुवार ।६
भगत मोर बनखँड गये, चाँद नाम ना निमार ॥७

टिप्पणी—(१) सुवन—श्रवण, कान। फटिक—स्फटिक। मुँदरा—मुद्रा, कानमें पहननेका कुण्डल। सरसेली—छेदकर पहना। जाप—माला। रुदरा—रुद्राक्ष।

(२) चकर—चक्र, सम्भवतः छोटी गोल अँगूठी जिसे पवित्री कहते हैं (वासुदेवशरण अग्रवाल)। जगौटा—(सं० योगपट्ट) वह वस्त्र जिसे योगी ध्यान करते समय सिरसे पैरों तक डाल लेते हैं। अन्य अवस्था में यह कन्धे पर रहता है। कंथा—कथरी, गुदरी, फटे पुराने कपड़ोंसे बनाया गया वस्त्र। पायँ—पैर। पावरी (सं० पादपट्ट> पा० पायवट्ट > पावड>पावडा, पाँवरि)—खड़ाऊ।

(३) भभूत—भस्म। अधारी—लकड़ीका बना सहारा जिसको टेककर योगी बैठते और सोते हैं। छाला—चर्म। सम्भवतः यहाँ बाघम्बरसे तात्पर्य है। जायसीने योगी वेशके प्रसंगमें बघछालाका उल्लेख किया है (पदमावत, १२६।६)।

(५) किंगरि—छोटा सितारा या सारंगी, जिसे बजाकर जोगी भीख माँगते हैं।

१७५

(रीलैण्ड्स १३३)

यक साल परसीदने लोरक बुत रा, व आमदने चाँदा व सहेलियान दराँ

(लोरकका एक साल तक मन्दिरमें तप करना चाँदका सहेलियोंके साथ आना)

एक बरसि लोरक मढ़ि सेवा । चाँद सनेह मनायसि देवा ॥१
कातिक परब देवारी आई । बार परी रितु खेले गाई ॥२
चाँद बिरस्पत लीन्ह हँकारी । आवहु देखें जाँहि देवारी ॥३
सखी सात एक मोहन लागीं । रूप सरूप सुभागिन भागीं ॥४
अखत चाँद चली लै तहाँ । गाईं देवारी खेलैं जहाँ ॥५
सुधन फूल चाँदा लै, एक हुत मेला आइ ।६
पहिरत हार टूटि गा, मोंतिह गये छरियाइ ॥७

टिप्पणी—(४) सात—साद पाठ भी सम्भव है ।
(५) अखत—एक हुत पाठ भी सम्भव है ।
(६) एकहुत—अखत पाठ भी सम्भव है ।
(७) छरियाइ—बिखर गये ।

१७६

(रीलैण्ड्स १३४)

शिकस्तने हारे मुरवारीदे चाँदा दर बुतखानये व जमाकर्दन सहेलियाँन

(चाँदका मोती माल टूटना और सखियोंका मोती बटोरना)

समर मोंतिह लै धोई पानी । चाँद कलंकै चितहि लजानी ॥१
जननि जो पूछि तो कस कहउँ । कवन उतर उन उतर देउँ ॥२
बोला सखिह छाहँ मढ़ि लीजै । हार पिरोइ चाँद कहँ दीजै ॥३
आइ बिरस्पत हेरि हँकारी । चाँद बचन सुन मढ़ी सिधारी ॥४
मढ़ि सुहाउ औ छाहँ सुहाई । चाँद सखी लै बैठी जाई ॥५
मानिक मोंति पिरोवहिं, रचि रचि पारैं हार ।६
बैठे चाँद बिरस्पत, सूरुज मढ़ी दुआर ॥७

१७७

(रीलैण्ड्स १३५)

खबरे जोगी करदने सहेलियाँ मर चाँदा रा

(सहेलियोंका चाँदको जोगीकी सूचना देना)

झाँख सहेलिहँ चाँदहि कहा। इँह मढ़ि मँह एक आयसु अहा ॥१
अति रूपवन्त राजपुत आहे। सूरुज मढ़ि निकट आयें चाहे ॥२
कनक ऊँच आह निदवारू। मंदिर घेरे वीर अपारू ॥३
कौन जननि जरमेउँ अन वारा। सहसकरा भयउ उजियारा ॥४
नागर छैल सुभागे भरा। करम जोत मनु माथें परा ॥५
चाँद कहा तराईं, सूरुज देखउ आइ।६
अस भगवन्त जो देखइ, दिसत पाप झर जाइ ॥७

मूलपाठ—पंक्ति ४ और ५ के उत्तर पद मूल प्रति में परस्पर स्थानान्तरित हैं।

टिप्पणी—(१) झाँख—झाँक कर।
(७) दिसत—देखते ही। झर जाइ—गिर जाये, नष्ट हो जाये।

१७८

(रीलैण्ड्स १३६)

सलाम करदने चाँदा व बिहोश शुदने जोगी

(चाँदाका प्रणाम करना और जोगीका मूर्छित होना)

चाँद सीस भगवन्तहि नावा। भा अचेत मन चेत गँवावा ॥१
सँवर मन देखन गुन गयउ। नैत बरन मुख फँफर भयउ ॥२
नैन झरहिं अति कया सुखानी। धनि धानुक चख हना बिनानी ॥३
नैन दिस्टि चाँदा लायसु। दहा खाइ न सो देखै पायसु ॥४
भौंहें फिराइ चाँद गुन तानी। नैन बान मिस, हनाँ सयानी ॥५
काट दीन्ह जस पकर देवारँ, रकत कीन्ह घरवारि।६
देख गयी धर धरती, सँवर देउ दुआरि ॥७

टिप्पणी—(२) फँफर—कान्तिहीन; सूखा हुआ।

१७९

(रीलैण्ड्स १३७)

बाज गश्तने चाँदा अज बुतखाना व आमदने बे खानये खुद

(चाँदाका मन्दिरसे घर लौटना)

बाहर मंदिर चाँद जो आई । सूरज दिसत मुख गा कुँमलाई ॥१
पूछी चाँद बिरस्पत धाई । काह कहौं कछु कही न जाई ॥२
जोहि सीस मैं सिध कहँ नावा । परा मुरछ मुख बकत न आवा ॥३
हाथ पाउ सर हर न सँभारी । धुन धुन सीस मँदिर सों मारी ॥४
हार पिरोइ सहेलिहँ दीन्हा । हँस कै चाँद पहिर गिय लीन्हा ॥५

कहा बिरस्पत चाँदा, चलहु बेग घर जाहिं ।६
चाँद सुरुज है अँथवत, महरी घरे डराहिं ॥७

टिप्पणी—(३) जोहि—जैसे ही, जिस समय; जब । बकत—बोली, आवाज ।
(४) पाउ—पैर ।
(७) अँथवत—डूब रहे । घरे—घर पर ।

१८०–१८१

(अप्राप्य)

१८२

(रीलैण्ड्स १३८ : बम्बई ९)

कैफियत दर तनहाइये लोरक गोयद

(लोरककी एकान्तताका वर्णन)

माता पिता बन्धु[1] न भाई[2] । संग न साथी मीत न धाई[3] ॥१
इहँ बनखंड कोइ पास न आवइ । को र मरत मुख नीर चुआवई ॥२
दई बिपत जीउ भर संचारा । बाँधसि सीस झारि गहिं बारा ॥३
सपने सूतक मैं कछु देखा । चित न सँभारेउँ मरन बिसेखा ॥४
कोई उठाइ बैसार सँभारे । इहँ कन्था को देइ हंकारे ॥५

देवहि पूछि तूं जो आहा, हौं कस गा बिसँभार ।६
कया सूक मुख फेफर, मोर" जिय कछु न सँभार ॥७

पाठान्तर—बम्बई प्रति—

शीर्षक—गुफ्तने लोरक गुफ्ते हूर व पुर्सीदने हूर रा (लोरकका, अर्द्ध चेत अवस्थामें देवतासे प्रश्न)

इस प्रतिमें पंक्ति ३, ४, ५ का क्रम ५, ३, ४ है।

१—दहन (नागरी लोटे अक्षरोंमें 'दग्धु' भी)। २—घाईं। ३—नाईं। ४—आवा। ५—छोट। ६—कुभावा। ७—हैं। ८—हँभार। ९—आन। १०—जौ रहै। ११—मोरैं।

१८३

(रीलैण्ड्स १३९)

जवाब दादने हूर मर लोरक रा

(देवताका उत्तर)

एक अचम्भा सुनु तूँ लोरा । सतक सेतें भयउ जिहँ तोरा ॥१
अछरिन्ह केर झुण्ड इक आवा । सो तैं अछरिन्ह देख न पावा ॥२
तूँ तिहँ देखि परा मुरझाई । हौं रे पौन बर गयउँ बिलाई ॥३
भा झंकार जो तिहँ कीनाँ । इवबर उठा बहुत गिय सोनाँ ॥४
खिन एक हंस मयन तिहँ कीन्हाँ । फिर पयान उतर मुख दीन्हाँ ॥५
सीस उचाइ जो देखेउँ, मंदिर चहूँ दिसि सून ।६
लहन मोर जियँ उतरी, लोर तुम्हारे पून ॥७

टिप्पणी—(१) सूतक सेते—सोये हुए के समान।

१८४

(रीलैण्ड्स १४०)

दरख़्वास्तने चाँदा बिरस्त रा व पुर्सीदने हिकायते लोरक

(बिरस्तको बुलाकर चाँदका लोरकके सम्बन्धमें जिज्ञासा)

चाँद बिरस्पत पास बुलाई । पिरम कहानी कहु मोहि आई ॥१
जिहँ रस सकर बिरन सिमाईँ । रस देखा हिरदैं भरि चाईँ ॥२

रस अहार सेंह देह अघाई। बिरह झारें रस न बुझाई ॥३
बहुल रसायन देखेउँ चाखी। रस कहानी कहु महँ भाखी ॥४
रस कै रात सपूरन [भावइ*]। औ रस मन सुख निंदरा आवइ ॥५
कहु रस बचन बिरस्पत, जिहिं चित करउँ मिठाइ।६
रस के घडे भरावहु, दुख संताप सब जाइ ॥७

१८५

(रीलैण्ड्स १४१)

जवाब दादन बिरस्पतका चाँदा रा

(बिरस्पतका चाँदको उत्तर)

तूँ रस बिरस चाँद का जानसि। हौं रस कहाँ घिरत जो सानसि ॥१
घिरत खाँड सों करउँ मिरावा। चाँद जइस अपनहिं तुम पावा ॥२
रस पर जिहि कै परै अहारू। रसहि पूर आछहिं संसारू ॥३
रस कै दाध अन-पानि न भावा। रस जो आन औखद बड लावा ॥४
रस कै घात चितहि जो धरसी। रस कै घडे बिरस जनु करसी ॥५
रस कै कुण्ड परा महि, सँवर गुन खीर।६
रस कह बूड धरु बाँहैं, चाँदा लावहु तीर ॥७

१८६

(रीलैण्ड्स १४२)

जवाबदादन चाँदा मर बिरस्पत रा बागुस्सा

(चाँदका बिरस्पत पर क्रोध)

निलज बिरस्पत लाज न धरसी। महि भिखारि सो सरभर करसी ॥१
बिरस्पत तोरैं मन अस आवा। जो तै मढ़ि सँवर दिखरावा ॥२
जिहँ दिन चाँद सुरुज दिखरावा। तिहँ दिन हुत महिं अउर न भावा ॥३
नैन पैसि चित कीनसि थानूँ। बाच कीन्हि हौं अन्त न जानूँ ॥४
तैं जो देखाइ बिरस्पत कहा। सो हींउ मै लागि चित रहा ॥५

लोर सुरुज यह निरमल, चहुँ भुवन उजियार ।६
चाँद आहि धनि ताकर, सूरुज नाँह हमार ।।७

टिप्पणी—(१) सरभर—समानता, बराबरी ।
(४) पैसि—पैठ कर । कीनसि—किया । थानूँ—स्थान । अन्त—अन्य, किसी दूसरेको ।
(७) धनि—पत्नी । नाँह—पति ।

१८७

(रीलैण्ड्स १४३)

बाज नमूदने बिरस्पत हिकायते लोरक पेशे चाँदा

(बिरस्पतका चाँदासे लोरकके प्रेमकी बात कहना)

वह सो महर धिय तोर भिखारी । भीख लेइ जो देसु हँकारी ।।१
दरसन राता भयउ तिह जोगी । भीख न माँग पुरुख है भोगी ।।२
तिहि कारन मुख भसम चढावा । वचन देहि तोहि सिध पावा ।।३
तोरें रम कर आस पियासा । नित नहि आछै लै मरि सासा ।।४
चाँद वदन एक सुनु तुम्ह मोरा । तूँ औखद वह रोगिया तोरा ।।५
हस्त चढा दिखरायउँ, पुनि आनेउँ जेउनार ।६
सोइ मढ़ि महँ, देखत गा बिसँभार ।।७

टिप्पणी—(१) जो—यदि । देसु—दो । हँकारी—बुलाकर ।
(६) आनिउँ—ले आई ।
(७) गा—गया ।

१८८

(रीलैण्ड्स १४४)

अफसोस कर्दने चाँदा अज बेहोशी लोरक दर बुतखाना

(मन्दिरमें लोरकके मूर्छित होने पर चाँदाका खेद)

मढ़ि मंदिर जो लोरक अहा । तैं न बिरस्पत मोंसेउँ कहा ।।१
भुगुति जुगुति तिह जोग देतों । घिरत मिरे वचन सुन सेंतों ।।२

अबॅहि जाइ धरि बॉह उँचावहु । बिरह बभूत मन पानि पियावहु ॥३
अस जनि कहि चॉद पठायउँ । पूछत कहसि चलि हौं आयउँ ॥४
गडुआ पानि नगर खॅड लेहू । कै खॅडयान बिरस्पत देहूँ ॥५

मुख बभूत औ कंथा, अस कहु धरहु उतार ।६
दई भयउ तुम्ह परसॉन, पूजहिं आस तुम्हार ॥७

टिप्पणी—(१) तैं—तूने । मोसउँ—मुझसे ।
(२) भुगुति—(सं० भुक्ति)—भोजन । जुगुति—युक्ति । जोग—योग्य । देतौं—देती ।
(३) अबॅहि—अभी । उचावहु—उठाओ । धरि—पकड़ कर । बभूत—भस्म ।
(४) जनि—मत ।
(५) गडुआ—पानी रखने का पात्र । खॅडवान—खॉडका पानी, शरबत ।
(७) परसाँन—प्रसन्न ।

१८९

(रीलैण्ड्स १४५)

शकरो बर्गदादे फिरस्तादने चॉदा बिरस्पत रा बर लोरक दर बुतखाना

(चाँदका बिरस्पतको लोरकके पास खाँड और पान देकर भेजना)

चाँद खाँड दई पान बिसारी । सुरॅग बिरस्पत मढ़ें सिधारी ॥१
गौन बिरस्पत मढ़ें पैठी । जहवॉ चॉद सुरुज भइ दीठी ॥२
बिरस्पत दसन बीजु चमकाये । सॅवर रकत नैन झर लाये ॥३
बिरस्पत पाय सुरुज लै रहा । तुम जो चॉद मिरावन कहा ॥४
जागत रहेंउँ जो नींद गवानी । अन न रूचऔ भाइ न पानी ॥५

हौं जो चाँद लैं आयउँ, कीस मढ़ि परकास ।६
समर नीदरो सूते, गई हिंडोर जिह पास ॥७

टिप्पणी—(२) जहवॉ—जिस जगह । दीठी—देखा देगी ।
(४) मिरावन—मिलाप करानेकी बात ।

१९०

(रीलैण्ड्स १४६)

पन्द दादने बिरस्पत चाँदा लोरक रा के दूर कुन लिबासे जोग

(बिरस्पतका चाँदकी ओरसे लोरक योगी वेश त्यागनेको कहना)

अबहिं सुरुज मन राख रखावहु। बहुत चाँद सर दरसन पावहु ॥१
तजु लोर दरसन औ मढ़ी । सरग चाँद बिधि भगवन गढ़ी॥२
जो हर बसे तराई धावइ । चाँद सुरज किह ओर पठावइ ॥३
सो बचन सुनी लोरक घबरा । दोऊ पायँ सीस धर परा ॥४
बिरस्पत बचन लोर जो मानी । कै खँडवान पियायसि आनी ॥५
प्रथम देउ मनायउँ, फुनि रे बिरस्पत तोहि ॥६
[---] परों लै तारा, चाँद मिरावहु मोहि ॥७

१९१

(रीलैण्ड्स १४७)

फुरू आवर्दने लोरक लिबासे जोग व बेगानये रीश रफ़्ने लोरक व बिरस्पत

(लोरकका योगी वेश त्यागना : लोरक और बिरस्पतका अपने अपने घर जाना)

सँवर दरसन जोग उतारा । मढ़ि तजि घरै मँदिर सिधारा ॥१
चली बिरस्पत सुरुज पठाई । चाँद नारि कहँ बात जनाई ॥२
चाँद बिरस्पत सेउँ अस कहा । कहु मढ़ि सँवर कैसें अहा ॥३
नैन रकत झरों असरारू । भुगुति न जानी नींद अहारू ॥४
मिलन काम बिधा न सँभारे । चाँद चाँद निसि ठाढ़ि पुकारे ॥५
सीस धुनत तिंह दिउ रैन, जनु नाउत अभुआइ ।६
कहत सुनत अबहाँहुत, आयउँ मंदिर पठाइ ॥७

टिप्पणी—(६) अभुआइ (धा० अभुआना)—भूत प्रेत लगने पर उपद्रव करना ।

१९२

(रीलैण्ड्स १४८)

अज सहरा बेरानये आमदने लोरक व पाय उफ्तादने मैना

(लोरकका घर आना और मैनाका पैर पर गिरना)

देवस दहाँ दिसि फिरि फिरि आवइ । चाँद लागि निसि रोइ बिहावइ॥१
खिन एक संग साथ न बैसै । गया अमर बन मँदिरहि पैसै ॥२
मैना आइ पाइ लै परी । लोरक बैसु कहूँ एक घरी ॥३
नहाइ धोइ बस्तर पहिराऊँ । औ घिसि चन्दन सीस फिराऊँ ॥४
सेज बिछाइ फूल पर डासों । पिरम लागि मन सान्त करासों ॥५
उतर न देहि प्रेम छल फूटा, सोइ नार बिललाइ ।६
सों नहिं सुनै चँदर बर चिन्ता, रहा नैन दोइ लाइ ॥७

टिप्पणी—(१) दहाँदिसि—दसो दिशा ।
(३) कहूँ—कहीं ।

१९३

(रीलैण्ड्स १४९)

सहरा गिरफ्तने लोरक अज कमाले फिराके चाँदा

(चाँदाके वियोगमें लोरकका वन गमन)

रैन चाँद जो देउ बयानाँ । मरो मरो कै देवस तुलाना ॥१
चला बीर बनखण्डँ जहाँ । सिंघ सिंदूर लँकारहिं तहाँ ॥२
सकर दिवस बन बस्ती भँवई । रैन आइ गोबर महँ गँवई ॥३
मकु चाँदा खिन एक दिखरावइ । तिहिं असरैंनिस गोबरा आवइ॥४
मिरग पंथ रोइ लोटै लावइ । पाउ धरत मुख चाँदा आवइ ॥५
ईंह बर रैन घुरावइ, औ दिन फुनि ईंह भाँत ।६
चाँदा सनेह बउरावा, तिल एक होइ न साँत ॥७

टिप्पणी—(२) सिंघ सिंदूर— देखिये टिप्पणी १२८।५ ।
(४) असरैं—आशामें ।
(७) बउरावा—पागल हुआ ।

१९४

(रीलैण्ड्स १५०)

बेकरार शुदने चाँदा अज कमारे इश्क लोरक

(लोरकके प्रेममें चाँदकी विकलता)

परी गवेज्ञ सेज न भावइ । रैन चाँद निहफइ चुपलावइ ।।१
कहु तिहिं सुरुज कवन घर बसा । निस सर चढा चीत मोर डसा ।।२
जहिं कहुँ होइ तिंह जाइ बुलावहु । सुरुज आनि सेज बैसावहु ।।३
चाँद मरत लै सुरुज जियावइ । तू का करसि मोतें हुत आवइ ।।४
आनि निरस्पत सुपा सरनां । रात देवस आह महिं मरनाँ ।।५
अंग दाह मन चटपटी, घर बाहर न सुहाइ ।६
चाँद न जिये भानु बिनु, आनु निरस्पत जाइ ।।७

टिप्पणी—(१) बिहफइ—बिफई पाठ भी सम्भव है। दोना ही निरस्पत (बृहस्पति) का देशज रूप है।
(७) भानु—सूरज। यहाँ तात्पर्य लोरकसे है। अनु—ले जाओ।

१९५

(रीलैण्ड्स १५१)

ऐजन । दर बेकरारी चाँदा गोयद

(चाँदकी व्याकुलता)

हो निसि चाँद सुरुज कर पावउँ । देवस होइ चढि सरग बोलावउँ ।।१
बाँधे पँवर पँवरिया जागहिं । तसकर चीर देखि डर भागहिं ।।२
तो यहिं कहाँ ईत पोसाऊ । रैन काँट हिय उठे संताऊ ।।३
पाउस रात देखि अँधियारी । कितहुत सुरुज हंकारउँ बारी ।।४
जो मन रूचि सोइ पियारा । भुरै आँत किहि पाऊ सुवारा ।।५
देवस चार तुम्ह गाधन, इहँ जिवँ कै आस ।६
चाँद सुरुज से मिरउब, पाँइ भोग बिलास ।।७

१९६

(रीलैण्ड्स १५२)

पुरुद आमदने चाँदा अज कस्र व फिरस्तादने बिरस्पत रा बर लोरक

(चाँदका बिरस्पतको लोरकके पास भजना)

उतरी चाँद पइठि चतसारा । अदनल भानु कीस उजियारा ॥१
चली बिरस्पत चँमकइ बाँहा । दण्डाकारन बीजु पनाहाँ ॥२
जाइ तुलानि बीर कै बासा । सींह सिंदूर फिरहिं जिहि पासा ॥३
देखा लोर बिरस्पत आई । नैन रकत भर नदी बहाई ॥४
बिरस्पत तोर पन्थ हौं जोऊँ । खिन एक रात देवस न सोऊँ ॥५
कहु सँदेस जिहँ पठये, कउन जनाई बात ।६
कार रात मन अँधियार, औ हा चाँद चाँद चिल्लात ॥७

टिप्पणी—(१) पइठि—घुसी । चतसारा—बैठकखाना । कीस—किया ।
(३) सींह सिंदूर—दखिये टिप्पणी १२८।५ ।
(६) जनाई—सूचित किया ।

१९७

(रीलैण्ड्स १५३)

गुफ्तन बिरस्पत मर [लोरक]

(बिरस्पतका उत्तर)

तोरे पीर लोर हौं पीरी । पान न खायउँ एकउ बीरी ॥१
अब म तोंकहँ गुना बिराजा । हिरदें रैन मंत्र एक साजा ॥२
पवँर पन्थ तिहि जाइ न जाइ । बारक होतेउ लेतेउँ लुकाई ॥३
उतरु बीर जो उतरँ पावसु । सरग पन्थ जो चढत सँभारसु ॥४
कै कारन हनुवँत बर बाँधउ । कै कर लाइ पंखि सर साधउ ॥५
गिरैं फाँस बर मेलसि, चोर सरग चढ़ जास ।६
गरैं चाँद रव भोंजसि, वहिं तस सरग पास ॥७

टिप्पणी—(१) पीर—दुख । पीरी—दुखित । बीरी—पानका बीड़ा ।
(२) तोकहँ—तुमको ।
(३) बारक—बालक । लेतेउँ—लेती ।

१९८

(रीलैण्ड्स १५४)

कुरदने बिरस्पत लोरक रा व नमूदने राहे कस्र चाँदा

(बिरस्पतका चाँदके धौराहरका रास्ता दिखाना)

जो सो बचन बिरस्पत कहा । लोर पीर हियँ कै गहा ॥१
मन रहँसा कहु आज़ मेरावा । जिह लग सूर सरग चढ़ धावा ॥२
बिरह झार अजहुत कुँभलानाँ । रहँसा कँवल भाँत बिहसाना ॥३
सो महिं बाट आइ दिखराउ । जिहँ चढ़ि जाउँ चाँद कह ठाउ ॥४
धनि सो रात जिहिं सजन बुलाहँ । चाँद सुरुज दोउ गवन कराहँ ॥५
चली बिरस्पत सरगहिं, सुरुज गोहन लाइ ।६
जहाँ चाँद निसि बिसवइ, गई सो पँथ दिखराइ ॥७

टिप्पणी—(७) बिसवई—विश्राम करती है ।

१९९

(रीलैण्ड्स १५५)

खरीदने लोरक अबरेशमे खाम बराय साख्तने कमन्द

(कमन्द बनानेके लिए लोरकका पाट खरीदना)

पाट बधनियाँ लोर बिसाहा । परत सात गुन कीत बराहा ॥१
बनें माँझ लोरक तस तानाँ । जानु सरग कहँ रची निवानाँ ॥२
मुख भाँग हुत जनु धर काढ़ा । हाथ तीस एक आछै ठाढ़ा ॥३
अँगुरी मार गँर तिहिं लाई । जिहिं सरि परि तिहँ पैंछत न जाई ॥४
खँड खँड लाग फाँद सँचारी । चीरपाउ जिहिं धरि धर सँभारी ॥५
देखि पृछि अस मैंना, बरहा करियहु काह ।६
परी भँइस अठमारक, बाँधे चाहत आह ॥७

टिप्पणी—(१) बिसाहा—खरीदा । बराहा—बरहा, मोटी रस्सी ।
(४) मार—लोहा ।
(७) भँइस—भैंस ।

२००

(रीलैण्ड्स १५६)

रवान छुदने लोरक दर शवे तरीका ब घर शिगाल सुए कस्र चाँदा

(अँधेरी रातमें लोरकका चाँदके धौराहरकी ओर जाना)

छठ भादों निसि भइ अँधियारी । नैन न सूझै बाँह पसारी ॥१
चला बीर बरहा गर लावा । जियकै बैर दूसरहिं बुलावा ॥२
खिन गरजै फिर दइउ बरीसा । खोर भरे जर बाट न दीसा ॥३
दादुर ररहि बीजु चमकाई । एइस न जानु कौन दिसि जाई॥४
मसइर दीख झरोखें पासा । लोर जानु नखत परगासा ॥५
चित भुलान निसँभारा, मंदिर कौन दिसि आह ।६
देवस होत जो चित धरों, उतर कहउँ तो काह ॥७

टिप्पणी—(३) दइउ—दैव, बादल । खोर—गाँवका कच्चा रास्ता । जर—जल ।
(४) दादुर—मेढक । ररहि—टर्र टर्र करते हैं । अइस—ऐसा ।
(७) उतर—उत्तर दिशा ।

२०१

(रीलैण्ड्स १५७)

दरख्शीदने बर्क व शिनाख्तने लोरक खानये चाँदा

(बिजली चमकना और लोरकका चाँदका आवास पहचानना)

काधा लौकैं भा उजियारा । चिर जिया लौर मंदिर मनस्धारा ॥१
सँवरसि भीम केर पोमाऊ । मेलसि बरह रोपि धरि पाऊ ॥२
परा बरह तो चाँदा जागी । अँकुरी देखि चौखण्डे लागी ॥३
झाँखा चाँद लोर तर आवा । अँकुरी काढि बरह झटकावा ॥४
जेंउ जेंउ मेलि मंदिर तर जाई । हँसि हँसि चाँदा दइ झटकाई ॥५
एक बार परा तो, मेलों बरह फिराइ ।६
काटों ठाँर सहस एक, जो न मंदिर पर जाइ ॥७

टिप्पणी—(१) कौंधा—चमका । लौकै—बिजली ।

(३) पोसाऊ—पुरुषार्थ। मेलसि—फेंका। रोपि—अड़ा करके।
(४) झाँखा—झाँक कर देखना। तर (तल)—नीचे।
(५) जेंउँ जेंउँ—ज्यों ज्यों।

२०२

(रीलैण्ड्स १५८ : काशी)

अफसोस कर्दने चाँदा अज बाज गुजाश्तने कमन्द

(चाँदका कमन्द छोड़ देने पर खेद)

चाँद कहा अब लोरक जाइह। मन उतरें फुनि बहुरि न आइह ॥१
हौं अस बोलेउँ चतुर सयानी। बरहा छाड़उँ कवन अयानी ॥२
हाथ क माँग समुँद मँह जाई[1]। बहुरि[2] सो हाथ न चढ़ै[3] आई ॥३
कइ औगुन सैंसातें के तोरा[4]। परा बरह[5] बुधि हीनें छोरा ॥४
दई ठाउँ जो माँगा पाऊँ। मेलि बरह खाँभ लै लाऊँ ॥५
दई बिधाता बिनवौं, सीस नाइ कर जोरि।६
परा फाँद बन मोरैं, जाइ बरह जनि तोरि ॥७

पाठान्तर—काशी प्रति—
शीर्षक रीलैण्ड्स प्रतिके समान ही; केवल "अज बाज" शब्द नहीं है। १—अन्तिम दो शब्द कुछ भिन्न हैं, जो पढ़े नहीं जाते। २—शब्द भिन्न है, जो पढ़ा नहीं जाता। ३—चढ़ै न। ४—कै औगुन सैं मैं गुन तोरा। ५—'बरह' शब्द नहीं है। ६—पंक्ति ६-७ अपाठ्य हैं।

टिप्पणी—(१) जाइह—जायेगा। आइह—आयेगा।
(२) अयानी—अज्ञानी।

२०३

(रीलैण्ड्स १५९)

कमन्द अन्दाख्तने लोरक व रिहा कर्दने चाँदा बरसून

(लोरकका कमन्द फेंकना और चाँदका उसे खम्भेसे बाँधना)

बेर भवा बरु बरह फिर आवा। तस मेलसि जस नछत तनावा ॥१
परा बरह (तो) चाँदा धाई। अँकुरी मंदिर खाँभ लै लाई ॥२

रहा बरह लोरक धरि तानाँ । माल जुगुति पौ धरसि पनानाँ ॥३
बीर परान परन को काहा । बेड़िन बाँस चढ़त जनु आहा ॥४
चाँदें देखि लोर गा आई । सेज सभर होइ पसरी जाई ॥५
चढा लोर धौराहर, देखसि बिरसम अवास ।६
मिरग नियर धर औहट, राँध न केऊ पास ॥७

मूलपाठ—२—तो तो ।
टिप्पणी—(१) बेर—देर । भवा—हुआ । बरु—लेकिन ।
(४) बेड़िन—नटी ।
(५) पसरीं—लेटी ।
(७) नियर—समान, की तरह । धर औहट—आहट लिया । केऊ—कोई भी ।

२०४

(रीलैण्ड्स १९०)

बर बालाय कस ईस्तादने लोरक व दीदने समाशाये ख्वाबगाहे चाँदा व खुफ्तने कनीजगान

(लोरकका चाँदका शयनागार देखना दासियोंका बेखबर सोते रहना)

लोरक लेत खाँभ परछाँही । सो देखसि जो देखा नाही ॥१
दिया सात तर खाँभैं बरहीं । जगमक रतन पदारथ करहीं ॥२
हीरन हार धर तस जोती । सरग नखत जनु बइठे मोती ॥३
चेरी सोइ जो पहरे केती । जानु अकास कचपची एती ॥४
घिसनइ चाँद सपूरन तहाँ । मानिक जोत तराईं जहाँ ॥५
रैन माँझ जस दिन भा, नाँही बीर दुराउ ।६
चढ़ि लोर सो देखा, जो न देखहुत काउ ॥७

टिप्पणी—(२) सात—'साठ' पाठ भी सम्भव है ।
(४) कचपचीं—कृतिका नक्षत्र, आकाश मे पूर्वकी ओर दिखाई देनेवाले छोटे तारोंका समूह ।
(६) भा—हुआ ।

२०५

(रीलैण्ड्स १६१, पंजाब [प०])

लिखते नक्शाकारी चौखण्डी

(चौखण्डीकी चित्रकारीका वर्णन)

ढार चौखण्डी इंगुर बानी । चित्र उरेह कीन्ह सुनबानी ।।१
लंक उरेह भभीखन रेहा । सँचै मान दसगर कै देहा ।।२
सीता हरन राम संग्राऊँ । दुर पांडो कुरखेत क ठाँऊँ[1] ।।३
करपा[2] चोर कोदया जुआरू । अजयी नगरी अगिया बैतारू ।।४
साँझी पन्दरान रहे लावा । चकावृह अरिहँ उचावा ।।५
सींह-सँदूर मिरघ मिरघावन आनों भाँत ।६
कथा-काच परलोक निसारँभ, लिख लाँनी जिहँ पाँत[3] ।।७

पाठान्तर—पंजाब प्रति—
शीर्षक—फट गया है ।
१—पूरी पंक्ति अस्पष्ट है, पढा नहीं जाता ।
२—खड़खड़ा (?) ।
३—पंक्ति ६-७ अस्पष्ट हैं, पढे नहीं जाते ।

टिप्पणी—(१) ढार—पोतकर, लगाकर । इंगुर—(सं० हिंगुल>इंगुल>इंगुर> ईंगुर) एक प्रकारका लाल रंग जिसे अभ्रक, पारद तथा गन्धक घोंट-कर बनाते हैं । स्त्रियाँ इसे अपना माँग भरनेके लिए सिन्दूरकी तरह काममें लाती हैं । बानी—(सं० वर्णिक)-रंग । सुनबानी—सोनेका रेखांकन । ईंगुरी पृष्ठ भूमि पर सोनेसे रेखांकित चित्र चौदहवीं-पन्द्रहवीं शताब्दीमें काफी प्रचलित थे और उनके नमूने बड़ी मात्रामें चित्रित जैन ग्रन्थोंमें देखनेको मिलते हैं ।

(२) लंक—लंका, रावणका निवासस्थान । भभीखन—विभीषण । रेहा—रेखांकित किया । दसगर—दशस्कन्ध, रावण ।

(३) दुर—दुर्योधन । कुरखेत—कुरुक्षेत्र, जहाँ महाभारत हुआ था ।

(४) इस पंक्तिमें लोककथाओंमें प्रचलित पात्र जान पड़ते हैं किन्तु उनकी पहचान हम नहीं कर सके हैं । अगिया बैतार (अगिया बैताल)—विक्रमादित्यके सिद्ध दो बैतालोंमेंसे एक ।

(५) चकावृह—चक्रव्यूह ।

(६) मिरघावन—मृगारण्य, शिकारगाह । भाँत—अनेक प्रकारके ।

२०६

(रीलैण्ड्स १६२)

सिफ्ते खुश्बुए हर जिन्से आरास्त गोयद

(प्रत्येक प्रकारकी सुगन्धिका वर्णन)

लौटि देखि जो कुंकु लोरा। चन्दन घिसि भरि धरै कचोरा ॥१
बैनाँ परिमल इत औ छरा। ठौर ठौर खर तेलिया जरा ॥२
मेध सुगन्ध आह असरारू। चोबा बास होय मँहकारू ॥३
सैर कपूर सुरँग सुपारी। पान अदा कर धरी सँवारी ॥४
नरियर दाख चिरौंजी आहा। खाँड खँडोर कहूँ तिह काहा ॥५
लोरहिं लीन्ह खाँभ परछाईं, तुर उचाइ मुख ओइ ।६
धन बिरास चाँदा कै, बास माँहिं निसि सोइ ॥७

टिप्पणी—(२) बेनाँ = स० वीरण, खस। परिमल—अनेक सुगन्धियोंको मिलाकर बनायी हुई सुगन्धि। इत—सम्भवत इत्र।
(३) मेध—मेद, एक प्रकारकी सुगन्धि जो किसी पशुके नाभिसे बनायी जाती थी। (आइन-अकबरी, आइन ३०, पृ० ८५)। चोबा—एक सुगन्धि जिसके तैयार करनेकी विधिका आईन अकबरीमें उल्लेख है।
(४) कपूर—'केवर' पाठ भी सम्भव है। उस स्थितिमें उसका तात्पर्य 'केवड़ा' होगा।

२०७

(रीलैण्ड्स १६३)

सिफ्ते तख्ते जर्री व मुकल्लल बे जवाहिराते बिराग

(शय्या वर्णन)

पालँग सेज जो आनि बिछाई। धरत पाउ भुइँ लागै जाई ॥१
पान बनै अरु फूलहिं भारी। सोनैं झारी हँस गुंदारी ॥२
सुरँग चीर एक आन बिछावा। धरती बैस झँचन अस आवा ॥३
तिहि चढ़ि सत खउँ बिकरारा। चाँपा छट छिटक गये बारा ॥४
यहि भँति करैं फूल पहि बासी। करँडी चारि फूर भर डासी ॥५

लोर जान आये सभरि, पुहुप बास रस आइ ।६
निसा हाथ पसारैं, काँपि उठे डर पाइ ।।७

टिप्पणी—(१) आनि—लाकर । धरत—रखते ही । पाउ—पैर । भुइ—भूमि ।
(३) सुरंग—लाल । झवँन—मूर्छा । अस—ऐसा ।
(४) खोंपा—केशका जूडा । बारा—बाल, केश ।
(५) करँडी—फूलकी टोकरी । फूर—फूल ।

२०८

(रीलैण्ड्स १६४)

पैदार करदने लोरक चाँदा रा अज ख्वाब

(लोरकका चाँदाको जगाना)

गुँदवा चाँद धरा अधकाई । दीन बतीसैं बैठो आई ।।१
मुखा कँवल जनु विहसत आहा । अधर सुरंग बिरंगू काहा ।।२
सोवत फिरा हियैं कर चीरू । अस्थन देखि मुरझि गा बीरू ।।३
चितहिं गहँ अब आप जनाऊँ । पाउ धरउँ कै बकत सुनाऊँ ।।४
फिरि कै लोर झौं अस आवा । मन संका नहि सोवत जगावा ।।५
कापर आन भरपूर गाहि, चीरहि बकति न आउ ।६
जीउ दान मन संका, किहिं विधि सोवत जगाउ ।।७

२०९

(रीलैण्ड्स १६५ : पंजाब [ला०])

बीदार शुदने चाँदा व गिरफ्तन मोये सरे लोरक व फरियाद कर् आवर्दन

(चाँदका जागकर लोरकके केश पकड़कर चिल्लाना)

उछरत केर गही कर बारी । नैन सोवहिं मन जागि कुवारी ।।१
फुन खबरी जो नियरें आवा । कर गहि केस चाँद गुहरावा ।।२
चोर चोर कहि कोउ न जागे । मानुस खत सो गुहार न लागें ।।३

ऊँच बोल तो चेरी जागहिं । चोर देखि भय जीयें लागहिं ॥४
छाड़ न केस धरसि दइ फेरा । करहिं गुहार चोर महिं हेरा ॥५
मन रहँसै धनि अस कहै, जिये आस तुलान ।६
दयी ठाँउ जो माँगेउँ, सो महँ सरबस आन ॥७

पाठान्तर—पंजाब प्रति—

शीर्षक—अंश अपाठ्य है ।

१—सूत । २—गुहरवा । ३—पूरी पंक्ति अपाठ्य है । ४—चोर देखि बहु जियसे लागहिं । ५—पंक्ति ६-७ वाला अंश फट गया है ।

टिप्पणी—(१) बेर—समय । गही—पकड़ा । बारी—बाला, युवती ।

(२) नियरें—निकट । गुहरावा—पुकार लगाई ।

(५) हेरा—देखा ।

(६) तुलान—पूरी हुई ।

(७) गुहार—पुकार ।

(८) सरबस—सर्वस्व; सब कुछ ।

२१०

(रीलैण्ड्स १६३)

जबाब दादने लोरक मर चाँदा रा बानरमी

(लोरकका चाँदसे धीरे कहना)

मन अचेत धनि भीभर खोली । अपने जरम न कीन्हेउँ चोरी ॥१
आयउँ तोरें नेह कुवारी । कही चोर औ दीन्हीं गारी ॥२
चोर होतेउँ तोर अभरन लेतेउँ । पूर गहन लै ऊचहिं देतेउँ ॥३
धरी केस तूँ महिं गुहरावसि । सोवत लोग केहि अरथ जगावसि ॥४
अभरन काज न आवइ मोरे । रूप भुलानेउँ चाँदा तोरें ॥५
तोहि लागि जो मरेउँ, नेह न छाडेउँ काउ ।६
पिरत तुम्हार लाग मोर हिरदैं, जै जिउ बिहु जाइ तो जाउ ॥७

टिप्पणी—गुहरावसि—पुकारती हो ।

२११

(रीलैण्ड्स १६७)

गुफ्तने चाँदा लोरक रा दुद

(चाँदका उत्तर)

चोर रैन जो चोरी आवइ। अभरन लेत तिहि कनन छुडावइ॥१
चोरहु नेह कहइ दुनि काहा। अइस उत्तर कहु जाइत आहा॥२
मैं तिहको का सँदेस पठावा। कौन सकति तूँ मो पहँ आवा॥३
जा तिहिं पंखि उठी जो आई। रहे न पाउ सो मरे अढाई॥४
जिउ दइ चाहु आई सो बेरा। चीन्ह न कोउ चोर महिं हेरा॥५

मींचु तार तूँ आनसि, कैसें मेट न जाइ।६
पाउ धरहु तिहँ निस्तर, जायहु जीउ गँवाइ॥७

टिप्पणी—(३) मो—मुझ।

२१२

(रीलैण्डस १६८अ)

सवाल कर्दने लोरक व नमूदने तमसील

(लोरकका कथन)

जौलहि जीउ घट महँ होई। तौलहि सरग न आवइ कोई॥१
प्रथम मानुस जीउ गँवावइ। तो पाछैं चढ सरगहिं आवइ॥२
मर कै चाँद सरग हौं आवा। जो जिउ होइ डराइ डरावा॥३
हौं तो मरेउँ जिवहु तो देखी। तोहि देख धन मुएऊँ बिसेखी॥४
मुएँ जो मारे सो कस आहा। चाँद मुएँ कर मारब काहा॥५

देख रूप जिउ दीन्हों, तो आयउँ तिहिं पास।६
रहँ नैन जिहिं देखेउँ, रहे जीह लै साँस॥७

टिप्पणी—(१) जौलहि—जब तक। तौलहि—तब तक।
(२) पाछैं—पीछे, बादमें।
(५) मारब—मारना।

२१३

(रीलैण्ड्स १६८ब)

गुजाश्तने चाँदा मूये सरे लोरक व गिरफ्तने कमरबन्दे ऊ

(चाँदाका केश छोड़कर आँचल पकड़ना)

लोर मन उठा सरोहू । चाँदा चितहिं बुझानेउँ कोहू ॥१
केस छाडि धनि आँचर गहा । चाँद बैठि नर ठाढ़ा रहा ॥२
चोर नाँउ आपुन कछु मोही । बोल सबद मकु चीन्हौं तोही ॥३
कउन जात तुर घर है कहाँ । कउन लोक तुम्ह आछ जहाँ ॥४
मता पिता तोरे चिन्त न करिहैं । रैन फिरत तिहि बाच न धरिहैं ॥५
कहत वचन महँ अस भा, काकहिं करिपहुँ तोहि ।६
महर रोंस लै करहिं, सर हत्या फुनि मोहि ॥७

टिप्पणी—(२) धनि—स्त्री । आँचर—आँचल । गहा—ग्रहण किया, पकड़ा । ठाढ़ा—खड़ा ।
(३) नाँउ—नाम ।
(४) कउन—कौन । तुर—तेरा । आछ—रहते हो ।
(७) रोंस—रोष, क्रोध ।

२१४

(रीलैण्ड्स १६९)

जवाब दादने लोरक चाँदा रा

(चाँदको लोरकका उत्तर)

आज कहु चाँद न चीन्हसि मोही । गहनैं लेत उबारेउँ तोही ॥१
तुम्हरे साख जो कीन्ह न काऊ । मारेउँ बाँठ खदेरेउँ राऊ ॥२
आनों बीर देख तोर अहें । सगरें बीर मोर मुख चहें ॥३
हौं सो आह धनि कुँकू लोरा । खाँड परत जैं अंग न मोरा ॥४
महर काजि मैं जीउ निवारेउँ । गार पसेऊ तहाँ लोहू ढारेउँ ॥५

पुरुख न आपु सराहे, पूछति कहई बात ।६
चोर चोल सो मारै, जो मन बाउर रात ॥७

टिप्पणी—(१) चिन्हसि—पहचानती हो । गहनै—ग्रहण । उबारेउँ—उद्धार किया ।
(२) साख—साथ । खदेरेउँ—भगाया ।
(३) सगरैं—सभी ।
(४) गार—गिरा ।
(७) बाउर—पागल । रात—अनुरक्त होकर ।

२१५

(रीलैण्ड्स १००अ)

सवाल कर्दने चाँदा दर पेहानते लोरक

(चाँदका लोरकका उपहास करना)

आपुहि चीर सराहसि काहा । जात गुवार आह चरवाहा ॥१
हमरें चेर सहस एक आहहिं । काज कहा नहीं तिह एक न छेवहिं॥२
अति ककान जो पूँछ चढावा । असवारहि कहँ फेरि न आवा ॥३
जाकहँ लोर कीन्हि मिताई । तिंह के मंदिर कस पैठेउ धाई ॥४
ऐसें नर जो सेउ करावइ । साईं दोह अस छोह न आवइ ॥५
सुन जो पावइ महर अस, गोबरा परिहँइ बेरि ।६
एक धरति सो धरि पहँ, तूँ डोलहु किह केरि ॥७

टिप्पणी—(१) गुवार—ग्वाल । आह—हो ।
(७) परिहँइ—पड़ेगी । बेरि—बेड़ी ।

२१६

(रीलैण्ड्स १००ब)

जवाब दादने लोरक मर चाँदा रा

(लोरकका उत्तर)

साइँ दोह अस बोलै नारी । रात जाइ अहनातें मारी ॥१
कै बायन निसनार सँचारैं । कै दिनाय चूनाँ महँ मारैं ॥२

झेकरें काज जीउ लै दीजा। ताकहँ चाँद दोह कह कीजा ॥३
मद्दर काज धसि गोचराँ लेऊँ। जीउ जो माँग काढ़ि कै देऊँ ॥४
हमरै दोह न कीजै धनाँ। दोहँ करहिं तिंह कोइ न गुनाँ ॥५

गुन अवगुन सभ कोइ न जानै, जो मन आह सरीर ।६
बायन पाउ धर आयउँ, हौ बूडेउँ मझ नीर ॥७

टिप्पणी—(१) अहनातैं—अनायास, बिना किसी कारणके।
(२) बायन—निमन्त्रण। दिनाय—दाद।
(३) झेकरें—जिसके।

२१७

(रीलैण्ड्स १०१अ)

सवाल कर्दन चाँदा बर लोरक दर इश्क

(चाँदका लोरकसे प्रेम प्रश्न)

पूछेउँ लोरक कहु सत मोही। (के) एती बुधि दीन्हें तोही ॥१
सतँहिं तरै सायर महँ नावा। बिनु सत बूडे थाह न पावा ॥२
जिहँ सत होइ सो लागै तीरा। सत कह हनैं बूड़ मँझ नीरा ॥३
सत गुन खींचि तीर लै लावा। सत छाड़ैं गुन तोर बहावा ॥४
सत सँभार तो पावई थाहा। बिनु सत थाह होइ अवगाहा ॥५

सत साथी सत साँभल, सतैं नाव गुनधार ।६
कह सत कित तूँ आवसि, बरु बुध दइ करतार ॥७

मूलपाठ—(१) ले (लिपिकार काफ के ऊपर मरकज देना भूल गया है)।

टिप्पणी—(१) एती—इतनी।
(२) सायर—सागर।
(४) गुन—रस्सी।
(६) गुनधार—यह 'कँडहार' भी पढ़ा जा सकता है। पदमावत और मधु मालतीमें यह शब्द अनेक बार आया है और वहाँ इस माताप्रसाद गुप्तने 'कँडहार' ही पढ़ा है और उसे 'कर्णधार'का रूप बताया है। वासुदेवशरण अग्रवालने भी इस रूपको स्वीकार कर उसका अर्थ 'पतवार धारण करनेवाला (माझी)' किया है। परन्तु उसके लिए

'करिया' शब्द है। पतवारवाहकका काम नावको नदीके बीच सम्हाले रहना है। नावको किनारे तो रस्सी खींचनेवाला माँझी ही लाता है। अतः प्रस्तुत प्रसंगमें उचित पाठ 'गुनभार' होगा 'कँडहार' नहीं।

२१८

(रीलैण्ड्स १७१ब)

जवाब दादन लोरक चाँदा रा

(लोरकका उत्तर)

जिहँ दिन चाँद गयउँ जेउनारा। देख विमोहेउँ रूप तुम्हारा ॥१
तुम्हरे जोत भयउ उजियारा। परेउँ पतंग होइ मैं बिसभाँरा ॥२
सो रंग रहा न चित हुत जाई। चितहिं माँझ रँग गढ़िया छाई ॥३
रंग जेउँ रंग भोजन करउँ। रंग बिन जियउँ न रंग बिन मरउँ ॥४
तिहिं रंग नैन नीर नइ बहा। बिनु सत बूड़ होइ अवगाहा ॥५
रंग जो देहि मन भारी, बिन रंग उठै न पाउ ।६
जीउ चाह रंग डोलहि, सुन चाँदा सतभाउ ॥७

२१९

(रीलैण्ड्स १७२अ)

गुफ्तने चाँदा हिकायते इश्क

(चाँदका प्रेमकी बात कहना)

रंग के बात कहउँ सुनु लोरा। कैसें रात मोह मन तोरा ॥१
जात अहीर रंग आह न तोही। रंग बिनु निरंग न राता होई ॥२
कहु दुख जो तैं सम नित सहा। बिन दुख यह रंग कैसे रहा ॥४
जो न हिये नर खाँडइ खाऊ। रंग रतै एक होइ न काहू ॥४
अगिन क्षार बिनु रंग न होई। जिंहि रंग होइ आवत मर गोई ॥५
अन न रूच रंग बड़ा, जाइ नींद निमि जाग ।६
मोट धूल तूँ लोरक, कहु कैसें रँग लाग ॥७

२२०

(रीलैण्ड्स १७२ब)

जवाब दादन लोरक चाँदा रा

(लोरकका चाँदको उत्तर)

बान भयउँ चाँदा तिहि जोगू। सर दइ खेलेउँ चित धर भोगू ॥१
काट गहेउँ जस सोवा सारी। खांड पेस दोइ कीन्हेउँ मारी ॥२
आतिस काढ़ि कीन्ह दोई आधा। आवसु चाँद मैं आपुहि साधा ॥३
बिरह दगध हौं जो तोँ कीन्हा। जरत नीर तिह ऊपर दीन्हा ॥४
अन छाडेउँ बिरहि के झारा। पानी के हौं रहेउँ अधारा ॥५
कहूँ निरत सब आपन, आप जो पूछहु बात ।६
अधर धरै के बेरै, तिहि रंग तोरें रात ॥७

२२१

(रीलैण्ड्स १७३अ)

गुफ्तने चाँदा हिकायते मैनाँ बा लोरक

(चाँदका लोरकसे मैनाकी प्रशंसा)

सुरंग सेज भरि फूल बिछावसि। कँवल कली तस मैंना रावसि ॥१
अस धनि छाड जो अनतैं धावा। किये सनेह तो हुँइ झटकावा ॥२
भँवर फूल पर रहेइ लुभाई। रस लै ताकहिं फिरि नहिं जाई ॥३
काह लाग तूँ कुगरी करसी। सनेह कै लिलार घूँट न धरसी ॥४
अरे लोर तूँ किहँ बोरावसु। तिहँ बोराउ जहाँ कछु पावसु ॥५
का अचेत हौ बाउर, कै तू लोर बोरावसि ॥६
कै सनेह महँ झरँकस, जित भावइ तित जावसि ॥७

टिप्पणी—(२) अनतैं—अन्यत्र।
(३) ताकहिं—देखने। फिरि—लौटकर।
(५) बोरावसु—भुलावा देता है, बहकाता है। बोराउ—बहकाओ।

२२२

(रीलैण्ड्स १७३ब)

जवाब दादने लोरक चाँदा रा

(लोरकका चाँदाको उत्तर)

जिहँ दिन चाँद देहौं कढ़ा । तिह दिन देखि तोर रंग चढ़ा ।।१
(बिसरा लोग कुटुँब घर बारा) । बिसरा अरथ दरब भोंडारा ।।२
मुख तँबोल सिर तेल बिसारा । बिसरा परिमल फूल कै हारा ।।३
अन न रूच निसि नींद बिसारी । बिसरी सेज सकल फुलवारी ।।४
बुध बिसरी रँग भयउँ सवाई । ताकह न रंग गहे धँवराई ।५
नेह तोरें रंग पुरोवा, हिरदैं लागेउँ आइ ।६
कूतब सरग चढ़ धरती, जे सर जाई तो जाइ ।।७

मूलपाठ—(२) बिसरा लोग कुटुँब घर बार बिसारा ।

२२३

(रीलैण्ड्स १७४अ)

गुफ्तने चादा हिकायते इश्के खुद बर लोरक रा

(चाँदका लोरकसे अपने प्रेमकी बात कहना)

जिहि दिन लोरक रन जिति आयहु । पैठि नगर धाइ दिखरायहु ।।१
तिह दिन हुत मैं अन न करायी । परी न नींद सेज न सुहाई ।।२
पेट पैसि जिउ लीन्हा काढ़ी । बिनु जीउ नारि दीख घर ठाढ़ी ।।३
मैं तुम्ह लाग जेउनार कराई । झेतस करी पिताइहँ हँकराई ।।४
मकु तुम्ह एक टक देखें पायेउँ । देख रूप मुख नैन सराहेउँ ।।५
तिहि दिन हुत हौं भूलेउँ, मोर जीउ तुहकौं चाहु ।६
चिर जिया पिरम तुम्हारा, लोर दुनि करियहि काहु ।।७

२२४

(रीलैण्ड्स १७४ ब)

कैफियत दर रादह व लगो शब गुजरानीदन

(हँसी मजाकमें रात बिताना)

अमरित बचन चाँद अनुसारा । हँसा लोर भा बोल अपारा ॥१
हँसि कै लोर चीर कर गहा । मोतिंह हार टूटि कै रहा ॥२
चाँद कहा खिन एक सँभारहु । हार टूटि गा मोतिंह सँभारहु ॥३
बीनि मोति सब चीर उचावहु । तौ चढ़ि सेज पिरम रस रावहु ॥४
मोंति उठावत रैन बिहानी । उठा सूर पै साध न मानी ॥५
चीर डरान भोर भा, मन कें चेंत गँवाउ ।६
सेज हेठ लै चाँदैं, सूरज दिनस लुकाउ ॥७

टिप्पणी—(७) हेठ—नीचे ।

(सम्भव है यहाँ कुछ और कडवक रहे हों)

२२५

(रीलैण्ड्स १७५)

मुआमअत करदने लोरक बा चाँदा

(लोरक-चाँदाका प्रणय)

खिन एक हाथ पाय रँग आये । फुन रे भिरे दुहुँ हीउर लाये ॥१
यहि सुहाग दइ दूसर धरे । खडे ऊठि जनु साँड़े भिरे ॥२
अधर अधर कर कर गहे । नाभी नाँह सो ताने रहे ॥३
जाँघ जोर तम कै लै लाये । जनु गज मैमत बरकहुँ आये ॥४
काम भुगुति रस बहि निसि आहे । फुनरई बहुत अनरव ते भये ॥५
चाँद घरहिं सूरज आवा, रैन छमासी होइ ।६
पाँचभूत आतमा सिराने, अस निरसो सब कोइ ॥७

२२६

(रीलैण्ड्स १७६)

वक्ते सुबह खाना कर्दने चाँदा लोरक रा जेर तख्त

(प्रात काल चाँदका लोरकको शैय्याके नीचे छिपाना)

केलि करत सब रैन निहानी । देख सूर धनि उठी डरानी ॥१
जौंलहि चेरी उठै न पावा । तौंलहि चाँदै सुरुज लुकावा ॥२
मन सँख आपुन नाहीं लोरा । मत कुछ होइ भुल डर तोरा ॥३
मत कोई चेरी देखै पावा । जाइ महर पहँ बात जनावा ॥४
जो कोइ तिंहको देखै आई । हौं फुन मरों तोहु बिस खाई ॥५

पिरम खेलैं जो कर साहस, सो तरि लागे पार ।६
माँझ समुंद होइ थाके, तीर लाउ करतार ॥७

२२७

(रीलैण्ड्स १७७)

आब आवर्दने कनीजगान व रूये चाँदा शुस्तन व आमदने सहेलियान

(दासियोंका पानी लाकर चाँदका मुँह धुलाना : सहेलियोंका आना)

भोर चेरि पानीं लै आयीं । मुख धोवा और सखीं बुलायीं ॥१
फेंफर मुख निसि चाँद न सोवा । चींर फाट कहवाँ लह गोवा ॥२
फिरी माँग केस उधियानी । फूल झरि मरि रही कुंभलानी ॥३
सखिहँ देखि दो आकँ अइसे । तोर चाँद फर आँगी कैसे ॥४
भये अनन्द लोयन रतनारी । देह दस तमोल पियारी ॥५

चोली चीर सँवारहु, सीस सिन्दूरहु माँग ।६
भँवर फूल पर बैठो, लाग दीख तिह आँग ॥७

२२८

(रीलैण्ड्स २७८)

जवाब दादन चाँदा मर सहेलियान अज बहाना

(चाँदका सहेलियोंसे बहाना करना)

चाँद सहेलिन सों अस कहा । एकउ चेरि न जागत रहा ॥१

रैन चौखण्डी चढ़िह बिरारी । लै ऊँदर घुस गा बिछारी ॥२
ऊपर परी तोह मैं जागा । नख थन लाग चीर फुनि भागा ॥३
तोह हुतें मोर नींद उड़ानी । इत फुनि जागत रैन बिहानी ॥४
हाथ पाँउ मैं सर न सँभारा । फिरी माँग सीस औ बारा ॥५
तिंह गुन नैन रात मोर, मुख फेंफर कुँभलान ।६
अइस रात मँह दूभर, मँदिर न कोऊ जान ॥७

टिप्पणी—(२) बिरारी—बिलारी, बिल्ली । ऊँदर—(स० उन्दुर)—चूहा । बिछारी—बिछौना ।
(३) थन—स्तन ।

२२९

(रीलैण्ड्स १७९)

रफ्तने बिरस्पत बर महरि व कैफियते गिरिया उफ्तादन बाज नमूदन

(बिरस्पतका महरिको चाँदके डर जानेकी सूचना देना)

जाइ बिरस्पत महरि जुहारी । कइ जुहारि फुनि बात उभारी ॥२
रैन डरानी चाँद दुलारी । बिसवैं ऊपर परी मँझारी ॥२
चीर फाट मुख गा कुँभलाई । चाँद चितहि मँह बहुत लजाई ॥३
चेरी सोई भा अँधियारा । जागत चाँद भयउ भिनसारा ॥४
अन न रूच औ भाउ न पानी । फूल घाम जस चाँद सुखानी ॥५
चला महरि कुछ देखउ, औ कुछ धरहु ऊतारि ।६
सोवत जैस झरँकी, अस भई चाँदा नारि ॥७

टिप्पणी—(२) बिसवैं—बिस्तर । मँझारी (स० मार्जारी)—बिल्ली ।
(४) भिनसारा—प्रात काल ।

२३०

(रीलैण्ड्स १८०)

आमदने मादरो पिदरे व दर साख्तन चाँदा खुद रा

(चाँदके माता पिताका आना · चाँदका सोनेका बहाना करना)

माता पिता लोग जन आवा । कुँवरि चाँदहि मुख दरसावा ॥१
एक अपुहि अस अगरग लायसु । औ तिह ऊपर सुरुज लुकायसु ॥२

चाँदा सुरुज घर धरा जुहाई । राहु गरह दोइ गहनै आई ॥३
लोर चौखण्डी दई सँभारा । कोह दिवस अँथवइ करतारा ॥४
अइस कुलखनाँ मूड बुटाउब । बाँध चोरैं बर रूख टँगाउब ॥५
नैन मींजु होइ ढूके, रकतहि रहा सुखान ।६
बिनु जिय लोरक सेज तर आहे, आपुन किया न जान ॥७

२३१

(रीलैण्ड्स १८१)

विदाअ कर्दने लोरक रा चाँदा

(चाँदका लोरकको विदा करना)

अँथवा सुरुज चाँद दिखराजा । अमरित छिड़क लोर जियावा ॥१
आपुन मींचु नैंन मैं देखी । मींचु आइ फिर गयी बिसेखी ॥२
खर जियाउ चाँदा रानी । अति अँासान भया तिह पानीं ॥३
इँह बर रैन जो दयी जियावइ । माँख मीचु नहिं नियरे (आवइ)॥४
काहे अस मन करहु मरारी । चाँद बायन पर बाँह पसारी ॥५
सुनु लोरक एक बिनती, अब तुम काह सँखाह ।६
हौं तुम्हरे जइस नियाही, तूँ मोर बियाहू नाह ॥७

मूल पाठ—(४) जावा ।

टिप्पणी—(५) मरारी—मलाल, म्लान ।

२३२

(रीलैण्ड्स १८२)

पुरुद आमदने लोरक अज बसे चाँदा व खबर याफ्तन दरबानान

(लोरक का चाँदके महलसे नीचे आना और द्वारपालोंका देख लेना)

बोला बीर बाट दिखरावहु । औं तुम चाँद पार लइ आवहु ॥१
उतरी चाँद मंदिर चल आई । भू पर सूरज गोहन लाई ॥२
छाडि मंदिर बेगि घर मारा । पँवर पँवरियहि जाग खँखा[रा*]॥३

चलत पाइ कर आरो पावा । कहा पँवरियहिं तसकर आवा ॥४
चाँद कहा मैं चेरि बुलाउब । फूलहिं कहँ फुलवारि पठाऊब ॥५
अखरैं पँवर बजर कैं, बीर समुँद गा भागि ।६
चाँद चढ़ी चौखण्डी, पँवर बजर होइ लागि ॥७

टिप्पणी—(४) आरो—आहट । तसकर—तस्कर, चोर ।

२३३

(रीलैण्ड्स १८३)

मुवाजिमें गिमुरदने लोरक, चाँदा बर क्स खुद रफ्तन

(चाँदका धौरहर पर जाकर लोरकका ग्रह देखना)

चाँदा धौराहर चढ़ि अस चाहा । सुरुज कौन मंदिर दिन आहा ॥१
जनम अस्थान जाइ पग धरा । पाँच आठ सतरह दिन फिरा ॥२
मीन रासि जो करकहिं जाइह । संग परोस नियर होइ आइह ॥३
तुलाँ रैन दिन दूसम आवहिं । पन्थ बराबर बैरी धावहिं ॥४
पाछे मरे गगन चढ़ आवइ । रैन चाँद कस ठौरी पावइ ॥५
यहि दिन होइ मिरावा, चाँद गुनि देखी रासि ।६
गांग लाँघि कै लोरक, जो हरदी लै जासि ॥७

२३४

(रीलैण्ड्स १८४)

पुरसीदने मैंनाँ मर लोरक रा केह शब कुजा बूद

(मैंनाका लोरकसे रातको गायब रहनेकी बात पूछना)

मैंना पूछहि कहाँ निसि कीन्ह । कौन नारि भोर कैं दीन्ह ॥१
रकत न देह हरद जनु लाई । औ मसि मुख पै दीन्हि चढ़ाई ॥२
पियर पात जस लोरक डोलसि । झुर झुर हँस निरंग भा बोलसि ॥३
हौं मनुसहिं औहट पहचानौं । बात कही नैन देख जानौं ॥४
· ढील काछ सत आप गँवाना । सत कहि हैं जस तुम घर आवा ॥५

हँसि लोर अस बोला, राधा रात गुझायउँ ।६
कौतुक रैन बिहानि, तिह देखत नैन न लायउँ ॥७

२३५

(रीलैण्ड्स १८५)

खबर याफ्तने मादरो पिदरे चाँदा अज आमदने कसी बीगाना दर कस्र

(परपुरुषके महलमें आनेकी बात चाँदके माता-पिताको ज्ञात होना)

महरी महर बातें अस जाहा । मंदिर पुरुख एक आवहि आहा ॥१
चेरी चेर नाउ औ बारी । तिह सुन पुर घर बात सँचारी ॥२
गोबरॉ बात घना फुनि भयी । औंर कुछ मैंनाँ पँह फुनि गयी ॥३
फूल घाम जन रही सुखाई । फुनि मैंना गइ कुँवलाई ॥४
घर घर महरी खीस कहहीं । सुन कै अगरग चितँहि न धरहीं ॥५
मालिन कहा लोर कहिं, रोवत मैंना जाइ ।६
आग लाग सुन बिस्तर, जरतें जाइ बुझाई ॥७

२३६

(रीलैण्ड्स १८६)

पुरसीदन खोलिन मर मैंनाँ रा अज तगैउरें हाले ऊ

(खोलिनका मैंनासे यकायक तबीयत खराब होनेका कारण पूछना)

खोलिन मैंनहि देखतँ अहा । कहसि तिह कुर धी कैं कछु कहा ॥१
बरन रात सॉवर तोर काहें । बरन सँवर रात होइ चाहें ॥२
मँह कहु सुनीं कछु तें बाबा । लोर बीर भयउ किंह राता ॥३
बारी उतर देस न मोही । कैं कुछ आइ कहा है तोही ॥४
जीभ काढ़ि ताकर हौं जारौं । घरहिं छुड़ाइ तिह देस निसारौं ॥५
उरध फाट हौं मरिहउँ, कहसि तिह बेदन काह ।६
सुहर रूप तोर, भौर बदरी ढाँकत आह ॥७

२३७

(रीलैण्ड्स १८७अ)

मुनाजिर शुदने खोलिन केह मन हीच नमीदानम

(खोलिनका अपनी अनभिज्ञता प्रकट करना)

ओही पोह मोर माटी हो[ऊ*] । मँह आगे जो कहि पुछ कोऊ ॥१
हौं दोखी जो कछु न जानौं । अनजाने कस काह बखानौं ॥२
दई ठाँउ भल वार न पाऊँ । जान सुनि जिह जो तोहि लुकाऊँ ॥३
सो कस आह रॉड भँडहाई । सेज छाँडि जो आनें जाई ॥४
घर के धिय कीन्हि पराई । अपने कीतस आन बुराई ॥५
ताहि लाग जिउ बाँधउँ, जीउ मोर तूँ आहि ।६
कहसि तिह कौन भडहाई, देस निसारउँ ताहि ॥७

२३८

(रीलैण्ड्स १८७ब)

नाज गुफ्तने मैनाँ मर खोलिन रा

(खोलिनसे मैनाका कथन)

माइ मोर तुम सास न होहू । बोलेउँ चितहि उठा जो कोहू ॥१
जाकर नित उठि पाउ बुहारौं । ताकर ओछ कहे का पारौं ॥२
कइ बियाह बारी हौं आनी । जौलहि न भोगहि गहउँ न पानी ॥३
भँवर बास कुँवरी कै राता । कँवल कली हम पूछि न बाता ॥४
अमरित कुण्ड जो आछत भरा । जो सरवर लै अनतै धरा ॥५
जाइ देखु माई खोलिन, लोरक हैं सत ढेल ।६
सारस बर रर मरौं, पिउ बिन रैन अकेल ॥७

टिप्पणी—(७) सारसकी जोडीका प्रेम प्रसिद्ध है। एककी मृत्यु हो जाने पर दूसरा भी उसके वियोगमें चिल्ला चिल्लाकर प्राण दे देता है।

२३९

(रीलैण्ड्स १८८अ)

जवाब दादन सोल्नि मर मैना रा

(मैनाको सोलिनका उत्तर)

रोम न जाइ होइ हरवाई । हिरदे बात जाइ गरुवाई ॥१
हिरदे बोल भार सह लीजा । हिरदे कहँ जीउ गरू न कीजा ॥२
हिरद होइ बुध केर उतानां । हिरद नसैनी कहा सयानां ॥३
हिरद सों भूँख न जाइ अदायी । पाउ न डोल जिंह चित गरुआयी ॥४
गरुवइ होइ घर अपनें रहउ । अम हिरदै कहँ चिन्त न करहु ॥५
आनेउँ जात गुन आगर, मैंना न कीजइ कोह ।६
गाल फार ढोइ जीभ उपारों, तू लोरक कर आह ॥७

२४०

(रीलैण्ड्स १८८ब : काशी)

तकरीर कर्दने सोल्नि मर मैना रा

(सोलिनका मैनाँसे कथन)

यारि बियाहि जो तैं हुत आनी । बीर बाँधि कै दीन्ह उतानी[१] ॥१
गुन तोर[२] धन नाव चढ़ाई । तिहँ न कन्त को कोउ पतियाई[३] ॥२
यह मेतैं कम होइ हियारी । लेजु काटि कै गुनें अनारी[४] ॥३
लावइ आग मेज दिन मोरी[५] । चाँद सुरुज रँवइ निसि चोरी[६] ॥४
जोह सुरुज चाँद पहँ आवा । सरग तराइन महँ दिखरावा ॥५
लाज भयीं तिहिं साँवर, जइस रात अँधियार ।६
नीलज चाँद सुरुज कारी[७], रात भरै उजियार[८] ॥७

पाठान्तर—काशी प्रति ।

शीर्षक—ज्वाब दादन मैना सोल्नि रा (मैनाका सोलिनको ज्वाब)
१—यारि बियाहि तैं जो राती । बीर बाँध औ नाव अहाती ॥ २—गुन जो तोर । ३—तिह रग नह को पतियाई । ४—[- -] काट बहत गुनें

अनारी। ५—मोरी। ६—चोरी। ७—लाज होएउँ बस साँवर। ८—वारा। ९—भवइ रारी उजियार॥

२४१

(रीलैण्ड्स १८९)

जवाब दादन मैना मर खोलिन रा

(खोलिनको मैनाका उत्तर)

काह कहउँ हौ खोलिन माई। हो सुइ आहों दही परायी॥१
धिय कै जात आह यह केरीं। हौ फुनि भइ तिहँ कै चेरी॥२
जान बूझ के महँ कस गोवहु। होइ तुम्हार तसकर रोवहु॥३
जाकर कोइ जरै सो जाने। निु जरते तस काह बखाने॥४
तुम्ह जानहु मोसेउँ कर चोरी। लोरक बीर रँवइ किह गोरी॥५
हौ जो कहत तुम्ह दिन दिन, लोर रैन कित जाइ।६
घर न दाख रस पूरे, चर चर आउ पराइ॥७

२४२

(रीलैण्ड्स १९०)

दर खातिर गुजरानीदने लोरक कि मैना सुनीदने अस्त

(लोरकका समझ जाना कि मैनाको वात ज्ञात हो गयी)

कइ गियान मन लोरक गुनाँ। अरासि मैनाँ कुछ है सुनाँ॥१
तोर बिरोध महँ सेतैं कीन्हा। तार अन्तर पर अन्तर दीन्हा॥२
बरके लोर पास धनि बैठा। रकत झरत मुख रोवत दीठा॥३
आँसु पोंछि पानी धोंवा। मोहि देखि तुम्ह काहे रोवा॥४
नित रहै न थारी मैनाँ। दरस न करै बकत महिं मैनाँ॥५
कै मन सोक सकायहु, कै कुछ भयउ नियाउ।६
रस मँह निरस सँचारे, चितहि चढ़ा कम भाउ॥७

टिप्पणी—(१) अपसि—अवश्य।
(२) सेतैं—नाहक।

२४३

(रीलैण्ड्स १९१)

गुफ्तन दादन मैंना लोरक रा वाजुल्स

(मैंनाका लोरकको क्रुद्ध होकर उत्तर देना)

तिहँ कै भाव चढावहु लोरा। जिह सेतैं मन लागेउ तोरा ॥१
तजि मारग जो कुमारग जाई। सो कस मुख दरसावइ आई ॥२
सुद्ध सान्त जनु कछु न जानें। माँगत पान तो पानीं आनें ॥३
जे छँद नौखँड गावँहु आयी। ते लोरक तुम्ह कहवाँ पायी ॥४
सेज छाड तूँ सरगहिं जायी। चाँदहि रँवइ कर आन [बतायी*] ॥५
बहान नोल महँ ढँकस, जानसु कछु न जान ।६
नार कीन्ह ते बाउर, तिह पंथ भूल सयान ॥७

२४४

(रीलैण्ड्स १९२)

ज्वाब, तरसानीदने लोरक मर मैंना रा

(उत्तर, लोरकका मैंनाको डराना)

अस धनि पुरुख जो वेग मराना। आन सँभोये अम उत्तर आना ॥१
ठाकुर कै धिय परजहि लावा। अइम कहे लै मूँड बुटावा ॥२
सरग चाँद धरि लोरक आहा। इन्ह बातैं दुनि कहिये काहा ॥३
सरग गये धनि बहुरि न आवइ। जियते मरगहि जान न पावइ ॥४
औ जो तुम हम सरग पठाउब। सरग गयें को बहुरि न आउब ॥५
जीभ सँकोरहु मनों, होइ बहुल तजियाउ ।६
जिये महँ सरग चलावहु, तुम सों कहाँ मिराउ ॥७

२४५

(रीलैण्ड्स १९३)

व आमदने मादर लारक व आश्ती कदन मियाने लोरक व मैना

(लोरककी माँका आकर लोरक-मैनामें सुलह कराना)

सुन खरभर खोलिन तस धाई । जस भगिरथ यह लागिन आयी ॥१
लोरह अजकर थकति न आवा । अनहूँ इहँ भव कही कहावा ॥२
केस गही गर माथ ओनायसि । कूच छाल दुहुँ गालहि आयसि ॥३
जाकर चेरि पियाइहिं पानी । ताकर धिय चेरी कहँ आनी ॥४
औ तिह ऊपर बरस अँगारा । दहि दहि कोयला भई सो नारा ॥५

आग लाइ घर अपनें, लोर दहाँ दिगि धावहु ।६
बेग पैस जर मैनों, अपरित छिडक बुझावहु ॥७

२४६

(रीलैण्ड्स १९४)

आश्ती कदने लारक बा मैना अज गुफ्तार मादर

(माँके कहने पर लोरक मैनासे सुलह करना)

लोरक हरकि खोलिन घर आई । चीर नारि कँठ लाई मनाई ॥१
भुजा झेलि धनि सेज बैसारे । पान बीरें मुख दीनि सँवारे ॥२
रँग बिनु पान खियावसि मोही । सो रँग इहँ न देखेउँ तोही ॥३
रंग बिनु बातहिं भाउ बनावा । तुम लोरक रँग अनतें आवा ॥४
धर तर आछौं मैना जहाँ । चित मन धावइ चाँदा जहाँ ॥५

सेज न भाउ रूचि न कामिनि, जो न होइ मन हाथ ।६
सो तै नैन न देखें, तिल न रहै सग साथ ॥७

२४७

(रीलैण्ड्स १९५)

गुफ्तने लोरक जमालियत व खूबीये मैंना

(लोरक का मैंनाकी प्रशंसा करना)

मैंना तिह जस तिरी न आहै । तोहि छाड़ि चित एक न चाहे ॥१
मैं तोरैं रस विरस बिसारा । देख न भावँइ आपु सहारा ॥२
मैं सों नारि चाँद जस पाई । चाँद जोत सव गयी हेराई ॥३
सो सुन अपजस कै लाई । लागु न मैंना कहैं बुराई ॥४
नैन देखि तूँ बात उभारी । हाँकी सुनि कै अखरत पारी ॥५
तू चाह को आगर मैंना, मोरैं चित न समाइ ।६
अमरित कुण्ड जिह बरसैं, सो हरनित नहि खाइ ॥७

२४८

(रीलैण्ड्स १९६अ)

गुफ्तन मैंना मर लोरक रा

(मैंनाका लोरकसे कथन)

लोर चाँद मोर उकेरँहु काहा । जो करिये सो आछत आहा ॥१
सोरह करों चोरी दिखरावइ । चाँदा मोसों सरभरि पावइ ॥२
लोरक तोरैं भारँग वारी । भूलि न पैसु पराई वारी ॥३
वास केतकी भँवर चोरावइ । सो हर काटैं जीउ गँवावइ ॥४
हाँ जियँ तोरैं लोर डराऊँ । नींद न जानउँ भुगति न खाऊँ ॥५
तोरैं भल मन संका, बर चेलैं कित जाइ ।६
घर न दास रस पूरे, चर चर आउ पराइ ॥७

२४९

(रालैण्ड्स १९६ब)

रुहू। दर खुशदिली लोरक व मैना गोयद

(यहीं लोरक और मैनाकी प्रसन्नताका वर्णन)

बैठि सान्त हँसि लोरक कहा । कासो कोप मैना चित अहा ॥१
घर उभर कै मँदिर सँवारा । कीत रसोई अगिन परजारा ॥२
सेज बिछाइ लोर अन्हवावा । औ भल भोजन काढि जिंवावा ॥३
रंग बिरंग सो लीन्हि सुपारी । पान बीरे मुख दीन्हि सँवारी ॥४
हँसत लोर बाहर नीसरा । चाँद बात मैना बीसरा ॥५
सोइ बिरख सोइ तरुवर, सोई लोर सो बीर ।६
सोइ मिरघ सो थरहर, सोइ अहेरिया सो अहेर ॥७

२५०

(रीलैण्ड्स १९७)

कैफियते चाँदा तवाफ दर बुतखान गुफ्तन महत

(मन्दिरमें चाँदसे ब्राह्मणका कहना)

असाढ़ असाढ़ी गयी तिह अही । दूज गिन देउ जातरा कही ॥१
सोमवार महत्त गिन कहा । सो दिन आगें आवत अहा ॥२
होम जाप अगियार करावहु । परस देउ कर जोरे मनावहु ॥३
जो धरि माँथ देउ पाँ आवइ । सो जस चाँद सुरुज बर पावइ ॥४
सोमनाथ कहँ पूजा कीजइ । अखत फूल मार लै दीजइ ॥५
चलैं पिरिथमीं नौखण्ड, देउ जात सुन आइ ।६
चाँद सुरुज मन रहँसे, देउ मनायस [जाइ*] ॥७

टिप्पणी—(१) जातरा—यात्रा, देवता की पूजा (मनौती) के निमित्त जाना ।
(३) होम—हवन । जाप—जप । अगियार—धूप अथवा घी शक्कर
अग्नि में डाल देवता के सम्मुख आरतीकी भाँति फिराना ।

बहिर के चाँद चउँ दिसि दीठी । जनु तरइं चहुँ पास बईठी ॥२
नहाइ धोइ कै चीर पहिरावा । अगर चँदन लाइ सीस गुँधावा ॥३
सेंदुर छिड़क भई रतनारी । मुँह तँबोल सब जोबन बारी ॥४
इँदर सनद पँच तूर बजायी । गरह नखत चलि को कित आयी ॥५

सोन सिंघासन बइठी, बहुकन कियउ सवार ।६
चाँद तरायीं सेतैं, गवनी देउ दुआर ॥७

टिप्पणी—(५) इँदर सबद—इन्द्रके अखाडेमें अप्सराओंके नृत्यके समय बजनेवाले वीणा, वेणु, मृदंग, कॉस्य ताल आदि वाद्य। पँचतूर—पालि साहित्य मे पचगिक तुरियका उल्लेख पाया जाता है। मध्यकालीन ताम्रशासनोम पचशब्द और पचमहाशब्द पाये जाते है जिससे ऐसा जान पडता है कि उसका उपयोग कुछ विशिष्ट सामन्त ही कर सकते है। डाक्टर अल्तेकरके मतानुसार शृग, शख, भेरी, जयघण्ट, तमट, ये पाँच वाद्य पचमहाशब्द कहे जाते थे (राष्ट्रकूट, पृ० २६३)। सम्भवत पचशब्दका पचतूर भी कहते थे। किन्तु वासुदेवशरण अग्रवालका अनुमान है कि पचतूर नौबतके लिए प्राचीन शब्द है।

(६) सिंघासन—विशेष प्रकारकी पालकी। 'सुखासन' पाठ भी सम्भव है। 'सुखासन' पाठ माताप्रसाद गुप्तने पदमावत (६१२।३) में स्वीकार किया है। तदनुसार हमने भी यही पाठ ग्रहण किया था और कडवक ७० और ७१ मे यही पाठ दिया भी है। पर वासुदेवशरण अग्रवालने इस बातकी ओर ध्यान आकृष्ट किया कि आइने अकबरी (ब्लाखमैन कृत अनुवाद, पृ० २६४) में अबुल फज्लने पालकी, सिघासन, चौडोल और डोली चार प्रकारके यानाका उल्लेख किया है जिन्हे कहार (पालकीबरदार) कन्धेपर उठाकर चलते थे। अत हमने यहाँ और आगे सर्वत्र 'सिघासन' पाठ स्वीकार किया है। पाठक पीछे इस पाठको सुधार ले। पालकीके अर्थमे सुखासनका कहीं उल्लेख नहा मिलता। बहुकन—बहुतोंको।

(७) सेतैं—सहित।

२५३

(रीलैण्ड्स २००)

रफ्तन चाँदा दरूने बुतख़ाना व आशिक़ शुदने देवान दीदने चाँदा

(चाँदका मन्दिरमें प्रवेश : उसपर देवताओंका आसक्त होना)

हाथ सिंधोरा सेंदुर भरा । भीतर मँदिर चाँद पौ धरा ॥१
सखी साथ एक गोहन भयी । नावत सीस देउ पह गयी ॥२
देउ दिस्टि चाँदा मुख लागे । बुध बिसरी औ सिध फुनि भागे ॥३
देखत देउ गयउ मुरझाई । चाँद तराइन सों चल आई ॥४
के बिधि मोहि मोह जो दीन्हा । के हौं सरग मँदिर महँ कीन्हा ॥५
मँदिर तराइन भरि गा, चाँदे कियउ अजोर ।६
होम जाप सब बिसरा, कवन देवस यह मोर ॥७

टिप्पणी—(१) सिंधोरा—सिन्दूर रखनेका पात्र । विवाहित हिन्दू स्त्रियाँ देवदर्शन, पूजा आदि अवसरों पर इसे अपने साथ रखती रही हैं ।
(२) सात—'साठ' पाठ भी सम्भव है ।

२५४

(रीलैण्ड्स २०१)

परस्तीदने चाँदा बुत रा व ख़्वास्तने मुहब्बत दा लोरक

(चाँदका देवताकी पूजा करना और लोरकका प्रेम माँगना)

सेंदुर छिरक अगर चढ़ावा । नमसकार कै देउ मनावा ॥१
सोवन अखत फूल कै मारा । पायँइ लगि बिनवइ अस नारा ॥२
देव पूजि माँगेउँ तुम्ह पासा । सेउ करौं मन पूँजइ आसा ॥३
चाँद सुरुज बर जिहँ पाऊँ । देउ करस महँ घिरत भराऊँ ॥४
बिनवइ चाँदा पाँयन परी । देउ सुरुज बिनु जीउ न घरी ॥५
एक चहत कै महँ देहू, बिरही बँध पुजाइ ।६
देउ पूजि कै चाँदा, बिनती ठाढ़ि कराइ ॥७

टिप्पणी—(४) देउ करस महँ घिरत भराऊँ—मनोरथ पूर्ण होनेके निमित्त दूध, घी अथवा तीर्थ जलसे देव कलश भरनकी मनौती (मान्यता) प्राय स्त्रियाँ मानती हैं।

२५५

(रीलैण्ड्स २०२)

आमदने मैना व मुनिदयान खुद दर बुतखाना व परस्तीदने देव रा

(मैनाका सहेलियोंके साथ मंदिर आना और पूजा करना)

चढ़ी पालकी मैनाँ रानी। सखी साथ सो आइ तुलानी ॥१
सोक सँताप बिरह कै जारी। किसन बरन मुख सीसा नारी ॥२
मुर खन (अरु) सीस अति रूखा। मुखा कँवल कंदरप झर सूखा ॥३
बहुल उदेग उचाट संतायी। पूजा देउ चढ़ावसु आयी ॥४
अखत फूल दीन्हि कर काढी। देउ परावर उतर भइ ठाढी ॥५
अहो देउ तिह कहा यह, जो वर वरकहं राउ।६
अपने सेज छाड़ि निस अनतैं, फिर फिर धाउ ॥७

मूलपाठ—(३) अमर।

टिप्पणी—(३) मुर—मूँड, सर।

२५६

(रीलैण्ड्स २०३)

पुरसीदने चाँदा मर मैना रा अज शिकस्तगी हाले ऊ

(चाँदका मैनासे उदासीका कारण पूछना)

हँस कै चाँदे मैनाँ पूछी। कै सुरँहुत आयहु छूछी ॥१
अति दो मन औ साँवर वानूँ। सीस न वेदन अधर न पानूँ ॥२
कै साई निसि सेज न आवइ। तिहिं संताप दुख रोइ बहावइ ॥३
कै तिह नारि आह बुध थोरी। तिह अवगुन पिउ लावइ खोरी ॥४
कै तुम्ह करहु न अरप सिंगारू। के सुहाग हे हुँत पीरू ॥५

तिंहि जस तिरी न देखेउ, कौन खोर सो आइ ।६
के सगाइ काहू सौं, अपजस सोइ (चढ़ाइ) ॥७

मूलपाठ—(७) चढाउ ।

टिप्पणी—(१) सुरेहुत—देवताके निकट । छूछी—खाली ।
(२) बेदन—वेदी, बिन्दी, टीका ।
(४) खोर—गाँवका कच्चा रास्ता, गली ।

२५७

(रीलैण्ड्स २०४ : पंजाब [प])

जवाब दादने मैना मर चाँदा रा

(चाँदको मैनाका उत्तर)

सुनु न चाँद एक उत्तर हमारा[१] । नाँह कीन्ह तिहि परा खभारा[२] ॥१
नाँह लीन्ह महँ परा खभारू[३] । काकहि करिहौं[४] अरथ सिंगारू ॥२
हँसि हँसि बात कही बिगराई[५] । तिल एक तैं न देख लजाई[६] ॥३
तिह खखोट तिह दोस नँ आवहि । सती तैं परपुरुख रावँहि[७] ॥४
अब छिनार और किंह कहा । सो कस चाँद नहि हाकैं रहा[८] ॥५
गा सुहाग सुख निंदरा, चाँद नाँह जी लीन्ह ।६
सोक संताप बिरह दुख, सेज पाँर महँ दीन्ह ॥७

पाठान्तर—पंजाब प्रति—

शीर्षक—जवाब दादने [मैना] चाँदा रा कैफियत इश्क लोरक बा चाँदा बाज नमूदन (मैनाका चाँदको उत्तर देना और लोरक चाँदके प्रेमको प्रकट करना)।

१—सुनसि चाँदा उतर हमारा । २—गहिर अमौंसा निसि गै उजियारा । ३—नाँह लीन्ह महँ खभारु । ४—हतउप । ५—बहिराई । ६—सग मैं देख न तैं लजाई । ७—सती रूप पर पुरुख रवाँहि । ८—सो कस चाँदा दाबि न राहा ।

२५८

(रीलैण्ड्स २०५)

जवाब दादने चाँदा मर मैंना रा

(मैंनाको चाँदका उत्तर)

देखहु बाँगर करैं ढिठाई । अइसौ बूझत बात सगाई ॥१
मैं तिहँकों का अजकर कहा । अइस कहत को ऊतर सहा ॥२
जस अपन तस औरहिं जानै । जस छिनार तस मो क बखानै॥३
पुरुख छिनार मर को लेयी । बात कहत अस ऊतर देयी ॥४
तैं का देख हौं पियावारी । चित संखाय मॅहि दीन्हे गारी ॥५
तूँ बिवार कुछ छुटन, देस घर लै लै जासि ।६
घर घर खाल बिलोयसि, खोर खोर चिल्लासि ॥७

२५९

(रीलैण्ड्स २०६ ; बम्बई २०)

जवाब दादने मैंना मर चाँदा रा

(चाँदको मैंनाका जवाब)

आन होइ डर कहँ मर जाई । चाँद [न*]अछयो[1] मनहि लजाई॥१
हाथहिं मोर बियाहा लीजइ । औ महँ सें तैं ऊतर[2] कीजइ ॥२
यह सो कहँ नाँवँ मसवासी[3] । जो परपुरुख न छाड़ै पासी ॥३
आप करावइ मोहि डर लावइ । औ बिसेखैं पावाँ धावइ[4] ॥४
यह अपमान कहँ आछइ गोवा । झूठैं पास बैस फिर रोवा ॥५
बात बरैं[5] हॅंस चाँदा, चहूँ भुवन उजियार ।६
देउ लोग सब जानैं, गिरह देवाई कार[6] ॥७

पाठान्तर—बम्बई प्रति—
शीर्षक—मुकाशिफा गुफ्तने मैना दर चाँदा रा व पहरा गुफ्तने इश्क बा लोरक रा (मैंनाका चाँदके प्रति अपने हृदगत् भाव प्रकट करना और लोरकके साथ प्रेम करनेकी भर्त्सना करना)।

इस प्रतिमें पंक्ति ३, ४, का क्रम ४, ३ है।

१—चाँद न अछर। २—सरभर। ३—यह पुनि न्हे गाँवों मसवासी। ४—और बिसेरैं राउर धावइ। ५—कै। ६—चढ़ै। ७—देस लोग जग जानस, पितहि दिवावसि कार।

२६०

(रीलैण्डस् २०७ : बम्बई २१)

गुफ्तने चाँदा मर मैंना रा व दुश्नाम दादन

(चाँदका मैंनाको सुना कर गाली देना)

बात बढइहौं काहे नाहीं। पंडित मुनिवर सेउ कराहीं ॥१
चार बूढ़ सब पायन[1] लागँहिं। पाप केत परिसा कर भागँहिं[2] ॥२
तूँ अभरैल[3] बोलसि भँडहाई। औ मँह सें तें करसि बड़ाई ॥३
सात छिनार खाल तूँ कढ़ी। काह करौं जो लीहैं[4] मढ़ी ॥४
देवर जेठ भाइ सब लेसी[5]। ईत[6] मीत कुरँथा परदेसी ॥५
तेलि भूँज औ कोरी[7], धोबी नाउ चेरं[8] ।६
राँड बाँध सब गाँजसि, काढ़[9] खोर बहेर ॥६

पाठान्तर—बम्बई प्रति—

शीर्षक—इल्म व जमाल खुद नमूदने चाँदा व पहरा गुफ्तन मर मैंना रा (चाँदका अपने गुण और सौन्दर्यका प्रकाश करना और मैंनाको गाली देना)।

१—नइ पाँयहि। २—बाँमन पाप देखि कर भागँहि। ३—अभरी। ४—लेती। ५—देवर जेठ और सग लेसी। ६—ईय। ७—कोइरी। ८—धोबी नाऊ बारी चेर। ९—राँड पास सब गाँजस काढ़े।

टिप्पणी—(४) कढ़ी, मढ़ी—'करही, मरही' पाठ भी सम्भव है पर कुछ सगत अर्थ नहीं बैठता।

२६१

(रीलैण्ड्स २०८ अ)

गुफ्तन मैना चाँदा रा अँचे हिकायत बूद

(मैनाका चाँदकी वास्तविकता प्रकट करना)

तूँ जोगिन यह भेस भरावसि । गुनितगार लेखैं बोरावसि ॥१
अस तिरिया फुन सती(कहावइ)। घरॉ घरॉ जग फिर फिरि आवई॥२
न चलन आछै एकौ घरी । परत दसाँवन ऊपर परी ॥३
तूमहँ तरहुँत चाँदा आयहु । कारकीत मुख सरग लुकायहु ॥४
लेके मोर भतार छिपाई । देखेउँ गयउँ दुआर दिवाई ॥५

तिंह दिन कर तूँ बहुर कही, पाछैं हेरत आइ ।६
देस मँदिर जग जानी रहँस, नहिं तिह लजाइ ॥७

मूलपाठ—(२) कहावा ।

टिप्पणी—(३) दसाँवन—बिछौना, बिस्तरा ।

२६२

(रीलैण्ड्स २०८ब : बम्बई २३)

जवाब दादने चाँदा मर मैना रा

(चाँदका मैनाको उत्तर)

हियँ बितार हौं तिह पिय जोगू । ऐसो कहा किह संभो लोगू ॥१
जिंह रुपवन्ताहि यह धनि मोहे । तिह कै नारि न बाँधा सोहै ॥२
सुनतैं देह मोरॅ ॲगराई । देखत मरौ आह बिगराई ॥३
गाय चरावइ करै दुहावा । तिंह सेतैं यहँ अगरग लावा ॥४
जिंह धौराहर मोर बसेरा । सीस टूटि जे ऊपरँ हेरा ॥५

राइ कुँवर नर नरवई, मन मोहैं एक सिंगार ।६
तोर भतार चेर अरकाऊँ, ऊचहि पौर दुआर ॥७

पाठान्तर—बम्बई प्रति—

शीर्षक—बुजुर्गी व बलन्दी खुद नमूदने चाँदा व इहानतो हिमाकते लोरक

बाज नमूदन (चाँदका अपना बड़प्पन जताना और लोरककी निन्दा करना)।

१—संभोइ। २—पाउ। ३—मोर देइ। ४—आउ। ५—पिछला पद पहले और पहला पद पीछे है। ६—ऊपर जे। ७—मोहहि।

२६३

(रीलैण्डस २०९अ)

जवाब दादने मैंना मर चाँदा रा

(चाँदका मैंनाका उत्तर)

मोर पुरुख खाँड जग जानै। गन गन्धरप सब रूप बखानै ॥१
पंडित पढ़ा खरा सुहदेऊ। चार वेद जित जाय न कोऊ ॥२
भीम बली भोज कै जोरा। राघो बंसक कुंकुं लोरा ॥३
खिनै पंथ जे लैत उबारी। अस बनोल सन साथर डारी ॥४
मोर पीउ सरग कै अछरहिं रावई। तिहि जइसै पहँ पाउँ धोवावइ ॥५
तुरी चढ़े रन बाग न मोरे, तू कस भंजसि ताहि।६
भाइ भतार तोर (डरपकना), जानों सेवक आह ॥७

मूलपाठ—(७) डकरपना।

टिप्पणी—(२) सहदेऊ—पाँचो पाण्डवोंमें सहदेव अपने पाण्डित्यके लिए विख्यात थे।

(३) भीम—इनकी ख्याति अपने बल के लिए है।

राघो—राघव, रघुवंशी। किन्तु अहीर होनेके कारण लोरकको रघुवंशी नहीं कहा जा सकता। सम्भवतः मूलपाठ यादी (यादव, यदुवंशी) होगा।

(७) डरपकना—डरपोक, कायर।

२६४

(रीलैण्ड्स २०९ब)

ज्वाब दादने चाँदा मर मैंना रा

(मैंनाको चाँदका उत्तर)

जो तैं लोर लीन्ह महिं लावसि। फिरि कै मैंना देखै न पावसि ॥१
आइ बैसि अब करिहं मोरे। सपनहु सेज न आवइ तोरे ॥२

ढाकी मूँदि हुती अँधियारी । अब यह बात करउँ उजियारी ॥३
काह करै तू मारसि मोरा । दई दीन्हि मैं पावउँ लोरा ॥४
अब गरुवइ होइ आछहु मैंनाँ । जीभ सँकोर राखु मुख बैनाँ ॥५

जाह जोग हुत राउँ, तासो भयउ मेराउ ।६
मोतिह हार मँह घुँघची, मैंना सोइ न पाउ ॥७

२६५

(रीलैण्ड्स २१०ब ; बम्बई ३४)

जवाब दादने मैंना मर चाँदा रा

(मैंनाका चाँदको उत्तर)

पुरुख संग सों सरभर[1] पावइ । मार बिधाँस खाइ घर आवइ ॥१
मँछ नीरा[2] चारा कहँ धावइ । लेकै भगत भँडारन[3] आवइ ॥२
सोधा[4] से नर सेवा जायी । कहाँ बटाउ होइ[5] गयउ अदाई ॥३
तोहि कैस करिहौं पछितावा । सँवर नेर अँबराँवहिं आवा[6] ॥४
देवस चार तुम्ह देंह भुखाइह । साईं मोर कर[7]का घट जाइह ॥५

भँवर जो पतरैं वैसे, सील मानथ जो भुलाई[8] ।६
खिन एक [लै*] बास रस, उदरै कँवल सर जाइ[9] ॥७

पाठान्तर—बम्बई प्रति—

शीर्षक—मर्दानगी व दिलावरीए लोरक गुफ्तने मैंना व जहालत नमूदन चाँदा रा (मैंनाका लोरककी वीरताकी बड़ाई करना और चाँदको नीचा दिखाना)।

१—सरबर । २—नीर । ३—भँडारहि । ४—सोवइ । ५—कहा बारि हर । ६—केइ कह बहुल होइ पछतावा । सँवर कोरल अँबराईंह आवा ॥ ७—का । ८—भँवर कह पतरैं वैसिये, फुल मानत भुलाइ । ९—खिन एक लै बास रस, भँवर कँवल सर जाइ ॥

२६६

(रीलैण्ड्स २१०ब)

दस्तदराजी कर्दने चाँदा बा मैना

(चाँदका मैनासे हाथापायी करना)

अरग ठाढ हुत मैनाँ नारी । दौरि चाँद बरु बाँह पसारी ।।१
अमर भाग कै अभरन तानी । हार टूटि गा मोति छरियानी ।।२
एक बेर निकला दोइ टूटी । माँग सलोनी मानिक फूटी ।।३
टूटि हार धाँधस भये । चोली चीर फाटि कै गये ।।४
रखरी खूँट दोउ धर परीं । मानिक हीर पदारथ जरीं ।।५
अभरन टूटि निथर गा, मैंनाँ गइ कुँभलाइ ।६
चाँद मेल देउ घर, मिलीं तराइन जाइ ।।७

टिप्पणी—(१) अरग—अलग ।
(२) छरियानी—छितरा गया, बिखर गया ।
(५) रखरी—हाथका कड़ा । खूँट—कानका आभूषण ।
(६) थियर—बिखर ।

२६७

(रीलैण्ड्स २११)

मुहकम गिरफ्तने चाँदा मर मैना रा व मैना नीज

(मैनाका चाँदको और चाँदका मैना को पकड़ना)

जात चाँद मैना फिरिहेरी । जानु भँवरीं मारस घेरी ।।१
तानसि चीर चाँद भइ नाँगी । परा हाथ गइ फाट हटाँगी ।।२
दस नख लाग दुहूँ थनहारा । चाँद रात भइ रकतहिं धारा।।३
केस छूटि दुहुँ दिसि छिरयाये । जनु नाँगन अभवाँ लद आये ।।४
सोरह कराँ चाँद कै गयी । कराँ उतार घरी एक भयी ।।५
खाल रूप कै बाँगर कढी, मैंनाँ कहि सिरान ।६
बाँध चाँद गर कापर, चेतम चीर परान ।।७

टिप्पणी—(१) फिरिहिरी—चक्कर काटा। सँवरी—सफरी, मछली।
(३) थनहारा—स्तन।
(७) केतस—कितने ही। परान—पलान, पलायन किया, भाग खडे हुए।

२६८

(रीलैण्ड्स २१२)

दर खून लाल शुदन चाँदा व मैना व हजीमत नमी शुदन

(रक्तरंजित होजाने पर भी चाँद मैनाका पराजित न होना)

मिलन काम दोऊ बर जरे। जनु गीर मैमत ऊभरे ॥१
दोऊ नारि ऊभरै सथूला। नख अंग जनु टेसू फूला ॥२
उभै करहिं हाथापाहीं। थन उघार तन ढाँकहि नाहीं ॥३
मरन सींह सों तरुनिहि रीसा। चीर न सँभारहिं मूगर केसा ॥४
मुँह न बोल उत्तर न देहैं। सीस नॉग जनु भू दइ लीहैं ॥५
आइ चहुरि भू लागी, दुहु महँ हार न कोइ ।६
लोखँचार बिसरिगा, मँदिर बितारँह होइ ॥७

टिप्पणी—(३) थन—स्तन। उघार—नंगा, वस्त्रहीन।
(७) लोखँचार—लोक आचार। बितारँह—वितण्डा, झगडा, मारपीट।

२६९

(रीलैण्ड्स २१३)

गुरीख्तन बुत अज बुतखान' अज जंग अदियान

(मन्दिरके भीतर युद्ध देख देवताकी परेशानी)

मँदिर अन्दर अदनि मिल गयउ। देउहि जीकर साँसत भयऊ ॥१
देउघर रकत भयउ सन लोही। हियें लागि डर भरउँहि न मोही ॥२
देउ कहैं बिध मैं न बुलायीं। इँदरसभा कै अछरहिं आयीं ॥३
अब जो दुहुँ मँह एको मरी। इँदर राय महँ जिउ कहँ धरी ॥४
चला देउ हत्या महिं लागी। छाडि मँदिर निसरा डर भागी ॥५

परायँ देखि, सके न कोउ छुड़ाइ ।६
सँवर जात विसरिगा, बरँभा सीस डुलाइ ।।७

२७०

(रीलैण्ड्स २१४ : पंजाब [प])

आमदने लोरक नजदीके बुतखाना व मालूम कर्दने खल्क कैफियते जंग

(लोरकका मन्दिरके निकट आकर लोगोंसे युद्धकी जानकारी प्राप्त करना)

कँवर तरायीं सूरज आवा[1] । देस लोग मिल आगें धावा ।।१
जिन वैठे सो[2] बेगि बुलावहि । करम हमार इहँ चल आवहि ।।२
चाँदा मैंनाँ कै अस कहीं[3] । अवलहि अइस न काहू[4] सो भई।।३
सुनहि न बोल कों करहिं मनावा[5] । तम न कोउ जो आइ छुड़ावा[6] ।।४
जो रे दुहुँ मँह एक मर जाई[7] । हत्या लागी देस बुराई[8] ।।५
कँवर तरायीं सूरज, दुहूँ पैनि छुड़ावहु[9] ।६
लाग जान[10] कै हत्या, उजरत देस बसावहु ।।७

पाठान्तर—पंजाब प्रति—
शीर्षक नष्ट हो गया है।
१—आवा । २—हुत । ३—चाँदहि मैंनहि होइ के कही । ४—काहूँ । ५—सुनहि न बोल न फेहुँ मनावा । ६—तस न कोउ जो पइस छुड़ावा । ७—जउ दुँह मँह ऐको मर जाइह । ८—हत्या लागो देस बुराइह । ९—दुहूँ महँ पैस छुड़ा[वहु] । १०—जाइ ।

२७१

(रीलैण्ड्स २१५ : बम्बई २५)

आरती कर्दने लोरक मियाँने चाँदा व मैंना

(लोरकका चाँद-मैनामें सुलह कराना)

मरे सौंध के[1] दोऊ नारीं । भाँभर भोरीं जोबन बारीं ।।१
कै खँडवान[2] दोउ पियाईं । कोह पर जरतें छिड़क बुझाईं ।।२
बास खिरौरि[3] पान लियाईं । एक खँडछाप आन पहिराईं ।।३

यह गियान तुम्ह चाँद न बूझउँ । मैंनों सहँ को झूजहि झझउँ ॥४
ओछ बात सुन चाँद न कीजई । ऊतर देइ[जनि*]ऊतर लीजै ॥५
सिराजदीन सुनउ कच-छन्द, दाउद कही सँवार ।६
मरे सौध के दोउ नारी, लाइ धरी अँकवार ॥७

पाठान्तर—बम्बई प्रति—

शीर्षक—रिहा कर्दने अमीरे मसूद व जंग व सामान दादन मैंना व मना कर्दन चाँदा (अमीर मसूदको रिहा करना और मैनाको लड़ाईका सामान देना और चाँदाको बरजना)। इस शीर्षकका विषयसे कोई सम्बन्ध नहीं है।

१—मीर मसूद क। २—लड़वानी। ३—जरैं। ४—बपूरैं। ५—बूझी। ६—मैंना स्योको जूझ न जूझी। ७—धीजा। ८—अन। ९—न लीजा। १०—मीर मसूद क।

टिप्पणी—(१) सौध—ईर्षा।

(२) खिरौरैं—(सं०—खदिर वटक> खइर वडअ> खइर इरर>खिरौरा) —बरया। खण्डछाप—छपा हुआ रेशमी वस्त्र।

२७२

(रीलैण्ड्स २१६)

बाज गुजश्तने चाँदा बुतखाना सूये खानये खुद

(चाँदका मन्दिरसे घर लौटना)

चाँद सिघासन मँदिर चलावा । देव मनायीं लाँछन पावा ॥१
जो देउ बारिह लाँछन लागा । जानउँ चँदर मेघ तर भागा ॥२
सोरहकराँ करत उजियारा । पूनेउँ रात भई अँधियारा ॥३
चाँद कलंकी चितहिं सुखानी । एक खँड नाहीं नौ खँड जानी ॥४
ईंह पर जाइ मँदिर उतरी । कँवर देखि तो पाछैं परी ॥५
चढ़ी चाँद धौराहर, सिर धर बैठ तराइ ।६
पंका निकरे धोवै, मुख मसि धोई न जाइ ॥७

टिप्पणी—(१) सिघासन—देखिये टिप्पणी २५२।६।

२७३

(रीलैण्ड्स २१०)

बाज गुजाश्तने मैंना अज बुतख़ाना सूवे ख़ानये ख़ुद

(मैंनका मन्दिरसे अपने घर आना)

चढ़ी पालकी मैंना नारी । बिहँसि कुँवरि सब जोबनबारीं ॥१
कोऊ आनि पूछि कैल सखि आई । जे सब गोहन देउघर गई ॥२
कहँहिं चाँद कर पानि उतारा । हम सँह नारिंह छिनार बितारा ॥३
हँसि हँसि बानि अदा कर कहहिं । मिलइँ महेलिन चूद करहिं ॥४
पानि उतारि मनि मुख लाई । मो मसि मुख यँ धोइ न जाई ॥५
झमकत आइ पालकी, सुख मों मन्दिर पईठ ।६
गयी सहेली घर घर, मैंना नेज बईठ ॥७

२७४

(रीलैण्ड्स २१८)

पुरसीदने खोलिन मैंना रा कैफियते बुतख़ाना

(मैंनासे खोलिनका मन्दिरकी बात पूछना)

खोलिन पूछहि कहु धनि मैंनाँ । देउ चारि कस पायहु चैनाँ ॥१
हौं तुम पूजइ देउ पठाइ । औंर पाछे तिंह चाँदा आइ ॥२
हम जाना यह सखी तुम्हारी । ऊपर कहाउत करत धमारी ॥३
घोर बहुत जैन कुछ चरतेउँ । आज मो चाँदा कै करतेउँ ॥४
ई सब लोरक कै अपकारा । चाजौं तोमों देउ दुआरा ॥५
भल भयउँ तजिआउ, चाँद मकुसर आइ ।६
नाँक तरंक कै छेदरतेउँ, लेतेउँ चीर छिनाइ ॥७

२७५

(रीलैण्ड्स २१९)

तल्बीदने मैना मालिन रा व फरिस्तान बर महर

(मैनाका मालिनको बुलाकर महरके घर भेजना)

मैनहिं मालिन टोह बुलाई । ओरहन देइ महराँ पठाई ॥१
चाँद भुजंग राइ कै धिया । अइस न कीज जस वैं किया ॥२
पूनिउँ मुख देखत उजियारा । आप कलंकी भा अँधियारा ॥३
महरि महर कै भयी महिं कानी । लवतेउँ आग उतरतेउँ पानी ॥४
असकै धिय दीन्हि मुकराई । [······] कर अन्त न जाई ॥५
चार भुवन जग देखत, मोसेउँ चाँगर लागि ।६
जिंह अगरग अस लागै, जाइ देस तज भागि ॥७

टिप्पणी—(१) ओरहन— उपालम्भ, शिकायत ।

२७६

(रीलैण्ड्स २२०)

रफतन गुल्फरोश दर खानये राय महर व दीदा इस्तादन

(राय महरके घर मालिनका जाना)

मालिन पुहुप करँड भर लई । राजमंदिर चल भीतर गई ॥१
महरिंह सीस नाइ भइ ठाढ़ी । कुसुम करी ले देतस काढ़ी ॥२
हारचूर फूला पहराई । और फूल भर सेज बिछाई ॥३
फुनि मालिन बतं औधारी । यह तिहि बिनवइ दास तुम्हारी ॥४
आज लोरके मंदिर बोलायउ । चाँद कह ओरहन देइ पठायउ ॥५
जस ओरहन वैं कहा, तस हाँ कही न पारों ॥६
भल बात हाँ दोखी, किहँ लग कहत सँभारों ॥७

२७७

(रीलैण्ड्स २२१)

पुरसीदने महरि मर गुल्फरोश रा व बाज नमूदने गुल्फरोश इताबे चाँद

(महरिका मालिनसे पूछना और मालिनका चाँदकी शिकायत कहना)

महरि कहा सुन मालिन माई । अइस तैं सुना तइस कहु आई ॥१
कालिह जो चाँद देउ घर गई । देउ दुआर बितारन भई ॥२
चार भुवन जग जातहिं आवा । कुछ आपन औ बहुल पराया ॥३
चाँद न आछी अपनें बानी । बिन बानी अति जीभ सुखानी ॥४
घर घर बात देस बहिराई । कारिक दर्यी मुँह निकर न जाई ॥५
तो राजा के धिय सो, चाँदा कैसें लोक हँसावसि ॥६
औ जो पुरखा सात गये सरग, तूँ तिहँ लजावसि ॥७

टिप्पणी—(२) कालिह—कल । बितारन—वितण्डा ।
(३) जातहिं—यात्राके निमित्त । आपन—अपने, स्वजन ।
(५) कारिक—कालिख, कालिमा ।

२७८

(रीलैण्ड्स २२२)

शर्मिन्दा शुदने महरि पुरसा अज इताबे चाँदा

(चाँदकी शिकायत पर सुनकर महरिका लज्जित होना)

सुनतहि फूला महरि लजानी । घरे सहज जनु मेला पानी ॥१
जस तुमार पुरुडं दह दही । तस होइ महरि बात सुन रही ॥२
कौन भाँत पर गयइ सुलाई । इहँ कुरबोरन लाजि गँवाई ॥३
काढे कहँ बिध तें औतारी । बरु औतरतें मरतेउँ बारी ॥४
अस ओरहन सुनि कैसें सहै । जहाँ बियाही तिंहि का कहै ॥५
दोइ कुरबोरन, अगरन लोग हँसावनहार ।६
बातें लाग कह मालिन, हरखी आइ छिनार ॥७

टिप्पणी—(२) घरे—घड़े।
(६) अगरन—अगणित।
(७) छिनार—छिनाल, पुंश्चली, व्यभिचारिणी। लोक भाषामें नारीके प्रति एक अति प्रचलित गाली।

२७९

(रीलैण्ड्स २२३)

तल्बीदने चाँदा बिरस्पत रा व फरिस्तादने बर लोरक

(चाँदका बिरस्पतको बुलाकर लोरकके पास भेजना)

चाँद बिरस्पत सों अस कहा। भासउँ कुछ जो चित महँ अहा ॥१
सरग हुतैं धरि परा उठाऊ। उठा सबद जग मीत न काऊ ॥२
अब यह बात देस बहिराई। आँधी ढाँकी रहहिं लुकाई ॥३
हौं जो सुनतेउँ बोल परावा। जिह डरेउँ सो आगैं आवा ॥४
अब हौं मरिहौं पेट कटारी। कै दुख सहब देस कै गारी ॥५
लोर कहसि बिरस्पत, मँहि लै नगर पराइ ।६
आज राति लै निकरो, नतुर मरौं भोर बिस खाइ ॥७

टिप्पणी—(५) सहब—सहूँगी।
(७) नतुर—नहीं तो, अन्यथा।

२८०

(रीलैण्ड्स २२४)

गुफ्तने बिरस्पत लोरक रा सुखने चाँदा

(बिरस्पतका लोरकसे चाँदका सन्देश कहना)

आइ बिरस्पत कहा सँदेसू। लोर चाँद लइ [जा'] परदेसू ॥१
सावन लाग दइउ घिर आये। पाउस पन्थ न हाँडी जाये ॥२
नार खोर नद पानि भरि रहे। यह सयँमार जहाँ लह अहे ॥३
इहँ लाग धर बादर रनैं। दादुर ररहिं बीज लौकनैं ॥४
पाउस पन्थ कउन नर बाहँ। जीउ डराइ हिय फाटइ चाहँ ॥५

सरद सिसिर रितु हेंवन्त, जात न लागे बार ।६
चलब चाँद कहु बिहफइ, होइ बसन्त उजियार ॥७

टिप्पणी—(२) दइउ—देव, बादल ।
(३) नार—नाला, खोर—खोह ।
(७) चलब—चलूँगा । बिहफइ—'भीपइ' पाठ भी सम्भव है। दोनों ही बिरस्पत (बृहस्पति) के देशज रूप हैं ।

२८१

(रीलैण्ड्स २२५)

तफ्हीम कर्दने बिरस्पत मर लोरक रा

(बिरस्पतका लोरकको समझाना)

बिहफइ आइ लोर समुझावा । बेर चाँद जिउ कोप उचावा ॥१
छाड़ गोबर अइस बहराउब । बरु जिउ जाइ फुनि गोंइ [न*]आउब॥२
मैं आपुन जिउ अस बरझेवा । रात देवस कहँ धरमी देवा ॥३
पितवें केर देरि पोसाऊ । हाथ ऊभि भुइँ परें न पाऊ ॥४
बरु गहि पानि अगका कहिये । जइस परें सर तइसें सहिये ॥५

कहा तोर सुनु बिहफइ, हौं तो रासि गुनाउँ ।६
काल धरौं लै बानत, तौ हौं चाँद बुलाउँ ॥७

टिप्पणी—(१) बेर—बिलम्ब ।
(२) अइस—इस प्रकार । बहराउब—बाहर निकलूँगा । गोंइ—गाँवकी सीमा । आउब—आऊँगा ।
(५) पानि—पाणि, हाथ । जइस—जैसा । परइ—पड़े । तइस—तैसा ।
(७) काल—कल । धरौं—रक्खूँगा ।

२८२–२८६

(अनुपलब्ध)

२८७

(मनेर १४४अ)

रसीदने बिरस्पत बरे चाँदा

(बिरस्पतका चाँदके पास जाना)

बिहफइ नारि आइ समुझाई । चाँद जीउ चैन बहुरि फिरि आई ॥१
चन्दन अस्तिर घिस तन लावा । बेइलि चंपा भरि सीस गुँदावा ॥२
तिलक माँग चख काजर कीन्हाँ । पसँ पान मुख बीरा दीन्हाँ ॥३
अभरन पहिरा अउ गिंय हारू । हाथहिं मेंहदी किया सिंगारू ॥४
सोरह कराँ सपूरन भई । लोर लागि मालिन घर गई ॥५
जनम्ह नखत लिखि पायी, गरह जो भवइ निसंग ॥६
सूरज सथें चाँदा पूनेउ, भयी कुलंग कुलंग ॥७

टिप्पणी—(५) लागि—निकट ।

२८८

(मनेर १४४ब)

दास्तान रसीदने बिरस्पत बरे चाँदा अस्त

(बिरस्पत के चाँद के पास जाने की कथा)

दिन भा बिहफइ आइ तुलानी । भई उतावल चाँदा रानी ॥१
सुरज सँमति बिरस्पत पावा । लेत खाँड़ मालिन घर आवा ॥२
पाँयत घर जो चाँद बुलाई । बिहफइ कही सुजन दिन पाई ॥३
बिहसत चाँद लोर पहँ आई । सीस नाई धनि ठाढ़ी भई ॥४
अइसन चलहु न सुधि को पावा । साँझि चलहु न कोउ गोहन आवा ॥५
लोरक कहा सुनहु धनि चाँदा, गवन करब अब साँझ ॥६
भोग बिरास पिरम रस, हरदीपाटन माँझ ॥७

टिप्पणी—(२) सँमति—सम्मति ।
(५) अइसन—इस प्रकार ।
(६) करब—करूँगा ।
(७) बिरास—बिलास । पिरम—प्रेम ।

२८९

(रीलैण्ड्स २२६ : मनेर १४५अ)

रफ्तने लोरक दर खानये जुन्नारदार व पुरसीदने वक्ती सांद

(ब्राह्मणके घर आकर लोरकका यात्राकी साइत पूछना)

रैन खेलानाँ भा भिनसारा । पंडितकैं घर लोर सिधारा ॥१
पँवरी जाइके आपु जनावा । पाटा पान बीर कहँ आवा ॥२
पाट बैसारें दीन्हि असीसा । चँदर घातैं सुरज मुख द[सि*] ॥
किहँ चेत परभा परकासू । पँवरि पुनै कीन्हिं हम पासू ॥४
काह मया हमकहिं चित चढ़ी । भई अजोर जइस हमरी मढ़ी ॥५
कहु जजमान सो कारन, जिह इहवाँ तुम आयहु ।६
चँदर जोत मुख अदनल, किंह लग चिंत उचायहु ॥७

पाठान्तर—मनेर प्रति—

शीर्षक—दस्तान रफ्तने लोरक बरे नजूमी पुरसीदन उ रा (लोरकका ज्योतिषीके पास जाकर पूछना)।

१—रैन खेलि कै । २—के । ३—सोवाँ पंडित जाइ जगावा । ४—पै । ५—बैसार पुनि । ६—चँदर भाव सुरज पँह दीसा । ७—काह चेत चित भा । ८—दरप जो (!) कीन्हा । ९—भई उजियार पीर कै मढ़ी । १०—जिह लग इँहवाँ आयहु ।

२९०

(रीलैण्ड्स २२७ : मनेर १४५ब)

गुफ्तने जुन्नारदार वक्ती नीक व साअती खुब

(ब्राह्मणका शुभ घड़ी बताना)

सुरुज कहा मैं चाँद बुलाउब । सगुन बाँच दै पुरुब चलाउब ॥१
घरी माँडं के रासि गुनाये । सबही सिधिबैं पण्डित पाये ॥२
मोर गुनित तुम लोरक जानहु । कहउँ बोल मो सच कर मानहु ॥३
दिन दस तुम्ह कहँ बाट चलावहुँ । पुन इहँ पन्थ भला सिधि पावहुँ ॥४
एक दोइ गाढ़ मैं कुछ देखेउँ । आगे होइ पै नाहीं लेखेउँ ॥५

आधी रात जो जाइं, तब उठ चालहु बीर।६
सूर उवत तुम्ह उतरहु, पौरि गाँग कर तीर॥७

पाठान्तर—मनेर प्रति—

शीर्षक—मुकाम कदने लोरक बरे नजूमी व कैफियते जग (लोरकका ज्योतिषीके पास रुकना और ज्योतिषीका सकटकी बात कहना)
१—चाँदा। २—माँग। ३—बोल सबै तुम्ह मानहु। ४—पन्थ चलावहु। ५—पुरुब पन्थ भल सिधि पावहु। ६—एक दोइ काल जैस मैं देखउँ। ७—औगुन। ८—देखउँ। ९—जब जायहि। १०—बूडि गाँगके तीर।

टिप्पणी—(५) गाढ़—सकट।
(७) पौरि—तैर कर।

२९१

(रीलैण्ड्स २२८ : मनेर १४१ अ)

फुरूद आवर्दने लोरक चाँदा रा व बाखुद बुर्दन

(लोरकका चाँदको नीचे लाकर अपने साथ ले जाना)

रात परी तो लोरक आवा। मेलि बरह कै आपु जनावा॥१
बाट जुहत फुनि चाँदा होती। लेतसि अभरन मानिक मोती॥२
अँकुरी लाइ लोर तस ताँनसि। आवत सूर चाँद न जानसि॥३
प्रथम मेलि अरथ सब देतसि। औ पाछे चाँदा धनि लेतसि॥४
चाँद सुरुज कै पाँयन परी। सुरुज चाँद लै माथे धरी॥५
निसि अँधियार मेघ घन बरसे, चाँद सूर लुकाइ।६
बेगि बेगि कै चाले दोउ, जानउँ जाइ उड़ाइ॥७

पाठान्तर—मनेर प्रति—

शीर्षक—दास्तान आमदने लोरक दर खानये चाँदा बर लोरक (लोरक का चाँदके घर और (चाँदका) लोरकके पास आना)

इस प्रतिमें पंक्ति ३ और ४ क्रमश ४ और ३ हैं।

१—भयी। २—बाट गहत तो। ३—तानाँ। ४—आवत चाँद सुरुज नै जाना। ५—पाछैं सुरुज चाँदा धर लेतसि। ६—कै पाँयहि। ७—सुरुज। ८—माँथ। ९—नीर। १०—सुरुज। ११—बेगि बेगि चलु चाँद कुवारी, जाँहि गेहा दूर उड़ाइ।

२९२

(मनेर १४७अ)

दास्तान आमदने चाँदा अज बरे कस्र व रफ्तन

(चाँदका महलसे निकलकर रवाना होना)

लै लोरक घर बाँहर दिखावा । देखि चाँद कुछ चितहिं न लावा ।।१
चलहु लोर पुनि हो भिनसारा । लागि गुहार सब लोग हमारा ।।२
मत सुन पावड बावन बीरू । विरह दगध पुनि मोर सरीरू ।।३
ओहि देखत कोइ जाड न पारइ । बोलत बोल मोंछ (मुँह) मारइ ।।४
अरजुन जैस धनुक कर गहई । ओहिकै हाक न मनुसैं सहही ।।५
कहहि लोर सुनहु तुम्ह चाँदा, अइसैं महिं न डराउ ।६
राउ रूपचंद बाँठा मारेउँ, अब बावन पर जाउ ।।७

मूलपाठ—अइ ।

टिप्पणी—(२) भिनसारा—प्रात काल, सुबह ।
(३) गुहार—पुकार ।
(५) ओहिकै—उसका ।
(६) अइसैं—इस प्रकार ।

२९३

(मनेर १४७ब : १४६ब)

दास्तान शमशीरे व सिपरे लोरक गिरफ्तने मैंना

(मैंनाका लोरककी तलवार और ढाल ले लेना)

ओढन खाँड मैना लै सूती । सँह निसि जागि बिरह कै भूती ।।१
दुन्हु मलखम्भहिं रोइ संचारा । कराहिं महत जनु उठइ झनकारा ।।२
मैंना माँजरि रूप मरारी । इहँ गुन कितहु न देखेउँ नारी ।।३
ओटन खाँड कन्दु अम धरा । नैन नीर चख काजर झरा ।।४
काउ ऊँच न बोलसि बोलू । औगुन करत राख मोर तोलू ।।५
अति मारूप सयानी, औ कुलवन्ती नारि संजोग ।६
तुम्ह चाँदा मन राता, महिं परा बिजोग ।।७

पाठान्तर—एक ही कडवक दो पृष्ठोंमें अंकित है। पृ० १४६ब मे निम्नलिखित पाठान्तर हैं।

१—सउ। २—रामै। ३—ओडन वाढ गेदु। ४—चल झर झर परा। ५—रुप। ६—तुम मँह चाँदा। ७—अब मँह।

टिप्पणी—(३) मैंना मॉजरि—लोरककी पत्नी मैनाका नाम मॉजरि (मंजरी) भी था। मैना, मैना मँजरि और माँजरि, तीन रूपों मे उसका उल्लेख इस काव्यमें हुआ है। मैनाके रूपमें तो इसका उल्लेख मुख्य रूपसे है ही। मैना मॉजरिके रूपमें इस कडवकके अतिरिक्त कडवक २९५ मे और केवल मॉजरिके रुपमे कडवक ३५० (बम्बई और मनेर प्रति), और ४०२ मे उल्लेख हुआ है। मैंना और मॉजरि, दोनो ही नाम स्वतन्त्र रूपसे एक ही कडवक २९८ में आये हैं। उससे स्पष्ट है कि वे नाम एक ही व्यक्तिके हैं। लोरककी पत्नीके ये तीनों ही नाम लोक-कथाओंमे भी मिलते है।

२९४

(रीलैण्ड्स २२९ : मनेर १४८अ)

लिबासे सियाह पोशीद रवान शुदने लोरक व चाँदा

(काले वस्त्र पहन कर लोरक और चाँदका रवाना होना)

काली झगा पहिर दोइ चाले[1]। रची करेज चाँद मुइ[2] घाले ॥१
ओडन खाँड[3] लोर कर गहा। दोइ जन चले न तीसर अहा ॥२
कर गहि निसरी धनुक कुवारी। इँह बिध कीन्ह[4] सो चाँदा नारी ॥३
गोवर छाड़ कोस दस भये[5]। छाड़ बाट औपथ[6] होइ गये ॥४
तँहवा होत सो कँवरू भाई[7]। चलत लोर सो भेटइ आई[8] ॥५
सूरुज[9] चला लै चाँदहि, कइ गोवर अँधियार। ६
बीजु लवइ घन गरजे, निसर न कोऊ पार[10] ॥७

पाठान्तर—मनेर प्रति—

शीर्षक—पीरतर रवान शुदने लोरक व चाँदा (लोरक और चाँदका आगे बढना)।

१—कार झग पहिर कै चाले। २—सर। ३—तरग। ४—चली। ५—गये। ६—औवट। ७—घर कै बराहुत कँवरू भाई। ८—चल्हु चाँद सो भेन्टइ जाई। ९—सूर। १०—पार पार।

टिप्पणी—(१) झगा—लम्बा ढीला कुरता; अँगरखा।
(५) तइयाँ—वहाँ, उस जगह।

२९५

(रीलैण्ड्स २३० : मनेर १४८ब)

दिनाख्तने कुँवरू लोरक रा दरमियाने राह अज पसे ऊ चाँदा

(मार्गमें कुँवरूका लोरक और चाँदको पहचानना)

कुँवरू आवथ[1] चीन्हाँ लोरू। धावा संखि चलायहु गोरू[2] ॥१
पाछैं हेरत[3] चाँदा आई। जिउ कँवरू कर गयउ उड़ाई ॥२
कहसि लोर तैं[4] भला न किया। कित ले चला[5] महर कै धिया ॥३
तिरियहिं जरम नाँग बुधि होई। तिन्ह कै[6] संघ न लागइ कोई ॥४
बूढ़ी खोलिन तुम्हरी माई। तिहकै मया न तुम्ह चित आई[7] ॥५
बारि बियाही मैंना मॉजरि[8], लोरक आह तुम्हार ॥६
बारि बूढ़ ररि मरियँहि, भाई बचन हमार[9] ॥७

पाठान्तर—मनेर प्रति—
शीर्षक—दिनाख्तने कुँवरु लोरक रा (कुँवरूका लोरकको पहचानना)
१—अगुमत। २—रहा सगि चला सब गोरू। ३—देखइ। ४—तुम्ह। ५—लइ चले। ६—तेहरे। ७—तिहके मयाँ न जिउ मँह आई। ८—बारि बियाही मैंना।
९—म०—बरहि चिन्त तुम्हार।

टिप्पणी—(१) आवथ—आता हुआ। चीन्हाँ—पहचाना। संखि—सशंक होकर। गोरू—ढोर, गाय भैंस आदि।
(२) पाछे—पीछे। हेरत—देखते ही।
(४) तिरियहि—स्त्रियों की। जरम—जन्म। नाँग—अल्प, थोड़ा।
(७) ररि—रट रट कर।

२९६

(रीलैण्ड्स २३१ : बम्बई २६ : मनेर १४९अ)

गुफ्तने चाँदा कुँवरू रा हिकायते इश्क

(चाँदका कुँवरूसे अपने प्रेमकी बात कहना)

चाँद कहा कँवरू सुनु[1] बाता। लोर मोर जिउ एकै[2] राता ॥१
जेयतैं जीउ[3] न छाड़ैउँ[4] काऊ। दिन अस भये मो लोग पठाऊँ[5] ॥२

हौं उँहकै उहँ चित्त मोरें । काह कँवरू होई रोयें तोरे ॥३
इँह विधि देसि देसन्तर लीन्हों । काह कहौं अनउतर दीन्हों ॥४
तुम तज हम जाइहँ परदेसू । मैं देसु कीन्हि पुरुस कर भेसू ॥५
हौं सो महर धिय चाँदा, चहूँ भुवन उजियार ।६
कौन अजोग संघ कियउ, कुँवरू भाइ तुम्हार ॥७

पाठान्तर—बम्बई और मनेर प्रतियाँ—

शीर्षक—(ब०) जवाब दादने चाँद अज कुँवर [रा] । (चाँदका कुँवरूका उत्तर) (म०) गुफ्तने चाँद कुँवरू रा जवाब (चाँदका कुँवरूको जवाब) ।

दोनों ही प्रतियों म पंक्ति ४ और ५ क्रमशः ५ और ४ है ।

१—(ब०, म०) सुनु कँवरू । २—(ब०) बर (म०) कहि । ३—(ब०) जिय । ४—(ब०, म०) छाडउँ । ५—(ब०) दोइ दस भये इह लेग पठाऊ (म०) दोइ दस होइने भार पराऊ । ६ (ब०) हौं उँहकै उह चित बसइ (म०) हौं उहकै उह जिय बसि । ७—(ब०) रोये, (म०) होइ कँवरू रोये । ८—(ब०) इह विध देस देसन्तर लेकूँ, (म०) लेकूँ । ९—(ब०) करो । १०—(ब०, म०) कस ऊतर देऊँ । ११—(ब०) हम नज (?) जाय परदेसू, (म०) तुम तज जायन परदेसू । १२—(ब०) लीह । १३—(ब०) हौं महरै कै धिय सो चाँदा, (म०) हौं महरै कै धिय चाँदा । १४—(ब०) कौन अजोग सग मिल (म०) लोर लाग चित बाँध भयउँ ।

टिप्पणी—(१) मोर—मेरा । राता—अनुरक्त ।
(३) उँहकै—उसका ही । उँह—वह ।
(५) जाइहँ—जारही हूँ ।
(७) अजोग—अयोग्य । संघ—संग, साथ ।

२९७

(रीलैण्ड्स २३२ मनेर १४९ब)

जवाब दादने कँवरू बा एहानते चाँदा रा

(कँवरूका चाँदकी भर्त्सना करना)

अस चाँदा तुम लाज गँवाई । सरग हुतीं भुइँ उतरीं आई ॥१
(मुख कारी करि) फिरसि कुँवारी । पाख पाख होइ अँधियारी ॥२
रहु न चाँद मनहि लजाई । अस को न होइ गवन कै जाई ॥३

बारह मंदिर रैंन अँधावसिं । सुरुज सेज उजियारी रावसिं ॥४
तज सोक औ रहइ लुभाईं । कहउँ बात तूँ खिन न [ल*]जाईं॥५
दान खड़ग कर निरमल, लोरक भाई हमार ।६
तोरैं नीलज अमावस, करि जो लिन्हि अँधियारं॥७

मूलपाठ—(२) मुग्न कारी मुख निसि ।

पाठान्तर—मनेर प्रति—
शीर्षक—मलामत कर्दने कँवरु चाँदा रा (कँवरुका चाँदकी भर्त्सना करना)।
१—धर उतरि । २—मुखकारी पगरहि तिह कुवारी । ३—पारस पारस दिन होइ । ४—रहसि नहि चाँदा । ५—अस किह होइ गोबर कै जाईं । ६—रैन तूँ धावसि । ७—अँधियारे रावसि । ८—तज जो सोक मरहि ल्जाईं । ९—अन होइ तो मरै ल्जाईं । १०—तूँ तो मने अस निल्ज, अमावस कै अँधियार ।

टिप्पणी—(१) हतीं—थी ।
(२) अस—ऐसा ।

२९८

(रीलैण्ड्स २३३)

मिदाअ कर्दने लोरक बा कुँवरु व पीश्तर रफ्तन

(लोरकका कुँवरूको विदा कर आगे बढ़ना)

धरि कँवरू लोरक कँठलावा । नैन नीर भरि गाँग बहावा ॥१
केम छोर कँवरू पाँयन परा । बिरह दगध घायर जनु रा ॥२
देखतहिं चाँदा चितहि सँखानी । मकु न लोर छाड़ै लोरकानी ॥३
कातिक मास खेलु रितु गाई । हम पुनि कुँवरू खेलत आई ॥४
ठाढ़े कुँवरू सिर दइ हाथा । जान देइ चाँद संघाता ॥५
माइ खोलिन औ मैनाँ, कहु सँदेस अस जाइ ।६
बहेर जान न पावइ माँजरि, रहे खोलिन के पाइ ॥७

टिप्पणी—(१) कँठलावा—गले लगाया ।
(२) घायर—घायल । रा—चिल्लाया ।

(३) सँस्वानी—शकित हुई ।
(५) ठाढ़े—खडे ।

२९९

(रीलैण्ड्स १३४)

ख्वान शुदने लोरक व चाँदा बशिताब

(तेजीसे लोरक और चाँदका जाना)

चले दोउ भुइँ पाउँ न धरहीं । पेग बेग उतावर भरहीं ॥१
चला लोर मिलि चाँदा आई । खोलिन मैंना बिसरी माई ॥२
चाँदहिं देखि लोरकहिं कहा । कैमैं सो मिलत जो चित अहा ॥३
औ अस कहा महिं तूँ लोरा । नीकै मन चित करिहै मोरा ॥४
तोर सनेह छाडेउँ घर बारू । कै बोरहु कै लावहु पारू ॥५
साँझ परी दिन अँथनइ, लोरक चाँदा दोइ ।६
औघट घाट गाँग कै, रहे बिरिख तर सोइ ॥७

टिप्पणी—(५) बोरहु—डुबा दो ।
(७) तर—नीचे ।

३००–३०३

(अनुपलब्ध)

३०४

(रीलैण्ड्स २३५ मनेर १५२अ)

रसीदने लोरक व चाँदा बरे गंगा व इशारत कदने चाँदा मल्लाह रा

(लोरक और चाँदका गगाके किनारे पहुँचना और चाँदका मल्लाहको सकेत करना)

गाँग सरिस तमासन करनाँ[१] । लोरक जाइ लेत[२] एक छरनाँ ॥१
चाँदा फिर फिर[३] आपु देखावा । मकु खेवट मोहि देखत आवा[४] ॥२
मँगा ठाँउ जो खेवट आवा[५] । कर कंगन चाँदे झनकावा[६] ॥३
खेवट देख अचम्भे रहा[७] । तिरिया एक अकेलैं[८] अहा ॥४

कहै नाउ दँहु[1] देखउँ जाई। कउन तिरी यह इँहवाँ आई[10] ॥५
सँरगा वेग चलायसि, खिन खिन चितँहि सँखाइ[11] ।६
काह कहै कस पूछैं[12], कइसे इँहवाँ आइ ॥७

पाठान्तर—मनेर प्रति—

शीर्षक—दास्तान नमूदने चाँदा दस्ताने मल्लाह रा (मल्लाहको चाँदका हाथ दिखाना)

१—गग सरिस औरथ बरना। २—लोरक लीन्ह जाइ। ३—फिर फिर चाँदा। ४—सोह देखी मनु केवट आवइ। ५—सँरगा तीर जो केवट आवा। ६—चमँकावा। ७—केवट देख अचम्भो रहा। ८—अकेली। ९—है। १०—कौन नार कहँवा हुत आई। ११—सकाइ। १२—काह कहीं केउँ पूँछउँ।

३०५

(रीलैण्ड्स २३६ : मनेर १५२ब)

आशिक शुदने मल्लाह अज दीदने जमाले सूरते चाँदा

(चाँदका सौन्दर्य देखकर मल्लाहका मुग्ध होना)

खेवट[1] देख विमोहा रूप। अभरन बहुल[2] सुनारि सरूप ॥१
दई विधाता[3] पूजई आसा। अस तिरिया जो आवइ पासा ॥२
खेवट कहा उतर दिस जाहू[4]। बैसि[5] सरंगा बात कहाहू ॥३
चाँदा नारि उतावर चली। खेवट कहा बात है भली ॥४
गई चाँद जहँ लोरक रहा। खेवट सँरगा बैस एक अहा ॥५
गुन बाँधी वह खेवट, सँरगा घेरीं आई।६
लेके पार उतारों सो धनि, जौलहि लोगहिं आइ ॥७

पाठान्तर—मनेर प्रतिमें इस कडवककी केवल आरम्भिक तीन पंक्तियाँ हैं। शेष पंक्तियाँ कडवक ३०७ की हैं।

शीर्षक—दास्तान मुस्तार शुदने केवट अज दीदने ऊ (उसे देख कर मल्लाहका प्रेमासक्त होना)

१—केवट। २—बहुत। ३—गुसाईं। ४—कहा नाउ परदेसँ जाहू। ५—लेइकर।

टिप्पणी—(३) सँरगा—नाव ।
(७) जौलहि—जब तक ।

३०६

(रीलैण्ड्स २३७ब)

सवारी शुदने लोरक व चाँदा बर कश्ती

(लोरक व चाँदका नावमें बैठना)

माँझ गाँग हुत खेवट कहा । कउन नारि घर कहवाँ अहा ॥१
रैन कहाँ तुम्ह कीन्हि बसेरा । नदि नियर न देखेउँ गाँउ न खेरा ॥२
घरहुँत भया चलेउँ रिसाई । भर एक रात गाँग हौं आई ॥३
तूँ महरी के जाति अकेली । साथ न कोऊ सखी सहेली ॥४
काह न कोउ मनावन आवा । जिह घर आह सो आउ न पावा ॥५
सास ननद मोर भारोउँ, दीख न कुँवहँ पनार ।६
पिया सन मोर साई बिरोधा, यहिं छाडेउँ घरबार ॥७

३०७

(रीलैण्ड्स २३८ मनेर १५२ब)

गुजार शुदने लोरक व चांदा अज आबे गॉग

(लोरक-चाँदका गंगा पार करना)

चाँदहिं खेवट सों अस कहा । अभरन मोर यहिं पारहिं अहा ॥१
खेवट सँरगा खाँच लै आवा । बोलतहिं लोरक माथ उचावा ॥२
दीन्हि तराई खेवट कहे । दोइ जन चले न तीसर अहा ॥३
लोर चाँद दोई सँरगा चढ़े । एक काठ के दोउ गढ़े ॥४
खेवट ठाढ़ अरग्गरहिं रहा । करिया लोर आपु कर गहा ॥५
अगाँ चाँद सयानी, पाछें लोरक वीर ।६
दयी संयोग गाँग तर आयि, बूडत पावा तीर ॥७

पाठान्तर—मनेर प्रतिमें केवल अन्तिम चार पंक्तियाँ हैं। इनके साथ आरम्भकी तीन पंक्तियाँ कडवक ३०५ की हैं।

१—चाँद लोर आइ सँरगहि चढ़े। २—अति सरूप दर्द के गढ़े। ३—केवट उतर वक्र पावहिं गहा। ४—करपा (यह केवल नुक्तोंकी भूल है। ५—आपुन। ६—आगे। ७—पाछे। ८—गाँग सब उतरे, बूड़त पाचो।

३०८

(रीलैण्ड्स २३९ : मनेर १५३अ)

आदमने बावन बर किनारे गंगा व पुरसीदन मल्लाह रा

(गंगाके किनारे आकर बावनका मल्लाह से पूछना)

तौलहि बावन आइ तुलानाँ। पूछा केवट पिरम भुलानाँ॥१
चेरी चेर मोर दुइ आये। ईंह मारग तिहिं देखी पाये॥२
सुन केवट मुख देखत हँसा। कुँवर कुँवरी इक इँहवाँ बसा॥३
पुरुख लुकान तिरी दिखरावा। हौं रंगराता तिहकें आवा॥४
वहिं राजा वहिं रानी जानी। कहूँ साच तिहि जानु न कहानी॥५
उहै नाव ले डाड़े लाये, ऊ फिर चेर न होइ।६
बावन देख दौर धस लीन्हे, इहँ बिरहें रोइ॥७

पाठान्तर—मनेर प्रति—

शीर्षक—दाख़िल आमदने बावन दौहरे चाँद व रसीदन (चाँदके पति बावनका आ पहुँचना)।

१—चेरा चेरि मोरे दोई। २—इहँ मारग तें देखी कोई। ३—सुनके केवट मुख देख हँसा। ४—कुँवरि कुँवरा। ५—तिरिया। ६—रंगराती तिहके। ७—अत रूपवन्त बिचक्खन सोई। उन रातकी पुरुख औ जोई॥ ८—उह देखु मँगा लागा तीरहि, उहँ न जोरी चेर। ९—बावन दौरि ऊभ धस लीन्हें, बढ़तें गै तिह नेर॥

३०९

(रीलैण्ड्स २४० : मनेर १५३ब)

दर गंगा उफ़तादने बावन व दुम्बाले लोरक बर्दन

(बावनका गंगामें कूदकर लोरकका पीछा करना)

धनुक बान बावन मर धरा। लोरक देखि गाँग महँ परा॥१
अउलहि बावन पार न भयऊ। तौलहि लोर कोस छ गयऊ॥२

साँस मार बावन तस धावा । मार बिपारउँ जान[1] न पावा ॥३
जात[2] गोवार चरावइ गायी । अपने करी सो धाइ परायी ॥४
जेउँ जेउँ धावइ पावइ खोजू[5] । इहँ परिहँस तो रही न रोजू[6] ॥५
वै रे चलहिं[7] यह धावइ, मिला कोस दस जाइ ।६
ऊँचा बिरिख सुहावन एक हुत, लोरह लीन्हों आइ[8] ॥७

पाठान्तर—मनेर प्रति—
शीर्षक—दास्तान दुम्बालए चाँदा व लोरक दवीदने बावन (बावनका चाँद और लोरकका पीछा करना)
१—कर । २—करऊ । ३—तौलहि लोरक कोस दोइ गयऊ । ४—जाइ । ५—जद्मन (?) । ६—जउ जउ धाउ न पावइ खोजू । ७—इहँ परिहँस रहै न रोजू । ८—वइ र चरै । ९—ऊँचा घेरा सुहावन, लोरक लीन्हा जाइ ।

३१०

(अनुपलब्ध)

३११

(रीलैण्ड्स २४१ . मनेर १५४अ)

खबर कर्दने चाँदा बावन मी आयद व आमदने बावन
(चाँदका बावनके आनेकी सूचना देना और बावनका आ पहुँचना)

चाँदइ देखा बावन आवा । बचन न आवइ थाके पावा[1] ॥१
बावन आइ बाघ जस घेरा । फिरि जो चाँदइँ पाछों हेरा[2] ॥२
मुख फिराइ लोर सों कहा । अब देखहु बावन आवत अहा[3] । ३
धनुक चढ़ाइ बान[4] कर गहा । तस मारों जस देह न रहा ॥४
आन्हत हुतें[5] बावन सर मेला । सो सर लोरक[6] ओडन ठेला ॥५
ओडन फूटि लिहानट फूटा, अउ लोरक गै बाँह[7] ।६
परा निरिख अम्ब कर, लोरक आउ भा तिंह छाँह[8] ॥७

पाठान्तर—मनेर प्रति—
शीर्षक—दास्तान तरसीदने चाँद अज आमदने बावन (बावनको आता देख चाँदका भयभीत होना) ।

इस प्रतिमें पंक्तियाँ २ और ३ क्रमश ३ और २ हैं और पंक्ति २ के पद पीछे आगे हैं।

१—आवइ दाँत कपावा। २—पाछें फिरि जो लोरक हेरा। बावन आइ बाक (बाघ) जस घेरा। ३—मुँह फिराइ लोर सेउ कहा। वह देखु बावन आवत आहा। ४—बावन। ५—आव्हत आव्हत। ६—सोइ लोरक। ७—औ लोरक बाँह। ८—ऊँचा बिरिख सुहावन, लोरक लोनहि छँह।

टिप्पणी—(१) पावा—पैर।
(२) पाछीं—पीछे। हेरा—देखा।
(५) आव्हत हुतैं—आते ही, आते आते। ओडन—ढाल। ठेला—पीछे हटाया।
(६) बाँह—बाघ।
(७) अम्ब—आम। आउ—आकर। भा—(भूतकालिक क्रिया) हुआ।

३१२

(रीलैण्ड्स २४२ . मनेर १५४ब)

गुफ्तने चाँदा मर बावन रा

(बावनसे चाँदका कहना)

बावन कहि गौं चाँद कुआरी। काह लागि तुम्ह कीन्हि गुहारी ॥१
माइ बाप जो दीन्हि बियाही। बरम देवस हौं तुम्ह पहिं आही ॥२
पिरम कहा नैं कीन्हि न बाता। तै न देखेउँ कार कि राता ॥३
सुवन सुनाँ हुत तुम्हारा नाऊँ। तरसि मुयउँ पै सेज न पायऊँ ॥४
जस आयउँ तस मैके गयउँ। दयी क लिखा सो मैं पयेउँ ॥५
बहुरि जाहु घर अपनें, बावन संग तज मोर ।६
राउ रूपचन्द बाँठा मारा, आह सो कुंकुं लोर ॥७

पाठान्तर—मनेर प्रति—
शीर्षक—दास्तान दुम्बाल्ये चाँद व लोरक दर्कीदने बावन व गुफ्तने चाँदा बावन रा चेहूनगे लोरक (बावनका चाँद और लोरकका पीछा करना और चाँदका बावनसे लोरककी प्रशंसा करना)।
इस प्रतिमें पंक्ति ३ और ४ क्रमश ४ और ३ हैं।
१—बावन मन कहि। २—नैं करसि। ३—बरस देवस तुमरी आही। ४—पिरम कहा नइ कही मो बाता। लिह न देखे बार कि राता। ५—

तुम्हारा। ६—तपत। ७—जस देखेउँ तस मैंके आयउँ। दयीका लिखा हुत सो पायउँ॥ ८—बावन कहाँ सुनहु तूँ मोर। ९—भये सो कुकुह लोर॥

टिप्पणी—(१) काह लागि—किस लिए। कीन्हि—किया।

(२) पहँ—पास। आही—थी।

(३) पिरम—प्रेम। कार—काला। राता—रक्त, यहाँ तात्पर्य गोरेसे है।

३१३

(रीलैण्ड्स २४३ : मनेर १५५अ)

जवाब दादने बावन चाँदा व अन्दाख्तने तीरे दुअम्बरू

(बावनका चाँदको उत्तर देना और दूसरा तीर छोड़ना)

अहि[१] पापिन तिहिका मारों। नाक काटि कै[२] देस निसारों॥१
तिहि अस तिरि गोबरों[३] धसि लेई। बात कहत अस[४] ऊतर देई॥२
कम लोरक[५] सेउँ मोहि डरावई[६]। तू बड़बोल जान जो पावइ[७]॥३
तिहि लग लोरक जी गॅवाइहि[८]। भेंट भई[९] अब जान न पाइहि[१०]॥४
पुरुख मार ओडन महिं[११] फोरउँ। काटउँ मूँड़ भुआदण्ड तोरउँ॥५
अस सुन लोरक (सिंघ) कोपा, ओडन खाँड सँभार[१२]॥६
बावन एक फोक सर छाड़ा, गयउ चिरिख सो फार[१३]॥७

पाठान्तर—मनेर प्रति—

शीर्षक—दास्तान जवाब गुफ्तने बावन बा चाँदा (चाँदको बावनका उत्तर)।

१—अरी। २—तिहि। ३—गोबा ('रे' लिखनेसे छूट गया प्रतीत होता है)। ४—अन। ५—लोर। ६—डरपावसि। ७—तूँ पै बोल जाइ जम पावसि। ८—गँवाया। ९—भई भट। १०—पावा। ११—सेउ। १२—अस सुनि लोरक सिंघ अस गाजा, लइ ओडन सँभार। १३—बावन एक जोहि सर छोड़ा, अगवहि बीर सँभार॥

मूलपाठ—(६) सिंग।

टिप्पणी—(१) तिहि—तुझको। निसारों—निकालूँ।

(३) बड़बोल—लम्बी लम्बी बात करनेवाली, बातूनी।

(५) फोरउँ—फोड़ूँ। काटउँ—काटूँ। मूँड—सिर भुआदण्ड—भुजदण्ड। तोरउँ—तोड़ूँ।

(७) फोंक—नुकीला (देखिये टिप्पणी ११४।५)।

३१४

(रीलैण्ड्स २४४ : मनेर १५५ब)

पन्दादने चाँदा लोरक रा व अन्दाख्तने बावन तीरे सुअम

(चाँदका लोरकको सचेत करना और बावनका तीसरा तीर छोड़ना)

चाँद कहा अब देउर लीजइ। गाढ़े आँखद ढील न दीजइ[1] ॥१
दू सर गये रहा अब एकउ। लोर[2] बीर कैसौं कै टेकउ ॥२
सर मेलसि कस नियर नैं आवइ[3]। जो आवइ तौ जीउ गँवावइ ॥३
जाइ देउल महँ लोर सँभारा। नाँघसि बान उठा झनकारा[4] ॥४
बावन बान फूटा आई[5]। मारसि देउर गयउ उड़ाई ॥५
बर बावन कर भागा[6], चाँदँ कहा बिचार[8] ।६
अँथवा सुरुज बहुरि परगासा[9], जानइ सभ संसार[10] ॥७

पाठान्तर—मनेर प्रति—

शीर्षक—दास्तान चाँद गुफ्तने पनाह देवर पैकर आइ लोरक (चाँदका लोरकसे देवलका सहारा लेनेको कहना)

१—ढील अदीजइ। २—दोइ। ३—लोरक। ४—दइ सर मेल पुनि नियर न आवइ। ५—गाढ़े अवसर जो घात सचारू। गरजा देउर उठा झनकारू॥ ६—बावन तरही धनुक चढ़ाई। ७—कर नहा, चाँद। ८—बिचार सिचार। ९—अथवा सुर सुरुज परगासा। १०—सघार।

टिप्पणी—(१) देउर—देवल, मन्दिर। गाढ़े—कठिन। आँखद—समय।

(२) कैसौं—किसी प्रकार।

(३) नियर—निकट। नैं—नहीं।

(४) देउल—देवल, मन्दिर।

३१५

(मनेर १५६ब · रीलैण्ड्स २४५)

दास्तान गुफ्तने बावन बेसखुने खुद रा

(बावनका स्वगत-कथन)

बावन कहा बाच है[1] मोरी । तोर पुरुष यह तिरिया तोरी[2] ।।१
लोग कुटुम्ब महँ कहियउँ जाई[3] । मैं तिहि दीन्हों गाँग बहाई ।।२
लोरक चाँद बहुर घर जाई[4] । बोली[5] पाछै लिखी[6] बुराई ।।३
देउर माँझ लोर सर काढ़ा । ओ दुनु भौन हुत ठाढ़ा[7] ।।४
लइ चाँदहि आगें कै चला । लोरक[8] बीर पाछै भा भला ।।५
चाँद कहा सो मूरख, जो अइसहिं पतियाइ[9] ।६
जाकर लीजइ बार बियाही, सो काहे कर पहुनाइ[10] ।।७

पाठान्तर—रीलैण्ड्स प्रति—

शीर्षक—गुफ्तने बावन लोरक रा बाद उफ्तादने हर सह तीर खाली (तीनों तीर खाली जानेके बाद बावनका लोरकसे कहना) इस प्रतिमें पंक्तियोंका क्रम ४, ५, १, २, ३ है।

१—यह । २—लोर बीर यह तिरिया तोरी । ३—लोग कुटुम्ब हउँ आँखों जाई । ४—लोरक बहुरि घर अपनें जाई । ५—नौली । ६—लिखी । ७—ओदन फूट (?) बैठ हुत ठाढ़ा । ८—लोर । ९—चाँद कहा सुनु बौरी लोरक, अउत बहुरि बो जाइ । १०—जिहके बार बियाही लीनै, तिह कइसे पतियाइ ।

टिप्पणी—(१) बाच—वचन ।

(२) दीन्हें—दिया । गाग—गंगा ।

(३) बोली—सम्भवत यह अपपाठ है । रीलैण्ड्सका पाठ 'नौली' ठीक जान पड़ता है । नौली (नवली)—नवेली, युवती । पाछै—पीछे, के कारण ।

(४) इस पंक्तिके उत्तर पदका पाठ दोनों ही प्रतियोंमें समुचित रूपसे पढ़ा नहीं गया ।

(६) अइसहिं—इसी प्रकार, बिना सोचे समझे । पतियाइ—विश्वास करे ।

३१६

(रीलैण्ड्स २४६ : मनेर १५६अ)

अनदास्तने बावन धमान व अपसोस कर्दन

(बावनका धनुष फेंककर खेद प्रकट करना)

बावन धनुक सो दीन्ह उदारी[1] । बारह बरिस तजी मैं नारी ॥१
हम[2] जाना धनुकहि[3] सिधि पाई । बान भरोसे जोइ[4] गँवाई ॥२
धस लै हौं गाँग परउँ[5] । बूड़ि मरउँ कै फूंकर न धरउँ[6] ॥३
अब हूँ धनुक हाथ कम करउँ । बरु कंठसार कटारा मरउँ[7] ॥४
पर यहँ आँसि न देखत आई[8] । लइगा सुरुज चाँद भुलाई[9] ॥५
जो यह मोरी[10] बार बियाही, माइ दीन्ह अउ बाप[11] ।६
राज करो जम लोरक, चाँदहि खाइह साँप[12] ॥७

पाठान्तर—मनेर प्रति—

शीर्षक—दास्तान अन्दाख्तने बावन तीरो कमाने खुदरा बर जमीं ज़द (बावनका धनुष-बाण भूमिपर फेंक देना)।

इस प्रतिमें पंक्तियाँ ३, ४, ५ क्रमशः ५, ३, ४ हैं।

१—जो लीन्हि उतारी। २—मैं। ३—धनुक। ४—बान भरोसें तिरी। ५—पै धँस लेइ गाग महँ परउँ। ६—बूड़त मरउँ निफरि लइ भरउँ। ७—धक बँट मार कुटारी मरउँ। ८—पर यह रोस न देखउँ काही। ९—लेइगा लोरक चाँद चलाही। १०—मोर। ११—लेगा बाँटो करिया साँप। १२—लोर फिर एक सरभा दिया, मोरेउ परा सन्ताप।

टिप्पणी—(१) बरिस—वर्ष।
(२) जोइ—स्त्री, पत्नी।

३१७

(रीलैण्ड्स २४७)

बाज गुश्तने बावन व मुलाकात कर्दने लोरक व चाँदा बा बिरा (!)

(बावनका लौटना : लोरक और चाँदसे बिया (?) की भेंट)

बावन फिरि गोबर दिसि गये । लोर चाँद दोइ आगें भये ॥१
राइ करंका बिरा दानी । माँगि दान जउस जग न आनी ॥२

पान दिलावहि लीन्ह न सोई। पुरुख माँग के माँगी जोई ॥३
अइस दान जग काऊ न लिया। कहि तइस जो काउ न दिया ॥४
देस देसन्तर मानुस जाई। महरी बंस बाप औ भाई ॥५
ठाँर ठाँर जो मनुसें इहँ महँ, एक एक लेहिं।६
घर महँ लोग संखँ मरहिं, बाहर पाउ न देंहि ॥७

३१८

(मनेर १५७अ)

दास्तान रवान शुदने बावन तरफे खानये खुद

(बावनका अपने घर लौटना)

घपर जाइ राइ गुहरावा। कउतुक एक चोर दिखरावा ॥१
तिरिया एक जो दयी बफायी। सरग हुतैं जनु आछरि आई ॥२
अइसी तिरिया कितहूँ नहि देखेउँ। चाँद तरायीं एक न लेखेउँ ॥३
पुरुख एक अहै वहि पासा। देखत दुहु कहँ गयी सुर सासाँ ॥
और पिटार सब सोने भरा। अइस न जानउँ किह कँह धरा ॥५
चलहु राउ वहि मारि के, तू लै अबई जाइ।६
घरहिं माझ होइ उजियारा, अस तिरिया जो आइ ॥७

टिप्पणी—कडवकका शीर्षक विषयसे से सम्बन्ध नहीं रखता। ऐसा जान पडता है कि लिपिक उससे सम्बद्ध कडवक लिखना छोड गया है।

३१९

(मनेर १५७ब)

दास्तान बाज सुस्तैद शुदन व आमदने राव गँगेव मर लोरक

(राव गँगेवका तैयार होकर लोरकके पास आना)

पहिले लोरक राइ घर आवा। फिर गँगेउ गढ़ होइ आवा ॥१
चाँद लेंउँ तोहि सरग चलावउँ। सरग तरायीं माँझ चमावउँ ॥२
कहा लोर तुम्ह खाँड सँभारहु। मुहि मेंउ गँगेउ तुम्ह न पारहु ॥३
एक खाँड लोरिक तस लावा। फिर फाट तातर महँ आवा ॥४

बाप बाप कै आप उधारसि। मिलैं माइ कै दै ब्रिउ हारसि ॥५
कहसि चेर तोर हौं, होई हौं अगसर के मुँह लाग ।६
कहा लोर सेउँ सेवक, गँगेउ अइस बोल कहि भाग ॥७

टिप्पणी—(१) घर आधा—'गुहराधा' अथवा 'दिराधा' पाठ भी सम्भव है। पूर्व प्रसंग स्पष्ट न होनेसे पाठका निश्चय करना सम्भव नहीं है।

३२०

(रीलैण्ड्स २४८ : बम्बई ४४)

जंग करदने लोरक बा कोतवाल व दियादानी

(लोरकका कोतवाल और दियादानोंसे युद्ध)

लीन्हे डाँक फिरा कोतवारा[१]। बोलत बोलि माँछ सँहि[२] मारा ॥१
देखि अकेरैं[३] चितँहि न लावहिं[४]। दुँह मँहि अनें लै चाहहिं[५] ॥२
देहि दान औ विनति कराहीं[६]। करा[७] चलहु राजा पहँ जाहीं ॥३
कहा न सुनै[८] औ दान न लीन्हें। बात कहत[९] अनऊतर दीन्हें ॥४
लोरक चाँदहि अस मत कही[१०]। अस मनुसँ कै वैरी भई[११] ॥५
लोरक खड़ग हयवासा, चाँदैं धनुस चढ़ाइ।[१२]
दोउ जन सबही मारे, जान न कोऊ पाइ[१३] ॥७

पाठान्तर—बम्बई प्रति—

शीर्षक—नशिस्तने जशपातिदान दरमियाने राह आमदने चाँदा व लोरक (चाँद और लोरकके मार्गमें दानियोंका बैठना)।

१—बैठे दानी औ पतवारा। २—मदु। ३—पावेहि। ४—लावा। ५—दोउ महँ एक लै रह धावा। ६—दान देहि औ विनय कराहा। ७—पहँ। ८—देहन। ९—कल बोलत। १०—लोर चाँद दुहुन करि भई। ११—अस विनती कहि औ रह गई। १२—लोर कर हयवासा औढ़न, चाँदा धनुक चढ़ाउ। १३—दोउ जन सबै मारेसि, जाइ न कोऊ पाउ॥

३२१

(अनुपलब्ध)

३२२

(रीलैण्ड्स २४९ बम्बई ४५ मनेर १५१ अ)

गिरफ्तार शुदने बिया व दस्त बुरीदने लोरक

(बियाका पकड़ा जाना और लोरकका उसका हाथ काटना)

बियादानि[1] जीत कर गहा[2] । दस अँगुरी मुख मेलत[3] अहा ॥१
कहा[4] बीर मुँहि[5] देहु[6] जिउँ दानू[7] । जीउ छाडि काटु[8] मकु कानू[9] ॥२
मूँड मूँडि सभ चोरै धरे[10] । हाथ काट अँगुरा[11] भुँई परे[12] ॥३
नौखँड प्रिथमी सुना[13] न काऊ । अइस दान को देहि[14] बटाऊँ[15] ॥४
अस कहि दानि अन्यायी होई[16] । जो जस करै पाउ तस सोई[17] ॥५
मुँह कारा[18] कै[19] बिया,[20] पठवा[21] बेल बँधाई ।६
आपुन राउ[22] करंका, बिया[23] बेग हँकारहु[24] जाइ ॥७

पाठान्तर—बम्बई और मनेर प्रति—

शीर्षक—(ब०) खुसूमत शुदन बाज गवालियान व लोरक बा चाँदा (लोरक और चाँदका दानियोंकी मरम्मत करना), (म०) दास्तान इज्जो इल्हाज कर्दने बुदई पेशे लोरक (बुदईका लोरकसे अनुनय करना)। दोनों ही प्रतियोंमें पंक्ति ४ और ५ क्रमश ५ और ४ है।

१—(ब०) बिया लोर, (म०) बुदई जाइ। २—(म०) धर कहा। ३—(म०) दस अँगुरी मुँह मेलत (?)। ४—(ब०, म०) कहइ। ५—(ब०) मुहि, (म०) मोहि। ६—(म०) दे। ७—(ब०) जिय। ८—(ब०, म०) दानूँ। ९—(ब०) कहा नाक औ काट कानूँ, (म०) छादेऊँ नाक और काटउँ कानूँ। १०—(ब०) मूँड मूँडि सर जोरिया परी, (म०) मूँड मुडाइ सर जोरैं धरीं। ११—(ब० म०) अँगुरी। १२—(म०) परी। १३—(ब०, म०) प्रियमीं सुनाँ। १४—(ब०) देइ, (म०) दई। १५—(म०) न पाऊ। १६—(ब०) अस अन्याई दानि न होई, (म०) अइस दानि अन्याइ न होई। १७—(म०) होई। १८—(ब०, म०) मुख कारी। १९—(ब०) कर। २०—(ब०) बुदया, (म०) बुदई। २१—(म०) पैठि। २२—(म०) गाइ। २३—(म०) 'बिया' शब्द नहीं है, (ब०) बुदई। २४—(ब०) बुलावँहु। २५—(म०) जाइ जाइ।

टिप्पणी—(१) जीत कर गहा—'चेत कर कहा' पाठ भी सम्भव है।

(४) प्रिथमी—पृथिवी।

(६) पटवा—भेजा। बेल—सिरफल : श्रीफल, एक फल जिसका छिल्का अत्यन्त कड़ा होता है।

(७) हँकारहु—पुकारो।

३२३

(रीलैण्ड्स् २५० : मनेर १५९ब)

आमदने बिद्या पेशे राव व फरियाद कर्दन

(बिद्याका रावके पास जाकर फरियाद करना)

कटि हाथ मुख कीन्हा[१] कारा। बाँधे बेल तिंह जोरी बारा[२] ॥१

इहिं बर बिद्या[३] जाइ तुलानाँ। देखि नगर महँ[४] परा भगानाँ ॥२

देखत लोग अचम्भें[५] रहा। पूछत[६] बात न बिद्यहिं[७] कहा ॥३

बिद्यइँ राइहँ कीन्ह[८] पुकारा। हुत जेवनारहिं राउ हकारा[९] ॥४

बिद्यहिं राइहँ कीन्हि (जुहारा)[१०]। पूछा राउ कैं यह सारा[११] ॥५

कौन घरें अस राजा, आवा देस हमार[१२] ॥६

राउत पायक बँहिको, लागो जाइ गुहार[१३] ॥७

मूलपाठ—(५) जुहारु।

पाठान्तर—मनेर प्रति—

शीर्षक—दास्तान दस्तो गश्त बुरीदने लोरक ऊ रा (लोरकका उसका हाथ कान काट लेना)।

१—हाथ काटि कीन्हों मुख। २—बाँध बेल औ जोरी बारा। ३—इहँ बिध बुदई। ४—म०—सभ। ५—अचम्भो। ६—पूछहि। ७—बुदई। ८—दानी कपरी जाइ। ९—बईठ राइ जहाँ जेवनारा। १०—बुदइ राजहि जाइ जुहारा। ११—पूछ भैंटागी कियउँ अस बारा। १२—मरउँ बईं अस राजा, नियइ रोमत (?) हमार। १३—दानी मार फोजदार जो मारी, लागइ बेगि गुहार।

टिप्पणी—(१) कारा—काला। बेल—श्रीफल, सिरफल। जोरी बारा—केशको बाँधा।

३२४

(रीलैण्ड्स २५१ मनेर १६०अ)

पुरसीदने राव विद्या रा, व जवाब दादने ऊ

(रावका विद्यासे पूछना और उसका उत्तर देना)

बिद्याईं आन घोर[1] एक दीन्हाँ । पूछहि बात[2] सो आगैं कीन्हा ॥१
डर नहि पुरुख सो कैसें अहा[3] । कौन सँजोग कौन बिधि रहा[4] ॥२
एक पुरुस औ दूसर नारी[5] । तीसर न कोउ नाउ औ बारी[6] ॥३
अत बुध होंत बच कहल न सोई । वैं खतरी पुरुस औ जोई[7] ॥४
वह रे अचूक[8] बान सर मारइ । वह रन खेले[9] सँरग सँभारइ ॥५
देख सँजोग राइ तिहँ बोलेउँ[10], माँगेउँ अजकर दान ॥६
जन मानुस सभ[11] जीउ गँवायउँ, आपुन[12] नाकि औ कान ॥७

पाठान्तर—मनेर प्रति—

शीर्षक—पुरसीदने राव बुदई रा (रावका बुदइसे पूछना) ।
१—बुदई तुरी पल्लान । २—बात पूछि । ३—डर तिह पुरुस कर कस आही । ४—रही । ५—एक पुरुस दूसर हइ नारी । ६—तस न कउनो नाऊ बारी । ७—रूप दुहूँ कै सब जग मोहइ । रैन माँझ चाँद जस सोहइ ॥ ८—वह अचूक । ९—वह दुन खतरी । १०—दयी सँजोग दीह मत मुहि कहँ । ११—जिह माँगे जीउ । १२—उपरी ।

३२५

(रीलैण्ड्स २५२ मनेर १६०ब)

मुशावरत कदने राव करवा रा दानायान खुद रा

(राव करवा का अपने मन्त्रियोंसे परामर्श करना)

बात सुनत[1] सभ मिले सयानें । कै तुम्ह[2] नरवइ भये अयानें[3] ॥१
जो परदेसी एक नर होई[4] । लरइ जो मिले मान लैं सोई[5] ॥२
वहि कर साहन जो सुधि पावइ । दयी सँजोग दल न चलावइ[6] ॥३
जानउ बात सभै सयँसारा । एक हारि[7] औ होई मुँह कारा ॥४
बाहँ बाच दई वह हँकराई । अस खतरी जो रहु अरकाई ॥५

यह पर साध बुलाई, अमरित बचन सुनाई[9] ।६
गाँउ ठाँउ सब वहँकों[10] दीजइ, जित भावइ तित जाइ[11] ॥७

पाठान्तर—मनेर प्रति—

शीर्षक—दास्तान तरहीम कर्दन बजश मारूतने मर्दुमान (जनने आद-मियोंसे परामर्श)

१—मुनी । २—मयाने । ३—गुरु पुनि । ४—अयाने । ५—जो परदेसी आपा होई । ६—एकहि एक पियरें भोई । ७—दकी सँजोग दर बाहि बजलावइ । ८—द्वार । ९—मुहाइ । १०—तिह । ११—जित चित भावइ गुर जाइ ।

३२६

(रीलैण्ड्स २५३ : मनेर १६१अ)

फिरस्तादने राव करका दह जुन्नारदारान रा बरे लोरक

(राव करंगाका दस ब्राह्मणोंको लोरकके पास भेजना)

बाँमन दस विधवाँस बुलाये । बोल[1] बाच दै राउ[2] चलाये ॥१
जिहँ पर[3] आवइ तिहँ फुन[4] आनहु । जो[5] यह कहै सोइ तुम्ह मानहु ॥२
कहाँ दानि हुत यह अन्यायी[6] । नॉक कान मल कूँचि कटाई[7] ॥३
औंर जो मारें[8] यह कोतवारा[9] । तिहि[10] औगुन है नियाउ तुम्हारा ॥४
राइ पूर[11] दई तुम्ह हँकराई । जब चित पावई तब उठ जाई[12] ॥५
हम राजा[13] के परजा, विधवाँस पण्डित सभ आह[14] ॥६
दिस्टि पसार देखँ को पावइ, इतँ चूकत काह[15] ॥७

पाठान्तर—मनेर प्रति—

शीर्षक—दास्तान तल्बीदने राव जुन्नारदारान (रावका ब्राह्मणोंको बुलाना)

१—बाथ (?) । २—राइ । ३—विधि । ४—विधि । ५—जब । ६—कहँहु दानी हुते अन्यायी । ७—कीन्हि कटाइ । ८—कुतवारा । ९—औ तिह । १०—बाथ (?) । ११—पुनि चित भावइ तुम्ह जाई । १२—राजा (?) । १३—औहि । १४—दिस्टि अपार देखरो पारै, जैन जगत कह आह ॥

३२७

(रीलैण्ड्स २५४ · बम्बई २७५)

आमदने जुन्नारदारान व गुफ्तन लोरक रा-

(ब्राह्मणोंका लोरकसे आकर कहना)

बाँभन जाइ सो दीन्हि असीसा[1] । बात सुनत सभ[2] उतरी रीसा ॥१
लोरक कहा चाँद कस कीजइ । इहँ बाँभन का[3] ऊतर दीजइ ॥२
बहुतै जन[4] हम इहँके मारे । मूँड़ काट के दीन्ह अदाये[5] ॥३
जे पर राजा लागि गुहारा । झूझ मरत कै दयी उभारा[6] ॥४
राजा आह भल उहै नियाई । सुनके बात तिहिं कहसि पठाई[7] ॥५
मता जो हम तुम ऊपजै, चाँदा अउर न कोऊ आह[8] ।६
माइ बाप बन्धु कोउ नाहीं, बाँभन पूछहु काह[9] ॥७

पाठान्तर—बम्बई प्रति—

शीर्षक—रसीदने जुन्नारदारान बर लोरक व चाँदा (लोरक और चाँदके निकट ब्राह्मणोंका आना)

१—बाँभन दीन्हि आइ असीसा । २—मन । ३—ई पहुनहि (!) कस । ४—बहुत लोग । ५—मूँड मुँडाइ जो सीस निसारे । ६—जे ऊपर अब उठै गुआरी । जूझि मरै जो लागि गुहारी ॥ ७—राउ बरा औ अहै नियाई । धन पान दइ बाच पठाई ॥ ८—सोई पर भल आहि । ९—भाइ बन्धु लोग न कुटुँबा, पहुन (!) पूछ अब जाहि ॥

३२८

(रीलैण्ड्स २५५ : बम्बई २८ : मनेर १६१ब)

बाज आमदने जुन्नारदारान मर लोरक कलामे राव करका

(ब्राह्मणोंका आकर लोरक से राव करंका का सन्देश कहना)

एक बाँभन गा फिरि[1] दस आये । बचन राइ कै आइ सुनाये ॥१
चलहु लोर अपने पाँ[2] धारहु । हम जियतं जीउ जिन हारहु[3] ॥२
चला लोर[4] सँजोइ[5] उतारा । आउ करंका राइ जुहारा ॥३
बहुतै भुँइ[6] चलि[7] हम आये । राजा सोरु[8] धरी सँताये[9] ॥४
नैन न देखा सुनाँ न काऊ । दुहुँ महँ दान लीन्ह चटाऊँ[10] ॥५

-

बरह[11] विरोधे[12] नरवइ, छाड़ि चले घर बार ।६
हमरे अकेले दो मनइं, न बिचारी कुतवार[14] ॥७

पाठान्तर—बम्बई और मनेर प्रति—

शीर्षक—(ब०) गुफ्तने जुनारदारान बर लोरक व चाँदा अब फ़रवान वर्दन पेशे राय (लोरक और चाँदसे ब्राह्मणोंका रावके पास तत्काल चलनेको कहना)। (म०)—रफ़्तने लोरक पीशे राय करबा (लोरकका राय करबाके सम्मुख जाना)

दोनों प्रतियोंमें पंक्ति १ और २ क्रमशः २ और १ हैं।

१—(ब०) गै पुनि। २—(ब०) आपुन पा; (म०) आपुन पाउ। ३—(ब०, म०) हम जियतें मन महँ जिन हारहु। ४—(ब०) लोरहि। ५—(ब०) मॅजो, (म०)—सँजोइ। ६—(ब०) जाइ करबा राउ, (म०) राउ करबा जाइ जुहारा। ७—(ब०, म०) भुवि। ८—(ब०) चली, (म०)—चलत। ९—(ब०) राइ सेउँ हम, (म०) रै सो हम। १०—(ब०, म०) सताये। ११—(म०) दुँह महँ एक दान ले राउ, (ब०) दुँहु मह एक ले दान राऊ। १२—(ब०; म०) बीर। १३—(म०) सिरोधै। १४—(ब०) हमरे अकेले आह दो जन, भाइ बीर बरबार, (म०) हम अकेल दोइ मानुस, बैरी भा सबँसार।

टिप्पणी—(७) मनइं—मनुष्य, व्यक्ति।

३२९

(रीलैण्ड्स २५६ : बम्बई २९ : मनेर १६२ (१) ब)

जवाब दादन राव मर लोरक रा

(रावका लोरकको उत्तर)

सुनि राजें[1] अस उतर दीन्हा। जो हम बूझी[2] सो[3] तुम कीन्हाँ ॥१
अजँ कहु[4] मो बात कराऊँ[5]। कै मारौं कै सूर फिराऊँ[6] ॥२
सीस नाइ लोरहिं[7] अस कहा। गरू नरिन्द[8] राउ तूँ अहा ॥३
मेदिन कहँ बड़ा हुँत राऊ[9]। राइ हुतें है बड़ा नियाऊ[10] ॥४
तुम्ह नरवइ नियाउ सब जानहु[11]। जो गुर करहिं देस धर आनहु[12] ॥५
मारग चले चहूँ दिसि, लोग असीसें तोहि ।६
जो रे संतावइ कोइ, सो हत्या फुनि मोहि[13] ॥७

पाठान्तर—बम्बई और मनेर प्रति—

शीर्षक—(ब०) जवाब गुफ्तन राव करगा लोरक व चाँदा रा (लोरक और चाँदको राव करगाका उत्तर); (म०) रीलैण्ड्स प्रतिके समान। १—(ब०) राजा : (म०) राजैं। २—(ब०) बूझी : (म०) चाहँहि। ३—(ब०; म०) सो। ४—(ब०) कहु अबहूँ। ५—(म०) अजहूँ कहु सो रही करौं। ६—(ब०) जी मारे के सूरि फिराओ; (म०) जी मारौं कै सूरी मरो। ७—(ब० म०) लोरक। ८—(ब) नरिन्दर। ९—(ब०) मेदिन कहै बडा है राऊ। (म०) मेदिन कहै भला है राऊ। १०—(ब०) राउ हुतैं न होइ अन्याऊ; (म०) राय हुतैं बड होइ न काऊ। ११—(ब०) तुम नरवइ अन्याउ न जानहु, (म०) औ तुम्ह नरवइ नियावहि जानहु। १२—(ब०) जो बुर करहि देस कहँ पानहु, (म०) जो भल होइ सोइ तुम्ह मानहु। १३ (ब०) राजा मया करउ तुम, हरदी पठवहु मोहि, (म०) राजा मया मोह कर, हरदीं पठवहु मोहि।

३३०

(रीलैण्ड्स २५७)

दादन राव करंगा बर लोरक

(राव करंगाका लोरकके प्रति उदारता प्रकट करना)

राजैं आगै लोर हँकारा। अँकवन लाइ पाट बैसारा ॥१
पूछइ बात लोर महँ कहऊ। माँस चार तुम इहवाँ रहऊ ॥२
पुनि मैं पठउब पाटन लोरा। बार न बंका होइ जिहि तोरा ॥३
चाँदहि आन मँदिर बैसावहु। तुम्ह सँजोइ बतसार उतारहु ॥४
घोर आन बाँधहु घोरसारा। हमार कुटुँब जानउ परिवारा ॥५
सुन लोरक अस बर्त, राजा हम न रहाहिं ।६
गोवर छाड़ हम आये इहवाँ, अब हरदीं दिसि जाहिं ॥७

टिप्पणी—(१) अँकवन—अंकमें।
(२) इहवाँ—यहाँ।
(३) पठउब—भेजूँगा। बंका—बाँका, टेढा।
(६) रहाहिं—रहेंगे।
(७) जाहिं—जा रहे हैं।

३३१

(बम्बई ३० . मनेर १६२ (१) ब)

सुनीदने गुफ्तारे लोरक मरहमते कर्दने राजा बर लोरक

(लोरककी बात सुनकर राजाका लोरकपर उदारता दिखाना)

सुनि राजा अस किन्हि बिसाऊ। भाड हमार जो आह घटाऊ ॥१
दीन्हि सिंघासन (अउर)[1] तुरंगा[2]। पन्थ लाग तुम्ह राइ करंका[3] ॥२
टका सहस[4] परसाध दिवाई। [तुरत बेग पतरा लेइ आई][5] ॥३
सेउ करो[6] जो इहवाँ रहहू। जो मन मान तिंह तुम्ह जाहू[7] ॥४
तिह के बात न पूछै कोई[8]। जिहके साथ तिरी एक होई ॥५
राइ बाँभन दुइ दीन्ह[9], जित भावइ तित जाहु ।६
घर कै कही न पारौ, मया[11] करहु तो रहाहु ॥७

मूल पाठ—(२) आवउ (अलिफ, वाव, वाव)। 'रे' के स्थानपर 'वाव' लिपिकी भूल है।

पाठान्तर—मनेर प्रति—
शीर्षक—मरहमत कर्दने राव करका बर लोरक (राव करकाका लोरकके प्रति उदारता प्रकट करना)
१—अउर। २—तुरगू। ३—पन्थ लाग तुम्ह लाग करकू। ४—लाख। ५—लै आयी। ६—करहु। ७—नहिं जो मन होइ तिहवाँ जाहू। ८—बात करै न कोई। ९—जो परदेसी सहँग होई। १०—राइ बाँभन दस दीन्हे, अगुवा। ११—मयार।

३३२

(रीलैण्ड्स २५८ : मनेर १६२ (२) अ)

अर्ज दाश्त कर्दन लोरक पेशे राव करका

(राव करकासे लोरकका निवेदन)

सुन राजा[1] एक बचन हमारा। हौं आस चाहौं चेर तिहारा[1] ॥१
हरदीं आहि हमारा[1] लोगू। मन धरि चले दोउ तिहँ जोगू ॥२
अस सुन राइहि बीरा दीन्हा[1]। सीस नाइके लोरहिं लीन्हा[1] ॥३

दीन्हि सिंघासन औ तुरंगू । पंथ लाइ तुम्ह रायि करकूँ ॥४
उतरे आइँ बाँभन के अनासा । मँगता मिलया आइ जिह पासा ॥५
पलेउँ रात सपूरन सूते, फूलहिं सेज निछाइ ।६
बास लुबुध भुअँग एक आना, अउतहिं चाँदहि खाइ ॥७

पाठान्तर—मनेर प्रति—

शीर्षक—अज कदने लोरक राव रा बाजी मदुम (रावत लोरकका निवदन)
इस प्रतिमें पंक्ति ४ नहीं है। उसके स्थानपर पाँचवीं पंक्ति है। पाँचवीं पंक्तिके स्थानपर एक नयी पंक्ति है।

१—सुनहु राउ। २—रहे चले सो बाँध तुम्हारा। ३—हमारउ। ४—राइ उतर सुन बीरा दीन्हा। ५—सीस चढाइक लोरक लीन्हा। ६—यह पंक्ति नहीं है। ७—जाइ। ८—अनसा (लिपिक 'नून' के बाद 'अलिफ' लिखना भूल गया है।) ९—मँगता आइ मिले जिह पासा। इसके आगे पाँचवीं पंक्ति रूपमें नयी पंक्ति है—जाकहि कछू हाथ कै देइ। जस बीरत आपु कह लेइ॥ १०—भइ। ११—अवनि सेज बिछाइ। १२—म०—बास लुबुध भुअंग न मानी, चाँदह खाइ अघाइ।

टिप्पणी—पंक्ति ४ और कड़वक ३३१ की पंक्ति ९ एक समान है। सम्भवतः यह पुनरुक्ति लिपिकके प्रमादका परिणाम है।

३३३

(मनेर १६१ (२) ब)

दास्तान बेहोश गुश्तने चाँदा बसुन्नदे खुदन मार

(साँपके डसते ही चाँद का मूर्छित हो जाना)

डँसतहि चाँद भई अँधियारी। नैन भरत निसँभर गइ सारी ॥१
खतरी खाइ चला फुफकारी। लोर नीर सुनि लागि गुहारी ॥२
पेट पयान लोर कर गहा। तम देखसि जस ठाउ न अहा ॥३
मार भुअँग लोर जो आना। चाँद मुई लोरक धनराना ॥४
लोरक बाँभन सूत जगायउ। घर घर कहहीं सिंह खायउ ॥५
निफर सूर जब अँथना, परा धरहि घर सोक ।६
तिरिया पुरुख ऊपर कियो, तिंह बिधि दीन्ह बिजोग ॥७

३३४

(मनेर १६३अ)

दास्तान कर्दन लोरक अज सोचे चाँदा

(चाँदके विरहमें लोरक)

सात देवस लगि सरग डफारा । सोक सँचर आन भिसियारा ॥१
राहु केतु यह देखत आहा । सुरज सनेह पाउँ न अहा ॥२
सुक्र बिरसपति दोउ बुलाये । चाँद क चितयत गरह दुहुँ आये॥३
चरु महि लेकर मारि अदावहु । चाँद मोर पिय आजु जियावहु ॥४
गगहा बिछा कीन्हा पै धरी । मै सॅग आगों होइ गिरी ॥५
सुरज क रोवत तरॅई, औंर नखत को आह ।६
वहिक झार सरग सब जरै, अउर धरति को आह ॥७

३३५

(मनेर १६३ब)

एज्जो इल्हाहोजारी कर्दने लोरक

(लोरकका विलाप)

रैन भोंग परकाट्र सूरा । जैं र सुनों सो धाहहिं आवा ॥१
तन्त न मन्त न औखद मूरा । औंर सहेलिहैं चन्हन तोरा ॥२
लोरक बीर बहु कारन करई । चाहि कपारैं जुन्त दै मरई ॥३
जिहि लगि तजेउँ मभ घर बारू। तिहि बिन कस अब जीउँ अधारू॥४
चन्दन काटि कै चितइ रची । आन आग तिंह ऊपर सजी ॥५
लै बैसन्दर बारी, फर्मै धरि सरियाइ ।६
दयी गुनी एक आनाँ, चाँदा लीन्हि जियाइ ॥७

टिप्पणी—(१) जैं—जिसने । धाहहिं—दौडा हुआ ।
(२) चन्दन—बन्धन ।
(६) बैसन्दर (स० वैश्वानर>प्रा० वइस्साणर, वइसाणर>वैसाँदर)—अग्नि । बारी—जलाया । सरियाइ—सजाकर ।
(७) गुनी (गुणी)—गारुडी, सर्पवैद्य । लीन्हि—लिया ।

३३६

(मनेर १६४अ)

दास्तान आमदने गारुरी न गुफ्तने मन्तर बर चादा

(गारुड़ीका आकर चाँदपर मन्त्र फूँकना)

सवन लागि मन्त्र उँह कही । सुनतहि लोग अचम्भौ रही ॥१
भरि एक रात चाँद हुत डसी । डसतहि मुई न बिसकर बसी ॥२
अगनित गुनी सभै चलि आवा । होई अकारन मरन न पावा ॥३
जियतैं जीउ न काहूँ माई । डसतहि मुयई परट घर आई ॥४
अब सो गुनी मन्त्र एक बोली । सुन बाजा हबराकस दोली ॥५
देख गुनी मन चिन्ता, अखेउँ मन्त्र एक बार ।६
गुरु कै बचन सँभारउँ, जीउ देइ करतार ॥७

३३७

(मनेर १६४ब)

दास्तान जिन्दाशुदने चाँदाका बेफरमाने खुदाताला

(ईश्वरेच्छासे चाँदाका जीवित होना)

पिरम मन्त्र जो गारुड़ पढ़ा । बँकर लहर सुन चाँदहि चढ़ा ॥१
कर कंगन अभरन सभ दीन्हा । औ सो गारुड़ माँगि कै लीन्हा ॥२
हरदीं समत चले फिर आयी । कीन्हि सिंघासन चाँद चलाई ॥३
दुँहु कै मन कै पूजी आसा । कहहिं बहुत मन भोग बिलासा ॥४
अलखनिरंजन जाहि जियावइ । दई क लिखा सो मानुस पावइ ॥५
अरथ दरब सभ सोही, चाँदा जो जीउँ संसार ।६
तुम्ह मुई तुम्हँहुत जिउ देतेउँ, मरत न लागत बार ॥७

टिप्पणी—(१) गारुड़ (सं० गारुडिक)—विषवैद्य; सर्पका मन्त्र जाननेवाला ।
(३) सिंघासन—देखिये टिप्पणी २५२।६ ।
(५) अलख निरंजन—(नाथ पंथियोंकी भाषामें) ईश्वर । जाहि—जिसको ।
दई—ईश्वर; भाग्य ।

(६) दरब (द्रव्य)—धन।

(७) बार—विलम्ब, देर।

३३८-३४३

(अनुपलब्ध। सम्भवतः निम्नलिखित कड़वक इन पृष्ठोंके हैं।)

[१]

(बम्बई ३१)

जग कर्द लोरक बा अहीरयान व बहेलियान व कुश्तन व गुरेख्तन

(लोरकका अहीरों और बहेलियोंसे लड़ना, कुछ मारे गये, कुछ भाग गये)

सभै बहलियाँ गिरे घट आनी। नियरे मींचु दयी देइ आनी ॥१
धँस बीर कोप्या सब जीउ आन। ओही धनुक परो गिउ आन ॥२
जो सँभारे सो तस मारा। को रोवइ को करइ पुकारा ॥३
एक महँ होइ उठे सोमहाई। बहु मारे बहु गये पराई ॥४
जातहिं मरहिं जान नहिं पारैं। आगैं भाजैं पाछैं निहारैं ॥५

धीं घो सहस बहेलिया, तिहकों मींचु घटान ॥६
कउवा चील्ह सो (भोग) भा, जम्बुक गीध अयान ॥७

मूल पाठ—भुग (बि, हे, गाय)।

[२]

(बम्बई ३२)

राजे चाँद व लोरक रवान शुदने चाँदा व लोरक तरफ हरदी

(चाँद और लोरकका युद्ध क्षेत्रसे हरदीकी ओर रवाना होना)

रकत रहँनी उनै गँधाई। चला लोर छोड़िहँ सो ठाँई ॥१
पुनि बीर ओढन कर लीन्हा। पुरुन दिना तब पाँयत कीन्हा ॥२
करि कै खेती सोहर सूती। चौगमी लाग निंदर भूती ॥३
रुण्ड मुण्ड मँह मेदिन पारा। बहु रोवैं बहु करहिं पुकारा ॥४
मँचरत नदी जो भई पनवारा। डाकिन जोगिन उतरहिं पारा ॥५

चलो सो बनखँड लोरक, बसेउ त्रिपिन वन जाइ ।६
पाकर रूँख देख कर, तिंह तर रहे लुभाइ ॥७

३४४

(रीलैण्ड्स २५९ ; बम्बई ३३)

माँदने लोरक व चाँदा शब दर बयाबाँ व मार खुर्दने चाँदा रा ज़ेरे दरख्त

(रात्रिके समय चाँद और लोरकका वृक्षके नीचे रुकना और चाँदको साँपका डँसना)

चलत चलत जो भइ गइ साँझा । कीन्हि बसेरा बनखँड माँझा ॥१
पाकर रूँख देखि छितनारी । तिहिं तर बसे पुरुख औ नारी ॥२
जेंइ भूँज सुख सेज डसाई । सूता सुरुज चाँद गियँ लाई ॥३
अँथवें जोन[1] भयउ[2] अँधियारा । पाछिल रात होत भिनसारा ॥४
तिहि खन बिसहर दीन्हि दिखाई । चाँदें[3] डसिकै[4] गयउ लुकाई ॥५
अस[5] सुकुमार लहर जो[6] आई, खात[7] गयी मुरझाइ ।६
एक बोल पै बोलसि चाँदा, लोरहि सोवत जगाइ[8] ॥७

पाठान्तर—बम्बई प्रति—

शीर्षक—अज रफ्तने राह शब दर आमद व फुरूद आमदन्द । ज़ेर दरख्त पाकर व मार कजीद चाँदा रा (मार्गमें रात्रि होजाने पर रुककर पाकड़के वृक्षके नीचे सो रहना और साँपका चाँदको डसना) ।

१—अथये जोन्ह । २—भई । ३—चाँदहि । ४—अति । ५—जो लहरहि । ६—खातँहि । ७—एक बोल पैं बोली चाँदं, सत लोर जगाइ ।

टिप्पणी—(१) बसेरा—निवास । माँझा—मध्य, बीच ।
(२) पाकर—पीपलकी जातिका एक वृक्ष । रूँख—वृक्ष । छितनारी—घना ।
(४) पाछिल—पिछला । भिनसारा—सुबह ।
(५) खन—क्षण, समय । बिसहर—साँप ।
(६) सुकुवार—सुकुमार, कोमल ।
(७) लहर—विषका प्रभाव ।
(८) खात—खाते ही (सर्पके विषसे प्रभावित होनेको 'लहर खाना' कहते हैं) ।

३४५

(अनुपलब्ध)

३४६

(रीलैण्ड्स २६१ : बम्बई ३४)

गिरिया करदने लोरक अज बेरोजिये चाँदा

(चाँदकी मूर्छापर लोरकका विलाप)

छाड़ेउ भाइ बाप¹ महतारी । तजेउँ बियाही मैंना नारी ॥१
लोग कुटुंब घर बार बिसारेउँ । देख छाड़ि परदेस सिधारेउँ ॥२
गाँउ ठाँउ पोखर अँबराई । परहरि निसरेउँ कवन उपाई² ॥३
अरथ दरब कर लोभ न कीन्हेउँ । चाँद सनेह देसन्तर लीन्हेउँ ॥४
बिच होइ बाट बात³ परी करतारा । न⁴ धनि भयउ न मीत पियारा ॥५
भई बात अब जानेउँ, चाँदा तोरें मरन निदान⁵ ॥६
जो जिउ जाइ कया कस देखहि⁶, मैं का करब अबान ॥७

पाठान्तर—बम्बई प्रति—

शीर्षक—तनहाई व बेकसीए खुद नमूदने लोरक अज बराये चाँदा मुग-लक शुदन (लोरकका अपने अकेलेपन और विवशता पर तड़पना और चाँदके लिये परेशान होना)।

१—बाप माइ। २—कवान पाई (काफ, नून, अलिफ, नून; पे, अलिफ, ये, नून) सम्भवतः अलिफ, नून आगे पीछे लिख गये हैं। मूलपाठ 'कँवन उपाई' है। ३—'बात' शब्द नहीं है। ४—ना। ५—भइ र बात कन जानहि, चाँदा मोर तन होत परान। ६—देखै।

टिप्पणी—(३) परिहरि—परित्याग करके। निसरेउँ—निकला।

३४७

(रीलैण्ड्स २६२ : बम्बई ३५ : मनेर १६५अ)

ऐजन

(वही)

जीउ पियारा निसर न जाई । बिन न गाँठि मरतेउँ जें खाई¹ ॥१
मरिदउँ कोइ करै जो उपकारा² । जीभ³ खाँड़ हनि मरउँ कटारा ॥२

चाँद मुयें किन पावइ[4] लोरा। साथ किये सो बहिगैं मोरा[5] ॥३
नैन नीर भरि[6] सायर पाटी। नाव चढ़ाइ चाँद गुन काटी ॥४
दयाँ[7] गुसाँई सिरजनहारा। तोहि छाड़ि कस[8] करउँ पुकारा ॥५
जस कीन्हेउँ तस पायउँ, चाँद रहेउँ[9] मन लाइ ॥६
जो बाउर मनुसैं[10] चित बाँधे, सो अइसैं[11] पछताइ ॥७

पाठान्तर—बम्बई और मनेर प्रति—

शीर्षक—(ब०) जाने खुद फिदा साख्तने लोरक अज बराये चाँदा वाकयाये हाले खुद बाज नमूदन (चाँदाके वियोगमें लोरकका आत्महत्या करने की बात कहना) (म०) गिरीस्तने लोरक व फरियाद कर्दने ऊ (लोरक का रोना और फरियाद करना)।

१—(ब०) बिस नहिं गाँठ जा मरतेउँ खाइ (म०) बिस नहिंह गाँठ मरब जो खाइ। २—(ब०) मरिहउँ कउनैं करै उपकार (म०) मारिहउँ कउनेउँ कै उपकारा। ३—(म०) जेहि। ४—(ब०) पाउब (म०) पावहि। ५—(ब०) साथ किये सो बहि गैं सभ नहि मोरा (म०) सो यहि ने तोरा। ६—(ब०, म०) मैं। ७—ब० म०) दयी। ८—(ब०, म०) किह। ९—(म०) रहेउ चाँद। १०—(ब०) मनुसै, (म०) मनुसहिं। ११—(ब० म०) अइसहि।

टिप्पणी—(१) निसर—निकल।
(४) सायर—सागर, समुद्र। पाटी—भर दिया। गुन—रस्सी।
(५) कस—किस प्रकार।
(७) बाउर—बावला, मूर्ख। अइसैं—इसी प्रकार।

३४८

(रीलैण्ड्स २६३ मनेर १६५ब)

गुफ्तने लोरक दरख्ते पाकर

(लोरकका पाकर वृक्षके प्रति उद्गार)

बैरिन भई सो पाकर रूँखा[1]। जिंह तर बसें परा महिं[2] दूखा ॥१
काटि पेड़ जरि मूर उपारौं। डार डार चीर कै बारौं[3] ॥२
सरि रच आग चहूँ दिसि बारौं। चाँद लाइ[4] गियँ आपुहिं जारौं ॥३
देस देसन्तर गये मोर लाजा[5]। सुरज चाँद कह निसि लै (भाजा)[6] ॥४

जो यह पिरत और विरी चाहउँ[८] । नरक कुण्ड मह पुरखा पाहउँ[९] ॥५

पत न होइ सत छाड़ें, हानि न होइ कुर कान ।६
तोरें बुधि चोर भजानों, धिय पराई आन ॥७

मूलपाठ—(४) भाग ।

पाठान्तर—मनेर प्रति—

शीर्षक—मलामत करदने लोरक आन दरख्त रा (लोरकका पेड़को भर्त्सना करना)

१—रूखा । २—महि । ३—डार डार कै चहली पारौं । ४—राग । ५—देस देस मुर बहि गइ लाजा । ६—सूरज चाँदहि तैं निति भाजा । ७—अब जो पिरित तिह और न चाहौं । ८—नरक कुण्ड हम पाँचा (!) पाहौं । ९—चोर बीर चोसर भँजानों ।

टिप्पणी—(१) दूखा—कष्ट, क्लेश ।
(२) जरिमूर—जड़ मूल । उपारौं—उखाड़ूँ । डार डार—डाल डाल । चारौं—जलाऊँ ।
(३) सरि—चिता ।
(५) पुरखा—पूर्वज ।
(६) कुर—कुल । कान—लाज, प्रतिष्ठा ।

३४९

(रीलैण्ड्स २१४ : बम्बई १२ : मनेर ११६अ)

गुफ्तने लोरक मर मार रा व तास्सुफ खुर्दन

(लोरकका सर्पके प्रति उद्‌गार और खेद)

कारे[१] नाग सतुर बटपारे[२] । मीत[३] बिछोह दीन्हि हत्यारे ॥१
घरु महिं खातसि बहुत रें[४] कुजाती । काहे देखी तैं मोर संघाती[५] ॥२
तोरेइ ठाँउ आइ जो बसे । पुरुख छाड़ि कित नारी डसे[६] ॥३
मन्त्र सक्ति कैं[७] सतुर चलावा[८] । कै रे नाग तू गोहन आवा[९] ॥४
कै तौं[१०] बावनबीर पठावा । चाँद डसहि[११] नाग होइ आवा ॥५

जिंह[१२] कारन मैं[१३] जीव निपारा,[१४] देखउँ भल सन्ताप ।६
तिह सेतें बिचपाही, अरमज मारी साँप ॥७

पाठान्तर—बम्बई और मनेर प्रति—

शीर्षक—(ब०) बामाद गुफ्तने लोरक वाकये हाले खुद अज बुराई चाँदा अन्देशमन्द (लोरकका सर्पके प्रति उद्गार और चाँदके लिए व्याकुल होना)। (म०) मलामत कर्दने लोरक व बददुआ कर्दने मार रा (साँपकी भर्त्सना करना और शाप देना)

१—(ब०) काले। २—(ब०, म०) बटवारे। ३—(ब०) मीत। ४—(ब०, म) र। ५—(ब०, म०) काहे दोखी मोर सघाती। ६—(ब०) *पुरुख छाडि महरिहि कस डँसे।* (म०) पुरुस छाडि कस तिरिहि डसे। ७—(ब०) कैं। ८—(ब०, म०) पठावा। ९—(ब०) कैं र काल तूँ गुहनहि लावा, (म०) कैं र काल तूँ गुहनै लावा। १०—(ब०) तुहि। ११—(ब, म०) चाँदहि डसे। १२—(ब०, म०) जिह। १३—(म०) हौं। १४—(म०) निपारउँ।

टिप्पणी—(१) बटपार—बटमार।
(२) *कुजाती—बुरे कुलमें जन्मा हुआ। संघाती—साथी।*
(३) ठाँउ—स्थान।
(४) गोहन—साथ।
(५) बावन बीर—चाँदका पति।
(६) बिचपाही—*बीच रास्तेमें। अरबज—अकारण शत्रुता उत्पन्न करना।*

३५०

(रीलैण्ड्स ३३५ : बम्बई ३६ : मनेर १६६ब)

अफसोस कर्दने लोरक अज मदहोशी चाँदा

(चाँदकी मूर्छापर लोरकका विलाप)

कै रे[१] कुदिन हम पाँयत धरा। कै रे[२] कलाप[३] मना[४] कर परा ॥१
कै रे[१] कुडुंब जिउ भारी कीन्हाँ। कै रे[२] सराप माइ मुहिं[५] दीन्हाँ ॥२
घरी धरत गा[६] पंडित भुलानाँ। कै हम कुसगुन[७] कीत पयानाँ ॥३
इत बड़ भयउँ न चाँद[८] दुरायउँ। कउन पाप दइया मैं[९] पायउँ ॥४
यह रे[१०] महर धिय नारि अदोसी[११]। कै रे[१२] निपूती चाँदा कोसी ॥५
कै गयउँ कछु दइ मुकरावा[१३], दोस भुवँगहि लाग ।६
कउन नींद तुम[१४] सूतीं[१५] चाँदा, सपनें[१६] भयउ सुहाग ॥७

पाठान्तर—बम्बई और मनेर प्रति—

शीर्षक—(ब०) बदकर्दारिये खुद नमूदन लोरक राव अन्देशमन्द गुदन बुराई चाँदा रा (लोरकका चाँदके लिए व्यथित होना और पश्चाताप करना)। (म०) याद कर्दने लोरक साअते बद अज़र रफ्तन (लोरकका कुसाइतमें यात्रा आरम्भ करनेकी बात याद करना)।

१—(ब०, म०) र। २—(ब०) के र। (म०) कै। ३—(म०) कराप। ४—(ब०, म०) माँजर। ५—(ब०,म०) र। ६—(ब०) कै र; (म०)—कै। ७—(ब०) मुहि। ८—(ब०, म०) कै। ९—(ब०) कै मैं कुसगुन, (म०) कै कुसगुन हम। १०—(ब०, म०) चाँट न। ११—(म०) हौं। १२—(ब०) यह र: (म०) बाहिर (?) १३—(ब०) चाँद न दोसी, (म०) चाँद अदोसी। १४—(ब०, म०) कै र। १५—(ब०) मैं पेहूँ कछु दइ मुकराई, (म०) कै पेहूँ कछु दइ मुकलावा। १६—(ब०, म०) तुम्ह। १७—(ब०, म०) सुतहु। १८—(म०) सपनहिं।

टिप्पणी—(१) कै—पातो। कुदिन—अशुभ दिन। पाँवत—प्रस्थान। कलाप—दुखसे व्यथित हृदयसे निकला हुआ शाप।

(२) सराप—शाप। माई—माँ, माता।

(३) घरी—घड़ी। घरत—रखते हुए। गा—गया, 'का' पाठ भी सम्भव है। उस अवस्था में अर्थ होगा—क्या। कुसगुन—अपशकुन। कीत—किया। पयानाँ—प्रस्थान, रवानगी।

(४) इत—इतना। चाँट—चींटी। दइया—दैव, ईश्वर।

(५) अदोसी—निर्दोष। निपूती—सन्तानहीन स्त्री। कोसी—शाप दिया।

३५१

(रीलैण्ड्स २६६ · बम्बई ३७ : मनेर १६७अ)

ऐज़न

(वही)

नाग भेस होइ[१] धनि धरी[२]। लोरहि राम अवस्था परी ॥१
रामहिं हनिवन्त भयउ संघाता। मुहिं न कोइ बरु दई[३] बिधाता ॥२
मरिहउँ कोई जो करइ उपकारा[४]। सिरजनहार देयहि[५] निस्तारा ॥३
हनिवन्त सीता कह घसि मारी। लंका खोंट खोंट कै[६] जारी ॥४
हौं पुनि[७] चाँद हरी जो पाऊँ[८]। लंका छाड़ि पलंका जाऊँ[९] ॥५

औखद मूरि चाँद किंह[15] जियैं,[16] कोऊ दे बताइ[17] ।६
सातो बादर[18] सात भुईं, इक इक ढूढउँ[19] जाइ ।।७

पाठान्तर—बम्बई और मनेर प्रति—

शीर्षक—(ब०) बाकये हाले खुद नमूदने लोरक जज (?) राम रा उफ्तादने बूद बराये सीता रा (सीता हरणसे राम की जो अवस्था हुई थी उससे लोरकका अपनी अवस्थाकी तुलना करना)। (म०) फरियाद व जारी कर्दन लोरक व गरीबी व तनहाई खुद रा (लोरकका अपनी विवशता और असहाय अवस्थापर खेद करना)।

१—(ब०, म०) होइ कै। २—(ब०, म०) हरी। ३—(ब०) केउवन, (म०) कोउएँ। ४—(ब०, म०) दूसर न केउ जो करि उपकारा। ५—(ब०, म०) देहि। ६—(ब०) फिर। ७—(म०) फुनि। ८—(ब०) हौं जो चाँद हरी सुन पावउँ। ९—(ब०) धावँउँ। १०—(ब०, म०) जिहँ। ११—(ब०) जीवइ (म०) फिरै। १२—(ब०) जो केउ दइ देखाइ, (म०) जौं कोई देइ देखाइ। १३—(ब०, म०) सरग। १४—(म०) हेरउँ।

टिप्पणी—(१) धनि—स्त्री, पत्नी। परी—पड़ा।

(२) भयउ—हुए। सघाता—साथी, सहायक।

(३) सिरजहार—सृष्टिकर्ता, ईश्वर। देवहि—दे। निस्तारा—छुटकारा।

(४) खोंट खोंट कै जारी—चुन चुन कर जलाया।

(५) लंका छाडि पलका जाऊँ—इस मुहावरेका प्रयोग कुतबन और जायसीने भी किया है (मिरगावति १०२।१, पदमावत २०६।३, ३५५।३)। भोजपुरी क्षेत्रमें यह मुहावरा आज भी बोल चालमें प्रचलित है। निकटवर्ती उपलब्धिको छोड़कर किसी दूरस्थ वस्तुके लिए प्रयास करनेके प्रसगमें लोग इसे चरितार्थ किया करते हैं। प्रस्तुत प्रसगमें भाव इससे कुछ भिन्न जान पड़ता है। असम्भवको भी सम्भव कर दिखानेकी हिम्मत व्यक्त करनेके लिए कविने इस मुहावरेका प्रयोग किया है। जिन दिनों इस मुहावरेने रूप धारण किया उन दिनों, जान पड़ता है, लंका जाना भी सुगम न था और पलका तो कोई ऐसी जगह थी जहाँ सामान्यत पहुँचना असम्भव समझा जाता था। पलका (स० पाताल लंका > पायाल लंका > पायाल्का > पाल्का > पल्का) नामसे ऐसा ध्वनित होता है कि लंका की तरह वह कोई अति दूरवर्ती द्वीप था। हो सकता है

द्वीपान्तर (हिन्द एशिया)के द्वीप-समूहों) के किसी द्वीपको पल्का कहते रहे हों। मलयस्थित पेनांगका भी नाम पल्का हो सकता है। किन्तु जायसीने पल्कामें शिवका निवास बताया है। (२६६।३-४)। सम्भव है शिवके निवास कैलाशको पल्का कहते रहे हों। इस सम्बन्धमें द्रष्टव्य है कि एलोराके कैलास मन्दिरके दोनों ओर जो गुफा-मण्डप हैं, उनमेंसे एकको लंका और दूसरेको पल्का कहते हैं।

(७) बादर—बादल, आकाश, यहाँ तात्पर्य स्वर्गसे है। भुई—भूमि।

३५२

(रीलैण्ड्स २६७अ : बम्बई ४६ : मनेर १६८अ)

ऐजन

(वही)

संग न साथी में में रोवा। मीत जो होत[1] सो दई बिछोवा ॥१
आँसु सायर भरा पटाई। नैनहिं बनखँड[2] रोइ बहाई ॥२
कर गहि[3] चाँद चाँद गुहरावइ। धुनि धुनि सीस नारि पै[4] लावइ ॥३
उतर न देहि नारि मुख[5] जोवा। नाग[6] डसे बिस लहरैं[7] सोवा ॥४
गाँउ ठाँउ होइ तहवाँ[8] धाऊँ। बिखम उचार गुनी कित पाऊँ ॥५

माइ बाप कर दूलह, दुख न जान कस होइ ॥६
जो सर परा सो जानैं[9], दुखी होय जनि कोइ ॥७

पाठान्तर—बम्बई और मनेर प्रति—

शीर्षक—(ब०) अफसोस व जारी करदन लोरक व तनहाई खुद आवर्द (लोरकका दुखी होकर रोना और अपने अकेले होनेकी चर्चा करना)। (म०) दर तनहायगी व गरीबिये खुद गुफ्तन लोरक (लोरकका अपनी बेबसी और अकेलेपनका उल्लेख करना)।

१—(म०) होता। २—(म०) बनगढमें। ३—(म०) धर धर। ४—(ब०) पायद; (म०) धर धर सीस नार पाँ। ५—(ब०) न देहि लोर मुँद, (म०) न देइ लोर मुँद। ६—(म०) गाँग। ७—(ब०) लहर नहि; (म०) लहरैंहि। ८—(ब०) तिह। ९—(ब०) परा तो जान्या; (म०) जो सर परे सोहि पै जानसि।

टिप्पणी—(१) भैं भैं—चीत्कार कर रोना। मीत—मित्र। होत—था। दई—ईश्वर। बिछोवा—बिछोह कराया।

(२) सायर—सागर। पटाई—भर गया।

(३) गहि—पकड़ कर। गुहरावइ—पुकारे।

(४) जोवा—उत्सुकता पूर्वक देखता रहा।

(५) बिखम उचार—विष उतारने वाला।

(६) दूलह—दुलारा।

(७) जनि—मत, न। 'जिन' पाठ भी सम्भव है। उसका भी यही तात्पर्य है। बोलचालमें दोनों ही रूप प्रचलित है।

३५३

(रीलैण्डस् २६०ब : मनेर ११८ब)

ऐजन

(वही)

जरम न छूट पिरम कर बाँधा। पिरम खाँड होइ[1] बिस साँधा ॥१

जिहँ यह चोट लागि[2] सो जानी। कै लोरक कै चाँदा रानी ॥२

कोइ[3] न जान दुख काहू केरा। सोइ जान[4] परे जिहँ पीरा ॥३

पिरम झार[5] जिहँ हिरदैं[6] लागी। नींद न जान चितत निसि जागी[7] ॥४

सात सरग जौ बरसहिं आई। पिरम आग कैसैं[8] न बुझाई ॥५

चिरंग एक जो बाहर मारै, येहि[9] पिरम कै झार ।६

भसम होइ जल धरती, तिल एक सरग पतार[10] ॥७

पाठान्तर—मनेर प्रति—

दर्दमन्दी व सोजे आशिकाने ईशाँ (प्रेमियोंकी व्यथा और प्रेमाग्निका उल्लेख)

१—पिरम काँड अहै। २—लागै। ३—गुपी। ४—जानइ सोइ। ५—आँच। ६—हियरै। ७—नीद जाइ तप तप (?) निसि जागी। ८—कैसेंहु। ९—ऐहि र। १०—भसम होइ जर तिन इक, धरती सरग पतार।

३५४

(रीलैण्ड्स २६८ : मनेर १६६४)

ऐजन

(वही)

जेंहि र पिरम तिंह बिरह सतावइ[1] । बिरह जेंहि तिंह पिरम सुहावइ[2] ॥१
बिरह सेलि धरी, उनियारी[3] । बेग न जोर बिरह कर मारी[4] ॥२
बिरह पीर तिंहि पूछउ जाई । जिन यह काल गर चीचें खाई ॥३
पिरम घाउ औखद न मानै । पिरम बान जिह लाग सो जाने ॥४
भल फुनि होइ खरग[6] कर मारा । जरम न पलुवहि बिरह[7] कर जारा ॥५
कोउ भाँत न जीवँत देखेउँ, 'परैं पिरम के चेलि ।६
पिरम खेल सो नै खेलैं, सो सर सेतैं खेलि[9] ॥७

पाठान्तर—मनेर प्रति—

शीर्षक—दर शौक व मुहब्बते ऊ गुफ्तारी (प्रेमके स्वरूपका वर्णन)।
इस प्रतिमें पंक्ति ३, ४, ५ क्रमशः ५, ३, ४ हैं।
१—सतावा। २—जेंहि र बिरह तिह नींद न आवा। ३—पिरम सेल उहै उनियारा। ४—परग न जाइ पिरम कर मारा। ५—पिरम घाउ नहि पूँजहि जाईं। जिह यह पाल (भाल) करेजें खाईं। ६—खाँडा। ७—पिरम। ८—कौनिउँ भाँति न छुटत देखेउँ, यँहि र पिरम कै चेलि। ९—पिरम खेल सोइ पर खेल, जो सर सेतैं खेलि।

टिप्पणी—(३) काल—तेज धार। 'भाल' पाठ भी सम्भव है। उस समय अर्थ भाला। गर—गला।
(५) पलुवहि—पल्लवित होए।

३५५

(रीलैण्ड्स २६८ब : मनेर १६६४)

ऐजन

(वही)

चाँद लागि मैं यह दुख देखी[1] । गुनित न आवइ एकौ लेखी[2] ॥१
मारेउँ गाँठ कियउँ[3] सुधराई । राखेउँ महर[4] कै महराई ॥२
परेउँ खाट लै बिरह[5] जो मारा । आइ बिरसपत दीन्हि अधारा ॥३

एक बरस मढ़ि देउर आगेउँ । जोगी भेस होइ भीख मागेउँ[१] ॥४
बरहा मेलि सरग चढ़ धायउँ । सिर सेउँ खेलि चाँद लै आयउँ ॥५
चोर चोर कर मारत उबरेउँ[९], चाँद लियउ लुकाई । ६
अब तैं[९] धनि बनखँड गै छाडेउँ, किंह घर आयउँ[१०] जाई ॥७

पाठान्तर—मनेर प्रति—

शीर्षक—दर्दमंदिये खुद गुफ्तन लोरक दरख्ते मुकाबिल (?) (लोरकका सामनेके पेडसे अपनी व्यथा कहना) ।

इस प्रतिमें पंक्ति ३ और ४ क्रमश ४ और ३ हैं ।

१—देखा । २—कउन सो लेखा । ३—किंयहुँ । ४—महरा । ५—पिरम । ६—जोगी भेस भीख फुनि मागेउँ । ७ छूटेउँ । ८—ते धनि लियउ छुडाइ । ९—तैं । १०—आवउँ ।

टिप्पणी—(२) महराई—महत्ता, बडप्पन ।
(५) बरहा—मोटी रस्सी । मेलि—फेंककर ।

३५६

(रीलैण्ड्स २६१ मनेर १६९ब)

दुअम रोज आमदने गुनी व पाय उफ्तादने लोरक मर ऊ रा

(दूसरे दिन गुनीका आना और लोरकका उसके पैरपर गिरना)

एक दिन दुरे रैन तस भई[१] । चाँद न छूटे गहन जो[२] गही ॥१
मन चिन्ता कै[३] नींद गँवानी । दयी दयी कै रैन बिहानी ॥२
लोरक देख नियर[४] भिनुसारा । चन्दन काटि कै चितहिं[५] संवारा ॥३
चाँद मॉथ लै सरि पहुछाई[६] । नैन नीर तिह आग बुझाई[७] ॥४
फिर जो दीख गुनी एक आवा । मन्त्र बोल औ डाक बजावा ॥५
घालि पाग गियँ अपनैं लोरक, परा पाइ[८] सहराइ । ६
सोवत[९] साँप डसी धनि चाँदा, सो महि देइ[१०] जियाइ ॥७

पाठान्तर—मनेर प्रति—

शीर्षक—दु शबोरोज माँदने चाँदा दर बेहोशी (चाँदका दो दिन-रात मूर्छित रहना)

१—एक दिन दूसर रैन तर भई । २—अनु । ३—चरा । ४—नियर

देव । ५—चितैं । ६—चाँद काढि कै सरि पहुँचाई । ७—आनथि आगि चाहि परजाई । ८—पाउ । ९—सूतहिं । १०—यूँ महि देहु ।

टिप्पणी—(३) नियर—निकट । भिनुसारा—सबेरा ।

(४) सरि—चिता ।

(५) गुनी—गुणी, गारुडी, विषवैद्य । डाक—डका

(६) घालि—डालकर । पाग—पगडी । सहराइ—सीधे, लेटकर ।

३५७

(रीलैण्ड्स २७० : मनेर १७०अ)

शिरीनी (?) कबूल कर्दने लोरकका मर गुनी रा

(लोरकका गुनीको मिठाई (?) देनेका वादा करना)

हाथ क मुँदरी[1] खरग[2] कटारा । कान क कुण्डर चाँद[3] गियँ हारा ॥१
अउर जो साथ गाँठ है मोरें[4] । सो फुनि देउँ बिखारी तोरें[5] ॥२
कर उपकार करै जो पारसि । पिता मोर जो महि[6] निस्तारसि ॥३
तोरैं कहें चाँद जो लहउँ[7] । दुहौं जरम चेर होइ रहउँ[8] ॥४
जो न होइ एतबार[9] हमारा । बचा बाँधि कर करहु[10] पतियारा ॥५
कोने दाव चल गेलउँ, कैं सतइस लेउ[11] ।६
जो रे बसत[12] मैं चोली, चाँद जियइ तुम्ह[13] देउ ॥७

पाठान्तर—मनेर प्रति—

शीर्षक—जरीन कबूल कर्दने लोरक हकीमे अफसून गर रा (लोरकका मन्त्र फूँकने वालेको आभूषण देनेका वचन देना) ।

१—मुँदरा । २—कमर । ३—कान कुण्ड चाँदा । ४—अउर साथ है गाँठी मोरैं । ५—देहौं सब बिखारी तोरैं । (कापका मरकज छूट जानेसे बिखारी बलहारी पढ़ा जाता है) । ६—मँहि । ७—तोरैं बचन चाँद जो पइहौं । ८—चेर तोर होहिहौं । ९—पतियार । १०—कै करु । ११—कोरिन दरभ मल मेलौं, सतसइ होइ तो लेउँ । १२—बतहि (?) १३—तू ।

टिप्पणी—(१) मुँदरि—अँगूठी ।

(२) गाँठ—पास । मोरें—मेरे । बिखारी—(स० बिषारि)—विषवैद्य ।

(३) निस्तारसि—उद्धार करे ।

(५) इतबार—विश्वास । बचा—वचन । पतियारा—विश्वास ।

३५८

(रीलैण्ड्स २७१ : मनेर १७०ब)

मन्तर ख्वानीदने गुनी व होशियार शुदने चाँदा

(गुनीका मन्त्रोच्चार करना और चाँदका जीवित होना)

कउन लोग तुम्ह गरुड़ि पूछी । ठाँउ कहु औ जातहि बूझी ॥१
जात गोवार गोबर मोर ठाऊँ । धनि चाँदा महिं लोरक नाऊँ ॥२
गुनी कहा जिन जीउ डुलावसु । घीर बँधहु अब चाँदहि पावसु ॥३
बोलि मन्त्र छिरकसि लइ पानीं । उतरा बिस चाँद अँगरानीं ॥४
धाइ लोर धर बाँह उचाई । पिरम पियार चाँपि गियँ लाई ॥५
सरग हुत चाँद उतरि जनु आई, देख सूर बिहसान ।६
कँवल भाँति मुख बिगसा, दुख जो होत कुँभलान ॥७

पाठान्तर—मनेर प्रति—

शीर्षक—पुरसीदने हकीम जात व नामे लोरक व चाँदा (चिकित्सकका लोरक और चाँदका नाम और जाति पूछना)

१—नाँउ कहु । २—जातो । ३—मुर । ४—है । ५—बाँधहु । ६—चाँदा । ७—पानी । ८—म०—चाँदा अँगरानी । ९—सरगहि चाँद उतरि जनु, देखि लोर बिहसान । १० कुँभलान ।

टिप्पणी—(२) गोवार—ग्वाल ।

३५९

(रीलैण्ड्स २७२)

होशियार शुदने चाँदा व दादने लोरक गुनी रा जेवर

(चाँदका उठ बैठना और लोरकका गुनीको आभूषण देना)

हिया सिरान जरत जो अहा । छूटि चाँद निसि गहनें गहा ॥१
लोरक होत जो आस पियासा । जियइ चाँद मन पूजी आसा ॥२
अभरन अनि कै सभ लोरा । तरुवन हाँस औ सोनें चूरा ॥३
हथपुर बोर औ कान कै पूरी । मूड़ मंग औ करँ क चूरी ॥४
हाथ क करपा सोवन नाँथी । अँगूठी मानिक कै काँठी ॥५

अनवट बिछवइ पातर, लौर चाँद कर लीन्हि ।६
अरथ दरब औ खरग कटारा, आन गुनी कहँ दीन्हि ॥७

टिप्पणी— (१) हिया—हृदय । सिरान—शीतल हुआ । जरत—जल रहा। अहा—था।

(२) तरवन—तरौना, कानका आभूषण, जिसे तरकी कहते हैं। यह फूलके आकारका गोल और रवादार होता है। हाँस—हँसली (सं०—अंसालिका), गलेका एक आभूषण जो चन्द्राकार होता है और गलेमें चिपका रहता है। चूरा—चूड़ी। 'जोरा' (जोड़ा) पाठ भी सम्भव है।

(४) हतसुर—(सं० हस्तपाटक) हाथका कड़ा। टीक—सामने मस्तक पर लगाया जाने वाला आभूषण। फूली—फूली, फूलके आकारकी कील। मूंड मंग—सम्भवतः यह मोती माँगका अशुद्ध रूप है। माँगमें भरी जानेवाली मोतियों की लड़ी। करै—कर (हाथ) का।

(५) नाथी—नथ; नाकमें पहननेका आभूषण। कंठी—कण्ठी; कण्ठ में पहनने का आभूषण।

(६) अनवट—पैरके अँगूठेमें पहना जाने वाला आभूषण।

(७) बिछवई—बिछुआ; बिछिआ। पैरकी उँगलियोंमें पहना जानेवाला आभूषण जिसे विवाहिता स्त्रियाँ ही पहनती हैं।

३६०

(रीलैण्ड्स २०३ : मनेर १०१ब)

आखिर दिसहर खण्ड चन्द तुसन परमूदने मौलाना नख्न

(मौलाना नथनका दिसहर पर कुछ कहना)

मौलाना दाउद यह गित गाईं। जें रें सुनाँ सो गा मुरझाई ॥१
धनि वे सबद धनि लेखनहारा। धनि ते बोल धनि अरथ विचारा ॥२
हरदीं आत सो चाँदा रानी। नाग डसी हुत सो महि बखानी ॥३
तोर कहा मैं यह खंड गावउँ। कथा कवित के लोग सुनावउँ ॥४
नथन मलिक दुख बात उभारीं। सुनहु कान दइ यह गुनिमारीं ॥५
औंर कवित मैं करउँ बनाई, सीस नाइ कर जोर ।६
एक एक जौ तुम्ह पूछउ, बिचार कहउँ जिह तोर ॥७

पाठान्तर—मनेर प्रति—

शीर्षक—दास्तान सिफ्ते मौलाना दाउद व गुफ्तारे ऊ (मौलाना दाउद और उनकी रचनाकी प्रशंसा)

१—दाउद कवि जो चाँदा गाई। २—र। ३—बोल। ४—आखर। ५—सुँघ रसी हौं बोर बखानी। ६—बाव। ७—सुनाउँ। ८—मलिक नयन सुनु बोल हमारी। ९—बनई। १०—एक एक बोलि मोति जस पिरवा, कहउँ जो हीरा तोर।

३६१

(मनेर १७१ब)

बिदआ कर्दने लोरक हकीम रा

(लोरकका चिकित्सकको विदा करना)

गारुर समुँद चाँद लै चला। उँहें बात कहसि अति भला ॥१
बायें दिसि तूँ लोर न जायसु। दाहिनें बाट बहुत फर पायसु ॥२
पिरम भुलान वह बोल न मानी। बाट चलत सहाइ न जानी ॥३
डांडी कै लोरक चाँद चलाई। दाहिनें दिसि वें दिस्टि मिलाई ॥४
सूर आपुन दण्ड छाड़हि कहाँ। जहाँ बरिजेहि ठाढ़े तहाँ ॥५
बार अँथवतें जाइ तुलाना, लोरक सारंगपूर ॥६
दिनकर मूंड उचावा, राता जैस सिंदूर ॥७

टिप्पणी—(२) फर—फल।
(४) डाँडी—एक प्रकारकी पाल्की।
(५) बरिजेहि—मना करे। ठाढ़े—खड़ा।
(६) बार—दिन। अँथवतें—अस्त होते ही। तुलाना—आ पहुँचा।

३६२–३७०

(अनुपलब्ध)

अनुमान है कि पंजाब प्रतिमें मात निम्नलिखित चार कडवक इस स्थानके होंगे। किन्तु उनका क्रम और उचित स्थान निश्चित करना सम्भव नहीं है।

(१)

(पंजाब [ल])

जाइ महापत [-----] चलावा । भाइ महापत असपत धावा ॥१
[——] लोरक [———] नाँ । जानु चलइ झाऊ कै बनां ॥२
[---------------------] । [-----------------] ॥३
भट लोग भये असवारा । काढ़े येलक होइ चमकारा ॥४
कहँहि लोर तैं जाहु परा[ई] । [------] कैं न नहि बड़ाई ॥५
[---] छाड़ जाहु [--------] ।६
[---------------------------] ॥७

(२)

पंजाब [ला]

लोरक हरक खेद घिराई । बीर [---------------] ॥१
[-]र गहें जिह सेज बैसा [रे] । पाउ बेरी [------------] ॥२
[-------------------]॥[--------------------]॥३
रमक बन नान क[-]वस मोही । सुर नर [च]हुत न दे[खी] तोही॥४
घर तर अछे [----]नाँ मान । चित मन भाउ [-------] ॥५
[---------------------------] ।६
[--------------------------] ॥७

(३)

(पंजाब [प])

[------------] राय महुवर लोरक रा [-----------] (!)

राजा महता एक मन्तर कीन्हा । लोर बुलाइ पान लै दीन्हा ॥१
लोरक काज अम्हारा कीजइ । चयना मोर हरेवहि दीजइ ॥२
चयना पाति आगें अरथायसु । परहितहिं पठया लोर बुलायसु ॥३
घोड़ा कापर लोरहिं दीन्हाँ । इहवहिं समुदित अंकौं लीन्हा ॥४
तोहें लोर साहि गुहरावा । चाँद तिहँ लइ कै धावा ॥५

घसति करसा नियरान, अद्वा रात जो राजा [----] ।६
घोड़ें चढ़ेउ लोरक तिहाँ, चल [----------] ।।७

(४)

(पंजाब [ला])

सुनि कै महुवर कोट उचारा । जानसि लोरक मारे [आवा*] ।।१
गढ महँ कीन्हें काव सरावा । काटधरैं [-------------]वा ।।२
[----] हम्वहि राउ हिंग [--] । हरदीपाटन देस दिखायें ।।३
हमरें अइस दुरौ न कीजउ । एक चढ़ाई भेद बहु दीजइ ।।४
अइस पुरुसैं आह सयानाँ । पुरुज तिरिया देखहि बहिराना ।।५
[-------------------------] ।६
[-------------------------] ।।७

टिप्पणी—ये चारों पृष्ठ जीर्ण हैं तथा उपलब्ध फोटोमें लाल स्याहीमें लिखी पंक्तियाँ स्पष्ट नहीं हैं । अत प्रस्तुत पाठ सम्भाव्य वाचन मात्र हैं ।

३७१

(मनेर १७३अ)

बहोश आमदने चाँदा आँजा वा लोरक गुफ्तन

(चाँदाका होशमें आना और लोरकसे कहना)

उठ गइ चाँद तें नींद भल आई । जस सपनैं हौ नागहिं खाई ।।१
कहसि विचार पंथ सर जाही । सपनहि सो ठिक बूझी नाहीं ।।२
सपनहि चार मैं सूतरा दीसी । काल्हि रैन जो वन मँह पैसी ।।३
करम हमार सिध एक आवा । जिंहहुत हम तुम्ह फेर मिरावा ।।४
पाउ सिध कै छाडेउँ नाहीं । जब लगि जीवहुँ मेउ कराहीं ।।५
देइ असीस सिध अस बोला, लोरक तूँ मुर भाइ ।६
घाट मांझ एक टूँटा जोगी. मत चाँदहि लइ जाइ ।।७

टिप्पणी—(६) मुर (मोर)—मेरा ।
(७) टूँटा—असकरी ने इसे 'तोता' पढ़ा है और उसे तोता (पक्षी) के रूपमे ग्रहण किया है पर यह स्पष्टत जोगीका विशेषण है । मनेर प्रतिके

पृष्ट १७५ब (कडवक ३७६) के शीर्षकसे जान पडता है कि उक्त प्रतिके तैयार करने वालेने इसे 'टूँटा' पढा था (उसने इससे हाथ पाँव कटे होने का अभिप्राय ग्रहण किया है)। सम्भवतः इसका तात्पर्य किसी सम्प्रदाय विशेषके योगीसे है। टूँटा या तोंता नामक किसी योगी सम्प्रदाय की जानकारी हमें नहीं है। हो सकता है यह अपपाठ हो।

३७२

(मनेर १७३ब)

चूँ लोरक, तुरा रोजे बद उफ्द मारा याद कुन

(लोरक, यदि तुम पर विपत्ति आये तो मुझे स्मरण करना)

लोरक जो तिह पीरा परही। चाँद तोर जो टूँटा हरई ॥१
दई सँवारि मुहिं सँवरसि लोरा। ठाउँ ठाउँ मैं आउब तोरा ॥२
एतना कहि सिध चला उड़ाई। चाँद लोर (दोइ) रहे लुभाई ॥३
घरि इक सिधवैं बइठ नवाई। पुनि उठ चलि कै बाट घटाई ॥४
देवस चारि जो चलतहि भये। नगर एक पैसारथ किये ॥५
लोरक कहा चाँद तुम्ह बइसहु, हौं सो नघर महँ जाउँ ।६
कनक अन औ लावती, घर जेवन कछु र कराउँ ॥७

मूलपाठ—(३) ओद।
टिप्पणी—(३) एतना—इतना; यह।
(५) पैसारथ—प्रवेश।
(६) बइसहु—बैठो। नघर—नगर।
(७) कनक—गेहूँ। अन—अन्न।

३७३

(मनेर २७४अ)

दरमियाने बुतखानए हिन्दुआन चाँदा रा माँद

(चाँदाको मन्दिरमें बैठाना)

चाँद मढ़ी वैसार छुपाई। लोर नगर महँ माँदें जाई ॥१
टूटें छपिउ देखि तों पावा। छंदलाइ चाँदा पहँ आवा ॥२

आसन मारि बैठ तिह आयी। अब मों पहँ कित चाँदा जायी ॥३
सिंगी पूर नाद तस किया। बन बैसन्दर परा तिह दिया ॥४
सुनतहिं चाँद बेधि तस गई। अपछत मरन सनेही भई ॥५
जइस अहेरिया पा बिरध, मिरिग बेधि लै जाइ ।६
टूँटा मयउँ अहेरिया, चाँदहि गोहन लाइ ॥७

टिप्पणी—(१) सौं दैं—(प्रेय वस्तुके) भयके निमित्त।
(२) छबिउ—छवि। छँदलाई—बहाना बनाकर। पहँ—पास।

३७४

(मनेर १७४ब)

चीजी अफसून ईशान कि चाँदा दीवान शुद

(उसका जादू करना, चाँदका पागल हो जाना)

सिंगी पूर मन्त्र सो लावा। चाँद सुन कछु चेत न आवा ॥१
चाँदा गोहन लइ चला भुलाई। गाउ गीत औ कछु न कराई ॥२
तइस संग भइ चाँद सुभागी। गाँउ गाँउ फिरि गोहन लागी ॥३
देखि सिथ औ कण्ठ अधारी। भूली कछु न सँभारी बारी ॥४
चाँदहि बिसरा सभ सयँसारू। बिसरा लोर जै जीउ अधारू ॥५
सुने नाद अउ रोरइ, पाछेँ हेरि न बारि ।६
लोर आइ जो देखी मढ़ी, चाँदा बिनु अँधियारि ॥७

३७५

(मनेर १७५अ)

चूँ लोरक आमद व बीनदके चाँदा दर बुतखाना नीस्त

(लोरकने लौटकर देखा कि चाँद मन्दिरमें नहीं है)

सुनि मढ़ी देखि लोरक रोवा। काहे कहँ बिधि कीन्हि बिछोवा ॥१
अबहूँ जो र सरग चढ़ धावउँ। तो वहँ खोज चाँद कर पावउँ ॥२
लोर चहु दिसि भँमि भँमि आवा। खोज चाँद कर रात न पावा ॥३
रैन गई पै चाँद न पाई। उठा सुरुज चलि खोज कराई ॥४

आजु राति जो चाँद न पाई । सारस बरु र मरउँ अदाई ॥५
ठाँउ ठाँउ जो लोरक पूछी, थ सुना एक सिघ पाइ ।६
अँथयें सुरुज चाँद जस तिरिया, टूँटा देखि लइ जाइ ॥७

टिप्पणी—(५) सारस—सारस दम्पतिका अटूट प्रेम प्रसिद्ध है। एकके मरने पर दूसरा भी अपना प्राण दे देता है।

३७६

(मनेर १०५ब)

चूँ शुनीद लोरक कि दस्त पा बुरीदः दर दरस्त

(लोरकने सुना कि उसके हाथ पाँव कटे हैं)

लोरक जो टूँटा सुनि पावा । खोजय खोज जाइ नियरावा ।
नगर एक पइसत सुधि पाई । टूँटा संग तिरिया एक आई ॥२
धीर नगर तो चाहन लागा । फीक होत टूँटा कर रागा ॥३
सुनतहि नाद लोर गा आई । देख चाँद मन रही लजाई ॥४
दौरि लोर टूँटा कर गहा । अरि भिखारि तिह मारउँ काहा ॥५
धरी जटा ले चला राउ पहँ, तोहि फिराऊँ सूरि ।६
झुँठि जटा लगि बहिरा तैं, औहट भा चलि दूर ॥७

टिप्पणी—इस कडवकका शीर्षक 'टूँटा' के शाब्दिक अर्थ पर आधारित है। विषयसे उसका कोई सम्बन्ध नहीं है।
(१) खोजय—खोजते हुए।
(२) पइसत—प्रवेश करते ही।

३७७

(मनेर १०६अ)

चश्म कुशादह कर्द व दीदने टूँटा लोरक रा

(लोरककी ओर टूँटाका आँख फाड़कर देखना)

आँखि काढ़ि के टूँटा धावा । लोर कहा हौं दीन पै खावा ॥१
लोरक भागि चला जो डराई । मन्त्र टूँटा मुहि भनम कराई ॥२

टूँटें कहाँ लौर मँगरावा । सिध बचन हुत मन महँ आवा ॥३
सिध आइ लोरक पँथ ठाढ़ा । लोरहि टूँटहि बोल जो बाढ़ा ॥४
दूनों कहहिं चाँद सुर जोई । औ तिह माँझ मुकाउज होई ॥५
चाँदा ठाढ़ी कौतुक देखइ, मुँह मँह बकत न आउ ।६
यक खेल औ गीत भुलानें, रावल सीस डोलाउ ॥७

३७८

(मनेर १७६ब)

दरमियाने जोगी व लोरक गुफ्तगू शुदन

(योगी और लोरकमें बातचीत)

सिध कहँइ तुम्ह काहे जूझहु । करहु गियान मन मँह बूझहु ॥१
सभा करहु अउ करहु बिचारा । दुँहु को जीती को दुँहु हारा ॥२
जुझइ चाहु जो पूछा भला । बाहाँ जोरे लोरक चला ॥३
चाँद साथ भई औ सिध भवा । फुँनि नगर-सभा महँ गवा ॥४
नगर उहाँ पै बइठ जो दीठी । इँदर सभा बरु सभा बईठी ॥५
सभा सँवारि जो राउत, बइठ उहाँ पै जाइ ।६
चारि खण्ड का नियाउ नियारहि, एकउ फरह न जाइ ॥७

टिप्पणी—(१) गियान—ज्ञान ।
(७) नियाउ—न्याय । नियारहि—निर्णय करते हैं । एकउ—एक भी । फरह—यह शब्द भोजपुरीमें बहु प्रचलित है और कार्यके शक्य अदायगीके प्रसंगमें प्रयुक्त होता है । यहाँ तात्पर्य 'वशके बाहर' से है ।

३७९

(मनेर १७७अ)

हर चहार कस सलाम रसीदन

(चारों जनोंका प्रणाम करना)

आइ चहूँ मिलि कीन्हि जुहारू । जूझ मरत हहिं करहु बिचारू ॥१
बोला सभा कहँहु दुन्हु आई । कहि लागि तुम्ह जूझहु भाई ॥२

एक एक आपुन बात चलावहु । झूठ साच आपुन तुम्ह पावहु ॥३
उठि लोरक तो अइसा कहा । घइठ टूँटें यह जेतक अहा ॥४
सिंगी पूर चाँद हर लीन्हा । सगरें रैन खोज मैं कीन्हा ॥५

खोजत पायउँ टूँटा, धरेउँ फेरि कै बार ।६
झूँठ जटा लाग फिराँई, जानाँ सब सँयसार ॥७

३८०

(मनेर १७७ब)

गुफ्त[न] जोगी ई ज्न मन अस्त

(जोगीका कहना कि यह मेरी स्त्री है)

पूछइ सभा कहहु यँह लोरा । कउँन लोग घर कहवाँ तोरा ॥१
कहवाँ अइसी तिरी तैं पाई । काकर धिय यह कहवाँ जाई ॥२
काहे निसरहु दोइ जन होई । इतर साथ न अहह कोई ॥३
कउन पुहुमिहुत लोरक आइह । कहवाँ जाहु कहाँ वह (जाइह) ।४
घर हुत काहे निसरे लोरा । लोग कुटुँव कछु कही न तोरा ॥५

काहि लाग तुम्ह निसरे, साच कहु तुम्ह बात ।६
हम पुन देख नियाउ नियारहि, बूझि तुम्हरी बात ॥७

मूलपाठ—(४) गाइह (जीमके ऊपर अनावश्यक मरकज असावधानी वश दिया गया है ।

टिप्पणी—इस कडवकका शीर्षक विषयसे सर्वथा भिन्न है । वस्तुतः वह कडवक ३८२ का शीर्षक है । उसे लिपिकने दुहरा दिया है ।

३८१

(मनेर १७८अ)

पुरसीदने जाते गुवाल इस्म लोरक ज्न चाँदा

(ग्वालकी जात और लोरक और चाँदका नाम पूछना)

जात अहीर हम लोरक नाऊँ । गोबर नगर हमार पुर ठाऊँ ॥१
सहदेउ महर कह चाँदा धिया । महर बियाह बावन सेउँ किया ॥२

बावन केर नारि लै आयउँ। चाँदा तिरी महर धिय पायउँ ॥३
हौं जो आइ जें गाँठा मारा। एसौं राउ रूपचंद हारा ॥४
हम पुनि हरदीपाटन चाली। राजा महुवर कें [—*] कानी ॥५
चाँद सनेह जो निसरेउँ, छाड़ि कुटुँब घर बार ।६
तुम्हरे देस यह टूँटा जोगी, रहा होइ बटपार ॥७

टिप्पणी—(७) बटपार—बटमार, बटोहियोंको मार्गमें लूटने वाला।

३८२

(मनेर १८०अ)

गुफ्त[न] जोगी कि ई जन मनस्त

(जोगीका कहना कि यह मेरी स्त्री है)

टूँटा कहै मोर यार बियाही। परी राद तोरै गवाही ॥१
सभा कहै दुन्हु अब का कीजइ। ईँह र यह कँह कस उतर दीजइ ॥२
दोउ कहहि यह मोरी जोई। ईँह दुन्हु महँ हरसाय न होई ॥३
यह टूँटा यह रावन अहई। धनि पूछहु दुन्हु यह का कहई ॥४
चाँदहि मन कुछ चेत न आवा। अइस मन्त्र पढ़ि टूँटें लावा ॥५
लोर कहा यह मोरी तिरिया, औ मुहि गोहन आइ ।६
भर भिखार है टूँटा जोगी, सकति चढ़इ लइ जाइ ॥७

३८३–३८८

(अनुपलब्ध)

३८९

(रीलैण्ड्स २७४)

रवान शुदने लोरक व चाँदा व रसीदने नजदीके हरदी

(लोरक और चाँद का चलकर हरदीके निकट पहुँचना)

जाइ कोस दस ऊपर भये। बहुल भाँति बढ़ेहुत बढे ॥१
सभ निसि कहहिं पिरम कहानी। बाट गहत दिन रैन बिहानी ॥२

पहर रात उठ चले कहारा। कोस चार पर भा भिनसारा ॥३
हरदीं सीम तुलानें जाई। सगुन भये एक पाँडुक खाई ॥४
महर दाहनें बायें कर आवा। औ दाहिने मिरघ कै साथा ॥५
महर कहा हुत दाहिनें बायें, सगुन होइ पनार।६
तिंह अरथ तुम्ह सिध पावहु, लोरक जाने सयँसार ॥७

टिप्पणी—(४) हरदीं—इसे काव्यमें अनेक स्थलोंपर हरदीपाटन कहा गया है। कड़वक ३९७ के शीर्षकमें उसे केवल 'पाटन' कहा गया है। पाटन (पट्टन <पत्तन) से ऐसा जान पड़ता है कि यह स्थान किसी नदी अथवा समुद्रके तटपर स्थित था। सर्वे आफ इण्डियाकी सूचीके अनुसार हरदी नामक स्थान मध्यप्रदेशमें ३३, महाराष्ट्रमें ३, राजस्थानमें २, उत्तरप्रदेशमें ६, और बिहारमें २ है। इनमेंसे काव्यमें वर्णित हरदी कौन है, कहना कठिन है।

३९०

(रीलैण्ड्स २७५)

सलाम कर्दने लोरक राव रा दर शिकार व पुरसीदने राव झेतम रा

(शिकारके निमित्त जाते हुए रावको लोरकका सलाम करना और राव झेतमका पूछना)

झेतम राइ अहेर चढ़ा। हरदी किहँहुत दइ जो कढ़ा ॥१
निकरत राउ जोहारसि सोई। राइ बूझि आये इँह कोई ॥२
अति गुनवन्त आह रुपवन्ता। सहसकराँ जइस सीमन्ता ॥३
कोऊ न चीन्हि सब कहहिं बटाऊ। पाछें राउ पठवा नाऊ ॥४
जो तुम्ह चीन्हउ देखि लै आयसु। जो परदेसी उतार दिवायसु ॥५
हरदी पइठे लोरक, खोर खोर फिर आउ।६
जाँवँत नगरहिं चीन्हि न कोउ, सभै लोग पराउ ॥७

३९१

(रीलैण्ड्स २७६)

पुरसीदने राव हज्जाम रा बरे लोरक

(रावका लोरकके पास नाई भेजना)

राउ इयहिं रावल इक आये। ऊँच मँदिर चतनार सुहाये ॥१

बहु बितान बहु भाँति कँदारा। धरै ईंट लाइ सुधारा ॥२
चउतरा ऊँच नीक घोरसारा। लै लोरक तिंह घर बैसारा ॥३
अरसी काढि लोर कर दीन्हें। बात पूछि कै नाऊँ लीन्हें ॥४
कौन देसहुत आये गुसाँई। ईंह बाटन गँउने किंह ताईं ॥५
नाउँ कहउँ तुम्ह आपन, और तुम जिंह लग आयहु ॥६
निकरत राउ देखि दरस, तिंह गुन पूछि पठायहु ॥७

- ३९२

(रीलैण्ड्स २७७ बम्बई ५)

जवाब दादने लोरक मर हज्जाम रा

(लोरकका नाईको उत्तर)

सुनि लोरक[1] अस ऊतर कहा। सभ परिवार गोवर मोर[2] अहा ॥१
गरह सँतायउँ कित घर जानहुँ[3]। कहा पंडित परदेस दिखावहुँ ॥२
बैरी होई घर[4] रकत पियासा। लै न देहिं[5] सुख सँहि साँसा ॥३
लोरक जाह [6]अहतायी करिहै। मुख देखत हम[7] कान न धरिहै ॥४
जात गनरइ[8] अहौं बिदवारू। लोर गोवर कर नाउँ हमारू ॥५
गोवर का राजा[9] सहदेउ महर, वहिकै धिय दुलारि ॥६
जिंह[10] कारन हम लीन्हि देसन्तर, ऊहै[11] चाँदा नारि ॥७

पाठान्तर—बम्बई प्रति—

शीर्षक—पुर्सीदने मुजइन लोरक, राव गुफ्तने लोरक (नाईका लोरकसे पूछना और रावको उत्तर देना)।

१—लोरख। २—मोरो। ३—गरह सताप ईंह घर आवहु। (पंक्तिके ऊपर अन्तम पतले अक्षरोंमें 'दिखि आयेंहि' लिखा है)। ४—बेउ। ५—लैन न देइ। ६—लोग जाइ। ७—हौं। ८—गोवार। ९—गोवर राजा। १०—तिह। ११—उहै सो।

३९३

(रीलैण्ड्स २७८)

बाज आमदने राव अज शिकार व मालूम कर्दन हज्जाम कैफियते लोरक

(रावके शिकारसे वापस आने पर नाईका लोरकके सम्बन्धमें बताना)

होइ अहेरैं राउ घर आवा । नाउ जाइ कही कुर पावा ॥१
पूछा राइ कउन इह अहा । जस सुनाँ तस नाऊँ कहा ॥२
राउ कहा कहँ दीन्हि उतारा । ऊँच मँदिर नीक धोरसारा ॥३
इहँ नर नौखँड प्रिथमी जानैं । अस दिनयर तस किरति बखानैं ॥४
सुन राजैं अस कीरत कीन्हा । जोगै जगत मंदिर वँहि दीन्हा ॥५
आहि गोचर कर, लोरक नाउँ कहा जुझार ॥६
जिह कारन राउ रूपचँद मारा, ऊहै चाँदा नार ॥७

टिप्पणी—(४) दिनयर—दिनकर, सूर्य ।
(७) ऊहै—वही ।

३९४

(रीलैण्ड्स २७९ : बम्बई १)

आमदने लोरक पेश राव हेतम

(लोरकका राव हेतमके पास आना)

खेम कुसर निसि खेलि बिहानी[१] । रंग राती निसि पिरम कहानी[२] ॥१
देइ पिछौरा राउ[३] जोहारा । राउ मया कै लोर[४] हँकारा ॥२
राउ[५] पूछहि तुम्ह कैसें आयहु । घाट घाट कस आवन पायहु ॥३
[६]नगर सोगीर[७] जोहि हम आये । राउ[८] करिंका भेज बुलाये[९] ॥४
देखन पाइ राइ के आयउँ । दयी सँजोगैं[१०] आन मिरायउँ[११] ॥५
भले लोर तुम्ह आयउ इहवाँ, राखहु चिन्त हमार ।६
जो कछु आह हमार[१२], सो फुनि जानु तुम्हार ॥७

पाठान्तर—बम्बई प्रति—
शीर्षक—आमदने लोरक बर रावके हेतम व सलाम कर्दन (लोरकका राव हेतम के पास आकर जुहार करना)

१—बिहानी। २—कहानी। ३—राइ। ४—बीर। ५—राइ। ६—भौंगीर। ७—राइ। ८—हँकराये। ९—सँजोगै। १०—मिलायउँ। ११—हमारैं।

टिप्पणी—(४) सोगीर—सम्भवतः शुद्ध पाठ भौंगीर है जैसा कि बम्बई प्रतिमें है। यह उडीसाका एक प्रसिद्ध स्थान है। राउ करिंका—सम्भवतः करिका, कलिंगका रूप है और यहाँ तात्पर्य कलिंगनरेशसे है। इन भौगोलिक पहचानोंकी प्रामाणिकता काव्यमें आये अन्य भौगोलिक पहचानों पर ही निर्भर है।

३९५

(रीलैण्ड्स २८० : बम्बई २)

असवान दहानीदने राव भर लोरक रा व वर्गे सब्ज दादन

(रावको लोरकको घोडा और पान देना)

सँहथ राइ पान कर लीन्हाँ। नियर[१] हँकार लोर कहँ दीन्हाँ ॥१
सीस चढ़ाइ[२] लोरक[३] लेतसि। रहसि फैकान राइ[४] फुनि देतसि ॥२
तिंहि तुरिया चढ़ि लोर पहिरावा। इनैं[५] ताजिन घोर दौरावा[६] ॥३
रहँसा लोर तुरी जो पावा। बचन सगुन जो[७] इहवाँ आवा ॥४
पुरुख सोइ जो पर हियैं[८] जाई। जग[९] सुने तिंहि करत भलाई ॥५
लोर चाँद गोवर बिसार[१०], अगयें[११] हरदी बास।६
बरस दिवस औ कातिक मासा[१२] कीन्हा भोग बिलास ॥७

पाठान्तर—बम्बई प्रति—

शीर्षक—मरहमत कर्दने राव शेतम व वर्ग दादन लोरक रा (राव शेतमका लोरकके प्रति कृपा भाव व्यक्त करना और पान देना)।

इस प्रति मे पंक्ति ३ और ४ के पद इस प्रति मे परस्पर मिले हुए हैं। अर्थात् पदों क्रम है ३।२ और ४।१, ३।१ और ४।२। यही क्रम ठीक भी जान पड़ता है।

१—बीर। २—नाइ के। ३—लोरख। ४—एक। ५—हनै। ६—दौरवा। ७—ही। ८—हिर्तै। ९—जिह। १०—बिसारा। ११—लेतस। १२—बेतिक।

टिप्पणी—(१) सँहथ राइ—हरदीपाटनके रावका नाम जान पड़ता है। पर कडवक ३९५ से उनका नाम शेतम प्रकट होता है। हो सकता है पाठ 'सँ

हय राइ' हो। पर उसकी कोई सगति नहीं बैठती। नियर—निकट। हँकार—बुलाकर।
(२) रहँसि—हर्षित होकर, प्रसन्न होकर। कैकान—घोडा।
(३) तुरया—घोडा। ताजिन—(फा० ताजियाना)—चाबुक, कोडा।
(५) पर हियें—यह अशुद्ध पाठ जान पडता है। शुद्ध पाठ होगा "पर हितें" जैसा कि बम्बई प्रतिमें है।
(६) अगयैं—अंगीकार किया।

३९६

(रीलैण्ड्स २८१)

मलाये खाना व कनीजगान व गुलामान व जामहा पारिस्तादने राव लोरक रा

(लोरकके पास रावका गृहस्थीका सामान, दासी, नौकर और वस्त्र आदि भेजना)

जना सहस रचि राउ दौराये। चींवर कापर पाग पहिराये ॥१
डला बीस फुरि भरि लीन्हें। ते लै चेरहिं माथें दीन्हें ॥२
चेरहि काँवर काँधें किया। हरदि लोन तेल सब दिया ॥३
चेरी दस चेर अभरन दीन्हें। अउर संजोग जो काउ न दीन्हें ॥४
आँनों भाँत खजहजा अहे। खाट पालकी पालंग लहे ॥५
भल अभरन रानीं दीन्हें, चाँद पहिरन जोग ।६
लोर चाँद कहँ मया अस कीन्हें, कौतुक भयउ सो लोग ॥७

३९७

(रीलैण्ड्स २८२ : बम्बई ४०)

करदा कर्दने लोरक दर पाटन रा

(पाटन नगरमें लोरकका दान)

टाँका माँ एक लोरक लीन्हा। चीर घालि नाऊँ कहँ दीन्हाँ ॥१
औरहिं दीन्हि जिह जस जानाँ। सन लोगहिं कहँ देतसि वानाँ ॥२
चीर बस्तर आगें लै आये। जे आये सो समुद चलाये ॥३

खोल पिटारा कापर देखे । अभरन अछरन आहँ बिसेखे ॥४
चेर लोगँ भरा घर बारू । जस चाहत तस दीन्ह करतारू ॥५
चाँद सुरुज मन रहँसे, तिल तिल करहिं बडाउ ।६
एक समो गोबर हुँत आये, हरदीपाटन रहाउ[९] ॥७

पाठान्तर—बम्बई प्रति—

दीपक—सखावत कदने लोरक बराय फुकरा दर शहर (नगरमें लोरक का फकीरों (?) को दान देना)।
इस प्रतिमें पक्ति ३ के पद पीछे-आगे हैं।
१—एक सौ। २—लौरहिं। ३—जिह। ४—सभै। ५—लोग।
६—पुनि। ७—कीन्हि। ८—चेरी चेर। ९—जाउ।

टिप्पणी—(१) टाँका—टका, चाँदीका एक सिक्का जो दिल्ली-सुल्तानोंके समयमें प्रचलित था। पीरैं (फारसी-पीर)-ब्राह्मण। घालि—निछावर करके। नाउ—नाई, हज्जाम।
(२) बानौं—पहनावा।
(३) बस्तर—वस्त्र।
(७) समो—समय।

३९८

(बम्बई १८)

बयान कर्दन दुखवारिये मैना

(मैंनाके दुःखका वर्णन)

निसि दुख मैंनहि रोइ बिहाई । सभ दिन रहे नैन पँथ लाई ॥१
मकु लोरक इहँ मारग आवइ । कै फे[रि*]आके आपु जनावइ ॥२
निसि दिन झुरवइ आस बेआसी । रोइ रोइ खिन खिन होइ निरासी ॥३
लोर लोर कह दिन पुरावइ । अउर बचनहर मुखँहि न आवइ ॥४
तपतें अजहीं रैन बिहाई । जस मछरी बिनु नीर मुरझाई ॥५
बिरह सँताई मैंना, अँहि परि दिन औ रात ।६
सभ लीन्हें दुख लोरखँ केरा, बिरहा कीन्हि सँघात ॥७

टिप्पणी—(२) मकु—कदाचित शायद। कै फे[रि*] आके—यह अनुमानित किन्तु सगत पाठ है। मूलमें काफ, ये, पे, रे, ये, अलिफ, काफ ए,

इस प्रकार तीन शब्द या शब्द खण्ड हैं, जो 'वै पया वै' पढ़े जा सकते हैं। उन्हें 'वैप हिया वे' भी पढ सकते हैं। पहला पाठ अर्थ हीन है। दूसरे पाठका अर्थ होगा—'हृदयकी व्यथाको'। इस अर्थके साथ पाठ ग्रहण किया जा सकता है। जो भी हो, पाठ सन्दिग्ध है।

(३) झुरवइ—(सं० स्मृ धातुका प्रा० धात्वादेश झुरई) याद करती है, चिन्तन करती है, सोचती है। आस बेआसी—बिना आशाके आशा। निरासी—निराशा।

(५) पुरावइ—व्यतीत करती है। बचनहर—शब्द।

३९९

(रीलैण्ड्स २८३ : बम्बई ४८)

पुरसीदने खोल्नि सिरजन रा पुरसीदने अखबारे लोरक

(खोलिनका सिरजनसे लोरककी खबर पूछना)

दीदी सुनउ सुनी एक बाता। आवा टाँड कहा दोसे साता ॥१
केर्दे आइ सँकट के मेला। पूछहु आन कवन भुँइ खेला ॥२
खोलिन नायक घरहिं बुलावा। पूछसि टाँड कहाँ हुत आवा ॥३
कउन बनिज लादेउ पर परधाना। कउन रात तुम्ह देत पयाना ॥४
कउन लोग घर कहाँ तुम्हारा। कउन नाँउ किंह कुटुँब हँकारा ॥५
आसा लुबुधें पूछउँ, जो परदेसी आइ ।६
मोर बार परदेस बिरोधा, मुखहिं जाहि को पाइ ॥७

पाठान्तर—बम्बई प्रति—

शीर्षक—सुनीदने मैना व खोल्नि कि कसी बाजरगान अज तरफे हरदी आमद (मैना और खोलिनका सुनना कि हरदीकी ओरसे कोई वणिक आया है)।

१—कोंदे सँकट आइ। २—पूछेउ टाँट कवन भुइँ खेला। ३—मन्दिर। ४—कहवाँ। ५—लाधो। ६—देस। ७—देत। ८—हमारा। ९—आसा लुबुधे हौं दुत, पूछउ जो परदेसी आउ। १०—पाउ।

टिप्पणी—(१) दीदी—मैनाने यहाँ अपनी सासको 'दीदी' सम्बोधित किया है, जो असाधारण है। कडवक ४६ में मैनाकी ननदने अपनी माँके लिए इस

सम्बोधनका प्रयोग किया है। टाँड—सार्थवाह, कारवाँ, व्यापारी समूह। दोसैं—'दिवसै' पाठ भी सम्भव है।

(२) बार—बाल, पुत्र।

४००

(रीलैण्ड्स २८४)

जवाब दादने नायक खोलिन रा कैफियते बनिज

(नायकका खोलिनसे वणिजका वृत्तान्त कहना)

मैज मँजीठ चिरौंजि सुपारी। नरियर गोवा लौंग छुहारी ॥१
सौ दिक मँहकूँ कुँकूँ चलावा। पतरज बरनहि गिनति न आवा॥२
पाट पटोर चीवर बहु भाँती। हियँ मैं सहस सहस कै पाँती ॥३
हीर पटोर रूप बहुतायता। बेनों चन्दन अगर भर लायता ॥४
गोवर का बाँभन सिरजन नाऊँ। हरदीपाटन पुरुबहिं जाऊँ ॥५
बरद सहस दस आपन, औ मेला यह आइ।६
दखिन हुतैं भर लायता, पाटन मेलसि जाइ ॥७

टिप्पणी—(१) मैन—सम्भवतः मैनफल; एक फल जो औषधि के काम आता है। मजीठ—एक फल जो औषधि के काम आता है; लाल रंग। नारियर—नारियल। गोवा—(सं० गुवाक)—एक प्रकारकी सुपारी। छुहारी—छुहारा।

(३) पाट पटोर—देखिये टिप्पणी ३२।७। चीवर—वस्त्र।

(४) हीर पटोर—देखिये टिप्पणी २८।७। बेनों (सं० वीरण)—खस।

(५) बाँभन—ब्राह्मण।

(६) बरद—बैल।

४०१

(रीलैण्ड्स २८५ : काशी)

गिरियाकर्दने खोलिन व पाये सिरजन उफ्तादने मैना

(खोलिनका रोना और मैनाका सिरजनके पैर पड़ना)

सुन पाटन खोलिन[१] तस रोवा। नैन नीर[१] मुख चूढ़ी[१] धोवा ॥१
मैंना आइ[१] पायँ लै[१] परी। सिरजन बैसु कहूँ एक घरी ॥२

नाँह मोर हौं बारि वियाही। लै गई चाँदा पाटन ताही ॥३
लोरक नाँउ सुरुज कै करा। सेउ लै चाँदैं पाटन धरा ॥४
महिं तज सुरुज चाँद लै भागा। दूसर समो आइ अब लागा ॥५
सब दिन नैंन जोवत पर्न्यं, औ निसिं जागत जाइ ।६
मोर सँदेस लोर कहुँ, इहँ पर रोइ बहाई ॥७

पाठान्तर—काशी प्रति—
शीर्षक—दर पाये सिरजन उफ्तादन मैंना व अहवाल गुफ्तन (सिरजनके पैरों पर गिरकर मैंना का अपना हाल कहना)
१—खेल्नि। २—रकत। ३—बूढ़ों। ४—दौरि। ५—चाँदा। ६—नैन चुवहि। ७—औ सब निसि। ८—अन्तिम पद प्रतिमें मिट गया है।

टिप्पणी—(१) कहूँ—कहीं।
(३) नाँह—पति। बारि—बाला, युवती।
(४) करा—कला। सेउ—उसे।
(५) समो—समय।
(६) जोवत—निहारते हुए।

४०२

(रीलैण्ड्स २८६)

दैरियते माह सावन गुफ्तने मैंना मर सिरजन आँच दुश्वारी बूद

(मैंनाका सिरजनसे अपनी सावन मासकी अवस्था कहना)

साँवन मास नैंन झर लाये। असरन नाँह दिन एकौं पाये ॥१
बरसि भरे भुइं खार खँदोला। भियें न सूझै चीर अमोला ॥२
चरा काजर चख रहे न पावा। खिन खिन मैंना रोइ बहावा ॥३
सावन चाँद लोर लै भागी। मैंना नैंन पूर झर लागी ॥४
इहँ पर नैंन चुवहिं अरवानी। सरि गै हार डोर तिहँ पानीं ॥५
जिंह सावन तुम्ह गवनें, सो मैंना चरा लाग ।६
सिरजन कहसु लोरकहँ, माँजर केर अभाग ॥७

४०३

(रीलैण्ड्स २८७ : बम्बई ४९)

कैफियते माह भादों

(भादों मासकी अवस्था)

भादों मास निसि भई[1] अँधियारी । रैन डरावन हौं धनि बारी ॥१
बिजलि[2] चमक मोर हियरा[3] भागै । मँदिर नाह बिनु डहि डहि लागै ॥२
संग न साथी[4] न सखी सहेली[5] । देखि फाटि हिय मंदिर अकेली[6] ॥३
तिहि दुख नैन फूटि निसि बहै[7] । धरती पूरि सायर भर रहे ॥४
निकर चलउँ पाँ[8] चली न जाई । भुईं[9] बूड़ि रहा जल छाई ॥५
दुरजन बचन स्रवन[10] कै, लोर बिदेसहि[11] छायउ ।६
नीर लाइ नैन दुइ बरखा[12], सिरजन रोइ बहायउ ॥७

पाठान्तर—बम्बई प्रति—

शीर्षक—हस्ती माह भादों गुफ्तन मैंना पीशे सिरजन पैगाम रजानिबे, लोरक (सिरजन के आगे मैंनाका अपनी भादों मासकी दुरवस्था कहना और लोरके लिए संदेश भेजना)

१—भादों बरस चमक । २—चचल । ३—ढोंडर । ४—साथि । ५—सहेलि । ६—अकेलीं । ७—एहि दुख फूटि नैन तम । ८—पग । ९—भुमहि । १०—सबँन । ११—परदेसहि । १२—लाइ नैन दुहुँ बरखा ।

४०४

(रीलैण्ड्स २८८अ)

कैफियते माह कुआर

(कुआरकी अवस्था)

चढ़ा कुआर अगस्त चितावा । नीर घटे पै कन्त न आवा ॥१
फूले कांस हँस सिर छाये । सारस कुरलहिं खिडरिज आये ॥२
चिरवा पार न अपुरुब पारीं । अति रस भई नाँह पियारी ॥३
नव रितु लाग पितरपख होई । राई राँक घर सीझ रसोई ॥४

महँ पिउ बिन नित परै अमाह्व । संग न साथी भुगति न गराह्व ॥५

चार आन तुरी पलान, लोर जानहुँ घर आयहु ।६
रहा चितहि धर बिच, सिरजन भल दिन लायहु ॥७

टिप्पणी—(१) अगस्त—अगस्त तारा ।
(२) सिर्डरिज—खजन पक्षी ।
(४) पितरपस—पितृपक्ष, कनागत । सीझ—पाता है ।

४०५

(रीलैण्ड्स २८८ब : बम्बई ५४ : काशी)

वैफियते माह कातिक

(कातिककी अवस्था)

कातिक निरमल रैंन सुहाई । जोन्ह दाध हौं खरी संताई[1] ॥१
तिंह घर कामिनि सेज बिछावहिं । कन्तहिं[2] अमोल फेर गियँ लावहिं ॥२
कहँ देवारी देखन[3] आई । उत्तम परब रितु देखहिं[4] गाई ॥३
महिं लेगैं सब जग अँधियारा । लेगई चाँद मोर उजियारा ॥४
इह बिरोग जो नाँह न आवा । रहा छाड़ि[5] फुन[6] भयउ पराना ॥५

पायँ लागि कै सिरजन, मों कन्तहिं[7] जाइ सुनायहु[8] ।६
होइ[9] देवउठान बीर, पूजा मिस घर आयहु ॥७

पाठान्तर—बम्बई और काशी प्रति—

शीर्षक—(ब०) सख्ती माह कातिक गुफ्तने मैंना पीशे सिरजन पैगाम बजानिब लोरक (सिरजनके आगे मैनाका अपनी कातिक मासकी दुरवस्था कहना और लोरकके लिए सन्देश भेजना); (का०) बम्बई प्रतिके समान, केवल "पैगाम बजानिब लोरक" नहीं है ।

इन दोनों ही प्रतियोंमें पंक्ति ३ और ४ क्रमशः ४ और ३ हैं ।

१—(ब०) दहादह हौं जो सताई; (का०) दहादह हौं र सताई । २—(ब०, का०) कन्त । ३—(ब०, का०) देखै । ४—(का०) लेहि गाई । ५—(का०) छाड़ । ६—(ब, का०) पिउ । ७—(ब; का०) पिउ । ८—(ब०) सुनाउ, (का०) मनायहु । ९—(ब, का०) होइह । १०—(का०) पूजइ मिस आवहु; (ब०) पूजइ मिस आउ ।

४०६

(रीलैण्ड्स २८९अ : बम्बई ५०)

कैफियते माह अगहन

(अगहन मासकी अवस्था)

अगहन रैन बाढ़ि दिन खीनॉ । दिन पर दिन जाइ तन छीनॉ ॥१
पौन झरकि तन सीउ जनावा । सिसिर गहत घर कन्त न आवा[1] ॥२
बिरहा सतुर देह दौं लावइ । भसम करै मुख अंग चढ़ावइ ॥३
काम लुबुधरा[2] मान बिगारू[3] । अस[4] जीउँ जनि होइ करतारू[5] ॥४
चॉद निसोगी हौं परी[6] बिगोती । छाड़ि सोक रोको झर[7] सोती ॥५
इहँ बिरहँ रर मरउँ, चॉद सुरुज लइ भागि ।६
उन्ह न छाड़ेउँ करमुखी, सिरजन पर गियँ लागि ॥७

पाठान्तर—बम्बई प्रति—

शीर्षक—सख्ती माह अगहन गुफ्तने मैंना पीशे सिरजन पैगाम बजानिब लोरक (सिरजनके आगे मैनाका अपनी अगहन मासकी कठिनाइयाँ कहना और लोरकके पास सन्देश भेजना)।

१—शिसिर पहुँचि लोर नहिं आवा । २—दगधरा । ३—बिगार । ४—अदस । ५—करतार । ६—हौं र । ७—रोको झर । ८—दिन । ९—कान्ह छाडि ।

टिप्पणी—(३) दौं—अग्नि । लावइ—लाती है, जलाती है ।

४०७

(रीलैण्ड्स २८९ब)

कैफियत माह पूस

(पूस मासकी अवस्था)

आये पूस साइँ पँथ जोउँ । खिन एक रात देसस न सोऊँ ॥१
सिरजन कहि पर सीउ सुहारव । मरन न जाइ जिय कँ मारव ॥२
घर घर सौर-सुपेती साजहिं । घिरित माँस बहु भातिहँ खाजहिं ॥३
मैं तन जो चीर न सुहाये । पीउ पुनि लौटि बाट जम लाये ॥४
जानउँ सिसिर कन्त सुन आउब । राइ राँरू घर गिय धनि राउब ॥५

सिरजन लोर बनिज गा, हौं नित हारउँ आँस ।६
कौन लाभ किह भूले, लोरक पूँजी होइ बिनास ।।७

४०८

(रीलैण्ड्स २९०अ)

वैपियते माह मास

(माघ मासकी अवस्था)

माह माँस निसि परै तुसारू। कँपहि हार डोर धनहारू ।।१
काँपहि दसन नीर चख झरा। बिरह अँगीठी हींउर धरा ।।२
एक बिरहें अरु दुहेउँ तुसारा। भार बिरह यह जीउँ हमारा ।।३
तुम बिनु पात अइस हौं भयी। पुरई जइस भूँज दहि गयी ।।४
भर हीउ बहुर अँग लाऊँ। लेगइ चाँद सुरुज कित पाऊँ ।।५
हेंवत मोहि बिसारे, जिहि पर कामिनि रावइ ।६
सिरजन मुयउँ तुसार, बेग कहु सुरुज आवइ ।।७

टिप्पणी—(१) माह—माघ।

४०९

(रीलैण्ड्स २९०ब)

वैपियते माह पागुन

(फागुन मासकी अवस्था)

फागुन सीउ चौगुन कहा। अछर पवन सकति होइ रहा ।।१
भाग मराहउँ लोर जो आवइ। सीउ मरत गिय लाइ जियावइ ।।२
घर घर रचहिं दन्दाहर बारीं। अति सुहाग यह राजदुलारीं ।।३
मुख तँबोल चख काजर पूरहिं। अंग माँग सिर चीर सिंदूरहिं ।।४
नाचहिं फागु होइ झनकारा। तिह रस भई नई सयँसारा ।।५
रकत रोइ मैं अस कै, चोलि चीर रतनार ।६
कहु सिरजन तोर मैनाँ, भइ होरी जरि छार ।।७

टिप्पणी—(७) छार—राख।

४१०

(अनुपलब्ध)

४११

(रामपुर)

[- - - - - - - - - - - -] । [- - - - - - - - - - - -] ॥१
[- - - - - - - - - - - -] । [- - - - - - - - - - - -] ॥२
[- - - - - - - - - - - -] । [- - - - - - - - - - - -] ॥३
कोइल जइस फिरउँ सब रूखा । पिउ पिउ करत जीभ मोर सूखा ॥४
बँनखँड खिरिख रहा नहिं कोई । कवन डार जिंह लागि न रोई ॥५
एक बाट गइ हरदी, दूसर गई पहोव ।६
ऊभ बाँह के चाँदा नवइ, कवन बाट हम होब ॥७

टिप्पणी—यह अंश पदमावतकी प्रतिके आवरण पर उद्धरण रूप में अंकित है। इस कारण शीर्षक और प्रथम तीन पंक्तियाँ अप्राप्य है।

४१२

(बम्बई ३८)

हमे हाले खुद गुफ्तने मैंना पीश सिरजन पैगाम बेजानिबे लोरक

(मैंनाका सिरजनसे अपना हाल कहना और लोरकके पास सन्देश भेजना)

मैं सभ दुख तुम्ह आगें रोवा । चाँद नाँह मुरि देहु बिछोवा ॥१
तूँ हर पूनेउँ चाँद सपूनी । खटरितु कीनी सेज मोर सूनी ॥२
कहु सिरजन अस चाँद न कीजइ । नाँह मोर मुहि दुख ना दीजइ ॥३
एक बरिस मुहि गा बिनु नाहाँ । दइ कै डर कीजइ चित माँहाँ ॥४
तिहूँ आहि तिरिया कै जाती । पिउ बिनु मरसी रैंन हिय फाटी ॥५
[illegible] ।६
(लीन्हें) भुरसि नाँह मोर, कस अबहूँ न आँस ॥७

मूलपाठ—७—लीहें (नूनका नुक्ता छूट जानेसे ही यह पाठ है)।

टिप्पणी—(४) गा—बीत गया।
(७) भुरसि—मोह।

४१३

(बम्बई ३९)

वाक्ये हाले खुद गुफ्तने मैंना पीस सिरजन पैगाम बेजानिबे लोरक

(मैंनाका सिरजनसे हाल कहना और लोरक के पास सन्देश भेजना)

काहे कँह विधि हौं औतारी । घरु औतरतहिं मरतिउँ बारी ॥१
चाँद मया कर दइ अहिवातू । मँहि बारी सर ऊपर छातू ॥२
यह दुख भार सहै को बारी । तिहि निसि रोइ देचस महँ जारी ॥३
सोरहकराँ सरग परगाससि । बारह मंदिर सेज तूँ डाससि ॥४
सहसक्रराँ सुरुज उजियारा । साईं मोर तिहि भयउ पियारा ॥५
पायँ परउँ जो गवनसु, औ सिरजन पूजा सारउँ ।६
चारकरों जो परगासै, तासों कैसें पारउँ ॥७

टिप्पणी—(१) औतारी—अवतार दिया, जन्म दिया। मरतिउ—मार डालते। बारी—कन्या।
(२) अहिवातू—पति के जीवित होनेका सौभाग्य।
(३) गवनसु—जाओ।

४१४

(बम्बई ५२)

व विलायत गुफ्तने मैंना हाले खुद पीस सिरजन पैगाम बेजानिबे चाँदा

(चाँद के पास सन्देश ऐजानेके लिये मैंनाका सिरजनसे अपना हाल कहना)

मोर भतार सरग लै रावसि । औ निसि महि सर ऊपर आवसि ॥१
बाँमन देउ लोग महिं दीन्हा । सो तैं लोर चैल कै लीन्हा ॥२
तूँ निनु लाज कानि तिहिं नाहीं । नाँह मोर गोवसि परछाँहीं ॥३
मुहि रारासि अपनें उजियारी । लोर रूसि पर घर अँधियारी ॥४
बावन पुरुम जो तोर बियाहा । लोरक मोर गहसि दुहूँ काहाँ ॥५
सिरजन विनवउँ चाँद कहु, पठहि लोर दिचाइ ।६
छाँडि देहि घर आचइ, मँहि जिय आस तुलाइ ॥७

टिप्पणी—(१) रावसि—रमण करती है।

(२) बैल कै लीन्हा—बैल बना लिया, (मुहावरा) वशीभूत कर लिया।

४१५

(बम्बई ५३)

पाये उफ्तादने मैना अज बराये रसीदने पैगाम बेजानिबे लोरक

(लोरकके पास सन्देश ले आने के निमित्त मैना का पाँव पड़ना)

सिरजन बाउर हेलै मैना। बनिज तुम्हार मोर दुख बैनाँ ॥१
लादि टाँड तिहि चलहु गुँसाई। जिह पाटन गा लोरक साईं ॥२
जिह पाटन गइ चाँद सुभागी। तिंह पाटन गवनहु महि लागी ॥३
जिह पाटन पिउ रहा लुभाई। लोभी चाँद न लै घर आई ॥४
तिंह पाटन लै बनिज बिसारा। औ बेसहै कहँ लोर हँकारा ॥५

देउँ तुरी चढ़ि सिरजन, उदरै पवन पँख लाइ ।६
दस गुन लाभ देब मै तोकहँ, लोर बेसाहै जाइ ॥७

टिप्पणी—(१) बाउर—पागल। हेलै—ठेलती है, ढकेलती है, भेजती है। बनिज—व्यापार सामग्री।

(२) पाटन—पत्तन, बन्दरगाह, यहाँ तात्पर्य हरदीपाटनसे है। किन्तु 'बाटन' पाठ भी सम्भव है। उस अवस्था मे अर्थ होगा—मार्ग।

(३) गवनहु—गमन करो, जाओ। महि लागी—मेरे निमित्त, मेरे निहोरे।

(५) बिसार—विक्रय वस्तु। बेसहै—क्रयके निमित्त।

(७) देब—दूँगी। तोकहँ—तुमको।

४१६

(रीलैण्ड्स २९६ : बम्बई ४०)

गुफ्तने खोलिन सिरजन नायक रा व रवान कर्दन

(खोलिनका सिरजन नायकसे कहना और उसे भेजना)

खोलिन[1] नायक दुन्हु कर गहा। आपुन पीर हियें कै कहा ॥१
लखत हाय अँधरी कै लई[1]। हौं न लखत टेक मोर गयी[2] ॥२
पियर धूप अब[3] जीवन मोरा। यह पछताउ रहसि[4] तुम्ह लोरा ॥३

बूढ़ भयसि खोलिन कुँभलानी[6] । तुम[7] बिनु पूत खींचि को पानी ॥४
आइ देखु हौं अँधवत आहा । अथयें आइ करियहु काहा[8] ॥५
मोर जियतहिं जो[9] सिरजन, लोरक आइ दिखाउ ।६
नैन नीर सायर अति बहइ[10], [धोई*] पींउ[11] दोइ पाउ ॥७

पाठान्तर—बम्बई प्रति—

शीर्षक—गुफ्तन खोलिन वाकया हाल खुद जईफी पैगाम बजानिब लोरक (खोलिनका अपने बुढ़ापेकी अवस्था कहकर लोरकके पास सन्देश भेजना)
इस प्रति मे पंक्ति ३, ४ और ५ क्रमशः ४, ५ और ३ हैं।
१—खोलिन। २—रसव हुती अँधरी कै गयी। ३—मुर लई। ४—यह। ५—रहिह। ६—बूढ़ बयसि खोलिन कुँबलानी। ७—तिह। ८—अथयेइँ आइ करि पुनि काहा। ९—मोहि जियत जिय। १०—नैन नीर भर सरवर। ११—पियउँ।

४१७

(रीलैण्ड्स १९७ : बम्बई ४१)

खान शुदने सिरजन सूये हरदीपाटन

(सिरजनका हरदीपाटनकी ओर रवाना होना)

कवन बनिज तुम्ह[1] नायक कीन्हा[2] । सोक संताप बिरह दुख लीन्हा[3] ॥१
दंड उदेग उचाट बिसाहा । अब[4] बैराग्य खपार[5] जो आहा ॥२
अरथ दरब सब बाखर भरा[6] । बाखर कौन बिरह दुख[7] जरा ॥३
अहर दनौर सब दौं लागा । झार न सहैं[8] साथि सब[9] भागा ॥४
मारग घर थैं[10] जरतैं[11] जाई । मैंना काम न आग[12] बुझाई ॥५
दानी माँगत दान महारत, औ बैठे बटवार[13] ।६
कहत सुनत दौं दाधे, सिरजन कह उपकार[14] ॥७

पाठान्तर—बम्बई प्रति—

शीर्षक—पैगामे फिराक हासिल शुदने सिरजन रा व रवाँ कर्दन अज गोवर बेजानिबे लोरक (विरहका सन्देश लेकर सिरजनका गोवरसे लोरकके पास जाना)
१—सुनु। २—लीन्हा। ३—दीन्हा। ४—अति अगरा उठ। ५—खभार। ६—अरनी मरन धरनि सब भरा। ७—दर। ८—रहे।

९—सम। १०—तन। ११—जरतै। १२—आग न। १३—महारथ औ बटपार। १४—सिरजन गये बेपार।

टिप्पणी—(२) दन्द—द्वन्द। उदेग—उद्वेग। उचाट—खिन्नता। (प्रथम वाचनमें ये शब्द "दण्डादीक अजात" पढ़े गये थे। पर उनका कोई अर्थ नहीं जान पड़ा। अन्य कोई पाठ समझमें नहीं आता। मिरगावतिमें कई स्थलोंपर इस वाक्यांश का प्रयोग हुआ है। भारत कला भवन काशीमें इसके कैथी लिपिमें लिखित कुछ सचित्र पृष्ठ हैं। उसमें यही पाठ है। उसीके आधारपर हमने प्रस्तुत पाठ ग्रहण किया है, किन्तु हम इस पाठ और अर्थसे सन्तोष नहीं है।

(३) अरथ—अर्थ। दरब—द्रव्य। अरथ दरब—धन दौलत। बाखर—घर।

(४) अहर दानौर—रात दिन। दौं—अग्नि।

(५) थैं—से। जरतैं—जलते हुए।

(६) बटवार—बटमार, रास्तेमें लूटनेवाले, लुटेरे।

४१८

(रीलैण्ड्स २९८ बम्बई ५१)

कैफियते दर फिराक सिरजन गोयद

(सिरजनकी विरह अवस्था)

मिरिग जो पन्थ लाँघि कहुँ जाहीं[1]। धूम[2] बरन होइ जाइ[3] पराहीं ॥१
जाँवत पंखि उरधि उड़ि गये। किरान[4] बरन कोइला जरि[5] भये ॥२
चालहु मिरजन होई सोंतारा[6]। करिया दहै नाउ गुनधारा ॥३
सायर दाहि मँछि दहिदहे। दहे कँरजना जलहर[7] अहे ॥४
अइस[8] झार बिरह के भई। धरती[9] दाहि गगन लहि गई ॥५
सरग चँदरमँहि मेला, औ धूम पंखि भइ कार[10] ॥६
सिरजन धनिज तुम्हारे[11], उनरे [बूड़ न प*]ार ॥७

पाठान्तर—बम्बई प्रति—

शीर्षक—अज फिराके मैना आहुवान सोख्तन व जानवरान दस्ती व माहियान दर आब सोख्तन (मैनाके विरहसे हिरनों, पशुओं और जलचरोंका जल उठना)

१—मिरग पन्थ लाँगे जो जाहीं। २—धरम (धूम) लिपिकने 'वाव'को 'रे' की तरह लिखा है। ३—छार। ४—किसन। ५—जरि कोइल। ६—जिह सर जाइ होइ सँतारा। ७—सरवर। ८—अइस। ९—सायर। १०—धरम (धूम) मेघ भये वार। ११—तुम्हार।

टिप्पणी—(१) धूम—धूम्र, काला।

(२) जाँवत—यावत, जितने भी। पखि—पक्षी। उरधि—ऊर्ध्व, आकाश। किसन—कृष्ण। बरन—वर्ण, रंग। जरि—जलकर।

(३) करिया—कर्णधार, पतवार सभालने वाला। नाउ—नाव। गुनधारा—रस्सी खींचकर किनारे लाने वाला नाविक। इस शब्दका प्रयोग पदमावत (१८।६) और मधुमालति (१५।१) में भी हुआ है, किन्तु दोनों ही स्थलोंपर माताप्रसाद गुप्तने इसे 'कटहारा' पढ़ा है। गाफ (काफ), नून, दाल (ढाल), हे, अलिफ, रे, अलिफको 'कडहारा' पढ़ लेना सहज है। किन्तु नौकानयन सम्बन्धी शब्दावलीमें कडहारा जैसा कोई शब्द नहीं है। माताप्रसाद गुप्त और वासुदेवशरण अग्रवाल, दोनोंने इस तथ्यसे परिचित न होनेके कारण इसे संस्कृत कर्णधारक—कर्णधारका रूप मान लिया है। किन्तु कर्णधार (पतवार सम्भालनेवाले नाविक)के लिए करिया शब्द है। नौकानयनमें नाविक तीन प्रकारके होते हैं—(१) डाँड चलानेवाले इनका काम नावको डाँड़के सहारे गति देना होता है। इन्हें खेवक या खेवैया कहते हैं। (२) पतवार सम्भालनेवाला—इसका काम पानी काटकर आगे बढ़ने तथा दिशा नियन्त्रित करनेके निमित्त पतवारका सचालन करना होता है। इसे करिया कहते हैं। इन दोनों प्रकारके नाविकोंका कार्य जलके मध्यमें होता है। (३) रस्सीके सहारे नावको खींचकर किनारे लानेवाला नाविक। इसको गुनधार कहते हैं। बिना इसकी सहायताके नावको किनारे लाना सम्भव नहीं।

(४) सायर—सागर। मछि—मच्छ, मछली। कैंरजवा—जल पक्षी विशेष। जलहर—जलचर।

(६) रुहि—तट।

४१९

(रीलैण्ड्स २९९)

रसीदने सिरजन दर शहरे पाटन व खुद रफ्तन दर मुलाकाते लोरक

(सिरजनका पाटन नगरमें पहुँचकर लोरकसे मिलने जाना)

माँस चार चलि बाट घटाई। हरदीपाटन उतरा जाई॥१

पाटन नगर पाइ औधारा । देखि धौराहर ईंगुर ढारा ॥२
सिरजन बस्तर साज बहिराये । नरियर गोवा थार भराये ॥३
लौंग खजूर चिरौंजी लिये । सिरजन भेंट लोर कहँ गये ॥४
पूछत गवनैं लोर दुआरा । प्रतिहार भरि बैठे बारा ॥५

बात जनावहु बीर कहँ, परदेसी एक आयउ ।६
सोवत लोर धौराहर, पँवरीं जाइ जगायउ ॥७

टिप्पणी—(२) औधारा—रखा, प्रवेश किया । ढारा—ढला हुआ ।
(३) बस्तर—वस्त्र । साज—पहन कर । बहिराये—निकले । थार—थाल ।
(५) प्रतिहार—द्वारपाल ।

४२०

(रीलैण्ड्स २००)

बेदार कर्दन दरबाने लोरक रा

(द्वारपालका लोरकको जगाना)

खिन एक नैन नींद महँ आई । गये पँव[रि*]या आई जगाई ॥१
बाँभन एक पँवर है ठाढ़ा । तिलक दुआदस मस्तक काढ़ा ॥२
पतरैं काँखि हाथ बैसाखी । अन्त कान दुन्ह पहुँची राखी ॥३
जनेउ काँध करधौत लखाई । औरु धूत माथे पहिरायी ॥४
रिग जदु साम अथरबन पढ़ा । आइ पुरन्तर रूरे चढ़ा ॥५

पंडित बड़ा बिधवासक, पोथा बाचि पुरान ।६
बिरह भाख लै माखै, दूसर भखा न जान ॥७

टिप्पणी—(२) तिलक दुआदस—वैष्णव समुदाय के कतिपय लोग बारह तिलक—मस्तक, नासिका, दोनों कपोलों, वक्षस्थल, दोनों भुजाओं, नाभि, दोनों जघों और पीछे पीठ पर निश्चित स्थान पर लगाते हैं । इस प्रकार का तिलक ब्राह्मण द्वारा लगानेका उल्लेख बीसलदेव रासो (छन्द १०२) और पदमावत (४०६।३) में भी है ।
(३) पतरैं—पत्राकार पुस्तक । काँखि—बगल में । बैसाखी—बगल में लगाकर चलने का डण्डा ।
करधौत—कलधौत, स्वच्छ, सफेद ।

४२१

(रीलैण्ड्स २०१)

बेरून आमदने लोरक व मुलाकात कर्दन बा सिरजन

(लोरकका बाहर आकर सिरजनसे भेंट करना)

लोर बचन सुनि पँवरि सिधारा। पँवरीं बँरभन आइ जुहारा ॥१
पीरहिं पीर सुनत औधारी। देर कहाइ तुम्ह रूपमरारी ॥२
सिधि कल्यान बुधि भल पायहु। लख औधार सहस अरगायहु ॥३
अन्त गवर जग राज करैं जो। परैं बियाध खांडे जस ले जो ॥४
रूपवन्त धनवन्त सुलक्खन। सिरीवन्त जजमान बिचक्खन ॥५
असकै बहुतैं असीमा, पीर लौरकहिं दीन्हि ।६
पुन पतरैं चढ़ बैठउँ सिरजन, पोथि हाथ कै लीन्हि ॥७

टिप्पणी—(१) बँरभन—ब्राह्मण।
(२) पीर—(फारसी) ब्राह्मण। औधारी—आया।
(५) सुलक्खन—सुलक्षण। सिरीवन्त—श्रीमन्त। जजमान—यजमान।
बिचक्खन—विलक्षण।

४२२

(रीलैण्ड्स २०२)

दीदने सिरजन ताल-ए-लोरक व बावरे सितारगाने साद व नहस

(सिरजनका शुभ अशुभ ग्रहोंको देख कर लोरका भाग्य बताना)

सेट अब अवसि बतसारी। मेख रासि तुम रूपमरारी ॥१
मेख निरिख और मिथुन भंजे। कर्क सिंह कन्या जो गुंजे ॥२
तुला बिरछिक धनु आइ तुलानइ। मकर कुम्भ गुन मीन सुनावइ ॥३
मेख चँदर जनम घर आवा। तिसरें घर सुरुज दिखरावा ॥४
नवयें घरें भये परकासू। सतयें मंगर आइ आवासू ॥५
चार नखत तुम्ह दाहिन, कहीं गुनति अति देखि ।६
मंगर बुध बिरसपत, जनम चँदर बिसेखि ॥७

टिप्पणी—(१) मेख—मेष। रासि—राशि।
(२) बिरिख—वृष।
(३) बिरचिक—वृश्चिक।
(५) मगर—मगल।

४२३

(रीलैण्ड्स ३०२)

ऐजन

(वही)

चौथे बुध सुरा कछु आवइ। बिहफइ सोहम राज करावइ ॥१
दुसरें मंगर पाँच परवानी। बरुहर पाप धरम कर हानि ॥२
छठयें सनीचर देखि मेरावा। केतें लखनें फुनि हाथ आवा ॥३
राहु केतु बद्द आयसु दिलावहिं। मिलें कुटुँब घर दसयें आवहिं ॥४
जो न होइ अस जीउ उतारउँ। गुनित टूट तो पोथा फारउँ ॥५
गंग नीर तुम्ह अन्हउब, दारा बेल फर खाव ।६
पाप कुण्ड सब तज लोरक, गंगा सुद्ध नहाव ॥७

टिप्पणी—(१) बिहफइ—बृहस्पति। सोहम—(फारसी-सोयम) तीसरा।

४२४

(रीलैण्ड्स ३०४अ बम्बइ ६४)

कैफियते सितारगान गोयद

(ग्रह अवस्था कहना)

उत्तिम समो सब सुख घरआयहु[१]। पति परजा सब दूध अन्हायहु ॥१
राजा चँदर पाट बैसारा। मइत बिरस्पत सुरुज उभारा ॥२
पंद्रह बिसवा धरम जनावइ[२]। पाप पाँच बायें दिसि पावइ[३] ॥३
अठ बिसवा दस बुधि बखाने[४]। बारह बिसवा मोर तोर जाने[५] ॥४
सत्तरह बिसवाँ कहों तू मानी[६]। बिसवों दोइ पाप केउ जानी[७] ॥५

राज पाठ तुम्ह गोवरा अहैं[8], मैंना[9] केर गुसाँइ ।६
चाँदहि[10] गगन चढ़ायहु, मैंना धरती काँइ ।।७

पाठान्तर—बम्बई प्रति—

शीर्षक—तात्यै साद नमूदने सिरजन अज रफ्तने लोरक वतने खुदीमे खुद (सिरजनको लोरकसे घर वापस जानेको शुभ घड़ी बताना)।

१—अथा रामौ सभै सुरा जायहु। २—बिसवाँ पन्दरह धरम चुकावा ३—पाप पाँच बायें दिसि पावा। ४—उन बिसवाँ चौदह तिन साता। ५—पाउ सेउ बिसवाँ नौ बाता। ६—सोरह बिसवाँ विरुध बखानी। ७—घर बिसवाँ दुन्हु सेउ न जानी। ८—तुम्ह लोरक है। ९—मै (लिपिक के दोषसे 'ना' छूट गया है। १०—चाँदा। ११—नारी।

४२५

(रीलैण्डस् २०४ब : बम्बई ६१)

पुरसीदने लोरक

(लोरकका पूछना)

मैंना सबद पीर[1] जो सुनावा। सुनतैं लोर हियें[2] घबरावा ।।१
मैंना[3] भात बाँभन कित पायहु। औ चाँदा किह[4] आइ सुनायहु ।।२
कहु पंडित फिर कितहुत आवा[5]। कैं तुम्ह[6] हरदीनगर पठावा[7] ।।३
मैंना नाउ कहा तुम्ह[8] सुनाँ। औ चाँदा घर[9] कहवाँ गुनाँ ।।४
तूँ न होइ[10] बाँभन परदेसी। देसउँ[11] लखउँ आह सहदेसी ।।५
सेंह पाइ तोर झार चरेंहिं, आपन सीस चढ़ाउँ[12] ।६
माइ भाइ मैंना कर, कुसर खेम[13] जो पाउँ ।।७

पाठान्तर—बम्बई प्रति—

शीर्षक—सुनीदने लोरक हाले बाबये मैंना व गिरियाकर्दन बा फिराक बराये मैंना (लोरकका मैंनाका हाल सुनकर दुःखी होना)।

१—बिप्र। २—सुनौं लोर हिये। ३—चाँद। ४—औ मैंना के। ५—आवहु। ६—तो। ७—पठायहु। ८—तूँ। ९—घर। १०—हांसि। ११—लखन। १२—सेंह पाइ तोर बाँभन आपने सीस चढाउँ। १३—खेम कुशर।

टिप्पणी—(१) पीर—ब्राह्मण।
(२) बाँभन—ब्राह्मण।
(३) कितहुत—कहाँ से।
(५) सहदेसी—अपने देश का।
(६) बरेंहिं—परौनियों से, भाहों से।

४२६

(रीलैण्ड्स ३०५अ)

गुफ्तने सिरजन बरेरे सलाहे हमा अजीजान

(सिरजनका घरवालोंका कुशल समाचार कहना)

कँवरू भाइ तोर महतारी। लोग कुँटुब घर मैना नारी ॥१
तोरें चिन्त रैन दिन आहहिं। नैन पसार तिहि मारग चाहहिं ॥२
अन पानि चख देखि न भावइ। जागहिं रैन दिन नींद न आवइ ॥३
पन्थ बटाऊ पूछहि लोरा। कोउ न कहै सकूसर तोरा ॥४
सोक सो (मैनाँमाँजर) भई। झार बिरह अधिक जरि गई ॥५
दुरें ताहि न सोक, लोर तै जो दई न डराइ।६
तजके मारि बियाहुत आपन, लीन्हा (नारि) पराइ ॥७

मूलपाठ—(५) मैना बन मर्नो माँजर भई।
(७) पुरुष (प्रसंग के अनुसार यह पाठ सर्वथा असंगत है)।

४२७

(रीलैण्ड्स ३०५ब बम्बई ४२)

वैफियते आवर्दने बनिज गुफ्तने सिरजन पेश लोरक

(सिरजनका लोरकसे अपने बनिजकी बात कहना)

हो रे बनिज गोनरा[१] लै आयउँ। धिरत लेन को[२] कँवरू बुलायउँ ॥१
लेगये मँदिर जहाँ बतसारा[३]। अउ तउलै कें बया हँकारा ॥२
पूछसि कौन बनिज तुम्ह आनाँ। कौन देसहुतें[४] कियत पयानाँ ॥३
कहा देस मैं गोनरों आयउँ[५]। गये मॉम दोइ पुरुष चलायउँ[६] ॥४
कहा लोर सभ आपन ठाँउँ। गोनर का[७] बाँभन सिरजन नाऊँ ॥५

मोहि कों कहा सिरजन, हरदीं सँदेस लै जाइ[10] ।६
जननि तोर औं साँवरी, परीं दोड़ लै पाइ[11] ॥७

पाठान्तर—बम्बई प्रति—

शीर्षक—कैफियते रैलस्तानये गुफ्तन पीरो लोरक पैगाम बेजानिबे मैंना (लोरकसे घरकी स्थिति और मैंनाका सन्देश कहना)।

१—हौं र बनिज गुवर। २—टेढ़ कहँ। ३—पहुनहि सारा। ४—कहँ। ५—देस तुम्ह। ६—परेउँ देउ मैं गोवर आउब। ७—चलाउब। ८—करेउँ सबद और आपन ठाऊँ। ९—गवर प। १०—कँवल रातै चोमस, अहरे दयी न जाइ। ११—जननि तोर औंर साँवरि मैनाँ, पाइ परी है धाइ।

टिप्पणी—(२) बतसारा—बैठक। तउलै के—तौलनेके लिए। बया—तौलनेवाले। (६) साँवरी—पत्नी।

४२८

(रीलैण्ड्स ३०६अ : बम्बई ४३)

कैफियत रहू

वही

जो तुम्ह पर यहँ बनिज चलाउब। मैंना कहि मैं गोहन आउब ॥१
छाड़ि आँचर कर गहि रहीं[1]। अति दुख पूर[2] बिरह कै दहीं ॥२
खोलिन[3] आँचर आइ छुड़ावा। कहि संदेस लोर जिहँ आवा[4] ॥३
माँहि देखत लै पैठि कटारि। अस कहु आज मरउँ कँठसारी ॥४
खोलिन घर घर करत अहा[5]। मैंना देखु मरन लै चहा[6] ॥५
बनिज छाड़ि मैं लादेउँ, मैंना केर सँदेस।६
बेग आजु चलु गोवर[7], लोरक तजु परदेस[8] ॥७

पाठान्तर—बम्बई प्रति—

शीर्षक—कैफियते मैंना गुफ्तन सिरजन बा फिराक हाल खाज नमूदन (सिरजनका मैंनाकी हाल्त और उसकी विरह अवस्था कहना)।

(१) आँचर गहिके रहीं। २—दुखबैं बूडि। ३—खेलिन। ४—कहसि सदेस जिह पिउ आवा। ५—खेलिन धरहर करते अहा। —६ मरन पै चाहा। ७—गोवरौं। ८—लोर बजहु।

४२९

(रीलैण्ड्स ३०६ब)

कैफियते शिकस्तगीए हाले मैना गोयद

(मैना का दुख दर्द कहना)

मैल चीर सिर तेल न जानइ । यह दुख लोरक तोर बखानइ ॥१
कहत सँदेस नैन झरि पानी । बरसहि मेघ जइस घर्रानी ॥२
बूढि सरें थाह न पावा । करिया नहीं तीर को लावा ॥३
मैंना रूप देख का देखेउँ । अउर रूप सयँसार न लेखेउँ ॥४
सब एक दिन करे अहारू । किहि पर जियइ जानि करतारू ॥५
रोयस नित कवको नैंन, मैना बिध अस औतारी ।६
नैन खूझि घर मींचु लोरक, तें हँउर माँझ सुतारी ॥७

४३०

(रीलैण्ड्स ३०७अ : बम्बई १९)

जारी कर्दने लोरक अज शुनीदने दुश्वारिये मैना

(मैनाकी दुरवस्था सुन कर लोरकका रोना)

सुनि संताप मैना कर रोवा । लोरक हिये[१] कै कसमर धोवा ॥१
अब मैंना बिनु रही न जाई । देइ[२] पँख बिध जाँउँ उड़ाई ॥२
जो न[३] जाइ मैना मुख देखउँ । तो यह[४] जीउँ मरन लै[५] लेखउँ ॥३
देवम गयउँ निसि आइ तुलानी । बाँभन कहत न बात[६] घटानी ॥४
सिरजन जाइ सीस अन्हवावहि । लै अपनों किहँ जेंउ करावहिँ[७] ॥५
दाम लाख दोइ देउहाँ[८], बरद सहस भरावहु ।६
मोर गवन दिन दूसरँ[९], तुम फुनि[१०] गोहन आवहु ॥७

पाठान्तर—बम्बई प्रति—

शीर्षक—सुनीदने लोरक हाले बेहालिये मैंना व गिरिया कर्दन वा पिराक हाल बाज नमूदन (मैनाकी दुरवस्था सुन कर लोरकका रोना और अपनी स्थिति कहना)

१—हिय। २—देहु। ३—मदिर। ४—बिनु मुरुजा। ५—है। ६—बाँभन बात कहत न। ७—मिरजन जाइ सँपर के आवहु। है वें अनपान करावहु। ८—दोइ लीन्ह बरँभन। ९—दूसरें। १०—पुनि।

टिप्पणी—(१) वसमर—कृषक।

(६) दाम—ताँबे का सिक्का। सिक्के के इस नाम के सम्बन्ध में सामान्य धारणा रही है कि उसे पहले पहल अकबरने प्रचलित किया था। इस कारण अमीर खुसरोके खालिकबारीमें 'दाम'के उल्लेखके प्रमाणसे अनेक विद्वानोंने उसे अकबरकाल अथवा उसके पश्चात्की रचना सिद्ध करनेकी चेष्टा की है। किन्तु यह नाम अकबरसे पूर्व भी प्रचलित था। इस उल्लेखके अतिरिक्त अलाउद्दीन खिल्जीके दिल्ली टकसालके टकसाली ठक्कुर फेरूके ग्रन्थ 'द्रव्य परीक्षा'से भी 'दाम'का पूर्व अस्तित्व प्रकट होता है। द्रव्य-परीक्षाके अनुसार चाँदीका टंक ६० दामके बराबर होता था। अकबरके समयमें रुपयेका मूल्य ४० दाम था। आइने अकबरीसे ज्ञात होता है कि उस समय चाँदी-सोनेके सिक्के न चलकर राज्यका सारा हिसाब किताब दामोंमें ही रखा जाता था। दो लाख दामोंके उपर्युक्त उल्लेखसे भी यह झलकता है कि दिल्ली सुल्तानोंके समयमें भी लेन देन और व्यवहारमें दामका ही अधिक प्रचलन था।

देउहाँ—ढूँगा। बरद—बैल।

४३१

(रीलैण्ड्स ३०७ब . बम्बई ५५)

बाज आमदने लोरक बखान व मुतफक्किर गश्तने चाँदा अज खबरे मैंना

(लोरकका घरके भीतर आना और चाँदाका मैंनाकी बात सुन कर परेशान होना)

मैंनाँ बात जो मिरजन[1] कही। सुनत चाँद राहु जनु गही[2] ॥१
पूनेउँ जइस मुख दीपत अहा[3]। गयी सो जोति खीन[4] होइ रहा ॥२
अब सुरुज अपने[5] घर जाइह। सिंह रासि कह[6] गगन चढ़ाइह ॥३
फिर[7] लोर मँदिर मँह आवा। कहाँ[8] चाँद चित भयउ परावा ॥४
उठि[9] पानि लै पाइ[10] पखारहि। तुम्ह जेंउ[11] औ पीर हँकारहि[12] ॥५

कउँन[13] भाँति नहि पैसे, सिन्धो आहि गरास[14] ।६
लोर जेवन जेउँ, चाँदा परा उपास[15] ॥७

पाठान्तर—बम्बई प्रति—

शीर्षक—कैफियते मेना गुफ्तने लोरक बा चाँदा व गमगीन शुदन चाँदा अज रफ्तने लोरक (लोरकका चाँदसे मैनाका हाल कहना, चाँदका लोरकके जानेकी बात सुनकर दुखी होना)

१—विप्र जो । २—सुनते चाँद राहु बर गही । ३—पूर्नो मुग निषि दिपत जो अहा । ४—कार । ५—औ सो सुरज जनम । ६—मित्र रासि ले । ७—फिरा । ८—कहेउ । ९—उठी । १०—पाउ पखारहि । ११—जवहु । १२—विप्र हँकारहि । १३—कौनिउँ भाँति न नीसई, सिकउँ गरास । १३—लोरख जेउ समारे चाँदे कै उपवास ।

४३२

(रीलैण्ड्स ३०८)

बिदाअ कर्दने लोरक बा राव झेतम

(राव झेतमका लोरकको बिदा करना)

कारि रात दुख रोइ बिहानी । भा भिनुसार उठा रिरियानी ॥१
पाटन राउ लोर हँकरावा । चला बीर राजा पँह आवा ॥२
राउ पूछहि घर कूसर आहा । कहु लोरक कस पायहु चाहा ॥३
बनिजेउँ आइ एक बनजारा । माइ भाइ हौं घरहिं हँकारा ॥४
कहँ आजु मोरें संग आवहु । मकु जियतें मुख देख न पावहु ॥५
तिहि दिनहुत अन पानी, घर बाहर न सुहाइ ।६
उठै आग सर माथैं, दीखैं न बुझाइ ॥७

४३३

(रीलैण्ड्स ३०९)

बिदाअ कर्दन राव व मदद दहानीदन मर लोरक रा

(रावका लोरकको सहायक देकर बिदा करना)

राइ घोर सहस दोइ बुलाये । पायक सैं दो साथ दिवाये ॥१
कापर आन लोर पहिरावा । समुद बीर कछु साथ दिवावा ॥२

समुँद बीर कछु साथ तुम्ह जायहु । गोवर देखि पलटि घर आयहु ॥४
फाँद सिघासन चाँद चलावा । इन्ह तजियाव किते हूँ (आवा) ॥५
बरद सहस एक सिन्धौ भरा । पाटन छाड़ि सींउ उतरा ॥५
राहु गरह जस गरहै, चाँदा मुख अँधियार ।६
मीन रासि धन बैरिन, सिरजन कै उपकार ॥७

मूलपाठ—(४) आवे ।
टिप्पणी—(५) सिन्धौ—सैन्धव, नमक ।

४३४

(रीलैण्ड्स ३१०)

गुफ्तने चाँदा लोरक रा

(चाँदका लोरकसे अनुरोध)

लवटु चाँद लोर सों कहा । पलट नीर गंगा नै बहा ॥१
बिरथि लाइ तैं मो सेउँ तोरी । जहवाँ टूटि फुनि तहवाँ जोरी ॥२
तिह नखोर हौं सरग लुकानी । कै सनेह हरदीं तैं आनी ॥३
तिंह दिन सँवर बाच जिंह कीन्हें । अब लै गोवर महिं दीन्हे ॥४
बात देइ धनि नाउ चढ़ाये । अब गुन काटि गाँग बहाये ॥५
बहुरि लोर चलु हरदीं, रँहहिं बरिस दोइ चार ।६
बाचा पुरवहु अपनें साँईं, बिनवई दासि तुम्हार ॥७

टिप्पणी—(१) लवटु—लौट चलो । नै—समान ।
(७) पुरवहु—पूरा करो । साँईं—स्वामी । बिनवइ—विनय करती है ।

४३५

(रीलैण्ड्स ३११अ)

जवाब दादने लोरक मर चाँदा रा

(लोरकका चाँदको उत्तर)

हौं जानउँ राजा कै जाई । अपनें हुतें तिह होत पराई ॥१
हौं अस जानउँ बन के जाती । सेज न देखत एकौ राती ॥२

देस देसन्तर तिहि संग धाये। बनखँड गँवने घर न रहाये ॥३
गरह नवइ जिहि होइ मिराग। तुम नसोर हम चाहत पागा ॥४
दूजा नारि मोरँ संग आवसि। जिहि लाये धनि अपुनै रावसि ॥५
मंगर बुध बिरस्पत, सुकर सनीचर राहु।६
चाँद सुरुज लै अँथवा, बारह घरिह उतराउ ॥७

४३६

(रीलैण्ड्स ३११ब)

रवान कर्दने लोरक व चाँदा सूये गोवर

(गोवरकी ओर लोरक और चाँदका रवाना होना)

सुरुज दिस्टि मिह घर गये। मीन ठाँउँ हुत अँठये भये ॥१
सवन न करै चाँद क कहा। संग बैठि दोउ लागि रहा ॥२
पहर रात उठि कीन्हि पयानाँ। कोस बीस इक आइ तुलानाँ ॥३
कोस तीस बिह गोवराँ लागे। उतर देवहाँ लोग डर भागे ॥४
घर घर गोवराँ बात जनाई। को एक राउ उतरि गा आई ॥५
साई कोट सँवारहुँ बैठे निसे झुझार।६
जौलहि राउ गढ़ होइ लागे, तौलहि लोग सँभार ॥७

टिप्पणी—(४) देवहाँ—एक नदी। प्रसगसे जान पडता है कि यह नदी गोवरके निकट ही थी। हरदी जाते समय लोर और चाँदने गगा पार किया था। स्पष्ट है कि गगा भी गोवरसे दूर न थीं। अत यह कहना गलत न होगा कि गगाके आस-पास ही देवहाँ नदी भी बहती रही होगी। भारतीय सर्वे विभाग के डिप्टी सर्वेयर जनरल कर्नल यमुना नारायण सिनहाने हमें सूचित किया है कि देवहाँ नामकी नदी नैनीताल जिलेम एक पहाडी तलहटी से निकलती है और पीलीभीत, बीसलपुर, शाहजहाँपुर, शाहाबाद होती हुई कन्नौजसे सात मील उत्तर गगामे आकर गिरती है। शाहजहाँपुर तक इसका नाम देवहाँ है। उसके आगे शाहबाद तक यह देवहाँ और गर्रा दो नामोसे पुकारी जाती है। शाहाबाद के बाद लोग उसे केवल गर्रा नामसे परिचित है। शाहबाद से ६ मील पश्चिम इस नदीके तट पर गौंडा नामक स्थान भी है। गर्रा और गौंडा दोनों ही गोवर की याद दिलाते हैं।

४३७

(रीलैण्ड्स ३१२)

हैबत उफ्तादन दर शहरे गोवर

(गोवर नगरमें आतङ्कका फैलना)

घर घर गोबरॉ परा खभारू । कहहिं आजु राखड करतारू ॥१
तलवा कोट झराये खाई । परी रात मँह पवॅर बँधाई ॥२
सोन रूप सब गॉठी करहीं । धरहि ओसारहिं धानुक धरहीं ॥३
मेना के जीउ अइस जनावा । अनौं हरहुतैं भइ को आवा ॥४
जोरि लै बाट लोरक कै कहा । मकु जीउ भया आवत अहा ॥५

सॉझ बरे माड खोलिन, मोर चितहिं अस आइ ।६
आज रात के बीतहि, लोरक सुधि पाइ ॥७

टिप्पणी—(३) गाँठी—अण्टी टेंट, कमरम धन राशि रखनेका स्थान ।

(४) अनौं हरहुतैं—यह अपपाठ जान पड़ता है । बीकानेर प्रतिमें 'हरदीं हुतैं अभइ को आवा' पाठ है ।

(६) सॉझ बरे—सन्ध्या बेला ।

४३८

(रीलैण्ड्स ३१३)

ख्वाब दीदने मैनाँ अज आमदने लोरक

(मैनाँका लोरकके आनेका स्वप्न देखना)

गाँव कुठारें परा अनाहू । मैना कें चित अँनद हुलाहू ॥१
सोमन फर रात जो फूली । देख तरायीं मैना -भूली ॥२
रहँस उठी चित मँह निसि जागी । पिछली रात नींद फिरि लागी ॥३
लागत नैन सपन एक आवा । भा बिहान नै गवर नसावा ॥४
खोलिन पूछहि सुनु धनि मैनाँ । परत साँझ जो बकतिह बैनाँ ॥५

तोर मन काल जो रँहसा, पायहुँ नीके चाह ।६
सपन गुन गिनु मैना, कहु कछु देखउँ आह ॥७

४३९

(रीलैण्ड्स ३१४)

तल्बीदने फुरिस्तादने लोरक गुल्फरोश रा बरे मैनाँ बा गुल

(लोरकका मालीको बुलाकर फूलके साथ मैनाँके पास भेजना)

दिन भा लोरक मारी बुलावा । गोवरों कस ईहै बात जनावा ॥१
अस जनि कहु कि लोर पठायउ । जो को पूछहि कहसि हौं आयउँ ॥२
फूल करँड भरि माली लेतस । फिर फिर गोंवरा घर घर देतस ॥३
देख फूल मैनां तस रोई । फूर सोभरहि जिहि पिउ होई ॥४
नाँह मोर परदेसहिं छावा । फूल पान महिं देख न भावा ॥५
घरकै हार मेलसि, माली कोंजरि फूल ।६
बास लागि सत मैनां, उठ बैसी अस बोल ॥७

टिप्पणी—(१) मारी—माली ।

४४०

(रीलैण्ड्स ३१५)

पुरसीदने मैनाँ अर गुल फरोश रा खबर

(मैनाका मालीसे हाल चाल पूछना)

कहसु महिं बारी कितहुत आवा । फूलबास मै लोरक पावा ॥१
जानउँ अस तौं लोर पठावा । सपनें माँझ जो देखेउँ आवा ॥२
लाग बास मोर हिया जुडानाँ । अइस फूल पिउ लोरक आनाँ ॥३
लोर नाँउ लै सन दुख रोई । जनु साँवन बीरबहूटी होई ॥४
सुरुज कहँ मारग हौं चाहँउँ । लेगयी चाँद कहाँ अन पाहउँ ॥५
देवस बिहाने रोऊँ, रैन जागत जाइ ।६
पायँ लागि मैं बिनवउँ, जो परदेसी आइ ॥७

४४१

(रीलैण्ड्स २१६)

जवाब दादने मैंना माली बर मैंना रा

(मालीका मैंनाको उत्तर)

मँहि नहिं कुरधी हौं परदेसी । ताहि सँझाइ मोर सहदेसी ॥१
सो देखि मँहकों घरहिं चलावा । गोवर बसद मैं देखन आवा ।२
महरि देखि हौं दही कहँ आयउँ । तोर बिरह जस अउर न पायउँ ॥३
तब तूँ सुधि लोर कै पावसु । लइकै दूध जो वेगॉ आवसु ॥४
फूल मोर तोरें झार सुखाने । छार भये औ जरि कुँवलाने ॥५

बहुल लोग पुर आवा, मकु न बोल सुधि कोइ ।६
वेगॉ आउ तिह बेचैं, औ तहाँ मिरावा होइ ॥७

टिप्पणी—(१) कुरधी—घर परिवारका व्यक्ति । सहदेसी—समान देशका वासी; अपने देशका निवासी । यहाँ तात्पर्य अपने गाँव नगरके निवासी से है ।

(२) बसद—बस्ती ।

(५) झार—(सं० ज्वाल), अग्नि । छार—(सं० क्षार), राख ।

(७) मिरावा—मिलाप, भेंट ।

४४२

(रीलैण्ड्स २१७)

रफ्तने मैंना बा सहेलियान दर वेगॉ व तलबीदने लोरक मैंना रा

(सहेलियोंके साथ मैंनाका वेगाँ जाना और लोरकका मैंनाको बुलाना)

दिन भा मैंनाँ वेगॉ गई । औंर सहेली चुनी दस लई ॥१
बेचत दूध घर [घर] गयीं । दही कहँ लोरहिं महरि बुलायीं ॥२
महरीं जब सब लोरक देखीं । देखत मैंनाँ औंर न लेखीं ॥३
[—] लोर चाँदा कहँ बोलसु । साँप सिंदूर चन्दन तन घोलसु ॥४
[आगों*] छाड़ि जो पाछौं आवा । चमक चमक धनि पाउ उचावा ॥५

वहि कर दूध दहि लीजइ, दस गुन दीजइ दान ।६
सती रूप जस देखउँ, तिंह क निंदाई पान ॥७

टिप्पणी—(५) पाछों—पीछे। उचावा—उठाती है।

४४२

(रीलैंड्स ३१८ बम्बई ५९)

खरीदने लोरक शीर व दहानीदने माल मर मैना रा

(लोरकका दूध खरीद कर दरब देना)

लेके दूध तो[१] दरब दिवावा । सीप सिंधोरा माँग भरावा[२] ॥१
सेंदुर चन्दन सब कोउ लेई । मैना आपुन[३] करै न देई ॥२
सेंदुर सो करि जिह पिउ होई । नाँह मोर[४] हरदी है सोई ॥३
[जौलहिं*] मुँहिका वह तज गयउ । तौलहि हम[५] अस साध न भयउ[६]॥४
[निमि*] दिन हो दुख रोऊँ[७] । नींह न आवइ कैसें सोऊँ ॥५
रोवत दिस्टि घटानी, (घटी) चख कै जोत[८] ।६
चाँद सुरुज तिह पर गहे, पास परी भुँइ लोट[९] ॥७

मूलपाठ—६—कटी (हेके अभावके कारण यह पाठ है)।

पाठान्तर—बम्बई प्रति—

शीर्षक—सितदने लोरक शीर अज मैना व माल दहानीदने व आज मूदने मैले दिल रा (लोरकका मनासे दूध खरीद कर धन देना और उसके हृदयकी थाह लेना)

१—लेने दहि दूध। २—आनि चढावा। ३—आपुहि। ४—मोर नाँह। ५—जौलहि वह तज मँहि कँह गया। ६—मुहि। ७—भवा। ८—दिन दिन आँसू लोहू रोऊँ। ९—खीन भर चख जोत। १०—नीतु परी भुँइ टूट।

टिप्पणी—(१) तो—तव। दरब—द्रव्य। दिवावा—दिलाया। सीप—बाहका बना खानेदार पात्र जिसमें अभिनन्दन-सामग्री, यथा—रोली, चन्दन, सुपारी, अक्षत (चावल), ऐपन आदि रखा जाता है। सिंधोरा—सिन्दूर रखनेका पात्र। माँग भरावा—माँगमें सिन्दूर लगानेको माँग भरना कहते हैं।

(२) करै—करने।

(३) नाँह—पति।

(४) जौलहि—जब तक। मुँहिका—मुहारो। तौलहि—तब तक।

अस—ऐसा। साध—आकाशा।

(६) घटानी—घट गयी। चख—नेत्र।

४४४

(रीलैण्ड्स ३१९, होपर)

ऐजन

(वही)

लोरक मैनहिं जान[1] न देई। करै धमारि मरम सभ लेई ॥१

मैना कहि सुन बाँहि[2] सँझाई। मोरैं आहै मीत रजाई[3] ॥२

तें का देसु हौं बेसादारी[4]। तिह तूँ मौं सौं[5] करसि धमारी ॥३

जानसि अस तै सोना सारी[6]। थाप देइ महि घालसि[7] चोरी ॥४

अपने नॉह[8] न रहँसु सँझाई। मोर ठॉउ का करसु बड़ाई[9] ॥५

कोह भर कै मैना चली, तहँ वहिक आवास[10] ।६

चाँदा भई पट पालँग ऊपर[11], धरि बैसारस पास[12] ॥७

पाठान्तर—होपर प्रति—

शीर्षक—नीज गुजाश्तने लोरक मर मैना रा बेराजी व लरा दरियाफ्त करदन (लोरकका मैनाको न जाने देना और छेड़खानी करना)

१—चलै। २—साह। ३—अजाई। ४—ते पै देनै मैं अकिल कुआरी। ५—तब तैं महि सौं। ६—तै सारी सोरी। ७—पाल्ग। ८—अपने मान। ९—मोर ठाँउ उर रहि न बढाई। १०—कोह बहुत कै मैना, चल भई वहि क आवास। ११—चाँदा पट पाल्ग सौं।

टिप्पणी—(१) धमार—धमा चौकड़ी, छेड़छाड़, हुड़दंग। मरम—हृदयकी बात।

(३) बेसादारी—बेदयानति।

४४५

(रीलैण्ड्स ३२०अ)

ऐजन

(वही)

पिरम समुँद अति अवगाहा । जो जग बूड़ि न पावइ थाहा ॥१
चहुँ दिसि कैसें थाह न पावइ । मानुस बूड़ें तीर न आवइ ॥२
मोरे रोयें सायर भये । धरती पूर सरग लहि गये ॥३
फूटि आँख जनु आँसू भये । पगें सो छाइ पानि न रहे ॥४
यह गुन हौं तोरें न देखेउँ । रात चाँद दिन सूरज लेखेउँ ॥५
जान देइ घर आपुन, मोरहि सास मुहिं माइ ।६
पिय सँताप सुन बैठउँ, काल थाम तुम आइ ॥७

४४६

(रीलैण्ड्स ३२०ब : बम्बई ५६)

बाज रफ्तने मैंना दर बेगॉ बा सहेलियान खुद

(मैंनाका सहेलियोंके साथ बेंगासे वापस जाना)

उदये भानु औ रात[१] बिहानी । महरीं देवहा आइ[२] तुलानी ॥१
मैंनाँ देखत मँदिर बुलाई । बहुरि चाँद वह बात चलाई ॥२
कहु इँह मैंनाँ सुरुज[३] जस करा । सो लै चाँदहिं पाटन[४] धरा ॥३
महँ तज सुरुज चँद लै भागा । बरहाँ माँस[५] आइ अब लागा ॥४
जो कहूँ चाँद हौं पाऊँ[६] । कार कै मुँह नगर फिराऊँ[७] ॥५
जस वै कीत सँझाई, तस जग करै न कोइ ।६
जइस दाह[८] महिं दीन्हों[९], तइस दाह यहि होइ ॥७

पाठान्तर—बम्बई प्रति—

शीर्षक—अज शबे सुबह गाह रोशन बरामदन व बेरसीदने मैंना व बेरसीदने चाँदा (सुबह होने पर मैंनाका जाना और चाँदका बुलाना)
१—भानु रात बिहानी । २—आइ । ३—कहु वै सुरुज चाँद ।

४—चाँदे हरदीं। ५—चाँद। ६—जो पै देवस चाँद जो पावँउँ।
७—दारनुहीं कै सरग हिडावँउँ। ८—दाह दैं। ९—दीन्हीं।

४४७

(रीलैण्ड्स ३२१ : बम्बई ५७)

बुजुर्गी खुद नमूदन चाँदा व ऐहानत कर्दने मैंना

(चाँदका अपनी बड़ाई और मैंनाका अपमान करना)

चाँदैं आपुन कियत बड़ाई। मैंनहि बूझत रही लजाई ॥१
बोल बतोल भई झुराई[1]। कहसि न चाँद कहाँ तैं[2] आई ॥२
घरकी चाँदै झझ उचावा[3]। मा[4] झझ जस दाउद गावा ॥३
तब उठि लोरक आपु जनावा। मैंनाँ रह[स*]ी लोरजो पावा[5] ॥४
लोरक चाँद[6] तस कै हरखीं[7]। जूझन कारन फिर न फरकीं[8] ॥५
चेरि सात पाँच कहँ बोलसि, मैंना[9] जाइ सँवारि।६
आज रात मैंने[11] घर जाओं[12], बाहिक है[13] बारि ॥७

पाठान्तर—बम्बई प्रति—

शीर्षक—बुजुर्गी व बलन्दिये खुद गुफ्तन चाँदा व शनाख्तने मैंना व जंग कर्दने चाँदा (चाँदका अपनी प्रशंसा करना; मैंनाका उसे पहचान लेना और झगड़ना)।

इस प्रतिमें पंक्ति ४ नहीं है। उसके स्थानपर पंक्ति ५ है और पंक्ति ५ के स्थानपर एक नयी पंक्ति है।

१—बोलत बोलत भई झुराई। २—तुत। ३—उपावा। ४—भई।
५—यह पंक्ति नहीं है। ६—चाँदहि। ७—हरखी। ८—चाँदा जस न फिरि न फरकी। ९—मैंनहि। १०—मैं बहि। ११—आउब।
१२—रात है बहि कर।

पाँचवीं पंक्तिके रूपमें नयी पंक्ति इस प्रकार है—अरहु समुझ नहिं रही लजाई। आपुन चाँद जो कीत बड़ाई ॥

४४८

(रीलैण्ड्स ३२२ बम्बई ५८)

दर शब रफ्तने लोरक दर खानये मैंना व दिल खुश करदन ऊ

(लोरकका रात्रिम मैंनाके घर जाना और मनोविनोद करना)

मैंना चेरिंह^1 ले अन्हवाई। सुँगिया सारि^2 आन पहराई ॥१
दुसरें पाट जो बैसारसि^3। मुख तँबोल चख काजर सारसि^4 ॥२
चदरी हद जनु अजीत नीसरा^5। देख सुरुज चाँदा बीसरा^6 ॥३
रात जाइ कै^7 नारि मनाई। चाँदा चाह अधिक तैं पाई^8 ॥४
बहुल दुख जो नारि बखानाँ। राखसि मान लौर जम जानाँ ॥५
कहसि सुरुज धनि चाँदा, अब कम देउतहिं दोस^10 ।६
हम मैंना जेंउ तरई, रहहिं चाँद परोस^11 ॥७

पाठान्तर—बम्बई प्रति—

शीर्षक—गुस्ल दादनें कनीजगान मर मैंना रा, व करदने खास आरास्तन व दर खाना बुर्दन (दासियोंका मैंनाको नहला कर वस्त्र पहनाना और मन बहलाव करना)।

१—चेरों। २—सारी। ३—जो वहि बैसारी। ४—सारी। ५—अजित निसरा। ६—सुरुज तब चाँदहि बिसरा। ७—तो। ८—चाँदहि चाह अधिक पैसाई। ९—पहिले। १०—कहसि सुरुज धनि छाड़ि जो मैं कीता दोस। ११—हमारे छाँह जस तरई, रहहु चाँद परोस॥

४४९

(रीलैण्ड्स ३२३)

खबर शुनानीदने लोरक दर शहरे गोबर अज आमदने खुद

(लोरकका अपने आनेका समाचार गोबर भेजना)

गोबराँ अपजस बात जनाई। मैंनाँ राखमि ताहि सँझाई ॥१
अजयी के घर खोलिन गई। लागि गुहार बात अस भई ॥२
भा असवार घोर दउरावा। लोरक सुनि कै झझन आवा ॥३

दउर खाँड अजयी सर दीन्हाँ। तावर टूटि लोर विह चीन्हाँ ॥४
तोहि उठि कै भये अँकवारा। [----] कै मैं तों मारा ॥५
काहि लागि तूँ हाँकसु, उठु आपुन घर आउ ।६
आगें दइ लोरक लेतस, चाहि पूत तुम्ह पाउ ॥७

४५०

(रीलैण्ड्स ३२४)

दर खानने आमदने लोरक व पाये मादर उफ्तादन

(लोरकका अपने घर आकर माँके पैर पड़ना)

चढ़ तुरी लोर घर आवा। पायँ लागि के माइ मनावा ॥१
नित कहि अस पूत न कीजइ। वृद्धि माद कहँ दुख न दीजइ ॥२
खोलिन बहुएँ दोऊ आनी। चाँदा मैंना दोनैं रानीं ॥३
पायँ परी अँकवारीं धरीं। काजर सेंदुर दोऊ करीं ॥४
अगिन परजार क रसोइ बघारा। कोठा वारी सेज सँवारा ॥५
चाँद सुरुज औ मैंनाँ, बरस सहस भा राज ।६
गावहिं गीत सहेलियाँ, गोवर बधावा आज ॥७

टिप्पणी—(४) काजर—काजल। सेंदुर—सिन्दूर।
(५) बघारा—छौंका, बनाया। कोठा—अट्टालिका। वारी—घर।

४५१

(रीलैण्ड्स ३२५)

पुरसीदने लोरक मादर रा व जवाब दादने मादर

(लोरकका माँसे पूछना और माँका उत्तर देना)

लोरक पूछहि कहु महिं माई। कित घनि मैंनाँ कितहुत भाई ॥१
तोरैं पाछे बावन आवा। चैंनां मैंना गाढ़ी लावा ॥२
अजयी कर खार उठ धावा। चैंनां मैंना आइ छुड़ावा ॥३

तोहि महरहिं नाऊ चलावा । माँकर कहँ अस बोल पठावा ॥४
कहा लोर इँह देस परानाँ । हरदीपाटन जाइ तुलानाँ ॥५
भये बीर है माँकर, मारि गाइ लै जाह ।६
ऐसे बीर कितहु देह पाये, सँवरू राय गवाह ॥७

४५२

(बम्बई ६ रीलैण्ड्स ३२६)

सुनीदने माँकर कैफियते रफ्तने लोरक व आमदन बाल्दरर व कुश्तन सँवरू व बुदने माँद गाव

(लोरक के जानेका समाचार सुनकर माँकरका ससैन्य आना और सँवरूको मारकर गाय ले जाना)

सुनि कै माँकर कटक चलावा । बोहाँ कँवरुहि मारइ धावा[1] ॥१
बहुत[2] कटक सेउँ[3] माँकर आहा । एकसर कँवरू करि (वहि) काहा[4] ॥२
कँवरुहि नाउ हँकारइ आवा[5] । राजा कापर तिह पहिरावा ॥३
राजा पहँ तो सँवरू आवा[6] । धरि कर माँकर सँवरू मरावा[7] ॥४
दइके पूत अस पहिहि भयउ[8] । वरु हँसि काढी गोउहि[9] गयउ ॥५
एक दुख महि तोरा, दूसर वहि कर लाग ।६
देवस रोइ के फेकरो, [रात जाइ सभ[10]] जाग ॥७

मूलपाठ—२—दुहि (वाके स्थान पर दाल लिए जाने कारण यह पाठ है)।

पाठान्तर—रीलैण्ड्स प्रति—

शीर्षक—ऐजन (वही)।

इस प्रतिमें पंक्ति ३, ४ और ५ क्रमशः ५, ३ और ४ है।

१—कँवरु मारन आवा। २—बहुल। ३—सहँ। ४—इक कँवरू करइ ईंह (?) काहा। ५—कँवरु मार नाउत सुनावा। ६—राजा पँह कँवरु चलि आवा। ७—बाँगर माँकर कँवरू मरावा। ८—अस दुख पूत महि वर भयउ। ९—काढ़िन गोउ। १०—एक दुख पूत महि तारा, दूसर वहि क जो लाग।

टिप्पणी—(१) कटक चलावा—सेना रवाना किया। 'कटक चलि आवा' अर्थात् कटक (उड़ीसामें एक प्रसिद्ध स्थान)से चलकर आया, पाठ भी सम्भव है। बोहाँ—लोक कथाओंके अनुसार बोहाँ में लोरकका भाई कँवरू, जिसे लोककथाओंमें सँवरू भी कहा गया है, रहता था और वहाँ उसको गाय भैंसोंका बाड़ा था।

(२) एकसर—अकेला।

(६) गोउँहि—गायोंको।

(७) फेकरों—(धा० फेकरना)—किसीके वियोगमें चिग्घाड़ कर रोना; चिल्लाना।

४५३-?

(अनुपलब्ध)

परिशिष्ट

१
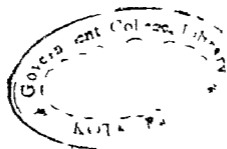
दौलतकाज़ी कृत सति मैना उ लोर-चन्द्रानी

दौलतकाजी अराकान नरेश थिरि थु धम्मा (श्री सुधर्म) (१६२२ १६३८ ई०) की राजसभाके कवि थे। उन्होंने वहाँके प्रधानमन्त्री अशरफ खाँके आदेशपर 'सति मैना उ लोर चंद्रानी' नामक बँगला काव्यकी रचना की। इस ग्रन्थके सम्बन्धमें उन्होंने लिखा है कि इस कहानीको मूलतः साधनने ठेठ चौपाई और दोहोंमें कहा था। लेकिन प्रधानमन्त्री अशरफ खाँकी सभामें कुछ लोग ऐसे हैं जो गोहारी भाषा नहीं समझते। इसलिए अशरफ खाँने उनसे उसे बगला भाषा और पाचाली (बगलाका एक अत्यन्त प्रचलित और लोकप्रिय छन्द) छन्दमें कहनेका आदेश दिया। तदनुसार उन्होंने इसकी रचना आरम्भ की। पर वे उसे पूरा न कर सके। उनके मृत्युके पश्चात् श्री चन्द्र सुधर्म (१६५२ १६८४ ई०)के शासन कालमें उनके प्रधानमन्त्री सुलेमानके आदेशसे एक दूसरे राजकवि आलाओलने उसे पूरा किया।

यह काव्य पहले 'सती मैना' नामसे हमीदी प्रेस, कलकत्तासे प्रकाशित हुआ था। कुछ वर्ष हुए उसे सतेन्द्र घोषालने विश्वभारती (शान्तिनिकेतन)से प्रकाशित साहित्य प्रकाशिका (खण्ड १)में 'कवि दौलतकाजीर सती मयना ओ लोर चन्द्रानी' शीर्षकसे सुसम्पादित रूपमें प्रकाशित किया है।

इसमें लोर और चन्द्रानीकी प्रेमकथाका वर्णन इस प्रकार है —

मैनावती नामक एक राजकन्या थी, जिसका विवाह लोर नामक युवकसे हुआ था जो अत्यन्त वीर और निर्भीक था। वह अपनी पत्नीको छोड़कर नगर नगर, वन वन घूमने लगा। उसके साथ नगरके सभी युवक हो गये। लोर एक जगलमें चला गया वहाँ महल बनाकर केलि कुतूहलमें घरवालोंको भूल गया। इधर लोरके वियोगमें मैना अत्यन्त दुखी रहने लगी। वह पुरुष जातिकी कठोरताकी निन्दा करती हुई उसके विरहमें अपना समय व्यतीत करने लगी।

एक समय लोर अपनी सभामें बैठा था और नाच-गान हो रहा था, तभी उसे खबर मिली कि एक योगी उससे मिलने आया है और पूछने पर वह कोई जवाब नहीं देता। उसके एक हाथमें सोनेका घड़ा और दूसरे हाथमें एक चित्रपट है जिसपर एक नारीका चित्र अंकित है। उसे ही वह एकटक देखता रहता है। लोरने योगीको तत्काल सभामें लानेका आदेश दिया। योगी राजसभामें आते ही मूर्छित हो गया। जल छिड़क कर उसे होशमें लाया गया। उसे अपने पास बैठाकर लोरने उससे निर्जन

वनमें आनेका कारण पूछा और जानना चाहा कि उसके हाथमें किसका चित्रपट है। उसपर अंकित नारी चित्रको और राजाका चचल चित्त आकृष्ट हो गया था।

योगीने बताया—पश्चिम देशमें गोहारी नामक राज्य है। वहाँके राजाका नाम महरा है। उसका एक जामाता है, जिसका नाम बावनवीर है। वह अत्यन्त बली है। उसकी वीरताके कारण ही राजा सुखपूर्वक राज्य करता है। उसकी पत्नी, महराकी राजकुमारी परम रूपवती है। उसका नाम चन्द्रानी है। उसके रूपकी चर्चा देश देशान्तर तक फैली हुई है। उसे देखनेके लिए दूर दूरसे राजा महाराजा गोहारी देशमें आते हैं। सब ऐश्वर्य होते हुए भी चन्द्रानीका पति बावनवीर कामशक्तिसे वंचित है। जब भी बावनवीर चन्द्रानीके पास जाता तो वह और उसकी सखियाँ उसकी बड़ी सेवा करतीं और काम भोगके लिए प्रेरित करतीं। किन्तु वह उस पर तनिक भी ध्यान नहीं देता। एक दिन चन्द्रानीकी मामने बावनको अपनी पत्नीके साथ रात्रि शयनके लिए आवाहन किया। उस दिन बावन आया और चन्द्रानीके साथ उसका साक्षात भी हुआ। किन्तु उसने सारी रात्रि सोनेमें ही बिता दिया और सबेरा होते ही वह वनको चला गया।

उसके चले जाने पर चन्द्रानी विलाप करने लगी। उसने अपनी माँसे जाकर कहा कि अब वह एकाकिनी रहेगी। अगर उसे पुनः उसके पतिसे मिलानेका यत्न किया गया तो वह जहर खाकर जान दे देगी। फलतः उसकी माँने राजासे कहकर उसके लिए एक बहुत बड़ा सजा सजाया महल बनवा दिया और उसकी देखरेखके लिए अनेक सुन्दरियाँ नियुक्त कर दीं। नये महलमें जानेसे पूर्व चन्द्रानी अपनी सखियोंके साथ देवस्थानमें गयी। वहाँ उसके रूपदर्शनके लिए छोटे बड़े सब एकत्र हुए।

मैं भी उस दिन वहाँ समाधिस्थ बैठा था। उसके रूपको देखते ही मैं संज्ञाहीन हो गया और तभी से मैं भ्रान्त होकर घूम रहा हूँ। तीन दिन की मूर्छाके बाद जब मुझे ज्ञान हुआ तो मैंने लोगोंसे कहा कि देवी ने मुझे साक्षात दर्शन दिया है। यह सुनकर लोग हँसे और उन्होंने मुझे मूर्ख कहा। उन्होंने बताया कि जिसे मैंने देखा वह राजकुमारी चन्द्रानी थी। उसका दर्शन फिर सभव न जानकर मैंने इस चित्रपटको अपने साथ रख छोड़ा है। यहाँ आकर मैंने देखा कि आप उस रूपवतीसे मिलनेके अधिकारी हैं।

चन्द्रानीके रूपकी कहानी सुनकर लोर उससे मिलनेको विकल हो उठा। योगी उसे महराकी राजधानी ले चलनेको सहमत हो गया। सेना तैयारकी गयी और उसे लेकर लोर गोहारी मण्डलमें पहुँचा। जब महराको लोरके आनेकी बात ज्ञात हुई तो उसने उसकी बड़ी आवभगत की और बहुत सी वस्तुएँ भेंट कीं। गोहारी देशमें छ माग तक रहने पर भी लोरको चन्द्रानीके दर्शन न हुए। उसे ज्ञात हुआ कि चन्द्रानी एक दुर्भेद्य निर्जन स्थानमें रहती है। वहाँ पहुँचनेके सब मार्ग बन्द हैं। सालमें दो बार राजा देश विदेशके राजाओंको निमन्त्रण करता है और उस समय चन्द्रानीको देखनेके लिए देश देशके राजा वहाँ आते हैं। जब वह अवसर आया और सब राजा

लोग राजसभामें एकत्र हुए तो लोर भी वहाँ गया। चन्द्रानीने झरोखेसे लोरको देखा। लोर पर दृष्टि पडते ही वह अचेत हो गयी और उसकी सखियाँ घबरा उठीं। सभा भंग हो गयी और उपस्थित लोग अपने अपने निवास स्थानको चले गये। लोरको चन्द्रानीका दर्शन न हो सका और वह उसके वियोगमें व्याकुल हो उठा।

इधर चन्द्रानीने जबसे लोरको देखा तबसे उसने सखियोंसे मिलना जुलना बद कर दिया। वस्त्राभूषण त्याग दिये। दिन दिन उसका शरीर क्षीण होने लगा। सखियोंको कुमारीकी इस दशाका कारण ज्ञात न हो सका। जब चन्द्रानीकी धायसे यह सब न देखा जा सका तो एक दिन उसने उसकी वेदनाका कारण पूछा। उसने यह भी आश्वासन दिया कि यदि वह कारण बता दे तो चाहे जिस तरह हो उसे दूर करेगी। बहुत कहने सुनने पर चन्द्रानीने अपने मनकी व्यथाका कारण प्रकट की और अपने प्रेमीसे मिला देनेकी प्रार्थनाकी।

यह सुनकर धायने कहा—यह तो सहज बात है। तुम अपने पितासे राजाओंको पुनः निमन्त्रित करनेका अनुरोध करो। तदनुसार चन्द्रानीने अपने पितासे अनुरोध किया और उसने सब राजाओंको निमन्त्रित किया। सब राजालोग एकत्र हुए। पानफूलसे उनका सत्कार किया गया। धायने इस बीच सभामें एक दर्पण भिजवा दिया। दर्पण इतना आकर्षक था कि उसे देखनेके लिए सभामें एकत्र लोग उसके निकट आने लगे। जैसे ही लोर उस दर्पणके पास आया, धायने तत्काल चन्द्रानी को द्वारपर खडा कर दिया और उसका प्रतिबिम्ब दर्पणमें जा पडा। चन्द्रानीके प्रतिबिम्बको देखते ही लोर मूर्छित हो गया। लोग उसे उठाकर उसके शिविरमें ले गये, पर वे मूर्छित होनेके कारण न जान सके।

होश आनेपर लोर विरह वेदनासे संतप्त हो उठा। उधर चन्द्रानीकी भी अवस्था बिगडने लगी। धायने उससे धैर्य रखनेको कहा और लोरके शिविरमें गयी। द्वारपालने लोरको सूचना दी कि एक वृद्धा मिलने आयी है। लोरने उसे बुलाया। आनेपर उसने वृद्धासे उसका पता ठिकाना पूछा। वृद्धाने अपना नाम सतसील बताया और व्यवसाय वैद्यक। यह सुनकर लोरने कहा—तुम मेरी चिकित्सा नहीं कर सकती।

तब बातचीतमें धायने चन्द्रानीका नाम लिया और उठकर जाने लगी। लोरने उसे तत्काल रोका और अपने मनकी व्यथा कह सुनायी।

उसे सुनकर धायने कहा—तुम्हें तो प्रेम रोग है। उसकी औषधि मेरे पास नहीं है। उसकी औषधि तो एकमात्र प्राण प्यारी का मिलन ही है। चन्द्रानीका पति बावनबीर बडा ही भयंकर आदमी है। सुनेगा तो मार डालेगा।

लोरके बहुत अनुनय विनय करनेपर धायने कहा—अच्छा, तुम योगीका रूप धारण कर देवस्थान चलो। वहीं तुम्हारी प्रेमिकासे तुम्हारी भेंट होगी। यह कहकर धाय चन्द्रानीके पास लौट आयी और चन्द्रानीसे अवसर देखकर देवस्थान जानेको कहा। पर्व दिवस आनेपर चन्द्रानी सखियोंके साथ देवस्थान गयी और वहाँ

उसने योगी वेश धारी लोरको देखा। लोगोंकी नजर बचानेके लिए उसने अपने गलेकी रत्नमाला तोड दी। सब रत्न बिखर पडे। सभी सखियाँ रत्न बटोरनेमें लग गयीं और दोनों प्रेमी प्रेमिका एक टक एक दूसरेको निहारते रहे। जब सखियोंने रत्न एकत्र कर पिरोकर उसे दिया तो उसे लेकर चन्द्रानी वहाँसे हट आयी और देवीकी पूजा कर घर लौटी।

लोरने अब चन्द्रानीसे मिलनेका पूरा निश्चय कर लिया और चन्द्रानीके दुर्लभ्य महल तक पहुँचनेका उपाय सोचकर एक कमन्द बनवायी रातमें वह महलके पीछे जा पहुँचा। और पहरदारोंकी निगाह बचाकर उसने चन्द्रानीके महल पर कमन्द फेंका। सखियाने तत्काल कमन्द उखाड दी। लेकिन लोर हताश नहीं हुआ। उसने पुन कमन्द फेंकी और कमन्द छतसे जाकर अटक गयी। सखियोंने उसे फिर उखाड दिया। लोरने देवगणोंकी प्रार्थना करके तीसरी बार कमन्द फेंकी और इस बार उसका नुकीला अश छतमें जाकर पूरी तरहसे बैठ गया। यह देखकर कि लोरका पौरुष काम कर गया, चन्द्रानीकी सखियोंने उसे हरानेकी दूसरी तरकीब सोची। उन्होंने एक ही तरहकी चार सेजें बिछाया। तीन सखियोंने चन्द्रानीके वस्त्र पहन लिये और चन्द्रानीको लेकर चारों चार शय्या पर सो गयीं।

लोर जब ऊपर पहुँचा तो उसने वहाँ एक ही तरहकी शय्या पर एक ही तरह की वेशभूषामें चार युवतियोंको सोता पाया। वह सोचमें पड गया कि चन्द्रानीको कैसे पहचाना जाय। वह चारों सेजोंका ध्यानपूर्वक निरीक्षण करने लगा। उसने देखा कि कुमारीकी शैय्याके चदोवाका बन्धन तो पुराना है और शेषका नया। तत्काल वह चन्द्रानीकी शैय्या पहचान गया। सखियाँ अपना वार खाली गया देखकर उसकी परिचर्यामें लग गयीं।

इस प्रकार लोर और चन्द्रानीका मिलन हुआ। दूसरे दिन उसी प्रकार लोर चन्द्रानीसे मिला। उस दिन चन्द्रानीने बताया कि उसका पति—बावनबीर बनसे लौटने वाला है। यदि उसे इस रहस्यका पता लग गया तो बिना मारे नहीं छोड़ेगा। चन्द्रानी यह कहकर विलाप करने लगी। लोर ने उसे धीरज बँधाया। कहा—डरने की कोई बात नहीं। बावनके आनेसे पहले ही मैं तुम्हें यहाँसे निकाल ले जाऊँगा।

वह चन्द्रानीको महलसे निकाल लाया और रथ पर बैठाकर सारथी मित्रकण्ठसे रथको वन मार्गसे ले चलनेको कहा ताकि बावनको पता न लग सके।

लोर और चन्द्रानीके भाग जानेका समाचार जब राजा रानीको मिला तो वे विलाप करने लगे। बावनको जब ज्ञात हुआ कि लोर उसकी पत्नीको भगा ले गया है तो वह क्रोध और अपमानसे क्षुब्ध होकर सेनाके साथ लोर चन्द्रानीकी खोजमें चला।

खोजते-खोजते उसने लोर-चन्द्रानीको ढूँढ निकाला और लोरको धिक्कारते हुए उसने उस पर चोरीका दोष लगाया और युद्धके लिए ललकारा। लोरने उत्तर दिया—

नपुंसक होनेके कारण तुम्हारा चन्द्रानी पर कोई अधिकार नहीं। वास्तवमें मैं उसका पति हूँ।

तदन्तर दोनोंमें घनघोर युद्ध छिड़ गया। बावन तीखे बाणोंसे लोर पर प्रहार करने लगा और लोर उन बाणोंको काटने लगा। बाणोंकी मारसे लोरका शरीर जर्जर हो उठा, फिर भी उसने गर्वसे बावनको ललकारा कि घर जाकर अपने जीवनकी रक्षा करो। इतनेमें बावनके एक बाणकी चोटसे वह मूर्छित हो गया।

चन्द्रानी इस युद्धको बड़ी कातरताके साथ देख रही थी। सारथी मित्रकठने देखा कि लड़ाईमें बावनको जीतना कठिन है तो उसने छलसे काम लेनेका निश्चय किया। चन्द्रानीके वस्त्रका एक खण्ड बाणमें बाँधकर उसने बावन पर छोड़ा। बावन को अपनी पत्नीकी याद आ गयी और उसने सोचा कि कदाचित वह स्वयं उस पर बाण चला रही है। उसका हाथ रुक गया। इतनेमें मित्रकठने लोरकी मूर्छा दूर की। लोर उत्तेजित होकर पुन बावन पर टूट पड़ा। फिर दोनोंमें युद्ध छिड़ गया। लोरने ब्रह्मास्त्र सधाना और बावनको मार गिराया। गिरते गिरते बावनने लोरकी वीरताकी बड़ाईकी और अनुरोध किया कि वह चन्द्रानीको अपनी पत्नीके रूपमें ग्रहणकर उसके माता पिताकी सहायता करे।

लोर चन्द्रानी का रथ आगे बढ़ा। दोनों थक गये थे। उन्होंने विश्राम करने का निश्चय किया। लोरने रथ एक पेड़के नीचे रोक दिया। घूम फिरकर सरोवरके पास एक निर्मल स्थान देखा। मित्रकठने घोड़ोंको पानी पिलाया। सब लोगोंने भोजन किया। पश्चात् लोरके सीने पर सिर रखकर चन्द्रानी सो गयी। लोर भी झपकियाँ लेने लगा। दैव दुर्विपाकसे एक सांपने आकर चन्द्रानी को डँस लिया। चन्द्रानी केवल यही कह सकी—अरे लोर, तू क्या कर रहा है? देख नाग मुझे मारे डाल रहा है।

विष तेजीसे चढ़ने लगा। मित्रकठ और लोर घबरा उठे। मित्रकठने कहा— आप यहीं रहें, मैं औषधि लेने जाता हूँ।

मित्रकठके जाते ही चन्द्रानी निस्पन्द हो गयी। अपनी प्रेमिकाकी यह अवस्था देख लोर विलाप करने लगा। वह बार बार उसके रूप और गुणोंकी चर्चा करता। उसे पानेके लिए उसने जो जो प्रयास किये थे, उन सबका वह बखान करने लगा। मित्रकठको वनमें औषधि नहीं मिली। उसने सोचा चन्द्रानी अब तक मर गयी होगी। उसके मरते ही लोर का प्राण जाना निश्चित है। बिना लोरके मेरा भी जीना किसी तरह संभव नहीं है। यह सोचकर मित्रकठ पानीमें कूद पड़ा।

उसी समय एक योगी आया। उसने मित्रकठ को पानीसे निकाला और आत्म हत्या करनेका कारण पूछा। उसने सब कहानी कह सुनायी। योगी उसे लेकर लोर और चन्द्रानी के पास पहुँचा। चन्द्रानी मर चुकी थी। लोर उस तपस्वीकी औषधि बेकार समझकर स्वयं भी मरनेको तैयार हुआ। मित्रकठने लोरको धीरज देते हुए तपस्वीकी पूजा करनेका अनुरोध किया और बताया कि मरे हुए एक राज पुत्रको मुनिने मंत्रसे जीवनदान मिल चुका है।

यह सुन कर लोरने उस योगीकी पूजाकी और उससे चन्द्रानीके प्राणदानके बदले अपना सर्वस्व देनेका वादा किया। योगीने कहा—मुझे धन दौलत का लोभ नहीं। मार्गा जी जाय तो बारह बरस तक तुम दोनों मेरी दास भावसे सेवा करना।

लोरने तपस्वीकी बात मान ली। योगीने तत्काल नागका आह्वान किया जो स्वयं वहाँ उपस्थित हो गया। उस नागकी महिमासे चन्द्रानी जीवित हो उठी और उसे पुनः अपना रूप मिल गया। चन्द्रानीके जीवित होते ही योगी अन्तर्ध्यान हो गये।

इसी बीचमें गोहारीके राजा महराको पता चला कि बावनवीर मारा गया। उसे यह भी पता चला कि मरते समय बावनने उन दोनोंको पति पत्नी रूपमें देखनेकी इच्छा प्रकटकी है। राजाने अपनी सेना सुसज्जितकी और वनमें पहुँचा। सेनाको देखकर लोरने मिनरन्से पूछा कि किसकी सेना है। जब उसने बताया कि शायद गोहारी राजा अपने जामाताके वधका बदला लेने आया है तो लोर युद्धके लिए तैयार हो गया। मिनरन्ने कहा—कृपि प्रसादसे विजय निश्चित है। आपकी बात तो अलग, मैं स्वयं शत्रुदलको पराक्त करनेकी हिम्मत रखता हूँ।

यह कहकर मिनरन्ने रथ चलाया ही था कि एक बूढ़ा ब्राह्मण लोरके पास आया और आकर बोला—गोहारीके राजाने मुझे आपके पास भेजा है और कहलाया है कि आप वापस चलकर सबकी रक्षा करें।

लोरने चन्द्रानीके अनुरोधपर उसकी बात मान ली। इस तरहसे लोर पुनः गोहारी देश लौटकर राजाके मरनेके बाद वहाँका राजपाट चलाने लगा।

× × ×

इधर मैंना अपने पतिके विरहमें सन्तप्त हो रही थी। वह धर्म कर्म और पूजामें रत रहती। उसके सतीत्वकी प्रशंसा सुनकर नरेन्द्र राजाके पुत्र छातनकुमार अपहरणके उद्देश्यसे बनियेके वेशमें आया। अपनी कार्य सिद्धिके लिए उसने रत्ना मालिनसे सहायता मागी। मालिन धनके लोभमें यह कार्य करनेको तैयार हो गयी। वह मालिन मैंनाके पास पहुँची और बोली—मैं तुम्हारी बचपनकी धाय हूँ।

मैंनाने उसकी बातपर विश्वासकर उसकी अभ्यर्थनाकी और उसे अपने पास रख लिया। वहाँ रहकर वह मालिन मैंनाको बहकानेके लिए तरह तरहकी बातें कहती और उसे विरहावस्था त्यागकर किसी प्रेमीको अपनानेको प्रेरित करती। पर मैंना अपने पति प्रेममें रत थी। वह अपने सतसे टलनेको तैयार न हुई। इसी प्रसगमें बारहमासा आता है। मालिन ऋतुओंका वर्णन करके सतके पथसे उसे भ्रष्ट करना चाहा किन्तु मैंना अपने पथसे विचलित नहीं हुई।

इस प्रकरणके समाप्त होते ही दौलत काजी कृत रचना समाप्त हो जाती है। बादकी कथा आलाओलने इस प्रकार समाप्त की है—

मैंनापर अपना प्रभाव न पड़ते देख मालिन क्रमशः हताश होने लगी। ज्येष्ठ मासका वर्णन समाप्त होते होते मैंना दूतीको पहचान जाती है और उसका मुँह काला करवाकर गधेपर चढ़ाकर निकाल बाहर करती है।

पश्चात् मैंनाकी विरह व्यथा अत्यत दुस्सह हो उठती है। उसे धैर्य देनेके लिए उसकी सखी एक लम्बी कहानी कहती है। कहानी सुनकर मैंनाको धैर्य मिलता है। इस प्रकार चौदह बरस बीत गये। तब मैंनाने लोरके पास एक वृद्ध ब्राह्मण को भेजा। ब्राह्मण अपने साथ एक पक्षी लेकर लोर के पास गया। राजासभामें उस पक्षीने लोरके सम्मुख मैंनाकी विरह वेदना व्यक्त की। फलत लोर विकल हो गया और मैंनाके पास जानेकी तैयारी की और चन्द्रानीको साथ लेकर वह मैंनाके पास आ गया। दोनों रानियोंके साथ सुखभोग करता हुआ आयुपूर्ण होनेपर लोरकी मृत्यु हुई। दोना पत्नियाँ उसके साथ सती हो गयीं।

•२
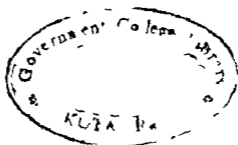
साधन कृत मैंना-सत

साधन कृत मैंना-सतकी रचना कब हुई, इस सम्बन्धमें अभी कुछ निश्चित नहीं कहा जा सकता, पर इतना तो निश्चय है कि वह सोलहवीं शताब्दीके मध्यसे पूर्व की रचना है। यह रचना आज दो रूपोंमें उपलब्ध है।

१—चतुर्भुजदास निगम कृत मधु-मालतीके कुछ पाठोंमें यह रचना दृष्टान्त स्वरूप अन्तर्युक्त है। इस रूपमें प्राप्त मैंना-सत की सूचना माताप्रसाद गुप्तने ११५४ में अवन्तिकामें दी थी। पश्चात् मधु-मालतीके दो प्रतियोंके आधारपर हरिहर निवास द्विवेदीने १९५८ में मैंना-सतका एक संस्करण प्रकाशित किया है। इसके अनुसार कथा इस प्रकार है—

वरनापुरीके अनुसरि जातिके महाजनोंमें लाल्न (लोरक) नामके एक महाजन थे। मैंना उनकी रूपवती पत्नी थी। एक समय वहाँके महाजनोंने व्यापारके निमित्त परदीप जानेका निश्चय किया उनके साथ लाल्न (लोरक) भी जानेको उद्यत हुआ। उसकी पत्नी मैंनाने रोकनेकी चेष्टा की। लाल्न (लोरक) उसे समझा बुझाकर यह आश्वासन देकर कि वह एक वर्षमें लौट आयेगा, परदीप चला गया।

पतिकी अनुपस्थितिमें मैंना सब आमोद प्रमोद त्यागकर उदास रहने लगी। गंगापार पूरबके देशके किसी राजाका सातन नामक लम्पट पुत्र था। उसने एक दिन आखेट के लिए जाते समय मैंनाको अपनी अट्टालिकापर बैठे देख लिया और उसपर आसक्त हो गया। उसे प्राप्त करनेके निमित्त उसने अपने मित्रसे परामर्श किया और उसके परामर्शसे रतना नामक मालिनको बुलाकर मैंनाको पथभ्रष्ट करनेको कहा। मालिनने इस कार्यको पूरा करनेका बीड़ा उठाया।

मालिन सारी तैयारी करके मैंनाके महलमें पहुँची। उसने मैंनाको अनेक उप[illegible] अपने पतिघर कहा कि मैं तुम्हारी बचपनकी धाय हूँ। तुम्हें मैंने दूध पिलाया बारहमासा आता है ? आकृष्ट होकर तुम्हारे पास आयी हूँ।

[illegible] चाहा किन्तु मैंना अपनत्वपर विश्वास कर लिया और उसका आदर सत्कार किया।

इस प्रकरणके समाप्तानेके पश्चात् मालिनने मैंनासे मलिन वेशमें रहनेका कारण [illegible] कथा आलाओलने इन्हें मलिन रहनेका कारण पतिका विदेश गमन बताया

मैंनापर [illegible]ना प्रभाव अनुभूति प्रकट की और आँसू बहाये। फिर सहानुभूतिके माध्य[illegible] [illegible] मैंना अवस्था वर्णन कर मैंनाको उसके यौवनका स्मरण [illegible] करनेकी चेष्टा करने लगी।

मैना उसकी बातोंका निरन्तर प्रतिकार करती और पर पुरुषपर दृष्टिपात न करनेका निश्चय दृढतासे प्रकट करती रही। इस प्रकार बारह महीने बीत गये। तब दूतोंने आकर मैनाको उसके पतिके लौट आनेकी सूचना दी। थोड़े दिनों पश्चात् जब मैनाका पति घर आ गया तब उसने शृंगार किया और अपने पतिके साथ आनन्द विहार करने लगी।

इस बीच मैनाको कुटनी मालिनकी याद आयी और उसने उसका सिर मुड़ाकर कालापीला मुखकर गधेपर चढ़ा कर नगरमें घुमाया। पश्चात् उसे नदी पार निकाल बाहर किया।

२—साधन कृत मैना-सतकी कुछ ऐसी प्रतियाँ उपलब्ध हैं, जिनका अन्य किसी कथासे सम्बन्ध नहीं है। स्वतन्त्र रचनाके रूपमें प्राप्त प्रतियाँ फारसी[1] और नागरी[2] दोनों लिपियों में पायी जाती हैं। इन प्रतियों में जो कथा है उसमें मधु-मालतीमें समाहित कथाके समान आरम्भ नहीं है। इनमें कथाका आरम्भ सातन कुँवर नामक नागरिक धूर्त द्वारा पतिव्रता मैनाको वशमें करनेके लिए रतना मालिनको भेजनेके प्रसंगसे होता है। आगेका वर्णन लगभग दोनों रूपोंमें समान है। अर्थात् सातन कुँवर द्वारा भेजे जानेपर रतना मालिनने मैनाके पास जाकर अपना परिचय धायके रूपमें दिया और मैनाने उसका आदर सत्कार किया। पश्चात् मालिन ने उसके मलिन वेशके प्रति सहानुभूति प्रकट करते हुए प्रति मास कामोद्दीपक स्थितिका वर्णन करते हुए परपुरुषके साथ सम्पर्क स्थापित करनेके लिए उकसाना आरम्भ किया। मैना उसकी बातोंका निरन्तर प्रतिकार करती रही। बारह महीने पश्चात् मैनाने उसकी बातोंसे चिढ़कर उसका सिर मुँड़ाकर उसका मुख काला पीला कराकर गदहे पर बैठाकर निकाल बाहर किया। इस प्रकार इसमें मधु-मालतीमें समाहित अन्त वाला अंश भी नहीं है।

मैना-सतके इस रूपमें मैना मालिनके वार्तालाप प्रसंगसे ज्ञात होता है कि वह मैनाके पतिका नाम लोरक है। उसे महरकी चाँदा नामक बेटी भगा ले गयी है अथवा उसके साथ भाग गया है। सौतके साथ पतिके भाग जानेपर मैना अनुभव करती है कि उसके साथ अन्याय किया गया है। फिर भी उसे इसका मलाल नहीं है। अपनी सौतकी चेरी बनकर रहनेको तैयार है।

मैना-सतका जो स्वतन्त्र रूप है, उसी तरहकी एक रचना फारसीमें भी पायी जाती है उसे हमीदी नामक सूफी कविने अस्मतनामा शीर्षकसे १०१६ हि० (१६०८ ई०) में जहाँगीरके शासनकालमें प्रस्तुत किया था।[3] उसमें कथा इस प्रकार है—

---

१ एक खण्डित प्रति मनेर शरीफ (पटना)के खानकाहमें है। उसे सैयद हसन अस्करीने 'मआसिर' (पटना)के अंक १६ और १७ में प्रकाशित किया है। एक दूसरी प्रतिके चार पृष्ठ प्रिंस आव वेल्स म्यूजियम, बम्बई और एक पृष्ठ राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्लीमें है।

२ दो प्रतियोंको अगरचन्द नाहटाने हिन्दी विद्यापीठ ग्रन्थवीथिका (सन् १९५९)में और एक प्रतिको अवध भारतीमें और एक प्रतिको उदयशंकर शास्त्रीने प्रकाशित किया है। एक अप्रकाशित प्रतिकी प्रतिलिपि नागरी प्रचारिणी सभा, काशीमें है।

३ इसकी एक हस्तलिखित प्रति अलीगढ़ विश्वविद्यालयके पुस्तकालयमें है।

हिन्दुस्तानके एक राजाके एक लड़की थी, जिसका नाम मैना था। वह अत्यन्त रूपवती थी साथ ही पतिव्रता भी थी। उसका विवाह राजाने लोरक नामक एक सुन्दर युवकसे कर दिया था। उससे मैनाका अत्यन्त घनिष्ट प्रेम था। लेकिन लोरकने राजकुमारी मैनाको छोड़कर चाँद नामक एक अन्य सुन्दरीसे सम्बन्ध स्थापित कर लिया और मैनाको त्यागकर चाँदाके साथ किसी अन्य नगरको चला गया। मैना पतिके वियोगमें व्यथित रहने लगी।

इसी बीच मैनाके सौन्दर्यकी प्रशंसा सुनकर सातन नामक एक आवारागर्द आशिक मिजाज नौजवान मैनापर मुग्ध हो गया और रात दिन राजकुमारीके महलका चक्कर लगाने लगा। एक दिन अकस्मात् उसने मैनाको अपनी अट्टालिकापर खड़ा देख लिया। उसके सौन्दर्यको देखते ही वह मूर्छित हो गया।

सातनने मैनाको प्राप्त करनेको एक बुढ़िया कुटनीको नियुक्त किया। वह धूर्त बुढ़िया एक दिन फूलोंका गुलदस्ता लेकर मैनाके पास पहुँची और मैनाके मनमें यह विश्वास पैदा कर दिया कि वह उसकी धाय है और उसने शैशवावस्थामें उसे दूध पिलाया था।

जब उस धूर्ताने देखा कि मैना उसके जालमें फँस गयी है तो उसने अपना काम आरम्भ किया। उसने मैनासे उसके दुःख-दर्दका हाल चाल पूछा। मैनाने उसे लोरकके प्रति अपनी विरहव्यथा कह सुनायी।

यह सुनकर कुटनीने इस बातको लोरककी बेवफाई और गद्दारी बताकर मैनाको उसकी ओरसे विरक्त करनेकी चेष्टा की और सलाह दी कि वह किसी अन्य व्यक्तिसे प्रेम कर यौवनका आनन्द उठाये। यह भी कहा कि सातन तुम्हारा प्रेमी है; वह तुम्हारी प्रेमाग्निमें जल रहा है। यदि लोरक चाँदाके साथ जीवनका आनन्द उठा रहा है तो तुम भी सातनको अपनाओ।

किन्तु मैनाने लोरकके प्रेमको भुलाने और सातनसे प्रेम करनेकी सलाहको ठुकरा दिया। कुटनीने अपनी चेष्टा जारी रखी और एक साल तक प्रयत्न करती रही। प्रति मास ऋतुकी विशेषताओंको व्यक्त कर मैनाको कामोत्तेजित करनेकी चेष्टा करती और चाहती मैना सातनकी इच्छा पूरा करे। किन्तु मैना कुटनीकी बातोंमें नहीं आयी और एक साल बीत गया।

इसी बीच अकस्मात लोरककी प्रेयसी चाँदाकी मृत्यु हो गयी और वह मैनाके पास पुनः वापस आ गया। दोनोंका फिर मिलन हुआ।

दर्मादीने अन्तमें अपनी इस कथाको ईश्वरीय प्रेम सम्बन्धी प्रतीक कहा है। उसके अनुसार लोरक ईश्वरका प्रतीक है जिससे प्रेम करना चाहिए; मैना मानवीय आत्मा है जो ईश्वरकी प्रेमी है, सातन शैतान है जो ईश्वरके प्रेमसे आत्माको विरत कर देना चाहता है, कुटनी मानवीय वासनाओंकी प्रतीक है, जो इच्छाओंको और आकृष्ट करके शैतानके काम में सहायक होती है।

३

गवासीकृत मैना-सतवन्ती

गवासी दक्खिनी हिंदीके एक सुप्रसिद्ध कवि हैं। वे मुहम्मद कुतुबशाहके शासनकाल (१६११–१६२६ ई०)में गोलकुण्डा आये और वहाँ उन्हें राजाश्रय प्राप्त हुआ। अब्दुल्ला कुतुबशाह (१६२६–१६७२ ई०)के गद्दीपर बैठनेपर वे राजकवि घोषित किये गये। राजकविके रूपमें गवासी शासक और उसके दरबारियोंके बीच लोकप्रिय तो थे ही, साथ ही समय-समयपर जटिल समस्याओंके सुलझानेमें भी शासकको सलाह दिया करते थे। वे गोलकुण्डाके राजदूतके रूपमें बीजापुर भेजे गये और अपने उस पदको उन्होंने योग्यतासे निभाया।

गवासीने गजल और मरसियोंके अतिरिक्त कुछ कथात्मक काव्य भी लिखे हैं, जिनमें **मैना-सतवन्ती** नामक मसनवी भी है। अभी तक यह अप्रकाशित है। इसकी अनेक हस्तलिखित प्रतियाँ विभिन्न पुस्तकालयोंमें उपलब्ध हैं।[1] हैदराबादके आसफिया पुस्तकालयकी एक प्रतिसे इस कथा काव्यके कुछ अंश श्रीराम शर्माने दक्खिनीका पद्य और गद्यमें उद्धृत किया है। उनके द्वारा प्रस्तुत कथाके अधूरे रूपको ही हिन्दीके लेखकोंने लोरक चन्दाकी प्रेम-कथाका दक्खिनी रूप मानकर अनेक प्रकारकी कल्पनाएँ प्रस्तुत की है। वस्तुतः यह कथा लोरक-चन्दाकी प्रेम कथापर आधारित न होकर साधन कृत मैना-सत अथवा हमीदीकृत अस्मतनामाका ही एक स्वतन्त्र रूप है। कविने उस कथाको अपने ढंगपर इस प्रकार उपस्थित किया है—

किसी नगरमें बालकुँवर नामक राजा था। उसकी एक अत्यन्त रूपवती पुत्री थी, जिसका नाम चाँदा था। उसी राज्यमें लोरक नामक एक ग्वाला रहता था। लोरकके सम्बन्धमें इस काव्यकी कुछ प्रतियोंमें कहा गया है कि वह किसी धनीका बेटा था और उसका विवाह मैना नामक राजकुमारीसे हुआ था और दोनोंमें परस्पर प्रगाढ़ प्रेम था। दैवदुर्विपाकसे वे निर्धन हो गये। निदान लोरक अपना नगर छोड़कर दूसरे नगरमें जाकर पशु चरानेका काम करने लगा।

एक दिन जब लोरक गाय चराकर वापस आ रहा था तो चाँदाकी दृष्टि उसपर पड़ी। उसे देखकर चाँदा उसपर आसक्त हो गयी। उसने उसे अपने निकट

---

१ आसफिया पुस्तकालय (हैदराबाद)में तीन, सालारजंग पुस्तकालय (हैदराबाद)में तीन, इण्डिया आफिस पुस्तकालय (लन्दन)में दो और जामिया मिल्लिया (दिल्ली)के पुस्तकालयमें इसकी एक प्रति है। बम्बई विश्वविद्यालयके पुस्तकालयमें भी सम्भवतः इसकी एक प्रति है।

बुलाया और उसपर अपना प्रेम प्रकट किया और अपने साथ किसी दूसरे देश भाग चलनेको कहा।

लोरकने अपनी पत्नीके पातिव्रत और सौंदर्यकी चर्चा करते हुए उसे छोड़कर चलनेमें अपनी असमर्थता प्रकट की। उसने राजकुमारी-वैभव और अपनी दरिद्रता की तुलना करके अपनेको सर्वथा अयोग्य सिद्ध करनेकी भी चेष्टा की। पर चाँदा न मानी। उसने नाना प्रकारकी बातें करके लोरकको अपने साथ भाग चलनेको राजी कर ही लिया। तदनुसार दोनों प्रेमी नगर छोड़कर भाग गये।

राजाने जब यह समाचार सुना तो वह बहुत हँसा। उसने एक दिन मैंनाको अपनी अट्टालिकापर खड़ा देखा था। तभीसे वह उसके प्रति आसक्त हो रहा था। उसने सोचा कि अच्छा हुआ कि लोरक भाग गया, अब मैंनाको प्राप्त करनेका अच्छा अवसर है। फलतः एक चतुर कुटनीको बुला भेजा और मैंनाको छः मासके भीतर वशमें करके अपने सामने उपस्थित करनेको कहा। कुटनीने इस कामको करना प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार किया।

तदन्तर वह कुटनी रोती हुई मैंनाके पास पहुँची और बोली—मैंने तुम्हें बचपनमें दो बरस तक दूध पिलाया था। अब मेरे कोई नहीं रहा। इसलिए तुम्हारे पास आयी हूँ।

मैंनाने यह सुनकर उसके पाँव छूए और कहा—मेरा जो प्राण प्यारा पति था वह छोड़कर चला गया। नाते रिश्तेके लोग भी नहीं हैं, मैं भी अकेली हूँ। अच्छा हुआ जो तुम आ गयीं।

दूती यह सुनते ही कि लोरक मैंनाको छोड़कर भाग गया है, फूट फूटकर रोने और लोरकको कोसने लगी। मैंनासे दूतीका कोसना सुना न गया। बोली—उन्हें बुरा भला मत कहो। वे मेरे साजन हैं।

दूतीने कहा—तू अभी पन्द्रह बरस की है। तू बड़ी नादान है। अभी तो तेरे खाने पीने और आनन्द करनेके दिन हैं। लोरक ठहरा मूर्ख गँवार। वह हीरा क्या परखना जाने। तू घबरा मत। मैं तेरे लिए दूसरा रूपवन्त लाऊँगी।

यह सुनते ही मैंनाके तनमें आग लग गयी। दूतीसे बोली—तू तो बदनामी कराने वाली बात कर रही है। स्त्रीको अपना सत बनाये रखना चाहिये। इच्छाओं और वासनाओंको दबाना अपने हाथमें है।

दूती बोली—मैंने तुझे दूध पिलाया था। अगर तेरे माँ-बाप होते तो आज वे मेरी कद्र करते। दुनियामें बूढ़ोंकी अक्लसे काम लेना चाहिए न कि उनपर गुस्सा करना चाहिए। सिकन्दर जब यात्रापर निकला था तो वह अपने साथ बूढ़ेको ले गया था। उसने उसीकी अक्लसे संसार देखा। मुझे क्या करना है। तेरा पति अगर चाँदाको लेकर आया तो तेरे घर सौत आ बैठेगी। वह तुझे दासी बनायेगी और दिन रात लड़ाई करेगी।

फिर दूतीने दृष्टान्त देते हुए कहा—किसी नगरमें एक सिपाही था। उसके

दो स्त्रियाँ थीं। एक स्त्री नीचे रहती थी और दूसरी कोठेपर रहती थी। एक दिन रातमें जब सिपाही घरपर नहीं था, एक चोर घरमे घुसा। उसने जैसे ही सीढ़ीपर पैर रखा, आवाज हुई। दोनों स्त्रियोंने सुना, समझा उनका पति सौतके पास जा रहा है। दोनो निकल आयीं। अँधेरेमें उन्होंने चोरको ही पति समझ लिया। फलत ऊपर वालीने उसके सरके बाल पकड लिये और ऊपर खींचने लगी। नीचेवालीने चोरको ऊपर जाते देखा। वह उसका पैर पकड कर अपनी ओर खींचने लगी। इसी तरह खींचातानी हो ही रही थी कि सिपाही घर लौटा। उसने चोरको देखा और पकड लिया और बादशाहके सामने ले गया। वहाँपर चोरने बताया कि किस तरह दो औरतोंने अपना पति समझकर उसकी मरम्मत की है। सौत बहुत बुरी चीज है। वह एक म्यानमें दो तलवारकी तरह है।

मैंनाने कहा—माँ-बापका जो सुख मिलना चाहिए था, वह तो मुझे मिला ही नहीं। ससुरालमे भी कोई नहीं जो सुख दे। किस्मतम जो लिखा है वही होगा। अगर सूरज-चाँद भी मेरे सामने आये तो वह लोरकके सामने तुच्छ हैं। तू सौतका डर दिखाती है। लाख सौत आये तो क्या हुई। चाँदा आकर भले ही लडाई करे। मैं तो बाहर उसकी बडाइ ही करूँगी।

इस प्रकार मैना और दूतीमें निरन्तर विवाद चलता रहा। दूती मैंनाको विच लित करनेकी चेष्टा करती और मैंना सतीत्वम दृढ निष्ठा प्रकट करती। दोनों अपनी अपनी बात दृष्टान्त दे देकर कहतीं। इस प्रकार छ मास बीत गये और दूती मैंना को डिगा न सकी। निदान हार मानकर वह राजाके पास लौट गयी और अपनी असमर्थता प्रकट की।

राजाने उससे कहा कि तू एक बार फिर चल कर चेष्टा कर। और आधी रातको स्वय दूतीके साथ मैनाके घर पहुँचा और एक कोनेम छिप रहा। दूती मैंनाके पास फिर पहुँची और बोली—तेरी ममताके कारण ही मैं फिर लौट आयी हूँ।

और वह फिर उससे तरह तरहकी प्रलोभन भरी बातें करने लगी। पर वह मैंनाको डिगा न सकी। राजाने जब देखा कि मैंनाका सतीत्व अडिग है तो वह बाहर निकल आया और बोला—तू मेरी माँ है, मैं तेरा बेटा हूँ।

पश्चात् उसने लोरकको बुला भेजा। चाँदाने जब सुना तो वह बहुत प्रसन्न हुई और दोनों वापस लौट आये। राजाने चाँदाका लोरकके साथ विवाह कर दिया। मैंना यह देखकर बहुत प्रसन्न हुई और तीनों सुखपूर्वक रहने लगे।

मैंनाने कुटनीको सिर मुड़ाकर नगरसे निकाल बाहर किया। ●

४

लोरक-चाँदसे सम्बद्ध लोक-कथाएँ

लोरक चाँदकी कथा पूर्वी उत्तर प्रदेश, बिहार और मध्य प्रदेशके पूर्वी भागके विभिन्न प्रदेशोंके लोक जीवनमें काफी प्रसिद्ध है। किन्तु उसके रूपमें पर्याप्त विविधता पायी जाती है। हम यहाँ भोजपुरी प्रदेश, मिर्जापुर, भागलपुर, मिथिला, छत्तीसगढ़ तथा संथाल परगनामें प्रचलित लोक कथाओंको संकलितकर रहे हैं। हमारा विचार अवधमें प्रचलित कथा रूप भी देनेका था किन्तु प्रयत्न करनेपर भी हमें वह प्राप्त न हो सका।

इन लोक कथाओंके साथ चन्दायनकी कथाका तुलनात्मक अध्ययन उपयोगी और मनोरंजक होगा।

भोजपुरी रूप

लोरक चाँदकी लोक प्रचलित कथाका, जो भोजपुरी प्रदेशमें लोरिकी, चनैनी, लोरिकायन आदि नामोंसे प्रचलित है और पवारेके रूपमें विशेष रूपसे अहीरोंमें गायी जाती है, अब तक कोई इसका प्रमाणित रूप प्रकाशमें नहीं आया है। आरा निवासी महादेवसिंहने इस पवारेके एक बहुत बड़े अंशको अपने साँचेमें ढालकर प्रकाशित किया है। इसका पूर्व अंश उन्होंने तीन खण्डोंमें लोरिकायन नामसे प्रस्तुत किया है, जो दूधनाथ पुस्तकालय, कलकत्तासे प्रकाशित हुआ है। तीसरे खण्डके अन्तमें उन्होंने सूचना दी है कि आगेका बयान धोनवाका उद्धार नामसे देंगे। धोनवाका उद्धार लोरिकायनकी कथाके ही क्रममें है और वह भार्गव पुस्तकालय, वाराणसीसे प्रकाशित हुई है। इस खण्डके अन्तमें आगेका हाल नेउरपुरकी लड़ाईमें देखनेको कहा गया है। किन्तु यह खण्ड सम्भवतः प्रकाशित नहीं हुआ है। अतः कथाका अन्तिम अंश अनुपलब्ध है। इस सूत्रसे लोरक चाँदकी कथाका जो भी अंश प्राप्त है, वह विस्तृत है। संक्षेपमें वह इस प्रकार है—

बारह कोसमें विस्तृत गौरा नामक एक नगर था। वहाँ एक अहीर दम्पति रहता था। पतिका नाम बुढ़कुबेर और पत्नीका नाम बुढ़खुड़ल्न था। उनके कोई सन्तान न थी। उसी नगरमें संवरू और शिवचंद नामक दो अनाथ अहीर बालक थे। उनकी दयनीय अवस्थासे द्रवित होकर बुढ़कुबेर संवरूको अपने घर ले आया और शिवचंदको पिपरीपुरका राजा सहदी भगत, जो जातिका दुसाध[1] था, अपने यहाँ ले

१. भारतमें पायी जानेवाली एक जाति, जो सुअर पालनेका धन्धा करती है।

गया। सवरू बुद्धवूबेके घर बड़े लाड प्यारसे पलने लगा। जब वह कुछ बड़ा हुआ तो भैंस चराने बोहा जाने लगा। बोहामें एक अखाड़ा था, जिसका गुरु मितारजहल नामक धोबी था। भैंस चराते चराते सवरू उस अखाड़ेमें सम्मिलित हो गया और कुश्ती लड़ने लगा।

एक दिन बुद्धवूबे अपनी दालानमें बैठा हुआ था, तभी एक साधूने आवाज दी—तुम्हारे बाल बच्चे कुशलसे रहें। मुझे भूख लगी है, कुछ भोजन कराओ।

यह सुनकर बुद्धवूबेने कहा—महाराज! बाल बच्चे तो मेरे हुए ही नहीं, कुशलसे कौन रहेगा?

साधूने यह सुनकर कहा—तुम तो बड़े भाग्यवान हो। आश्चर्य है अब तक तुम्हें कोई सन्तान नहीं हुई। अच्छा, तुम शिवका पूजन करो, तुम्हारी मनोकामना शीघ्र पूरी होगी। तुम्हारे प्रतापी पुत्र जन्म लेगा, उसका यश ससार गायेगा। तुम उसका नाम लोरिक मनियार रखना।

तदनुसार पति पत्नी दोनों मनोयोगसे शिवकी अराधना करने लगे। कुछ दिनों पश्चात् शिवने प्रसन्न होकर वर दिया—तुम्हारे महाबली पुत्र होगा। उससे लड़ने वाला ससारमें कोई न होगा। जब वह जन्म लेगा तो सवा हाथ धरती उठ जायगी। तदनुसार समय आनेपर दुखइलनके गर्भसे लोरिकने जन्म लिया। पाँच बरसकी आयुमें लोरिक पाठशाला पढ़ने भेजा गया। वहाँ वह एक ही वर्षमें पढ़ लिखकर सब प्रकार योग्य हो गया। जब वह दस वर्षका हुआ तो वह एक दिन सँवरूके साथ बोहा गया। वहाँ सँवरू आदिको अखाड़ेमें लड़ते देखकर लोरिकने भी गुरु मितारजहलसे अपना चेला बना लेनेको कहा। मितरजहलने समझाया—अभी तो तुम बच्चे हो, अखाड़ेकी कठिनाइयाँ नहीं जानते। यदि तुम्हारा तनिक भी अनिष्ट हुआ तो बुद्धवूबे राउल मेरी दुर्दशा कर डालेंगे।

लोरिकने शिष्य बनानेके लिए हठ पकड़ लिया और बोला—जब तक आप मुझे शिष्य नहीं बनायेंगे, मैं गौरा लौटकर नहीं जाऊँगा।

लोरिकको इस प्रकार हठ करते देखकर मितारजहलको जब और कुछ न सूझा तो बोले—अस्सी अस्सी मनके मुँगरा (गदा) रखे हुए हैं। यदि तुम इन्हें उठा लो तो मैं तुम्हें अपना शिष्य बना लूँगा।

अखाड़ेमें चार मुँगरा (गदा) रखे हुए थे। जिनमें दो अस्सी-अस्सी मनके, तीसरा चौरासी मनका और चौथा अट्ठासी मनका था। अस्सी मन वाला एक मुँगरा मेठवा (बठवा) चमार भाँजता था, चौरासी मन वाला मुँगरा शिवधर और अट्ठासी मन वाला मुँगरा सँवरू भाँजता था। और अस्सी मन वाले दोनों मुँगरोंको मितारजहल अपने दोनों हाथोंमें लेकर भाँजते थे। मितरजहलकी बात सुनकर लोरिक तत्काल उठ खड़ा हुआ और अखाड़ेमें रखे चारो मुँगराको फूलके समान उठाकर आकाशमें फेंक दिया और वे जैसे ही नीचे आये उन्हें उसने हाथोंमें पुनः लपक लिया। फिर चारों मुँगरोंको दोनों हाथोंमें लेकर भाँजने लगा। यह देखकर मितारजहल आश्चर्य चकित

हो उठे। अब तक उस देहातमें उनका जोड देने वाला कोई न था। अब उसे लोरिक जोड देने वाला मिल गया। फिर क्या था दोनों परस्पर जोड करने लगे।

एक दिन मितारजइल अपनी ससुराल मुरौली गये। वहाँ उन्होंने बड़े अभिमानसे लोगोंको कुश्ती लड़नेके लिए ललकारा। लेकिन जब राजा वामदेवके बेटे माहिलने उन्हें उठाकर पटक दिया तो वे खिसिया गये। अपनी झेंप मिटानेके लिए बोले—गौरामें मेरे दो चेले हैं, उन्हीं से तुम्हारी बहन मदागिनका विवाह करा कर तुम्हारा गर्व चूर करूँगा।

माहिलने सुनकर कहा—मेरी बहनसे विवाह करने वाले किसी वीरने अभी तक जन्म नहीं लिया है। उसका छ बार जन्म हुआ और हर बार वह कुमारी ही मर गयी। उससे वही विवाह कर सकता है, जो मुझे जीत ले। अब तक जो भी उससे शादी करनेकी इच्छासे आये, उन्हें मारकर मुरौलीमें गाड दिया। तुम क्या शेखी बघारते हो!

मितारजइलने कहा—समय आनेपर देखा जायगा।

और वह अपने घर लौट आये।

जब मदागिन सयानी हुई तो उसके पिता वामदेवने समस्त राजाओंको अपनी बेटीसे विवाह करनेके लिए आमन्त्रित किया। पर किसीने उसका निमन्त्रण स्वीकार नहीं किया। तब वामदेवको चिन्ता हुई। पिताको चिन्तित देख माहिलने कहा—सुना है गौरामें दो लड़के हैं उनका नाम तो मुझे मालूम नहीं। लेकिन मितारजइल उनसे भली भाँति परिचित हैं। आप उनके पास पत्र लिखकर नाईके हाथ भेजिये। देखिये, वे क्या कहते हैं।

बेटेकी बात सुनकर वामदेवने मितारजइलके नाम पत्र लिखा। माहिलने एक अलग पत्र लिखा जिसमें व्यंग्यके साथ लिखा—तुम्हारी बातपर हम टीका भेजते हैं। जिस शानसे तुम शादी करानेको कह गये थे, देखना है वह शान तुम कहाँ तक रखते हो।

पत्र लेकर नाई मितारजइलके पास पहुँचा। पत्र पढ़कर मितारजइलने नाईसे कहा—बुढ़कूबेका घर पूछते हुए चले जाओ और उनसे कहना कि मुरौलीसे बड़े लड़केका टीका लेकर आया हूँ।

तदनुसार नाई बुढ़कूबेका पता पूछता हुआ उनके घर पहुँचा और अभिवादन करके अपने आनेका अभिप्राय कह सुनाया। बुढ़कूबे वामदेवकी दुष्टतासे परिचित था। अतः मुरौलीका नाम सुनते ही वह बहुत क्रुद्ध हुआ और नाईसे चले जानेको कहा।

जब लोरिकको यह बात ज्ञात हुई तो उसने अपने पिताको समझाया। और किसी प्रकार टीका स्वीकार करनेको राजी किया। बुढ़कूबेने सँवरूका तिलक स्वीकार कर लिया और मुरौली लौटकर नाईने वामदेवको इसकी सूचना दी।

बुढ़कूबेने अपने सारे सगे-सम्बन्धियोंको आमन्त्रित किया और देवीकी आरा

प्राप्त कर सात सौ वीरोंकी बारात लेकर लोरिक चला। जगह-जगह रुकती हुई बारात इड़नियाडिह पहुँची। वहाँ बाराती लोग रुके और खा-पीकर सो गये। लोरिकने व्यवस्था की कि पहले पहरमें बुढ़कूबे, दूसरे पहरमें मितारजइल, तीसरे पहरमें सँवरू पहरा देंगे। और वह स्वयं चौथे पहरमें पहरेपर रहेगा।

बामदेवको जब बारात आनेकी सूचना मिली तो उसने फुलिया डाइनको सारी बारातको मार डालनेका आदेश दिया। फुलिया डाइन इड़निया पहाड़पर पहुँची। उस समय बुढ़कूबेका पहरा था। उसके कठोर पहरेमें अपनी दाल गलते न देख, वह दूसरे पहरेकी प्रतीक्षा करने लगी। बुढ़कूबेके पहरेके बाद मितारजइल और सवरूके पहरे में भी उसका कोई दाँव न लगा। अन्तमें लोरिकका पहरा आया। लोरिकको देखकर फुलिया डाइन और भी घबरायी। उसे लगा कि उसका मनोरथ सिद्ध न होगा। जब आकाशमें लाली दिखाई देने लगी तो लोरिकने सोचा कि सबेरा हुआ चाहता है, अब डरकी कोई बात नहीं है और वह बारातसे कुछ दूर जाकर सो रहा। बस फुलिया डाइनको मौका मिला और उसने ऐसा जादू मारा कि सारी बारात पत्थर बन गयी। देवीके वरदानके कारण केवल लोरिक बच रहा।

जब लोरिककी नींद टूटी तो वह सारी बारातको पत्थर बना देखकर बहुत घबड़ाया और विलाप करने लगा। अन्तमें निराश होकर उसने देवीका स्मरणकर अपना सर काटकर चढ़ाना चाहा। देवीने तत्काल प्रकट होकर उसका हाथ पकड़ लिया। बोली—बस, इतनेमें घबरा गये? अभी तो आगे बहुत सी कठिनाइयाँ आयगी।

फिर लोरिकको समझा बुझाकर कहा कि सुरौली बाजारकी चौमुहानीपर जाकर जोरसे पुकार करो। तुम्हारी पुकार सुनकर कोई न कोई सहायताके लिए अवश्य आयेगा।

तदनुसार लोरिक सुरौलीकी चौमुहानीपर जाकर चिल्लाने लगा। लोरिककी करुण पुकार सुनकर मदागिन[1] उसके पास आयी और करुण क्रन्दनका कारण पूछने लगी। लोरिकने उसे सब हाल कह सुनाया। उसकी बात सुनकर वह उसके साथ आयी और बरातपर एक दृष्टि दौड़ायी। जब उसने सवरूको देखा तो वह उसपर मोहित हो गयी। तत्काल वह हाथमें फूल लेकर मंत्र पढ़कर मारने लगी। तीन फूल मारते ही सब बरात उठ खड़ी हुई। मदागिन अपने घरकी ओर लौट चली।

मितरजइलने लोरिकको देखकर कहा—आज तो मैं बहुत सोया। ऐसी नींद कभी नहीं आयी थी।

लोरिक बोला—ऐसी नींद तुम्हारे दुश्मनको आये। और सारी घटना कह सुनायी।

तब मितरजइलने कहा—जिस मदागिनके लिए इतना बखेड़ा हुआ है, वही तो जा रही है। उसे पकड़ लाओ। गौरा ले चलकर सवरूके साथ उसकी शादीकर दी जाय।

---

१. कहीं कहीं इसका नाम मजाइन भी पाया जाता है।

लोरिकने उत्तर दिया -गौरासे तो यह निश्चय करके चले थे कि लड़ाई करके शादी करेंगे और अब यहाँ कायरकी सी बात करते हो ? सीधी चोरी वीरोंका काम नहीं है। मैं अपने तेगके बलपर शादी करूँगा। मुझे चोर कहलाना कभी अभीष्ट नहीं। आप लोग मेरे सहारेके लिए पीछे रहिये। मैं अकेले शादी करूँगा।

फिर कुछ रुककर बोला—जरा इस सम्बन्धमें मैं भौजी (भाभी) से भी पूछ लूँ कि वह क्या कहती हैं ?

और वह तत्काल मदाकिनके पीछे दौड़ा और सामने जाकर उसे भौजी (भाभी) सबोधनके साथ नमस्कार किया। मदाकिनने उससे 'भौजी' सम्बोधन करनेका कारण पूछा। लोरिकने बताया तुमसे अपने भाईका विवाह करनेके लिए ही बारात सजाकर लाया हूँ इसलिए मैं तुम्हे 'भौजी' कह रहा हूँ।

मदाकिनने कहा—चुप रहो। कहीं मेरे पिताने सुन पाया तो तुम्हें जानसे मरवा देंगे। मुझसे विवाह करनेके लिए कितने ही लोग आये पर कोई भी अपने घर वापस न जा सका। कुशल इसीमें है कि गौरा वापस चले जाओ।

लोरिकने तमककर उत्तर दिया—भौजी ! मेरा नाम लोरिक मनियार है। बिना विवाह किए गौरा वापस जानेका नहीं। अब तक तुमसे विवाह करनेके लिए जितने लोग भी आये, वे मर्द नहीं थे भेड़ थे। भेंड बकरी पाकर तुम्हारे पिताने उन्हें काट डाला। इस बार उन्हें मर्दसे पाला पड़ेगा।

मदाकिन बोली—देवर मेरे। तुम्हारी सूरत अवर्णनीय है। मेरी बात मानो। जाकर डोला (पालकी) ले आओ और मुझे लेकर गौरा भाग चलो। वहाँ चलकर शादी करना। मेरे पिता युद्धमें बहुत भयंकर हैं। वे अपना पराया कुछ भी नहीं पहचानते। उनसे तुम जीत न सकोगे।

लोरिक बोला—भौजी ! तुम्हारा विवाह किये बिना मैं गौरासे नहीं जाऊँगा। तुम्हें इस प्रकार ले चलूँगा तो मेरी हँसी होगी। स्त्री पुरुष सभी कहेंगे कि लोरिक शक्तिहीन था, नारी चुराकर ले गया। ब्याह बिना हँदरूका विवाह किये मैं गौरा नहीं जाता।

यह कहकर लोरिक लौट पड़ा और बारात लेकर कुरौलीकी सीमापर पहुँचा। कुदकुकेने भीतारझङ्गलके द्वारा बारात आनेकी सूचना बामदेवको भेज दी। जब भीताने बामदेवसे यह समाचार कहा तो उत्तर मिला—जब तक युद्धमें हमें हरा न दो शादी नहीं की जा सकती।

यह सुनते ही भीता अंगार हो गया और बोला— ठीक है। तुम्हारा गर्व हम निश्चय ही चूर्ण करेंगे।

उसने लौटकर लोरिकसे सारी बात कह सुनायी। लोरिक भी यह सुनकर आग बबूला हो गया। युद्धकी तैयारी करने लगा।

बामदेवने अपने बेटे माहिलको बुलाकर लोहा लेनेकी तैयारी करनेका आदेश

दिया। माहिल्ने तत्काल सात हजार सेना तैयारकी और वहाँ आ पहुँचा, जहाँ लोरिकका पडाव पडा था।

दोनों पक्षोंमे खूब घमासान युद्ध हुआ। अन्तमें वामदेव पराजित हुआ और वह लोरिकके चरणोंमे गिर पडा। लोरिकने क्रुद्ध होकर उसके कान काट लिये। वामदेव हाथ जोड़कर अनुनय करने लगा—मेरी जान मत लीजिये।

तब लोरिकने उसे जीवित छोड दिया और हाथ पैर बाँधकर उसे बारातके साथ मुरौली ले चला। इस प्रकार पराजित होकर वामदेवने सँवरूका विवाह मदा किनके साथ कर दिया। बाराती वर वधूके साथ गौरा वापस लौट आये।

× × ×

अगोरिया नगरमें मलयगित नामक दुसाध जातिका राजा राज करता था। उसने इस बातकी घोषणा कर रखी थी कि राज्यमे जिस किसीकी भी लडकी सुन्दर होगी, उससे मैं विवाह करूँगा। चमारोंको उसने आदेश दे रखा था कि जिस किसीके यहाँ लडकी जन्म ले, उसकी सूचना उसे तत्काल दी जाय।

उसके राज्यमें एक महरा मनियार रहते थे। उनके यहाँ भादोंकी अष्टमीको उनकी पत्नी पद्मानी कोखसे एक लडकीने जन्म लिया। उसका नाम उन्होंने मजरी रखा। बरही होनेके पश्चात् नाल काटने आयी हुई धगडिन (चमारिन) जब अपने घर जाने लगी तो पद्माने उसे सब प्रकारसे सन्तुष्ट कर अनुरोध किया कि मेरे लडकी होनेकी बात किसीसे मत कहना। राजा मलयगितको अगर यह सूचना मिलेगी तो वह तत्काल मेरी बेटीको मँगा भेजेगा।

चमारिनने उस समय तो 'हाँ' कर दिया, पर घर पहुँचते ही उसने अपने पतिसे पद्माके लडकी होनेकी बात कह दी और यह भी कहा कि उन्होंने यह बात किसीसे बतानेको मना किया है।

सुनकर चमार बोला—इस बातको तुम दो चार महीने भले ही छिपा लो किन्तु जिस दिन बच्ची घरसे बाहर निकलेगी, उस दिन तो राजाको उसकी सूचना मिल ही जायेगी। और तब वह मुझे बुलाकर पूछेगा। उस समय तुम क्या उत्तर दोगी? तुम्हारी तो दुर्दशा होगी ही, मेरी भी जान जायेगी।

फलत उसने तत्काल राजाको सूचना दे दी कि महरके घर लडकी हुई है। राजाने समाचार पाते ही लडकी लानेके लिए सिपाही भेजा। सिपाही द्वारा आदेश सुन कर महरा स्वय मलयगितके दरबारमें पहुँचे और सिपाही भेजनेका कारण पूछा। राजाने जब बताया कि तुम्हारी लडकी लानेके लिए सिपाही गया था तो महराने पूछा—यदि मैं अपनी बेटी अभी आपके पास भेज दूँ तो आप उसके देखभालकी व्यवस्था किस प्रकार करेंगे।

राजाने उत्तर दिया—मैं उसे अपनी रानीका दूध पिलाकर रखूँगा। बडी हो जायेगी तब मैं उससे विवाह कर लूँगा।

यह सुनकर महरा मनियारने उत्तर दिया—यदि रानीके दूधपर मेरी बेटी पलेगी, तब तो वह आपकी बेटी सरीखी होगी। फिर उससे आप कैसे विवाह करेंगे?

यह सुनकर मल्लगित अनुत्तर हो गया। महराने कहा—आप बेटीको मेरे पास ही पलने दीजिए। जब वह बड़ी हो जायगी तब मैं अपनी ही जातिके किसी कुलीन, किन्तु निर्बल व्यक्तिसे उसका विवाह कर अपनी जाँघ पवित्र कर दूँगा। जब उसकी विदाईका समय आयेगा उस समय मैं आपको सूचित कर दूँगा। आप मजरीके पतिको पराजित कर उसे अपनी रानी बना लीजिएगा। इस प्रकार आपकी बात और मेरी मर्यादा दोनोंकी ही रक्षा हो जायगी।

यह बात मल्लगितको जँच गयी। इस प्रकार महराने उस समय तो परिस्थिति सम्हाल ली। किन्तु ज्यों-ज्यों मजरी बड़ी होने लगी, उनकी चिन्ता बढ़ने लगी। दुसाध जातिका राजा हमारी जाति और कुल दोनोंमें दाग लगायेगा। वे इस बातके लिए सचेष्ट रहने लगे कि जातिके किसी ऐसे व्यक्तिसे मजरीका तिलक चढ़ाया जाय, जो मोर्चा लेनेमें जुझार हो और राजाका घमण्ड चूर कर सके। जब बेटी घरसे बाहर निकलने लगी तब एक दिन उन्होंने नाई और पण्डितको बुलाकर कहा—मेरी बेटीके योग्य कुँवारा वर ढूँढिए, मेरे घरके योग्य धनी घर ढूँढिए; मेरे योग्य ऐसा समधी ढूँढिए जो जुझार हो और रानी पद्माके योग्य ऐसी समधिन खोजिये जो पूरी गृहस्थी सम्हालनेवाली हो। यदि इन चारोंमेंसे कोई भी बात कम हो तो वैसे घर तिलक मत चढ़ाइयेगा।

पण्डितजी सगुनकी सामग्री लेकर नाईके साथ वर ढूँढने निकले। उन्हें वर ढूँढते ढूँढते बारह वर्ष बीत गये, पर महराके कथनानुसार कोई घर-वर नहीं मिला। वे लौट आये। महरा अत्यन्त चिन्तित हुए यदि कोई योग्य वर नहीं मिला तो मेरी बेटीकी इज्जत निश्चय ही वह दुसाध लेगा। न जाने विधाताने भाग्यमें क्या लिखा है।

एक दिन मजरी अपनी सखी प्रेमा और मोहिनीके साथ अन्य सखियोंके यहाँ खेलने गयी। उस समय तेज हवा बह रही थी। जिसके कारण मजरीके सूप पटकनेकी मिट्टी सखियोंके ऊपर गिरने लगी। इससे वे सब बहुत नाराज हुई और उसे तरह तरहकी गालियाँ देने लगीं। इससे मजरी बहुत दुखी हुई और घर आकर कमरेमें भीतरसे दरवाजा बन्दकर चादर तानकर सो रही। जब शाम हुई और दीपक जलानेका समय हुआ तो रानी पद्माको चिन्ता हुई कि अभी तक मजरी क्यों नहीं आयी। उसे ढूँढने वह सखियोंके घर पहुँची। सबके घर जाकर पूछा। सबने कहा कि वह हमारे यहाँ आयी तो थी पर जल्द ही चली गयी।

रानी लौटकर घर आयी तो देखा कि भीतरसे दरवाजा बन्द है। दरवाजा खोलनेकी चेष्टा की, पर वह नहीं खुला। हारकर वे बोलीं—बेटी बात क्या है जो आज दरवाजा बन्द करके पड़ी हो।

मजरीने बताया कि मैं खेलने गयी थी, वहाँ सहेलियोंने मुझे गालियाँ दीं।

कहा कि तुम्हारा पिता जातसे निकाला हुआ है, तुम्हारी माँ पडोसियोंका भात चुराती है, इसीसे तुम्हारे विवाहके लिए कोई आता नहीं। तुम सोलह सालकी हो गयी और अभी तक कुँवारी ही बनी हो।

मंजरीकी बातें सुनकर पद्माने बताया—जिस दिन तुम घरसे बाहर निकलने लगीं, उसी दिन तुम्हारे पिताने पण्डित और नाईको वर ढूँढनेके लिए भेजा। पण्डितजी बारह वर्ष तक तिलक लेकर घूमते रहे, लेकिन तुम्हारे योग्य कोई वर नहीं मिला। अब बताओ कौन सा उपाय किया जाय। सखियोंने तुम्हे झूठा ताना मारा है।

यह सुनकर मंजरी बोली—तुम जाकर आरामसे सोओ।

मंजरी खाटपर लेटी लेटी सोचती रही। आधी रात बीतनेपर वह धीरेसे दरवाजा खोलकर महलसे बाहर निकलकर अगारिया बाहर पहुँची और कुएँमें डूबनेकी बात सोचने लगी। तभी उसे ध्यान आया कि अगर मैं यहाँ डूबती हूँ तो लोग मेरा नग्न शरीर देखेंगे और मैं स्वर्ग नरक कहींकी भी न रहूँगी। अतः उसने गंगामें डूबकर प्राण तजनेका निश्चय किया और गंगाके किनारे पहुँचकर उसने साडीका काछ बनाया और आँचलसे अपने स्तन कसकर बाँधे और गंगाके अगाध जलमें कूद पडी।

कूदनेसे जो धमाका हुआ उसकी आवाज गंगाके कानोंमें पहुँची, वे चिहुँक उठीं और आसनसे उठकर सोचने लगीं—एक सती मेरे बीच अपना प्राण तज रही है। यदि उसने प्राण तज दिया तो मुझे नरकवास करना होगा।

आकुल होकर वे ऐसी लहरायीं कि लहरके साथ मंजरी सूखे रेतपर जाकर गिरी।

अब मंजरी सोचने लगी कि अब मैं अपने प्राण तजूँ तो कैसे। उसकी दृष्टि एक नावपर पडी। वह उसपर चढ गयी और धीरेसे उसकी डोर खोलकर उसे मझधारकी ओर ले चली। जहाँ जल अथाह था, वहाँ पहुँचकर वह गंगामें पुनः कूद पडी। जैसे ही इसकी सूचना गंगाको मिली, मंजरी जहाँ कूदी थी वहाँ उन्होंने रेतका द्वीप खडा कर दिया। सूखे हुए रेतपर बैठकर मंजरी अपनी स्थितिपर विलाप करने लगी—सोचकर आयी थी कि गंगा माता मुझे शरण देंगी पर जान पडता है उन्हें मुझसे घृणा है, उनके लिए मेरा शरीर भी भार हो रहा है। हे ईश्वर! अब मेरी क्या गति होगी।

मंजरीका रुदन सुनकर गंगा वृद्धाका रूप धारण कर उसके पास चलीं। रास्तेमें दूसरी ओरसे भाग्यको लगडाते हुए अपनी ओर आते देखा। उसे देखकर गंगाने उनसे हाल चाल पूछा। भाग्यने कहा—मैं लगडी भाग्य हूँ। तुम कौन हो?

उन्होंने बताया मैं गंगा हूँ। मेरे पास एक स्त्री प्राण तजने आई हुई है। यह तो बताओ कि उसके भाग्यमें विवाह होना लिखा है या नहीं। भाग्यने उत्तर दिया—मेरी समझमें तो मंजरीके लिए सुहाग नहीं जान पडता। अभी मैं इन्द्रके पास जा रही हूँ, वहाँसे लौटकर ही मैं कुछ निश्चय पूर्वक बता सकूँगी।

गंगा वहीं बैठ गयीं और भाग्य इन्द्रपुरी पहुँची। उस समय इन्द्र सो रहे थे।

उन्होंने सूचना करायी। इन्द्रने जाकर भाग्यको बुलवाया। भाग्यने उनसे मजरी के सम्बन्धमें पूछा। इन्द्रने अपनी पोथी खोल कर देखा लेकिन उसमें मजरीके विवाह की बात कहा नहा लिखी थी। अत उन्होंने कहा—गुरु वशिष्ठके पास जाओ। शायद उनकी पोथीमें कुछ लिखा हो।

भाग्य तब वशिष्ठके पास पहुँची। उन्होंने अपनी पोथी खोलकर देखा और बताया कि मजरीका विवाह पश्चिम देशमें होना लिखा है। वहाँ बायीं ओर सुरहा और दायीं ओर गगा बहती है। उसके आगे देवहा नदी है। जहाँ तीनोंका सगम है, वहा बारह गाँवोंका गौरा गुजरात नाम प्रदेश है। वहाँ साका बूबे नामका एक कन्नौजी ग्वाल रहता है। उसके दो पुत्र हैं। बड़ेका नाम सँवरू है, उसका ब्याह सुरौलीमें राजा रामदेवकी लड़की सदागिनसे हुआ है। छोटेका नाम लोरिक है, वह अभी कुँआरा है। उसीके साथ उसका विवाह होगा। उसकी झोपड़ी टूटी हुई है, दरवाजा गिरा हुआ है, उसके दरवाजेपर अशोकका पेड है। उसीके निकट राजा सहदेव भी रहता है। उसके दरवाजे पर पानी वाला कुँआ है। उसके दालानमें पीतल के खम्भे लगे हुए हैं, उसके दरबारमें सोनेके चँमर लगे हैं और छतपर सोनेके मोर बैठे हुए हैं, चाँदीकी खिड़कियाँ और दरवाजे लगे हैं उसके भी एक कुँआरा लड़का है। धोखेसे उसके साथ मजरीका तिलक न चढ़ जाये, इस बातका ध्यान रखना चाहिए।

यह सुनकर भाग्य मृत्युलोकमें गगाके पास पहुँची और बोली—मजरीका विवाह लिखा हुआ है।

यह सुनकर गगाने कहा—तुम मेरे साथ चलो।

वे दोनों मजरीके पास आयीं और उसके निकट बैठकर उससे उसका दुःख पूछने लगीं।

मजरीने कहा—तुम लोग मेरा दुःख पूछकर क्या करोगी ?

उन्होंने उत्तर दिया—हो सका तो हम तुम्हारा दुख दूर करनेमें सहायक हों।

तब मजरीने अपनी सारी विपत्ति कथा कह सुनायी। सुनकर गगा तो चुप रहीं, लेकिन भाग्यने उसका आँचल खींच कर उस पर वे सारी बातें लिख दीं, जो वशिष्ठने उनसे कही थीं। फिर वे दोनों उठीं और थोड़ी दूर जाकर अन्तर्ध्यान हो गयीं। उनके चले जाने पर मजरी अपने आँचलको ओर देखने लगी। उस पर गौराका सारा वृतान्त लिखा पाकर वह बहुत प्रसन्न हुई और अपने घर लौट आयी।

सुबह होने पर वह माँके पास गयी और बोली—कहनेमें तो सकोच होता है, लेकिन बिना कहे हुए कार्यकी सिद्धि भी नहीं हो सकती। आप कहती हैं कि नाई ब्राह्मण देश भरमें खोजकर परेशान हो गये मेरे योग्य कोई वर ही नहीं मिला। लेकिन मेरे योग्य वर है। अगर आप कहें तो मैं उसका पता बताऊँ।

यह सुनकर पद्मा बोली—अगर तुमने अपने मनका कोई वर पसन्द कर लिया

है तो वह चाहे अच्छा हो या बुरा, मुझे तनिक भी दुःख नहीं होगा। उसका पता बताओ, मैं तत्काल उसके पास तिलक भेजती हूँ।

तब मजरीने अपने भावी पतिका पता जैसा कि उसे भाग्यसे ज्ञात हुआ था, बता दिया। मजरीके कथनानुसार पंडित और नाईके साथ तिलकका सामान लेकर मजरीके मामा शिवचन्द्र गौरा गुजरात पहुँचे। गाँवमें घुसते ही पनघटपर उन्हें सहदेवकी दासी पानी भरती हुई मिली। उसने उन्हें देखते ही पूछा—आपका कहाँ मकान है ? और आप कहाँ जायगे ?

शिवचन्दने उसे अपने आनेका अभिप्राय बताया।

सुनकर दासी बोली—हमारे राजा भी कन्नौजके ग्वाल हैं। उनके एक कुँवारा लड़का है। आप मेरे साथ चलिये, मैं लड़का दिखा दूँ।

इतना कहकर दासीने घड़ा उठा लिया और गढ़की ओर चल पड़ी। जाकर राजासे बोली—कुँवर जीके लिए मैं एक तिलकहार लिवा लायी हूँ। ये पूबके सूबेदार हैं। उनके यहाँ अपनी मर्यादा स्थापित कीजिये।

राजाने तत्काल लोगोंके स्वागतकी व्यवस्थाकी। पंडित आदि तो जाकर बैठ गये लेकिन शिवचन्द खड़े ही खड़े चारों ओर देखने और अपनी भांजीकी बतायी बातोंका विवेचन करने लगे। यह देखकर पंडितने कहा—देख क्या रहे हैं, आकर बैठिये। आप जैसा घर खोज रहे थे, वैसा ही तो मिल रहा है।

शिवचन्दने उत्तर दिया—जब तक मैं लड़का नहीं देख लूँगा और वह मुझे पसन्द नहीं आ जायेगा, तब तक मैं राजाके दरवाजेपर नहीं बैठूँगा।

इतना सुनकर राजा सहदेवने कुँवर महादेवको बुला भेजा। उसे देखते ही दुबरी पंडित बहुत प्रसन्न हुए और बोले—मजरीका भाग्य धन्य है। जैसा लड़का आप खोज रहे थे वैसा ही मिल गया।

यह सुनकर शिवचन्द धीरेसे बोले—सब बात तो लड़केमें अच्छी है, लेकिन उसके दाहिनी आँखमें फूली पड़ी है और वह बाएँ पैरसे लँगड़ा है। चलिये यहाँसे।

इसपर राजा सहदेव खीझ उठे और शिवचन्दको गढ़से बाहर निकलवा दिया और धनुवा दुसाधको बुलाकर हुक्म दिया कि सारे गाँवमें ढिंढोरा पीट आये कि कोई गाँववाला इन तिलकहारोंको कूबेका घर न बताये। जो कूबेका घर बतायेगा, उसकी खालमें भूसा भरा दिया जायेगा।

गढ़से निकाले जानेपर शिवचन्दने दूसरे रास्तेसे गाँवमें प्रवेश किया। कुछ दूर जानेपर उन्हें गुल्ली खेलता हुआ एक लड़का मिला। वे उसके निकट जाकर खड़े हो गये और उसे पाँच मिठाई देकर कहा—हमें कूबेका घर बता दो।

लड़केने उत्तर दिया—सहदेवने गाँवमें ढिंढोरा पिटवाया है, अगर उन्हें मालूम हो गया कि मैंने आपको कूबेका घर बता दिया है तो वह मेरी खालमें भूसा भरवा देगा। लेकिन मैंने आपकी मिठाई ली है, इसलिए मैं आपको युक्तिसे उनका घर बता दूँगा। मैं गुल्लीको चम्पा मारता हूँ, गुल्लीको बढ़ाता बढ़ाता कूबेके दरवाजे तक

जाऊँगा। जब वहाँ पहुँच जाऊँगा तो वहाँसे मैं गुल्लीको पीटेको और मारूँगा। बस, आप अशोकके पेड़के नीचे रुक जाइयेगा।

इतना कहकर लड़केने गुल्लीपर चम्पा मारा और मारते बूवेके घरकी ओर बढ़ा। शिवचन्द भी अपने आदमियोंके साथ उसके पीछे पीछे चले। बूवेके दरवाजेपर पहुँचते ही लड़केने गुल्लीको पलटकर चम्पा मारा और मारता-मारता अपने स्थानपर लौट आया। इस तरह शिवचन्दने बूवेके घरका पता पा लिया। वस्तुत वह वैसा ही था जैसा मजरीने उन्हें बताया था।

इतनेम बूवे ग्वाल घरसे बाहर निकले और देखा कि कुछ आदमी अशोकके नीचे खड़े हैं। पास जाकर पूछा—आपका मकान कहाँ है और आप किधर जा रहे हैं।

शिवचन्द ने अपना अभिप्राय कह सुनाया। शिवचन्दकी बात सुनकर बूवे प्रसन्न हो गये और तिलकवालोके ठहरनेका प्रबन्ध करने लगे। फटा कम्बल और कोदोंका पुआल लाकर अशोकके नीचे बिछा दिया, और फूटे घड़ेमें पानी और टूटा हुआ हुका लाकर रख दिया। शिवचन्दसे बोले—हाथ पैर धोकर जलपान कीजिये। म लड़केको बुलाता हूँ। अगर वह आपको पसन्द आये तो आप तिलक चढ़ाइये।

शिवचन्दने कहा—बिना लड़का देखे मैं कुछ न करूँगा। यह सुनकर बूवेने अपनी पत्नीको बेटोको बुला लानेके लिए भेजा। माँकी बात सुनकर सँवरू, लोरिक और मिताजइल तीनों गौराकी ओर चल पड़े। जब घर पहुँचे तो तिलकवाले उन तीनोंको बड़े ध्यानसे देखने लगे। तीनों एक ही सरीखे लग रहे थे अतः उन्होंने बूवेसे कहा—मुझे तीनों ही आदमी एकसे जान पड़ते हैं। इसलिए म लड़केको पहचान नहीं रहा हूँ।

तब बूवेने उनका परिचय कराया।

शिवचन्दको लड़का पसन्द आ गया और उन्होंने तिलक चढ़ानेका निश्चय किया। बूवेने गाँव भरको निमन्त्रण भेज दिया। जब इसकी सूचना राजा सहदेवको मिली तो उन्होंने धनुआ दुसाधको बुलाकर यह ढिंढोरा पिटवा दिया कि जो कोई बूवेके घर जायेगा, उसके लड़के बचाकी खालमे भूसा भर दिया जायेगा। ढिंढोरा सुनकर घर घरसे निमन्त्रण वापस होने लगा। यह देखकर सँवरू बहुत क्रुद्ध हुआ और बोला—इच्छा तो होती है कि सहदेवके गढ़मे घुसकर उसे मार डालूँ, लेकिन खुशीके अवसरपर दु खद स्थिति पैदा नहीं करना चाहता, इसीसे मुझे चुप रह जाना पड़ता। दूसरे, वह अपना राजा है नही तो अभी उसका सिर काट डालता।

इस प्रकार खिन्न होकर वह सारी व्यवस्था करने लगा। उसने मिताजइलकी दोनों पत्नियोंको बुलाया। सँवरूकी स्त्री और माँ खुलाइनने लड़केको नहला धुलाकर कपड़ा पहनाया। सारी व्यवस्था हो जानेपर तिलकवाले आँगनमे आकर बैठे और पण्डितने तिलककी सारी व्यवस्था की। शिवचन्दने तिलकका सारा सामान चौकम रखवाया। स्त्रियाँ मिलकर मंगलचार करने लगीं। उनकी सहायताके लिए स्वर्गमे चौसठ योगनियाँ आ गयीं और वे भी गाने लगीं। जब स्त्रियाँ जो राग उठाती उस

चौसठ योगनियाँ लेकर आकाशमें गाने लगतीं। इस प्रकार बूबेके ऑगनमें गानेकी जो झनकार उठी, वह सहदेवके गढ़ तक सुनाई पड़ी। सहदेवने खीझकर अपनी दासी को यह देखनेके लिए भेजा कि कौन-सी स्त्रियाँ उसके यहाँ मंगलचार कर रही हैं। उनके लड़कोंकी खालमें अभी मैं भूसा भरवाता हूँ।

दासीने आकर देखा कि वहाँ गाँवकी कोई स्त्री नहीं है। केवल घरकी चार स्त्रियाँ हैं। और आकर राजासे यही बात कह दी। निदान वह चुप रह गया।

पण्डितजीने शिवचन्दसे तिलक चढ़ानेको कहा और शिवचन्दने तिलक चढ़ाया। उसके बाद पण्डितजीने आशीर्वाद दिया। पश्चात् तिलकवालोंके लिए भोजनकी तैयारी हुई। भोजन कराकर बूबे, मिलारजइल, सँवरू और लोरिकने भी भोजन किया। तदन्तर पण्डितजी लग्न पत्री बनाने लगे। तब बूबेने शिवचन्दसे कहा—आप गाँव वालोंको देख ही रहे हैं। उन्होंने हमसे वैमनस्यता ठान रखी है, इसलिए बारातमें कोई भी अगोरिया नहीं जायेगा। आप बहुत बड़ा प्रबन्ध मत कीजिएगा। बारातमें केवल चार आदमी आएँगे—लड़का, लड़केका बड़ा भाई, गुरू और मैं।

धीरे धीरे विवाहका दिन निकट आया। नहा धोकर जब लोरिक बारातके लिए तैयार हुआ तब मदागिनने उसके सामने भोजन रखा और कहा—सात नदी और चौदह पहाड़ पार करना है। लेकिन इस बीच न तो तुम्हें भूख ही लगेगी और न तो तुम्हारी धोती खुलेगी। मजरीसे विवाह कर जब कोहबरमें जाओगे तभी भूख लगेगी और जब सेजपर बैठोगे तभी धोती ढीली होगी।

लोकाचारके पश्चात् चारों आदमी बारातके रूपमें अगोरियाके लिए रवाना हुए और दरवाजेसे निकलकर गलियोंमें होते हुए सहदेवके महलके निकट पहुँचे। ऊपर कोठे पर सहदेवकी बेटी चन्दा बैठी थी उसकी दृष्टि लोरिक पर पड़ी और उसे देखते ही वह मूर्छित हो गयी। चन्दाको मूर्छित देखकर मुनिया दासीने उसे तत्काल उठाया और उससे मूर्छित होनेका कारण पूछने लगी। चन्दाने बताया—बूबे बारात सजाये जा रहा है। उसके पुत्र पर मुग्ध होकर मैं मूर्छित हो गयी थी। तुम माँसे जाकर कहो कि उसी बरके साथ मेरा विवाह कर दें। गाँवका ही इतना सुन्दर वर विदेश ब्याहने जा रहा है। यदि उससे मेरा विवाह न हुआ तो मैं आत्महत्या कर लूँगी।

यह सुनकर दासीको बहुत खेद हुआ और वह बोली—तुम्हारे जन्मको धिक्कार है। तुम राजाके घर जन्म लेकर उनके कुलमें कलंक लगाओगी।

और फिर वह जाकर रानीसे बोली—चन्दा तुम्हारे घर बेटी नहीं, शत्रु पैदा हुई है। बूबे तुम्हारे गाँवकी प्रजा है और वह उसीके बेटेसे विवाह करना चाहती है।

रानीने जब यह सुना तो वह दासी पर ही नाराज हुई। बोली—मेरी बेटीको झूठा कलंक लगा रही है। और उसे मारने लगी।

दासीने कहा—जाकर अपनी बेटीके हाल देखिये।

चन्दाके पास जाकर जब रानीने उसकी अवस्था देखी तो कहने लगी—बूबे

हमारे गाँवकी प्रजा है। उसके बेटेसे तुम विवाह करना चाहती हो। तुम हमारा सिर नीचा करनेपर तुली हो।

चन्दाने उत्तर दिया—यदि तुम अपनी प्रतिष्ठा बनाये रखना चाहती हो तो पितासे कहो कि इसी लग्नमें और इसी बारातके साथ कुवेके लड़केके साथ मेरा विवाह कर दें। यदि वे हमारा कहना नहीं मानते तो मैं गाँवके दक्षिण डेरा डाल दूँगी। पश्चिमसे मुगल पठान आयेंगे और पूर्वसे विदेशी, उन्हींके साथ मैं गौरामें अपनी मर्यादा खोऊँगी। और तब पिताजी का सिर सारे संसारमें ऊँचा होगा।

यह सुनकर रानीने माथा ठोक लिया और रोने लगी। महलमें जाकर चन्दाकी सारी बातें उन्होंने लिखकर उसके पिताको सूचित किया और अनुरोध किया कि लोरिकसे उसका विवाह कर दें।

दासी पत्र लेकर राजाके पास दरबारमें पहुँची। उसे पढ़कर राजा सहदेव बहुत दुखी हुए और सोचने लगे—कुवे हमारी प्रजा है और सँवरू मेरा शत्रु। उसके बेटेसे चन्दा विवाह करना चाहती है। शत्रुके सामने मेरा सिर झुक जायेगा। जो कल तक मेरी प्रजा और शत्रु था वही अब मेरा समधी होगा। फिर कुछ सोच समझ कर उन्होंने सँवरूके नाम पत्र लिखा—जितना तिलक अगोरियावाले चढ़ा गये हैं, उसका दूना मैं तिलक दूँगा। दो चार सौ गायें दहेजमें दूँगा। तुम दूर न जाकर लोरिकका विवाह मेरी बेटी चन्दाके साथ कर लो।

पत्र पढ़कर कुवे जलकर खाक हो गया और पत्रको फाड़ डाला। बोला—आज तक इसी गाँवमें मेरा बेटा कुँवारा था और उसकी बेटी भी कुँवारी थी लेकिन कभी कहा नहीं। आज जब हम ब्याहने चले तो तिलक चढ़ानेको कहते हैं। दूर देशसे एक भाई आकर तिलक चढ़ा गया है। पता नहीं कहाँ-कहाँसे सामान जुटाकर उसने सारी व्यवस्थाकी होगी। यदि हम यहाँ गौरामें ब्याह कर लें तो उसकी सारी व्यवस्था-का क्या होगा? उसके सारे अरमान नष्ट हो जायेंगे और भगवान् हमें अपराधी ठहरायेगा। अभी तो मैं विवाह करने अगोरिया जा रहा हूँ। वहाँसे लौटनेके बाद अगर सहदेव चन्दासे विवाह करना चाहें तो मैं तैयार हूँ।

यह सुनकर सहदेवका बेटा महादेव बहुत क्रुद्ध हुआ। तत्काल घोड़ेपर सवार होकर गंगाके किनारे पहुँचा और मल्लाहोंको राज्य भरकी सभी नावोंको डुबा देनेका आदेश दिया। जब सभी नावें डुबा दी गयीं तो वह मल्लाहोंसे बोला—गौरासे कुवे की बारात आ रही है। वह तुमसे पार उतारनेको कहे तो हरगिज मत पार उतारना। जो पार उतारनेमें मदद करेगा, उसे कठोर दण्ड दिया जायेगा।

बारात जब नदीके किनारे पहुँची तो उन लोगोंने देखा कि सभी नावें गंगामें डूबी हुई हैं और नाव चलानेवाले किनारेपर चुपचाप बैठे हैं। यह स्थिति देखकर सँवरूने गंगाके किनारे उगे झाऊको उखाड़ कर टोकरियाँ बनायीं और उन टोकरियोंमें अपना सारा सामान ठीक ठिकानेसे रख दिया और उनके बीचमें कुवेको बैठा दिया

ताकि वे सामानको पकड़े रहें। फिर सूर्यको साक्षी बनाकर गंगाको प्रणाम कर निवेदन किया—तुम मेरी धर्मकी माँ हो। बिना खेवइयाके इनको पार लगा दो।

उसका इतना कहना था कि टोकरी पानीमें हवाके समान उड़ने लगी और दूसरे किनारे जा पहुँची। सँवरू, लोरिक और मितारजइलने एक साथ नदी पार किया और फिर तीनों अगोरिया की ओर चले।

कोठवा शहर पहुँच करके वे लोग रुक गए। कूबेने सँवरूसे कहा—चलते चलते मेरे पैर थक गये हैं, कुछ भोजन कराओ। यहाँ शराबकी बारह भट्ठियाँ चलती हैं। कुछ शराब भी लाओ। तदनुसार सँवरू गया और एक कल्वारिनकी भट्ठीसे शराब लाकर पिताको दे दिया। उसे चखकर वह मस्त हो उठा और बोला—भाई बिना मासके तो यह फीका लग रहा है। जाकर मास भी लाओ।

सँवरू मास लाने चला। रास्तेमें उसे कोठवाके राजाका बकरा दिखाई पड़ा। सँवरू उसे पकड़ लाया और इसका उसने मास तैयार किया। खा पीकर जब कूबे बाबा मस्त हो गये तो बोले—जाकर किसी अहिरिनको बुला लाओ जो अच्छी रसोई बनाये।

सँवरू अहिरिन खोजने निकला। खोजते खोजते उसे एक ऐसी बूढ़ी अहिरिन मिली, जिसके हाथका बेर खाना भी लड़के पसन्द नहीं करते थे। उसका रूप ईश्वरने ऐसा बनाया था कि सँवरू उसे देखकर ही लौट आया। आकर यह बात अपने पिता से कही। सुनकर कूबे बोला—अहीरके लड़के होकर तुम मूर्ख ही रहे। छोटी अवस्था से ही तुम्हें मालिक बना दिया पर अभी तक कुछ अक्ल न आयी। तुम उसे ही बुला लाओ। सँवरू उसे अनुनय करके ले आया और पाँच घड़ोंसे उसे स्नान कराया, फिर ध्याहुती पिटारीमेंसे एक दखिणी साड़ी निकालकर उसे पहनाया। तब उसने अन्न लेकर भोजन तैयार किया। तीनों व्यक्तियोंने बड़े प्रेमसे खाया।

पिता और सँवरू तो खाकर चौकेसे उठ गये, कूबेने वहीं हाथ धोया और फिर उन्होंने उस बुढ़ियाको हाथ लगा दिया। वह रोती हुई राजाके दरबारमें पहुँची और फरियाद की कि कूबेने मेरी इज्जत नष्ट कर दी।

राजा इसपर विचार ही कर रहा था कि मनिया दुसाध आया और बोला—वे लोग आपका बकरा मारकर खा गये। वह गया ही था कि कल्वारिन आयी और बोली—जिन्होंने आपका बकरा मारकर खाया है, उन्होंने मेरी शराब पी है और उसका एक कौड़ी भी नहीं दिया।

यह सब सुनकर राजाने मन्त्रीको आदेश दिया कि सेनाको हुक्म दो कि जाकर उस अहीरको लूट लें।

सेना आते देख कूबेने धोती खोलकर कछनी बाधा, फिर ताड़के एक पेड़को उखाड़कर उसके दो टुकड़े किये। एकको बगलमें दबाया और दूसरेको हाथमें ले लिया। इतनेमें राजाकी सेना आयी और कूबेको घेर लिया। अपनेको चारों ओरसे घिरा देखकर कूबे एक ओर मुगा और ताड़ भांजना आरम्भ किया। लाशपर लाश

और मुडपर मुड गिरने लगे। राजाको लेकर हाथी भागा। तत्काल कुवेंने आगे बढ़कर उसका रास्ता रोक दिया और राजाको नीचे खींच लिया और बाँधकर ले चला।

जब यह सूचना महलमें पहुँची तो रानी बहुत घबडायी। किन्तु वह बड़ी चतुर और सब विद्यामें पारगत थी। उसने तत्काल कुवेंके नाम एक पत्र लिखकर निवेदन किया—मेरे सिंदूरकी रक्षा कीजिये। यदि आपको धनकी आवश्यकता हो तो वह मैं दूँगी। यदि आपकी आँख मेरे राज्यपर लगी हो तो मैं आपकी प्रजा भी बननेको तैयार हूँ।

धावनने पत्र ले जाकर सबलको दिया। सबलने उसे पढ़कर पीछे लिख दिया—हमें न तो धनकी आवश्यकता है, न राज्यकी। हम अपने भाईका विवाह करने जा रहे हैं। हमारे साथके लिए बारातीके रूपमें कुछ आदमी और बाजा भेज दें।

पत्र पढ़कर रानीने तत्काल अपने राज्य भर मे, जो चौदह कोसमें विस्तृत था, आदेश भेजा कि गाँवमें जितने भी बाजे और जवान हों, वे सब तत्काल आयें। इस प्रकार जब सब ज्वान और बाजे आकर तैयार हो गये तो रानीने कुवेंके पास कहला भेजा कि उन्ह उपनी बारातके लिए जितने बारातियोंकी आवश्यकता हो, ले जाँय।

सबल और मितारजदलने एक ही उमरके रेखें उठते हुए छप्पन हजार नवज्वानोंको चुना और गाजेंम से केवल अस्सी जोड़े तुरही और पचास जोड़ा करताल लिये। पश्चात् राजाको छोड़ दिया।

बारात चली और सोनपीके किनारे पहुँचकर उसने डेरा डाल दिया। सोनपीके तटका मल्लाह भीमल था। उसने पार उतारनेका खेवा माँगा। सबलने उससे कहा—दूर देशसे बारात आ रही है। सात नदी और चौदह पहाड़ पार करना पड़ा है। रास्तेमें ही सारा खर्च समाप्त हो गया। तुम खेवा उधार मानकर हमें पार उतार दो। हम जब ब्याह करके लौटेंगे तब चुका देंगे।

भीमल बोला—आप बड़े चालाक मालूम होते हैं। बिना खेवा लिए मैं नहीं उतारनेका।

इतना सुनना था कि सँवरूको क्रोध आ गया और उसने उसकी मुरेठी (पगड़ी) छीनकर उसके दोनों हाथ पीठेकर बाँध दिये। तब भीमल अनुनय करने लगा—मुझे छोड़ दीजिए। मैं आपकी सारी बारातको पार उतार दूँगा और आपसे एक छदाम भी न लूँगा। कसूर माफ हो।

यह सुनकर सँवरू हँसा और उसे छोड़ दिया और बोला—यदि एक नावसे तुम बारात पार करने लगोगे तो विवाहके लगनके समय तक हम लोग नहीं पहुँच सकेंगे। अगोरियामें लोग कहने लगेंगे कि तिलक लेनेके बाद डरकर विवाह नहीं करने आए। इसलिए सोनपीके सभी घाटोंपर जितनी भी नावें हों, उन्हें लाकर उनका पुल बना दो। हम लोग खड़े खड़े नदी पारकर जायेंगे। सबरूके कथानुसार उसने नावोंकी व्यवस्थाकी और उन्हें जोड़कर पुल तैयार कर दिया और बारात पार हो गयी।

अतमें जब सवरू पुलपरसे जाने लगा तो भीमल बोला—मैंने पुल कमजोरोंके लिए बनाया था, वीरोंके लिए नहीं। यदि आपमें बल हो तो उछलकर सोनपीको पारकर जाइये। तभी मुझे विश्वास होगा कि आप अगोरियामें जाकर विवाह करेंगे और लौटकर मेरा खेवा देंगे।

इतना सुनना था कि सँवरू पुलपरसे उतर गया और पाच कदम पीछे हटकर उसने छलाग मारी और सोनपीको पारकर गया। पार पहुँचकर उसने अपने पैरके अँगूठेसे सारी नावोंको सोनपीमें डुबो दिया। फिर भीमल बोला—मेरी शक्ति देख ली।

भीमल हाथ जोड़कर बोला—आपकी शक्ति देख ली। आपने तो मेरी सारी नावोंको ही डुबा दिया। मेरे लिए यही एक सहारा था, अब तो मेरे बाल बच्चे भूखों मरेंगे। मैं आपसे खेवा नहीं चाहता। आप केवल हमारी नावें निकाल दें।

यह सुनकर सवरूने अपने अगूठेके बीचमें नावोंकी रस्सी पकड़कर खींचा और नावें फिर ऊपर आ गयीं। बारात आगे चली।

अगोरियाकी सीमा पर पहुँचकर बारात रुक गयी। सँवरू और मिताने बाजा-वालोंको ऐसा बाजा बजानेका आदेश दिया कि सारे अगोरियामें खबर हो जाय कि विवाह के लिए बारात सजाकर अहीर आ पहुँचा है। इतना सुनना था कि बाजा वालोंने बाजा बजाना शुरू किया।

बाजेकी आवाज जब खरिवा वनमें सुनाई पड़ी तो महराके चरवाहेने, जो वहाँ सोलह सौ गायोंको चरा रहा था, अपने साथी बुरईसे कहा—इनके दिन मेरे मालिकके दरवाजे पर बारात आनेवाली थी। गाँवकी सीमा पर बाजोंका झकार हो रहा है। चलो देखा जाय कि बारात मालिकके यहाँ ही आयी है या किसी अन्यके यहाँ। वह बारातके निकट जा पहुँचा और घूम घूमकर बारात देखने लगा। देखते देखते वह वहाँ पहुँचा, जहाँ सँवरू, मिता और लोरिक बैठे हुए थे। वह उनसे पूछने लगा—बारात कहाँसे आ रही है और विवाह करने कहाँ आयेगी।

जब उसे मालूम हुआ कि बारात उसीके मालिकके यहाँ आयी है तो वह आश्चर्यचकित रह गया। वह तत्काल महराके पास पहुँचा। शिवचद और महरा, दोनों बैठे हुए थे। उनसे बोला—मजरीका तिलक चढ़ाकर जब मामा गौरासे लौटे तो कह रहे थे कि गाँवके लोग उनके विरुद्ध है, उनके साथ बारातमें कोई न आयेगा। कुल तीन ही बाराती आयेंगे। लेकिन बारात तो ऐसी आयी है, जिसका वर्णन नहीं। आपने तो उनके अन्न पानीकी कोई व्यवस्था की ही नहीं है।

यह सुनकर पद्मा तो हर्षित हो उठी कि मेरी बेटी मजरीका भाग्य धन्य है। लेकिन महरा मनियार सुनकर क्रुद्ध हुआ और शिवचद से बोला—हमारे साथ धोखे बाजीकी गयी है। कहा बारातमें केवल तीन ही आदमी आयेंगे और आये हैं इतनी बड़ी सेना लेकर उन्होंने मेरी प्रतिष्ठाका तनिक भी ध्यान नहीं रखा। वह मेरे हितैषी, नहीं शत्रु हैं। अब मैं कहाँसे प्रबंध करूँ, कैसे इतने लोगोंके लिए खाना जुटाऊँ ! उन्होंने जिस तरह हमारे साथ धोखा किया है और उसी तरह हम भी उनके साथ

करेंगे। हम आरत (कूट प्रश्न) भेजेंगे, यदि उन्होंने उसकी पूर्ति न की तो हम उनके संग विवाह हरगिज नहीं करेंगे।

फिर उसने दसौंधीको बारात देखनेको भेजा। दसौंधीको आते देख सँवरू कुँवेसे बोला—अगोरियाकी बड़ी चर्चा सुनी है। यहाँका राजा मल्यगित बलवान है। न मालूम किस ढगसे वह युद्ध करता है कि वह सब बारातियोंको मारकर बहूके डोलेको छीन लेता है और अपने रनिवासमें ले जाकर उसे अपनी रानी बना लेता है। अगोरियाकी स्थिति अभी तक मेरी समझमें नहीं आयी। सामनेसे एक धावन आ रहा है। यदि आप कहें तो उसे बारातमें घुसने न दिया जाय। यदि उसने बारातमें घुसकर बारातको काट डाला तो पीछे उसके मारने से क्या लाभ होगा।

यह सुनकर कावाने कहा—बात तो ठीक है। वह बारातमें घुसने न पावे।

आज्ञा पाते ही सँवरूने एक ताड़का पेड़ उखाड़ लिया और उसे भूमिपर पटक दिया—जिससे वह पत्थर चँवर सरीखा बन गया। उसे इतने जोरसे घुमाया कि उसकी हवा जब धावनको लगी तो वह भागकर मनियारके दरवाजेपर वापस जा पहुँचा। बोला—मैं आपकी बारात देखने न जाऊँगा। बारातवाले आदमी नहीं जान पड़ते। उन्होंने तो ताड़का पेड़ उखाड़कर रख छोड़ा है।

यह सुनकर महरा ने शिवचन्दसे कहा—वह लोग तो चतुर जान पड़ते हैं। अपनी बारातके प्रति वे पहलेसे ही सजग हैं। जबतक कोई जानकार नहीं जायेगा तब तक वे किसीको भीतर नहीं घुसने देंगे। इसलिए तुम, नाई और पण्डित तीनों आदमी जाओ। विवाहका तो कोई प्रबन्ध अभी हुआ नहीं है। इसलिए पण्डितजीसे कहना कि वह अहीरको समझा दें कि लग्नका दिन निश्चय करनेमें गड़बड़ी हो गयी। अभी सात दिन और सात रात भद्रा है, इसलिए तबतक वह अपनी बारात ठहराय। रसद पानी जो भी कहेंगे वह सब हम इकट्ठा कर देंगे। इस बीच बारातका जो प्रबन्ध करना होगा कर लिया जायगा।

उधर मल्यगित अगोरियासे बारात भगानेका उपाय रचने लगा। उसने गाँव भरके लड़कोंको बुलाकर ललकार दिया। लड़कोंने शह पाकर अपनी काँछमें ईंटोंके टुकड़े इकट्ठे कर लिये और बारातके निकट पहुँचकर बिखर गये और लगे ईंट फेंकने। सँवरूने देखा कि लड़के बारातियोंको ईंटोंसे मारकर परेशान कर रहे हैं तो उसने अपने ताड़वाला झाड़ उठाया। यह देख लड़के भाग खड़े हुए।

मल्यगितने तब महराके पास कहला भेजा कि अहीरकी बारातमें जितने बुड्ढे हों, उन सबको निकाल बाहर करो अन्यथा विवाहके रंगमें विषाद उत्पन्न हो जायेगा।

यह सुनकर महरा सोचने लगा कि राजा किसी तरह मेरी इज्जत रहने नहीं देना चाहता। दुविधामें पड़कर बोला—राजा बलवान है उसकी बात तो माननी ही होगी।

शिवचन्द, पण्डित और नाई तीनों बरातकी ओर चले। शिवचन्दके आते ही सँवरूने उठकर प्रणाम किया और फिर कुशल क्षेमकी बात होने लगी। इस बीच

पण्डितजी बोले—उस दिन लग्न देखनेमें मुझसे गड़बड़ी हो गयी। आजसे सात दिन तक रात दिन भद्रा है। तब तक आप बारात यहीं ठहराइये।

इतना सुनकर सँवरू कहा—दूर देशसे बारात यहाँ आयी है। पासमें जो रसद वगैरह था, सब समाप्त हो गया है। यदि आपलोग ऐसी व्यवस्था कर दें कि हमारी बारात भूखों न मरे तो सात दिन क्या, हम सात महीने ठहर सकते हैं।

शिवचन्दने कहा—हम बारातकी सारी व्यवस्था कर देंगे। किन्तु हमारे राजा का आदेश है कि सब बूढ़ोंको निकाल बाहर किया जाय। आप उन्हें नहीं निकालते तो महराकी बड़ी बेइज्जती होगी।

यह सुनकर सँवरू अत्यन्त दुखी हुआ। बोला—हमारी बारातमें सब तो ऐसे ही जवान हैं जिनकी अभी रेख उठ रही है। बूढ़ोंमें अकेले काका ही हैं। उनको हम बारात से अलग कर देंगे। और उसने उन्हें एक टोकरीमें बन्द कर दिया।

यह देखकर कि बारातमें कोई बुड्ढा नहीं है शिवचन्द घर वापस आ गये। प्रत्येक आदमीके लिए एक मन चावल, एक मन आटा, एक बकरा और एक बोझ ऊख और एक भट्ठी शराब भिजवाकर उन्होंने सँवरूको लिखा—हम जो रसद भिजवा रहे हैं वह केवल चौदह वक्तके लिए है। यह इसीके अन्दर खतम हो जानी चाहिए। यदि कुछ बच रहा तो आपको सीधे गौराका रास्ता नापना होगा। हम बेटीसे ब्याह नहीं करेंगे।

पत्र पढ़कर सँवरू सोचमें पड़ गया। टोकरीमें बन्द काकासे जाकर कहा—महराकी यह शरारत हमसे सही नहीं जाती। रसदका ढेर लगा दिया है और कहता है कि रसद समाप्त नहीं होगी तो हम ब्याह नहीं करेंगे। बताइये कि किस प्रकार रसद समाप्त हो।

यह सुनकर काकाने कहा—अहीर के लड़के होकर भी अक्ल नहीं है। सारी बारात छप्पन हजार है। एक बार दस मन आटा सनवा दो और एक एक लोई देने लगो। कोई कच्चा खायेगा कोई पकाकर खायेगा, मालूम भी न पड़ेगा और सभी भूखों रह जायंगे। इसी प्रकार चावलको भी बँटवाओ। इस प्रकार दिन-रात रसद बँटवाते जाओ। कभी किसीका पेट नहीं भरेगा और रसद भी दस जूनमें ही समाप्त हो जायगा। इसी तरह तुम शराबकी भट्ठीकी भी व्यवस्था करो। दस बीस खसी (बकरा) एक साथ कटवाओ, टुकड़ टुकड़े सबको बाट दो। कोई कच्चा खायेगा कोई पकावे। इसी प्रकार ऊखको भी बाटो। जब सब रसद समाप्त हो जाये तो महराको और रसद भेजनेके लिए लिख भेजो। सँवरूने इसी प्रकार रसद बाटना शुरू किया।

इतनेमें महराका दूसरा पत्र आया। सवरूने उसे पढ़ा और काकाके पास फिर गया और बोला—महरा हमें बेकार परेशान करना चाहता है। इस बार उसने लिख भेजा है कि हमारे पास कोयलेकी रस्सी भेज दो ताकि हम मड़प बाधकर तैयार कर। हमने तो कभी कोयलेकी रस्सी सुनी ही नहीं।

सुनकर काकाने कहा—जाओ दस आदमी भेजकर सोनपी नदीके किनारेसे

घास कटवाकर मंगाओ। घासको कूटकर धूपमें सुखाओ फिर उसकी रस्सी बनाओ और उसको गोलाकार लपेट दो और फिर नाँद मगाकर उसे ढँकनसे बन्द दो; बादमें उसमें आग लगा दो। रस्सी जलकर कोयला हो जायेगी फिर भी वह ज्यों की त्यों बनी रहेगी। उसीको उसके पास भेज दो। सँवरु ने वैसा ही किया और महरा की इच्छा पूरी कर दी।

यह देखकर महरा मूर्छित हो गया और कहने लगा—शिवचन्द, तुम कहते हो कि महराकी बारातमें एक भी बुड्ढा नहीं है। बिना किसी बुड्ढेके मेरी यह माग कैसे पूरी हुई।

शिवचन्दने उसे समझाकर कहा—कूबेका बड़ा लड़का सँवरु बड़ा चतुर है। वही सबको पूरा कर देता है।

तब उन्होंने फिर दूसरी माग भेजी कि हमने मंडप तैयार कर लिया है। ३६० पोरकी लाठी भेजो, जिससे हम उसको उठाकर आँगनमें लगवा दें। इस बातको भी सँवरु ने बाबासे कहा और बाबाने बताया—सोनपीके किनारे कुशके पुराने वृक्ष होंगे। उन्हें जड़ सहित उखाड़कर ले आओ। प्रत्येककी जड़में अनगिनत पोर होंगे। उसीसे गिनकर तुम उसके पास भेज दो। इस तरह सँवरुने उनकी उस माँगको पूरी करके भेज दिया और यह भी लिख भेजा कि आयी हुई रसद समाप्त हो गयी है। रसदका प्रबंध करके जल्दी भेजिये।

यह पत्र पाकर महरा घबरा उठा और तत्काल कहला भेजा—लगनकी घड़ी समाप्त हो रही है जल्दीसे बारात लेकर आइये।

यह बात जब सँवरुने बाबासे कहा तो वे बोले—महराने हमें इतना परेशान किया। अब जब तक वे हमारी बात पूरी नहीं करेंगे, तब तक हम बारात लेकर न जायेंगे। तदनुसार सँवरुने लिख भेजा हमारे कुलकी रीति है कि देवबाला बारातके पाँव पखारनेके लिए एक जोड़ी कुँआ भेजता है। जब तक वह नहीं आता तब तक बारात आपके दरवाजे नहीं जा सकती।

यह पढ़कर तो महराके होश गुम हो गये। अड़ोस-पड़ोससे पूछने लगा—यह कुँओंका जोड़ा माँगता है, हम कैसे भेजें। जो सुनता वही आश्चर्यचकित रह जाता। तब महरा मलयगिरिके दरबारमें गया। वहाँ भी कुओंके माँगकी बात कही। सब दर-बारी सुनकर दंग रह गये। महराने बताया—जब तक बरातियोंकी यह माँग पूरी न होगी वे मेरे दरवाजे नहीं आवेंगे। परन्तु कोई भी इसका निराकरण न कर सका। हारकर महरा घर लौट आया और खाट पर पड़ रहा।

महरीने जब सुना तो बोली—चौदह वर्षसे आप उनको परेशान कर रहे थे। अब जब उन्होंने एक साधारण-सी माँग की तो आप परेशान हो गये। आप मेरी रानी सुवर्णाके पास जाइये। उससे कहियेगा वह सारा प्रबन्ध कर देगी।

महरा वहाँसे सुवर्णाके पास पहुँचा और उसने सारी बात कही। सुनकर वह बोली—यह कौनसी बड़ी बात है।

वह अन्दर गयी और कपड़ा पहनकर तैयार हुई और और सूर्यसे आँचल पसारकर विनय की कि मेरे सत्यकी लाज रखिये। और विनय करके चमड़ेकी दो चल्नी एकमें ही जोड़कर महराको दे दिया और बोली—कि दोनों चल्नीमें पानी भर दें। इनमें जितना पानी रहेगा, उसमें अहीरकी बारात सात बार पाँव पखारेगी फिर भी वह नहीं घटेगा।

इस प्रकार जब काकाकी यह माँगकी पूर्ति हो गयी तो उसने दूसरा पत्र लिखवाया और कहा कि बारह स्तनोंवाली ऐसी वस्तु भेजिए जिसकी धार एक ही हो। इस आरतका अर्थ जाननेके लिए महरा मुहल्ले भरमें घूमता फिरा, लेकिन किसीसे उसकी पूर्ति न हो सकी। तब वह मल्यगितके दरबारमें पहुँचा। जब वहाँ भी कुछ न हो सका तो घर लौटकर दुःखित होकर रानी पद्मासे कहने लगा—बेटी मजरीके कारण मेरी दुर्गति हो रही है।

मजरीने जब यह सुना तो बोली—आप जरा-सी बातमें घबड़ा जाते हैं और बेटीके भाग्यको दोष देने लगते हैं। कुम्हारके यहाँ चले जाइए और उससे एक करवा बनवाइए, उसमें बारह छेद करवा दीजिए और उसके ऊपर एक टोंटी लगवा दीजिए और उसीको भेज दीजिए। महराने वही किया।

इस प्रकार उनके माँगकी पूर्ति हो गयी।

दोनों ओरकी प्रतिस्पर्धा समाप्त हो जानेपर विवाहकी तैयारी होने लगी। जब यह सूचना मल्यगितको मिली तो उसने अपने भँवरानन्द नामक हाथीको शराब पिलायी। शराब पीकर जब हाथी नशेमें चूर हो गया तब उसे लोहेकी अस्सी मनकी जजीर पकड़ा दी और बारातका रास्तेमें ही रोक देनेके लिए भेजा। हाथीने महराके मुख्य दरवाजे को रोक दिया। जब सँवरूकी बारात द्वारके निकट पहुँची, तो हाथीने पीके घूमकर जजीर घुमाना शुरू किया। फलतः बारात बादलोंकी तरह फटकर भाग निकली। सँवरू और मिता एक किनारे हट गये। लोरिक भी एक तरफ होकर हाथीकी मार बचाने लगा। जब हाथी दाहिने घूमे तो वह बायें उछल जायँ और जब वह बायें घूमें तो लोरिक दाहिने उछल जाय। जिस प्रकार हाथी घूमें लोरिक भी उसी प्रकार घूम जाय। अन्तमें लोरिकने खड्ग निकालकर मतवाले हाथीको ललकारा। जब सूँड़ घुमाकर हाथीने लोरिकपर जजीर चलाया तो लोरिक उछलकर एक बगल हो गया और कूदकर खड्गसे हाथीके गरदनपर वार किया। हाथीका सिर धड़से अलग हो गया। लोरिकने सूँड़को उठाकर इतने जोरसे फेंका कि वह मल्यगितके दरवाजेपर जा गिरा और फिर पैरको पकड़कर इतने जोरसे घुमाकर फेंका कि वह चौराके सीमापर जाकर गिरा। लोरिककी ऐसी शक्ति देखकर अगोरियाके नर नारी दंग रह गये।

बारात महराके द्वारपर पहुँची। द्वारपूजाके पश्चात् विवाहका कार्य आरम्भ हुआ। सँवरूने मितासे कहा—यहाँका राजा बहुत चालाक है। अगर हम होशियार नहीं रहे तो हो सकता है मण्डपमें ही छले जायँ। अब आप सतर्क होकर द्वारपर जा

बैठिये ताकि कोई बाहरी व्यक्ति न आ सके। तदनुसार मिता अपनी मनका गदा लेकर दरवाजेपर जा बैठे।

जब मजरीके विवाह मण्डपमें आनेका समय हुआ तो उसने आनेसे इन्कार कर दिया। बोली—ऐसे विवाहसे क्या लाभ? पौ फटते ही जब मैं विवाह करके निकलूँगी तो राजा लड़ाई आरम्भ कर देगा और अहीरको मारकर मुझे अपने रनिवासमें डाल लेगा और मेरी स्थिति एक वेश्या-सी हो जायेगी।

कुशकी चटाइपर कुशके ही वस्त्र पहनकर वह लेट गयी और अपने स्वत्वका स्मरण करने लगी। फलत इन्द्रका आसन डोलायमान हुआ। उन्होंने मजरीको मनानेकी बहुत चेष्टा की। जब वे सफल न हो सके तो अपनी बहिन दुर्गाको बुला भेजा और उनसे मजरीको मनानेका कहा।

दुर्गाने कहा—मजरीका विवाह तो मैं करा दूँगी, किन्तु यह तभी सम्भव है जब तुम अपने सेवक मल्यगिर, उसकी बहिनके लड़के निर्मल परिहार (जो सिंगेपुर कोटारमें रहता है) तथा उसके हाथी—करणाकी हार और लोरिकके जीतकी व्यवस्था कर दो। इन्द्र बहुत सोच विचारमें पड़े। कोई और उपाय न देखकर उन्होंने दुर्गाकी इच्छानुसार पत्र लिख दिया। तब दुर्गाने कहा—तुम कैलास वापस जाओ, मैं विवाह कराये देती हूँ।

वह मजरीके पास जाकर बोलीं—तुम्हें जिसका भय था, उसका मैंने प्रबन्ध कर दिया है। तुम चिन्ता न करो। अगोरियामें अहीरकी जीत निश्चित है। मैं अपनी पूजा तुमसे अगोरियामें न माँगूँगी। जब तुम गौरा गुजरात जाना तो मेरी समुचित पूजा करना।

इतना कहकर देवी मजरीको विश्वास दिलाने लगी कि मैं तीन पुश्त तक उस अहीरका हाथ पकड़े रहूँगी। चौकपर ही मैं लोरिकका हाथ पकड़ती हूँ। यदि मैं छल करूँ तो नरकमें जाऊँ। यह सुनकर मजरी चौकपर आकर बैठी और पुरोहितजी ने विवाह कराया। जब यह खबर राजाको मिली तो उसने ढाल भरकर सोना और पानका बीड़ा दरवाजे पर रख दिया और घोषणा कर दी कि जो वीर पानका यह बीड़ा खायेगा, उसे ढालका सोना इनाममें मिलेगा। जिस वरसे मजरीकी शादी हुई है, उसे मारकर जो मजरीको पकड़कर लायेगा, उसे आधा राज्य और भाईके बराबर सत्कार दिया जायेगा। साथ ही पान खानेके लिए उसे सिरहिरियाका बाजार और मुँह धोनेके लिए सोनपीका घाट, जिसकी चौड़ी नौ लाख सालाना है, मिलेगा।

यह घोषणा सुनकर टढिया राजाके दरवाजे पहुँचा। उसने पान उठाकर खा लिया और ढालका सोना ले लिया फिर बोला कि मैं अभी मण्डपमें जाकर महराके दामादको मारकर मजरीको लाता हूँ। यह कहकर उसने नारीका रूप धारणकर कमरमें छप्पन छुरी छिपा ली और महराके दरवाजेकी ओर चला। दरवाजेपर मिताराबड़ल पहरा दे रहे थे। कुछ देर तो वह वहाँ खड़ा रहा फिर मितासे बोला—मैंने सुना है कि बहिन मजरीका विवाह हो रहा है। मैं उसका बाहरी दूल्हा देखने आयी हूँ, मुझे

मण्डपमें जाने दो। यह सुनकर मिताने दरवाजा खोल दिया और वह भीतर घुस गया। सखियोंमें घुसकर वह भी मगलाचार गाने लगा। सभी सखियोंका स्वर एक-सा उठता था, किन्तु डढियाके स्वरमें अन्तर पड जाता था। यह देखकर सभी सखियोंको तत्काल सन्देह हो गया कि स्त्रीका वेश बदलकर कोई पुरुष हमारे बीच घुस गया है। यह सोच कर उन्होंने गाना बन्द कर दिया।

मजरी सोचने लगी कि इन लोगोंने गाना क्यों बन्द कर दिया और उनकी ओर देखने लगी। देखते ही उसने डढियाको पहचान लिया। वह सोचने लगी कि शत्रु मण्डपमें घुस आया है। वह स्वामीको मारकर मुझे चौकमें ही विधवा बना देगा। अत कोई ऐसा उपाय करना चाहिए कि स्वामीको यह बात मालूम हो जाय। लेकिन यदि मैं बोलती हूँ तो मण्डपमें लोग हँसी उड़ायेंगे कि अभी ब्याह हुआ नहीं कि मैं अपने पतिसे बात करने लगी। इसलिए कोई दूसरा उपाय निकालना चाहिए। यह सोचकर नींद आनेका बहानाकर वह आगे-पीछे, दाएँ बाएँ झुकने लगी और जाकर लोरिकके ऊपर लुढक पडी और उँगलीसे खोदकर चेतने लगी।

लोरिकने सोचा कि हमें कैसी पागल स्त्री मिली है, जो चौकपर ही मुझे खोद रही है। घर जानेपर पता नहीं क्या करेगी। वह यह बात सोच रहा था कि सारी सखियाँ एक एक कर मिलने आने लगीं और जब सब मिल चुकीं तो डढिया सामने आया। उस समय फिर मजरीने उसे उकसाया। तब लोरिकको ध्यान आया कि शत्रुको देखकर पत्नी मुझे चेतावनी दे रही है। डढियाको देखते ही उसने जान लिया कि वह स्त्री नहीं है और खड्ग लेकर होशियार हो गया। जब डढिया आकर लोरिकके बगलमें खडा हुआ तब लोरिकने उसे ध्यानसे देखा। जिस चादरसे उसका मजरीके साथ गठबन्धन हुआ था, उसे तत्काल उतारकर उसने एक तरफ रख दिया और खडा हो गया फिर अपने डढियाकी साड़ीका छोर खींच लिया। वह नगा होकर भागा।

तदनन्तर सखियाँ वर-वधूको कोहबर ले गयीं और उनके साथ मजाक करने लगीं। जब ये चली गयीं तब लोरिकने मजरीसे कहा—जब मैं विवाहके लिए चलने लगा था तो भाभी मदागिनने मुझे चावल बनाकर खिलाया था और कहा था कि अब तुम विवाह करके कोहबरमें जाओगे तभी भूख लगेगी। उनकी बात सच जान पड़ती है। अब मुझे भूख लगी है।

मजरी बोली—जब सब सखियाँ यहाँ थी तब तो आपने कुछ कहा नहीं। उस समय तो मैं चावल मँगाकर आपको खिला भी देती। जब ये चली गयीं, तब आप कह रहे हैं। मैं कैसे खिलाऊँ? रसोई घरके दरवाजेपर भाभी लेटी हुई हैं। मैं जाती हूँ और अगर वह जाग गयी तो मेरा बडा उपहास होगा। अब रात भर चुपचाप सो रहिये। सुबह सखियाँ आयेंगी तब मैं भोजन मँगा दूँगी।

लोरिक बोला—नहीं, मुझे तो इसी समय जोरोंकी भूख लगी है।

यह सुनकर मजरीने सोचा कि ये मेरे सतकी परीक्षा ले रहे हैं। फलत उसने

अपने सत्का ध्यान किया और अपने सत् बलपर वहीं खिचड़ी तैयारकर लोरिकको खिला दिया। पश्चात् पति और पत्नी बीचमें खड्ग रखकर सो रहे।

जब बदिया लौटकर मलयगितके दरबारमें नहीं पहुँचा तब मलयगित चिंतित हुआ। उसने दूसरी बार पानका बीड़ा रखकर पूर्ववत् घोषणा की। घोषणा सुनकर ऊदल पँवार सामने आया और पान उठाकर खा गया। फिर वह कंधेपर लाठी रखकर मड़पमें घुसकर कोहबरके दरवाजेपर लाठी रखकर खड़ा हो गया। फिर उसने सोचा कि अगर लोगोंने मुझे यहाँ खड़े देख लिया तो वे मुझे चोर कहकर पुकारेंगे और मेरी बड़ी बदनामी होगी। अच्छा तो यह होगा कि जाकर महराकी सब गायोंको भगा लाऊँ। यह सोचकर वह खरिकाके बथानपर पहुँचा और महराकी सब गायोंको खोलकर सचलिया बाजारकी ओर ले चला।

तब नन्हुआ चरवाह उसके पास आया और पूछा—हमसे क्या गलती हुई है, जो हमारी गायोंको तुम लिये जा रहे हो? क्या उन्होंने राजाका खेत चरा है या फुलवारी उजाड़ी है?

ऊदल बोला—न तो उन्होंने खेत खाया है न फुलवारी उजाड़ी है, फिर भी मैं उन्हें ले जाकर सचली बाजारके भाठामें दूँगा। अगोरियामें महराका जो दामाद है, उसे जब यह खबर मिलेगी तो वह गायोंको छुड़ाने आयेगा, उस समय मैं उसे मार डालूँगा। इस प्रकार राजाके प्रति अपना वचन पूरा करूँगा। अगर वह निर्बल होगा तो मेरा नाम सुनकर ही मजरीको छोड़कर रातोरात गौरा भाग जायेगा और मैं मजरीको राजाके रनिवासमें पहुँचा दूँगा। यह कहकर ऊदल गायोंको लेकर सचलीके बाजारमें पहुँचा और उन्हें भाठेमें देकर सड़कके किनारे आराममें सो रहा।

नन्हुआ भागा हुआ अगोरिया पहुँचा। और मकानके पिछवाड़े जाकर जोरसे चिल्लाया—मामा हमारे मित्र नहीं, शत्रु हैं। जिस दिनसे बारात आयी है, उस दिनसे हमारी गायोंके ऊपर आपत्ति आ रही है। और मड़पकी ओर जाकर गाली देने लगा। लोरिककी नींद खुल गयी और मजरीसे बोला—इतनी रातको गालियाँ कौन दे रहा है?

वह बोली—आजकी रात तुम गालीपर मत ध्यान दो। ससुराल आये हो। शत्रु मित्र सभी गाली देंगे।

लोरिक इस उत्तरसे सन्तुष्ट न हुआ। और उठकर नन्हुआके पास पहुँचा और गाली देनेका कारण पूछा।

नन्हुआने जब उसे स्थिति बतायी तो लोरिक उसके साथ चल पड़ा और सचलियाके बाजार पहुँचा। पहुँचते ही उसने भाटाका फाटक तोड़ दिया। सब गायें निकल बाहर हो गयीं। उसके बाद वह ऊदलके पास आया। उसे सोता देख बोला—सोए हुए शत्रुको मारना अपराध है।

यह सुनकर नन्हुआ ऊदलको जगानेकी कोशिश करने लगा पर उसकी नींद टूटती ही नहीं थी। तब उसने पासमें पड़ी भेड़ोंके झुण्डको खोलकर भटका दिया। वे

उठकर ऊदलकी ओर भागी। उनके भागनेसे धूल उड़कर जब ऊदलकी नाकमें घुसी तो वह छींकता हुआ उठ खड़ा हुआ। देखा माठेका दरवाजा खुला हुआ है और सामने लोरिक खड़ा है। तत्काल वह लड़नेके लिए तैयार हो गया।

दोनोंमें शर्त तय हुई कि पहले तीन बार ऊदल वार करेगा और उसके पीछे तीन बार लोरिक करेगा। ऊदलके तीनो वार खाली गये और लोरिकने एक ही वारमें उसका सिर काटकर नीचे गिरा दिया। ऊदलका सिर उड़कर इन्द्रके दरबारमें पहुँचा और वहाँ नाचने लगा। इन्द्रने उसे देखकर कहा—अभी तुम्हारी मौत नहीं है, तुम यहाँ कैसे आ गये? वापस जाओ। और वह सिर पुन आकर धड़से जुड़ गया और ऊदल उठकर खड़ा हुआ और लोरिकसे फिर लड़ना शुरू किया। लोरिकने पुन अपनी खड्गसे उसका सिर काट दिया और वह पुन इन्द्रके दरबारमें पहुँचा। इन्द्रने पुन वहाँसे खदेड़ा और वह फिर आकर अपने धड़से जुड़ गया।

तीसरी बार जब लोरिक खड्ग लेकर आगे बढ़ा तो देवीने उसे सचेत किया कि यदि इस बार उसका सिर इन्द्रके दरबारमें पहुँचा तो इन्द्र उसे आशीश दे देंगे। यदि वह पुन धड़से जुट गया तो फिर वह न कभी काटे कटेगा, न मारे मरेगा, न पानीमें डूबेगा और न आगमें जलेगा। उस समय उसे मार सकना असम्भव होगा। इसलिए दायें हाथसे खड्ग चलाओ और बायें हाथसे उसका सिर लपक लो ताकि उसका सिर यहा रह जाये और वह लड़ाइके मैदानमें ही मर जाये। तदनुसार लोरिकने खड्ग मारा और जैसे ही सिर आकाशकी ओर जाने लगा, उसे उसने बाँयें हाथसे पकड़ लिया और उसे लेकर अँगोरिया पहुँचा। और उसे लाकर मण्डपमें टाँग दिया। स्वय कोहबरमें जाकर खूनसे सने खड्गको सेजके सिरहाने रख चादर तानकर सो रहा।

लोरिकको नींद आ ही रही थी कि डढिया दरवाजेपर आ पहुँचा। स्वप्नमें देवीने मजरीको इसकी सूचना दे दी वह तुरन्त दरवाजेपर पहुँची और दरवाजेकी सॉस मेंसे देखा कि डढिया दरवाजा रोककर खड़ा है। लौटकर उसने लोरिकका हाथ हिलाकर इशारेसे बताया कि बाहर शत्रु आया हुआ है। लोरिकने उठकर जैसे ही दरवाजा खोला, डढिया भाग खड़ा हुआ। लोरिकने झपटकर पकड़ लिया और उसका सिर काट डाला। फिर मुण्डको इतनी जोरसे फेंका कि वह मल्यगितके दरबारमें जा गिरा। लोरिक पुन आकर कोहबरमें सो रहा।

जब आकाशमें लाली छायी और कोयल बोलने लगी तो अनुपियाकी नींद टूटी। वह झाड़ू लेकर घर बुहारने लगी। घर बुहारकर वह आगनमें पहुँची। आगन बुहार चुकी तो सिर उठाया। देखा—मडपमें एक सिर लटक रहा है। उसे देखते ही वह रोने लगी। उसका रोना सुनकर सब लोग घबड़ाकर उठे। मडपमें आकर मुण्डको उन्होंने देखा। अनुपिया दौड़कर महरा मनियारके पास पहुँची उन्हें जगाया और रो-रोकर बताया कि मल्यगितने लोरिकको मार डाला और उनका मुण्ड मडपमें टगा है।

यह सुनते ही महरा बेहोश हो गया। होश आनेपर वह जनवासे गया और लोरिकके मारे जानेकी सूचना दी।

मिता गुरुको इस बातपर तनिक भी विश्वास न आया। बोले—अपने शिष्य को मैं जानता हूँ। वह भेंड-बकरी नहीं है, जो रातमें कोहबरमें मारा जाये जान पड़ता है किसी शत्रुसे उसकी मुठभेड़ हुई थी और उसे मारकर उसने मडपमें टाग दिया और खुद अलस होकर सो रहा है। इसलिए चलो चल कर मुण्डकी पहचान तो की जाय।

और सबरूको लेकर मिता अगोरियाकी ओर चल पड़े। मडपमें पहुँचकर उन्होंने मुण्डको उठा लिया और देखकर बोले—यह सिर हमारे शिष्यका नहीं वरन् ऊदल पँवारका है। मेरा शिष्य तो कहीं सोया होगा।

यह सुनते ही धनुपिया दौड़ी हुई कोहबर के दरवाजे पर पहुँची और धक्का देकर दरवाजा खोल और भीतर घुस गयी। देखा—वहाँ पति-पत्नी दोनों ही थे।

लोरिक तत्काल कमरेसे बाहर आया। उसे जीवित देख सँवरूकी प्रसन्नताका वारापार न रहा। उसने दहेजमें मिली चीजोंको बरातियोंमें बाँट दिया और उन्हें अपने घर जानेको कह दिया। बूढ़े काका भी समधियानसे मिले सामानको लेकर घरकी ओर चल पड़े।

अगोरियामें केवल सँवरू और लोरिक, दोनों भाई रुक गये। कुछ दिन बाद सँवरू भी दहेजमें मिले जानवरोंकी व्यवस्था कर गौरा गुजरात चले गये। अन्तमें लोरिककी विदाई हुई।

पालकी ढोने वाले कहारोंने पूछा—किस रास्ते चला जाय?

लोरिकने कहा—यदि हम चुपचाप अपना डोला ले चले, तो राजा मल्यगित अपनी बड़ाई करेगा और कहेगा कि अहीर निर्बल था, इसलिए अगोरिया छोड़ कर भाग गया। तुम लोग डोला अगोरियाके बीच शहरसे, उस रास्तेसे ले चलो, जो उसके दरवाजेसे होकर जाता हो।

कहार उसीके अनुसार चल पड़े।

जब राजा मल्यगितको सूचना मिली कि महराका दामाद डोला लेकर जा रहा है तो उसने अपनी फौजको तैयार होनेका आदेश दिया। फौज किलेसे निकल कर गलीमें पहुँची। एक ओर राजा मल्यगितकी विशाल सेना और दूसरी ओर अकेला लोरिक। लोरिकपर हथियार गिरने लगे। लोरिकने भी अपनी खाँड खींच ली। उसकी चका चौंधसे पल्टन घबड़ा गयी। लोरिक खाँड चलाने लगा और गलीमें खूनकी नदी बह निकली। थोड़ी देरमें मल्यगितकी फौज भाग चली। युद्ध जीतकर लोरिक अपने डोलेके साथ आगे बढ़ा। मल्यगितके मकानके सामने पहुँचकर डोला उसके कोनेमें अटक गया। यह देख कर लोरिकने अपनी खाँड़ चलायी और मकान ढह पड़ा। डोला फिर आगे बढ़ा। पहली ड्योढ़ी पार कर दूसरी ड्योढ़ीपर पहुँचा। वहाँ मल्यगितका रनिवास था। लोरिकने उसे अपनी एँड़ीका धक्का दिया, जिससे मकान हिल उठा और उसके

छाजन नीचे गिर पड़े। इस प्रकार राजाके मकानोंको गिराता हुआ लोरिक जब आगे बढ़ा तो उसने देखा कि एक धिक्कार टँगा हुआ है, जिसमें लिखा था कि चौसापर बिना हमसे लड़े और हमें बिना पराजित किये जाओगे तो मैं यही समझूँगा कि तुम डरकर भाग गये। उसे पढ़कर लोरिकने चौसा पहुँच कर रुकनेका निश्चय किया।

जब महराने देख लिया कि लोरिक और मजरी नगरसे बाहर पहुँच गये, तो वह अपना वचन पूरा करनेके लिए राजाके यहाँ पहुँचा। बोला—बेटीका विवाह कर मेरी जाँघ पवित्र हुई और मेरा वचन भी पूरा हो गया। अब यदि आपमें शक्ति हो तो लोरिकको मार कर सहर्ष मजरीका डोला अपने घर ले आयें।

यह सुनकर मलयगितने पानका बीड़ा रखा और घोषणा कर दी कि जो वीर बीरा चबायेगा, उसे डालभर सोना इनाममें मिलेगा। महराके दामादको मार कर मजरीको गढ़में लानेपर उसे आधा राज्य दिया जायेगा।

यह सुनकर दुबरी पण्डितको लालच हुई और उन्होंने पानका बीड़ा उठाकर खा लिया और बगलमें पोथी-पत्रा दाब कर चौसाकी ओर चले। नगरसे बाहर आते ही लोरिककी नजर उनपर पड़ी और उसने मजरीसे कहा—एक आदमी अगोरियासे आता हुआ जान पड़ता है। जरा देखो तो कौन है।

मंजरीने देखकर कहा—यह तो विवाह कराने वाले पण्डितजी हैं। मालूम होता है जेठजीने उनकी कुछ दान दक्षिणा रोक ली है। हो सकता है और कोई दूसरी ही बात हो। आ रहे हैं तो उनका आदर-सत्कार कीजिये।

जब पण्डितजी निकट आये तो लोरिकने उन्हें प्रणाम किया। पण्डितजीने आशीर्वाद दिया। लोरिकने कन्धेसे चादर उतार कर बिछा दिया और बैठनेके लिए कहा। कुशल क्षेम पूछनेपर दुबरी पण्डितने कहा—घरपर तो सब कुशल है। इस समय मैं तुम्हारी ही कुशल कामनासे आया हूँ। तुम एक स्त्रीके लिए नाहक अपने प्राण दे रहे हो। तुम्हारे विरुद्ध मलयगितने अपनी बेशुमार फौज खड़ी कर रखी है और वह अपने सब नाते-रिश्तेदारोंके पास खबर भेज रहा है। नौगढ़के तोपदारको अपने किलेमें बुलाकर रख छोड़ा है। मेरा कहना मानो, मजरीको छोड़ दो। मैं उसे मलयगितके दरबारमें पहुँचा आऊँ। तुमको उसके दूने वजनके बराबर धन तौल कर दिलवा दूँगा। तुम गौरा वापस जाकर दूसरी शादी कर लेना और उसी स्त्रीको मंजरी समझ लेना।

इतना सुनना था कि लोरिक जलकर अंगार हो उठा। बोला—मलयगित-का मुझे तनिक भी डर नहीं। उसके घरको मैं गिरा आया, उसकी फौज मैंने मार डाली और उसके देखते-देखते अपना डोला चौसाके किनारे तक ले आया। अब तक मैं कभीका गौरा गुजरात जा चुका होता, लेकिन उसका धिक्कार सुनकर रुका हुआ हूँ। मलयगितके गर्वको तोड़कर ही मैं यहाँसे जाऊँगा। राजाके गढ़से जो भी बहू-बेटी हो, उन्हें यहाँ ले आओ और उनके वजनका दूना धन मुझसे लेकर जाओ। मैं

उन्हें अपने साथ ले जाऊँगा। राजाको बहुत सी बहू बेटियाँ मिल जायेंगी। वह किसी को भी अपनी बेटी-बहू समझ लेगा।

इतना कहकर उसने पण्डितजीकी खूब मरम्मत की।

पण्डितजीने लौटकर मल्यगितको अपनी दुर्दशा कह सुनायी। मल्यगितने दुबारा पानका बीडा रखा। इस बार राधा भाटने बीडा उठाया और हाल्का सेना लेकर घर पहुँचा। अपनी पत्नीको चर्खा चलाते देखकर क्षुब्ध हुआ और चर्खेको उठाकर पटक दिया, वह चूर चूर हो गया। बोला—अब क्या चर्खा चलाती हो। अब तो मैं राजाके राज्यमें आधेका हिस्सेदार हूँ। लडके दूध भात खायेंगे। मैं चौरा जा रहा हूँ। महराके दामादको मारकर मजरीको अभी दरबारमें पहुँचाता हूँ।

यह सुनकर उसकी पत्नीने उसे बहुत समझाने बुझानेकी कोशिश की पर उसके मनमें कुछ जमा नहा। जब अगोरियाके बाहर निकला। उसे आते देख मजरीने कहा—राजाका खैरख्वाह है, इससे होशियार रहना।

राधाने पहुँच कर मल्यगितकी बहुत बडाई की और राजाकी बात मान जानेके लिए समझाया। लोरिकने राधाकी भी दुर्गति की और वह भागकर राजाके पास पहुँचा।

राजाने सोच विचार कर फिर पानका बीडा रखा। इस बार सैयद जुल्हाने पानका बीडा उठाया। उसने दो सौ साठ जुलाहोंको एकत्र किया और उनको साथ लेकर चौराकी ओर चला। लोरिकने उन्हें आते ही मार कर भगा दिया।

मल्यगित सोच विचार कर ही रहा था कि नौगढके राजाकी सेना आ पहुँची और तैयार होकर चौराकी ओर चली। उसे देखकर मजरीने लोरिकसे कहा—तुम अकेले हो और राजाकी सेना असंख्य है। उसका सामना न कर सकोगे। इसलिए अच्छा होगा तुम मुझे अकेले छोडकर चले जाओ।

यह सुनकर लोरिक क्रुद्ध हुआ। बोला—अगर यही बात थी। तुम्हें मल्यगितके ही घर रहना पसन्द था तो क्यों गौरा तिलक भेजा और ब्याह क्यों रचाया। मुझे व्यर्थकी परेशानी उठानी पडी। जान पडता है मल्यगितसे तुम्हें प्रेम है।

मजरी बोली—यदि मल्यगितपर मेरा तनिक भी ध्यान हो तो मेरा शरीर जलकर खाक हो जाये। अगर मेरा तनिक भी ध्यान उसके प्रति होता तो आपके प्रति क्यों आकृष्ट होती? तुम्हारे भाई सँवरू गायोंका दहेज पाकर घर भाग गये। उन्हें गायोंसे प्रेम था। तुम्हारे गुरु मिता गदहोंको लेकर घर चले गये। अकेले आप नाहक मेरे पीछे मरेंगे। जिस समय मैं घरसे डोलीमें निकली, उसी समय मैंने अपने आँचलमें विष बाँध लिया था। सोच लिया था कि यदि आप युद्धमें मारे गये तो विष खाकर अपने प्राण तज दूँगी।

यह सुनकर लोरिकने कहा—जरा विष तो दिखाओ, मैंने कभी देखा नहीं है। और विषको लेकर अपनी चुटकीसे मलकर हवामें उडा दिया। यह देख मजरी

अत्यन्त दुखी हुई और बोली—इज्जत बचानेका जो साधन मेरे पास था उसे तो आपने फेंक दिया। अब मैं अपनी इज्जत किस प्रकार बचाऊँगी ?

इतनेमें सेना निकट आ पहुँची। लोरिक भी लगोट कस कर तैयार हो गया। गौराके देवी देवताओं को स्मरण कर उसने म्यानसे खाड़ बाहर निकाल ली। जब सेनाने लोरिकको चारों ओरसे घेर लिया तब लोरिकने सैनिकोंको ललकारा और ललकार कर लगा उन्हें मारने।

लोरिक को लड़ते देख मलयगितसे उसके मन्त्रीने कहा—जब तक यह अहीर लड़ रहा है, तब तक मजरीका डोला यहाँसे उठाकर रनिवासमें ले जाकर बैठा दिया जाय। वह जब वहाँ पहुँच जायेगी तो आपकी हो ही जायेगी। उसके बाद तो यह अहीर शर्मके मारे जा छिपेगा। यह सुनकर मलयगितने मजरीका डोला उठाने का आदेश दिया।

सकट आया देखकर मजरी डोलेसे बाहर निकल आयी। साड़ीको काछकर मूसल उठा लिया और उसीसे लोगोंपर आघात करने लगी। एक ओरसे मजरी फौज पर आघात कर रही थी और दूसरी ओरसे लोरिक। दोनों सेनापर आघात करते करते आमने-सामने आ पहुचे। मजरी मूसल चलाया, लोरिकने उसे खड्गपर रोक लिया। और तब दोनोंने एक दूसरेको पहचाना।

लोरिक बोला—मैं सेनाको अकेले मारनेके लिए पर्याप्त हूँ। तुम क्यों जूझ रही हो ? सेनाको अकेले मार कर ही मैं तुम्हें ले जाऊँगा नहीं तो तुम घर जाकर अपनी बड़ाई करोगी कि पतिके साथ मैं भी लड़ी थी और लड़कर मैंने ही जीत करायी। इस तरहकी बातमें मेरी बदनामी होगी।

इतना कहकर लोरिकने मजरीको अलग कर दिया और फिर जूझने लगा। सवा पहर तक लड़ाई होती रही। अन्तमें सेना मर कर समाप्त हो गयी।

मलयगितने तब अपने भानजे निर्मल परिहारको तत्काल सेना लेकर आनेको कहला भेजा। सूचना मिलते ही निर्मलने छत्तीस हजार सेना तैयार करायी। घर में नयी आयी बहूने उसे रोकनेकी कोशिश की परन्तु उसकी बात अनसुनी कर वह अगोरिया पहुँचा।

तत्काल अपने हाथी करुणाको मदमस्तकर अस्सी मनकी जजीर देकर चौसाकी ओर भेजा। करुणा इन्द्रका हाथी था और उसे उन्होंने अपने भक्त निर्मलको दिया था। उसे आते देख मजरी डोलेसे बाहर निकल पड़ी और एक पैरसे खड़ी होकर कहने लगी—जिस समय मैं इन्द्रपुरीमें थी उस समय मैंने तुम्हारी बहुत सेवा की थी, उस बातका ध्यान रखकर मेरे सिन्दूरकी रक्षा करो। मजरीकी बात सुनते ही हाथी लौट पड़ा। उसे लौटते देख निर्मलने सोचा कि अभी उसे पूरा नशा नहीं हुआ है। अत पुन उसे नशा पिलाकर वापस भेजा। उसे आते देख मजरीने लोरिकसे कहा—मालूम होता है निर्मलने इस बार उसे नशा खिला दिया है, इसलिए वह इस बार मेरी बात नहीं मानेगा। उसका सामना करनेके लिए तैयार हो जाओ।

हाथी जंजीर उठाकर घुमाने लगा। लोरिक उसे बचाकर इधरसे उधर हो जाता। इस तरह बचाव करते करते जब सवा पहर बीत गया। तब हाथीने मौका पाकर लोरिकको अपनी सूँडमें पकड़ लिया और अपने पैरके नीचे दबाकर चीत्कार करने लगा। उसकी चीत्कार सुनकर निर्मलने मल्यागिरसे कहा कि तुम्हारा दुश्मन मारा गया। लेकिन तत्काल देवी लोरिककी सहायताके लिए आ पहुँची। दाबनेके लिए हाथीने जैसे ही पैर उठाया, वैसे ही लोरिक कूदकर दूर जाकर खड़ा हो गया। देवीने खड्ग चलानेका आदेश दिया। लोरिकने खात पुरसा ऊपर कूदकर हाथीकी सूँडपर खड्ग चलायी। हाथी व्याकुल होकर भाग चला।

निर्मलने जब यह देखा तो बोला—यह तो अनहोनी बात हो गयी, और वह क्रुद्ध होकर अपनी सेना लेकर बाहर निकला और अग्निबाण चलाने लगा। लोरिक उनको अपनी खाड़से रोकने लगा। जब निर्मलके सारे अग्निबाण समाप्त हो गये तब उसने घन चलाना शुरू किया। इस प्रकार उसने एक एककर अपने सभी अस्त्र शस्त्र चलाये। जब वे सबके सब समाप्त हो गये तब निर्मल और लोरिक दोनों आपसमें भिड़ गये।

इस प्रकार लड़ते लड़ते जब सवा पहर बीता तब देवी अत्यन्त वृद्धाका रूप धारणकर वहाँ पहुँची और बोली—हमने तो ऐसी लड़ाई नहीं देखी, जिसमें आपसमें गुथकर लड़ते हों। यदि तुम लोगोंके बल हो तो एक दूसरेसे अलग होकर लड़ो।

यह सुन दोनों एक दूसरेको छोड़कर अलग हुए। निर्मल हटा, लोरिक और दूर हटा। जब दोनों ताल देकर लड़नेको तैयार हुए तब देवी लोहेकी खूँटी बनाकर वहाँ डाल गया, जिसमें निर्मलका पैर उलझ गया। लोरिकने तत्काल खाँड़ चलायी, निर्मल जमीनपर गिर गया। निर्मल फिर उठकर खड़ा हुआ तो लोरिकने दूसरा हाथ मारा और निर्मलका सिर कटकर अलग जा गिरा। वह सिर इन्द्रके यहाँ पहुँचा। उसे देखते ही इन्द्रने कहा कि अभी तुम्हारी मृत्यु नहीं है, वापस जाओ। वह सिर पुन लौटकर निर्मलके धड़से जुड़ गया। सिर जुटते ही निर्मलने हथियार उठाया। लोरिकने दुबारा खाड़ चलायी और सिर कटकर फिर इन्द्रके पास पहुँचा। इन्द्रने उसे पुन वापस भेज दिया। इस प्रकार लोरिकने छ बार सिर काटा और हर बार वह इन्द्रके पास गया और लौट आया। जब सातवीं बार आकर सिर धड़से जुड़ा और लोरिकने मारनेको खाड़ उठाया तो देवीने चेतावनी दी कि यदि इस बार उसका सिर इन्द्रके पास पहुँच गया तो अमर हो जायेगा और वह फिर किसी भी उपायसे मारे नहीं मरेगा। इसलिए दायें हाथसे मारो और बाय हाथसे उसे पकड़ लो। तदनुसार लोरिकने दाहिने हाथसे खड्ग चलायी और बायें हाथसे उसका सिर पकड़कर भूमिपर पटक दिया। फिर निर्मलकी रही सही सेनाको भी मार भगाया। फिर वह अपनी पत्नीके डोलेके पास जाकर बैठ गया।

उधर गौरामें लोरिककी माँ खुल्दनने स्वप्न देखा कि बेटेके साथ युद्ध हो रहा है। वह तत्काल गुरु सिताके पास पहुँची और स्वप्नकी सारी बातें कह सुनायीं। सिताने

कहा—तुम निश्चिन्त रहो। लोरिकका कोई कुछ बिगाड नहीं सकता। माताको तो समझा बुझाकर घर भेजा और स्वयं पूरी तैयारीके साथ वह बोहा बथान पहुँचा और सोते हुए सँवरू को जगाया और उसे लेकर अगोरिया चल पडा।

जब दोनों सोनपीके किनारे पहुँचे तो वह खूनकी धारासे भरा हुआ दिखाई पडा। दोनोंने सोनपीको कूदकर पार किया और पूर्व दिशाकी ओर दूरपर उन्हें मजरीके डोलेका पर्दा चमकता हुआ दिखाई पडा। उसे देखकर मिताने सँवरूको दिखाया। तब सँवरूको विश्वास हुआ कि भाई अभी जीवित है।

मिताने कहा—मैं यहींसे बैठे-बैठे लोरिकका पता लगाता हूँ। यदि चौरापर लोरिक होगा तो जो दाव मैं फेंक रहा हूँ, उसे वह रोक लेगा, यदि कोई शत्रु होगा तो मेरा यह दाव वापस लौट आयेगा। इतना कहकर मिताने तितली बाण छोडा।

उस बाणको देखते ही मजरीने लोरिकसे कहा—तुमने इतनी बडी सेनाको परास्त तो कर दिया, परन्तु अब जो यह बाण आरहा है, उससे बचना कठिन है।

यह सुनकर लोरिकने कहा—लडाईके कारण मेरी आँखोंमें खून भरा है, इसलिए पूर्व-पश्चिम कुछ नहीं दिखाई दे रहा है। बताओ किस ओरसे बाण आरहा है और कितना तेज आ रहा है।

मजरीने बताया—बाण पश्चिमसे आ रहा है और धरती आसमानके बीच गरजता हुआ आ रहा है।

लोरिकने कहा—निश्चय ही यह मेरे गुरुका बाण है।

इतनेमें बाण लोरिकके पास आ पहुँचा। लोरिकने उसमें अपनी छाती लगा दी। बाण मिताके प्यारसे लोरिकको चूमने लगा। इस प्रकार बाणको गये जब एक घण्टा बीत गया और वह नहीं लौटा तो मिताने जान लिया कि लोरिक जीवित है। दोनों चौराकी ओर चल पडे। लोरिक मिता और सँवरूको आते देखकर उठ खडा हुआ और उन दोनोंसे गले मिला। मिताने सँवरूसे कहा कि अब यहाँ रहनेका कोई काम नहीं रह गया, वापस चलो। लेकिन सवरूने कहा—जब आये ही हैं तो चलो अगोरिया चलें और वहाँसे गौना और दोंगा[१] दोनो ही रस्म पूरी कराते चलें।

अगोरिया पहुँचकर सँवरूने डोलेको चौकपर रखवा दिया। इन लोगोंको देखकर मलयगित पहले तो बहुत भयभीत हुआ और डरके मारे सिंहासनसे उठ खडा हुआ। फिर सम्हलकर बोला—एक बात मेरी मानो। मैं यह त्रिशूल गडवाता हूँ, जो इसे उखाड लेगा मजरी उसीकी पत्नी होगी। यदि त्रिशूल नहीं उखडा तो मजरी मेरी हो जायेगी। इतना कहकर उसने त्रिशूल गडवा दिया।

सँवरूने लोरिकसे कहा—युद्ध करनेके कारण तुम थक गये होगे इसलिए तुमसे शायद न यह त्रिशूल उखड सके। यदि मजरी राजाकी पत्नी हो जायेगी तो अबतक किया हुआ सारा श्रम व्यर्थ हो जायेगा। कहो तो मैं इसे उखाड दूँ।

---

१ गौनाके पश्चात् वधूको उसरे मैकेसे लानेकी रस्मको "दोंगा" कहते हैं।

लोरिकने उत्तर दिया—मल्लगितने बात फेरकर कही है। यदि तुम उखाड़ोगे तो मजरी तुम्हारी पत्नी हो जायेगी। इस प्रकार उसने सब तरहसे धर्म नष्ट करनेका षड्यन्त्र किया है। मुझे ही त्रिशूल उखाड़ने दो। उखड़ेगा तो उखड़ेगा; नहीं उखड़ा तो मैं मल्लगितको ही मार डालूँगा।

इतना कहकर लोरिकने सात पुरसा उछलकर त्रिशूल उखाड़ लिया। यह देखते ही मल्लगित डरा और भाग निकला। लोरिकने उसका पीछा किया। मल्लगित रनिवासमें घुसा ही था कि लोरिकने अपनी साँग चलायी, वह वहीं ढेर हो गया।

उसके बाद वे लोग महराके घर पहुँचे। दूसरे दिन मजरीको विदा कराके लोग घर लौट आये।

× × ×

जिन दिनों लोरिक अगोरिगढ़में मजरीसे विवाह करने गया हुआ था, उन्हीं दिनों, सहदेवने चन्दाके विवाहकी तैयारी की और शिवहरमें शिवधरके यहाँ तिलक चढ़ा दिया। निश्चित समय पर बारात आयी और विवाह कराकर वापस चली गयी। वे लोग चन्दाको छोड़ गये कि गौनेके समय ले जायेंगे।

शिवधर महावीर था। एक दिन उसने दूध पीकर दोना फेंक दिया। उसी रास्ते शिवजी जा रहे थे। दोनेमें दूधका फेन लगा देखकर उनका मन लुब्ध हो उठा और उनसे रहा न गया। उन्होंने उसे उठाकर चाट लिया। कैलाश जाकर जब वे पार्वतीके साथ रमण करने लगे तो वे परेशान हो उठीं, फिर भी शिवजीको सन्तोष नहीं हुआ।

पार्वतीने इसका कारण पूछा तो शिवजीने अपने दोना चाटनेकी बात कह सुनायी। जब पार्वतीने यह सुना तो सोचने लगीं—जिस पुरुषके जूठे दोनेके चाटनेके कारण मेरे पति इस प्रकार कामातुर हो उठे हैं तो वह जिस स्त्रीका पति होगा, उसकी न जाने क्या गति होती होगी। यह सोचकर पार्वतीने शिवधरको शाप दे दिया, जिससे वह काम-रहित हो गया।

जब शिवधर चन्दाको गौना कराकर अपने घर ले गया तो उसने देखा कि शिवधर कभी घर नहीं आता, उसकी सास ही उसके लिए भोजन बनाकर नित्य बथान में ले जाती है। उसके मनकी उमंगें मनमें ही घुटकर रह जाती थीं। अतः एक दिन उसने स्वयं भोजन ले जानेका निश्चय किया और अपने मनकी बात सासले कही। सासने भोजन ले जानेकी अनुमति सहर्ष दे दी।

वह सम्पूर्ण शृंगार कर भोजन लेकर चली। जब वह बथानके निकट पहुँची तो उसकी नूपुरोंकी झनकारसे गायें बिदुक उठीं। यह देख शिवधरने सोचा कि कोई बनिजारा लादीको लेकर चला आ रहा है, जिसकी घंटी सुनकर गायें भड़क उठी हैं। तभी उसकी दृष्टि चन्दापर पड़ी। उसे देखते ही वह अपनी असमर्थता पर अत्यन्त दुखी हुआ। खिन्न मनसे किसी प्रकार उसने भोजन किया। भोजन कर चुकनेके बाद भी चन्दा शिवधरकी प्रतीक्षामें बैठी रही। किन्तु शिवधरने उससे बात तक नहीं की तब उसने शिवधरको

आकृष्ट करनेके लिए धीरे धीरे अपनेको विवस्त्र करना आरम्भ किया। किन्तु पत्नीको विवस्त्र देखकर भी जब शिवधर विचलित नहीं हुआ तो चन्दाने समझ लिया कि वह नपुंसक है। वह बहुत ही दुखी हुई।

अपने पतिसे बोली—मैं गंगा स्नानकी बात सोचकर यहाँ आयी हूँ। आप चलकर मुझे गंगा स्नान करा लायें। चंदाको प्रसन्न करनेके निमित्त वह उसे लेकर गंगाकी ओर चल पड़ा। गंगाके किनारे पहुँचकर चन्दाने कहा—आप किनारे बैठें मैं स्नान कर लूँ।

यह कह वह गंगामें घुस गयी और घुटने तक पानीमें जाकर गंगाजीसे प्रार्थना करने लगी—मैंने अपने पापके माता पिताको गौरामें तज दिया है। तुम मेरी धर्मकी माता बनकर सूख जाओ तो मैं उस पार चली जाऊँ।

तत्काल सर्वत्र घुटने भर पानी हो गया और चंदा गंगाको पार कर गयी। चंदाको गंगा पार करते देखकर शिवधर अकेला ही अपने बथान लौट आया।

अब चंदा जंगलके करीब पहुँची तो बठवा चमारने उसे देखा। उसने दौड़ कर उसे जा पकड़ा और बोला—बहुत दिनोंसे तुम्हारे सौन्दर्यकी प्रशंसा सुनता आ रहा था। दैवयोगसे आज तुमसे जंगलमें भेंट हो गयी। अब मैं तुमसे विवाह करूँगा।

चंदा बचनेका उपाय सोचने लगी और कुछ सोचकर बोली—जंगलमें आकर तो तुम्हारी पत्नी हो ही गयी। इस समय मुझे जोरोंसे भूख लगी है। पेड़पर पकी हुई पपरी लगी हुई है, मुझे तोड़कर खिलाओ। इतना सुनना था कि बठवा चमारने नीचेसे ही पेड़को पकड़ कर हिला लिया और पपरीके फल नीचे गिर पड़े। बोला—लो, जितना चाहो खाओ।

यह देखकर चंदा बोली—तुम ऐसे वीरकी पत्नी होकर जमीनपर गिरे हुए फल खाऊँ! चढ़कर तुम झोलेमें तोड़े लाओ तब मैं खाऊँगी।

इतना सुनना था कि बठवा हर्षित हो उठा। उसने तत्काल अपनी लाठी चन्दाके हाथमें थमा दी और अपनी चादर नीचे रखकर पेड़पर चढ़ गया। तब चदाने अपने सतका स्मरण कर अनुरोध किया कि पेड़ आकाशसे जा लगे। पेड़ आकाशमें जा लगा। जब चदाने समझ लिया कि बठवाको पेड़परसे उतरनेमें देर लगेगी। तो उसकी लाठी कहीं और चादर कहीं छोड़कर वह भाग चली।

जब वह कुछ दूर निकल गयी तब बठवा की नजर उस पर पड़ी। पहले तो उसने समझा कि चंदा नीचे बैठी है और कोई दूसरी स्त्री आ रही है। वह सोचने लगा कि आज ईश्वर प्रसन्न हुआ है। अब मैं एक को छोड़ कर दो दो ब्याह करूँगा। लेकिन जब उसने नीचे दृष्टि डाली और देखा कि चंदा नहीं है तब वह जल्दी-जल्दी पेड़से उतरने लगा। उतरनेमें उसका शरीर काँटोंसे बिंध गया। उतरनेके बाद, अपनी चीजोंके बटोरनेमें कुछ और समय लगा। तब तक चंदा और आगे बढ़ गयी।

जब चदाने बठवाको पीछा करते हुए आते देखा तो पास ही नेत चरने वाले चरवाहको देखकर बोली—तुम मेरे धर्म के भाई हो। चमार मेरा पीछा कर रहा है। उसे मत बताना कि यहाँसे मैं गयी हूँ।

इस प्रकार रास्तेमें जितने लोग मिले सबसे विनय करती हुई वह आगे बढ़ती गयी और शीघ्र ही वह गौरा अपने महलमें जा पहुँची।

बठवा भी उसका पीछा करता हुआ गाँवमें पहुँचा और गाँवके लोगोंसे कहने लगा—चदासे मेरी शादी करा दो।

लेकिन किसीने उसका उत्तर न दिया। राजा सहदेव भी उसको आते देख बहुत घबराये और महलमें छिप रहे। बाहर न निकले। जब किसीने उसकी बात न सुनी तो उसने गायोंकी हड्डी इकट्ठी की और गाँवके सभी कुओंमें डाल दी। इस प्रकार कुँओंको भ्रष्ट कर उसने सब पनघटको रोक दिया, केवल उस कुएँको अच्छा छोड़ा जिसका पानी मिला और लोरिक भरते थे। इस तरह पानीका अभाव करके बठवाने गाँवके सभी लोगोंको परेशानीमें डाल दिया। उन्हें एक बूँद पानी मिलना कठिन हो गया।

जब बुढिया खुलइन अपने कुएँसे पानी भरकर मकानकी ओर जाती तो गौराके स्त्री पुरुष रास्तेमें उससे माँगकर पानी पीते। इस प्रकार बीचमें ही उसके घड़ेका पानी समाप्त हो जाता। निदान वह दुबारा पानी भरने आती। इस तरह बार-बार पानी भरते भरते जब वह थक गयी तो मजरी पानी भरने आयी। जब वह पानी भरकर गाँवमें घुसी तो लोग पानीके लिए दौड़े। पानी बाँटकर वह दुबारा कुएँ पर आयी। इस बार जब वह पानी भरने लगी तो बठवाने, जो अब तक चुपचाप बैठा था, मजरीसे कहा—तुम मेरे गुरुभाई की पत्नी हो। नाहक शत्रुता मोल ले रही और मेरे काममें विघ्न डाल रही हो।

मजरीने पूछा—तुम्हारे किस काममें विघ्न डाल रही हूँ? मैं तुमसे कौन-सी तकरार कर रही हूँ।

बाठवाने उत्तर दिया—तुम गौरामें मेरा विवाह होना रोक रही हो। गाँवके लोग चदासे मेरा विवाह नहीं कराते, इसलिए सब लोगोंको मैं बिना पानीके मार डालना चाहता हूँ। लेकिन तुम पानी भरकर उनको बाँट रही हो। इस बार पानी ले जा रही हो तो ले जाओ फिर लौटकर मत आना।

यह सुनकर मजरी चुपचाप चली गयी और लोगोंको फिर पानी बाँट दिया। जब वह पुनः कुएँकी ओर लौटी तो बठवा उठ खड़ा हुआ और बोला—मैं तुम्हें पानी भरने नहीं दूँगा। यदि तुम सीधे नहीं मानोगी तो डोरी छीन लूँगा।

इतना सुनना था कि मजरी आग बबूला हो गयी। उसने डोरी कुएँमें फेंक दी और दोनों घड़ोंको कुएँ पर पटक दिया। वह रोती हुई घर पहुँची। खुलइनसे बोली—पतिके रहते मेरा अपमान हुआ है। मैं जहर खाकर मर जाऊँगी। बठवाने

मेरा रास्ता रोका है। यदि मुझे जीवित रखना चाहती हो तो तत्काल फुहियापुर जाकर स्वामीको सूचना दो और उन्हें बुला लाओ।

उसकी बात सुनते ही खुल्दिन पुहियापुर चली। मिता और लोरिक दोनों लड़ रहे थे। माँको आते देख दोनों खड़े हो गये और अखाड़ेके बाहर आये। माँसे कुशल पूछने लगे। माँने सारी स्थिति कह सुनायी। सुनकर लोरिक गुस्सेसे लाल हो गया और गुरू मिताका आशीर्वाद लेकर गौराकी ओर चल पड़ा।

बठवाने उसे देखते ही नमस्कार किया और अपने आनेका उद्देश्य कह सुनाया और कहा कि उसने कुएँको छोड़ रखा है, जिसमें वह और मिता पानी भरते हैं। अन्तमें बोला—तुम और मिता भले ही पानी भरो लेकिन दूसरोंको मैं पानी भरने न दूँगा। यदि तुम मेरे गुरुभाई न होते तो इसमें भी हड्डी डाल देता। अभी मैंने पानी रोका है, पीछे रास्ता भी रोक दूँगा।

यह सुनकर लोरिक बहुत बिगड़ा। बोला—चमार होकर तुम अहीरकी बेटीसे विवाह करना चाहते हो। पहले मुझसे हाथ मिलाओ पीछे चदासे शादी करना।

फिर क्या था। दोनों परस्पर भिड़ गये। लोरिकने बठवाके दोनों पैरोंको पकड़कर ऊपर उठा लिया और इस प्रकार फेंका कि वह दूर जाकर गिरा, फिर वह उसकी छातीपर सवार हो गया और कटार निकाल ली। कटार निकलते देख बठवाने दुहाई दी—तुम मेरे गुरुभाई हो। जीवनभर उपकार मानूँगा, मुझे छोड़ दो।

लोरिकने कहा—यदि मैं तुम्हें यों ही छोड़ देता हूँ। तो तुम जगलमें जाकर सबसे अपनी बड़ाई करते फिरोगे। इसलिए तुम्हें गौरा आनेकी सौगात मिलनी ही चाहिए। और उसने उसका दाहिना आधा हाथ और नाक काट ली।

लोरिकने बठवाको गौरासे भगा दिया, यह सूचना जब सहदेवके महलमें पहुँची तो उसकी खुशीका कोई ठिकाना न रहा। चदाने मन ही मन निश्चय किया कि लोरिकने मेरी इज्जतकी रक्षा की है, मैं अपनी इज्जत उसे ही दूँगी। यदि उन्होंने मुझे अपने साथ रखना स्वीकार नहीं किया तो मैं किसी औरके साथ नहीं जाऊँगी वरन् जहर खाकर मर जाऊँगी। यह निश्चय कर वह लोरिकसे भेंट करनेका उपाय सोचने लगी।

उसने अपने पिताको पत्र लिखा कि मेरी इज्जतकी रक्षा हुई है, इस खुशीमें आप सारे गौरा निवासियोंको दावत दीजिए। उसके पिताको यह बात पसन्द आयी। उसने तत्काल छत्तीसो जातियोंके पास ज्योनारका निमन्त्रण भेज दिया। ज्योनारके दिन जो जिस योग्य था, उसको उसी तरह बाहरसे भीतरतक बैठाया गया। ज्योनारमें लोरिक भी मिता और सँवरूके साथ गया। जब वे तीनों व्यक्ति आँगनमें एक झरोखेके नीचे बैठे तो चदा भी उसी झरोखेमें जा बैठी, जब ज्योनार समाप्त होनेको आयी तो धीरेसे पानकी एक खिल्ली नीचे गिरा दी, जो लोरिकके पत्तलमें जा गिरी।

उसे उठाकर लोरिक ऊपर देखने लगा। चदाको देखते ही वह खाना भूल गया और पानी पीनेके बहाने बार-बार ऊपर देखने लगा।

ज्योनार समाप्त होनेके बाद वह घर आकर अपनी माँसे बोला—सहदेवके घर ज्योनार अच्छी नहीं थी। थोडा चबेना दो। चबेना लेकर वह घरसे बाहर निकला और गाँवके दो चार लडकोंको साथ लेकर जगलमें पहुँचा। लडकोंसे कॅलबुरा कटवाकर एक बरहा (मोटी रस्सी) तैयार करवायी। उसे लेकर वह गाँवमें लौट आया और उसे उसने अपने मित्र शिवचन्द्र कान्दूके घर रख दिया। जब शाम हुई और सब लोग खा-पीकर सो गये तो लोरिक घरसे निकला और अपने मित्रके घरसे बरहा लेकर राजा सहदेवके मकानके पीछे जा पहुँचा। मकानके झरोखेके पास खडे होकर उसने बरहा ऊपर फेंका। उसकी आवाज सुनकर चदा चौंक उठी। उसने खिडकी खोलकर नीचे देखा। लोरिकने बरहा फिर ऊपर फेंका। चदाने उसे पकड लिया। जब लोरिक उसके सहारे ऊपर चढने लगा तब चदाको शरारत सूझी। उसने रस्सी छोड दी, लोरिक नीचे गिर पडा और गाली देने लगा। फिर कुछ रुककर दुबारा रस्सी फेंकी और बोला—यदि इस बार तुमने रस्सी छोडी तो फिर पछताओगी। इस बार चदाने रस्सी लेकर खिडकीमें बाँध दी और उसके सहारे लोरिक ऊपर पहुँच गया। रातभर दोनोंने आनन्द मनाया। सुबह होनेसे पहले ही लोरिक खिडकीसे उतर, रस्सी अपने मित्रके घर रखकर, घर आकर सो रहा। यह क्रम दस-पाँच दिन चलता रहा।

एक दिन चन्दाकी चादरसे लोरिककी चादर बदल गयी। चन्दाकी चादर सिरपर बाँधकर लोरिक घर चला आया। सुबह जब मजरी आँगन बुहारने उठी तो उसकी नजर लोरिकपर पडी और वह ठठाकर हँस पडी। सासको बुलाकर बोली—जरा बाहर जाकर देखो तो। धोबीका दामाद आया है। लोरिकने जब यह सुना तो चादर उठाकर देखा, फिर पीछे हटकर मिताके घर भागा। वहाँ जाकर मिताकी पत्नीसे बोला—आज तो मेरी बेइज्जती होना चाहती है। रातमें चन्दाके घर गया था; वहाँ मेरी चादर बदल गयी। ऐसा उपाय करो जिससे कोई असली बात न जानने पाये। यह सुनकर मिताकी पत्नी खिल उठी। उसने चादरको ले ली। उसको बाकायदे तह कर इस्त्री की और फिर महलकी ओर चल पडी।

रातभर जागनेके कारण चन्दा अलस नींदमें सोयी थी। जब मुनिया दासी उसे जगाने आयी तो उसके पास उसने लोरिककी चादर पडी देखी। उसने चन्दाका मुँह सूखा और शृगार बिखरा हुआ देखकर वह रानीके पास पहुँची और बोली—जान पडता है कि चन्दाकी किसी पुरुषसे भेंट हुई। उसकी स्थिति जो है सो है ही, उसका प्रमाण भी पलगके पास पडा है।

यह सुनकर चन्दाकी माँ उसके पास पहुँची और पूछा—रात कौन आया था।

चन्दाने उत्तर दिया—मैंने अपनी चादर धुलानेके लिए भेजी थी। धोबिन उसे धोकर देरसे दे गयी। मैं रातभर उसे ओढे रही और सुबह तह कर सिरहाने रख दिया। पता नहीं कि चादर किस तरह बदल गयी।

यह बात हो ही रही थी कि बिरजा पहुँची और चिल्लाकर बोली—रात मुझसे भूल हो गयी। मैं दूसरेकी चादर तुम्हें दे गयी। अपनी चादर ले लो। इस प्रकार वह लोरिककी चादर लेकर घर आयी और लोरिकको दे दिया। चन्दाकी बातपर पर्दा पड़ गया और लोरिक उसके पास फिर उसी तरह जाने आने लगा।

इस तरह कुछ दिन बीते। जब चन्दा गर्भवती हो गयी तो सारे गाँवमें इसकी गुपचुप चर्चा होने लगी। तब चन्दाने लोरिकसे कहा कि अब यहाँ रहना कठिन है। जहाँ चार स्त्रियाँ एकत्र होती हैं, वहीं हम दोनोंकी चर्चा शुरू हो जाती है। इस तरह मेरी बदनामी हो रही है, चलो हम दोनों कहीं भाग चलें।

लोरिकने कहा—भादो समाप्त होने दो, कुँवार आनेपर मैं तुमको भगाकर ले जाऊँगा।

चन्दाने उत्तर दिया—यहाँ एक दिन भी ठहरना कठिन है। शामसे सुबह होनेतक जैसे भी हो ले चलो।

लोरिकने तब कहा—रास्तेका कुछ खर्च एकत्र हो जाने दो। माईसे छिपकर कुछ जमा कर लूँ तो ले चलूँगा।

चन्दाने कहा—तुम्हारी बुद्धि मारी गयी है। तुम पचीस पचास एकत्र करोगे। इतनेमें रास्तेका खर्च कैसे चलेगा। खर्चकी चिन्ता तुम मत करो। पिताका घर भरा हुआ है। मैं सोनेकी एक पिटारी चुरा लूँगी तो देशमें १२ वर्षतक दुर्भिक्ष पड़े तब भी हम दोनोंका खाया नहीं चुकेगा।

यह सुनकर लोरिकने पूछा—किस देश चलनेका इरादा है?

चन्दाने कहा—करीब ही बंगालमें हरदी देश है। वहाँका राजा महुवरी जातिका है। उसके यहाँ धन अपार है। उस नगरमें महीचन्द नामक बनजारा रहता है। वहीं मेरा चलनेका इरादा है। वहीं हम लोगोंका गुजारा हो सकता है। वैसे जैसी तुम्हारी मर्जी।

इस प्रकार जब हरदी चलनेकी बात हो गयी तो चन्दाने कहा कि हरदी चल तो रहे हैं, लेकिन इस बातका वादा करो कि तुम महुवरीके राजा और महीपचन्द पर कभी हाथ न उठाओगे।

लोरिकने इसका वचन दे दिया। तदनन्तर दोनोंने पलायनकी योजना बनायी।

लोरिकने कहा—अगर तुम पहले घरसे निकलो तो गौराके मुख्य मार्गसे आगे बढ़ना और रास्तेमें जहाँ-तहाँ सिन्दूरका टीका लगा देना और आगे चलकर पकड़ीके पेड़के नीचे मेरी प्रतीक्षा करना। यदि मैं पहले बाहर निकला तो जहाँ-तहाँ मैं अपनी खाँड़से निशान बना दूँगा। इस प्रकार शुक्रवार या सोमवार चलनेका दिन निश्चित हुआ। लोरिक अपने घर लौट आया।

दूसरे दिन सुबह जब चन्दा शौचके निमित्त बाहर निकली तो रास्तेमें मजरीसे उसकी भेंट हो गयी। मजरीने चन्दासे पूछा—तुम्हें संसारमें दूसरा कोई कुँवारा

आदमी नहीं मिला जो तुम मेरे पीठपर अगार डाल रही हो ? संसारमें न जाने कितने कुँवारे हैं। तिलक चढाकर ब्याह क्यों नहीं कर लेती ? तुम मेरे पतिको भुलाकर मेरी सौत क्यों बन रही हो ? अभी कल तो यह मेरा गौना कराकर लाये और आज तुम सौत बन गयी।

चन्दाका यह सुनना था कि वह मजरीको गालियाँ देने लगी। बोली—अपने पतिको रस्सीमें बाँध क्यों नहीं रखती ?

इतना सुनते ही मजरीने दौड़कर उसका केश पकड़कर खींचा और लगी उसे पीटने। दोनोंको मारपीट करते देख भीड़ जमा हो गयी। लेकिन डरके मारे उन्हें छुड़ानेकी हिम्मत किसीको न हुई। जिस कोयरीका खेत था, वह अपने खेतको सत्यानाश होते देख, भागा हुआ लोरिकके पास पहुँचा। सुनते ही लोरिक दौड़ा हुआ आया। मजरीने लोरिकको देखते ही चन्दाको छोड़ दिया और घर चली आयी।

लोरिक उसके पीछे-पीछे घर पहुँचा और मजरीसे बोला—दूसरेकी बेटीका इस प्रकार उपहास क्यों करती हो ? बात क्या हुई, जो इस प्रकार तुमने चन्दाका अपमान किया ?

यह सुनकर मजरी बोली—तुम अपने मनकी बात सच-सच कहो। चन्दा मुझसे किस बातमें अधिक है ? बलमें, बुद्धिमें, रूपमें ? किस कारण तुम उसपर मोहित हो गये हो ? यदि तुमको उसपर ही लुभाना था तो मुझसे विवाह ही क्यों किया ? उसीसे ब्याह कर लेते।

लोरिकने हँसकर कहा—सब लोग खेती करते हैं यह तो तुम जानती हो। अपने खेतमें अच्छा अनाज होते हुए भी लोग दूसरेके खेतसे कचरी उखाड़कर खाते हैं। बस, यही तुम समझ लो। उसके साथ तो दस दिनका आमोद प्रमोद है। तुम तो जीवन भरके लिए हो।

इतना कहकर लोरिक चला गया। धीरे धीरे सोमवारका दिन आया। शामको मजरी जब सबको खिला पिला चुकी तब उसने अपनी सासरो कहा—आज जरा होशियार रहना। घरमें आज चोरी होनेवाली है। चन्दाको लेकर स्वामी दूरदी भागने का इरादा कर रहे हैं।

यह सुनकर वृद्धखुल्हनने कहा—मेरे हाथमें लबदा (मोटा डंडा) दे दो और दरवाजेपर खाट बिछा दो। दरवाजेको बन्दकर यहीं सोऊँगी। जैसे ही चन्दाकी आवाज सुनायी देगी, वैसे ही यह लबदा दे मारूँगी। उसका सिर फूट जायेगा।

मजरी अपने कमरेमें आयी और लोरिकको भोजन कराकर बाहरका दरवाजा बन्द कर दिया। फिर लोरिकसे कहा—प्रतिदिन आप बाहर जाते हैं। आज यहीं रह जायें। इतना कहकर वह सोनेका प्रबन्ध करने लगी। लोरिक रुक गया और उसने मंजरीके साथ बातें करके जागते ही रात बिता दी। इधर चन्दा अपने पिताके भण्डारसे सोनेकी पिटारी उठाकर बाहर निकली। रास्तेमें जहाँ-तहाँ सिन्दूरका टीका लगाती गयी और पकड़ीके पेड़के नीचे पहुँचकर लोरिककी प्रतीक्षा करने लगी। जब आधी

रात बीती और लोरिक न आता दिखाई पडा तो उसने रोकर शारदा का स्मरण किया और कहा कि यदि हम सानन्द हरदी पहुँच जायगे तो मैं तुम्हारी पूजा करूँगी और जो पहला बालक होगा, उसकी बलि मैं तुम्हें दूँगी।

इतना सुनते ही देवी चन्दाकी सहायताके लिए आ गयी और बोली--तुम चुपचाप यहीं बैठो मैं लोरिकको लाने जाती हूँ।

वे लोरिकके मकान पहुँचीं। वहाँ उन्होंने मजरीकी करामात देखी। देखकर सोचने लगी कि उसने तो बडा प्रपच रच रखा है। यदि मैं उसके सामने पडी तो वह मुझे शाप दे देगी। फलतः वे निद्रा देवीको बुलाकर ले आयीं। निद्रा देवी मजरी के सिरपर सवार हो गयीं। तब मजरीने लोरिकको शपथ देकर कहा कि जानेसे पहले मुझे जगा देना, मैं भी तुम्हारे साथ हरदी चलूँगी। यह कहकर वह सो गयी।

तब देवीने लोरिकको जगाया और कहा कि चन्दा पेडके नीचे बैठकर रो रही है। इतना सुनते ही लोरिक उठकर तैयार हो गया और कपडे पहनकर धीरेसे पीछेका दरवाजा खोलकर बाहर निकला। वहीं से अपनी पत्नीको पुकार कर उसने कहा--तुमने जो शपथ दिया था, उसकी मैं याद दिला रहा हूँ। मैं हरदी जा रहा हूँ, चलना हो तो चलो। पीछे दोष मत देना।

इतना कहकर वह चल पडा और वहाँ पहुँचा जहाँ चन्दा बैठी थी। लोरिक को देखकर चन्दा उलाहना देने लगी--यदि तुमको अपनी ब्याही पत्नी ही प्यारी थी तो मुझे घरसे बाहर क्यों निकाला? रात बीतनेवाली है। गौरामें की गयी चोरी गौरामें ही पकडी जायगी।

लोरिकने बात अनसुनी कर कहा--तुम अभी चुपचाप बैठो। मैं अपने गुरुसे भेंट करके आता हूँ।

चन्दाने कहा--तुम तो गुरुसे भेंट करने जा रहे हो। पर यह तो बताओ सुबह मैं अपना मुँह कैसे दिखाऊँगी? सब लोग यहाँ मेरा उपहास करेंगे।

चाहे जो हो, जब तक मैं गुरुसे भेंट नहीं कर लेता नहीं जाता। यह कहकर लोरिक चल पडा। मिताके घर पहुँचकर दरवाजा खटखटाया। मिताने दरवाजा खोला। लोरिकने तब मिताको बाँहमें समेटते हुए कहा--मैंने एक बहुत बडा अनुचित कार्य किया है। चन्दाको भगाकर हरदीबाजार ले जा रहा हूँ। आपसे भेंट करनेके लिए ही आया हूँ।

मिताने कहा--इसमें कोई बुराई नहीं हुई है। तुम चन्दाको लेकर गौरामें ही रहो। जैसे भी होगा, वैसे मैं सहदेवको मना लूँगा। नहीं मानेगा तो मैं उससे ललकार कर युद्ध करूँगा और हम दोनों मिलकर उसे मार डालेंगे।

लोरिकने उत्तर दिया--जिसके घरसे मैंने बेटी निकाली है, उनसे मैं प्रत्यक्ष कैसे युद्ध करूँगा। दस-पाँच दिनमें सहदेवका गुस्सा अपने आप शान्त हो जायेगा। तब मैं वापस आ जाऊँगा।

यह सुनकर मिताने आशीर्वाद दिया। लोरिक लौटकर चन्दाके पास आया

ओर दोनों चल पड़े। चलते-चलते जब वे बोहाके पास पहुँचे तब लोरिकने कहा—जरा माईसे भी मिलता चलूँ?

चन्दाने कहा—तुम माईसे मिलने जाओगे तो वे तुम्हें जाने न देंगे। उनकी बात छोड़ो।

लोरिक बोला—यदि तुम्हें चलना है तो मेरे साथ सीधे चलो। नहीं तो अपने पिताके घर लौट जाओ।

निदान चन्दा लोरिकके पीछे-पीछे चली। इतनेमें पौ फटी और सँवरू जागा। जब उसे चन्दाके नूपुरोंकी ध्वनि सुनाई दी तब उसने नन्हुआ चरवाहेसे कहा—जरा देख तो कौन बनिया बैल लादे आ रहा है, जिसकी घंटी और घुँघरूकी झंकार सुनाई दे रही है।

बाहर जाकर नन्हुआने देखा पर उसे कोई दिखाई नहीं दिया। इतनेमें उसकी नजर लोरिकपर पड़ी और उसके पीछे चन्दा आती दिखाई पड़ी।

यह देखकर वह लौटा और सँवरूसे बोला—गौरामें कुशल नहीं जान पड़ती है। लोरिक चन्दाको भगाकर ला रहे हैं। उसीके ये नूपुर बज रहे हैं।

इतनेमें लोरिक स्वयं आ पहुँचा और सँवरूको अपने बाहोंमें कस लिया और फिर बोला—मैंने बहुत बड़ी बुराई की है। चन्दाको भगाकर मैं हरदी बाजार जा रहा हूँ।

इतना सुनकर सँवरूने कहा—तुम्हें कहीं जानेकी आवश्यकता नहीं। तुम यहीं रहो, मैं गौरामें रहूँगा।

लोरिकने कहा—आप मुझे केवल आशीर्वाद दें ताकि कुशलतापूर्वक हरदी बाजार जाऊँ। वहाँ सिर्फ दस दिन रहूँगा।

इतना सुनकर सँवरूने उसे आशीर्वाद दिया और लोरिक चन्दाके साथ हरदी बाजारकी ओर चल पड़ा।

रात समाप्त हुई और सुबह जब मजरीकी नींद टूटी और उसे अपना पति दिखाई नहीं पड़ा तो वह रोने लगी। इस प्रकार लोरिकके भाग जानेका समाचार सारे परिवारमें फैल गया। मदागिनने आकर समझाया—तुम घबड़ाओ मत। मैं अपने पतिके पास बोहा खबर भेजती हूँ। वह लोरिकको तुरत पकड़ मँगावेंगे। वह चन्दाके साथ हरदी नहीं जाने पायेगा और काकाको बोहा भेजा।

काका जब सँवरूके पास पहुँचे तो उनकी बात सुनकर सँवरूने बताया कि जाते समय वह मुझसे मिलकर और सारी बात बता कर गया है। दस दिनमें वह लौटकर आ जायेगा।

काकाने लौटकर सबको शान्त किया और धीरज बँधाया।

सहदेवके महलमें जब चन्दा गायब हो जानेकी खबर फैली तो वे अपनी बदनामीके भयसे चिंतित हो उठे। लेकिन क्या करते।

चलते-चलते चन्दा और लोरिकने चलकर पहुँचकर नदी पार किया और

बिहिया पहुँचे। उस समय पहर भर रात बीत चुकी थी। अत वे एक पकड़ीके सूखे पेड़के नीचे रुक गये। लोरिकने कहा—चलते चलते मैं थक गया हूँ जरा मैं सो लूँ।

इतना कहकर वह वहीं चादर तानकर सो गया। सोते ही उसे गहरी नींद आ गयी। चन्दा भी वहीं पासमें लेट रही और उसे भी नींद आ गयी। उस पकड़ीके पेड़के पास एक साँप रहता था। वह साँप अपनी बिलसे निकला और निकलकर उसने चन्दाको काट खाया। जब सुबह हुई और लोरिककी नींद टूटी तो वह उठा और चन्दाको जगाने लगा। लेकिन जब वह नहीं जगी तो उसने ध्यानसे देखा और पाया कि वह तो मर गयी है। वह रोने लगा। चन्दाके वियोगमें वह पागल हो उठा और खीझकर सूखी हुई पकड़ीके पेड़के चारों ओर घूम घूमकर उसे काटने लगा। आने जाने वाले लोगोंको उसकी यह अवस्था देखकर कौतूहल हुआ। वे उसके चारों ओर एकत्र हो गये और उससे इसका कारण पूछने लगे। लोरिक रो रोकर अपनी सारी बात कह सुनायी और कहा—इस लकड़ीकी चिता बनाऊँगा और अपनी पत्नीके साथ सती हो जाऊँगा।

यह सुनकर लोग हँसने लगे। बोले—पागल हुए हो। स्त्रीको तो पुरुषके साथ सती होते देखा है, लेकिन स्त्रीके साथ किसी पुरुषके सती होनेकी बात नहीं सुनी गयी। पेड़ पर एक साँप रहता है, उसीने उसको काट लिया होगा। नगरमें बहुतसे गुनी हैं सो तुम जाकर पुकार करो। किसी गुनीके कानमें आवाज पहुँचेगी तो वह साँप काटनेकी बात सुनकर दौड़ा आयेगा।

लोरिकने नगरमें जाकर पुकार की। उसकी बात सुनकर गुनी लोग एकत्र हुए। उन्होंने दूध मँगाकर नादमें भरवा दिया और मन्त्र पढ़कर चित्ती कौड़ी फेंकी। चित्ती कौड़ी जाकर साँपके माथेमें चिपक गयी। साँप गुस्सेमें भरा पकड़ीसे निकलकर चन्दाके पास आया। उसे देखते ही लोरिक खड्ग लेकर मारने दौड़ा तो साँप बिलमें फिर घुस गया। गुनी लोगोंके तरह तरहके उपाय करने पर भी जब वह न निकला तब उन्होंने लोरिकसे कहा कि तुम्हारे डरसे साँप नहीं निकल रहा है। जब तक तुम यहाँ रहोगे, साँप यहाँ नहीं आयेगा।

समझा बुझाकर उन्होंने उसे वहाँसे हटाया तब साँप बिलसे निकलकर चन्दाके पास गया और अँगूठेसे सारा विष खींच लिया और विषको दूधमें छोड़कर पकड़ीके पेड़में समा गया। चन्दा जमुहाई लेती हुई उठ खड़ी हुई। लोरिकने गुनियोंके प्रति कृतज्ञता प्रकट की। लोरिक जब आगे चलनेको उद्यत हुआ तो चन्दाने कहा—इस बिहिया बाजारका राजा रणपाल है। उसने रणदेनिया नामक एक दुसाध रख छोड़ा है, जो राह चलतोंसे छेड़कर रार मोल लेता है। इसलिए शहरका रास्ता छोड़कर बगलके रास्ते चलो।

यह सुनकर लोरिक बोला—तुमने दुसाध रणदेनिया और राजा रणपालकी

बडी तारीफ की। अब तो हम विहिया बाजारके बीचसे ही चलेंगे। और गली-गली घूमेंगे और राजाकी करतूत देखेंगे।

चन्दाने समझाया—मेरा कहना मानो। यहाँसे लौट चलो। झगडा हो जायेगा तो जो कुछ पैसा पासमें है, वह सब लुट जायेगा और रास्तेका खर्च भी नहीं बचेगा।

लोरिकने उत्तर दिया—मेरे वंशकी परम्परा ऐसी नहीं है। अगर हम किसी बलीकी बात सुन लेते हैं तो उसके पास जाते हैं और दुर्बलकी बात होती है तो हम खुद कतरा जाते हैं।

लोरिकके हठको समझ कर चन्दा बोली—अगर तुम नहीं मानते हो तो देखो तमाशा। मैं आगे आगे चलती हूँ तुम जरा पीछे रुककर आना।

चन्दा चली। उसके नूपुरोंकी झंकार सुनकर रणदेनियाने उसकी ओर देखा और आकर रास्ता रोक दिया। बोला—विहियाकी कौडी (कर) देकर जाओ।

चन्दाने कहा—मैंने कोई गाडी नहीं लादी है। कौडी दूँ तो किस बातकी?

रणदेनिया बोला—विहियामें तुम्हारे नूपुर बजते हुए जा रहे हैं। सो तुम्हें इनके बजनेकी कौडी देनी होगी।

इतना सुनकर चन्दाने पैरोंसे नूपुरोंको उतार कर आँचलमें बाँध लिया। बोली—लो अब तुम्हारे विहियामें नूपुर नहीं बजते। और कहकर वह आगे बढी।

रणदेनिया फिर मार्ग रोककर खडा हो गया और तरह-तरहकी बातें करनेके बाद उसने चन्दासे विवाह करनेका प्रस्ताव किया। उसकी बातें सुनकर चन्दाने उसे गालियाँ सुनायीं। गालियाँ सुनकर रणदेनिया क्रुद्ध हो गया और चन्दाकी ओर लपका। तब चन्दाने पीछे मुडकर देखा और लोरिकको इशारा किया। इशारा पाते ही लोरिक चन्दाके पास जा पहुँचा। उसने अपनी खाँड बाहर निकाल ली और वह रणदेनियाको मारने बढा। चन्दाने रोका और कहा कि इसकी दुर्गति करके ही छोड देना ठीक होगा। तदनुसार लोरिकने पास ही लगे श्रीफल (बेल) के पेडसे फल तोडे और रणदेनियाके लम्बे लम्बे बालोंमें गूँथ दिये और फिर उसे घुमाना शुरू किया। फलतः बेल के फल झूल झूलकर उसके मुँहपर चोट करने लगे। जब लोरिकने देख लिया कि उसकी पूरी मरम्मत हो चुकी तो उसे छोड दिया।

रणदेनिया भागा हुआ राजाके पास पहुँचा और अपनी दुर्दशाका हाल कह सुनाया। उसकी बात सुनते ही राजाने अपनी सेनाको लोरिकको घेर लेनेका आदेश दिया। लोरिकने जब रणभेरी सुनी तो चन्दाको एक बनियेकी दूकानपर बैठाकर आप सेनासे जूझनेके लिए आगे बैठा। देखते-देखते उसने सारी सेनाको काट गिराया। सेनाका विनाश देखकर राजा अपने हाथी पर भाग चला। लोरिकने दौडाकर उसे पकड लिया और रस्सीसे बाँध दिया। राजा हाथ जोड कर प्राणदान माँगने लगा। तब लोरिकने कर उठानेका वचन देने पर उसे छोडा और चन्दाको लेकर आगे बढा।

आगे चलनेपर चन्दाने कहा—सडकवा रास्ता छोड़कर खेतोंके रास्ते चलो। आगे सारगपुर गाँव है, वहाँ महीपति नामक जुआरी रहता है, जिसके साथ तीन सौ साठ और जुआरी हैं। अगर उस रास्ते चलोगे तो वह तुम्हारा सारा धन जीत लेगा फिर हमारे पास रास्तेके खर्चेका अभाव हो जायेगा।

चन्दाकी बात सुनकर लोरिकने कहा—तुमने महीपति जुआरीका बखान किया। अब तो मैं जरूर उसका करतब देखूँगा।

और वह महीपति जुआरीके घरके पास पहुँचा। जुआरियोंने उसे देखते ही घेर लिया और बोले—इस रास्ते जो भी जाता है, उसे एक दांव जुआ खेलना पड़ता है। अत जुआ खेलकर ही आगे जा सकते हो।

इतना सुनना था कि लोरिकने चन्दाको तो एक पेड़के नीचे बैठा दिया और स्वय महीपतिके सग जुआ खेलने बैठ गया। खेलते खेलते लोरिक अपना सारा धन, वस्त्र, हथियार, सब कुछ हार गया। अतमें उसने चन्दाको ही दावपर लगा दिया और उसे भी हार गया। तब महीपतिने पासेको एक ओर रखकर लोरिकसे कहा—अब मुँह क्या देखते हो। अपने रास्ते जाओ। और अपने आदमियोंसे कहा कि चन्दाको महलमें पहुँचा दो।

जब महीपतिके आदमी चन्दाके पास पहुँचे और उससे लोरिकके हार जानेकी बात कही तो वह महीपतिके पास जाकर बोली—अभी एक दाव खेलनेके उपयुक्त मेरे गहने बचे हुए हैं। अत तुम पहले मेरे साथ एक दाव खेलो। वह खेलने बैठ गयी। खेलते-खेलते उसने लोरिककी हारी हुई सभी चीज जीत ली और फिर महीपतिका सब कुछ जीतकर सारगपुर गाव भी जीत लिया। फिर लोरिकसे बोली—तुम्हारी इजत बच गयी। अब तत्काल हरदीके लिए चल दो। दोनों चल पड़े।

उन्हें जाते देख महीपतिने अपने जुआरियोंको ललकारा कि जीती हुई स्त्री लिये जा रहा है। उसे मारकर छीन लो। यह सुनना था कि जुआरी लोरिकपर टूट पड़े। लोरिक भी उनसे गुथ गया और थोडी देरमें उन्हें मारकर समाप्त कर दिया। जुआड़ियोंको मारकर लोरिक चन्दाको लेकर आगे बढा।

चन्दाने आगे आनेवाले गाव कतलपुरको कतराकर दूसरे रास्ते चलनेको कहा पर लोरिकने उसकी बातपर ध्यान नहीं दिया और चलता ही गया। जिस समय वे दोनों कतलपुरके निकट तालाबपर पहुँचे, वे प्याससे व्याकुल हो रहे थे। वे तालाबमें घुसकर पानी पीने लगे।

इतनेमें तालाबके पहरेदारोंने उन्हें देखा और तालाबको जूठा करनेके कारण उन्हें गाली देने लगे। गाली सुनकर लोरिकको गुस्सा आया और वह पहरेदारोंको मारने लगा। पहरेदार भागकर राजाके पास पहुँचे। राजाने लोरिकको परास्त करनेके लिए सेना भेजी। मगर लोरिकने सेनाको ही परास्त कर दिया। राजाने भागकर अपने गढ़में शरण ली।

लोरिक अपने रास्ते चल पड़ा और हरदी पहुँचकर महीचन्दका पता लगाया। महीचन्दने उन दोनोंका बड़े प्रेमसे बेटी दामादकी तरह स्वागत किया।

चन्दाने लोरिकको दो अशर्फी देकर कहा कि रास्तेमें तुम्हें बहुत जूझना पड़ा, बहुत थक गये हो। जाकर शराब पी आओ, सारी थकान मिट जायेगी। तब तक मैं भोजन तैयार करती हूँ।

लोरिक अशर्फियाँ लेकर निकला। भट्ठियोंमें जाकर शराबका नमूना चखने लगा। पर उसे अपने मनके अनुकूल कहीं शराब न मिली। अतमें जमुनी कल्वारिनके भट्ठीपर पहुँचा। जमुनी लोरिकको देखते ही उसके रूपपर मोहित हो गयी और उसके लिए विशेष रूपसे शराब तैयारकर चखनेको दिया। उसे चखते ही लोरिक प्रसन्न हो उठा। देखते देखते वह बारह बोतल शराब पी गया। तब उसने जमुनीपर दृष्टि डाली। दोनोंकी आखे चार हुई और वह वहीं जमुनीके सग सो रहा।

आधी रातको यकायक लोरिकके कानमें ताल ठोकनेकी आवाज सुनाई पड़ी। सुनकर उसने जमुनीसे उसके सम्बन्धमें पूछा। पहले तो जमुनीने बात टालनेकी चेष्टा की। पर जब लोरिक न माना तो उसने बताया कि हरदीमें एक बुढ़िया रहती है। उसके एक लड़का है। एक दिन जब राजा महुअरी अपने हाथीपर बाजारमें घूम रहे थे तो उस लड़केने उनके हाथीकी पूँछ पकड़ ली और पीछेकी ओर खींचने लगा। पीलवान कितना भी अकुश लगाता, हाथी पीछे ही हटता जाता। यह देखकर राजाने उस लड़केको अपने हाथीपर चढ़ा लिया और उसका नाम गजभीमल रखा। उन्होंने उसके लिए खाने पीनेकी पूरी व्यवस्था कर दी है और मासिक वेतन निश्चित कर दिया है। उसे उन्होंने गेड़ुआपुर अखाड़ेका सरदार बनाकर भेज दिया है। वहाँ वह सोलह सौ पहलवानोंको सिखाता है। उसीने गेड़ुआपुर अखाड़ेमें सलामी दी है, उसीकी यह आवाज थी।

यह सुनकर लोरिक बोला—यह भीमल कैसा वीर है, जिसकी हरदीमें प्रशसा होती है। जिस समय मैं अगोरियामें विवाह करने गया था, उस समय मैंने तीन सौ साठ हाथियोंकी सूँड़ फाट डाली, मगर किसीने मेरा नाम नहीं बदला। मुझे लोग बाप माके रखे नामसे लोरिक ही पुकारते रहे। और इसने हाथीकी पूँछ पकड़कर घसीट भर लिया तो उसका नाम 'गज भीमल' हो गया।

सुबह हुई तो लोरिक महीचन्दके घर लौटा। चन्दा लोरिकको देखते ही हतप्रभ हो गयी—मजरीके सिंदूरकी उपेक्षा कर, भुलावेमें डालकर मैं इन्हें यहाँ ले आयी और यहाँ आते ही हरदीमें मेरी कौन सौत पैदा हो गयी। यह सोचते हुए उसने लोरिकका स्वागत किया। लोरिक मुँह हाथ धोकर जलपान कर सो रहा।

नगरमें जिस किसीने भी लोरिकको देखा, वह सशक हो उठा। लोग जाकर राजा महुअरके कान भरने लगे कि महीचन्दने किसी शत्रुको अपने घरमें लाकर रख छोड़ा है। राजाने तत्काल महीचन्दके पास टिके परदेसीको बुला लानेके लिए सिपाही भेजे। सिपाहियोंने जाकर यह बात महीचन्दसे कही। लोरिकने जब यह बात सुनी तो

वह तत्काल चलनेको तैयार हो गया। जब जाने लगा तो चन्दाने कहा—राजा जातिका तेली है, उसको कभी सलाम मत करना, और भूलकर भी उसके बायें मत बैठना। यदि इनमेंसे एक बात भी भूले तो तुम्हारे सात पुरखे नरकमें पड़ेंगे।

तदनुसार लोरिक जाकर राजाके दरबारमें चुपचाप खड़ा हो गया और फिर आसन उठाकर राजाके दाहिने जा बैठा। यह देखकर दरबारके सभी लोग सन्न हो गये। वे सब आपसमें कानाफूसी करने लगे कि इसने सारे दरबारका घोर अपमान किया। मगर किसीको खुलकर कुछ कहनेका साहस न हुआ। अन्तमें मन्त्रीने लोरिकसे गाँव घर पूछा। लोरिकने अपने गाँव घरका पता बताते हुए कहा—वहाँ दुर्भिक्ष पड़ा है। इसलिए यह सुनकर कि हरदीका राजा बड़ा धर्मात्मा है, वहाँ कोई भूखों नहीं मरता, जो भी आदमी हरदीमें आता है, उसके उपयुक्त वह काम दिया करता है, मैं यहाँ आया हूँ।

राजाने यह सुना तो मन्त्रीको लोरिकने उपयुक्त काम देनेका आदेश दिया। मन्त्रीने कहा—इसके उपयुक्त तो यहाँ काफी काम है। यहाँ छत्तीस वर्णके लोग रहते हैं। सभीके घर गाय भैंसे हैं। उनकी चरवाही यह कर ले। नगरके दक्षिण जो परती भूमि पड़ी है, उसीमें यह अपना छप्पर डाल ले और भैंसोंके लिए स्थान बना ले। कोई इसे सत्तू और कोई आटा दे देगा। बस इसका दोनों वक्तका गुजारा हो जायेगा। प्रति वर्ष गोवर्धनकी पूजा होती है। उस अवसरपर कोई गमछा और कोई पुरानी धोती दे देगा। उन्हें जोड़ जाड़कर यह अपने पहनने लायक कपड़ा बना लिया करे।

यह सुनकर लोरिकको हँसी आ गयी। रुमालसे हँसी रोककर गम्भीरताके साथ बोला—मन्त्रीजी, आपने सोच समझकर ही मेरे उपयुक्त काम निश्चित किया है। किन्तु मेरी पत्नी धूप और हवा लगने मात्रसे कुम्हला जाती है। अतः आप अपनी बेटी या बहिनको सुबह शाम भेज दिया करें, वह आकर गायोंको दुहा लिया करे। लेकिन अगर किसी भी गायका दूध बछड़ा पी गया तो मैं उसे मारे बिना न रहूँगा। अगर यह बात मंजूर हो तो आजसे ही मैं हरदीकी चरवाहीका भार उठाता हूँ। इतना कहकर लोरिक उठ खड़ा हुआ और चला आया।

लोरिकके चले जानेपर राजा मन्त्रीपर बहुत बिगड़े—तुम्हारी वजहसे हम सबको गाली सुननी पड़ी। उसके बगलमें रखे हथियारकी ओर ध्यान न देकर तुम उसकी जातिपर गये। उसे हम अपना ड्योढ़ीदार बनाकर रखते। जब कभी समर आ पड़ता, उस समय वह हमारे काम आता। खैर, उसे बुलाकर तुम गेडुआपुर भेज दो, वहाँ वह गजभीमलके साथ अखाड़ेमें खेला करेगा।

दूसरे दिन लोरिक स्वयं भीमलके अखाड़ेकी ओर चल पड़ा। रास्तेमें नदी पड़ी तो उसे उछलकर कूद कर पार किया। अखाड़ेपर पहुँच कर उसने अपनी खाँड़ अखाड़ेके बाहर ही रख दी और भीतर जाकर अखाड़ेमें खेलनेकी इच्छा प्रकट की।

भीमलके शिष्य रजईने कहा—पहले गुरु पूजाकी व्यवस्था करो तब पीछे खेलना।

लोरिकने कहा—उसकी व्यवस्था मैं कल कर दूँगा। आज खेल लेने दो।

यह सुनकर भीमलने रजईसे कहा—न जाने कहाँका मूर्ख आकर मजाक कर रहा है। उसे धक्का देकर निकाल बाहर करो।

यह सुनकर रजई लोरिकके पास आया और उससे भिड गया। पर वह लोरिकका कुछ न बिगाड सका। तब दूसरे अखाडिये भी आ जुटे पर लोरिकने सबको झटक दिया। अन्तमें भीमल स्वयं लोरिकसे आ भिडा। उसे भी लोरिकने देखते-देखते परास्त कर दिया। यह देखकर जो लोग वहाँ थे, वे भागकर हरदी पहुँचे और जाकर सारा हाल राजासे कहा।

राजाने यह सुनकर अपनी सारा सेनाको तत्काल तैयार होनेका आदेश दिया। जब चन्दाने राजाको सेना लेकर जाते देखा तो स्वयं भी अपनी सखियोंके साथ नदी के किनारे पहुँची और राजाको न मारनेका जो वचन लोरिकने दिया था, उसे दिखा कर फौज वापस ले जानेको प्रेरित किया और साथ ही लोरिकके क्रोधको भी शान्त किया।

उस समय तो राजा वापस लौट आया। मगर लोरिकका हरदीमें रहना अपने लिए खतरेसे खाली न देख मन्त्रीसे कोई ऐसा उपाय करनेको कहा जिससे यह शत्रु सहज ही टल जाय।

यह सुनकर मन्त्रीने कहा—इसका सीधा उपाय है। हर साल नेउरपुरका हरेवा दुसाध हरदी आता है और छ. मासकी एकत्र की गयी सामग्री एक ही दिनमें समाप्त कर देता है और उससे सारे हरदीवासी परेशान हो उठते हैं। अत इसे उसीके पास भेज देना चाहिए। उससे कहा जाय कि हरेवाने नेउरपुरमें ज्येष्ठ राजकुमारको बन्दी कर रखा है। उसे छुडा लाओ।

इस योजनाके अनुसार लोरिकसे नेउरपुर जानेको कहा गया। लोरिक घोड़ेपर सवार होकर नेउरपुर पहुँचा। आगेकी कथा उपलब्ध न हो सकी।

जे० डी० बेगलरने अपने १८७२ १८७३ ई० के पुरातत्वान्वेषण यात्राके विवरणमें बडागाँव (जिला शाहाबाद, बिहार) के प्रसगमें लोरिक-चन्दाकी कथा सक्षिप्त रूपमें दी है।[1] उसमें आरम्भिक कथाओं यथा—लोरिकका जन्म, मजरीके विवाह आदिकी चर्चा नहीं है। उन्होंने केवल लोरिक चन्दाके प्रेमकी कथा दी है। उसमें नेउरपुरवाली कथा भी नहीं है, फिर भी उससे कथाके अन्तका कुछ आभास मिलता है। बेगलरवाले रूपको डब्ल्यू० क्रूकने अपनी पुस्तक पापुलर रेलिजन एण्ड फोक-लोर आव नर्दर्न इण्डियामें[2] और वेरियर एलविनने फोकलोर आफ छत्तीसगढ़-में[3] लगभग अविकल रूपमें उद्धृत किया है। यहींसे वह हिन्दीके कतिपय ग्रन्थोंमें भी उद्धृत हुई है। उनके अनुसार कथा इस प्रकार है :—

१. आर्कोलाजिकल सर्वे रिपोर्ट, १८७२ ७३, खण्ड ८, पृ० ७९-८०।

२. खण्ड २, पृ० १६०-१६१।

३ पृ० ३३८।

किसी समय शिवधर नामक एक व्यक्ति रहता था, जिसे पार्वतीने नपुंसक हो जानेका शाप दे दिया था। शाप देनेके कारणको बेगलरने बताना उचित न समझकर नहीं दिया है। पार्वतीका शाप पानेसे पूर्व बचपनमें ही उसका विवाह हो गया था। यथा समय जब उसकी पत्नी चन्दैन युवती हुई तो उसका गौना हुआ और शिवधर अपनी पत्नीको अपने घर लिवा लाया। शिवधरके नपुंसकत्वके कारण उसकी पत्नी उससे असन्तुष्ट रहने लगी। उसने अपने गाँवके ही एक व्यक्ति लोरीसे सम्बन्ध स्थापित कर लिया और उसके साथ घरसे भाग निकली। शिवधरने उसका पीछा किया और उन्हें जा पकड़ा। लेकिन उसकी पत्नीने उपहास करते हुए लौटनेसे इन्कार कर दिया। बोली—जब मैं तुम्हारे घर थी तब तो तुमने परवाह न की और अब मेरे पीछे बेकार भाग रहे हो।

लेकिन शिवधरने उसकी एक न सुनी। फलत शिवधर और लोरी दोनोंमें घोर युद्ध हुआ और शिवधर हार गया। लोरी और चन्दैन आगे चले। बड़ागाँवके निकट, जहाँ एक मुण्डहीन मूर्ति पड़ी है, महापतिया नामक जुआरियोंके सरदारसे उनकी भेंट हुई। वह जुआपार गाँवका रहनेवाला था। लोरीने उसके साथ जुआ खेलनेकी इच्छा प्रकट की और दोनों खेलने बैठ गये। जुएमें लोरीके पास जो कुछ था वह तो हार ही गया, साथ ही चन्दैनको भी हार गया। जब महापतिया चन्दैनको पकड़ने बढ़ा तो चन्दैन बोली—मानती हूँ कि मैं दाँवपर लगायी गयी थी और मैं हारी गयी हूँ, किन्तु मेरे तनपर जो आभूषण हैं, वे दाँवपर नहीं लगाये गये थे। अत उन आभूषणोंके साथ अभी एक दाँव और खेलो।

जुआड़ी खेलने बैठ गया। चन्दैन अपने प्रेमी लोरीके पीछे और जुआरीके सामने जुआ देखनेके बहाने जा खड़ी हुई। खेल देखनेमें लीन होनेका बहाना करते हुए उसने अपनेको इस ढगसे विवस्त्र कर दिया मानों वह अनजाने अकस्मात् हो गया हो। जुआरी उसके रूप सौन्दर्यपर इस प्रकार मुग्ध हुआ कि उसकी ओरसे उसकी आँखें हटती ही न थीं। फलत वह हारने लगा। लोरीने न केवल अपना सब हारा हुआ धन जीत लिया वरन उसके पास और जो कुछ भी था, वह भी ले लिया। अन्तमें हार मानकर जुआरीने खेलना बन्द कर दिया।

तब चन्दैनने सामने आकर लोरीसे अपनी कारवाइ कह सुनाई और बताया कि किस तरह वह उसे ललचाई आँखोंसे देख रहा था। अन्तमें बोली कि इस दुष्टको मार डालो ताकि यह डींग न हाँक सके कि उसने मुझे विवस्त्र देखा है।

लोरी बड़ा बली था। उसकी तलवार दो मनकी थी और उसका नाम था बिजाधर। एक ही झटकेमें उसने जुआरीका सर अलग कर दिया, जो जुआपारमें जा गिरा और धड़, जहाँ वह बैठा था, वहीं धराशायी हो गया। तबसे वहीं उसके शरीरके दोनों अंग पत्थर बने पड़े हैं।

लोरी बुधकिठई नामक ग्वालेका लड़का था। उसका विवाह अगोरी गाँवकी, जिसे अब रजौली कहते हैं और वह हजारीबागसे विहार जानेवाली सड़कपर स्थित

है, एक लड़कीसे हुआ था। किन्तु उसकी पत्नी सतमैना अभी बच्ची थी और उसका गौना नहीं हुआ था। उसके एक बहन थी, जिसका नाम दुर्गी था। लोरीके एक भाई था, जिसका नाम सेमरू था। अनाथ होनेके कारण उसे लोरीके पिताने अपने बेटेकी तरह पाला था। वह अगोरीके पास ही पाली नामक गाँवमे रहता था।

लोरी और चन्दैन दोनों हरदुई पहुँचे। मुँगेरसे उत्तर वह दो दिनकी मञ्जिलपर स्थित था। उन्होंने वहाँके राजाको हराकर देश जीत लिए। हारे हुए राजाने कलिंगके राजासे सहायता ली और लोरीको गिरफ्तारकर एक कोठरीमे बन्द कर दिया। वहाँ उसे लिटाकर उसके हाथ-पैरोंमें कील ठोंक दिये गये और उसके छातीपर भारी बोझ रख दिया गया। इस तरह वहाँ वह बहुत दिनोंतक पडा रहा। अतमें आराधना करनेपर दुर्गा प्रसन्न हुई और उसे छुटकारा मिला। छूटनेके बाद, उसने राजासे फिर लड़ाई की और हरदुईको जीत लिया और चन्दैनसे उसका मिलन हुआ। वहाँ उनके एक पुत्र उत्पन्न हुआ और वे वहाँ बहुत दिनोंतक रहते रहे। एक दिन उनके मनमें स्वदेश लौटनेकी इच्छा जाग्रत हुई और वे बहुत सा धन लेकर पाली लौट आये।

इस बीच उसके पोष्य भ्राता सेमरूका कोलोंने मारकर उसकी गायें और धन दौलत लूट लिया था। उसके एक लड़का था। उसका परिवार बड़े कष्टसे जीवन बिता रहा था। लोरीकी पत्नी भी सयानी होकर सुन्दर युवती हो गयी थी और अपने मायकेमें ही कष्टके जीवन बिता रही थी।

लोरीने पहुँचकर प्रचार किया कि दूर देशका एक राजा आया है। समय इतना बदल गया था कि कोई उसे पहचान न सका। इस प्रकार अपनेको छिपाकर उसने अपनी पत्नीके सतीत्वकी परीक्षा लेनेका निश्चय किया। फलत यह जानकर कि उसके शिविरमें दूध बेंचने आनेवाली स्त्रियोंमे उसकी पत्नी भी है और उसे पहचानकर (उसकी पत्नीने उसे नहीं पहचाना) उसने अपने शिविर आनेके मार्गमे एक धोती फैला दी ताकि कोइ भी उसे रौंदे बिना न आ सके।

दूसरे दिन प्रात काल, जब औरतें दूध बेंचने आयीं तो उसने अपनी पत्नी (चन्दैन)से कहा कि उनसे झपटकर आनेको कहे। सतमैना चन्दैनके कहनेपर धोतीतक तो तेजीसे आयी मगर वहाँ आकर वह रुक गयी। दूसरी औरतें उसपर चलती चली गयीं। सतमैनाने धोतीको रौंदकर जानेके सिवा कोई रास्ता न देखकर धोती हटा लेनेके लिए कहा। यह देखकर लोरी बहुत प्रसन्न हुआ। जब वह दूध बेंच चुकी और दाम माँगने लगी तो लोराने उसकी टोकरीम जवाहरात रखकर चावलसे ढक दिया। बिना किसी प्रकार सन्देह किये वह लेकर चली गयी।

घरपर उसकी बहनने टोकरी खाली करते हुए उन जवाहरातोंको देखा और अनुमान किया कि उसने उन्हें दुराचार द्वारा प्राप्त किया है। तदनुसार वह सतमैनापर आरोप करने लगी। सतमैनाने जवाहरातोंके प्रति अपनी अनभिज्ञता प्रकट की। अन्तमें दोनोंने सन्देह दूर करनेके लिए एक साथ जानेका निश्चय किया। दूसरे दिन वे दोनों साथ गयीं। दुर्गीने लोरीको पहचान लिया और तब वास्तविकता प्रकट हो

गयी। लोगोंके हर्षका पारावार न रहा। लोरीको अपनी पत्नीकी उपेक्षा करने और रखैलके साथ सुखपूर्वक रहनेपर काफी लताड़ सुननी पड़ी। अन्ततोगत्वा व्यवस्था ऐसी हुई कि लोरीको अपनी रखैल छोड़नी न होगी।

इस बीच लोरीके भतीजेने जब अपनी चाचीके दुराचारकी बात सुनी तो वह बड़ा बिगड़ा और लोरीसे लड़नेकी तैयारी की। घरपर दुर्का और सतमैनाको न पाकर वह और भी क्रुद्ध हुआ और उसने लोरीपर आक्रमण कर दिया। बहुत देरतक लड़ाई होती रही। लोरी परास्त हो गया और अपना जीवन खोने ही वाला था कि दुर्की और सतमैना भागी हुई वहाँ पहुँची और वास्तविकता प्रकट की। लड़ाई तत्क्षण बन्द हो गयी।

लोरी अपनी प्रजापर न्यायपूर्वक शासन करने लगा। उसने कृषिको इतना प्रोत्साहन दिया कि रजौलीके आस पासके जगलोंको भी उपजाऊ भूमि बना दिया। फलत पशु-पक्षियों, कीड़े मकोड़ोंके रहने योग्य कोई जगह ही नहीं रही। सभी पशु पक्षी और कीड़े मकोड़ोंने इन्द्रसे जाकर लोरीकी शिकायत की। लोरीको अपनी प्रजापर न्यायपूर्वक शासन करते देख इन्द्रको लगा कि उसे हानि पहुँचाना उनकी शक्तिसे बाहर है। जबतक वह कोई दुष्कर्म न करे, उसको हानि पहुँचाना सम्भव नहीं है। अत उन्होंने दुर्गासे सलाह ली। लोरीको पापरत करनेके लिए दुर्गाने चन्दैनका रूप धारण किया और जिस तरह चन्दैन नित्य भोजन ले जाती थी, भोजन लेकर लोरीके पास पहुँचीं। लोरीको इस मायाजालका कुछ ज्ञान न था। उसने देखा कि आज तो चन्दैन नित्यसे अधिक सुन्दरी लग रही है, वह उसके सौन्दर्यपर विमोहित हो गया। भोजन छोड़कर उसे आलिंगन करने बढ़ा। उसने शरीर छुआ ही था कि दुर्गाने उसे पथभ्रष्ट जानकर कसकर एक तमाचा दिया, जिससे उसका सिर घूम गया। दुर्गा तत्काल अन्तर्धान हो गयीं।

लोरीको यह देखकर अत्यन्त लज्जा आयी और खेद हुआ। उसने काशी जाकर मरनेका निश्चय किया। उसके सगे सम्बन्धी भी मोहवश उसके साथ गये। वहाँ वे सभी निद्राभूत हो मणिकर्णिका घाटपर पत्थर बने पड़े हैं। •

मिर्जापुरी रूप

मिर्जापुर जिले (उत्तर प्रदेश) में प्रचलित लोरिक और चन्दाकी कथाका रूप डे० सी० नेसफील्डने *कलकत्ता रिव्यू*मे प्रकाशित किया था, उसे लखनऊके दैनिक पायोनियरने अपने १३ मार्च १८८८ के अकमें उद्धृत किया है। उसके अनुसार यह कथा इस प्रकार है—

गगाके दक्खिनी किनारेपर स्थित पिपरीकोटका राजा चेरा जातिका मकरा दुर्गाराय था। गगाके उत्तरी किनारेपर पिपरीसे २० ३० मील दूर गौरा नामक एक दूसरा कोट था। वहाँ अहीर जातिका लोरिक नामक एक वीर रहता था। दोनों परस्पर घनिष्ठ मित्र थे।

सँवर और सुवेचन नामक दो यमजोंको जन्मते ही उनकी माँने परित्याग कर दिया था। उनके पिताका कोई पता न था। सँवरको लोरिककी माँने अपने बच्चेकी तरह पाला पोसा। लोरिकका जन्म सँवरसे कुछ महीने बाद हुआ था। इससे लोरिकको उसकी माँने सँवरको बड़ा भाई मानना सिखाया। सुवेचनको मकराकी पत्नी विरसीने पाला।

लोरिक बड़ा दुस्साहसी व्यक्ति था और वह शांतिपूर्वक अपने नगर और अपने कोटमें रहना जानता ही न था। अपने विवाह होनेके बाद ही वह अपनी ही सरीखी एक दुस्साहसी लड़कीको, जिसका पति जीवित था, लेकर सुदूर पूर्व स्थित हरदी नगरको भाग गया।

लोरिक अपने घरसे बारह बरस तक गायब रहा। उसकी कोई खबर नहीं मिली। इस बीच उस लड़कीकी माँ, जिसे लेकर वह लोरिक भाग गया था, मकराके पास गयी और उसने उसके चरणोंपर सोनेसे भरी टोकरी बिखेर दी और इस अपमानका बदला लेनेके लिए उसकाया। उसने कहा कि लोरिकके बदले उसके भाई सँवरका सिर काट लिया जाय और लोरिककी परित्यक्त पत्नीको पकड़ मगाया जाय।

पहले तो चेरा राजा झिझका पर पीछे राजी हो गया और मकराके साथ युद्ध करते हुए एक ही दावमें सँवर मारा गया। लोरिकके बदले उसका सिर पिपरी लाया गया।

जब लोरिकको इसकी खबर हरदीमें एक बनजारेसे लगी तो उसे अपनी पत्नीके परित्यागपर बड़ा पश्चाताप और भाई सँवरकी मृत्युपर घोर दुःख हुआ। वह तत्काल बदला लेने पिपरीकी ओर चल पड़ा और पिपरी पहुँचकर उसने मकरा, उसके बेटों और वहाँके समस्त निवासियोंको मार डाला।

एक दिन मकराके बेटे देवसीने लोरिकको निहत्था पाकर अचानक मार डाला। तब सँवरके बेटे सँवरजीतने अपनी सती माँका स्मरणकर देवसीपर बाण चलाया, जिससे वह मर गया।

डब्लू० क्रूकने अपनी पुस्तक **पापुलर रेलिजन एण्ड फोकलोर आव नर्दर्न इंडिया**[१]में इससे सर्वथा भिन्न एक कथा दी है और उसे मिर्जापुर क्षेत्रमें प्रचलित बताया है। उनकी कथा इस प्रकार है—

एक समयमें सोन नदीके किनारे अगोरीका कोट था। वहाँ एक बर्बर राजा राज करता था। उसकी आश्रित मञ्जरी नामक एक ग्वालिन थी। उसे उसीकी जाति का लोरिक नामक युवक प्रेम करता था। लोरिकका भाई अपने भाईके साथ मञ्जरीका विवाह कर देनेका प्रस्ताव लेकर आया। राजाने उसे अस्वीकार कर दिया। तब वह उस बालिकाको ले भागा। राजाने अपने सुप्रसिद्ध मदमत्त हाथीपर चढ़कर उसका पीछा किया। लोरिकने अपनी गौंडके एक ही वारसे उसे मार गिराया।

मञ्जरी भागते समय कुछ सोचकर अपने साथ पिताकी गाँठ ले आयी थी। वे

---

१ भाग २ (विलमिंग्टन), १८९६, पृष्ठ १६० १६१।

लोग भागते हुए जब मरकुण्डी दर्रेके पास पहुँचे तो मजरीने लोरिकसे अपने साथ लायी पिताकी खाँड़का प्रयोग करनेको कहा। किन्तु लोरिक न माना और अपनी ही खाँड़से काम लेता रहा। जब उसकी खाँड़ पत्थरकी चट्टानसे टकराकर दो टुकड़े हो गयी तो हारकर उसे मजरीकी लायी हुई खाँड़को लेना पड़ा। उसने लगते ही पत्थरके चट्टानके टुकड़े टुकड़े हो गये और लोरिक उसकी सहायतासे शत्रुओंको मार भगानेमें सफल रहा। इस प्रकार विजयपूर्वक वे लोग मजरीको अपने घर ले आये।

भागलपुरी रूप

शरचन्द्र मित्रने अहीरोंमें दुर्गाकी पूजाके प्रचलनपर विचार करते हुए लोरिककी कथा इस प्रसंगसे दी है कि लोरिकने ही उसका आरम्भ किया था।[१] उनकी दी हुई कथा इस प्रकार है —

लोरिक गौरका निवासी ग्वाला था और दुर्गाकी निरन्तर आराधना कर उनका प्रिय भक्त बन गया था। उसकी पत्नी माँजर ज्योतिष विद्यामें पारंगत थी। अकस्मात् उसे एक दिन अपने विद्या बलसे ज्ञात हुआ कि उसके पति लोरिकका उसीके गाँवके हीनजातीय राजाकी बेटी चानैनके साथ गुप्त प्रेम-सम्बन्ध चल रहा है। अपने विद्या बलसे उसे यह भी मालूम हुआ कि उसी रातको उसका पति चानैनको लेकर भाग जाने वाला है।

उसने यह बात तत्काल अपनी सासको बतायी और कहा—आज धान इतनी देर तक कूटा जाय ताकि खाना बनानेमें देर हो जाय और अधिक-से अधिक तरहकी चीजें बनायी जायँ, जिससे खाना तैयार होनेमें और भी देर हो। इस तरह खाना बनानेमें रात बहुत बीत गयी। जब सबेरा होनेको आया तब घरके लोग सोने गये। लोरिक भाग न जाय, इसलिए माँजरने उसे अपनी साड़ीसे बाँध दिया। बाहर जानेका रास्ता बन्द रखनेके निमित्त उसकी माँ दरवाजेके सामने खाट डालकर सोयी।

जब राजाकी बेटी चानैनने उस पेड़के नीचे, जहाँ लोरिकने मिलनेका वादा किया था, उसे नहीं पाया तो बहुत घबरायी और दुर्गाका स्मरण कर उनसे सहायता की याचना की। दुर्गाने लोरिकको ले आनेका वचन दिया और कहा कि अगर लोरिकके आनेमें देर हुई और वह सबेरा होनेसे पहले न आ सका तो मैं रात सतगुनी कर दूँगी। फलतः दुर्गाने छप्पर फाड़कर लोरिकके लिए मार्ग बना दिया ताकि वह अपनी प्रेमिकाके साथ भाग सके। इस प्रकार दोनों प्रेमी नगरसे निकल कर हरदीके लिए रवाना हुए। रास्तेमें चानैनने कहा—जब तक तुम मुझे अपनी पत्नी न बना लोगे तब तक मैं तुम्हारी थालीमें नहीं खाऊँगी। निदान बहुत सकोचके पश्चात् लोरिकने चानैनके माथेमें सिन्दूर पहना दिया। यह तो विवाहका द्योतक मात्र था। वास्तविक विवाह तो पीछे देवी दुर्गाने अपनी सात बहनोंकी सहायतासे किया।

१ क्वार्टर्ली जर्नल आव द मिथिक सोसाइटी, भाग २५, पृ० १२२-१२५।

एक दिन रातको चानैन एक पेडके नीचे सो रही थी कि उसे एक साँपने डँस लिया और वह मर गयी। लोरिक उसके वियोगमें इतना दुखी हुआ कि चिता बनाकर चानैनके शवके साथ स्वयं जा बैठा और आग लगा दी। किन्तु किसी अदृश्य शक्तिने आकर उसकी अग्नि बुझा दी। लोरिकने पुनः आग लगायी और फिर उसी अदृश्य शक्तिने उसे बुझा दिया। यह क्रम कुछ देर तक चलता रहा। आकाशमें देवता यह देखकर बहुत चिंतित हुए कि एक पति अपने दिवंगत पत्नीकी चिता पर जल मरनेका प्रयत्न कर रहा है। अतः उसे इस कार्यसे विरत करनेके लिए उन्होंने दुर्गाको पृथ्वी पर भेजा।

दुर्गा बुढियाका रूप धारण कर लोरिकके पास आयीं और उसे समझाने लगीं कि वह चितापर न जले। किन्तु लोरिक अपने निश्चयसे टससे मस न हुआ। अन्ततोगत्वा हार मानकर दुर्गाने उसकी पत्नीको जीवित करनेका वचन दिया और जिस साँपने चानैनको डँसा था, उसे बुलाया। साँपने आकर घावसे अपना सारा जहर चूस लिया और चानैन पुनः जीवित हो गयी।

दोनों प्रेमी वहाँसे आगे चले और रोहिनी पहुँचे, जहाँ महापतिया नामक सुनार राज्य करता था। उस राजाके कर्मचारियोंने वहाँ उन्हें घेर कर महलमें चलकर जुआ खेलनेका आग्रह किया। राजा महाधूर्त था। उसने अपने बनाये हुए पासेसे जुआ खेलकर लोरिकका सब कुछ, यहाँ तक कि उसकी सुन्दरी पत्नी चानैनको भी, जिसपर कि उसकी आँख लगी हुई थी, जीत लिया। किन्तु चानैनने कहा—जब तक मुझे खेलमें न हरा दो, मैं आत्मसमर्पण न करूँगी। निदान फिर खेल आरम्भ हुआ। इस बार चानैनने बनावटी पासेको उठाकर फेंक दिया और अपने पासेसे खेलने लगी। राजाने जो कुछ जीता था, उसने वह सब धीरे धीरे जीत लिया।

रोहिनीसे वे दोनों हरदी पहुँचे। लोरिक वहाँके राजाके पास गया। किन्तु उसे समुचित अभिवादन नहीं किया। इससे राजा बहुत रुष्ट हुआ और बोला—हमारी गायें चराना स्वीकार करो, तभी तुम हमारे राज्यमें रह सकते हो। लोरिकने भी क्षुब्ध होकर उत्तर दिया—मैं तुम्हारी गायें तभी चराऊँगा, जब तुम्हारी बेटी स्वय दूध दुहाने आया करे।

फलतः दोनोंमें युद्ध छिड गया और सात दिन सात रात निरन्तर युद्ध होता रहा। राजाकी बहुत बडी सेना मारी गयी। चानैनने दुर्गाकी मनौती मानी कि जीत होनेपर मैं अपने प्रथम जात पुत्रकी भेंट चढाऊँगी। फलतः दुर्गाने आकर लोरिककी सहायता की और उसकी विजय हुई और हरदीके पराजित राजाने लोरिकको अपना सहभागी राजा घोषित किया। इस प्रकार लोरिक बारह बरस तक हरदीमें राज करता रहा।

हरदीमें राज करते हुए एक दिन रातमें लोरिकने एक बुढियाको बुरी तरह रोते सुना। उसका पुत्र किसी कामसे बाहर तीन दिनके लिए बाहर गया हुआ था। यह रोना सुनकर उसे ध्यान आया कि इन बारह बरसोंमें उसकी माँ और पत्नीने

कितना रोया विलाप किया होगा। इसका ज्ञान होते ही वह तत्काल अपनी सुन्दरी प्रेयसी चानैनको लेकर अपने घर चल पड़ा। घर पहुँच कर अपने घरके पास ही उसके लिए दूसरा घर बनवाया।

यह कथा भागलपुर गजेटियरमे भी प्राय इन्ही शब्दोंमे अंकित है।[१] यत्र तत्र थोड़ा विस्तार और कुछ नयी सूचनाएँ हैं। उक्त गजेटियरमें यह कथा हुण्टर द्वारा सकलित स्टैटिकल एकाउण्टसे उद्धृत की गयी है।[२] गजेटियरके अनुसार लोरिककी पत्नी भाजरने अपने पतिको एक दिन चानैनके साथ प्रेम-क्रीडा करते देख लिया। तब घर आकर उसने ज्यौतिष ग्रन्थोंको देखा और उसे ज्ञान हुआ कि उसका पति उसी रातको भाग जानेकी योजना बना रहा है। इस ग्रन्थमें चानैनके पिताका नाम सहदीप माहार बताया गया है। गजेटियरमें दूसरी नयी बात यह है कि जब चानैन लोरिकको उस पेड़के नीचे नहीं पाती, जहाँ उसने मिलनेका वादा किया था, तो उसपर लाल रगसे पाँच चिह्न बनाकर पीछे हटकर दुर्गाका स्मरण करती है। तीसरी नयी सूचना गजेटियरमें यह है कि जब हरदीका राजा पराजित हो गया तो लोरिकसे बोला कि यदि तुम मेरे प्रतिद्वन्दी हँरवाके राजाका सिर काटकर ला दो मैं तुम्हें अपना आधा राज्य दे दूँगा। लोरिकने इसे स्वीकार कर लिया है और उसे पूरा कर दिखाया।

अन्तिम नयी ज्ञातव्य बात गजेटियरमें यह है कि बुढियाको रोते देखकर लोरिकने अपनी प्रेयसीको उसका कारण जाननेके लिए भेजा और स्वय भी उसके पीछे पीछे छिपकर गया और उन दोनोंकी बात सुनने लगा। बुढियाने बताया—मेरा बेटा परदेस गया है। तीन दिनसे नित्य भोजन बनाकर उसकी प्रतीक्षा करती हूँ कि वह आता होगा किन्तु वह अबतक नहीं आया। निराश होकर तीन दिनके एकत्र भोजन को देखकर रो रही हूँ। चानैनने यह सोचकर कि लोरिकको यह बात मालूम होगी तो हो सकता है उसे भी अपने माँ और पत्नीकी याद आ जाये और वह उनके पास जानेको आतुर हो उठे। अत वह बुढियासे बोली—यदि लोरिक उसके रोनेका कारण पूछे तो वह अपने रोनेका यह कारण कोई दुर्व्यवहार बतावे।

लोरिकने छिपकर सभी बातें सुन ली थीं। अत जब चानैन बाहर आकर बातें बनाने लगी तो उसने उसपर विश्वास न किया और बोला—अगर तीन दिनके लिए जरूरी कामसे जानेपर माँ अपने बेटेके लिए इस तरह रो सकती है तो मेरी माँ और पत्नी मेरे लिए, जो अपने आप वनवास लेकर यहाँ आ बैठा है, कितना रोती होगी। और तत्काल अपनी प्रेयसीके साथ घर लौट आया।

मैथिल रूप

लोरिक-चाँदकी कथाका जो रूप मिथिलामें प्रचलित है, वह प्रकाशित रूपमें अभी

१—पृष्ट ४८-५०।
२—इस पुस्तकका पृष्ट निर्देश गजेटियरमें नहीं दिया गया है।

तक हमारे देखनेमें नहीं आया। बहेडा (जिला दरभंगा) निवासी ब्रजकिशोर वर्मा ने हमें सूचित किया है कि यह कथा मिथिलामें लोरिकानि अथवा महरायके नामसे प्रसिद्ध है। इस कथाके सात खण्ड है और एक एक खण्ड आठ आठ घण्टेमें गाये जाते हैं। इसके एक खण्डका नाम चनैन खण्ड है। चन्दायनकी कथा इसी खण्डसे सम्बन्ध रखती है। अतः उन्होंने हमें केवल इसी खण्डका सारांश लिख भेजा है। वह इस प्रकार है—

अगौरा नामक गाँवके राजाका नाम सहदेव था। उनके हलवाहेका नाम कूबे राउत और हलवाहेकी पत्नीका नाम खुलैन था। उन दोनोंके लोरिक और साँवर नामक दो बेटे थे। लोरिक बड़ा और साँवर छोटा था। वे दोनों खिल्हटके अखाड़ेपर कुश्ती खेला करते थे। लोरिक अत्यन्त बलवान और विशालकाय था। उसकी तलवार अस्सी मनकी थी। उसके तीन साथी थे—राजल धोबी, बण्ठा चमार और बारू दुसाध।

गौरा नामक एक दूसरे गाँवका राजा उघरा पँवार था, जो अत्यन्त अत्याचारी और चरित्रहीन था। उसके राज्यकी प्रत्येक नवविवाहिताको, विवाहके पश्चात् पहली रात उस पँवार राजाके साथ बितानी पड़ती थी।

उसी गाँवमें लाख गायोंकी स्वामिनी पद्मा मौहरि रहती थी। उसके माँजरि नामकी एक अत्यन्त रूपवती बेटी थी। उघरा पँवारकी आँखें उसपर लगी हुई थीं। वह इस प्रतीक्षामें था कि उसका विवाह हो और वह उसकी अंकशायिनी बने। अन्त तागल्या माँजरिका विवाह लोरिकके साथ निश्चित हुआ और लोरिक अपने वीर पिता और योद्धा साथियोंके साथ मार्गमें अनेक युद्ध जीतता हुआ गौरा आया। धूम धामके साथ उसका विवाह माँजरिके साथ सम्पन्न हुआ। तदनन्तर पँवारने लोरिकको मारकर माँजरिको छीन लेनेके अनेक प्रयत्न किये पर वह सफल न हो सका और लोरिकके हाथों मारा गया। लोरिक विपुल धनराशि प्राप्त कर अपनी पत्नी माँजरिके साथ अगौरा लौट आया।

अगौराके राजा सहदेवके चनैन नामक एक रूपवती पुत्री थी। उसका विवाह शिवधर नामक राजकुमारसे हुआ था। वह बहुत बली था। एक दिन जब वह खड़ा होकर मूत्र त्याग कर रहा था, उसी समय इन्द्र आकाश मार्गसे जा रहे थे। मूत्रके कुछ छींटे उनपर जा पड़े। फलतः इन्द्रने क्रुद्ध होकर शिवधरको नपुंसक हो जानेका शाप दे दिया, और वह काम शक्तिसे रहित हो गया।[१] अपनी इस अवस्थासे दुखी होकर शिवधरने घर त्याग दिया और दवहा नदीके तटपर कुटी बनाकर रहने लगा। वहाँ रहकर वह अपनी लाख गायोंको चराया करता।

चनैन जब यौवनावस्थाको प्राप्त हुई और शिवधरको अपनी ओर आकृष्ट होते न पाया तो वह स्वयं एक दिन सोलहो शृंगार कर उसकी कुटीपर पहुँची।

१ चनैनकी पतिके नपुंसकताके इस कारणकी बात आजमगढ़के मुरारा सिंहसे भी हमने सुनी थी। इससे जान पड़ता है कि भोजपुरी क्षेत्रमें भी कुछ भागमें कथाका यह रूप प्रचलित है।

किन्तु वह अपने पतिको अपनी ओर आकृष्ट करनेमें सफल न हो सकी। विवश होकर उसने इस प्रकारकी उपेक्षाका कारण पूछा। अपनी पत्नीके प्रश्नको सुनकर वह रोने लगा और रोते रोते उसने अपनी काम शक्तिहीनताकी बात कह सुनायी।

तब चनैनने पूछा—ऐसी अवस्थामें मेरे उद्दाम यौवनका क्या होगा?

शिवधरने तत्काल किसी सत्पुरुषके संग जीवन व्यतीत करनेकी अनुमति दे दी।

जब चनैन शिवधरके पाससे लौट रही थी तो रास्तेमें, गाँवके समीप ही, बण्ठा चमार मिल गया। वह उसके सौन्दर्यपर मुग्ध हो गया और उससे प्रणय निवेदन करने लगा। चनैनने उसे ठुकरा दिया तो वह बलात्कार करनेकी धमकी देने लगा। चनैनने इधर-उधर देखा पर गाँव निकट होनेपर भी कोई आता जाता दिखाई नहीं पड़ा, जिसे वह अपनी सहायताके लिए पुकारती। इस संकटसे बचनेका उपाय वह सोच ही रही थी कि उसका ध्यान निकट ही खड़े एक अत्यन्त ऊँचे इमलीके वृक्षकी ओर गया। उसपर इमलियोंके पके हुए गुच्छे लटक रहे थे। चनैनने कुछ सोचा और फिर मुस्कराकर बण्ठासे बोली—मुझे फुनगी (पेड़के सबसे ऊपरी भाग) पर लगी पकी इमलियाँ खिलाओ।

इतना सुनना था कि बण्ठा निहाल हो गया और बिना कुछ सोचे समझे तत्काल अपनी पगड़ी और जूते उतार, मगन होता हुआ पेड़के सिरेपर चढ़ गया और इमली तोड़कर गिराने लगा। चनैनको अवसर मिला। उसने बण्ठाके जूते और पगड़ीको उठाकर दूर फेंक दिया और स्वयं भाग निकली। जब तक बण्ठा पेड़से नीचे उतरकर अपनी पगड़ी और जूतेको सँभाले, तब तक चनैन महलमें जा पहुँची।

निराश बण्ठा क्षुब्ध हो उठा और अगौरामें जाकर उत्पात मचाने लगा। लोरिकने उसे समझानेकी बहुत कोशिश की पर बण्ठा अपनी हरकतोंसे बाज नहीं आया। तब लोरिकने क्रुद्ध होकर उसे युद्धके लिये ललकारा। युद्धमें बण्ठा मारा गया।

बण्ठाके मारे जानेकी खुशीमें चनैनने भोजका आयोजन किया और बण्ठाके विजेता लोरिकको विशेष रूपसे आमन्त्रित किया। जिस समय लोरिक भोजन कर रहा था, ऊपरसे कुछ तिनके आकर उसकी पत्तलपर गिरे। लोरिकने आँख उठाकर ऊपर देखा। रूपसी चनैन अपने सतखण्डे महलके झरोखेपर खड़ी मुस्करा रही थी। उसे देखते ही लोरिक उसपर मुग्ध हो गया। दोनोंमें परस्पर कुछ संकेत हुआ। तदनन्तर दोनों एक दूसरेसे छुक छिपकर मिलने लगे। और एक दिन अंधेरी रातमें दोनों अपना गाँव छोड़कर भाग निकले और हरदीपाटन पहुँचे।

हरदीपाटन श्रीनगरके मोचनि राजाके राज्यमें पड़ता था। वह राजा अत्यन्त प्रतापी था। ठिठरा नामक एक नाई उसका सेवक था। एक दिन अकस्मात् ठिठरा नाईने चनैनको देख लिया। चनैनका रूप देखते ही वह मूर्छित हो गया। होश आनेपर वह मोचनि राजाके पास पहुँचा और बोला—एक आदमी लोरिक चन्द्रको चुराकर लाया है। आपकी सातो रानियाँ उस चन्द्रके तलुओंकी धोवन भी नहीं है। यह सुनकर मोचनि राजाने चनैनको प्राप्त करनेके लिए षड्यन्त्र रचा।

उसने सात सौ पहल्वान गेरला नामक अखाड़ेमें कुश्ती लड़ा करते थे। गजभीमल उनका नायक था। वह अजेय समझा जाता था। राजाने लोरिकको बुलवाया और एक पत्र देकर उसे गजभीमलके पास भेजा। लोरिक पत्र ले जानेको तैयार हो गया। चनैनने राजाकी घुड़सालसे उसकी सवारीके लिये कटरा नामक प्रख्यात घोड़ेको चुना और उसपर सवार होकर लोरिक गजभीमलके पास चला।

राजाने उस पत्रमें गजभीमलको आदेश दिया था कि पत्र देखते ही लोरिकको मार डालना। पर लोरिकको मारनेको कौन कहे, -गजभीमल स्वय लोरिकके हाथों अपने सात सौ पहल्वानोंके साथ मारा गया।

उस दिनसे मोचनि राजा लोरिकसे भयभीत रहने लगा और किसी प्रकार उसे मार डालनेकी फिक्रमें रहने लगा। इस बार उसने पत्र देकर लोरिकको हरेवा-बरेवाके पास भेजा। हरेवा-बरेवा दो भाई थे और दोनों ही अत्यन्त अत्याचारी थे। उनके भयसे सारी प्रजा त्रस्त थी। लोरिक पत्र लेकर पहुँचा और बनडिहुलीके मैदानमें उसकी हरेवा-बरेवासे लड़ाई शुरू हुई। युद्धमें पहले हरेवाका भगिनेय छोटा रामगढ का राजकुमार कुँवर अगार मारा गया। पीछे लोरिकने हरेवा-बरेवाको भी अपने खड्गसे यमपुर पहुँचा दिया। वहाँसे लौटकर लोरिकने राजा मोचनिको भी मार डाला।

अब सोन्हौलीघाटमें महल बनाकर लोरिक और चनैन सुखपूर्वक रहने लगे। चनैन राज काज चलाने लगी।

उधर लोरिकके वियोगमें उसकी पत्नी माँजरि सूखकर काँटा हो गयी। उसके गायोंको राजा कोल्ह मकडा छीन लेगया। उसके साथ लड़ते हुए छलसे लोरिकका भाई साँवर भी मारा गया और साँवरकी पत्नी जलडाम्ब देकर सती होगयी। इन सब दुखोंसे दुखी होकर लोरिकके माता पिता अन्धे हो गये।

जब माँजरिने देखा कि उसका पति लौटकर नहीं आ रहा है तो उसने अपने पालतू कौवे—दाजिलके पैरमें पत्र बाँधकर लोरिकके पास भेजा। लोरिक पत्र पाकर घर लौटनेके लिये व्याकुल हो उठा और चनैनके लाख प्रतिरोध करनेपर भी उसे और अपने बेटे इन्द्रजीतको लेकर गाँवकी ओर चल पड़ा।

गाँवके निकट पहुँचकर लोरिक और चनैन, दोनोंने अपना वेश बदल लिया और गाँवमें अपना परिचय सम्हौलीके राजा-रानीके रूपमें दिया। चनैनके कहनेपर लोरिकके मनमें अपनी पत्नी माँजरिके प्रति सदेह जागा कि वह निश्चय ही अपना रूप सौन्दर्यमें बेंचकर जीवन-यापन करती रही होगी। अत. अपने इस सन्देहकी पुष्टिके निमित्त उसने गाँव भरके दूधको खरीदनेकी घोषणा करा दी। फलत गाँवकी सभी स्त्रियाँ उसके पास दूध बेंचने आयीं। उनके साथ माँजरि भी आयी। चनैनने सब स्त्रियोंको तो दूधके मूल्यमें चावल दिये और माँजरिके दूध-पात्रको हीरे मोतियोंसे भर दिये।

चनैनने सोचा था कि हीरा मोतियोंके प्रलोभनमें माँजरि पुन आयेगी और सम्हौली नरेश (लोरिक)की अकरायिनी बनना स्वीकार कर लेगी। किन्तु उसकी

आशाके विपरीत मॉजरिने अपने सतीत्व अपहरणके इस षड्यन्त्रको ताड लिया और तत्काल इसकी सूचना अपने सास ससुरको दे दिया। सूचना पाते ही मॉजरिके साथ उसकी कुमारी बहन सुरकी, राजल धोबी, बूबे और खुलैन सभी सझौलीके राजा (लोरिक)के पडाव पर जा पहुँचे और उसे युद्धके लिए ललकारने लगे।

ललकार सुनकर जैसे ही लोरिक बाहर आया, राजलने लपक कर उसका हाथ नेत्रहीन बूबेको पकडा दिया। हाथका स्पर्श होते ही बूबेको ज्ञात हो गया कि वह उसके बेटे लोरिकका हाथ है। अपनी इस धारणाको पुष्ट करनेके लिए उसने उसे अपने आलिंगनमें कसकर आबद्ध कर लिया। बूबेके वज्र आलिंगनको सहन करनेकी क्षमता लोरिकके सिवा किसीमें न थी। उसके आलिंगन पाशमें आबद्ध होकर भी जब लोरिक हँसता ही रहा तो बूबेको निश्चय हो गया कि वह लोरिक ही है। और वह स्नेहके साथ उसका पीठ सहलाने लगा। स्नेहातिरेकमें खुलैन और बूबे दोनोंके नेत्रोंकी खोई हुई ज्योति लौट आयी।

इस बीच मॉजरिकी बहन सुरकीने चनैनको जा पकडा और वह उसका प्राण लेने जा ही रही थी कि इन्द्रजीत रोता हुआ मॉंजरिकी ओर भागा। मॉंजरिने आकर चनैनको छुडाया। बोली—अपने प्रतिशोधके लिये किसी अबोध बालकके मॉंका प्राण नहीं लिया जा सकता।

तदनन्तर सब लोग घर आये और सुख पूर्वक रहने लगे।

लोरिकने अपने भाईका प्रतिशोध लेनेका निश्चय किया और राजा कौल्ह मकडाको मार डाला। यही नहीं, जितने भी अत्याचारी राजा थे, उन सबको यमलोक पहुँचा दिया। जब उससे लडने वाला कोई नहीं बचा तब उसने अपनी आराध्या भगवतीकी आज्ञा प्राप्त कर काशी करवट ले लिया।

सुप्रसिद्ध पुरातत्त्वविद् अलेक्जेण्डर कनिंगहम ने अपने १८८० ८१ के उत्तरी और दक्षिणी भागकी यात्राका जो विवरण प्रस्तुत किया है उसमें उन्होंने लोरिक चन्दाकी कथा दी है जो उपर्युक्त कथा से थोडा भिन्न है।[1] उन्होंने लिखा है कि उन्हें तिरहुत की यात्रामें हरवा बरवा का नाम बहुत सुनाई पडा। उन्हें उनके सम्बन्धमें जो जानकारी प्राप्त हुई उसके अनुसार हरवा-बरवा भाई भाई और जातिके दुसाध थे। वे नेउरपुरमें राज करते थे। वे बडे ही लडाकू थे और उन्होंने बहुतसे राजाओंको लूट कर मार डाला था।

उन्हीं दिनों लोरिक और सेउर (अथवा सिरक) नामक दो पडोसी राजा थे जो गौरामें रहते थे। लोरिक अपनी पत्नी मॉंजरको त्याग कर चनाइनके साथ हरदी भाग गया। वहॉंके राजा मल्गारने, जो जातिका अहीर था, उसका विरोध किया। दोनोंमें लडाई हुई। लोरिकने मल्गारको पराजित कर दिया। तदन्तर दोनों परस्पर मित्र बन गये।

---

१ आक्योलाजिकल सर्वे रिपोर्ट, खण्ड १६, १८८३, पृ० २७-२८।

एक दिन दोनों एक साथ स्नान करने गये। जब राजा मल्वारने अपने कपड़े उतारे तो उनकी पीठपर चोटके बहुतसे निशान दिखाई पड़े। लोरिकने जब पूछा कि ये कैसे निशान हैं तो मल्वारने बताया कि जब कभी हरवा बरवा इस ओर आते हैं तो मुझे चोट पहुँचाते हैं। ये निशान उन्हींके हैं।

यह देखकर लोरिकने तत्क्षण प्रतिज्ञाकी कि जबतक हरेवा-बरेवाको पछाड़ न दूँगा तब तक इस गाँवका अन्न जल ग्रहण न करूँगा। और तत्काल चलनेको प्रस्तुत हो गया। मल्वारने कहा—पैदल तुम कभी उसके पास पहुँच न सकोगे। और उसे एक घोड़ा दिया। उस घोड़ेपर सवार होकर लोरिक दूसरे दिन सूरज निकलते निकलते नेउरपुर पहुँचा। हरेवा-बरेवा उस समय शिकारको गये थे। लेकिन उन्हें खोजता हुआ वहाँ जा पहुँचा। वहाँ वह उनसे भिड़ गया और उनके सभी साथियोंको मारडाला। तब उन दोनोंने अपना सहायताके लिए अपने भाजे अगारको बुलाया। लोरिकने उसे भी परास्त कर दिया और हरेवा-बरेवाको मार डाला। फिर लौटकर लोरिक हरदीमें चनाइनके साथ सुख पूर्वक रहने लगा।

कनिंगहमने अपनी रिपोर्टमें सबसे आश्चर्यजनक बात यह लिखा है कि उन्हें इस बातके अतिरिक्त कि लोरिक जातिका अहिर था, उसके सम्बन्धमें उस क्षेत्रसे और कोई बात ज्ञात न हो सकी।

छत्तीसगढ़ी रूप

छत्तीसगढ़में लोरिक और चन्दाकी कथा जिस रूपमें प्रचलित है, उसे वेरियर एल्विनने बिलासपुर जिलेके कटघोड़ा तहसीलके छुरी जमींदारी अर्न्तगत सुनेरा ग्रामनिवासी किसी अहीरसे सुनकर अपनी पुस्तक फोक सांग्स ऑव छत्तीसगढ़में दिया है।[1] उनके अनुसार यह कथा इस प्रकार है—

बावनबीर नामक एक अहीर था, जो बावन भैंसोंको दूहकर उनका दूध पीता था। एक दिन उसके मित्र रावतने कहा कि गौनेका दिन आ गया है जाकर अपनी पत्नी चन्दैनीको लिवा आओ। बावनबीरने उत्तर दिया कि मेरे सिरमें दर्द हो रहा है तुम मेरी कटार और घोड़ा ले लो और जाकर दुलहिनको लिवा लाओ। रावत जाकर चन्दैनीको लिवा लाया और बाहरसे ही उसने बावनबीरको आवाज दी। उस समय वह भात खा रहा था। भात खाकर उसने जो डकार ली तो उसकी आवाज बारह कोसतक सुनाई पड़ी। खाना खाकर पेट सहलाता हुआ घरसे बाहर निकला और दूध दूहनेकी तैयारी करने लगा।

चन्दैनीको यह देखकर आश्चर्य हुआ कि मैं आयी हूँ और मेरी ओर उसने तनिक भी ध्यान नहीं दिया। वह खाट उसके पास गयी। पहले उसने उसके पैरकी ओर देखा, फिर उसके मुँहकी ओर और फिर उसके आँखोंकी ओर। तत्काल घरमें जाकर पैर धोनेके लिए वह गरम पानी ले आयी। बावनबीरने पानीमें जैसे ही पैर डाला वह जल

१ पृ ३४२-३७०।

गया और चन्दैनीको गालियाँ देने लगा। तब चन्दैनी ठण्डा पानी ले आयी और बावनवीरने पैर धोया और उसकी सराहना की।

उसके बाद चन्दैनी खाना बनाकर लायी। उसने उसे बड़े प्रेमसे सराह सराहकर खाया। खाना खाकर दूध दूहनेके लिए उठा। पर अचानक ही वह बिस्तर बिछाकर सो गया। चन्दैनी घरके काम धन्धेसे छुट्टी पाकर तेल लेकर अपने पतिके पास गयी। उसके हाथको अपने हाथमें लेकर तेल लगाने लगी। बावन जाग उठा और जागते ही उसने चन्दैनीको एक चाटा मार दिया। चन्दैनीने सोचा कि नींद में अनजाने ही मार दिया होगा। अत फिर मलने लगी। तब बावनने उसे लात मार दिया और वह मुँहके बल जा गिरी। सारा तेल ढुलक गया। वहीं पड़े-पड़े चन्दैनी सो गयी और उसे पता भी नहीं चला कि कब सबेरा हुआ।

सुबह उठकर उसने अपनी ननदसे कहा कि मेरा भाई महन्त बीमार है, उसे देखने जाऊँगी। तुम चुपकेसे मेरी साड़ी उठा लाओ। चन्दैनी अपना कपड़ा लेकर चुपकेसे घरसे भाग निकली। घने जगलमेंसे होकर जब वह जारही थी तो रास्तेमें उसे लकड़ी काटनेके लिए घूमता हुआ वीर बठवा मिला। चन्दैनीको देखते ही बोल उठा—भौजी कहाँ जा रही हो?

चन्दैनी सोचने लगी कि कभी तो यह इस तरह नहीं पुकारता था। सदा मैं उसकी भाई बहू ही रही, आज यह भौजी क्यों कह रहा है। कुछ दालमें काला अवश्य है। किस तरह इससे मैं अपने आपको बचाऊँ। कुछ सोचकर उसने सिर ऊपर उठाया। जामुनसे लदा पेड़ देखकर बोली—देवर मेरे, तुमसे क्या कहूँ। जामुन खानेकी इच्छा हो रही है। थोड़ेसे तोड़ लाओ। पीछे हम दोनों हँसी-मजाक करेंगे।

वीर बठवाने आव न देखा न ताव, चट पेड़पर चढ ही तो गया और लगा जामुन तोड तोडकर गिराने। पर चन्दैनी सयानी थी, बोली—मैं इतने नीचे लगे जामुन नहीं खाती, इसे तो छोटे-छोटे चरवाहे भी तोड ले जाते हैं।

तब बठवा और ऊँचे चढ गया और अच्छे-अच्छे फल तोडने लगा। तब चन्दैनी बोली—मेरे अच्छे देवर, जरा अपने कमरमें बँधी छुरी तो गिरा देना। मैं फलोंको काटूँगी। बठवाने अपनी छुरी गिरा दी।

चन्दैनीने अपने कपड़ोंको कसकर बाँधा और चाकूसे कटीली झाड़ काट काट कर पेड़के चारों ओर चुन दिया और भाग चली। भागते भागते वह गेहूँके खेतोंको पारकर गयी, तब वीर बठवाने नीचे देखा। पेड़के नीचे काँटे लगे देखकर चकित हुआ और इधर-उधर नजर दौड़ायी तो चन्दैनी दूरपर भागती हुई दिखाई पडी। बोला—अच्छा चन्दैनी, आज तो तुम धोखा देकर निकल गयी। किसी दिन जब नदीपर मिलोगी तब तुम्हारी इज्जत लूटूँगा। आम सड़कपर तुम्हें बेइज्जत करूँगा। वह नीचे उतरने लगा। जबतक वह एक डालीसे दूसरी डालीपर उतरे उतरे तबतक वह दो कोस पहुँच गयी। जबतक पेड़से उतर पावे, वह अपने गाँवके निकट पहुँच गयी। बठवाने उसका पीछा किया। तबतक वह पास आये, वह अपने घरके पास पहुँच

गयी। उसने तत्काल चाकूको तालाबमें फेंक दिया। वीर बठवा चाकू लेने तालाबमें घुसा और कीचड़में धँस गया। जबतक वह वहाँसे निकल पाये, चन्दैनी अपने घरमें घुस गयी।

वीर बठवा गुस्सेमें भरा गलीमें चक्कर लगाने लगा। कोई भी लड़की उसके डरसे पानी भरने नहीं निकलती। अहीरके लड़के मारे डरके गाय चराने नहीं जाते। गायें तबेलेमें पड़ी-पड़ी मरने लगीं, भैंसे छानमें से खींचकर घास चबाने लगीं। लोग घरमें पड़े-पड़े भूखसे अधमरे होने लगे। जिनके घरमें कुआँ था, वे तो कुछ खा पका लेते थे। जिनके पास नहीं था, वे जानवरोंकी तरह प्याससे छटपटाने लगे।

यह देखकर चन्दैनीकी माँ बोली—मुझे तो तीनों लोकमें अकेला वीर लोरिक ही एक आदमी ऐसा दिखाई देता है, जो वीर बठवाको मार सकता है। और कोई दूसरा नहीं तो दिखाई देता। यह कहकर लाठी टेकती हुई बुढ़िया लोरिकके घरकी ओर चल पड़ी। वह छोटी-छोटी गलियों, फिर छोटे-बड़े बाजारोंको पार करती हुई वहाँ पहुँची, जहाँ लोरिक सोया हुआ था। जाकर बोली—

तुमसे मैं क्या कहूँ लाल, बठवा है तो जातका चमार, नीच, पर है बड़ बोल। उसने मेरी लाडलीपर हाथ बढ़ाया है। उसकी इज्जत बचानेमें सब लोग असमर्थ हैं।

यह सुनते ही लोरिक खाटसे उठ पड़ा और अपनी अहीरी लठ उठाकर चलने लगा। तभी घरके भीतर छिपी आँखोंने उसे देख लिया। उसकी पत्नीने आकर रोका। बोली—मत जाओ, ईश्वरके लिए मत जाओ। वह चमार महाधूर्त है, उसे तुम हरा न सकोगे।

हट जा मनजरिया—लोरिक बोला—है तो चमार ही। भला वह मुझे कैसे हरायेगा! अगर मैं उसे भून न डालूँ तो मैं अपनी मूँछ कटा डालूँगा।

मनजरिया बोली—उसे हरानेका एक ही उपाय है। उसे ऐसी जगह लिवा जाओ, जहाँकी जमीन बहुत कड़ी हो। वहाँ पाँच हाथके अन्तरपर दो गड्ढे कमरकी गहराई तक खोदो। एक गड्ढेमें उस चमारकी बीबी तुम्हें गाड़े और दूसरेमें मैं उस बठवाको गाड़ूँ। जो उसमेंसे पहले निकलकर दूसरेको पीटे, वही विजयी माना जाय।

अच्छा तो जल्दीसे तैयार हो जा मनजरिया।—लोरिकने कहा। मनजरिया सज सँवर कर सिरपर अशर्फियोंकी थाल रखकर चल पड़ी। आगे-आगे लोरिक चला, उसके पीछे बुढ़िया और सबसे पीछे मनजरिया। गलीमें मकानके सामने बठवा टहल रहा था। देखते ही लोरिक चिल्लाया—रास्तेसे हट बठवा, नहीं तो लाठीसे तेरा सिर तोड़ दूगा, तेरी बत्तीसी बाहर निकल पड़ेगी।

हट जाओ लोरिक, नहीं तो ऐसी मार मारूँगा कि तेरी बत्तीसी तेरे पेटमें समा जायेगी।

तब लोरिक बोला—हो सकता है कि मैं तुमको न मार सकूँ, लेकिन तुम भी मुझको नहीं मार सकते। अच्छा हो कड़ी जमीनपर चलकर हम दोनों जोर आजमा

ल। लोरिकने अपनी बात बतायी। बठवाने तत्काल अपनी चमारिनको बुलवा भेजा।

मेरी धूमो, इस रावतको जमीनमें इस तरह कसकर गाड़ दो कि वह कभी निकल न सके।

मैं उसे ऐसा गाड़ूँगी कि वह कभी निकल ही न सके और तुम आकर उसे मार कर वीर कहाओ—चमारिन बोली और हाथ भरका एक लोहा ले आयी। गड्ढा खोदकर वह लोरिकको गाड़ने लगी। तब मनजरियाने चारों ओर अशर्फियाँ बिखेर दीं। लालची चमारिन अपना काम छोड़कर उन्हें बटोरने लपकी। इस बीच लोरिकने भीतर ही भीतर अपना पैर ढीला कर लिया। उधर मनजरियाने बठवाको खूब कसकर गाड़ा। फिर वहाँसे हटकर बोली—चलो अब मारो।

बठवाने गड्ढेसे बाहर आनेकी बहुत कोशिश की, लेकिन एक तिल भी हट न सका। उधर लोरिक इतनी जोरसे उछला कि जमीनसे पाँच हाथ ऊपर चला गया। नीचे आकर उसने अपने लट्ठसे बठवाकी खूब मरम्मत की। इतना मारा कि उसकी लाठी टूट गयी। उसने दूसरी लाठी उठायी।

तब बठवा हाथ जोड़कर कहने लगा—बस करो रावत, रूगड़ा छूला कैसा भी जीने भर दो। मैं तुम्हारा गौरागढ़ छोड़ दूँगा। तुम्हारी चप्पलें सिया करूँगा।

यह सुनकर मनजरियाने लोरिकको मारनेसे रोका और धूमोसे बोली—ले जा अपने पतिको, अरण्डके पत्तोंसे सेंक कर।

लोरिक और मनजरिया दोनों घर लौट आये। छिपे छिपे चन्दैनीने उन दोनों को जाते देखा। वह मन ही मन कहने लगी—मेरे नाथ, मेरे देवता, तुम्हारी तरह का आदमी त्रिलोकमें नहीं है। वह दिन कब आयेगा, जब मैं एक प्रेमिकाकी तरह तुम्हारे साथ भाग चलूँगी।

और तब चन्दैनी अपने भाई महन्तारीसे बोली—लोरिकके आने जानेके रास्ते में मेरे लिए एक झूला डाल दो। भाईने झूला डाल दिया। लोरिकने उस रास्तेसे आना ही बन्द कर दिया। दिन गिनते गिनते चन्दैनीकी उँगलियाँ घिस गयीं, उसकी राह देखते देखते आँखें थक गयीं पर तारोंके सिवा कुछ दिखाई न दिया। तब वह देवी देवताओंको मनाने लगी।

एक दिन लोरिक अपने अखाड़ेसे उसी रास्ते अपने घर लौटा। उसे आते देख चन्दैनी अपने झूलेपर बैठ गयी। बोली—मुझे झूला न झुला दोगे रावत!

ना ना—लोरिक बोला—मेरे साथी सब देख रहे होंगे, सारे देशमें बदनाम हो जाऊँगा।

मुझे झूला न झुलाओ तो तुम्हें अपनी माँ-बहनकी कसम। कसम सुनकर लोरिकको गुस्सा आ गया। उसने इतनी जोरसे झूला झुलाया कि चन्दैनी आधी दूर आसमानमें फेंका गयी और उल्काकी तरह नीचे गिरने लगी। उसके वस्त्र खुल गये,

आभूषण बिखर गये। इस तरह उसे अर्धनग्न गिरते देख लोरिकने सोचा कि उसके टुकड़े टुकड़े हो जायेंगे, उनको कौन बटोरता फिरेगा। उसने उसे अपनी लाठीपर ही रोक लिया और फिर धीरेसे भूमिपर रख दिया।

चन्दैनी खड़ी होकर गालियाँ देने लगी। लोरिक बोला—तुमने कहा और मैंने झुला दिया। यह कहकर वह अपने घर चला गया। चन्दैनी भी उदास होकर घर चली गयी।

शामको अपनी भौजीसे बहानाकर वह कण्डा लेकर पड़ोसीके घरसे आग लेने निकली। रास्तेमें लोरिक मिला। वह खिल उठी। बोली—मुझसे नाराज क्यों हो! मैंने तो मजाक किया था। मेरा घर देखा है न देवर!

क्या बताऊँ भौजी, आज तो मौका निकल गया। कल तुम्हारे घर जरूर आऊँगा।

न न मत आना, देवर। मेरे घर पहरेदार बहुतसे हैं। पहले तो फाटकपर पहरा देनेवाला हाथी है। उसके बाद बाघ है, तब सुरही गाय और तब उसके बाद भालू। अपनी जान जोखिममें डालकर मत आना। पानीमें छिपनेपर भी बच न पाओगे।

लोरिक घर आकर मनजरियासे बोला—जल्दीसे भात पका दे। गौरागढ़की गलीमें एक सभा है, वहाँ जाना है।

जल्दीसे उसने खाना खाया, अच्छे-से अच्छे कपड़ा पहना और गड़ेरियाके घर जाकर एक चितकबरा बकरा लिया, फिर कुछ ईख और हलवाईके घरसे मिठाई लेकर चन्दैनीके घरकी ओर चल पड़ा। हाथी देखते ही उसने उसके सामने ईख डाल दी, बाघको उसने बकरा दे दिया, गायको घास और भालूको मिठाई। इस तरह सारी बाधाएँ पारकर वह चन्दैनीके कमरेमें जा पहुँचा।

चन्दैनी देखनेमें सारा शरीर ढककर सो रही थी, पर भीतर ही भीतर जग रही थी, मुँह नहीं खोलती थी। भीतर ही से बोली—कौन हो तुम, अपने भाई महन्तरीको बुलाती हूँ। वह तेरा सिर काट डालेगा।

धत् चन्दैनी, तुमने बुलाया तो मैं आया। अब धमकी देती है। यह कहकर लोरिकने दीपकको लात मार दिया और स्वयं धरनपर चढ़ गया।

चन्दैनी बोली—देवर, मैं तो मजाककर रही थी। तुम नाराज हो गये। और वह अन्धेरेमें लोरिकको ढूँढने लगी। धरनपर बैठा-बैठा लोरिक बोला—मैं धरनपर बैठा हूँ। तुम अपनी कहानी कहो। चन्दैनीने अपने आँसू पोंछ डाले और कहानी कहने लगी।

पहले एक जनममें मैंने एक हिरणीकी कोखमें जन्म लिया था। हिरनकी तरह एक जंगलसे दूसरे जंगल घूमती फिरती थी। एक दिन एक राजा मुझे मार न सका, इसलिए उसने मुझे शाप दे दिया। उसके शापसे मैं जल मरी। तब मैंने मोरके रूपमें जन्म लिया और जंगलमें नाचती फिरती थी। इस बार फिर एक राजाने शाप दिया

और मैं मर गयी। दूसरे जन्ममें कुतियाके गर्भमें जन्म लिया और मैं गली गली भूँकती फिरती थी। फिर राजाने शाप दिया और मैं मर गयी। और अन्तमें मैंने राजा गोयन्दीके घर जन्म लिया और वीर बावनसे बियाही गयी किन्तु अपने सभी जन्मोंमें मैं कभी सुखी न रह सकी।

यह सुनते ही लोरिक धरनपरसे उतर आया। चन्दैनीने इत्र फुलेलसे उसका स्वागत किया और मिठाई खिलायी।

दूसरे दिन सुबह हल्ला हुआ—लोरिक कहाँ है, लोरिक कहाँ है आवाज सुनते ही वह जागा और खाटपरसे उठकर भागा। जल्दीमें उसने चन्दैनीकी साड़ी पहन ली। आँगनमें बुढ़िया धोबिन बुहारती हुई मिली। बोली—नन्दके लाल तुम कहाँ थे। तुम्हारे गाल काजल और सेंदुरसे लाल क्यों हैं? लोरिकने बहाना किया मैं अपनी गायें ढूँढ रहा था। गेरूसे खेल रहा था वही मुँह पर लग गया होगा।

धोबिन बोली—झूठे, लबाडिये, चुप रह। तेरी धोती कहाँ है? चन्दैनीकी साड़ी क्यों पहने है?

लोरिकने अपने शरीर की ओर देखा और फिर गिड़गिड़ाने लगा—किसीसे मत कहना, तुझे दो सूप गेहूँ दूँगा। यह साड़ी, चन्दैनीके घर दे आओ।

बुढ़िया साड़ी लेकर चन्दैनीके घर गयी। वहाँसे लोरिकके कपड़े ले आयी। लोरिक उन्ह नदी पर धोकर घर पहुँचा। उस समय मनजरिया घर बुहार रही थी। उसने देखते ही कहा—मैंने कहा न था कि सभामें मत जाओ। ऐसी सभा तो पहले कभी नहीं होती थी। तुम्हारी आँखें उदास सी क्यों हैं? और वह बड़बड़ाती हुई घड़ा लेकर तालाबकी ओर चली।

तालाब पर चन्दैनी अपने कपड़े धो रही थी। उसे देखते ही चन्दैनीने पूछा—किसे कोस रही हो, बहन।

मजरियाने अपने पतिके आँखोंके उदासीकी चर्चा की। तब चन्दैनीने लोरिक के अपने घर आनेकी बात कह दी। बोली—वे घरके धरनपर चढ़ गये और मुझे एक पल सोने नहीं दिया। और हँस पड़ी।

मनजरियाको सन्देह हो गया। मर जा तू चन्दैन—कोसती हुई मनजरिया घर आयी।

लोरिकको बड़े प्रेमसे नहलाया फिर खाना खिलाया। खाना खाकर लोरिक सोया। शाम हुई तो उसे चन्दैनीकी याद आयी। गाँवकी गायोंको दुहनेके बहाने अपने कपड़े छिपाकर घरसे निकला। रास्तेमें बुढ़िया धोबिन मिली। बोली—इस रास्ते रोज-रोज मत आया करो नहीं तो बदनाम हो जाओगे। उसकी खिड़कीसे रस्सी बाँध लो, उसीके सहारे बिना किसी के जाने आया-जाया करो।

धोबिनके कहनेके अनुसार लोरिकने रस्सी तैयार की। मजरियाने रस्सी देख ली और जान गयी कि यह किस कामके लिए बनायी गयी है। उसने उसे कोठारमें छिपा दिया। लोरिकने मजरियाकी खुशामद की और उसे भुलावा देकर रस्सी ले ली।

रस्सी लेकर लोरिक चन्दैनीकी खिडकीके पास पहुँचा और रस्सी ऊपर फेंकी। चन्दैनीने उसे लौटा दिया। लोरिकने दुबारा रस्सी फेंकी। चन्दैनीने फिर लौटा दिया। जब चन्दैनीने इस तरह तीन बार रस्सी लौटा दिया तो लोरिक ने चिल्लाकर कहा— यदि इस बार रस्सी नहीं पकडोगी तो मैं अपना सिर काट दूँगा।

चन्दैनी डर गयी और उसने बमन्द फँस जाने दिया। लोरिक चुपकेसे ऊपर उसके कमरेमें आ गया। दोनो प्रणय प्रलाप करने लगे। अन्तमें दोनोंने नगर छोडकर भाग चलनेका निश्चय किया। उस रात भी लोरिक देर तक सोता रह गया और खोज-ढूँढ होनेपर जल्दी जल्दी उठकर भागा। जल्दीमें फिर चन्दैनीकी साडी पहन ली और धोबिनने उसे देख लिया और लोकापवादसे बचाया।

चन्दैनी घर छोडकर भागनेका मुहूर्त पूछने ब्राह्मणके घर गयी। ब्राह्मणने मगलवारका दिन उपयुक्त बताया। तदनुसार चन्दैनी मगलवारको भागनेके लिए निर्धारित स्थानपर गयी पर लोरिक नहीं आया। वह सोचती हुई कि अब मैं उससे कभी न बोलूँगी घर आयी। वहाँ उसने लोरिकको अपने खाटपर सोता पाया। चन्दैनी-से उसने कहा—मैंने गाँजा अधिक पी लिया था। इससे समयपर जग न सका। कल धोखा न होगा।

दूसरी रात भी लोरिक न आया। इस प्रकार नित्य चन्दैनी भागनेकी तैयारी करती पर लोरिक न आता। अतः एक दिन रातमें चन्दैनी गलेमें घटी बाँधकर लोरिकके घर पहुँची और घरके बाहर छप्परपर फैली बेलको खींचा। उसके गलेकी घटी बज उठी। ऐसा लगा, जैसे किसी गायने बेल खींची हो और उसके गलेके घटी बजी हो। मजरियाने आवाज सुनी। वह भीतरसे ही चिल्लाई। चन्दैनी रुक गयी और फिर रुककर घटी बजाने लगी। सोचा था, मंजरिया गायके भगानेके लिए लोरिकको जगायेगी, पर वह खुद ही निकल आयी। चन्दैनीको देखकर उसे पीटने लगी और दूर तक खदेड आयी।

थोडी देर बाद फिर चन्दैनी देवी देवताओंको मनाती आयी। देखा लोरिक मजरियाकी बाँहपर सिर रखकर सोया हुआ है। उसे धीरेसे जगाया।

लोरिकने कहा—हाँ, आज भाग चलेंगे। और धीरेसे एक कम्बल और साडी उठाकर चलने लगा।

अब चन्दैनीकी बारी थी। बोली—मैं तुम्हारे साथ नहीं जाऊँगी। तुम किसी-के हाथ बेंच दोगे, किसी नालेमें मुझे ढकेल दोगे, या किसी चरवाहेको दे दोगे। जानती हूँ मैं खूबसूरत हूँ, तुम किसीके हाथ बेंच दोगे। किसी दूर देशमें बेंच दोगे। मैं तुम्हारे साथ तभी चलूँगी, जब तुम अपने सब कपड़े लेकर मेरे साथ सदाके लिए निकल पडो। फलतः लोरिक अपने सब कपड़े लेकर चलनेको तैयार हो गया और बोला—हम लोग गढ हरदी चलेंगे।

चन्दैनी बोले—मैं तुम्हारे साथ तबतक नहीं चल सकती, जबतक तुम्हारा पौरुष न देख लूँ।

तब लोरिकने अपनी तलवारसे पेडकी एक डाल काट गिराया। इसपर चन्दैनी ने ताना दिया—बस यही तुम्हारी बहादुरी है।

यह सुनकर लोरिक क्रुद्ध हो गया। पासमें ही बाप दादोंका लगाया सेमलका पेड था। वह इतना मोटा था कि उसमें चारों ओर बारह बैलोंकी रस्सी भी पूरी नहीं पडती थी। उसने अपनी तलवार तेज की और पेडपर एक हाथ मारा। पेड जहाँका तहाँ खडा रहा। चन्दैनी हँस पडी। लोरिकने डाँटा—चुप रहो। करीब जाकर तो देखो तो तुम्हारे पागल प्रेमीने क्या किया है!

चन्दैनीके छूते ही पेड जमीनपर गिर पडा। चन्दैनी चलनेको तैयार हो गयी।

तब लोरिक बोला—मैं चोरोंकी तरह नहीं चलूँगा। तुम्हारे बापसे कहकर चलूँगा। वह चन्दैनीके घर जाकर जोरसे चिल्लाया—राजा महरि सोते हो या जागते! मैं चार दिनके लिए बाहर जा रहा हूँ। मजरियाको तुम्हारे ऊपर छोड़े जाता हूँ। ऐसा कहकर चल पडा।

भीतरसे आवाज आयी—मेरी बीवीको भी लेते जाओ, बहुत दिनोंसे उसने अपने माँ-बापको नहीं देखा है।

लोरिक बोला—नहीं, नहीं! बुढापेमें वह चलते चलते मर जायेगी। हाँ, मैं तुम्हारी बछिया साथ लिये जा रहा हूँ। और कहकर वह चल पडा।

आगे आगे लोरिक पीछे-पीछे चन्दैनी चली। चलते-चलते वे गेरू नदीके किनारे पहुँचे। नदीमें जोरोंकी बाढ थी। लोरिक पहाडसे सेमलका पेड काट लाया और बाँधकर बेडा बनाया। दोनों उसपर सवार होकर नदी पार करने लगे। नदीमें लोरिकको दो चूहे बहते दिखाई पडे। उसने उन दोनोंको उठाकर लकडीपर रख दिया। रास्तेमें चन्दैनीने चुहियाको उठाकर खिलवाडमें किनारे नहाती हुई स्त्रियोंपर फेंक दिया। यह देखकर चूहेको गुस्सा आया और उसने बेडेकी रस्सी काट दी। लोरिक और चन्दा बहने लगे। बहते बहते वे किसी तरह किनारे जा लगे।

वे दोनों केवटको खोजने लगे जो उन्हें नावपर बैठाकर पार कर दे। एक केवट मिला, मगर वह चन्दैनीके रूपपर मोहित हो गया। उछलकर लोरिक और चन्दैनी उसकी नावपर चढ गये। नावपर चढकर लोरिकने केवटका कान काट लिया। नदी पार करनेके बाद चन्दैनीने केवटको अपनी साडी दी और कहा इसे अपनी बीवीको पहनाना। पहनकर वह भी मेरी ही तरह सुन्दर लगने लगेगी।

चन्दैनी अपने प्रेमीके साथ भाग गयी, इसकी खबर जब बावनबीरको लगी तो वह लोरिकको पकडने निकला। दूरसे लोरिकने उसे नदीके किनारे किनारे आते देखा। उसने चन्दैनीसे छिप जानेको कहा और स्वयं मन्दिरकी ओर चल पड़ा। बावन बीरने तीर चलाया पर उसका निशाना चूक गया। उसने बारह नीमके पेड काटकर मन्दिरपर गिराये। मगर लोरिक बचकर मन्दिरसे निकलकर आगे चल पडा। बावनबीर नदी पारकर आया और मन्दिरको तोड डाला। मगर उसे शत्रु न मिला। वह तो निकल चुका था।

अब चन्दैनीके मनमें भाव उठने लगा—यदि हम लोगोंने नदी पार न की होती तो दोनोंमें लड़ाई होती। मैं एकको पराजित होकर बाढ़में बह जाते देखती और जो विजयी होता उसकी गोदमें सोती। जब लोरिकको चन्दैनीने मनकी बात ज्ञात हुई तो वह बहुत गुस्सा हुआ और उसने चन्दैनीको एक चाटा मार दिया। चन्दैनी लगी उसे गालियाँ और शाप देने—तुझे काला नाग डस ले।

आगे जाकर वे लोग एक जगह रुक गये। चन्दैनीने खाना बनानेके लिए आग जलायी। लोरिक उसके पास ही लेट गया। इतनेमें चूल्हेसे एक चिनगारी उड़ी और नाग बनकर उसने लोरिकको डस लिया। जब वह खाना पका चुकी तो लोरिकको जगाने लगी। लेकिन वह तो मर चुका था। लगी वह जोर-जोरसे रोने। उसी रास्ते महादेव पार्वती जा रहे थे। चन्दैनीका रोना महादेवसे न देखा गया। उन्होंने अपनी अँगूठी पानीमें धोकर लोरिकके मुँहमें डाल दी और वह जीवित हो उठा।

वे लोग आगे बढ़े और चलते-चलते कोटियागढ पहुँचे। वहाँ वे एक तालाबके किनारे खाना पकाने लगे। धुँआँ निकलते देख धनिया नामक एक बदमाश वहाँ आया और बोला—मेरा कर दे दो तब खाना पकाने दूँगा। चन्दैनीको देखकर वह मोहित हो गया था, कहने लगा—मैं पैसे नहीं लूँगा, तुम दोनोंमें से एकको लूँगा। लोरिकने कहा—अच्छा, चन्दैनीको ले जाओ।

जब धनिया चन्दैनीको पकड़ने बढ़ा तो लोरिकने उसे पकड़ लिया और उसके सिरको तीन पाँतोंमें मूड़ दिया और लगा बेलके फलोंसे उसे मारने। मार खाते-खाते जब धनिया पागल हो गया तब उसकी तीनों लटोंमें लोरिकने एक एक फल बाँध दिया और भाग जानेको कहा।

नगरके लोगोंने जब धनियाको आते देखा तो उन्होंने अपने अपने दरवाजे बन्द कर लिये। अकेले एक बुढ़िया अपने दरवाजेपर खड़ी रह गयी। उसके दरवाजेपर जाकर धनिया बोला—अब मैं पागल धनिया नहीं रहा। मैं साधू हो गया हूँ। तीर्थ करने गया था। उसने अपनी लट और उसमें बँधे बेलके फलोंको दिखाया। बुढ़ियाने उसके फल निकाल फेंके। वहाँ बैठकर धनिया चन्दैनीका सौन्दर्यका वर्णन करने लगा। बोला—उसके आगे तो हमारे यहाँकी रानी दासी सी लगती हैं। उसके पैर इतने कोमल और ऐसे लाल हैं, जैसे रानीकी जीभ हो। आगकी तरह उसका सौन्दर्य दमकता रहता है। जाकर राजासे कहो कि वह लोरिकको मार कर उस लड़कीको अपनी रानी बनावे।

बुढ़ियाने राजासे जाकर कहा। राजाने उन दोनों पहलवानोंको बुलानेकी आज्ञा दी, जो नित्य पाँच सेर गेहूँ और एक बकरा खाते थे। जब वे आये तो बोला कि उस आदमीको मारकर चन्दैनीको मेरे पास लाओ। दोनों पहलवान लोरिककी ओर चले। उन्हें आते देख चन्दैनी डरी। पर लोरिकने कहा—डरो मत। वे तो मेरे लिए तिनके समान हैं। पास आते ही उन्हें उसने कौशल और बलसे मार भगाया।

बुढ़िया यह देखकर डरी और भागकर राजासे सब समाचार कहा। तब राजा हाथीपर सवार होकर अपनी सेना लेकर निकला और तालाबको घेर लिया।

राजा करिंघा हाथीपरसे चिल्लाया—किस देशसे तुम लोग आ रहे हो! ओ लड़की अपने पतिको जगा, तेरी चूड़ी अब फूटने वाली है।

चन्दैनीने लोरिकको जगाया। बोली—देखो फौज आ गयी है।

लोरिकने बोला—फौज तेरे लिए होगी, मेरे लिए तो तिनकेके समान है। उसने उठकर अपनी जाँघपर तलवार तेजकी, अपने साफेसे उसे पोंछा और फिर खड़ा होकर हवामें उछल कर तलवार चलाने लगा। पहली चोटमें दसको मारकर पीछे हटा, दूसरी चोटमें सौको मारा और खूनकी नदी बह चली। लोरिक सेनाको इस तरह काटने लगा जैसे किसान खेतको काटता है। डरके मारे सैनिक नगरकी ओर भागने लगे। लोरिक सेनाको काट रहा था और राजा हाथीपरसे तमाशा देख रहा था। डरके मारे वह भी शहरकी ओर भागने लगा। उसे भागते देख लोरिकने उसका पीछा किया। दौड़कर हाथीकी सूँड पकड़ ली और हाथीके सिरपर पहुँच कर राजाके बाल पकड़ लिये। बोला—मरनेके लिए तैयार हो जाओ। राजा करिंघा, तुमने मेरा कर नहीं दिया है, इसलिए मैं यहाँ आया था।

स्वामी, जानता नहीं था कि आप कौन हैं। क्षमा करें।—राजा बोला।

लोरिकने राजाको छोड़ दिया। राजाके आदमी एक पाल्की ले आये और चन्दैनीको बिठाकर महलमें ले गये। वहाँ चार दिन रुककर लोरिक और चन्दैनी हरदीगढ़की ओर चल पड़े। पाल्कीमें सवार होकर चन्दैनी हरदीगढ़ पहुँची। उन्होंने वहाँ किरायेपर एक महल लिया।

वहाँ गौड़ राजा अपने अस्सी लाख बेटों और बयालिस लाख पोताके साथ रहता था। उसका राज-दरबार दिन रात खुला रहता। लोरिक वहाँ अक्सर जाने आने लगा। वह वहाँके बारह हाथ ऊँचे प्राचीरको लाँघ जाता। उसको वह अपने दोनों पैरोंको उठा कर पार किया करता था। राजाके एक ऐंचा लड़का था। उसने यह तमाशा देखा और राजासे जाकर कहा। तब राजाने लोरिकसे पूछा—तुम मेरे उस शत्रुको मार सकोगे, जिसने मेरे पिताको मार डाला है?

क्या दीजियेगा। लोरिकने पूछा।

एक हजार रुपया।

इतना तो मेरी बीबीके पैरके छल्लेकी कीमत है।

मैं तुम्हें अपनी गंगा-जमुनाकी कछार दे दूँगा। चाहे जैसे हो, शत्रुसे बदला ले लो। यहाँ मेरे पिताका धड़ है, सिर उनका पाटनगढ़में है। मेरा शत्रु सुबह शाम उसे पाँच ठोकरें मारता रहता है।

लोरिक राजी हो गया और सबसे शरारती घोड़ेपर सवार होकर पाटनगढ़ पहुँचा। शामको जब सिर बाहर निकाला गया और राजा उसे ठुकरानेकी तैयारी कर रहा था कि लोरिकने पहुँच कर उसे छीन लिया और हरदीगढ़ लौट आया।

मजरियाने रमना बनजारासे लोरकके पास सन्देश भेजा—सतखण्डे भवनमें आग लग गयी। उसमेंके सब कबूतर जल मरे। उसके सब वाद्य यन्त्र खण्ड-खण्ड हो गये। मेरा शरीर भी जल गया है। तुम दूसरेकी बीवीके साथ भाग गये हो। दूसरे बीवीको तो तुम उपहार देते हो और यहाँ तुम्हारी बीवी दूसरोंके अनाज साफ करती फिरती है। उसे काम खोजनेपर भी काम नहीं मिलता। शहरमें उसकी माँ कौआ हकनीका काम करती है। सारी गायें छिन गयीं हैं, भाई सब लडते लडते मर गये। यह सब तुम जाकर, नायक, उनसे कहना। न कहोगे तो तुम्हें बारह गौ की हत्या।

नायकने विश्वास दिलाया कि बैलसे लादी उतारनेके पहले हम तुम्हारा सन्देश कहगे।

नायकने हरदोगढ पहुँचकर लोरिकके निवास स्थानका पता लगाया। चन्दैनी ने जब यह सुना तो डरी और चुपकेसे नायकको अपने पास बुलाया और उसे गाली देते हुए बोली—मजरियाका तुम सन्देश लाये हो! और उसकी नाकपर ऐसा घूँसा मारा कि उसकी नाक टूट गयी। फिर अपने शरीरपर दही पोतकर लेट गयी। नौ दस बिल्लियाँ आकर उसका शरीर चाटने लगी और फिर परस्पर लडने भी लगीं। जिससे उसके सारे शरीरमें खरोंच लग गये और लहू निकल आया।

दोपहरको जब लोरिक लौटकर आया तो चन्दैनीने उससे शिकायत की कि एक नायकने आकर मुझपर बलात्कार करनेकी चेष्टा की थी।

लोरिक सुनते ही गुस्सेसे आग बबूला हो गया और लाठी लेकर वह नायकको ढूँढने निकला। नायक अपने डेरेपर नहीं मिला। वहाँ उसकी बीबी थी। उसने लोरिक को गुस्सेमें देखकर बताया—मजरियाने सन्देश भेजा था। वही कहने नायक तुम्हारे घर गया था। वहाँ तुम्हारी बीबीने उसकी नाक तोड दी।

यह सुनकर लोरिक बहुत दुखी हुआ। नायकके घावको उसने सेंका और उसके माल बिकवानेमें उसकी सहायताकी और फिर उससे कहा कि जल्दीसे जल्दी मुझे अपने देश ले चलो। इस प्रकार लोरिक नायकके साथ गौरागढ लौटकर आया।

नगरमें पहुँचकर उसने अपनी पत्नीको घर घर दही बेंचते देखा। मनजरियाने उसे न पहचानकर कहा—रावत, मेरी दही ले लो। यह देख वह इतना दुखी हुआ कि कुछ कह न सका और उठकर चला गया। जाते समय वह अपने डेरेसे बाहर अपना डंडा छोड गया।

लोरिककी छोटी बहन जब उस रास्तेसे निकली तो उसने उस डण्डेको देखा। देखते ही चिल्ला उठी—यह तो मेरे भइयाका डण्डा है। इसीसे वह भौजीको पीटा करते थे।

फिर नायकसे पूछा—तुम्हें यह डंडा कहाँ मिला।

जब मजरियाने सुना तो वह भी दौडी आयी और उस डण्डेसे लिपट गयी।

इतनेमें चन्दैनी डेरेसे बाहर आयी। मजरियाने उसे देखते ही पहचान लिया और डंडा छोडकर उसके बाल पकड लिए और उसे जमीनपर पटक दिया और लगी

धोबीके पाटेकी तरह पीटने। नायक जब उसे बचाने आया तो लोरिक बोला—उन दोनोंको लड लेने दो। एक मेरी पत्नी है, दूसरी मेरी प्रेयसी।

मजरिया जब जी भर चन्देनीको मार चुकी तो लोरिकने उससे घरका हाल-चाल पूछा। तब उसने बताया कि सारा घर बरबाद हो गया। रहनेको घर नहीं है। सारी गाये बिखर गयी। तुम्हारे भाई मर गये। मैं घर घर दही बेचती और अनाज छाटती हूँ।

यह सुनकर लोरिकने अपनी बहनसे अपने पतिको बुला लानेको कहा। भाईके शोकमें उसने अपने बाल मुडा डाले। कहा—शुद्ध होनेपर साधु होकर घूमूँगा और अपनी गायोंको ढूँढकर लाऊँगा।

फिर लोरिक अपनी गायोंको ढूँढने निकला और उन्हें ढूँढकर ले आया। लोरिकको आते देख मजरिया उसके स्वागतको बढी और पैर धोनेके लिए पानी लेकर चली। मगर भूलसे गदा पानी ले आयी। लोरिकने जब यह देखा तो उसका मन बहुत दुखी हुआ और वह उसे छोडकर चला गया। फिर कभी लौटकर नहीं आया।

●

हीरालाल काव्योपाध्यायने अपने छत्तीसगढी बोलीका व्याकरण में इस कथाका एक दूसरा रूप दिया है। उसका अंग्रेजी अनुवाद जे० ए० ग्रियर्सन ने प्रकाशित किया है।[१] यह रूप उपर्युक्त रूपकी अपेक्षा छोटा और कुछ भिन्न है। उनके अनुसार कथा इस प्रकार है—

बावनवीर नामक एक अत्यन्त चतुर और बलवान पुरुष था, जो छ मासतक बेखबर सोता रहता और कुछ खाता-पीता न था। उसे चाहे जितना मारो पीटो, वह जागता ही न था। लोगोंका कहना तो यह भी है कि उसके पैरोंमें एक छाला था, जिसमें नौ सौ बिच्छू रहते थे पर कभी उसे उनका पता ही न चला। उसकी पत्नीका नाम चन्दा था। वह अत्यन्त रूपवती थी और एक ऊँचे महलमे रहती थी, जिसके चारों ओर कठोर पहरा लगा रहता था।

एक दिन जब बावन प्रगाढ निद्रामें सो रहा था, चन्दाने अपने गाँवके लोरी नामक बरेठ (धोबी) को देखा और वह उसपर मोहित हो गयी। फलत वे दोनों एक दूसरेसे बाहर इधर उधर मिलने लगे। एक दिन चन्दाने लोरीको अपने महलमें बुलाया। उसका महल बहुत ऊँचेपर था और नीचे सतर्क पहरेदार पहरा दिया करते थे।

लोरी महलमें जानेका निश्चय कर महलके निकट गया। उसे वहाँ पहले मनुष्य पहरा देते हुए मिले। उन्हें उसने रुपये देकर मिला लिया। उसके बादमें गायें पहरा देती मिलीं। उन्हे उसने खूब चारा खिलाया। तीसरे ड्योढीपर बन्दर पहरा दे रहे थे। उन्हें लोरीने मिठाई और चना दिया। उसके बाद वह उस ड्योढीपर आया, जहाँ साँप पहरा दे रहे थे। उन्हें उसने दूध पिलाया। इस प्रकार वह चन्दाके महलके नीचे आ पहुँचा।

---

१. जर्नल आव द एशियाटिक सोसायटी आव बंगाल, भाग ५० (१८९०), खण्ड १, पृ० १४८-१५३।

ऊपर बरामदेसे चन्दाने रस्सीका फन्दा नीचे गिराया ताकि लोरी उसके सहारे ऊपर आ जाय। लेकिन जब लोरी रस्सी पकड़ने लगा, चन्दा रस्सी खींच लेती। इस प्रकार कुछ देरतक चन्दा हँस हँसकर मनोविनोद करती रही। जब उसने देखा कि लोरी परेशान हो गया तो उसने रस्सी खींचना बन्द कर दिया और वह उसके सहारे ऊपर चढ़कर बरामदेमें पहुँचा। उसे देखते ही चन्दा कमरेमें छिप गयी। लोरी बड़ी देरतक उसे ढूँढ़ता रहा। अन्तमें जब उसने चन्दाको ढूँढ़ लिया तो दोनों रातभर सहवास करते रहे।

सुबहको जब लोरी जागा, तो जल्दीमें उसने पगड़ीकी जगह चन्दाका लहर पटोर (दुपट्टा) उठाकर सिरपर लपेट लिया और रस्सीके सहारे नीचे उतर आया और फिर विभिन्न ड्योढ़ियोंके पहरेदारोंको भेंट देता हुआ अपने घर लौट आया।

इतनेमें बरेठिन (धोबिन) जो चन्दाके कपड़े धोती थी, लोरीके घर गयी। वहाँ उसने चन्दाके लहर पटोरको देखकर पहचान लिया और दोनोंके प्रेमकी बात जान गयी। वहाँसे वह चन्दाका लहरपटोर ले आयी और चन्दाको देकर लोरीकी पगड़ी ले गयी। उस दिनसे वह उन दोनोंके बीच दूतीका काम करने लगी।

इस तरह दोनोंका प्रणय सम्बन्ध बहुत दिनोंतक चलता रहा। अन्तमें दोनोंने अपना देश छोड़कर दूसरी जगह भाग जानेका निश्चय किया। और एक दिन दोनों घरसे निकल पड़े।

गाँवके बाहर दरहान (गोशाला) था। वहाँ चन्दाका मामा रहता था। उसने लोरी और चन्दाको तीन दिनतक बड़े आरामसे रखा और उन्हें घर लौट जानेको समझाता रहा। पर वे न माने और वहाँसे चल पड़े। चलकर एक जंगलमें पहुँचे। उस जंगलमें एक महल था, जिसमें खाने-पीनेका बहुत-सा सामान और बहुतसे नौकर-चाकर थे। वे दोनों उस महलमें घुस गये और भीतरसे चारों ओरके दरवाजे बन्द कर लिये। वहाँ वे सुखपूर्वक रहने लगे।

छ मास बाद जब बावनवीर जागा तो चन्दाको न पाकर हैरान रह गया। पीछे उसे जब अपने सालेसे पता चला कि वह लोरीके संग भाग गयी है तो वह उसे ढूँढ़ने निकला और उस जंगलमें पहुँचा, जहाँ वे दोनों प्रेमी रह रहे थे। जब उसे मालूम कि वे दोनों उस महलके भीतर हैं तो उसने दरवाजेको खोलने-खुलवानेकी बहुत कोशिशकी, पर सफल न हो सका, अन्ततोगत्वा निराश होकर लौट आया। ●

एस० सी० दुबेने फील्ड साँग्स आव छत्तीसगढ़में इस कथाको एक अन्य रूपमें प्रस्तुत किया है।[1] इसके अनुसार चन्दैनी लोरिककी ओर उसकी बंशीकी ध्वनि सुनकर आकृष्ट होती है। वह लोरिकको बताती है कि महादेवके शापसे उसका पति निकम्मा हो गया है। वह लोरिकसे झूला झुला देनेका अनुरोध करती है। तब वह उससे पान माँगता है। झूला झुलाते समय जब झूला ऊपरकी ओर जाता है,

१—पृष्ठ ४१४८।

उस समय लोरिक चन्दैनीको भयभीत कर उससे अपनेको उसका पति स्वीकार करा लेता है।

कथाके इस रूपमें कहा गया है कि जब दोनों प्रेमी अपना गाँव छोड़ कर जाने लगते हैं तो अपशकुन होते हैं और एक मालिन उन दोनोंके इस रहस्यको जान लेती है।

मार्गमें लोरिक एक बाघको मारता है। बावनवीर जब उससे लड़ने आता है तो वह उससे एक हाथसे ही लड़ता है और दूसरेसे चन्दैनीकी रक्षा करता रहता है।

संथाली रूप

चन्दैनीकी कथा सथाल परगनेमें भी प्रचलित है किन्तु वहाँ नायिकाके नामको छोड़कर अन्य पात्रोंके नाम बहुत कुछ बदल गये हैं और मूल कथामें भी काफी परिवर्तन है। सेसिल हेनरी बाम्पसन फोक लोर्स ऑव द सथाल परगनाजमें इस कथाको सहदे ग्वाला शीर्षकसे इस प्रकार दिया है[1]—

सहेदे ग्वालाका विवाह राजकुमारी चन्दैनीसे हुआ था। विवाहके समय जब सूरज डूबने लगा तो सहदे ग्वालाने सूरजको रुक जानेका आदेश दिया। फलस्वरूप उस दिन सूरजका डूबना एक घण्टेके लिए रुक गया। दूसरे दिन सहदे अपनी पत्नीको लेकर अपने घर रवाना हुआ। घर पहुँचनेमें उसे तीन दिन लगे।

एक दिन उसका ससुर उसके घर आया। ससुर दामाद दोनों घूमनेके लिए निकले। सहदे आगे आगे चलने लगा और बूढ़ा उसके पीछे। रास्तेमें चलते हुए सहदेका पैर एक पत्थरसे टकराया। फलस्वरूप पत्थर चकनाचूर हो गया। जब राजा ने अपने दामादकी इस अमानवीय शक्तिको देखा तो वह घबरा गया कि मेरी बेटीकी अवस्था क्या होगी। घर आकर उसने यह बात अपनी बेटीसे कही। वह भी अपने पिताकी तरह ही घबरा गयी और उसने अपने पितासे वहाँसे वापस ले चलनेका अनुरोध किया। फलतः दोनोंने निश्चय किया कि जब सहदे ग्वाला कहीं चला जाय तो भाग चलें।

एक दिन जब सहदे ग्वाला अपने खेतपर मजदूरोंका काम देखने गया तो बूढ़े राजा और उसकी बेटीको भागनेका यह मौका अच्छा जान पड़ा और वे भाग निकले। सहदे ग्वालाके एक बहन थी। उसका नाम था लोरिकिनी। वह भागी-भागी खेतपर पहुँची और अपनी भाभीके भाग जानेका समाचार कह सुनाया। सुनकर सहदे ग्वाला ने कहा—भाग जाने दो।

सहदे ग्वालाने चन्दैनीके जानेके रास्तेमें पानी भरी हुई नदी खड़ी कर दी। फलतः उसे अपने पतिके घर लौट जाना पड़ा।

घर पहुँची तो सामने खेतमें काम करने वाले मजदूरोंको खाना पहुँचानेको

[1]—पृष्ठ ११९-१२३।

कहा। निदान वह भातकी भारी टोकरी लेकर खेतपर पहुँची और टोकरी उतारनेमें सहायता करनेके लिए उसने अपनी ननद लोरिकिनीको पुकारा। लोरिकिनीने उसकी बात अनसुनी कर दी। चन्दैनीने किसी किसी तरह अपने सिरका बोझ अपने आप नीचे उतारकर रखा। फिर वह अपने पतिको पुकारने लगी कि वह आकर खाना ले जाये, मगर उसने भी अनसुनी कर दी।

जब चन्दैनी पुकारते पुकारते थक गयी और सहदे ग्वाला न आया तो उसे भी गुस्सा आया और वह खानेकी टोकरी लेकर घर लौट आयी। घरमें टोकरी रखकर वह तत्काल मायकेकी ओर चल पड़ी। पहलेकी तरह ही फिर सहदेने उमड़ी हुई नदी रास्तेमें खड़ी कर दी। इस बार चन्दैनीने नदीसे प्रार्थना की कि वह सूख जाय और वह पार चली जाय। नदीने उसकी प्रार्थना सुन ली। रास्ता सूख गया और वह नदी पार गयी।

दूसरी ओर तटपर पहुँचकर देखा कि एक युवक वहाँ बैठा उसकी प्रतीक्षा कर रहा है। उस युवकका नाम था बसुमुण्डा। उसने चन्दैनीको देखते ही कहा—मैं तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा था। चलो, मैं तुम्हें अपनी पत्नी बनाऊँगा।

चन्दैनीने मुँह बिगाड़कर कहा—में किसी डोम चमारकी पत्नी नहीं बनती। यह कहकर वह भाग चली और भागकर अपने मायके जा पहुँची। बसुमुण्डा भी उसका पीछा करता हुआ पहुँचा और तालाबके घाटपर जा बैठा। जो कोई पानी भरने आता, उसे वह वहीं मार डालता। जब यह बात राजा तक पहुँची तो उसने घोषणा कर दी कि जो कोई बसुमुण्डाको मार गिरायेगा, उसे मैं अपना आधा राज्य दे दूँगा और उससे अपनी बेटीकी शादी कर दूँगा। यह सुनकर बीर बाठा सामने आया और वह बसुमुण्डासे तीन दिन तीन रात लड़ता रहा, पर जीत न सका और मारा गया। तब बीरखुरी बसुमुण्डासे लड़ने आया और वह सात दिन सात रात लड़ता रहा। अन्तमें बसुमुण्डा मारा गया।

राजाने अपने वचनके अनुसार बीरखुरीके साथ चन्दनीकी शादी कर दी और चन्दैनीको लेकर बीरखुरी अपने घर चल पड़ा। रास्तेमें उसे अपनी पत्नीको खोजते हुए आता सहदे ग्वाला मिला।

सहदे ग्वालाने उनके रास्तेमें उमड़ती हुई नदी खड़ी कर दी और वे दोनों रुक गये। तब सहदेने बीरखुरीसे कहा—अगर तुम चन्दैनीको अपने कन्धेपर बैठाकर पार चले जाओ और उसका लहँगा न भीगने पाये तो वह तुम्हारी हो जायेगी। अगर नहीं कर सकोगे तो वह मेरी पत्नी है, मेरी ही होकर रहेगी।

बीरखुरी राजी हो गया। उसने चन्दैनीको बिना भिगोये पार ले जानेके अनेक प्रयत्न किये पर पानीकी धार इतनी तेज थी कि वह सफल न हो सका। निदान हारकर उसने चन्दैनीको छोड़ दिया और सहदेव ग्वाला उसे अपने घर लिवा ले गया। ●

शब्द-सूची

ग

ध

न

फ

म

म

य

र

ल

अनुक्रमणिका

य

र

वार्तिक

ग्रन्थका कार्य समाप्त होनेके दिनसे इन पंक्तियोंके लिखनेतक पूरे पौने दो बरस हो गये। इस लम्बी अवधि में एक ओर मुद्रणका कार्य मन्थर गतिसे होता रहा, दूसरी ओर ग्रन्थसे सम्बन्ध रखनेवाली अनेक घटनाएँ घटीं, प्रूफ देखते समय अनेक प्रकारके विचार मनमें उठे, धारणाएँ बनीं, नये तथ्य उपलब्ध हुए। उन्हें अगले संस्करणतक रोक रखना पाठकोंके प्रति अन्याय होगा, यह सोचकर, जिन बातोंका समावेश प्रूफ देखते समय यथास्थान हो सका, उन्हें वहाँ समाविष्ट करनेकी चेष्टा की गयी। जो बातें रह गयीं, उनमेंसे आवश्यक बातोंको यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है। पाठकोंसे अनुरोध है कि उन्हें यथोचित रूपमें ग्रहण करनेकी उदारता दिखायें।

एक अनुभव

इस ग्रन्थका सम्पादन कार्य करते समय हिन्दी साहित्यके माने-जाने महारथियोंकी व्यावहारिक शालीनताका जो अनुभव हुआ, उसकी चर्चा अनुशीलनके प्रसंगसे मैंने अन्यत्र की है। उसका अधिक निखरा रूप उसके बाद देखनेको मिला।

ब्रिटिश म्यूजियमके आमन्त्रणपर लन्दन पहुँचनेके बाद एक दिन मैं रीलैण्ड्स पुस्तकालयकी प्रतिको आँखों देखने मैनचेस्टर गया। वहाँ पुस्तकालयके हस्तलिखित ग्रन्थ विभागके एक अधिकारीने चन्दायनकी चर्चाके बीच अचानक कुछ याद करते हुए पूछा—

क्या आपके यहाँके (हिन्दीके) साहित्यकारों और अध्यापकोंको ज्ञात है कि आपने इस ग्रन्थको ढूँढ निकाला है?

हाँ।—मैंने कहा।

क्या वे यह भी जानते हैं कि आप इसका सम्पादन कर रहे हैं?

हाँ।

तब तो उनमें आश्चर्यजनक अधैर्य और विवेकहीनता भरी है। और—उनके पेशानीपर कुछ अजीब-सी घृणाकी रेखाएँ उभर पड़ीं।

उनका आशय मैं समझ न सका। अवाक् उनकी ओर देखता रह गया।

और तब उन्होंने मेरी ओर एक फाइल बढ़ा दी। उनमें थे हिन्दीके कतिपय विद्वान् अध्यापकोंके पत्र। उन पत्रोंमें उन्होंने चन्दायनकी प्रतिके माइक्रोफिल्मकी माँग की थी। उस फाइलमें उनका उत्तर भी था। उन्होंने इन उतावले अनुसन्धि-

स्तुओंको स्पष्ट शब्दोंमें बिना मेरी अनुमतिके माइक्रोफिल्म देने तथा उसके सम्पादन प्रकाशनकी अनुमति देनेसे इनकार कर दिया था।

फिर बोले—यह ग्रन्थ हमारे यहाँ इतने दिनोंसे था। हमें उसके सम्बन्धमें तनिक भी जानकारी न थी। आपने उसे ढूँढा, खोज निकाला, उसका महत्त्व बताया। यह आपकी महत्त्वपूर्ण खोज है, इसपर आपका अधिकार है। इन्हें माइक्रोफिल्म कैसे दे दूँ।

इस प्रकार अंग्रेजी चरित्र-बलकी दृढ़ताके कारण इन मित्रोंकी साहित्यिक डाकेजनीकी चेष्टा सफल होते होते रह गयी और मैं लुटता लुटता बच गया।

साथ ही यह भी स्वीकार करनेमें हानि नहीं कि इस डाकेजनीका प्रयास मेरी अपनी ही मूर्खताके कारण सम्भव हुआ।

दूधका जला मठा फूँककर पीता है। बम्बई प्रतिपर किये गये श्रमपर जो बीता था, उससे सजग होकर ग्रन्थ सम्पादन कार्यकी समाप्तितक मैंने रीलैण्ड्स प्रति सम्बन्धी जानकारी अपने और अपने कुछ विश्वस्त जनोंतक ही सीमित रखनेका प्रयत्न किया था। फिर भी कुछ लोगोंको इतनी गन्ध तो मिल ही गयी कि यूरोपके किसी पुस्तकालयसे 'चन्दायन'की कोई प्रति मेरे हाथ लगी है। यह गन्ध पाते ही साहित्यिक ग्रन्थोंके एक प्रख्यात और कुशल सम्पादकने अपने जासूस लगाकर उस प्रतिका सुराग लगानेकी चेष्टा की। असफल होनेपर अपनी सम्पादन योग्यताकी दुहाई देते हुए कहलाया कि मैं इस प्रतिको उन्हें सम्पादन करनेके लिए दे दूँ, वे उसका अधिक योग्यतापूर्वक सम्पादन कर सकेंगे। मैंने स्पष्ट 'ना' कर दिया। मैंने समझा बात खतम हो गयी।

जब ग्रन्थका सम्पादन कार्य समाप्त हो गया और पाण्डुलिपि प्रकाशकके हाथमें चली गयी तब, सोचकर कि खतरा दूर हो गया अब इस प्रतिके खोजकी रोमांचक कहानी लोगोंको बता देनेमें कोई हानि नहीं, मैंने वह कहानी धर्मयुगमें प्रकाशनार्थ भेज दिया। उसके प्रकाशित होते ही लोग उस प्रतिको प्राप्त करनेके लिए दौड़ पड़े।

साहित्यके क्षेत्रमें इस प्रकारकी मनोवृत्ति अत्यन्त खेदजनक है। इससे अधिक क्या कहूँ!

आगरा संस्करण

बहुत दिनोंसे विश्वनाथ प्रसाद और माताप्रसाद गुप्त सम्पादित चन्दायनके कन्हैयालाल मुंशी हिन्दी तथा भाषा विद्यापीठ, आगरा विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित किये जानेकी बात सुनी जा रही थी। पर न जाने किन कारणोंसे उसका प्रकाशन रुका रहा। अब वह इस बीच प्रकाशित हो गया। चन्दायनका यह संस्करण अपने आपमें अद्भुत है। इसकी विचित्रता इस बातमें है कि पुस्तकके स्पष्ट दो खण्ड हैं। पहले खण्डमें विश्वनाथ प्रसादने चन्दायन शीर्षकसे बम्बई प्रतिका और दूसरे

खण्डमें सोरकहा नामसे माताप्रसाद गुप्तने काशी, मनेर और पंजाब प्रतियोंका पाठ उपस्थित किया है। विश्वनाथप्रसादने बम्बई प्रतिके व्यतिक्रम पृष्ठोंको क्रमबद्ध करनेकी चेष्टा की आवश्यकता नहीं समझी। माताप्रसाद गुप्तने काशीवाले पृष्ठोंको आरम्भका, मनेर प्रतिको मध्यका और पंजाब पृष्ठोंको अन्तका मानकर उसी क्रमसे उनका पाठ उपस्थित कर दिया। पहले खण्डके आरम्भमें एक प्रस्तावना है और दूसरे खण्डके प्रारम्भमें एक भूमिका दी गयी है। इस प्रकार दोनों खण्ड एक दूसरे से इतने स्वतन्त्र है कि उन्हें एक जिल्दमें बँधे दो स्वतन्त्र संस्करण कहना उचित होगा।

इसको देखकर मेरी स्वाभाविक मानवीय दुर्बलताएँ उभर आयीं। मुझे विषाद और हर्ष दोनों ही हुआ। विषाद इस कारण हुआ कि मुद्रण कार्यकी मन्द गतिताके कारण पाठकोंके सम्मुख चन्दायनको सर्वप्रथम प्रस्तुत करनेका श्रेय मुझसे छिन गया। किन्तु यह विषाद क्षणिक ही था। उसने हर्षका रूप यह देखकर धारण कर लिया कि इसके प्रकाशनसे पाठकोंको मेरे सम्पादन कार्यके श्रमको आँकनेका माप दण्ड प्राप्त हुआ है।

आगरा संस्करणके दोनों ही विद्वान् सम्पादकोंको चन्दायनके जिन प्रतियोंके फोटो उपलब्ध रहे हैं, उन प्रतियोंके फोटो मुझे भी सुलभ थे। दोनोंको उनके फोटो न केवल एक सूत्रसे प्राप्त हुए वरन् उनके प्रिण्ट्स भी एक ही नेगेटिवोंसे तैयार किये गये थे। इस प्रकार कोई यह नहीं कह सकता कि विभिन्न प्रकारकी प्रतियोंसे प्रस्तुत संस्करण और आगरा संस्करण तैयार किये गये हैं। जहाँतक बम्बई, मनेर, काशी और पंजाब प्रतियोंका सम्बन्ध है, दोनों ही संस्करण स्वाभाविक रूपसे एक ही प्रतिके दो स्वतन्त्र पाठ हैं। इन दोनों पाठोंमें कितना वैषम्य है यह पाठोंकी तुलना करके सुगमतासे जाना जा सकता है। सुविधाकी दृष्टिसे उदाहरण स्वरूप कुछ पंक्तियाँ यहाँ उद्धृत की जा रही हैं—

आगरा संस्करण (खण्ड १)	प्रस्तुत संस्करण
जान बिरह मिस बुँदका परा। (पृ० ४०)	जान परहिं मँसि बुँदका परा ॥ ८५।१
मुख क सोहाग भयो मनको।	मुखक सोहाग भयउ तिल सगू।
पदम बिमासन बैठ भजन को ॥(पृ० ४०)	पदम पुहुप सिर बैठ भुजंगू ॥ ८५।२
तिह बिरहिन घन कलेजै सारी।	तिल बिरहें घन घुँघची जरी।
आध कार आधे रत भरी ॥ (पृ० ४०)	आधी कार आधी रत फरी ॥ ८५।४
राजा कै के सुनहि निराई। (पृ० ४०)	राजा गियँ कै सुनहु निगाई ॥ ८६।१
लिही मराहन ततसो गोरी।	देउ सराहँहि तैसा गोरी।
केउँ अपछर कै कीन्ह अजोरी ॥(पृ० ४१)	गियँ उँचार गह लिखसि अजोरी ॥ ८६।३
असकै मनसा आहि न काहू (पृ० ४१)	अस गियँ मनुसँहि दीग न काहू ॥८६।८

है सराप राजाकर सीस कंठ अँकवारि। (पृ० ४१)	हिये सिरान राजास्र सुनसि कण्ठ अँकवारि ॥ ८६।६
दई पीत जिउ घर संचारा। (पृ० ४३)	दई विपति जिउभर संचारा ॥ १८२।३
हेहु पूंछि त्यों जो अहा, हौं वसगा विसहार। (पृ० ४३)	देवहि पूछि तूं जो आहा, हौं कसगा विसँभार ॥ १८२।८
अपना देस मुद्रिका भली। (पृ० ४४)	उपना देस मँदिर गा भरी ॥ १६१।३
द्रौरा जिनहि विमारि। (पृ० ४५)	दौरा जीभ पसारि ॥ १२१।७
पत्रन्ह केहि तर यह गिन पाता। (पृ० ४७)	पतरिहँ रुहँ तुरें बन पाता ॥ १६०।१

(खण्ड २)

चन्द्र अलात धरा जनु लाए।	चँदर लिलार धरा जनुलाईं ॥ (पृ० ११)
जेहिं नग धैठे अतिय सुहाए।	धमक बतीसी अतइ सुहाई ॥ १४६।२
ताती राति बिछवाईं हस्ति चढ़ा दुख आनि।	तानी रात पिछौरी, हस्ति चढ़ा दिखाउ,
घेरेसि बाल मलोनी तब जियहि कटारि सुहानि ॥ (पृ० १२)	कस सर पाग सलोने, तिरिछि कटार सुहाउ ॥ १४६।८
मेल बुद्धि कइ आइ जनावा। (पृ०१६)	मेलि बरह कै आपु जनावा ॥ २११।७
कार हाटक भरिकै चाली। (पृ० १७)	कार झंग पहिर कै चाले ॥ २१४।१
सुनु सखि माहिं मानुमकर कर याता।	कहौं सखी माह माँस कै बाता।
अहसह रंग सबहि धनि राता (पृ० ४७)	करसि राँग सभै धनि राता ॥ ५४।१

इस पाठ वैषम्यको देखकर कदाचित् किसीके लिए भी यह स्वीकार करना सम्भव न होगा कि ये संस्करण किसी एक ही प्रति अथवा प्रति परम्पराके पाठ प्रस्तुत करते हैं और उनमें किसी प्रकारका पाठ-सम्बन्ध है अथवा हो सकता है। इस तथ्यके प्रकाशमें विचारणीय हो जाता है कि क्या इस ढगके ग्रन्थोंके कैथी और नागरी प्रतियोंके साथ उनकी फारसी प्रतियोंकी किसी प्रकारके प्रति-परम्परा अथवा पाठ-सम्बन्ध होनेका आग्रह किया जा सकता है ?

जो भी हो, आगरा संस्करणके प्रकाशनने फारसी लिपिमें अंकित हिन्दी ग्रन्थोंकी दुर्बोधता सिद्ध कर मेरा बहुत बड़ा भार हल्का कर दिया। उसके प्रकाशमें अब जब पाठक प्रस्तुत संस्करणको देखेंगे तो वे मेरी कठिनाइयोंको पहलेकी अपेक्षा अधिक सहानुभूतिके साथ समझ और सराह सकेंगे।

शब्द-शोध

मेरा पाठ सर्वथा निर्दोष है ऐसा मेरा दावा नहीं है। मुझे स्वयं अपने पाठोंमें

पूर्ण सन्तोष नहीं है। उसपर यत्र तत्र काईकी काफी मोटी तह जमी हुई है। बार बारके चिन्तन मननसे ही मूल शब्द अथवा उत्तम पाठतक पहुँचा जा सकता है। मुद्रणकालमें प्रूफ देखते समय पाठक बहुत से उत्तम रूप पकड़में आये और उनके अनुसार यथास्थान संशोधन परिवर्तन किये गये। कुछ पाठ दोष मुद्रणके पश्चात् ध्यानमें आये और यत्र तत्र मुद्रण दोष भी प्रतीत हुए। ऐसे दोषोंका परिमार्जन यहां किया जा रहा है—

पंक्ति	मुद्रित	उचित	पंक्ति	मुद्रित	उचित
१२।५	सैसारू	सँयसारू	७१।४	फिर	फिरि
१२।६	सस्यार	सँयसार	७१।५	दिवस	देवस
२०।१	देव	देउ	७३।४	तिहवाँ	तहवाँ
२१।८	घोर	खौर	८०।१	कै	गिय
२६।२	घागर	घागर	८०।३	पिरियमैं	पिरियमी
३०।१	बनानी	बिनानी	८४।१	कूँक	कुँकू
३१।४	बनानी	बिनानी	८४।४	धी	धिय
३१।७	देव	देउ	८६।७	गोधर	गोवर
३३।४	धी	धिय	८८।५	उपाने	उपाये
३३।७	और	अउर	८८।५	ताने	लाये
३३।७	नखर	नरात	८९।२	तहवॉ	तहवॉ
३४।७	गधव	गन्धरप	९१।४	चाँन	चल्न
४०।३	रास	राशि	९२।२	झकव	झनक
४१।२	जेवनारा	जेउनारा	९३।७	गुन	गन
४२।५	पिलाने	पलाने	९३।७	गँधरव	गॅधरप
४४।३	भैंस	भॅइस	९५।१	मुवन	सोन
४७।६	के	कै	१०३।३	गाय	गाइ
४८।४	धी	धिय	१०४।५	भीस	पीनस
४९।७	अमरैल	अभरैल	१०५।४	विवाह	बियाहि
४९।५	के है तो	कै तोहैं	१०५।८	धानि	पानि
५०।७	सुखासन	सिघासन	१०६।२	धी	धिय
५१।४	सुरासन	सिघासन	१०६।३	पुतरिस	पुतरिह
५१।६	सुरासन	सिघासन	११२।४	परारिन्ह	पम्चरहि
५२।७	जिनु	जनि	११२।४	गादे	काढ़े
५३।७	जैस	जइस	११८।४	सथ धावा	सथ आवा
६८।७	विरह	निरह	१२७।०	झार	झार
६९।४	कौन	कउन	१२७।६	गुजहु	गुजहु

पंक्ति	मुद्रित	उचित	पंक्ति	मुद्रित	उचित
१२१।४	देख	देस	३०५।२	विघाता	बिधाता
१३५।२	विजैसेन	बिजैसेन	३०७।६	अर्गो	आर्गो
१३८।३	देव	देउ	३१५।१	पुरुष	पुरुख
१४४।३	चँवरधर	चँवरभार	३१५।७	वार	वारि
१४४।४	पिठौर	पिठौरी	३१६।६	वार	वारि
१४६।१	लारह	लारह	३२८।१	कटि	काटि
१५१।६	पारम	पारध	३२३।८	जेवनारहि	जेउनारहि
१५४।३	टिटहरी	टिटिहिरी	३३३।६	घरहिं	घरहिं
१५८।१	मूँज	भूँज	३५८।१	गरहिं	गारहिं
१५७।२	पनि	पानि	३५१।६	लौर	लोर
१६०।४	ढारा	टारा	३६०।४	के	कै
१७१।८	कथा	कथा	३६२।१।४	खाढे	खाडे
२०१।१	लौर	लोर	३६२।१।४	चमकार	झमकार
२०४।२	जगमर	जगमग	३६२।१।५	ननहिं	नरहिं
२०५।६	सौंह-सेंदूर	सींह सिंदूर	३६२।२।४	रमक	रम
२०५।७	निसारँभ	निवारँभ	३६२।२।४	नान	थान
२०६।२	वैनाँ	बेनाँ	३६२।२।५	घर	घर
२०६।३	चोना	चाना	३६२।२।५	मान	भान
२०६।७	बास	दास	३७७।३	लौर	लोर
२०८।५	हौँ	हान्न	३९६।५	भल	बहुल
२४३।१	भाव	भाउ	४००।१	मैन	मैन
२४८।७	दास	दाव	४०५।७	देव उठान	देउ उठान
२५४।३	देव	देउ	४१७।२	दड	दन्द
२६७।२	हटाँगी	पटाँगी	४१९।२	टारा	टारा
२७२।१	देव	देव, दरउ	४२८।४	कटारि	कटारी
२९५।७	बूट	बूढि	४२९।१	मैल	महल
२९७।२	मसि	मसि	४४७।७	वाहिर	बाहिर
२९७।७	अँधियार	अँधियार	४८८।५	लौर	लोर

उपर्युक्त दोष परिमार्जनके बाद भी मैं कहना चाहूँगा कि उच्चारण वैभिन्न्य, लिपि दोष और अनभ्यासके कारण अनेक शब्दोंके समझनेमें अवश्य भूल हुई होगी। यदि उनमेंसे कोई भी पाठकोंकी दृष्टिमें आयें और वे उन्हें पकड़ और पहचान पायें तो उसकी सूचना मुझे देनेकी उदारता अवश्य दिखायें। किसी प्राचीन ग्रन्थका सर्वांग प्रामाणिक संस्करण, जो पूर्णतः निर्दोष और सर्वमान्य हो, दुर्गम ही नहीं असम्भव है।

नये तथ्यों, नयी जानकारीके आधारपर संशोधन-परिशोधन होना अनिवार्य है और यह कार्य निरन्तर चलते रहनेवाला है।

नयी टिप्पणियाँ

चन्दायनमें प्रयुक्त शब्दों पर जैसी व्याख्या और टिप्पणी दी जानी चाहिये थी, वह नहीं दी जा सकी। अपनी इस असमर्थताके सम्बन्धमें अन्यत्र निवेदन कर चुका हूँ। इस अवधिमें कुछ बातें मेरे ध्यानमें आयी हैं, उनका उल्लेख यहाँ कर देना उचित होगा।

मलिक बयाँ (१७।५)—ऐतिहासिक ग्रन्थोंसे मलिक बयाँके सम्बन्धमें कुछ भी ज्ञात नहीं होता; किन्तु विपुलगिरि (राजगृह) स्थित एक मन्दिरसे प्राप्त एक संस्कृत अभिलेखसे ज्ञात हुआ है कि उनका पूरा नाम मलिक इब्राहीम बयाँ था और उनके पिता का नाम अबू बक्र था। वे फीरोज तुगलकके शासन कालमें बिहार के मुक्ती (शासक) थे। उन्हें सैफ उद्‌दौल्त की उपाधि प्राप्त थी। (जर्नल आव बिहार रिसर्च सोसाइटी, १९१९, पृ० ३१३-३४३)। इनकी समाधि बिहार शरीफ (पटना)में पीर पहाड़ीपर बनी हुई है। वहाँसे प्राप्त एक फारसी अभिलेखसे ज्ञात होता है कि उनकी मृत्यु १३ जिलहिज्ज ७५३ हिजरी (२० जनवरी १३५३ ई०) को हुई थी। (एपीग्राफिया इण्डिका, अरबिक एण्ड पर्शियन सप्लीमेण्ट, १९५५-५६, पृ० ६-७)।

गोबर (१८।१)—यह शब्द गोचरका प्राकृत रूप जान पड़ता है (गोचर> गोअर>गोबर)। पाइअ-लच्छी नाममाला नामक कोषके अनुसार गोअर विषयका पर्यायवाची था अथवा गोबर किसी विषयका नाम था। इससे गोबर नामक नगरके होनेका समर्थन होता है। उसके सम्बन्धमें लोगोंकी जो धारणाएँ हैं, उन्हें यथास्थान देकर मैंने काव्यमें प्रस्तुत भौगोलिक सूत्रोंकी ओर ध्यान आकृष्ट करते हुए कहा था कि वह गंगा नदीसे बहुत दूर न होगा और उसके निकट स्थित देवहा नदीकी पहचान होनेपर इस स्थानकी स्थिति अधिक प्रामाणिकताके साथ निश्चित की जा सकेगी (पृ० ८६)। अब ज्ञात हुआ है कि देवहा नामकी एक नदी वस्तुतः है और वह कन्नौजके निकट गंगामें मिलती है (पृ० ३२५)। अतः गोबरको कन्नौजके निकट ही कहीं होना चाहिये। चन्दायनके भोजपुरी लोक-कथा रूपमें लोरकको अनेक स्थलोंपर कन्नौजका ग्वाल कहा गया है। इससे भी गोबरके कन्नौजके निकट होनेका समर्थन होता है। इस प्रसंगमें हमारा ध्यान मैनाके इस कथनकी ओर भी जाना चाहिये—एक बाट गइ हरदी, दूसर गई महोब (पृ० ३०९)। इसके अनुसार गोबरसे एक मार्ग हरदी और दूसरा महोबाकी ओर जाता था। कन्नौज और महोबाका पारस्परिक सम्बन्ध मध्यकालमें बहुत रहा है।

धागर (२६।२)—हमने इसे अन्यत्र (पृ० ९०) निम्नवर्गकी एक जाति बताया

है। इसका 'धागड' पाठ भी सम्भव है। धागड्का उल्लेख विद्यापतिने अपनी कीर्तिलतामें इस प्रकार किया है—

अरु धागड करञ्हिं स्टक बड़ जे दिसि धाड़े ज थि।
त दिसि केरी रायधर तरुणि हट्ट बिकाधि॥
साबर एक एक तन्हिका हाथ।
चेध लाए कोथलाए बेटल माथ॥

अर्थात् ये धागड जातिके सैनिक बड़े स्टक (धूर्त) हैं। वे जिस दिशामें धावा मारते हैं, वहाँके राज घरानेकी तरुणियाँ हाटोंमें बिकने लगती हैं। वे हाथमें एक साबर लिए और चिथड़ गुदड़ पहने रहते हैं।

यदि उपर्युक्त पाठ और अर्थ ठीक है तो कहना उचित होगा कि धागड किसी वन वासिनी अथवा निम्न वर्गकी सैनिक जातिका नाम है। वर्ण रत्नाकरमें धाङ्गड नामक जातिका उल्लेख है, उसे वहाँ मन्दजातिय कहा गया है।

पलाने (४२।५)—इसे हमने मूलत पिलाने पढ़ा था (पृ० १०३) और उसका अर्थ पील अर्थात् हाथी किया था। वस्तुत उचित पाठ 'पलाने' होगा जिसका अर्थ है—जीन कसे हुए।

फीनस एक दरब भरि आये (४४।१)—इस पदका हमने एक दूसरा सन्दिग्ध पाठ भी टिप्पणीके रूपमें दिया है (पृ० १०५)। उस समय हमें इसका अर्थ स्पष्ट नहीं हुआ था। पीछे फीनस शब्दपर विचार करनेपर ज्ञात हुआ कि वह पीनस का रूप है जिसका अर्थ पालकी है, और तब समझमें आया कि हमने पाठ ठीक ही दिया है। टिप्पणीमें दिया गया पाठ अनावश्यक है। मध्यकालमें बड़ी मात्रामें धन (द्रव्य—दरब) पालकीमें भरकर भेजा जाया करता था।

कनक (४४।६, १५५।६, २७२।७)—इसका अर्थ हमने एक स्थानपर आटा (पृ० १०५) और दूसरे स्थानपर गेहूँ (पृ० २९०) किया है। आटा अर्थ हमने कभी कहीं सुना था और उसी आधारपर यह अर्थ दिया था। पश्चात् वासुदेवशरण अग्रवालने हमें बताया कि गेहूँको कनक कहते हैं। पंजाबमें गेहूँके अर्थमें कनक का प्रयोग होता है। तदनुसार हमने दूसरी जगह गेहूँ अर्थ ग्रहण किया। अभी हालमें बालचन्द जैनने गेहूँ अर्थ देखकर आश्चर्य प्रकट किया और बताया कि बुन्देलखण्ड प्रदेशमें आटा को कनक कहते हैं। निष्कर्ष यह कि गेहूँ और आटा दोनों ही अर्थोंमें कनक का प्रयोग होता है।

कुछ भूलें

पृष्ठ ४८ में फारसी अनुवादकी जो पंक्तियाँ उद्धृत की गयी हैं उनमें पंक्ति २ में तहू के स्थानपर तहू और पंक्ति ४ में चूँकि के स्थान चूँके होना चाहिये।

८०।६ की टिप्पणीमें वरण के स्थानपर वीरण होना चाहिये।

पृष्ठ १९, पंक्ति ६में बरदाका जो उल्लेख है, उसका सन्दर्भ छूट गया है। वह इस प्रकार है—वर्ष २ अंक ३ (१९५९) पृष्ठ २८-३३।

पृ० १९ मे दी गयी पाद टिप्पणीका रूप वस्तुतः इस प्रकार होना चाहिये—ये मलिक मुबारिक उन शेख मुबारिकसे सर्वथा भिन्न थे, जिनकी कब्र हत्मऊ किलेके खण्डहरमें है।

पृष्ठ २७—प्रसग विचारके आधारपर मुद्रण कालमें कतिपय कड़वकोंके निर्धारित स्थानमे परिवर्तन किया गया है, जिसके परिणाम स्वरूप अनुपलब्ध कड़वकोंकी सूची अब इस प्रकार है—१ १६, १९, २३, ३४, ५५ ६५, १२३, १५३, १८० १८१, २८२ २८६, ३०० ३०३, ३१०, ३२१, ३३८ ३४३, ३४५, ३६२-३७० ३८३ ३८८, ४१० और ४५४ ४७३।

पृष्ठ ६५—लोकप्रियता शीर्षकके अन्तर्गत दूसरी पंक्तिमे **शेख बदरुद्दीनके** स्थानपर पाठ **शेख तकीउद्दीन** होना चाहिये।

उसी प्रसगमें लताफ्ते कुद्दूसियामें चन्दायनके सम्बन्धम जो कुछ कहा गया उसकी चर्चा करते समय पादटिप्पणीमें उसका मूल उद्धरण छूट गया है। वह इस प्रकार है—

हजरत कुतबी दर इब्तदाये हाल ख्वास्तन्द कि नुस्खए चन्दायन हिन्दवी रा व फारसी कुनद। बाद आज ॠ याने तौहीद व नात ख्वास्तन्द कि दर मेराज चीज बेनवी सन्द। दर चन्दायन मेराज न बूद।'' ई नुस्खये फारसी चन्दायन बिसयार शुरु बूद दर हादसये मुल्तान बहलोल के बा सुल्तान हुसैन मकातिला बावे शुद फोत शुदा।

अर्थात् हजरत कुतबी (अब्दुल्कुद्दूस गंगोही) आरम्भसे ही चाहते थे कि वे हिन्दवी ग्रन्थ चन्दायनका फारसीम अनुवाद करें। वे यह भी चाहते थे कि तौहीद और नात (ईश्वर और पैगम्बर)के वर्णनके पश्चात् मेराज (पैगम्बरके स्वर्गारोहण)के सम्बन्धम भी लिखें क्योंकि चन्दायनमें मेराजका अभाव था। चन्दायन ग्रन्थका काफी अश अनुवाद हो चुका था। किन्तु वह सुल्तान बहलोल और सुल्तान हुसेनके बीच हुए युद्धमे नष्ट हो गया।

कडवक २६९ पंजाब (ला०) प्रतिमें भी प्राप्त है, किन्तु उसका पाठान्तर छूट गया है। उसके पाठान्तर इस प्रकार है—

पंक्ति	रीलैण्डस्	पंजाब
१।१		पृष्ठ फटा होनेसे अप्राप्य।
१।२	जीउर सॉसत भयउँ	जिय कै साँसा भयऊ
२।१		पृष्ठ फटा होनेसे अप्राप्य।
३।१	देउ	चितँहि
४।१	मरी	मरा
४।२	जिउ यहँ धरी	जिय को न धरा
५।१	न्हल देउ हत्या महि लागी	देउ डरान मँह हत्या लागी
५।२	निसरा डर भागी	निसर गा भागी
६		कुँवर तरावी देखे, आउन जिन्ह छुड़ाद।
७		पृष्ठ फटा होनेसे अप्राप्य।

कवि-परिचय

मौलाना दाउदका परिचय देते हुए मैंने कल्पना, अंक १२४, (पृष्ठ १७)में लिखा था—तवारीख-ए-मुबारक शाहीमें एक शेख दाऊदका उल्लेख है जिसे खानजहाँके निजी मौलानाका पुत्र (मौलानाजादा) कहा गया है। खानजहाँने फीरोज शाहको अपने विरुद्ध भारी सेना लेकर आते देखकर इन्हें कुछ लोगोंके साथ शाहको सन्तुष्ट करनेके लिए भेजा था। अधिक सम्भावना इस बातकी है कि शेख दाउद अन्य कोई नहीं, मौलाना दाऊद थे। यदि हमारा यह अनुमान ठीक है तो कहना होगा कि दाऊद खानजहाँके कृपा पात्र ही नहीं, अत्यन्त विश्वास पात्र भी थे।

पीछे ज्ञात हुआ कि यहाँ जिस खानजहाँका उल्लेख है वह खानजहाँ मकबूल अथवा खानजहाँ जौनाशाह न होकर एक तीसरे खानजहाँ अहमद अयाज थे जो मुहम्मद तुगलककी मृत्युके समय दिल्लीमें उनके नायब थे। उन्होंने फीरोजशाह तुगलकके विरुद्ध एक अज्ञात कुलीन लड़केको मुहम्मद तुगलकका बेटा घोषितकर गद्दीपर बैठा दिया था। इसपर जब फीरोज तुगलकने उनके विरुद्ध अपनी सेना भेजी तो उन्होंने अपने मौलानाजादा शेख दाऊदको शाहको सन्तुष्ट करनेके लिए भेजा था। इस प्रकार स्पष्ट है कि खानजहाँ अहमद अयाजके मौलानाजादा शेख दाऊद और खानजहाँ मकबूल और खानजहाँ जौनाशाहसे सरक्षित चन्दायनके रचयिता मौलाना दाऊद, दो भिन्न व्यक्ति थे। इस तथ्यसे परिचित हो जानेपर मैंने इस बातकी चर्चा इस ग्रन्थमें परिचयके प्रसगमें जान बूझकर नहीं किया। किन्तु अब इसका उल्लेख इसलिए आवश्यक हो गया कि चन्दायनके आगरा सस्करणकी प्रस्तावनामें विश्वनाथ प्रसादने वही भूल की है जो मैंने की थी अर्थात् उन्होंने तवारीख-ए-मुबारिकशाहीके उक्त वर्णनको अपने शब्दोंमें उपस्थित कर दिया है जिससे नये तथ्यके प्रकाशमें आनेका भ्रम होता है।

दाऊदके मौलाना होनेका प्रमाण मैंने परिचय देते समय कई सूत्रोंसे दिया है। उस समय मेरा ध्यान इस बातकी ओर नहीं गया था कि अखबार उल-अखयारके लेखक शेख अब्दुल्हक्कने भी उन्हें मौलाना कहा है। साथ ही उन्होंने दाऊदके शेख जैनुद्दीनके शिष्य होने और चन्दायनमें जैनुद्दीनकी प्रशसा किये जानेकी बात भी लिखी है जिससे चन्दायनकी पक्तियोंका समर्थन होता है। अखबार-उल-अखयारकी ये पक्तियाँ हैं—शेख जैनुद्दीन ख्वाहरजादा व खादिमे खास शेख नसीरुद्दीन चिरागे देहली अस्त। जिसे ऊ दर मजालिस व मल्फूजाते शेख सब्त याफ्ता अस्त। मौलाना दाऊद व मुअल्लिफे चन्दायन मुरीदे ओस्त व मद्हे व दर अव्वले चन्दायन करदा अस्त।

(शेख जैनुद्दीन चिरागे देहली शेख नसीरुद्दीनके बहनके बेटे और खादिमे खास थे। शेख (नसीरुद्दीन) उनका जिक्र धर्मसभाओं तथा सामान्य बातचीतमें प्राय किया करते थे। चन्दायनके रचयिता मौलाना दाउद उनके भक्त (मुरीद) थे और उन्होंने चन्दायनके आरम्भमें उनकी प्रशसा की है)।

काव्यका नाम

दाऊद रचित प्रस्तुत काव्यके नामके सम्बन्धमें माताप्रसाद गुप्तने आगरा संस्करणकी भूमिकामें लिखा है कि—इस रचनाका नाम चन्दायन प्रसिद्ध है, किन्तु रचनाका जितना अंश प्राप्त हुआ है, उसमें यह नाम कहीं नहीं आता है। इस ग्रन्थ में इसका नाम लोरकहा आता है जो लोरकथाका अपभ्रंश है—

तोर (लोर) कहा महँ यह खँड गाऊँ। कथा काव कइ लोग सुनाऊँ॥

अतः जबतक अन्यत्र चन्दायन नाम न मिल जाये लोरकहा ही रचनाका वास्तविक नाम माना जायेगा। हो सकता है कि इसका नाम लोरकहा ही रहा हो किन्तु पीछे यह रचना चन्दायनके नामसे प्रसिद्ध हो गयी हो। (पृ० ४५)।

माताप्रसाद गुप्तकी यह धारणा केवल कल्पना प्रसूत है। निम्नलिखित तथ्योंपर यदि ध्यान दिया जाय तो स्पष्ट प्रकट होगा कि उसका कोई महत्त्व नहीं है—

(क) दाऊद रचित इस ग्रन्थकी परम्परामें अबतक जितने भी प्रेम-काव्य रचे गये है, उन सबका नामकरण नायिकाके नामपर हुआ है, नायकके नामपर नहीं। यथा—मिरगावति, पदमावत, इन्द्रावत आदि। इस परम्पराके होते हुए यह सोचना कि दाऊदके ग्रन्थका नामकरण नायकके नामपर लोर-कहा हुआ होगा, अपने आपमें भ्रम जनित है।

(ख) ग्रन्थका नाम लोर-कहा सिद्ध करने लिए माताप्रसाद गुप्तने जो पंक्ति उद्धृत की है, वह मनेर प्रतिमें प्राप्य है। वहाँ पाठ स्पष्ट रूपसे तोर कहा है लोर-कहा नहीं। ते के दोनों नुक्तोंके अस्तित्वके प्रति किसी प्रकारका सन्देह नहीं किया जा सकता। फिर भी यदि माताप्रसाद गुप्त की ही बात मान ली जाय कि मूल पाठ लोर-कहा है तोर कहा नहीं, तो भी उससे किसी प्रकार ग्रन्थका नाम लोर-कहा होना सिद्ध नहीं होता। उद्धृत पंक्तिमें लोर-कहाको लोर-कथाका अपभ्रंश रूप माननेसे पंक्तिमें व्याकरण दोष उपस्थित होता है और पंक्ति अर्थहीन हो जाती है। पंक्तिकी सार्थकता तभी है जब कहाका भाव कथनके रूपमें लिया जाय।

(ग) दाऊदने अपने काव्यमें कथा शब्दका प्रयोग अनेक स्थलोंपर किया है जिस कडवकसे विचाराधीन पंक्ति उद्धृत की गयी है, उसीमें एक पंक्ति है—कथा कवित कै लोग सुनावउँ (३६०।४)। अन्यत्र दूसरी पंक्ति है—कथा काव परलोक निरारम, लिख लॉयौं जिहँ पात (२०५।७)। यदि दाऊदका अभिप्राय इस पंक्तिमें भी कथासे होता तो वे कथा ही लिखते, उन्हें अपभ्रंश रूप कहाकी अपेक्षा न होती।[1]

इस प्रकार माताप्रसाद गुप्तके पास यह कहनेका कोई आधार नहीं है कि ग्रन्थका मूल नाम लोर-कहा था। दाऊदने स्वयं ग्रन्थमें कई स्थलोंमें ऐसे संकेत प्रस्तुत

१—इन तथ्योंकी ओर विश्वनाथ प्रसादने अपनी प्रस्तावनामें ध्यान आकृष्ट किया है (पृ० २५)। उन्हींकी बातोंको मैंने यहाँ अपने ढंगसे प्रस्तुत किया है।

पाकिस्तान लौटे होंगे। यदि वे लाहौर संग्रहालयमें नहीं है तो उन्हें कराची संग्रहालयमें होना चाहिये।

चन्दायनकी विभिन्न प्रतियोंके काल निर्धारणके सम्बन्धमें विचार करते समय मनेर प्रतिके सम्बन्धमें कुछ नहीं कहा गया। वस्तुत उस प्रतिके कालका अनुमान इस तथ्यसे हो सकता है कि उसके हाशियेपर कुतबन रचित मिरगावतिकी कुछ पंक्तियाँ हैं। कुतबनके स्वकथनानुसार उसकी रचना संवत् १५८७ (सन् १५१५ ई०)में हुई थी। अत इस प्रतिकी रचना इसके पश्चात् ही किसी समय हुई होगी। कितने समय बाद हुई यह प्रमाणाभावमें कहना कठिन है। अनुमानका यदि सहारा लिया जाय तो उसे १६ वी शतीके अंत अथवा सत्तरहवीं शतीके आरम्भमें रखा जा सकता है।

माताप्रसाद गुप्तने अपने लोरकहाकी भूमिकामें लिखा है कि भोपालके एम० एच० तैमूरीने उन्हें चन्दायनके किसी प्रतिके दो पृष्ठोंके दो फोटो भेजे थे और लिखा था कि यह प्रति प्रारम्भमें एक आध पृष्ठको छोडकर पूरी है। माताप्रसादका यह भी कहना है कि उस प्रतिका जो विवरण उन्हें प्राप्त हुआ था, उससे ज्ञात होता है कि उसमें रचनाके कमसे कम १४० छन्द अब भी शेष हैं। इस सम्बन्धमें ज्ञातव्य यह है कि बम्बईवाली प्रति प्रिन्स आव वेल्स म्यूजियमने इन्हीं तैमूरीके माध्यमसे प्राप्त की है। सम्भवत उन्होंने माता प्रसाद गुप्तको इसी प्रतिके पृष्ठोंके फोटो और विवरण भेजे थे। इस प्रतिमें केवल ६८ कडवक (६४ चन्दायनके और ४ मैना सतके) थे। अत १४० छन्द (कडवक) होनेकी कल्पना निराधार है।

रहस्यवादी प्रवृत्तिका अभाव

चन्दायनमें सूफी तत्वोंके अभावकी ओर संकेत करते हुए मैंने यह मत व्यक्त किया है कि दाऊदके सम्मुख काव्य रचनाके समय कोई सूफी दर्शन नहीं था, लोक प्रचलित कथाको काव्य रूपमें उपस्थित करना ही अभीष्ट था (पृ० ६२)। सैयद हसन असकरीने भी मनेर प्रतिपर विचार करते हुए कुछ इसी प्रकारका मत इन शब्दोंमें व्यक्त किया है—जायसीसे भिन्न मौलानाने अपनेको केवल लोक प्रचलित विश्वासों तथा हिन्दुओंके धर्माख्यानोंतक ही सीमित रखा है।[1] विश्वनाथ प्रसादने भी हमारे विचारोंका समर्थन किया है। उनका कहना है—सूफी काव्य परम्परामें इस पुस्तकका इतना महत्त्व होनेपर भी इसके जो अंश अभीतक प्राप्त हुए हैं, उनमें रहस्यवादके कोई स्पष्ट संकेत नहीं मिलते। यों स्थान स्थानपर 'प्रेमकी पीर'का तो वर्णन आया है, परन्तु उसमें कहीं ऐसी आभास नहीं मिलता, जिसमें इश्क हकीकीका आधार छोडकर मजाजीकी उडान भरी गयी हो।[2] किन्तु इस कथनके साथ ही उन्होंने यह भी कहा

१—करेण्ट स्टडीज, पटना कालेज, १९५५ ई०, पृ० १५।

२—आगरा संस्करण, प्रस्तावना, पृ० १५।

है कि—सम्भव है चाँदाको पार्थिव पक्षका प्रतीक माना गया हो, जैसा कि निम्न लिखित पंक्तियोंसे प्रकट होता है—

बिन करिया मोरी डोलै नाया। नीक सुनार कन्त न आवा॥

× × ×

आ तो चीर जो आ लोहू परस। सरज चीन जो जरत सघारस॥

मानवीय आसक्तिकी असारता और ईश्वरीय प्रेमकी सारवत्ताका जो आभास कथानकमें छिन्न कुट पाया जाता है, उसीके कारण सम्भवतः उस समयके सूफी साधक उसमे प्रभावित होते थे। उसके विरह वर्णनोंमें और प्रेमकी अभिव्यक्तिमें परोक्ष सत्ताके प्रति अनुराग और तड़पकी झलक मिल जाती है।[1]

इन पंक्तियों द्वारा विश्वनाथ प्रसादने काव्यमें रहस्यवादकी प्रकृतिकी सम्भावना प्रकट की है। इसके विपरीत माताप्रसाद गुप्तका कथन है कि—अपनी रचनाके अर्थ विचारपर बल देते हुए कविका यह कहना हिरदइँ जानि जो चाँदारानी स्पष्ट रूपसे कथाके रहस्यपरक होनेका निर्देश करता है।[2]

किन्तु यदि ध्यानपूर्वक सम्पूर्ण काव्यको देखा जाय तो उसमें किसी भी पंक्तिमें मानवीय आसक्तिकी असारता और ईश्वरीय प्रेमकी सारवत्ताका आभास नहीं मिलता। विश्वनाथ प्रसादने जिन पंक्तियोंकी ओर संकेत किया है, वे पंक्तियाँ, यदि मेरी आँखोंने मुझे धोखा नहीं दिया है तो, उनकी प्रतिमें (जिसका उन्होंने सम्पादन किया है) अथवा किसी अन्य प्रतिमें कहीं नहीं है। इस कारण प्रस्तुत सन्दर्भमें इन पंक्तियोंका उद्धरण कोई अर्थ नहीं रखता। माताप्रसाद गुप्तने जिस पंक्तिसे चन्दायनके स्पष्ट रूपसे रहस्यपरक होनेका निष्कर्ष निकाला है, उसका वे ठीकसे वाचन करनेमें असमर्थ रहे हैं। उन्होंने उसे पढ़नेका कष्ट कर। उसका उचित पाठ है—

हरदीं जात सो चाँदा रानी। नाग डसी हुत सो मँदि बखानी॥३१०।२

अर्थात् जो चाँदा रानी हरदी जा रही थी, वह जिस प्रकार नागसे डँसी गयी उसका मैंने बखान किया।

लोकप्रियता

विश्वनाथ प्रसादने आगरा संस्करणकी प्रस्तावनामें एक नवीन और महत्वपूर्ण सूचना प्रस्तुत की है कि सन् १६१९ ई० में रूपावती नामक एक प्रेमाख्यानकी रचना हुई थी जो अभी अप्रकाशित है। उससे उन्होंने निम्नलिखित उद्धरण दिया है—

छोरक चन्दा मैना प्रीतिह को लिरे।
रानकुँवर मिरगावति लिखि लिखि न धरे।

१—वही, पृ० १६।

२—आगरा संस्करण, लोरकहा भूमिका पृ० १०।

इससे भी प्रकट होता है कि सतरहवीं शतीके आरम्भमें चन्दायनकी कथा लोक प्रिय थी।

वैयक्तिक स्पष्टीकरण

ग्रन्थमें सर्वत्र मैंने विद्वानोंका उल्लेख सीधे सीधे नाम लेकर किया है अर्थात् उनके नामके आगे पीछे श्री, डाक्टर आदि सींग पूछोंका प्रयोग नहीं किया है। मेरा यह कार्य पाश्चात्यानुकरण है। वहाँ ग्रन्थोंमें विद्वानोंके विचार आदिका उल्लेख करते समय बिना किसी औपचारिकताके केवल नाम लिखा जाता है। हम भी तुलसी, सूरदास आदि मनीषियोंके नामके साथ यही करते आ रहे हैं। उसी परम्परामें मेरा यह व्यवहार भी है। पाठक इसे मेरी धृष्टता और अविनयन समझनेकी भूल न कर बैठें, इसलिए इस स्पष्टीकरणकी आवश्यकता हुई।

परमेश्वरीलाल गुप्त

पटना संग्रहालय,
पटना–१।
विजयादशमी, सन् १९६३ ई०